तिब्बत देशकी शीत और वायुपालित हिमानीकी अपेक्षा
मुलतानकी गरमी और लू बहुत ज्यादा असहनीय है।
नगर नदीके किनारे रमणीय स्थानमें रहनेके कारण रेशमजात
पदार्थादि और कालीनके रोजगारके लिये सम्पूर्ण उपयोगी
है। पास ही छोटी स्रोतस्विनियोंके वर्तमान रहनेसे यहां
प्रचुर परिमाणसे गेहूं, नील और कपास पैदा होता है। *

तिब्बतके उत्तरवर्ती मरुभूमिके छोटे छोटे पत्थर और
उपलखण्ड और बालुकाराशिमें प्रचुर परिमाणसे स्वर्णरेणु
पाया जाता है; किन्तु इनमें जो व्यवसायोपयोगी नमक
सुहागा मिलता है, उसका मूल्य बहुमूल्य धातुकी अपेक्षा
भी बहुत ज्यादा है।
यारकन्दमें "जस्त" नामक रत्न बहुत अच्छा मालूम द्रव्य
मिलता है; भारतवर्षमें इसकी बड़ी कदर है। उसीके साथ
साथ अधिकेन हिमालयके उस पार भी रफ्तनी होती और
हिन्दू तथा चीन देशीय रोजगारी इन दो विस्तृत पण्यके
परस्पर विनिमयसे व्यवसाय-वाणिज्य करते हैं।
तिब्बतसे लेकर काश्मीर और काबुलतक "चाय" का रोजगार
प्रचलित था; उस समय उन स्थानोंमें ही उसकी उपयोगिता
उपलब्धि होती थी। आठ पाउण्ड वजनकी 'चाय' का बण्डल
(block) गुणानुसार १० और १६ शिलिङ्गसे ८६ और ६८
शिलिङ्ग मूल्यपर बिक्री होता था। (Moorcraft 'Travels' 1.
(350 & 351—मरक्रोफ्टका भ्रमणवृत्तान्त. ३५० और ३५१ पृ० ;
* मुलतानका गेहूं प्रसिद्ध है, इसका मूल्य बड़ा और

हिमालयके दक्षिण पार्श्वस्थ नीचो जमीन समय समयपर वृष्टिके जलमें डूब जाती है। किन्तु तुषारावृत प्रदेशोंमें

बनती है। इन शस्त्रको राजपूतानेमें और ब्रटिशके अधिकारके समयसे सिन्धु देशमें प्रचुर परिमाणसे रफ्तनी होती है। सुलतानके शिल्पजात कपड़ोंका वार्षिक मूल्य सम्भवतः ५०,०००) पचास हजार रुपयेसे अधिक नहीं है। रेशमजात द्रव्यादिका मूल्य कपड़ोंके मूल्यकी अपेक्षा पंचगुना ज्यादा है; अथवा, भावलपुरके शिल्पजात द्रव्यादिके मूल्य समेत कुल ४००,०००) चार लाख रुपये नकद हैं। किन्तु सिन्धु देशके एक राजवंशके भगाये जानेके वक्तसे यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि शिल्पजात वस्त्रादिकी आमदनी प्रचुर परिमाणसे घट गई है। वङ्गदेशजात रेशमकी अपेक्षा नरम, सफेद और चमकदार होनेकी वजह, उसके बदले बुखारेका ऊर्णा-तन्तु (अपरिष्कृत रेशम) व्यवहृत होता है।

विलायती वस्त्रादिका और तपनोपयोगी कपासके सूतका व्यवहार (थोड़े बहुत परिमाणसे) भारतमें सब जगह ही प्रचलित हुआ है, किन्तु केवल पृथिवीके धनी पुरुष ही इन सब द्रव्यादिके खरीदनेमें समर्थ होते हैं। भावलपुरके जुलाहे केवल अट्ठारह "टन" कपासके सूतका कपड़ा तय्यार करते हैं, किन्तु उस जिलेमें अन्ततः तीन सौ "टन" साफ कपास उत्पन्न होता है। वहांके रहनेवाले कितने ही परिमाणसे इस कपासको सञ्चय कर रखते हैं और बाकी विक्रीके लिये राजपूताना भेज देते हैं।

प्रायशः ही बरसात होती दिखाई नहीं देती; और मुलतान तथा सिन्धु नदके तीरवर्त्ती स्थानोंमें इसकी कठोरता कुछ भी अनुभूत नहीं होती। मध्य पञ्जाब वन-जङ्गलावृत, या पशुचारणयोग्य अनुर्व्वर प्रान्तर-समाच्छन्न है। नद-नदियोंकी व्याप्तताके कारण यह प्रदेश सम्भूमिमें परिणत हुआ नहीं है. किन्तु अनावृष्टि और ग्रीष्माधिक्यसे स्थान हिंस्र जन्तुओंके रहनेके अनुपयोगी है और गो, भेड़, आदि गृह-पालित पशु इस देशके मुख्य सम्पत् है। पर्व्वत-माला-समाकुल बीसाहड़ विस्तृत समतल क्षेत्रके भीतरसे सिन्धु नद और शाखा नदियोंके प्रवहमान रहनेसे यह प्रदेश भारतके अन्यान्य स्थानोंकी अपेक्षा अधिक उर्व्वर है। जना-कीर्ण प्रचुर कपास, रेशम और पशम बुननेवाले सुनिपुण कारीगरोंसे परिपूर्ण है. इस देशमें चमड़ा, चाल और लोहेके रोजगारी बहुसंख्यक सुदक्षपुरुष दिखाई देते

पञ्जाबकी नीची जमीनमें और भावलपुरमें यथाक्रम ७५, और ५० 'टन' नील उत्पन्न होता है। वहां प्रति पाउण्डका मूल्य ६७ से ८ पेन्स मात्र है। वह प्रधानतः खुरासानमें ही अधिक परिमाणसे जाता है; शायद अमरतसरमें नीलके कितने ही परिमाणसे कृत्रिम [illegible] बाहरसे उस देशमें भेजे जानेके कारण वहांके नीलका रोजगार बहुत कुछ घट गया। सिख जाति और सिन्धु नदके पार्श्ववर्त्ती मुसलमानोंको नील रङ्गका पहनावा विशेष पसन्द करनेकी वजह इस [illegible] नीलका रोजगार चलता रहेगा।

है। पृथिवीके अपरांशसे बहुत थाम पत्र दिखाई देता है, आवरणादि प्रभृति कार्म्यमें साधारणतः पारिस देशमें यन्त्रादि व्यवहारमें लाये जाते हैं। यहां चीनी प्रचुर परिमाणमें होती है। आर्य्यावर्त्तमें अन्दतसर ही व्यवसाय वाणिज्यका केन्द्रस्थान है, यहांके सौदागर लोग इन मूल्यवान् पण्यद्रव्योंका कितना ही अंश काबुल और सिन्धु देशमें पहुंचनेके लिये भेजते हैं *। काश्मीरके शिल्पिगण और यहांकी उपत्यकाका कुङ्कुम, केसर प्रभृति तरह तरहके पण्य द्रव्य सब जगह ही प्रसिद्ध हैं, काश्मीरका शाल, देशविख्यात और उल्लेखयोग्य है †। अटक और पेशावरके समतल क्षेत्रमें गखड़ार प्रभृति बिलकुल दिखाई नहीं

---

* सन् १८४४ ई० में पञ्जाब प्रदेशकी आमदनी-रफ्तनी द्रव्यादि और आवकारीका शुल्क सब मिलाकर २४०,००० या २५०,००० पाउण्ड अदा हुआ। यह शुल्कका परिमाण रणजित्सिंहकी सब आयका अर्थात् ३, २५०,००० पाउण्डका तेरहवां अंश है।

† मिष्टर मूरक्रोफटने (Travels, ii, P. 194—भ्रमण-वृत्तान्त द्वितीय खण्ड पृ० १९४) गणनाकर स्थिर किया है, कि काश्मीरजात शालका वार्षिक मूल्य ३,००,००० पाउण्ड है; केवल मात्र अपरिष्कृत वस्तुका मूल्य यदि ७५,००० पाउण्ड होता है, तो उसकी तुलनासे शिल्पजात द्रव्यके मूल्यका परिमाण कम जान पड़ता है। (Travels; ii, 165, etc.); अर्थात हजार घोड़ोंमें प्रत्येकके वहनोपयोगी

और जलन्धरके मामूद बाबर और नादिरशाहके समय
नहा,—समय समयपर 'पारदो' और 'सिद्दो' प्रभृति असभ्य
जाति द्वारा लूटकर ध्वंस हुआ है। इन विभिन्न आक्रम-
णकारियोंका अनेक निदर्शन इस समय भी दिखाई देता है,
किन्तु उनमें आर्य्यावर्त्तमें मुसलमान जातिका प्रादुर्भाव और
उत्तर देशिय खण्डसे भारतभूमिमें जाट जातिका उपनिवेश-
स्थापन—यह दोनो ही प्रधान उल्लेख योग्य है।
यूनानियोका "गीति" (Getae) और चीनाओंका
"इउइचि" (Yuechi) प्रभृति पौराणिक कहानीके प्रसङ्गमें
"जाट" या चन्द्र वंशसम्भूत "यदु"के वंश-पर्य्यायकी
आलोचनाकर, चीनके इतिहासो और यूनानियोंके साथ उनके
स्वतः प्रमाणित सादृश्य विचारकी आवश्यकता नहीं, है,
अथवा रणजित् सिंह "खारफिश" वंशसम्भूत थे या नहीं,—
उसकी आलोचना भी करना नही चाहते। खृष्टीय धर्म्मके
प्रथम युगमें आर्य्यावर्त्तमें हिन्दूधर्म्म और बौद्धमतके प्राबल्यके
कारण हिंस्र असभ्य आक्रमणकारिगण भी क्रमसे सुसभ्य
हुए थे, प्रायः एक शताब्दिके भीतर "जाट" जातिने ब्राह्मणों-
कासा आचार-व्यवहार और धर्म्माचरण आरम्भ किया था।
सिन्धुनदके दक्षिण तीरस्थ "जाट" अधिवासियोंने इसलाम धर्म्म
ग्रहण किया और उत्तर खण्डकी जाट जाति बहुत दिनोंतक
प्राचीन मूर्तिपूजा धर्म्मकी उपासक थी। सम्प्रति इस शेषोक्त
सम्प्रदायने एक नया जीवन पाया है, इस समय वह
ईश्वरका स्वरूपत्व और मानवका एकत्व और समत्व प्रचार
कर रही है और बहुत दिनोतक हिन्दू और मुसलमान

होता जाता है। किन्तु भिन्न भारतीय विजेतृवृन्दके नवप्रचारित धर्म्ममतका अपेक्षा उनके ─ नदुनवहारसे ए ।जिस जाति बहुत ज्यादा घृणा हुई। इस समय भी जाट और अन्यान्य जातियोंमें प्रजापीड़क,गण 'तुर्क' नामसे अभिहित होते हैं; "तुर्क' और "पीड़नकारी' शब्द एक अर्थमें प्रयुक्त होते हैं। गर्व्वित राजपूत जातिने केवलमात्र मुसलमानोंको

अफ़गानोंके साथ मिल गये हैं, किन्तु यह छोटी छोटी जाट जातिकी शाखा-सम्प्रदाय पूर्व्व अञ्चलमें "राजपूत" और पश्चिम अञ्चलके "अफगान" और "बलूचों'के नामसे अभिहित हैं। अन्यान्य जातियोंकी वंशावली आलोचना करनेसे बेशुबहा प्रमाणित होता है, कि वह लोग भी "अफगान' या "राजपूत" या जाट जातिके अन्तर्भुक्त है। किसने ही इतिहास-लेखकोंने ऐसा ही लिखा है, कि यह जाट वंश राजपूतोंकी छत्तीस विभिन्न स्वेच्छाचारी राजवंशोंमें एक प्रबल पराक्रान्त राजवंश है। (Tod's Rajasthan I. 106,—टाडका "राजस्थान" प्रथम खण्ड, १०६ पृ०), अधिकतर यह जाट जाति "चन्द्रवंशसम्भूत" और "भोटिया" लोगोंके वंशधरके नामसे परिचय देती है। पटियालेके महाराज भी ऐसा ही परिचय प्रदान करते हैं। भारतवासी नाना सम्प्रदायके असंख्य अधिवासियोंके सम्बन्धमें हमारा ज्ञान बहुत थोड़ा है; इसका प्रमाण यही है, कि टाड साहबने "वर्क" (या "विर्क"—Virks) नामक विख्यात जातिका "चालुक्य" वंशीय जाट जातिके वंशधरके नामसे परिचय दिया है (1, 100,—प्रथम खण्ड १०० पृ०),

सभ्यता स्वीकार करके ही छुटकारा नहीं पाया; वह अपने दासत्वका स्मृतिचिह्नस्वरूप तुर्क देशीय मुद्राका दूसरा नाम—शासकद्योतक "तुर्कानी" (अथवा तुर्क देशीय मुद्रा) शब्द अपनी जातीय भाषामें ग्रहण करनेपर बाध्य हुए थे।

उन्होंने और भी कहा है, कि "काकुर" और "कुकार" सम्प्रदायके जाट और "कुकार-कोकुर" और "काकुर" नामक अफगान जाति भी उसी वंशसम्भूत है; किन्तु "गुक्कार" जाति इन तीन जातियोंके भीतर नहीं है। उमरकोटका राजपरिवार "प्रामर या "शुक्ति" वंशसम्भूत है (Rajasthan I, 92, 93,—राजस्थान प्रथम खण्ड, ६२, ६३ पृ०); किन्तु हुमायूंकी जीवनी लिखनेवालेने प्रमारके राजा और उनके अनुचरोंका "जाट" के नामसे परिचय दिया है। (Memoirs of Humayoon' P. 45)। भौगोलिक समितिके समाचार-पत्र-सम्पादकगण। (Editor of the Journal of the "Geographical Society,"XIV, 207, note) कहते हैं,—पुराने और आदिम संस्कृत शब्द 'जियेसृता" शब्दसे 'जाट" शब्द बना है और इससे यह आदिम अधिवासी जान पड़ते हैं। इसप्रकार शब्द- साधनसे स्वभावतः "गोति" और "इण्डवि" लोगोंके उपनिवेश स्थापनके सम्बन्धमें प्रमाणित विषयपर भी विश्वास स्थापन करनेकी प्रवृत्ति नहीं होती, मध्य एशियामें "जेटिया" (Jettehs) जातिके साथ सेन्दर-शाहके युद्धादि विषयकी जो घटनायें वर्णित हुई हैं,—वह भी प्रतीतिकर जान नहीं पड़ती।

जाट लोगोंको मिसमें ४। प्रसिद्ध शाखायें पञ्जाब, सिन्ध,

लदाख और छोटे तिब्बत नामक सिन्धु नदकी सबसे ऊंची उपत्यका भूमिखण्डमें "भोटो" वंश ही प्रधान और आदिम अधिवासी है। यह प्रबल पराक्रान्त विभिन्न सम्प्रदायकी "तातार" जातिकी शाखा विशेष है। इतिहास-प्रसिद्ध इस सिन्धु नदके अधःप्रदेशमें या गिलगिट और चूलास नामक स्थानमें "दार्द्दश" (Durdoos) और "डूङ्गर" (Duughers) नामक भिन्न भिन्न जातिका ध्वंसावशेष इस समय भी वर्त्तमान है। इसकारडो और गिलगिट दोनों स्थानोंमें ही एक मिली हुई जाति दिखाई देती है, वह "पामीर" और "काशगर" प्रभृति मैलेकी असभ्य "तुर्कमान" सम्प्रदायके अन्तर्गत है। काश्मीरके अधिवासीलोग समय समयपर उत्तर, दक्षिण और पश्चिमसे आ भिन्न भिन्न जातियोंके साथ मिले हैं। किन्तु उनकी भाषा हिन्दुस्थानी है और वह लोग मुसलमान—धर्म्मावलम्बी हैं। "तातार" जातिके साथ पासके सम्बन्धके कारण आदिम "क्षश" या "कच" जातिके आचार-व्यवहारमें कुछ बदलाव पैदा हुआ है। काश्मीरसे सिन्धु नदके पश्चिम ओर वाले पार्व्वत्य प्रदेशमें "काका" और "बुम्बा" जाति बसती है; उसका कोई विशेष परिचय नहीं मिलता। सिन्धुके निकटवर्त्ती स्थानोंमें "यूसुफजई" और अन्यान्य कितनी ही संख्यक अफगान जातिने उपनिवेश स्थापन किया है। इसके सिवा और निम्नांग

चीन, सुराष्ट्र, चुत्यं, सिन्धु, कुड़ियाल और गोडस प्रभृति नामसे अभिहित हैं।

उपत्यकाओंमें कितनी ही संख्यक "गूआर" वसती है।
इस "गूजर" जातिकी ऐतिहासिक अवस्था इस समय भी
ठीक हुई नहीं है, यह लोग अरब देशीय "सय्यद" या "अफ-
गान" और "तुर्कमान" जातिके राजाओंकी प्रजा विशेष हैं।
काश्मीरके दक्षिण वितस्ता नदीके पश्चिमसे सिन्धु किनारे अटक
और कालाबागतक पार्व्वत्यप्रदेशमें "गुकार" "गुनेर" "खा-
ति॰" "अवान" और "जञ्जुस" प्रभृति बहुतसी जातियाँ
दिखाई देती हैं। इस सम्प्रदाय-समष्टिने समय समयपर
हिन्दू जातिके साथ मिलकर उनकी भाषा, भाव और प्रकृति
पाई है। इनमें "जञ्जुस"—प्रधानतः गुकार जाति, वहां
विशेष सम्भ्रमशाली है। पेशावर और उसके निकटवर्त्ती
चारों ओरके पार्व्वत्य प्रदेशमें विभिन्न सम्प्रदायकी अफगान
जाति वसती है, इनमें उत्तर और पश्चिम प्रदेशके "यूसुफ-
जई" और "महमन्द" मध्यप्रदेशके "खुलिल" और अन्यान्य
सम्प्रदाय और दक्षिण और पूर्व्व देशके "अफरीदी" "खट्टक"
प्रभृति लिखने लायक हैं। कोहाटके दक्षिणवर्त्ती पर्व्वतोंमें
और टाङ्क और बन्नू प्रदेशमें वैमेल असंख्य अफगान जाति
वसती है, पशुपालक "मुजिरि" प्रभृति सम्प्रदाय उनमें प्रधान
है। इस प्रदेशमें और एक श्रेणीकी हायक जाति दिखाई देती
है, वह लोग उस अफगान जातिके वंशधरके नामसे प्रसिद्ध
हैं। वस्तुतः सिन्धु नदके दोनो किनारेवाले पर्व्वतमालाकी एक
एक उपत्यकामें एक एक स्वतन्त्र जाति वसती है, उनका
कार्य्यकलाप, भाषा, रीति-नीति, आचार-व्यवहार—सभी आप
[illegible] है। साधारणतः दिखाई देता है, कि [illegible]

हुई निस्तेज आदिम दार्द जाति एक ओर अफगान और दूसरी ओर तुर्कगण द्वारा प्रायः ही उत्पीड़ित होती है।

कालाबागके दक्षिण सिन्धु नदके दोनो पार्श्वस्थ स्थानोंमें और मुलतानकी चारो ओरके अधिवासी, कितने ही बलूच और कितने ही जाट सम्प्रदाययुक्त हैं, इसपर यह लोग उरोरा और रामेन जातिके साथ मिल गये हैं। सुलेमान पर्व्वतश्रेणी-के निकटवर्त्ती स्थानोंमें अफगाग जाति दिखाई देती है। सिन्धु देश और शतद्रु के मध्यवर्त्ती पतित खेतोंमें "जुन" "सुटिग" "शियाल" "कुरल" और काथि प्रभृति कितनी ही संख्यक विभिन्न जतीय अधिवासिगण बसते हैं, पशुपालन और डकैती इनका प्रधान रोजगार है। यह जाति-समष्टि और शतद्र और चन्द्रभागाके मध्यवर्त्ती काश्मीरके दक्षिणके स्थानों-में चिव और वहाओ जाति इस अञ्चलके आदिम अधि-वासी हैं। विजेता हिन्दू और मुसलमानोकी वश्यता स्वीकार करनेपर भी इनकी आचरपद्धतिमें कुछ भी बदलाव हुआ नहीं है। चन्द्रवंशसम्भूत होनेके कारण गर्व्वान्वित भुटि जाति और भी दो एक जातिके पुराने समयके विजेतृवृन्द या औपनि-वेशिकगणमें गिनी जा सकती है, बादको इन्होंने बहुत क्षमता-शाली किसी न किसी जातिकी वश्यता स्वीकार की है। बल्कि इनमें कोई सन्देह नहीं है, कि एक समय भुटि या भाटी जातिने भारतवर्षके उत्तर-पश्चिम भागमें प्राधान्य स्थापन किया था। यह जाति इस समय चारो ओर फैल पड़ी है, किन्तु यशल्मीरके बालुकाकीर्ण प्रस्तरोंमें इस समय भी इनका प्राधान्य रहता है। शतद्र के निकटवर्त्ती पाकपट्टनकी चारो ओर "उट्ट"

और "योहिया" सम्प्रदायके राजपूत जातिका * वासस्थान है। शतद्रु के अध:प्रदेशोंमें "लुङ्गा" जातिके कितने ही अधिवासी दिखाई देते है, यह लोग एक समय मुलतान और "उच" प्रदेशमें राजत्व करते थे।

काश्मीर और शतद्रुके मध्यवर्त्ती पार्व्वत्य प्रदेश राजपूतोंके अधिकृत है। मुसलमानोंके आक्रमणके समयसे शान्तिकुशल भारतवासिगण एक ओर राजपूतानेमें और बुन्देलखण्डके पर्व्वतोंमें और दूसरी ओर हिमालयके गह्वरमें विताड़ित हुए है। जम्बू की चारो ओरके स्थानोंमें और पूर्व्व ओर गङ्गा और यमुनातक फैले हुए समतल क्षेत्रके लोगोंकी संख्यामें अधिकांश ही एक प्रकारकी मिली हुई जाति है, यह लोग "डोग्रा"

---

* टाड कहते हैं,—यह "योहिया" वंश इस समय लोप हुआ है। (Rajasthan, I, 118—राजस्थान, प्रथम खण्ड, ११८ पृ०)। फ़ीरोज़पुर और भावलपुरके मध्यवर्त्ती शतद्रु के दोनो किनारोंके स्थानोंमें ऐश्वर्यशाली कृषिजीवी जोहिया लोग इस समय भी बसते हैं, किन्तु अब उन्होंने मुसलमान धर्म्म ग्रहण किया है, टाडकी लिखी "जुहिया" (I, P. 114.) जाति शतद्रुकी निचली जमीनोंकी अधिवासी है। यह लोग मुसलमान और कृषिजीवी हैं, यह लोग वहां "डेहे" या "डाहोर" और "डाहार नामसे अभिहित होते हैं। यह लोग और अन्यान्य कितनी ही जातियोंके कितने ही अंशने राठोरवंशीय राजपूतोंकी और कितने ही अंशने "जाति"योंकी अधीनता स्वीकार की है।

ामसे अभिहित और राजपूत वंशके नामसे गर्व्वित हैं। यहां
प्रौर भी कितनी ही मिली हुई जातियां दिखाई देती हैं।
इनमें "गाचि' नामक जाति क्षत्रियके नामसे और "कोलि" जाति
ग्रादिम अधिवासीके नामसे परिचित हैं। मध्यभारतकी
असभ्य पार्व्वत्य जातिके साथ इनकी आचार-पद्धति, यहां-
तक, कि भाषामें भी विशेष सादृश्य दिखाई देता है। वर-
फीली जगहोंमें "भूटी" नामक एक मिली हुई जाति बसती है;
काश्मीरके निकटवर्त्ती स्थानों और शहरोंमें, वहांकी उपत्यकामें
दूसरे प्रकारकी मिली हुई जाति दिखाई नहीं देती।

वितस्ता (झेलम) से हांसी, हिसार और पानीप-
ततक फैले हुए प्रान्तरोंके केन्द्रस्थलमें और खुशाब और
पुराने दियालपुरके उत्तर और वाले समतल ‹‹ इसमें "जाट"
अधिवासी ही प्रधान हैं। किन्तु लाहोर और अमृतसरकी
चारो ओर, गुजरातसे शतद्रुके उत्तर और दक्षिण ओर
वाले भातिन्दा नगर और सुनामतक सिख-राज्य फैला है।
पूर्व्वोक्त अंश 'माझा" या मध्यदेशके नामसे और दूसरा मालवा
नामसे अभिहित है। मध्यभारतके मालवा देशके साथ उर्व्वरता
और सजीवताके कल्पित सादृश्यके कारण, यह "मालवा" नामसे
प्रसिद्ध है। दक्षिण और पश्चिमके "भुटो" और "डोगार" और
पूर्व्व ओरके "रायेन" "रङ्" और अन्यान्य जातिके कितने ही
संख्यक अधिवासी आपसमें मिल गये हैं। "गूजर" और
"भुटो"के सिवा अन्यान्य राजपूत जातियां सब जगह ही अधिक
परिमाणसे वर्त्तमान हैं। किसी किसी नगर या ग्राममें "पठान
नामक दूसरी एक सम्प्रदाय दिखाई देती है। पठानोंमें "कुसुर"

इसतरह प्राहेशिक राजधानीके सब विभागोंमें पवित्र आश्रय

सूचीपत्रमें कितने वंशोंका विषय लिखा हैं; इससे अन्तत: हरेक ग्रामकी प्रवल जातिका विवरण दिखाई देता है। वह सूचीपत्र संशोधित और परिवर्द्धित हो अनुसन्धान और फिर संशोधनके लिये मुद्रित हुआ था।

प ाव और उसके निकटवर्त्ती स्थानोंमें सिखोंकी संख्या कुल ५००,००० निरूपित हुई है। (Compare Burnes, Travels, i. 289, and Elphinstone, History of India, i. 275, note) किन्तु गणनासे इस निरूपित संख्याका तीसरा अंश या आधा अंश कम जान पड़ता है। इस सम्बन्धमें कोई ठीक प्रमाण नहीं मिलता; सुतरां इस विषयमें मत प्रकाश करना भी उचित नहीं। तब भी, सिख-सैनिकोंकी संख्या कभी ३०,०००से कम देखी नहीं गई; समय समयपर उनकी संख्या ढाई लाखसे भी ज्यादा कही गई है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि चन्द्रभागा और यमुनाका मध्य-वर्त्ती सिख सम्प्रदाय स्वधर्म्मावलम्बी लोगोंकी पूर्व्वोक्त संख्याके आधे लोग संग्रह और एकत्रित कर सकते हैं। तब भी यह निश्चित है, कि कृषिजीवी सिख जातिका कोई कोई सम्प्रदाय आज भी अस्त्र ग्रहण नहीं करता और अन्यान्य परिवारका अन्तत: एक सिनरसीदा पुरुष खेती-मालगुजारीके लिये युद्धमें नहीं जाते। इस कारण सब सिख-जातिके लोगोंकी संख्या,—स्त्री-पुरुष और पुत्र-कन्या सहित कुल १२ लाख ५० हजार या १५ लाख जान पड़ती है।

सब भारतवर्षके हिन्दू मुसलमानोंकी आनुपातिक संख्याके

* था। [illegible]

हुई। [illegible]

[illegible] था। हिन्दुस्थानके [illegible] और [illegible] जातिके

कितने ही [illegible] है। इन

सब विभिन्न सम्प्रदायोंमें [illegible] सम्प्रदाय ही विशेष [illegible]

या एकत्र इनमें आबद्ध हुए नहीं हैं: इन लोगोंकी संख्या भी

इतनी ज्यादा नहीं थी, कि पारिपार्श्विक [illegible] जाति पर प्रभुत्व

सम्बन्धमें साधारणतः अनेक दुमत दिखाई देता है। बादशाह जहांगीर कहते हैं, (Memoirs, P. 29,) हिन्दू और मुसलमानोंकी आनुपातिक संख्या यथाक्रम ५ और १ है। किन्तु गङ्गाकी उपत्यकाके अधिवासियोंकी वर्त्तमान आनुपातिक संख्याकी अपेक्षा यह बहुत थोड़े है। एलफिनष्टनकी (History of India, ii, 2?8 and notes) मतसे सब देशके लोगोंकी संख्याका परस्पर आपेक्षिक अनुपात यथाक्रम ८ और १ मात्र है।

* पञ्जाब और गङ्गाके तीरवर्ती स्थानोंमें ब्राह्मणगण शिक्षित सम्प्रदायकी तरह पण्डित न होनेपर भी साधारणतः "मिश्र" "मित्र" या "मिथर" नामसे अभिहित हैं। ऐसी [illegible] है और बहुदर्शी इतिहासज्ञ अनेक भारतवासी अनुमान करते हैं, कि पुराने समय मुसलमान आक्रमणकारियोंसे यह उपाधि पहले चला गये हैं। इससे सम्भवतः जान पड़ता है, कि एकेश्वरवादी प्रतिमाभङ्गकारियोंने ब्राह्मणोंको सूर्य्योपासकके नामसे निर्द्देश किया है।

हैं। इनके सम्बन्धमें विशेष आलोचना कर्त्तव्य है। तुर्क देशीय "चिङ्गानी," रूस-जातीय "टाइगन," जर्म्मनीय "जिगुयेनार" इटलीके "जिङ्गारस" स्पेन देशीय "गिटानो" और अङ्गरेजोंकी "जिप्सी" प्रभृति जाति और "चाङ्गारगण" एक ही जाति ज्ञात पड़ते हैं। दिल्लीकी चारों ओर बसनेवाले अधिवासी "कञ्जर" नामसे अभिहित हैं। कुलटा, नटी बालिकायें पञ्जाब प्रदेशमें "कञ्जर" नामसे परिचित हैं।

है, मुलतानमें यह शब्द हिन्दू और रोजगारी प्रभृति शब्दोंकी तरह घृणा-व्यञ्जक है। मध्यभारतमें केरार नामकी एक जाति बसती है; यद्यपि प्रायः एक शताब्दिके उपरान्त इन केरारोंकी एक भिन्न जाति गठित हुई थी, तथापि उस समय मध्यभारतमें केरार शब्द चलती बातोंमें पार्व्वत्य या बनैला समझा जाता। अध्यापक विलसन कहते हैं, कि प्राचीन आदिम "किरात" और "केरार" एक ही जाति है। वस्तुतः हिन्दुओंके पांच प्रस्थोंमें या प्रदेशोंमें केरार एक है। यह पांचों प्रस्थ यथाक्रम,—"चीनप्रस्थ, यवनप्रस्थ, इन्द्रप्रस्थ, शाखुलप्रस्थ और किरातप्रस्थ नामसे अभिहित हैं। भारतवासी इन किरात प्रस्थको उज्जयनी और उड़ीसेके अन्तर्वर्त्ती प्रदेशोंके नामसे समझते हैं। (Compare Wilson, "Vishnoo Pooran, P. 175, note for the Keratas of that book) नारदृहार [illegible] 'राजगढ़' नामसे और अधिक [illegible] "किरियामण्डल" नामसे परिचित है। इस शब्दसे [illegible] समझा जाता है।

इन सब विभिन्न जातियोंके वंश और धर्म अलग हैं; नही तो अलग दो जातियां साधारणतः एक जाति समझी जातीं। लदाखके अधिवासी और तधीनस्थ राजवंश "लामा" प्रचारित बौद्धधर्मावलम्बी हैं, अभीतक बौद्धधर्म मध्यभारतकी सब जगह ही अधिक परिमाणसे प्रचारित है। किन्तु इसकारदोकी तिब्बती जाति, गिलगिटकी "दार्द" और सिन्धुके पार्वत्य प्रदेशमे "काका" और "बाम्बा" लोग "शीया" सम्प्रदायके मुसलमान हैं। काश्मीर किश्टोयार, सिम्बर, पाखली और सिन्धुनद और सतपुरा पर्वत श्रेणीके पश्चिम दक्षिण पर्वतोमें "सुन्नी" साम्प्रदायके मुसलमान वसते हैं। पेशावर सिन्धुनदकी दक्षिणवर्त्ती निम्नभूमि, सुलतान और पिण्डदादनखां, पुनिपट और दीपालपुरतक उत्तर देशीय अधिवासी मुसलमानधर्मावलम्बी हैं। किश्टोयाके और भिम्बारके पूर्व्व हिमालयके अधिवासी ब्राह्मण्यधर्मानुयायी हिन्दू जाति हैं। उत्तर और बौद्धमतावलम्बी कितनी ही औपनिवेशिक और उत्तर-पश्चिम प्रदेशमें कितनी ही मुसलमान जाति दिखाई देती हैं। माझा और मालवेके अधिकांश "जाट" अधिवासी सिखधर्मावलम्बी हैं, किन्तु वितस्ता और यमुनाके मध्यवर्त्ती सब लोगोकी संख्याके आनुमानिक तृतीयांशने नानक और गोविन्द-प्रचारित नयाधर्म ग्रहण नहीं किया। बाकी दो तृतीयांशमें कितने ही मुसलमान और कितने ही ब्राह्मण्य धर्मानुयायी है।

"वे" शहरके सिवा और प्रत्येक शहरमें, पेशावर और काश्मीरके अन्तर्गत मुसलमानोंके अधिकांश खिलेके लोगोंमें

सुदूर उपत्यकाके अधिवासियोंकी कोई शिक्षित धर्म्मोपदेशक नहीं थे, या वह लोग किसी विशेष धर्म्मपर विश्वास भी नहीं करते थे। वह प्रत्येक ऊंचे गिरिशृङ्गकी अधिष्ठात्री देव-देवीकी उपासना करते और तुषाराच्छन्न प्रति पर्व्वतचूड़ापर अधिष्ठात्री उपास्य देव-देवीका मन्दिर बनाते थे। ईश्वरके अनुगत और आज्ञावाही पुरुष समय समयपर जिन प्रहेलिकामय बातोंसे ईश्वरकी आज्ञा प्रकट करनेपर आदिष्ट होते,—वह लोग उसपर पूरा विश्वास करते थे। उनका ऐसा ही विश्वास है, कि पर्व्वादि-उपलक्ष्यमें समारोह-यात्राके समय "दैत्य" या "टिटान"की प्रतिमूर्त्ति वहनके समय दाहने और बांये कन्धेपर प्रतिमाका आपेक्षिक गुरुत्व,—सौभाग्य-दुर्भाग्य और सुख-दुःखका परिचायक है। *

---

* पञ्जाबमें हिमालयके नीचे "गुगा" या "गोगाके" अनेक मन्दिर दिखाई देते हैं। नीच जातिके दरिद्र पुरुष ही पुराने वीर-पुरुषोंके स्मृति-चिह्नस्वरूप इन मन्दिरोंका विशेष सम्मान करते है। उन वीरपुरुषका जन्मवृत्तान्त और स्वाभाविक आकृति तरह तरहसे कही गई हैं। एक कहानीमें लिखा है,—"वह वीर-पुरुष गजनीके अधिपति थे; अर्ज्जुन और सुरजान नामक दो भाइयोंके साथ उनका घोरतर युद्ध हुआ और उसी युद्धमें वह मारे गये। किन्तु कैसा आश्चर्य है। एक पर्व्वत विभक्त हुआ और गुगा फिर युद्धके लिये सज्जित हो पर्व्वतसे घोड़ेकी पीठपर बाहर हुए।" और एक कहानी कही गई है,—"गुगा राजवाड़ेके मरु-

दैवप्राप्त पदमर्य्यादा और समसामयिक धी-शक्तिका साफल्य पानेकी अपेक्षा जाति और धर्म्मका विशेषत्व,—सब जगहोंके लिये अधिक परिमाणसे प्रयोजनीय है। किन्तु उत्पत्ति वंशमर्य्यादा, आचार-पद्धति और धर्म्मसंस्कार प्रभृतिके प्रभावका विषय विशेषरूपसे आलोचना करना निष्प्रयोजन है। बुद्ध, ब्रह्मा और मुहम्मद प्रचारित भिन्न भिन्न धर्म्ममत एशियाकी सब जगहोंमें ही विस्तृत भावसे प्रचलित था,—इन सब विभिन्न धर्म्मोंके विश्वासपर सहस्र सहस्र लोगोंके प्रात्यहिक आचार-व्यवहारका विशेष परिवर्त्तन साधित हुआ था। किन्तु अधिकांश स्थलोंमें इन सब धर्म्ममतके उपासकगण लोगोंको उन्मत्त करनेमें समर्थ नहीं हुए। उनका धर्म्म इस समय जीवनीशक्तिहीन है। इस समय इन धर्म्ममतोंपर सामाजिक प्रथाके सिवा अपरिवर्त्तनीय धर्म्मरीतिके नामसे कोई विश्वास नहीं करता। उनका ऐसा ही विश्वास है, कि यह धर्म्ममत बहुत शताब्दियोंकी अभ्यस्त रीतियो प्रति स्वाभाविक और बद्धमूल सम्मान दिखानेके सिवा और कुछ नहीं है। उस समय तिब्बतियोंमें और हिन्दू जातिमें उनका चिरन्तन पौत्तलिक धर्म्म ही प्रचलित था। असभ्य तिब्बतीयगण निःसंशय चित्तसे उस समय भी

मय, प्रदेशके दाहे-डुरेरा नामक स्थानके अधिपति थे।" इन वीर पुरुषके सम्बन्धमें टाडने जो लिखा है, उससे इस वृत्तान्तके अनेक विषयमें ऐक्य दिखाई देता है। (Rajasthan, ii, 447) टाड कहते हैं यह वीर मेहदमैनिकोंके साथ युद्धमें

इस भ्रमविषयपर विश्वास करते थे, कि जगदीश्वरने मनुष्य-शरीर धारणकर पृथिवीमें औतार लिया और भक्तगणसे पार्थिव विपद पूर्ण करने है। इधर हिन्दुओंने ऐसे प्रणयजनक विषय-पर विश्वास स्थापन किया था कि ईश्वर मट्टी या पत्थरकी मूर्त्तिमें आंशिक रूपसे रहनेमें प्रसन्न है। सुतरां तिब्बती और हिन्दू दोनो ही जातियां विदेशियोंके अस्वाभाविक नये धर्म-मतके प्रचारमें बाधा पहुंचाने लगीं। किन्तु जिस शक्तिबलसे सोमसलजसे सोमनाथतक भविष्यद्वक्ता शाक्यके मन्दिर निर्म्मित हुए थे; जिस शक्तिसे ब्राह्मणगण भारतीय अन्यान्य जातियोंमें श्रेष्ठ और साहित्य और दर्शनशास्त्रमें अशेष पारदर्शी हुए थे, जिस शक्तिबलसे उन्होंने विजयश्री पाई थी;—ब्राह्मणों और बौद्धोंमें वह पुरानी सरल और सतेज दैवशक्ति अब नहीं है। अपने अपने अमरत्व पानेकी आशासे बौद्ध-मतावलम्बी और वेद-धर्म्मानुरागी दोनो ही परम सुखी थे, सुतरां जन-साधारणके इस धर्म्म-ग्रहणके सम्बन्धमें वह प्रत्येक ही पूरे उदासीन थे। वह लोग जैसे अपने अपने धर्म्म विषयमें दूसरेकी अनधिकार-चर्चा सहनेमें अनिच्छुक थे, वैसे ही दूसरेके या विरुद्ध धर्म्मावलम्बियोंके भविष्यतके सम्बन्धमें आलोचना करनेमें भी बिलकुल ही निस्पृह थे। यहांतक, कि जो मुसलमान किसी प्रत्यक्ष ईश्वरमूर्त्तिकी कल्पनाकर देव देवीकी उपासना करते नहीं थे, वह भी समझते,—मरा आदमी ऐश्वरिक शक्तिका आधार है और उनका कब्रस्थान तीर्थस्थान स्वरूप है। सुतरां जिस शक्तिबलसे असभ्य अरब जाति और कष्टसहिष्णु स्वधर्म्मत्यागी "तुर्कमान"

रागी हो, वह अपनी अपनी विचारशक्ति और युक्तिकी आशा सम्पूर्ण निर्भर कर सकते हैं। इसलिये ही नये सब धर्म्मप्रचारकगण इन्हें खृष्टीय धर्म्ममें दीक्षित करना बहुत दुरूह समझते हैं और उनका सोचा हुआ उपाय भी कार्य्यकरी नहीं होता। अपने धर्म्मके अनुरागी ख्रस्तान धर्म्मप्रचारक विज्ञानका और समालोचनाका असार युक्तिजाल फैलाकर ही निरस्त रहते हैं, वह लोगोंको अन्तरात्माको उत्तेजित करनेमें या कल्पना-शक्तिका प्रकाश करनेका प्रयास नहीं करते, या सुननेवालोंके आशातीत किसी तत्त्वका निर्णय करनेमें भी समर्थ नहीं होते। ख्रस्तानधर्म्मप्रचारक उपवासी हो मरुभूमिमें जाने या धर्म्मोपासनाके लिये निभृत पर्व्वत-कन्दरमें रहनेमें असमर्थ हैं। वह साधारणके बहु-जन्मपोषित मानसिक आशाके पूरणके विषयमें होनहार कहनेमें अपारक हैं। किसी नये धर्म्मके प्रचारके समय अस्त्रके साहाय्यसे धर्म्मप्रचारकी सिद्धिकी विशेष सम्भावना और इस विषयमें ईश्वरका प्रत्यक्ष अनुग्रह है,—आदि सन्देहमूलक विषयका प्रचार करनेमें असमर्थ हैं। धर्म्मविषयमें पवित्रताका किसी तरहके कठोर विधानसे लोगोंकी मानसिक धारणा बद्धमूल नहीं होती। कारण, 'पण्डित और सुज्ञ लोग—तर्कशास्त्र, नीतितत्त्व, यद्दांसक, कि ईश्वरवाणी प्रभृति विषयोंमें भी आपसमें विरोध है। धर्म्मानुरागी खृष्टीयधर्म्मप्रचारक ख्रस्तानोंमें हो चाहें, तो ईश्वरोपासक, इन्द्रियसुखासक्त, वैराग्ययुक्त विभिन्न सम्प्रदाय गठन कर सकते हैं, चाहें तो वह पितृमातृहीन पौत्तलिक धर्म्मावलम्बी बालक-बालिकाओंको शिक्षादान और प्रतिपालनके सम्बन्धमें

तरह तरहके प्रशंसनीय कार्य्यमें दृढ़प्रतिज्ञ हो सकते हैं; चाहें तो उनकी प्ररोचनासे कितने ही अज्ञानी और दरिद्र पुरुष, यहांतक, कि कितने ही ज्ञानी और तत्त्व समझनेवाले पुरुष भी दूसरा धर्म्म ग्रहण कर सकते हैं, किन्तु भारतीय विभिन्न जाति और मुसलमानोंको ख्रस्तान धर्म्ममें दीक्षित करना वह अब भी आशासे बाहरकी बात समझते हैं। *

पुराने धर्म्मानुरागी पुरुष अपने अपने सरल धर्म्म-

---

* शास्त्रीय युक्तितर्क द्वारा या प्रतिभासम्पन्न शिक्षित लोगों द्वारा किसी विषयमें असारत्व प्रमाणित होनेपर, लोग इस विषयका असारत्व सहज ही समझ सकते हैं। युक्ति-तर्क द्वारा शिक्षित सम्प्रदायको कोई बात समझाना निष्फल है। डाक्टर 'ली' द्वारा अनुदित "मार्टिन" का "परिशियन कण्ट्रोवरसी" ही उसका सच्चा दृष्टान्त है। इलाहाबादके ख्रष्टान मिशनरियों और लखनऊके मुसलमान मुल्लाओंके आपसमें वादानुवादसे भी इस सम्बन्धमें कितनी ही बातें प्रमाणित हुई हैं। राममोहनरायके "आस्तिकता और वेद" विषयक ग्रन्थमें और कलकत्तेकी "तत्त्व-बोधिनीसभा" की चिट्ठी-पत्रोंसे इस विषयके अनेक दृष्टान्त दिखाई देते हैं। "मूरक्रोफटका भ्रमणवृत्तान्त" ग्रन्थके जिस अंशमें कितने ही उदासी संन्यासीका वर्णन है, मूरक्रोफटने उसकी तरह एक ईश्वरके माननेका उपदेश दिया है, अपने अपने सन्तोषके लिये हिन्दू लोग उस अंशको पढ़कर देखें। (Moorcroft "Travels," i, 118)

मतका अनुसरण करते हैं इससे ही वह परितृप्त हैं, दूसरे धर्म्मके सम्बन्धमें वह पूरे उदासीन हैं। किन्तु सिख लोग और एक नये धर्म्मके दीक्षित हैं,—इस नये धर्म्ममें ब्रह्मा और मुहम्मद प्रचारित दोनो तरहके ऐश्वरिक मत मौजूद हैं। इस समय वह इस नये धर्म्मके नये भावमें विभोर हैं,—इस धर्म्मके विश्वासके प्रभावमें वह एक अभिनव उत्साहसे उत्साहित हैं। अबतक उन्होंने ऐसी ही धर्म्म-शिक्षा ग्रहण की है, कि जगदीश्वर उनके साथी हैं, उनके सब कामोंमें वह साहाय्यकारी और बहुत जल्द उनके शत्रुको विध्वस्तकर वह अपना माहात्म्य प्रचार करेंगे। सभ्य अङ्ग-रेज जातिको सभ्यता और शासनप्रणालीका श्रेष्ठत्व इन दो कारणोंसे ही सिखोंके इस अभिनव धर्म्मनीतिका मनयोगके साथ पीक्षा करना उचित है। गुरुगोविन्दके शिष्यगण जब अपनी जातिके भविष्यत भाग्यफलकी आलोचना करते हैं, तो उत्साहसे उनकी आंखें लाल होती हैं,—उत्तेजनासे मांस-पेशी कांपने लगती है। जिन्होंने गुरु गोविन्दके किसी शिष्यकी ऐसी वक्तृता सुनी है,—वही समझ सकेंगे, कि शक्तिबलसे असभ्य अरब जाति रोम और फारिस देशीय वर्म्मधारी असंख्य सैन्यके विरुद्ध अस्त्रधारण करनेके लिये साहसी हुए थे,—वही समझ सकेंगे, कि शक्तिबलसे अङ्गरेजोंके साहसी धर्म्मा-तुरत पूर्व्वपुरुषगणने एशियाकी प्रान्तसीमामें धर्म्म-युद्धके लिये यात्रा की थी। सिख जाति अलग अलग बहुत सम्प्रदायोंमें विभक्त नहीं है। वह लोग धर्म्मानुरागी और रणनिपुण हैं; इनके सैन्यकी संख्या कम होनेपर भी उनकी एकता, धर्म्म-

नुराग और रणनैपुण्यके अनुसार ही उनका सैन्यबल स्थिर करना कर्त्तव्य है। "खालसा" या "साधारण तन्त्र"की रक्षाके लिये वह बहुत कष्ट सहते,—यहांतक, कि जीवनविसर्ज्जन करनेमें भी वह कृतसंकल्प थे। वह युद्धमें हारकर भी निरुत्साह होते नहीं थे, बल्कि नानक और गोविन्द प्रचारित दो तरहके धर्म्ममतका प्रचारकर दूने उत्साहसे भारतीय अन्यान्य जातियो,—अरब, फ़रिस, तुर्क, प्रभृति विभिन्न सम्प्रदायको,—इस नये धर्म्ममें दीक्षित करनेके लिये यत्नवान् होते थे।

धर्म्मके विशेषत्वकी अपेक्षा जातिगत विशेषत्व ही चिरस्थायी और बहुत बद्धमूल संस्कार जान पड़ता है। किसी सम्प्रदायका इतिहास कहनेपर, उसकी उत्पत्ति और गठन, उसका वंश और धर्म्म प्रभृति एक तरहसे लिखना चाहिये। भारतवर्षके उत्तर और पश्चिम खण्डमें "जाट" या "ज्याठ" जाति मिहनती और उन्नतिशील कृषक सम्प्रदायके नामसे परिचित थी; परन्तु वह सैनिक-सम्प्रदायकी तरह युद्धके समय युद्ध करती और युद्धके उपरान्त कृषिकार्य्य करनेमें सदाभावसे अभ्यस्त थी वह भारतवर्षकी कृषकश्रेणियोंमें सबसे श्रेष्ठ थी। यमुनाकिनारेके स्थानोंमें उनका प्राधान्य सहज ही जाना जाता है भरतपुर उनकी क्षमताकी गवाही देता है। शतद्रुके किनारेके प्रदेशोंमें धर्म्म-संस्कार और राजनीतिक उन्नतिके फलसे, एक नई शक्तिके साहाय्यसे वह नये बलसे बलवान थे उनकी कार्य्यशीलता और शीघ्रता बहुत परिमाणसे प्रकाश हुई थी; इस समय वह लोग स्वार्थसिद्धिके लिये दूने साहससे साहसी हैं *

* यह बात हमें उत्तर-पश्चिम प्रदेशके छोटे लाट मिस्टर

यद्यपि 'गूजर' 'जाट' और अन्यान्य कई एक सम्प्रदायके लोग जाटोंकी तरह अच्छा काम [illegible] निपुण नहीं हैं तथापि परिमित [illegible] उन्नति कई एक बातोंमें यह जाट जातिसे [illegible] किसी अंशमें कम नहीं है। राजपूत जाति साधारणतः [illegible] सब जगह ही विख्यात हैं। एक ही सम्प्रदायके राजपूतगण बहुत परिमाणसे एकत्र वास करते हैं। हिन्दू या मुसलमान,—दोनों ही धर्मावलम्बी "गूजर जाति कृषिकार्य्यको अपेक्षा पशुपालन कामको ही श्रेष्ठ समझते और गूजर लोग सब जगह ही पशुपालक सम्प्रदायभुक्त हैं। बलूची लोग बहुत दिनके अधिकृत स्थानोंमें भी यत्नपूर्व्वक-खेती नहीं करते। पठानी लोग स्वभावतः ही कलह-प्रिय और दस्यु स्वभावापन्न हैं। यह लोग ऊंट पालकर प्रधानतः जीवन बिताते और ऊंटदलके परिचारक रूपमें भारतवर्षके सब उत्तर-खण्डमें घूमते हुए जीविकानिर्व्वाह करते हैं। अफ़ग़ान-जातिने भी इस समय कृषिकार्य्यमें विशेष पारदर्शिता-

---

टामसनसे मालूम हुई है, कि ताल्लुकदार (जागीरदार) या पहलेके खरीदार मालगुजारी अदा करनेमें असमर्थ होनेपर, मालिकी हक बेचनेके लिये जो अङ्गरेजी प्रथा प्रचलित है, उसी प्रथाके अनुसार उत्तर भारतकी जाट-जातिने क्रमशः अधिकांश जमीन दखल कर ली है। साधारणतः सुनाई देता है, कि कोई जाट ५०) रुपये जमा कर सकनेपर, उसे विवाहादि तथा आमोद-प्रमोदमें खर्च न कर उन्हीं रुपयों द्वारा एक कूप खुदाता या एक जोड़ा भैंस खरीदता है।

पाई है। जबसे वह भारतवर्षमें आ निर्व्विघ्न शान्ति स्थापनकर रहनेमें समर्थ हुए हैं, या जिस समयसे उन्होंने अपने देशमें निरापद रहना सीखा है, तबसे वह कृषिकार्य्यमें विशेष उन्नति-शील है। लेकिन वह लकूचियोंकी अपेक्षा भी ज्यादा कलह-प्रिय हैं; इसलिये ही सब जगह वेतनभोगी अफगान-फौजें दिखाई देती हैं। वस्तुतः यह दोनो जातियां अपने अपने देशमें डाकूदलसे कितने ही अंशमें श्रेष्ठ और उन्नत हैं। विधर्म्मियोंके प्रति उनका अत्याचार प्रधानतः धर्म्मके नामसे ही समर्थित होता है, धर्म्मके नामसे ही वह दूसरेके विरुद्ध शत्रुताचरण, या शत्रुके विरुद्ध अस्त्रग्रहण करते हैं और सभी धर्म्मावलम्बी एकत्रित हो आपसमें सहायता देनेके लिये समर्थ होते हैं। नगर और शहरके "क्षत्रिय" और "अरोडा" लोग बागियोंकी तरह अध्यवसायशील और रोजगारियोंकी तरह मितचारी हैं, वही देशके प्रधान राजस्वसचिव और धनाध्यक्ष हैं। क्षत्रिय लोग एक समय राजपदपर प्रतिष्ठित थे, अब भी उनके हृदयमें समय समयपर वीरोचित पुरानी याद जाग उठती और वह दक्षताके साथ राज्य-शासन और सैन्यपरिचालन करते हैं। * बलिष्ठ काश्मीरी लोग प्रचुर परिमाणसे शिल्पजात द्रव्य तय्यार करते हैं। कार्य्यदक्षता और

---

* रणजित्सिंहके सेनापतियोंमें हरिसिंह नामक एक सिख ही श्रेष्ठ थे, वह सिख जोरपुरुष जातिके क्षत्रिय थे। रणजित्सिंहके अधीनस्थ अन्यान्य शासनकर्त्ता गोर्नीसुदकमचन्द और ज्यालासाहबने एक ही सिख वंशमें जन्म लिया था। 'बालु'

शिक्षा प्राप्तिके लिये एक ओर वह जैसे विख्यात हैं, दूसरी ओर वैसे ही वह दरिद्र. इन्ज और चरितहीनके नामसे

वालिया" सम्प्रदायके सिख शासनकर्त्ताके अनुचर "खुना" सम्प्रदायके क्षत्रिय वंशोद्भव बुलूमलने बहुत विद्यार्जन किया था और शिक्षित सम्प्रदायमें उनका विशेष आदर था। जलन्धर, दोआब और लाहोरके ब्राह्मण लोग बुलुमलको इस अद्भुत शिक्षाके लिये बहुत कुछ उनसे हिंसा करते थे। जो चण्डमल उस समय हैदराबादके निजामका राजकर्म्म करते आते थे, वह चण्डमल भी आर्य्यजातिके क्षत्रिय-वंशसम्भूत थे और उन्होंने निजाम राज्यके वेतनभोगी सिख सैन्योंको अरब और अफगानोंके विरुद्ध अस्त्रधारण करनेमें उत्साहित और उत्तेजित किया था। इस समय सैनिक और राजपुरुषोंसे महाजन और दुकानदारकी अवस्थामें क्षत्रियोंका अधःपतन हुआ है। इतिहासमें यहूदियोंकी अवनतिके सम्बन्धमें जैसा कहा गया है, उनके साथ क्षत्रिय जातिकी इस अवनतिका बहुत सादृश्य दिखाई देता है। मिहनती और कार्य्यकुशल पुरुष अपना अपना रोजगार आप ही खोज लेते हैं। विजेता रोमनकी अधीनता स्वीकारकर और वर्त्तमान समय तुर्क नरपतियोंके अधीन रह यूनानी लोगोंकी जैसी अवस्था बदल गई,—उसकी आलोचना कर देखनेसे भी इस सम्बन्धमें अनेक प्रमाण पाये जाते हैं। हमलोग और भी जान सकते हैं, कि मध्ययुगके सोनियाईको अन्यान्य प्रजाओंमें पराजित "मूर" लोग ही ज्यादा मिहनती थे। आजकल अङ्गरेजोंकी अधिकृत भारतवर्षको मुगलजाति धीरे धीरे

परिचित है। काश्मीरके दक्षिण और पूर्ववर्ती पहाड़ी जातियोंमें जाति-धर्म्मगत कोई बहुमूल प्रकृत विशेषत्व दिखाई नहीं देता। तब भी, जरासा प्रभेद दिखाई देता है, कि जाति गौरव और साहसिकताके लिये कई एक बेमेल राजपूत जातियां अन्यान्य जगहोंमें आदरणीय है, इस समय भी कही कहीं, कई एक बेमेल राजपूत जातियां उस जातिके गौरव और साहसिकताका आदर करती हैं। "गकार" लोगोंने एक समय बाबरके विरुद्ध अस्त्रधारण किया था और फिर हुमायूंके राज्य पानेमें सहायता की थी,—वह याद इस समय भी इनके हृदयमें जाग रही है। तिब्बती लोग मिताचारी है, वह लोग उनकी श्रेणीबद्ध छोटी छोटी जमीनोंमें खेतीकर जीवन बिताते हैं। किन्तु वह लोग बड़े ही भीरु है। उनकी वर्त्तमान अवस्थाकी आलोचना कर देखनेसे जान पड़ता है, कि वह लोग किसी समय भी स्वाधीनता पानेमें समर्थ न होंगे। नृशंसरूपसे सताये जानेपर भी वह उसमें बाधा देनेमे अक्षम हैं। स्त्रियोंके बहुत स्वामी और बहुत विवाहकी प्रथा तिब्बतियोंमें रुचि और धर्म्मके विरुद्ध जान नहीं पड़ती; बल्कि ऐसा कहते हैं, कि यह एक पुरानी अनिवार्य्य रीति है। पहाड़ी कृषिकार्य्योपयोगी प्रत्येक भूमिखण्डमें बहुत दिनोंसे

व्यवसाय-वाणिज्यमें नियुक्त होती जाती है। इन समय स्पष्ट ही जान पड़ता है, कि साकूमन अधिकृत "इङ्गलण्ड" का फ्रान्सीसी विजित "गाल" का और 'गथ" राज्ययुक्त इटालीका रोमगारी और धर्म्मभाजक सम्प्रदाय प्रधानतः रोमन वंशसम्भूत है।

खेती होती है। लोगोंकी संख्याके अनुमानसे बहुत ज्यादा जमीन मौजूद रहनेसे साधारण समभावसे प्रतिपालित होते आते हैं। हरेक परिवारका मालिकी हक और बन्दोबस्तकी क्षमता एक ही पुत्रवान् पुरुषको देनेकी वजह, यह अनुपात सदैवसे एक ही भावसे वर्तमान है। पश्चिम प्रदेशमें मुसलमान धर्मका प्रचार होनेके साथ ही साथ लोगोंकी विचारशक्ति बढ़ी है और कितने ही लोग भिन्न भिन्न स्थानोंमें उपनिवेश स्थापन करते हैं। मुसलमान धर्मके प्रभावसे चिरस्थायी प्रथामें बहुत अदल बदल हुआ है। यहांतक, कि लामा-निर्व्वतीयगण कोई किसी समय रोजगार या दूसरे उपायसे सामान्य धनके अधिकारी होते ही, हरेक परिवारके भिन्न भिन्न पुरुष स्वतन्त्र रहनेकी जगह बना वास करते हैं। *

---

* लदाखमें स्त्रियोंके बहुत स्वामी हैं। बहुत विवाहकी सम्बन्धमें मूरक्रोफट (Travels ii, 321, 322) और एशियाटिक सुसाइटीका १८४४ ई० का "जरनल" (P. 202 &c.) देखने लायक है। वास्तविक ऐसी प्रथाके चलनेसे कितने ही संख्यक जारज (दूसरे पतिका सन्तान) सम्प्रदायकी सृष्टि हुई है। शतद्रु और पिटि (या, स्पिति) दोनों नदियोंके सङ्गमस्थलमे "हाङ्ग्राङ्" नामक छोटी ग्राम५के ७६० परिवारोंमे २६ जारज सम्प्रदाय दिखाई देते हैं और हर २६ मनुष्योंमे एक जारज मनुष्य दिखाई देता है। हरेक जिनदारोंदा पुरुषोंके ही अप । अपना जन्म-वैलक्षण्य स्वीकार करनेकी वजह, उस हिसाबसे जारज-सम्प्रदाय की संख्या और

"सिव" और "बुहो" प्रभृति पहाड़ी असभ्य जातियों और समतल खण्डके "जून," "काथी," "डोगर" और "भूटी" प्रभृति जातियोंकी बातोंके विस्तारके साथ कहनेकी आवश्यकता नहीं है। इनमें कितनी ही जातियां अलस और शान्तस्वभाववाली हैं, कितनी ही पशुपालक हैं, यह लोग सत् और शान्त-प्रकृति हैं। अवस्था और स्वभावगत विशेषत्वके सिवा और दूसरा क्या कारण हो सकता है? दीर्घकाय, सुपुरुष, दीर्घजीवी "जून" और "काथि," ऊंट, गौ, भेंड़ आदि पशु पालते हैं। इनके दूधका नवनीत पूर्व्व देशसे तय्यार हो शहरमें आता है और यहांके अधिवासी यह दूध पित्र पदार्थोंके उद्देश्यसे निवेदन करते हैं। *

भी ज्यादा हो सकती है। सन् १८३५ ई०की गिनतीमें इङ्गलण्ड और वेल्सके लोगोंकी संख्या कुल १४,७०००००ठीक हुई है। इनमें (नये, Poor law प्रचलित होनेके पहले) ६४,४७५ जारज सन्तान समाजभुक्त किये गये। उस समय हर २०६ में एककी गिनतीसे जारज-सन्तान दिखाई दिये थे। (Wade's 'British History'. pp. 1011—1055) यहांतक, कि स्त्रियोंका चरित्र कलुषित होनेकी वजह, जारज मनुष्योंकी संख्या, मानी हुई संख्यासे दूनी होनेपर भी, स्त्रियोंके बहुत विवाहकी प्रथा प्रमाणित नहीं होती।

* 'On milk sustained, and blest with length of days, The Hippomolgi, peaceful, just, and wise. "Iliad, xiii, Cowper's Translation.

पहले ही कहा जा चुका है, कि जाति-वंशगत विशेषत्व चिरस्थायी नहीं है। अब भी भारतकी सब जगहके कृषक-सम्प्रदाय एक जगहसे दूसरी जगह उपनिवेश स्थापन करते हैं। राजनीति, अत्याचार, जलकष्ट और बाढ़ प्रभृति कारणोंसे भी किसी जिले या ग्रामके अधिवासी ज्यादा सुविधाजनक स्थानोंमें जा बसते हैं। ज्यादातर राजा और प्रादेशिक शासनकर्त्तृगण, मिहनती औपनिवेशिकोंको थोड़े करमें जमीन दे उनकी सहायता करते हैं। इसलिये ही विभिन्न सम्प्रदायोंमें जातिगत पार्थक्यसे भी बहुत कुछ बदलाव हुआ है। भारतवर्षके हरेक सम्प्रदायके लोग आपसमें अलग रहते और वंश-मर्यादा और जातिगत पार्थक्य रखना अच्छा समझते हैं; इसके लिये वह लोग विशेष रूपसे यत्नवान होते हैं। इसकी फलसे भिन्न भिन्न जाति और वंशकी संख्या एक तरहसे असीम हो गई है। कुछ दिन हुए, सिन्धुनदके उत्तरखण्डके सिख राज्यपर बलूचियोंने उपनिवेश स्थापन किया था, विगत एक सौ वर्षोंमें "सिन्धियान" जातिके "राजपूत सम्प्रदायने" शतद्रु की निचली जमीनोंपर अधिकार किया। दिल्लीसे फीरोजपुरतक "डोगर" जाति और मेवाड़से शतद्रुतीरवर्त्ती पाकपट्टन नामक स्थानमें "गोहिया"ओंने उपनिवेश स्थापन किया था। इन दोनो जातियोंका दूसरी जगहोंमें जाना जनश्रुतिमूलक जान पड़ता

" दुग्धपानकर हिपमलगा शान्तिपर, ज्ञानी, न्यायवान, पुष्ट-काय और दीर्घजीवी, हैं।" "इलियद, "१३श खण्ड, काउपरका अनुवाद।"

है;—इतिहासमें भी ऐसा ही कहा है। मिहनती हिन्दू "इटाम" लोग क्रमशः राड़ी और चन्द्रभागासे पूर्ब्ब ओर एक ग्रामसे दूसरे ग्रामको ओर बढ़ रहे हैं सही, फिर भी, अपेक्षाकृत कम मिहनती सम्प्रदायोंसे धीरे धीरे मिल रहे हैं।

यद्यपि वर्त्तमान समय बौद्ध, ब्राह्मण और मुसलमानोंमें धर्म्मयुद्ध उपस्थित हुआ नहीं है; तथापि बौद्ध और ब्राह्मण्य धर्म्मावलम्बियोंका धर्म्मबन्धन बहुत कुछ शिथिल हो पड़ा है,—तथापि बौद्ध, ब्राह्मण और मुसलमान, सभी और सब जातियोंको अपने अपने धर्म्मका दीक्षित करनेमें सदा यत्नवान रहते हैं। मुसलमानधर्म्मके इस समय भी जीवनी शक्ति प्रदान कर सकनेकी वजह,—इस समय मुसलमान धर्म्मके नामसे उत्तेजना बढ़नेकी वजह, मुसलमान बहुत दिनोंतक असभ्य ज्ञानहीन मनुष्योंको अपने धर्म्ममें दीक्षित करनेमें समर्थ होंगे। इसलाम धर्म्म इसकाहासि ले तक सिन्धुनदके उत्तर अंशमें प्रचारित होता है और धीरे धीरे बौद्धोंको दूसरा धर्म्म ग्रहण करनेके लिये वाध्य करता है। पेशावरके सीमान्तवर्त्ती 'काफिर' राज्योंकी सीमा भी धीरे धीरे सङ्कीर्ण होती जाती है। काश्मीरके दक्षिण और पूर्ब्ब इस समय मुसलमान धर्म्मने ही विशेष प्रतिष्ठा पाई है। यह किसी तरह अस्वीकार किया जा नहीं सकता, कि भारतवर्षके हरेक जनाकीर्ण शहरमें और मुसलमान अधिकृत प्रदेशोंमें मुसलमान धर्म्म धीरे धीरे बलपूर्वक ही आधिपत्य विस्तार करता नहीं है। किस्तावरके पूर्ब्ब हिमालयकी नीची उपत्यकाओंके उस पार विजेता राजपूत लोग ब्राह्मण्य धर्म्म फैलानेमें समर्थ हुए नहीं हैं। किन्तु अधिकतर बल

गहरोमें,—जह के अज्ञान अधिवासी ग्राम्य और स्थानीय देवताकी पूजा करते हैं,—इस समय बौद्धोंने उन दुर्गम स्थानोमें भी बढ़ना आरम्भ किया है। जिन दुर्गम स्थानोंमें पहले कोई एक मनुष्य भी जानेके लिये मालूमो नहीं हुआ, वहां "लोहित" और "पीत" सम्प्रदायके लामाओंने आधिपत्य स्थापन किया है। भारतको जङ्गली जातियोमें ब्राह्मणोंके प्रतिपत्तिको उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। "भील," "गण्ड," "कोष,"—हरेक कुछ क्षमताशाली या धनवान होते ही "म्लेच्छ" को अपेक्षा हिन्दू नामसे अभिहित होनेके लिये आग्रह प्रकाश करते हैं। * किन्तु दूसरी ओर साधारण हिन्दुओने कई

---

* गण्ड लोगोका राज्य छीनकर मध्य भारतके भूपाल राज्यका अर्द्धांश प्रतिष्ठित हुआ है। सत्रहवीं शताब्दिके भीतर इन गण्ड लोगोंने बलप्रयोग द्वारा पश्चिम ओर उपनिवेश स्थापन किया था। औरङ्गजेबके बहुत चेष्टा करनेपर भी इन लोगोंने होशङ्गाबादके निकटवर्ती नर्म्मदा किनारेके स्थानोमें अपना प्राधान्य स्थापन किया था। वहां बहुत दिन राजत्व करनेके उपरान्त एक अफगान जातीय आक्रमणकारीने राज्यध्वंसकी सूचना पा उन लोगोको परास्तकर राज्यपर अधिकार कर लिया। उस अफगानने पराजित जातिके कितने ही लोगोंको बलप्रयोग द्वारा या जागीर देकर अपने धर्म्ममें दीक्षित किया था। उनमें किसी किसीने सुनाम और चित्तप्रसन्नताके लिये अफगान-धर्म्म ग्रहण किया था। इस समय नर्म्मदाके दोनो किनारे छोटी छोटी जमींदारियोमें कितने ही मुसलमान

वर्षोंसे धर्मप्रचार करना आरम्भ किया है। यद्यपि हिन्दुओंकी संख्यामें इस समय भी कमी हुई नहीं है, तथापि शास्त्रज्ञानके सम्बन्धमें ब्राह्मणोंका अब वैसा प्रभाव नहीं है। "गोसाईं" और गार्हस्थ्य-धर्मावलम्बी साधुओने ब्राह्मणोंके प्राधान्यके अनेक अंशोपर अधिकार किया है। सिखजाति इस समय अपने अधिकृत स्थानोमें वहांके अधिवासियोंको सिखधर्ममें दीक्षित करती है; कारण, प्रवलपराक्रान्त अङ्गरेजोंके वाधा देनेपर सिख लोग पूर्व ओर आधिपत्य फैलानेमें समर्थ नहीं हुए और इसलिये ही यमुना और गङ्गाके निकटवर्त्ती "जाट" लोग पुराने पौत्तलिक धर्मको ही उपासना करते है।

धर्मावलम्बी "गरुड" परिवार दिखाई देते हैं। हिन्दूधर्मावल-म्बी गरुडकी अपेक्षा इन लोगोंने जातीय कुसंस्कार परित्याग किया है।

द्वितीय परिच्छेद।

प्राचीन भारतका धर्म्ममत,—आधुनिक संस्कार और परिवर्त्तन,—नानक प्रचारित धर्म्म,—सन् १५२६ ई० तक।

(बौद्धगण;—ब्राह्मण और क्षत्रियजाति,—विजयी ब्राह्मण-धर्म्मपर बौद्धधर्म्मकी प्रतिक्रिया,—प्रतिष्ठित धर्म्मकी प्रतीतिकी सीमा;—शङ्कराचार्य्य और शैव धर्म्म,—भिक्षु सम्प्रदाय,—रामानुज और वैष्णव धर्म्म,—"माया" सूत्र (योग),—मुसलमानोंका अधिकार,—ब्राह्मण्य-धर्म्म और मुसलमान धर्म्मकी आपसकी क्रिया;—रामानन्द गोरखनाथ, कबीर, चैतन्य और वल्लभ द्वारा नये धर्म्म का प्रचार,—नानक प्रचारित संस्कार।)

रोमराज्यके अधःपतन और ख़ृष्टीय धर्म्मके प्रवर्त्तनकी अपेक्षा कुछ थोड़ा कौतूहलप्रद होनेपर भी बहुत पुराने समयसे वर्त्तमान समय तक भारतवर्षकी अवस्था,—जगतके इतिहासमें एक आश्चर्य्य उपाख्यान-विशेष है। ऐसा जान पड़ता है, कि "ककेशीय" सम्प्रदायभुक्त भिन्न भिन्न योद्धृजातिने दक्षिण-घाटसे हिमालयकी पर्व्वतश्रेणीतक फैले हुए एशियाके इस उपद्वीपमें उपनिवेश स्थापन किया था। वह पुरानी "मेदिक" और पारसी" भाषाकी तरह एक स्वतन्त्र भाषामें बातचीत

करते और बड़ी बड़ी नदियों और समुद्रके तीरवर्त्ती स्थानोंमें विभिन्न सम्प्रदायमें श्रेणीबद्ध हो वास करते थे। वह लोग बाबिलन और मिश्रके प्रचलित धर्म्ममतकी तरह एक स्वतन्त्र धर्म्मके उपासक थे,—उनका वह धर्म्ममत कितने ही मनुष्योंके मनमें शक्ति प्रदान करता है। धार्म्मिक और सत्पुरुषोंकी वसतीका स्थान,—दिल्ली, लाहौर, गुजरात और बङ्गदेश—आर्य्यावर्त्तके भीतर है। प्रकृत पक्षमें, एक नई शक्तिमें अनुप्राणित होनेसे गङ्गातीरवर्त्ती उत्तर-पश्चिमप्रदेशके अधिवासियोंका छिपा हुआ तेज ही पहले प्रकटित हुआ। इसके फलसे ब्राह्मणोंकी एक नई सभ्यता प्रचारित हुई और आकोसियासे "सुवर्ण" कार्थेजितकके कितने ही योद्धृ परिवारोंने प्रतिष्ठा पाई। दरियासका वीरत्व, सिकन्दर शाहका महत्त्व, यूनान दर्शनशास्त्र और चीनकी धर्म्मशिक्षा,—सभी भारतवर्षमें सुस्पष्टरूपसे प्रकटित थी। जिस समय "रोमी" लोग "जर्म्मन" और "किम्ब्री" के लोगोंके साथ विवाद-विसम्वादमें रत थे और "गथ" और "हुन" लोग धीरे धीरे अधीनता स्वीकार करते थे, हिन्दुओंने उस समय असंख्य असभ्य सिदिस जातिको थोड़ी मिहनतसे ही अपना दमभुक्त कर लिया था। हिन्दुओंके प्रभावसे (Sacae)* "शाकी" जाति देशसे निताड़ित हुई; उन

---

* Sacae (Sakae) शाकियोंके विरुद्ध अस्त्रधारणकर विक्रमाजितने जो अद्भुत कार्य्य साधन किया था, उसके लिये उन्होंने "शाकारि (Sakarie) उपाधि पाई थी। यारकन्द और मानसरोवर हदके मध्यवर्त्ती तातारने जङ्गली प्रदेशमें इस

लोगोंने (Getae) 'गिति' जातिको अपनी एक प्रसिद्ध जातिके भीतर कर लिया, * और अन्यान्य वीर जातिको अपने रक्षकरूपमें नियुक्त किया था। † इसके उपरान्त भारतवर्ष-विजयके इच्छुक मुसलमानोंने धर्मकी गतिका प्रतिरोध किया था नहीं, किन्तु राष्ट्चर "तुर्कमान" लोगोंकी धर्मोन्मत्ततामें पूरी तरहसे बाधा देनेमें समर्थ नहीं हुए। भारतवर्षकी

जातिके अनेक विशुद्ध सम्प्रदाय सम्भवतः इससमय भी वर्त्तमान हैं। यहांकी "शकपो" जाति मुसलमानों द्वारा "कैलमाक" (Kelmaks) नामसे अभिहित होती है। तिव्वतके अधिवासी समय समयपर इन्हें भय दिखाते हैं।

* Getae (गिती) जाति और आदिम चीनदेशीय इउइचि (Yuechi) और इधर "जाट" या "ज्याट" (Juts or Jats)—एक ही जाति कही जाती है। किन्तु तर्कयुक्ति समालोचनासे उसकी स्वच्छता निर्णीत न होनेपर भी न्यायतः ऐसा समझा जाता है।

† क्षत्रिय या राजपूतोंकी चार "अग्निकुलकी" बातें कही जाती हैं। यथा,—"चौहान" "सोलाङ्की" "पवार" (या, प्रामर) और "परिहार"। इससे साफ मालूम होता है, कि इनके आदि पुरुषोंने इस देशपर आक्रमण किया था। ब्राह्मणोंके साथ क्षत्रियोंका और वर्द्धिष्णु धर्मत्यागियोंका और यूनान और वेकट्रिया-देशस्थ आक्रमणकारियोंमें जब युद्ध चलता था, तो इन लोगोंने ब्राह्मणोंका पक्ष अवलम्बन किया था। इनकी योद्ध प्रकृति और प्रतिभा, समयोपयोगी साहाय्य और पश्चात्-

भी मुसलमानोंके साम्राज्यके एक श्रेष्ठ राज्यके नामसे गिनती हुई थी और अरब देशीय उस धर्म्मके प्रचारककी प्रतिभा शक्तिसे हिन्दुओंकी मानसिक अवस्थामें एक स्थायी बदलाव संसाधित हुआ था। इस समय लाख लाख रोजगारी और मिहनती भारतवासियोंका मङ्गलामङ्गल पश्चिम खण्डकी एक प्रधान जातिकी अदृष्टके साथ गुंथा हुआ है। यूरोपीय धर्म्म-मत और रोमदेशीय राज्यशासन-नीतियोंके आदर्शके साथ, धर्म्मानुगत ब्राह्मणोंका, शासनशक्ति सम्पन्न मुल्लाओंका और दृढविश्वासी सिखोंका मतविरोध बहुत दिनोंतक चलेगा।

भारतवर्षका प्रचलित पुराना धर्म्ममत जो बहुत दिनोंतक ब्राह्मण और क्षत्रियोंका वादप्रतिवाद चला था अन्तमें धीरे धीरे उस मतके नष्ट होनेसे प्रसिद्ध बौद्ध धर्म्मकी उत्पत्ति हुई। *

वर्त्ती सादृश्य प्रभृति कारणोंसे सूर्य्य और चन्द्रवंशसे स्वतन्त्र नामसे यह लोग अग्निवंशके नामसे अभिहित होते हैं। उत्पत्तिसे रेवातक फैले हुए काशीके निकटवर्त्ती स्थानोंमें प्रधानतः अग्निकुल क्षत्रिय दिखाई देते और आबू पर्व्वत उनके अलौकिक जन्म या आविर्भावके स्थानके नामसे ठीक हुआ है। ब्राह्मणधर्म्मके प्रतिपोषक विक्रमाजित साधारणतः इसी 'पवार' वंशसम्भूत कहे जाते हैं।

* परस्पर तुलनासे ब्राह्मण और बौद्ध-धर्म्मकी आपेक्षिक अग्रगण्यता और प्राधान्यके विषयमें पण्डितोंमें बहुत तर्क-वितर्क और विवाद-विसम्वाद होता था। इसमें सन्देह नहीं कि एक समय इस भारतवर्षमें बौद्ध धर्म्म प्रबल होकर फैला था

खृष्ट-जन्मके कोई नौ सौ वर्ष पहले जब मनुने धर्म्मशास्त्र बनाया था, इसके बाद सिकन्दरशाहने जब भारतपर आक्रमण किया

और दूसरे समय ब्राह्मण्य धर्म्मने विशेष प्रतिष्ठा पाई थी। किन्तु दोनो धर्म्मका मूल विभिन्न है। [यह सच जान पड़ता है, कि बौद्ध और ब्राह्मण्य धर्म्म दोनो ही एक समय सम-सामयिक-रूपसे बहुत दिनोतक विद्यमान थे। बौद्धधर्म्म प्रधानत: दक्षिण-पश्चिम खण्डमें और ब्राह्मण्यधर्म्म अयोध्या और तिरहुतके निकटवर्त्ती स्थानोमें प्रचलित था। एस० बारनुफ कहते है, बौद्ध धर्म्म केवल भारतवर्षमें ही प्रचलित हुआ और भारतवर्षमें ही इसकी उत्पत्ति हुई, किन्तु ऐसा अनुमान युक्तिसङ्गत जान नहीं पड़ता। ("Introductional' Histoire du Buddhisme Indien, Avertissement, I) तब भी जान पड़ता है, कि यह "बौद्ध" शब्द संस्कृत "बुद्धि" अर्थात् "बुद्धि" शब्दसे उत्पन्न हुआ है, या "बो" या "बोदि" अर्थात् पीपलवृक्षसे (the ficus religiosa) निष्पन्न हुआ है। ब्राह्मणोंकी साधारण ब्राह्मण्य शक्ति धीरे धीरे स्फुरित और उन्नत हुई और ब्राह्मण्य प्रतिभाके बलसे हिन्दूमातने ही भारतवर्षकी सब जातियोंमें सबसे ऊंचा पद पाया था। किन्तु ब्राह्मणोंकी इस श्रेष्ठ धर्म्मशिक्षा और शास्त्रज्ञानसे शत्रुओने कितनी ही सहायता पाई थी। ब्राह्मण या क्षत्रिय वंशसम्भूत गौतम, ब्राह्मणोंके इस श्रेष्ठज्ञानका अवलम्बन करके ही जान पड़ता है अधिकतर विशुद्ध वैज्ञानिक रीतिके अनुसार बौद्ध-धर्म्मका संस्कारकार्य्य संसाधनकर परवर्त्ती समयमें बौद्धधर्म्मके

था,—यहांतक, कि यिसू खष्टके जन्मके सात सौ वर्ष बाद भी,—
जब अज्ञात-कुलशील असभ्य "येहिसान" जातीने सर्व्वत्र

प्रवर्त्तक और ईश्वरानुगृहीत पुरुषके नामसे प्रशंसित हुए थे। वर्त्तमान समय प्रचलित धर्म्मोंमें शैवधर्म्ममें ही वेदोक्त उपासनाकी पद्धति दिखाई देती है। (Compare Wilson "As. Res" XVII. 170 &c. and "Vishnoo Pooran". Preface, XIV) ब्राह्मण और बौद्ध-धर्म्मका वेश-भूषा विषयक दोनों विश्वासकी मिलावटसे यथाक्रम वैष्णव और जैन धर्म्म उत्पन्न हुआ है। शाक्त धर्म्ममें सबका पुराना अन्धविश्वास न्यारा-तर स्पष्टरूपसे प्रकट हुआ; शक्तिके उपासक लोग दुर्भिक्ष, महामारी और नृत्यविधायनी भयङ्करी देवीके सामने भयसे मस्तक झुकाते हैं। अब भी मध्यभारतके भीतर विलसाके निकटवर्त्ती "टोपी" या अर्द्धगोलाकार जो कीर्तिस्तम्भ वर्त्तमान है, जान पड़ता है, वही सबसे श्रेष्ठ है। एक पुरुषने पहले अङ्गरेजोंकी पुरानी कीर्त्ति-कहानीसे परिपूर्ण इस स्तम्भके मध्य-स्थित काल्पनिक कोटर या पात्र ढूंढ़नेके लिये स्तम्भका कुछ अंश ध्वंसकर अङ्गरेजोंका नाम कलङ्कित किया है। इस समय अङ्गरेजोंने केवल उसका नक्शा तय्यार कर रखा है वह ज्ञानियोंके लिये विशेष उपयोगी है। इस अद्वितीय प्रस्तर-प्राकारके कितने ही भास्कर्य (bas reliefs") अशोकके राजत्वके समयके भारतवर्षके धर्म्म और आचार पद्धतियोंकी श्रेष्ठताकी गवाही देते हैं। इन सब भास्कर्योंके देखनेसे मालूम होता है, कि उस समयके अधिवासी इन्द्र, सूर्य, [illegible]

परिभ्रमणकर ज्ञानार्ज्जन किया था,—तब भी कितने ही राज्य, प्राचीन आर्य्य जातिके सिवा दूसरी जातियोंके शासनाधीन थे। प्रचलित बौद्धधर्म्ममें ईश्वर-स्वारूप्य अस्पष्टभावसे वर्त्तमान है; तद भी, एकेश्वरवादी वेदधर्म्मकी अपेक्षा इस बौद्ध-धर्म्मके उपासकोंकी ही संख्या अधिक है। वेदधर्म्मावलम्बी प्रखर सूर्य्य, वायु या अग्निके सिवा दूसरा कोई सादृश्य स्वीकार नहीं करते। * इस युगमें हिन्दुओंकी प्रतिभा शक्तिने पूरी तरह

(या टोपी) को ही पृथिवीका केन्द्रस्थित पर्व्वत या मेरुका प्रत्यक्ष निदर्शन और बुद्धको जगदीश्वरका साकार स्वरूप समझ, यथेष्ट श्रद्धा और उपासना करते थे। उस समय इन देशवासियोंमें कोई कोई कोई ऊंची टोपी और छोटा जामा व्यवहारमें लाते थे। उनका वेश-भूषा हिन्दुओंके प्रचलित वेश-भूषासे पूरी तरह असम था।

* एलफिन्सटन साहबने वेलसनकी "अक्सफोर्डकी" वक्तृता और विष्णुपुराणसे कुछ अंश उद्धृतकर उनके इतिहासमें लिखा है (History I. 13) "ऐसा मालूम नहीं होता, कि अर्चनीय देवताकी कोई प्रतिमूर्त्ति या प्रत्यक्ष निदर्शन है।" फिर भी, नये और पुराने दोनो धर्म्मग्रन्थोंमें (Old and New Testaments) ऐसा कहा गया है, कि अग्नि ही ईश्वरका प्रधान निदर्शन है। (Strauss Life of Jesus, 361) वेदमें ऐश्वरिक तेज (शक्ति) और गुणका मनुष्यरूप वर्णित है। यहूदियोंकी अन्यान्य देवदेवियोंकी वर्णनामें "जेहोवा" की अद्वितीय शक्तिमत्तामें कमी हुई है। किन्तु सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा, संहार-

विकाश पाया था। ब्राह्मण लोग महत्त्वमें और बहुत विषयोंमें श्रेष्ठत्वमें ग्रीक लोगोंके प्रतिद्वन्द्वी हुए थे। वीररसपूर्ण पुरानी कवितायें अलौकिक कल्पना और वर्णनाशक्तिकी परिचायक हैं। रामायण और महाभारतकी कविताओंसे इस समय भी मनोभाव उत्तेजित है; लोगोंके चरित्रमें उसका प्रभाव फैलता है। गणितशास्त्र और ज्योतिषशास्त्र इतना निर्भूल और सम्पूर्ण था, कि सूर्य और चन्द्रके घूमनेकी राह निःसन्देह

कर्त्ता शिव और अन्यान्य देवदेवियोंकी अवतारणासे एकेश्वर प्रथामें कोई खास बदलाव नहीं हुआ। यद्यपि वैदिक प्रथाके सम्बन्धमें "कोलब्रुक"की और अन्यान्य ग्रन्थकर्त्ताका और राम मोहन रायकी टीका और अनुक्रमणिका वर्त्तमान है, तथापि वेद और वेदान्तके धर्म्म-सम्बन्धमें इस समय भी अनेक विषयमें शिक्षाका अभाव है। ("Asiatic Researches VIII, 'Transactions, Royal Asiatic Society', i and ii, and 'Ram mohan Roy on the Veds') इस सम्बन्धमें (Ward's Hindu's ii, 175,) वार्डके "हिन्दू" नामक ग्रन्थका "वेदान्तसार" नामक अनुदित अंश डाक्टर रोयरका परिशोधित और परिवर्जित अनुवाद देखने लायक है, (Journals, Asiatic Society of Bengal, Feb, 1845, No 158)। यदि अनुवाद करनेवाले इस समयकी प्रथाके अनुसार संस्कृत ग्रन्थोंका अङ्गरेजी प्रतिवाक्य न देकर, प्रत्येक ग्रन्थका अच्छी तरह अङ्गरेजी भाषमें व्याख्या करते, तो प्राचीन हिन्दू रचना-ओंका सच्चा धर्म्ममत समझनेमें खासी सुविधा होती।

निश्चितरूपसे नापी जाती थी। * कितने ही शिक्षित मनुष्योंने
दर्शनशास्त्रमें विशेष ज्ञान पाया था; किन्तु जनसाधारण
परमार्थज्ञान ही श्रेष्ठ समझते थे। पहले दोनो इसका
दर्शनज्ञान और परमार्थ-ज्ञान दृढ़तररूपसे निकटसम्बन्धीय और
अभिन्न था। ब्राह्मणोंने ईश्वरका एकत्व, पृथिवीकी सृष्टि,
आत्माका अमरत्व और मनुष्यजातिके दायित्वके सम्बन्धमें
कई एक धर्म्मसूत्रकी रचना की थी। गङ्गाके तीरवर्त्ती पुराने
अधिवासी पारत्रिक (भविष्यत्) जीवन और ईश्वरका एकत्व
सव शक्तिमत्ताका प्रचार करते थे; किन्तु इस सम्बन्धमें मोजे-
सने (Moses) कोई राय प्रकाश की नहीं है; इस विषयमें
वह चुप या अनजान है। † बहुदेववादी यूनानी और

---

* भारतवर्षमें साधारणतः "सौर" वर्ष ही प्रचलित है।
इस तरह वर्षकी गिनतीमें बराबर दिनरातके स्वरूपके सम्बन्धमें
कोई विशेष विस्तार नहीं हुआ, किन्तु नाक्षत्रिक वर्षके हिसा-
वसे ऐसी गिनती अनेक अंशमें सच्ची है। सूर्य्यके घूमनेकी
राह और विषुव रेखाका परस्पर मिलन-विन्दुसमष्टिका आव-
र्तन हिन्दू लोग बहुत पहलेसे ही जानते है। ऐसे प्रपञ्च
आवर्त्तनके ठीक समयसे हिन्दुओंके कितने ही युगकी गिनती
की गई है; (Compare Mr Davis's paper in the "As.
s." Vol ii, and Bentley's Astronomy of the Hin-
, P. 2—6, 88)

† ज्ञानी और विज्ञ मोजेसको,—इब्रानी नास्तिक और मिश्रके
धर्म्मयाजक समझते थे। (as quoted in Vol

रोमनलोग * और द्वैतवादी 'सिथरेइक' जातीय विधिविधायक ईश्वरका एकत्व और सर्व्वशक्तिसत्ताके विषयमें कुछ भी नहीं जानते। आसने ऐसे मतका प्रचार किया; कि बुरा काम करने-पर ईश्वर गुरुतर शास्तिविधान करते है। आसके फैलाये इस मतपर जनसाधारण बुरा काम करनेसे बहुत ज्यादा डरते थे।

Ruins, Ch. xxii Sec, 9, note) किन्तु इस बातको स्वीकार न करनेपर भी, कि सोलेस आत्माके अनित्य होनेका पूरीतरह विश्वास करते थे, यह बात कोई अस्वीकार कर नहीं सकता, कि यहूदी लोग जेहोवाको अपना एकमात्र उपास्य देवता या अन्तिम रक्षाकर्ता समझते थे। यद्यपि हेरोडोटसने कहा है, कि मिश्रके लोगोंने ही पहले आत्माके अमरत्वको सप्रमाण किया है, तथापि तार्किक "साडुकी" लोग उनके धर्म-गुरुको ऐसे ही भावसे अभिहित करते है। अरिस्टाटल और प्लेटो पूरे परवश होनेपर भी, दोनोंने कहा है, कि आत्माकी और अवस्थाकी अपेक्षा अमरत्वभाव ही अधिक है। ("Phoedo" Sydiaham and Taylor's Translation, iv, 324).

इस विषयमें आपने प्लेटोको भी पराजित किया था। * प्रकृत पक्षमें आत्माका अविनश्वरत्व और मरनेके बाद दूसरी देह

होमारका नामविद "थियोज" ("theos") यानी काल्पनिक वर्णनाके सम्बन्धमें जिस बुद्धिमत्ताकी प्रशंसा की है, (Odyssey, XIV, Cowpers note, P. 48. vol ii. Edition of 1802) उसपर विशप थारवल (History of Greece. i. 192 &c) और मिष्टर ग्रोट दोनो ही अविश्वास करते है (History of Greece, I. 3. and XVI Part i. generally.)

* प्लेटो कर्त्तव्यज्ञान और बाध्यता स्वीकार करते नहीं थे; या वह कर्त्तव्य और बाध्यताके नियमका अच्छी तरह अनुसरण करते नहीं थे। इस हेतुवादसे रिटार उन्हें इस दोषसे मुक्त करनेमें विशेष चेष्टा करते थे, कि स्क्रोटिसकी फैलाई हुई प्रथाके अनुसार बंधकर इस नियमके पालन करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। (Ancient Philosophy, ii. 387) प्लेटो समझे थे, कि ऐसी कठोरतासे नैतिक दर्शनकी उपयोगिता थोडी जान पड़ती है और यही उनकी आपत्तिका प्रधान कारण है। बेकनने बहुत तुच्छरूपसे प्लेटोके इस मतका स्पष्ट: अवलम्बन किया था। (Compare 'Hallam', Literature of Europe, iii, 191. and Macaulay Edinburgh Review, July, 1837, P. 84.) यद्यपि ईश्वरकी ओर ऐसा कर्त्तव्यज्ञान अपानुषिक और नास्तिकोंके दर्शनशास्त्रकी प्रथामें यह अनावश्यक है, सामाजिक मङ्गलकामनासे ईश्वरके प्रति ऐसा कठोर कर्त्तव्य ज्ञान सब तरहसे प्रयोजनीय है। सभ्य ग्रीस देशमें

स्वरूप, यह दोनो मत आपसमें मिला दिये गये थे; कार्य्यकारी गुण (कर्म्म) की अपेक्षा दैहिक कष्ट-सहिष्णुता और मानसिक औदासीन्य ज्यादा प्रशंसनीय होता था। * ऐसा मत प्रचा

और आजकलके यूरोपके सिवा सब एशियाखण्डमें "दर्शनशास्त्र और "तत्त्वशास्त्र" परस्पर निकट सम्बन्धीय और एकत्र जड़ीभूत हो रहा है। प्लेटो कहते हैं, कि मृत्युके उपरान्त आत्माका विचार आरम्भ होता है; विचारके अनुसार दुष्ट मनुष्यकी आत्मा शास्ति पाती और उत्पीड़ित हो असह्य यन्त्रणा भोगती है।(उदाहरण स्वरूप "Gorgias," Sydenham and Taylors Translation, IV. 451) फलतः ऐसा नियम ही साधारणके लिये अधिकतर फलप्रद है। किन्तु यूनानी लोगों शास्त्रके अनुसार अविनश्वर मानुषी आत्माको परितृप्ति और उपभोग और ईश्वरके प्रति न्यायपरता ही पुण्यजनक जान पड़ती है। (Compare Schleiermacher's Introduction to Platos Dialogues, P. 181 &c. and Ritter's Ancient Philosophy, ii. 374) वासदेवने जो कृतज्ञता और न्यायपरता मूलक धर्म्मशिक्षा दी है, इस समय लोग उसे ही कर्त्तव्यज्ञानके नामसे स्वीकार करते हैं। यह भी पूरी तरह कहा नहीं जा सकता, कि वही उनका कर्त्तव्य कार्य्य और उनसे ही उनकी बाध्यता है। सम्भवतः भारतवासियोंके लिये विवेकशास्त्रका उपदेशक होनेके बदले तत्त्वशास्त्रोपदेशक होना ही ज्यादा सहज हो सकता है।

* ईश्वरपर अज्ञान ग्रन्थकारोंने हिन्दू-तत्त्वशास्त्रके सम-

रित होनेसे, कि मनुष्य एक दूसरेके बराबर नहीं है और एक ही श्रेणीके मनुष्योंमें पुरुषानुक्रमसे धर्म्मोपदेष्टा हो सकेंगे, इसके साथ ही साथ ब्राह्मणोंका नीतिशास्त्र पूरी तरहसे मिल गया। *

न्समें जो लिखा है, उसमें आत्माके दूसरी देह ग्रहण करनेके विषयमें अनेक वादानुवाद किया है। वह लोग कहते हैं, कि इस नीतिके अवलम्बन करनेसे मनुष्योंकी इच्छा-वृत्तिकी स्वाधीनतामें बहुत कमी होती है, पूर्व्वजन्मोंकी दोषयुक्त आत्माकी बारबार पृथिवीमें जन्म लेनेसे पहले आत्माकी अपेक्षा पर-आत्मा बहुत कुछ अलग जान पड़ती है। सुनते हैं, कि ऐसे ही मनुष्य यूनानी और रोमनोंकी भाग्यदेवीके वशवर्त्ती होते हैं। (Compare "Ward on the Hindoos" ii, Introductory Remarks, xxviii, &c.) नीतिशास्त्रके अनुसार आत्माके पूर्व्वजन्मके पापसे भाराक्रान्त होनेपर भी पूर्व्व और पर-वर्त्ती आत्मामें कोई भेद नहीं है; आदमके (Adam) पापोंसे आत्माके कलुषित होनेपर भी वर्त्तमान जीवनके आचार-व्यवहारमें कोई अलगाव दिखाई नहीं देता। दर्शनशास्त्रके मतसे आत्मा दूसरी देह ग्रहण नहीं करती। केवलमात्र वर्त्तमान जीवनके पापोंकी अवस्थितिके और मनुष्यपर उसका भाव पैदा करनेके परिमाण-निर्णयार्थ एक श्रेष्ठ राहके सिवा और कुछ भी नहीं है।

* जातिभेदकी प्रथा भारतवर्षमें प्रचलित हुई; मिस्र और ईरानमें भी एक समय इसी प्रथाका प्रभाव था और पुरानी कई

ब्राह्मणोंने भारत उपद्वीपसे बौद्ध धर्म्मावलम्बियोंको वित
ड़ित किया था; खृष्ट जन्मके नौ सौ वर्ष बाद जिस समय

जातियां अलग धर्म्मकार्य्य और पुरुषानुक्रमिक आचारका अनुष्ठा
करती थीं। मध्ययुगमें और वर्त्तमान समय यूरोपमें इस प्रथा
कई अंशमें वैसा आधिपत्य फैलाया था, उन सबको इकट्ठाक
एक प्रवन्ध रचा जा सकता है। जो विद्वानके नामसे विख्यात
हैं, जो बहुदर्शी हैं, जातिभेद प्रथाके सम्बन्धमें उन्हें ऐसे ए
प्रबन्धकी रचना करना उचित है। पुरानी सभ्यताने धीरे धी
परवर्त्ती जैसी विषमय उन्नति पाई थी, उसके ही फलसे यह
जातिभेद प्रथा भारतवर्षमें फैली है। विगत कई शताब्दियों
यह प्रथा जिस भावसे अनुसृत होती है पुराने सभ्य जाति
अधिवासी इसे ऐसी कठोरताके साथ मानकर चलते नहीं थे
विश्वासितका ब्राह्मण्यशक्ति पाना इसका एक अच्छा दृष्टान
है। विक्रमाजित भी इस शक्तिके पानेके लिये बड़े इच्छुक
थे और उसमें वह बहुत कुछ सफलता भी हुए थे। इसी
प्रकार वासदेव एक शूद्रको पुरोहित श्रेणीमें खींच लाये
उनके वंशधरके अपेक्षाकृत नीच जातिके होनेपर भी, ग
ब्राह्मणोंमें गिने जाते हैं। Ward on the Hindoos, i, 8
and see Menoos Institutes, chap. x, 42-72 &c.
यहां मनुने स्वीकार किया है, कि रजनाम लोगतांमें मनुष्य ए
जाति विशेषकी मर्यादा और श्रेणी विभाग होती है और
उस गुणसे वाले कोई जाति हो, उस श्रेणीमें भी मर्या
है।) यह तक कि [illegible]

यके कितने ही जाट-सिख परिवारने (यह लोग रणजित्‌सिंहके सम्पर्कीय थे), राजपूतोंके सामाजिक संस्कार और व्यवहारमें एक होनेका यत्न किया था और एक समाजभुक्त होनेकी चेष्टा की थी। अगर विजयी मुगल और पठान जाति सच्चे धर्म्मपर विश्वास न करती और उनका प्रचलित धर्म्मयाजक सम्प्रदाय न होता, तो इसमें सन्देह नहीं, कि वह वेदधर्म्म ग्रहणकार क्षत्रिय या राजपुरुषोंमें गिने जाते।

जुलाहे कबीर, ब्रह्म या ईश्वरका स्वरूप जान ब्राह्मण हुए थे। धर्म्मसंस्कारक रामानन्दके मुंहसे इस बातके प्रकाश होनेपर पुरोहित सम्प्रदायकी आदिम नीति प्रचारित हुई। (The Dabistan ii, 188.)

हिन्दुओंकी तरह भारतीय मुसलमान भी चार श्रेणीमे विभक्त हैं। जैसे;—सय्यद, शेख, मुगल और पठान। सभी श्रेष्ठके नामसे प्रसिद्ध हैं। किन्तु इनमें पहली दो जातियां मुहम्मदके जातीय और मुहम्मदके दामाद "अली" के वंशधर इनमें सबसे श्रेष्ठ हैं। अन्ततः उत्तर-पश्चिम प्रदेशमें सबका ऐसा विश्वास है, कि हिन्दूधर्म्म त्यागकारी क्षत्रिय और स्वधर्म्मवर्ज्जित सिख "शेख" के नामसे अभिहित हुए और अन्यान्य नीच जातीय स्वधर्म्मवर्ज्जनकारी "मुगल" और पठान जातिमें गिने जाते हैं। किन्तु यदि कोई ब्राह्मण अपना धर्म्म त्यागकर मुसलमानधर्म्म ग्रहण करे, तो इसमें सन्देह नहीं, कि वह उसी समय "सय्यद" श्रेणीभुक्त हो सकता है।

चेष्टा करते थे, उस समय कोई एक शिक्षित पण्डित और निश्चेष्ट 'अर्हविश्वासी जैनके * सिवा भारत उपद्वीपमें और कोई जाति दिखाई देती नहीं थी। उस समय केवलमात्र यह "जैन" लोग ही "म्लेच्छ" जातिके नामसे अभिहित होते थे। यही हिन्दुओंमें असभ्य थे और पौत्तलिक (मूर्त्तिपूजक) धर्म्मकी उपासना करते थे। क्षत्रियोंने इसी समय राज्य फैलाया। साकारवादी असभ्य राजोंमें किसी किसीने उनकी वश्यता स्वीकार की थी, कोई कोई उनके धर्म्मसे दीक्षित हुए थे। अबतक ब्राह्मण लोग धर्म्म-प्रचार कामकी उपेक्षा करते आते थे। वह लोग प्रचारककी तरह धर्म्मका प्रचार करना चाहते नहीं थे। उसकी अपेक्षा ईश्वरके श्रेष्ठ महापुरुष

---

* आजकलके जैन लोग बौद्ध धर्म्मके साथ अपने धर्म्मका निकट सम्बन्ध स्वीकार करते है। फलतः पूर्व्व मालवके जैन सौदागर लोग "भिलसा" की "टोपो" को जैनियोंका मन्दिर समझते हैं। यह ठीक कहा जाता है, कि किसी समय जैन लोग जनसाधारणके सामने एक भिन्न सम्प्रदायके नामसे परिचित हुए थे। आश्चर्य्यका विषय यह है, कि "काय" या अमरसिंहके अभिधानमें यद्यपि जड़ जगतकी प्रतिनिधि देवी, बौद्धधर्म्मके प्रवर्त्तक गौतमकी माता, "मायादेवीका" नामावलीमें "जिन" शब्दका उल्लेख दिखाई देता है, किन्तु उनमें 'जैन' शब्दका कोई भी दृष्टान्त नहीं है। भागवतमें लिखा है, कि बुद्ध 'जिन'के पुत्र हैं, उन्होंने कीकट देश या बिहारमें जन्म लिया था।

और धर्म्मके प्रणयनकर्त्ताके नामसे परिचित होना ही प्रशंसनीय समझते थे। इसीलिये विदेशमें ब्राह्मणोंकी क्षमतामें कमी हुई थी। किसी राजाके तत्त्व पूछनेके लिये ब्राह्मणोंका सम्मान न करनेपर या उच्चाभिलाषी योद्धाके उनका उपदेश ग्रहण करनेका इच्छा न होनेपर, दूर देशका कोई उनका आदर करता नहीं था। हिन्दूधर्म्म उन्नतिकी चरम सीमापर चढ़ गया था; इसलिये उन्नतिके साथ ही साथ अवनति और ध्वंसका बीज अङ्कुरित हुआ। भिन्न देशोंके आये हुए लोगोंसे मिलनेके कारण उनकी आचार-पद्धतिका कितना ही अंश हिन्दूधर्म्मके साथ मिल गया। सहानुभूति प्रकाश करनेकी जबरदस्त खाहिश होनेपर, मनुष्य सहज ही आत्मोपयोगी कोई भी उपास्य देवता ढूंढ लेता है; तब फिर निराकार और निर्व्विकार देवतापर विश्वास करनेकी प्रवृत्ति नहीं होती। * इन्द्रियज्ञानकी समझसे सामान्य

---

* एलफिन्सटन कहते हैं, (History of India, i, 189) राम और कृष्णने मनुष्योचित भाव और कार्य्य द्वारा अधिक संख्यक उपासकोंका प्राण-मन आकर्षण किया था; अपरिस्फुट शैवधर्म्मसे उतने लोग आकृष्ट नहीं हुए। हमारे मनमें आता है, कि "एडिनवरो रिविउ" पत्रने देखा है, कि यह तत्त्व विशेष विस्तृतभावसे कहा गया है। उससे जान पड़ता है, कि योशुखृष्टने जैसा कष्ट भोगा था, उससे सचमुच ही खृष्टधर्म्मकी विशेष उन्नति साधित हुई थी; कृपावह ईश्वरके प्रति सहानुभूति दिखानेके लिये कितनों होने खृष्टधर्म्म ग्रहण किया

एक काले प्रस्तर-लिङ्गको पूजाकर उस समय किसीका भी मन-प्राण तृप्त होता नहीं था। * जिन्होंने धर्म्मतत्त्वकी मीमांसासे

था। सांड़के धार्म्मिक होनेपर उनके देवता गो-महिषादिका आकार धारण करते,—जेनोफनकी यह तेज सलाह सच जान पड़ती है, क्योंकि, तब लोग साधारणतः देवताओंको मनुष्यकी आकृतिमें साकार कल्पना करना अच्छा समझते थे। (Grote, History of Greece, iv. 523, and Thirwall, History, ii 136.)

* हिन्दुओंका शैवधर्म्म या "लिङ्ग" उपासनाकी प्रथा ज्ञानमय ब्राह्मण्य-धर्म्मके एक परिवर्त्तनका निदर्शन है। जिस समय ब्राह्मण्य धर्म्म विशेष प्राधान्य पा जनसाधारणका भ्रम-संस्कार दूरकर उनलोगोंको पवित्र करनेकी चेष्टा करता था, उस समय यह बदलाव संसाधित हुआ। अबतक भी भारतके साधरण मनुष्य लोग हरेक वस्तुमें ही ईश्वरकी विद्यमानताका निदर्शन देखते हैं। ब्राह्मणोंने मूर्त्तिपूजकोंको यह शिक्षा दी थी, कि उपासनाके समय काले पत्थरको निराकार विश्वनियन्ता समझना पड़ेगा। उन्होंने बौद्धधर्म्मावलम्बी मूर्त्तिउपासकोंको भी इन्द्रियज्ञानके सम्बन्धमें उपदेश देनेकी क्षमता प्रदान की थी। यह ज्ञान आजकलका जान पड़ता है, कि लिङ्ग ही पुनरुत्पादिका शक्तिका प्रतिरूप है। ऐसा ईश्वरज्ञान छोटे लोगोंमें ही प्रचलित है। यह लोग देवदेवीके साधारण स्वरूप-मूर्त्तिमें अतर्कित भावसे और उच्च, स्वरूपसे गुप्त-शक्तिका आविर्भाव देखते हैं। (Compare wilson "Vishnoo Pooran," Preface lxiv)

जड़वादी बौद्धोंको चुप किया था, जिन्होंने नास्तिक चार्व्वाकोंके * धर्म्मविषयक घोर नास्तिक्य मतका खण्डन किया था, उस समय वह शङ्कराचार्य्य भी गुण और शक्तियोंकी उपासना स्वीकार करनेपर वाध्य हुए थे। यहांतक, कि शङ्कराचार्य्य-प्रचारित धर्म्ममें भी प्रतिमाकी अर्च्चना होती और देवमन्दिरमें मट्टी या पत्थरको देव-मूर्त्ति या मूर्त्ति-विहीन निदर्शन (शिव लिङ्ग) स्थापनकी व्यवस्था थी। जो आत्मस्वरूप थे, उनकी कोई उपासना करता नहीं था।

---

* अध्यापक विल्सन्ने ("Asaitio Researohes," xvi, 18) चार्व्वाक नामक किसी योगी या मुनिके नामसे इस "चार्व्वाक" सम्प्रदायकी उपाधि निष्पन्न की है। किन्तु ब्राह्मण लोग, (अन्ततः मालवेके ब्राह्मण लोग) इस सम्प्रदाय और सम्प्रदायके गुरु,—इन दोनोका यह विशेष नाम "चारु" (प्रवृत्तिजनक अत्युत्तम) और "वाक" (वाक्य, वक्तृता) दो शब्दोंसे निष्पन्न किया है। इसतरह निष्पादित होनेसे यह सम्प्रदाय तार्किक, भाषाविद् या प्रतारक कहा जाता है। वस्तुतः अन्तमें सम्प्रदाय इस नामसे ही परिचित हुआ था। इस सम्प्रदायके सभी, बड़े जड़वादी हैं, यह लोग शारीरिक उपादानोंकी ठीक कोई अवस्था या अवस्थासमूहके एकत्रीकरणके नियमसे विवेक-शक्तिकी उत्पत्ति स्वीकार करते हैं। जान पड़ता है, कि इस सम्बन्धमें उन लोगोंने शरीरतत्त्ववित् डाक्तर लरेन्सके मतका अनुभव किया था। डाक्तर लरेन्स ऐसा समझते थे, कि यकृत जैसे पित्तका आधार है, वैसे ही मस्तिष्क और चिन्ताशक्तिका आधार है।

सब धर्म्मोपासक लोग पालनकर्त्ता "विष्णु," संहारकर्त्ता "शिव," सूर्यके प्रतिनिधि देवता और सिद्धि-विनायक गणेश प्रभृति देवताकी पूजा करते हैं ; या प्रकृतिकी पुनरुत्पादिका शक्तिको ही देवीरूप समझ उसकी उपासना करते हैं। वह समझते हैं, कि जगदीश्वर निश्चय ही उनकी प्रार्थना सुनते और पूजा ग्रहण करते हैं। *

पुराने समय ब्राह्मण लोग गृहाश्रममें या निर्ज्जनमें धर्म्मोपासना करते थे। बौद्धोंकी धर्म्मोपासना मन्दिरों [illegible] या धर्म्मसभामें होती थी। ब्राह्मण-जातीय तपस्वी लोग जन-समागमसे अलग रहते थे, किन्तु बौद्धोंके संन्यासी सम्प्रदाय या उपासक सम्प्रदायमें मिल जाते थे। संन्यासी होनेसे पहले ब्राह्मण लोग गृहधर्म्म आचरण करते थे, किन्तु बौद्ध अविवाहित रहते ही प्रतिज्ञाबद्ध होते थे और अधिकांश इन्द्रिय-सुख-सम्भोग परित्याग करते थे। विजित जातियोंके ऐसे आचार-व्यवहारका प्रभाव विजेता लोगोंमें फैला था। शङ्कराचार्य्यने विशुद्ध धर्म्मभावको दृढ़ करनेकी चेष्टामें, "सेण्टबेनिस" और "पोप ग्रेगोरियसके दो तरहके मतका एकत्र समावेश किया। † उन्होंने ब्राह्मणसंन्यासियोंके लिये एक मठ बनवाया ;

---

* जिन पांच जातियोंकी बातें कही गई हैं, वह सभी हिन्दूधर्म्मके विशुद्ध दलोंमें श्रेष्ठतम हैं।

† अध्यापक विलसनने "एसियाटिक रिसर्चेज" नोलदके और भाद्रे मतमें हिन्दू जातिके लिये जो आशा प्रदान की है, उसके लिये उन्हें विद्वानोंने और [illegible]

उन्होंने दण्डकमण्डलुधारी असभ्य निर्ज्जनवासी दण्डियोंको स्वतन्त्र एक सम्प्रदायमें परिणत किया, तब यह संन्यासी सम्प्रदाय "मठवासी" या "भिक्षुक" के नामसे गिना गया, वह लोग भिक्षा-वृत्तिसे जीविका निर्व्वाह करने लगे और उन्होंने पवित्रताचरण करना आरम्भ किया। * शङ्कराचार्य्यका यह संस्कृत धर्म्म फिर

उनके ऋणी हैं। यह संक्षिप्त पुस्तक भारतवर्षमें कितने ही लोगोंके घर मौजूद है; विशेषतः "भक्तमाला" या संन्यासियोंका इतिहास और उसका सारसंग्रह सबके ही पास दिखाई देता है। देशके अवस्थाज्ञ किसी पण्डितके टीकाके साथ मिला यह गभीर रहस्यपूर्ण विषय पढ़ना अधिकतर सुविधाजनक है। किन्तु दुःखका विषय यह है, कि अध्यापक विलसनने सम्प्रदाय समूहका धर्म्ममत और संस्कार विषयक उन्नतिकी बातें लिखनेकी चेष्टा नहीं की। हिन्दुओंके सम्बन्धमें सिष्टर वर्डने जो विस्तृत कीमती कई एक खण्ड प्रकाश लिये हैं, उनमें भी इन सब बातोंका उल्लेख नहीं है। "देवीस्थान"के लेखक मोसाण फाणीकी पुस्तकमें भी घटनावलीका सामञ्जस्य और न्यायसङ्गत बातोंका अभाव है। फाणीके कुछ प्रगल्भ और सरलविश्वासी होनेपर भी, इन प्रतिभाशाली मुसलमान लेखकका मत और वर्णन विशेष प्रयोजनीय है। इन्होंने प्रायः दो सौ वर्ष पहले जन्म लिया था। कप्तान टेलरने उनके इस "देवीस्थान"का अनुवाद किया है; इसलिये जरा तलाश करनेपर हरेक अङ्गरेज यह महामूल्य ग्रन्थ पा सकते हैं।

* शङ्कराचार्य्य दक्षिण भारतके एक ब्राह्मण थे। अध्या-

परिवर्त्तित हुआ। यह "दण्डी" लोगों शिवको ही एकमात्र उपास्य देवता ग्रहण करनेसे वह और भी ज्यादा अलग हो गये। ईश्वरके प्रकृत स्वरूपकी कल्पनाकर उस समयसे वह शिवकी ही उपासना करने लगे और शीघ्र ही और सब लोगोंने भी उनके पदाङ्कका अनुसरण किया। खृष्टीय ग्यारहवीं शताब्दिमें "रामानुजने" अपने नामानुसार ब्राह्मणोंका एक धर्म्मसम्प्रदाय प्रतिष्ठित किया। आचार सम्पर्कीय कितने ही परिमार्ज्जित नियम उनमें प्रवर्त्तित हुए। वह लोग विष्णुको ही प्रकृत ईश्वर समझ

एक विलसनके मतके अनुसार ('As. Res' xvii 180) शङ्कराचार्य्य आठवीं या नवीं शताब्दिमें आविर्भूत हुए। किन्तु यह गिनती सन्देहमूलक है। कारण, साधारणतः कहा जाता है, कि रामानुज शङ्कराचार्य्यके शिष्य और भाञ्जे थे; सुतरां विलसनकी गिनतीसे उनके जन्मकी तारीख एक शताब्दि या डेढ़ सौ वर्ष बाद होना ही सम्भव है। उन्होंने चार "मठ" (संन्यासियोंका मन्दिर या चार धर्म्म-सम्प्रदाय) की प्रतिष्ठा की थी। उनके दश शिक्षित शिष्योंमें जिन चार मनुष्योंने उनके प्रचारित धर्म्म-मतका दृढ़तररूपसे अवलम्बन किया था, वही उन चारों "मठ" के प्रधान पण्डा और रक्षक नियुक्त हुए। शङ्कराचार्य्यके इन चारों शिष्योंके अनुचर लोग "दण्डी" नामसे अभिहित होते हैं। या इनके साथ छः नास्तिक सम्प्रदायके पुरुष मिल कर इकट्ठे "दशनाम" नामसे परिचित हुए हैं। (Compare, wilson, 'As. Res xvii 169 &c.)

उनकी उपासना करते थे; सर्व्वशक्तिमान् जगदीश्वरकी भिन्न भिन्न मूर्त्तियों और गुणकी कल्पनाकर साधारणके सामने उन्होंने ईश्वरकी मर्य्यादाहानि की थी। * प्रवर्त्तित संस्कृत नियमके प्रतिपालन और ईश्वराज्ञाके पालनकी आवश्यकता

---

* रामानुजकी पैदाइशके सम्बन्धमें कितने ही मत प्रचलित हैं। ग्यारहवीं शताब्दिके पहले भागमें बारहवीं शताब्दिके आखिरी भागके भीतर किसी समय रामानुज मौजूद थे। (wilson, "As, Res" xvi 28, note) मध्यभारतमें ऐसी किंवदन्ती है, कि रामानुजने अपने पितृव्य (शङ्कराचार्य्य) को कहा था,—"उन्होंने (शङ्कराचार्य्यने) जिस पथका अनुसरण किया है, वह सच्ची राह नहीं है।" सुतरां रामानुजने गुरुत्या-गकर "मठ" या शिक्षाकर्म्मोंके प्रतिबोधक चार "सम्प्रदाय" या धर्म्म-सम्प्रदाय प्रतिष्ठित किये। उसी समयसे सम्प्रदायके उपयोगी समझ उन्होंने विष्णुको ही एकमात्र उपास्य देवताके नामसे ठीक किया था। रामानन्दने अपने धर्म्म-सम्प्रदायको "श्री" या "लक्ष्मी" नामसे अभिहित किया। इसके उपरान्त और भी तीन सम्प्रदाय स्थापित हुए पहला माधव द्वारा दूसरा विष्णुस्वामी और उनके परिचित शिष्य वल्लभ द्वारा और तीसरा निम्बार्क या निम्बादित्य द्वारा प्रतिष्ठित हुआ। यद्यपि यह सब लोग वैष्णव थे, तथापि इनमें हरेकका धर्म्म-सम्प्रदाय यथाक्रम ब्रह्मा, शिव और ब्रह्माके पुत्र सनकादिके नामके अनु-सार परिचित था। (Compare wilson, 'As, Res," xvi 27 &c)

उपलब्धिके लिये ही इस नये सम्प्रदायकी सृष्टि हुई थी। ब्राह्मणोंका शरीर सब समय ही पवित्र समझा जाता था। सभी विश्वास करते, कि धार्म्मिक बौद्धधर्म्मावलम्बी इच्छा करनेसे इस जन्ममें ही आत्माको देहमुक्त कर ईश्वरमें लीन हो सकते हैं। जब शङ्कराचार्य्यने कितने ही प्रिय शिष्योंको अवाध्य और अपने धर्म्ममें विचलित देख सम्प्रदायसे निकाल दिया, तब रामानुजने देखा, कि इस समय निराकार ईश्वरकी ओर लोग उतने श्रद्धावान नहीं हैं; सुतरां उन्होंने उनके शिष्योंको गुरुभक्तिकी प्रवृत्ति किसी मनुष्यकी ओर अर्पण करनेका उपदेश दिया। कुछ दिनोंके बाद सभी ऐसा समझने लगे, कि "गुरु" के लिये सब चीज ही परित्याग की जा सकती है और "तन, मन, धन," (शरीर, आत्मा और पार्थिव ऐश्वर्य्य),— सबको ही गुरुके नामसे त्यागना पड़ेगा। * धर्म्मगुरुकी पूरी अधीनता स्वीकार करनेपर धर्म्मोक्त देवताओंके सम्बन्धमें जीवन्त धारणा बद्धमूल होती है। जो सब असभ्य जातियां अपना धर्म्म छोड़ दूसरा धर्म्म ग्रहण करती हैं, उनके हृदयमें ईश्वर-प्रतीति असम्भव है, धर्म्मकार्य्यमें दृढ़ मनोयोग न होनेसे धर्म्मज्ञान पाना दुर्लभ है। इस मतके बदलनेके कारण-स्वरूप [illegible] रामानुजने प्रतिपन्न किया था, कि ऐहिक धर्म्मकार्य्यमें कितने ही उपकरण आवश्यक हैं। † शान्तिप्रिय शिक्षित

---

* Compare Wilson, Asiatic Researchs, xvi, 90,

† पाठकगणको शायद याद रह सकता है, कि [illegible] [illegible] युद्ध जीतनेके बाद [illegible] ईश्वरविश्वास और [illegible]

सम्प्रदायोंके दृढ़विश्वासोंके धर्म्ममतको परीक्षासे ही उनकी सरलता और दृढ़ताका परिचय पाया जा सकता है। इस कारण भारतीय धर्म्मसंस्कारकोंने मुक्तिप्रार्थियोंसे अन्धविश्वास और आशाकी ऐसी प्रमाणोक्ति संग्रह की थी।

जैसे धर्म्माचरणकी भिन्न भिन्न राहें प्रचलित होने लगीं; दर्शनशास्त्रीय ज्ञान और सिद्धान्त भी उसके साथ समभावसे परिवर्त्तित हुआ। विद्या, अर्थ और लोगोंके साथ अधिक परिमाणसे मिलनेसे दारुण नास्तिकताकी ओर साधारणतः सबकी इच्छा हुई। छः नास्तिक सम्प्रदायके विरुद्धवादी छः दृढ़ धर्म्ममत और धर्म्मसम्प्रदाय प्रवर्त्तित हुए। मानसिक और प्राकृतिक दृश्यावलीकी तर्कशास्त्रकी सहायतासे आलोचनाकर, ईश्वर-ज्ञान मीमांसाकी चेष्टा होने लगी। * परमाणुका सत्त्वा और अविनश्वत्व और ज्ञान और विवेक प्रभृतिके सम्बन्धमें विचार आरम्भ हुआ।

कहानी सुन कर्त्ता क्षोभ और व्यग्रता प्रकाश की थी। क्लभिज अपनी स्त्रीके धर्म्मसे दीक्षित हो "रीमजे" के पुराने धर्म्मोपदेशकका शिष्यत्व ग्रहण किया था। उन्होंने कहा था,— "यदि मैं अपनी साहसी फ्रान्सीसी सैन्यदलके साथ उपस्थित रहता, तो ऐसी अवस्थामें यीशुका प्रतिशोध लेता।" (Glibbon "Decline and Fall of the Roman Emplre," vi 302.) मुसलमान लोग भी अलीके पुत्र हुसेन और तैमूरके सम्बन्धमें ऐसा ही कहते हैं। विषयी तैमूरने कहा था,—"मत्यपर इमामकी प्राणरक्षा करने या मृत्युका प्रतिशोध लेने सुदूर भारतवर्षसे मैं बहुत शीघ्र आता।"

* उनकी कभी ऐसी ही युक्ति तर्क और स्वभाव (शरीर

इन सब बातोंको उठा वादाविवाद चलने लगा, कि जीवन औ आत्मा दोनो ही एक दूसरेसे अलग हैं,—फिर आत्मा औ

के विषयमें यूनानी लोगोंकी तीन दार्शनिक सम्प्रदायो जैसी है। [illegible] चलित बातोंमें "देववाणी" (या नीति) हेतु और इन्द्रियके सम्बन्धमें यह श्रेणी या सम्प्रदाय समूह प्रतिष्ठित हुए है। जैमिनीका "पूर्व्व मीमांसा" और व्यासका "उत्तर मीमांसा" या वेदान्त वेदके अवलम्बनसे लिखा है। "पीथागोरासके" नैतिक मतके साथ उनका अनेक सादृश्य दिखाई देता है। गौतमकृत "न्याय या तार्किक" मत जेनोफेल लोगोंके तर्कशास्त्रके समान है। कपिलका सांख्यदर्शन और पातञ्जलका परिवर्त्तित सांख्य-दर्शन या 'योग' दोनो ही नास्तिकताके भावसे भरे हैं। वह खेलके जडवागतिक "आइओनिक" मतके समान जान पड़ता है। किन्तु कणादके "वैशेषिक मीमांसा"का "तार्किक मत और इन्द्रिय-सम्बन्धीय मत दोनो ही मौजूद है। यद्यपि वैशेषिक मत "एटोमिक" भ्रम विशेष नामसे सांख्य या नास्तिक मतके साथ एक ही जातिमें गिनती होती है, किन्तु वह पूर्व्ववर्त्ती मतका निकटसम्पर्कीय या गौतमके न्यायशास्त्रके समान जान पड़ता है। मिस्टर वार्डने-("On the Hindoos" ii, 113) हरेक शास्त्रकारको बराबर तुलनाकर उसका सादृश्य दिखानेकी चेष्टा की है। किन्तु समस्त भारतीय दर्शनशास्त्र या यूनानी लोगोंने धर्म्ममतके प्रत्न गुरुत्वके विषयमें हमलोगोंकी समस्त मीमांसा [illegible]। [illegible] त्वकी सम्भावना और कार्यकारिता [illegible] भी [illegible]। इन दो सम्प्रदायोंकी [illegible]

जीवन दोनो ही एक और ईश्वरके बराबर है। ऐसे विचार-मीमांसाके फलसे कोई कोई नास्तिक हो गये, कोई साकारकी उपासना करने लगे, परन्तु ज्यादा मनुष्योंने "माया-सूत्र" ही

को कितनी ही न्यायनङ्गत युक्तियां दिखाई हैं वह देखने लायक है। (History of India i, 234)

आजकलके छः नास्तिक सम्प्रदायोंमें चार बौद्ध सम्प्रदाय दिखाई देते हैं। जैसे,—"सौत्रान्तिक, माध्यमिक, योगाचार और वैभषिक। ' इनके भीतर दो जैन सम्प्रदाय भी हैं,—जैसे, "दिगम्बर" और "श्वेताम्बर" । "दिगम्बर" सम्प्रदाय समझता है, कि स्त्री जाति मुक्ति पानेमें असमर्थ और उसकी आत्मा भी अमर नहीं है। अगर भिन्न भिन्न जैन सम्प्रनायको एक बड़ी श्रेणीके भीतर किया जाय, तो ऐसा होनेपर "चार्व्वाक" या "वार्हस्पत्य" सम्प्रदाय उपरोक्त छः के षष्ठ कहे जा सकते हैं। यह लोग घोर नास्तिक हैं, प्रचलित धर्म्ममतमें किसी-का भी वह अनुसरण नहीं करते। हिन्दू समझते हैं, कि "जुपिटर" ग्रहोंके प्रतिनिधि वृहस्पति—नास्तिकताके आदि देवता है। कारण साधारण लोगोंमें ईश्वरकी अर्पित क्षमता-को ही धर्म्म समझते हैं और बड़े आग्रहके साथ उसकी ही उपासना करते हैं। ईश्वरकी चिन्ता और सत्पथपर रह वह लोग इसीतरह धर्म्माचरण करते हुए धर्म्मके अधिकारी होने लगे। इसी समयसे ही वृहस्पतिने तरह तरहकी भ्रमात्मक बातें पैदा की, इसलिये ही जनसाधारणको विचारशक्ति घटी और वह लोग कर्त्तव्यनिर्णय कर न सके।

अवलम्बन किया। इस माया-सूत्रके अनुसार इन्द्रिय-ज्ञान ही इहजीवनका एकमात्र परिचालक हो खड़ा हुआ। माया-सूत्रावलम्बी बाह्य जगत्‌की किसी चीजको भी सत्य और दीर्घ-कालस्थायी कहकर स्वीकार नहीं करते। इस सूत्रको परवर्त्ती संस्कारकोंने आग्रहके साथ वे नीति और धर्म्म-विषयमें उपदेश देना आरम्भ किया। *

---

*हिन्दुओंका "माया-सूत्र" नीति, काव्य और दर्शन, इन तीन भागोंमें विभक्त किया जा सकता है।

"नीति शास्त्रानुसार"—माया खलोमनका गर्व, (Eccle i-astes, i and ii.) था जगत्‌के असारत्वके सिवा और कुछ भी नहीं है। इसीलिये कविराने कहा है, कि संभवतः माया इन्द्रजालकी तरह भ्रमात्मक और अनिष्टकर या नैतिक भ्रम-पूर्ण है। (Asiatic Researchee, xvi. 161) मिष्टर मिल-मानने विज्ञताके साथ आलोचना कर देखा है, कि धर्म्मप्रवर्त्तक सेण्टजन, प्लेटो और "लगोज" के (ईश्वर-वाक्य, योशु) जैसी व्याख्या की है; भारतीय माया-सूत्र भी उसी भावसे ही परिग्रहीत हुआ है। (Note in 'Gil bon's History, iii, 312.) हिन्दुओंने पापपूर्ण जागतिक चिन्ताके "विषयमें मायासूत्र" ग्रहण किया है। सेण्टजनने यूनान और रोमनोंको परमेश्वरके साथ यीशुखृष्टके सम्बन्धकी प्रकृति समझा दी है, उन्होंने ईश्वरका स्वरूप वर्णन करते हुए कहा था, कि यीशुखृष्टसे ही ईश्वर-सम्बन्धीय ज्ञान प्रकट होगा।

"काव्य" शास्त्रानुसार,—"माया" ईश्वर और ऐन्द्रिक शक्ति-

खृष्ट-जन्मके हजार वर्ष बाद भी हिन्दूधर्म्म और नीतिशा-स्त्रकी ऐसी ही अवस्था हुई थी। क्रमिक जातिविचार और

सम्पन्न वीरोंकी दृष्टिशक्ति प्रतिरोधकारी सूक्ष्म आवरण विशेष है,—इससे उनकी दृष्टिशक्ति या इन्द्रियज्ञान सीमाबद्ध हो गया है। (Heeren's Asiatic Nations, iii, 203.) उसी तरह प्यालासने डाइओमेडकी आंखोका अन्धकार दूरकर ईश्वरकी स्वर्गीया मूर्त्ति नश्वर मनुष्यकी आंखोके आगे कर रखा है (Iliad, v)। किन्तु लोगोंका ऐसा विश्वास है, कि स्वतः-सिद्ध अपूर्ण शक्तिके कारण मनुष्य नैसर्गिक जगतके विषयमें पूरा ज्ञान पानेमें अक्षम हैं।

"दर्शन"-शास्त्रके मतसे,—वेदान्त दर्शनमें "मायासूत्र" जिसतरह वर्णित हुआ है, यह बार्कलीरके मनस्तत्त्वके बराबर है। (यह वेदान्तसूत्र सांख्य-सूत्रकी प्रकृति है। जेनोफिनके सृष्टिविवरणके साथ कई अंशमें इसकी समता दिखाई देती है और हीराक्लिटासकी असीमशक्तिसम्पन्न अनन्त ईश्वरलीलाके साथ इसका पूरा सादृश्य मौजूद है।) बेकनके आइडोला-सूत्र और माया-सूत्र,—दोनो हीका उत्पत्तिस्थल एक है, ऐसा इन्द्रजाल या भ्रममूर्त्तिकी तरह माया प्लेटोके "Idea" या "सत्य" मतके विपरीत है। साधारणतः माया कहनेसे प्रकृत वस्तुके विरुद्ध धर्म्माक्रान्त अनुमेय या अनुभवनीय वस्तु ही समझी जाती है,—दृष्टान्त स्वरूप, साधारणतः रस्सीको जैसे सर्प समझकर भ्रम होता है। बड़े ही आश्चर्यका विषय यह है, कि इङ्गलण्ड और भारतवर्ष,—

जातिविभागके साथ ही साथ लोगोंको पुराने धर्मग्रन्थोंकी उपयोगिता भी विशेषरूपसे घट गई। ब्राह्मण लोग नैतिक

दोनों स्थानोंमें ही वार्कलेके स्वप्न विषयक कल्पना और ब्राह्म-णोंके ऐन्द्रजालिक मतका एक ही प्रकार युक्ति द्वारा खण्डन किया जा चुका है। एक उत्तेजित हाथी द्वारा शङ्कराचार्य विताड़ित हुए थे। किन्तु शङ्कराचार्य अपनी देह और अन्यान्य मनुष्योंकी देहको असार समझते थे। जब पैरमें पत्थरके टुकड़ेकी चोट लगनेसे वह पीछे हटे, डाक्टर जनसन् समझते हैं कि तभी उनका मत विध्वस्त हुआ था। विप-क्षके अनुचरोंकी बुद्धिशक्तिकी अपेक्षा शङ्कराचार्यकी बुद्धिशक्ति तेज थी। जब शङ्कराचार्यके विरुद्धवादी मनुष्य चुद्र प्राणीकी हत्याकी आशङ्कासे 'मन्दपदविक्षेपके लिये उनका ठट्टा करते, तो वह तिरस्कार कर कहते, कि यह सब इन्द्रजाल है। वह कहते, प्रकृतपक्षमें शङ्कर भी नहीं, हाथी भी नहीं; भागना भी नहीं,—यह सब इन्द्रजाल है। (Dedistan ii 103)

चौथे माया राजनीतिक सिद्धान्तमें भी व्यवहृत होती है। "उवशास्त्र" या चौथे 'उपवेद' की नीति" या नाटिका" के ग्रंथमें ऐसा ही कहा है। इसके अन्यान्य विषयोंमें शासनकर्ता-ओंके कर्तव्य-विषयकी भी बहुत मीमांसा है, यह नाटिका [illegible] वस्तुके पानेका उपायस्वरूप भी कहा जाता है [illegible] सिद्धान्त-शास्त्रके अनुसार "माया" शब्दसे छिपा भाव या [illegible] या राजनीतिक कौशल समझा जाता है। [illegible] नहीं [illegible]

और कृषक-सम्प्रदायसे पूरी तरह अलग हुए। ईश्वरका बहुल प्रचारकर और समाजमें संन्यासी सम्प्रदायको धार्म्मिक गार्हस्थ्य सम्प्रदायकी अपेक्षा श्रेष्ठतर स्थान अर्पणकर, ब्राह्मणोंने अपना प्राधान्य नष्ट किया था। इसलिये थोड़े दिनोंमें ही उनके देवदेवीगण आपसमें प्रतिद्वन्द्वी जान पड़ने लगे और उपासक दलमें घोरतर शत्रुता शुरू हुई। इस बीर क्षत्रिय-जाति अपने इच्छानुयायी विप्र और सुनिपुण नामक पदपर अभिषिक्त हुई और एक धर्म्म-शासनसे दूसरा और एक ईश्वरसे दूसरे ईश्वरको श्रेष्ठतर समझाने लगी। इसी समय प्रकृत धर्म्माराधनाकी प्रसार-प्रतिपत्ति कम होने लगी, अधिकांश लोग धर्म्मयाजक और प्रचारककी योग्यता, सरलता और धर्म्मनिष्ठाके प्रति सन्दिग्ध हो उठे। परन्तु इन उपदेष्टा सम्प्रदायोंमें भी आपसमें मतानैक्य उत्पन्न हुआ।

इसी समय एक दल नई जातिका आविर्भाव हुआ, और एक नये धर्म्ममतके फैलनेसे भ्रष्ट हिन्दूधर्म्म ध्वंसकी राहपर बढ़ा। "हिजरी" के पहले और दूसरी शताब्दिके भीतर भारत-वर्षमें पुरानी अरब जातिका आक्रमण और लूटनेकी यातना उतनी मालूम नहीं हुई। जब अब्बासईद लोग "खलीफा" पदपर बैठे, तबसे ही वह लोग बहुत दूर फैले हुए राज्यमें दृढ़ता-सम्पादनमें मनोयोगी हुए। स्पेनके अलग होनेसे उनका राज्य बहुत कुछ दुर्ब्बल हो गया था, सुतरां दूसरे समय वह और

है। कहते है, कि मायावश शत्रु शत्रुता भूल जाता है, मनुष्यजाति भी वश्यता स्वीकार करती है।

दूर देशमें राज्य फैलानेके लिये बलप्रय करनेमें प्रवृत्त नहीं हुए, उन्होंने मनमें सोचा, कि विद्रोहसे वह राज्य विच्छिन्न हो सकता है। अधिकन्तु अरब जातिमें वह एकता, उत्साह और वीरत्व न रहा, उनके प्रतिनिधि अरब लोग बड़े स्वार्थपर और विद्रोही हो पड़े थे। धर्म्म-प्रवर्त्तक मुहम्मदने देशवासियोंको पहले जो शक्ति प्रदान की थी, उससे वह लोग अपने राज्यके फैलानेकी क्षमता समझ सके थे। उस समय दिल्लीके हिन्दुओं और कुस्तुनतुनियाके खृष्टानोंपर आधिपत्य फैलानेके लिये मुसलमान-धर्म्ममें साहसिकताकी और नये विश्वासके उद्रेककी आवश्यकता हुई थी। वह उत्तेजना-शक्ति मुसलमानोंने "खुर्द" नामक पहाड़ी जाति और प्रधानतः पशुपालक "तुर्कमान" जातिसे पाई थी। इन "खुर्द" और "तुर्कमान" लोगोंने किसी अज्ञात कारणवश एकबार उपजाऊ भूमि और धनधान्यपूर्ण दक्षिण देश समूहपर आक्रमण किया था। खृष्टीय नवीं शताब्दिमें इस युद्धप्रिय पशुपालक जातिने सिन्धुनदकी ओर हागणसागरके निकटवर्त्ती स्थानोंमें बस्ती बसाना आरम्भ किया। पुराने समय "गथ" और "भाण्डल" जाति और उनके आदिपुरुष "आगाष्टन" और 'रोमनके राज्यमें प्रवेश पा जिस तरह शामके ह.पसे राज्यपर अधिकार किया था, इन लोगोंने भी इसी तरह मुहम्मदके साम्राज्यपर अधिकारकर शासन-संभ्रम फैलाया था। तुगरलबेग और सलादीन,—रिलिजी और थियोडोरिककी इन्हीं शाखा विशेष हैं। मुगलादि हूना और स्लाव लोग रुमानों और लाटिन धर्म्ममन्दिर सम्राट,पके विशप और "निकन" लोगोंकी तरह काफिरोंका नाशमें पक्के

दीक्षित करनेके लिये उन्मुक्त हुए थे। भिन्न देशवासी जो सब असभ्य जातियां समय समयपर यूरोपपर आक्रमण कर-तीं वह भी खृष्टधर्म्ममें दीक्षित हुई थीं। जो एशियापर आक्रमण करते, उन्होंने भी अपने लिये उपयोगी समझ अपनी इच्छासे और अनुरागवश "इसलाम धर्म्म" ग्रहण किया था। शिक्षा और सभ्यताके फलसे उनका अनिश्चित और भित्तिहीन विश्वास दूर हुआ और उन्होंने सर्व्वशक्तिमान ईश्वरपर विश्वास स्थापन किया। इस समय वह लोग धर्म्मबलसे चलते हैं; राज्य फैलाना उनका उद्देश्य है। इस धर्म्म और राज्य फैला-नेकी लालसासे परिचालित "तुर्क" जातिने बैजनटाइन सिजार लोगोंके ध्वंसप्राय राज्य और भारतवर्षपर आक्रमण किया

१००१ ई० में मुहम्मदने सिन्धुनद पार किया। इसके कुछ दिनो पहले शङ्कराचार्य्यने विधर्म्मियोंकी उन्नतिमें बाधा देनेकी वृथा कोशिश की थी। जिन तरह तरहके धर्म्ममतोंके प्रचलित रहनेसे देशवासी जन साधारण किंकर्त्तव्यविमूढ़ हुए थे, उन्होंने उन सब विभिन्न मतोंके संस्कारसाधनकी चेष्टा की, किन्तु उसमें वह कृतकार्य्य हो नहीं सके। पञ्जाब हमेशाके लिये मुसलमानोंका अधिकृत हुआ और सुलतानकी मृत्युके पहले ही मुसलमानोंने कन्नौज और गुजरात लूटा। ११८३ ई० में "गोरि-यों" ने "गजनी" के लोगोंको राज्यसे विताड़ित किया। इसके उपरान्त उन लोगों द्वारा बङ्गाल देश अधिकृत हुआ। १२०६ ई० में जब "इबेक" तुर्कोने बलपूर्व्वक उनके राज्यपर अधिकार कर लिया, तब हिन्दुस्थान मुसलमान राज्यके एक स्वतन्त्र अंशरूप-पमें बदल गया। पीछे प्रायः डेढ़ सौ वर्षके भीतर ही समग्र

भारतवर्ष पर मुसलमानोंने आधिपत्य स्थापन किया। खृष्टीय तेरहवीं शताब्दिमें मुगल और पन्द्रहवीं शताब्दिमें बहुत ज्यादा अफगानजाति भारतवर्षमें आने लगी। उनके आनेसे परवर्त्ती शासन-कर्त्ताओंकी क्षमता दृढ़ हुई, पराजित जातिकी भाषा और भावमें धीरे धीरे बदलाव उपस्थित होने लगा। खिलजी तुगलक और लोदी लोग इतने असभ्य थे कि वह अपने दुराग्रहका कारणतक ढूंढना चाहते नहीं थे। वह मालगुजारीके विषयमें इच्छानुसार व्यवहार करते थे सही किन्तु प्रचलित कानूनका उल्लङ्घन करते नहीं थे। धर्ममें दीक्षित करना और बहुत ज्यादा कर अदा करना,—इन दोनोंमें आन्तिमको प्रशंसनीय न समझनेपर भी वह उसे ही ज्यादातर लाभजनक समझते थे। उनकी प्रतिष्ठित कितनी ही मसजिदें उनकी धर्मनिष्ठाकी और वदान्यताकी गवाही देती हैं। उन्होंने अनुसरणीय "चान्द्र" वर्षके बदले "सौर" वर्ष ग्रहण किया था। उनके इस व्यवहारसे समझा जाता है, कि वह लोग रोजाना कर्त्तव्यके विषयमें लापरवाही करते नहीं हैं सही, किन्तु कृषिकार्य्यमें पूरे उदासीन थे। *

* असलमें सौर या शाम्सिक वर्ष "शाहूर सन्,"—या और भी दूसरा भावमें "सूर सूर्य",—नामसे अभिहित होता है। अरबी महीनेके वर्षका भी यही नाम है। ईसा चौदहवीं शताब्दीके भीतर या १३४१ और १३४४ ई० में तुगलक बादशाहने इस "सौर" वर्षको दक्षिणमें चलाया। इस समय महाराष्ट्रीय लोगोंके बहुत कागजों [illegible] इस [illegible]

मुसलमान लोग रीति प्रकृतिमें भारतवासियों जैसे हो गये थे। खृष्टीय सोलहवीं शताब्दिमें अकबरने दोनों मतका उपादानसमष्टि इकट्ठाकर जातीय शासन-प्रणाली या राजतन्त्र राज्य-प्रतिष्ठाका उपाय उत्पन्न किया। मुसलमानोंके दिलमें ऐसा प्रतिघात उपस्थित हुआ, कि राजनीतिक वश्यता-स्वीकारके लिये सब समय सामाजिक एकता बाधित नहीं होती। औरङ्गजेब अधीर हो पड़े। औरङ्गजेबकी चञ्चलताके फलसे मुगलवंश शीघ्र ही लोप हो गया।

उल्लेख करते है। हिन्दी (मरहठी) अक्षरोंमें अरबी बोलीमे यह लिखा जाता है। (Compare Princep's useful Tables, ii, 30, Who refers to a Report, by Liut-Col. Jervis on Weights and Measures.) भारतवर्षके अन्यान्य स्थानोंमें जितने "फसली" या "सन्" (शस्य) वर्ष प्रचलित हैं, वह अकबर और शाहजहांके राज्यके समयमें चले हैं। इस समय भी इसका व्यवहार दिखाई देता है। यहांतक, कि अङ्गरेज लोग भी मालगुजारीके हिसाबकी बहीमें ऐसे ही वर्ष (फसली) प्रयोग करते हैं। ऐसे प्रत्येक वर्षकी गिनती खृष्टीय शकको १ली जुलाईसे आरम्भ होती है; मुसलमान लोग हिजरी और हिन्दू "शाक" (शक) और "सम्वत् प्रभृति नाम व्यवहार करते हैं। इसकी अपेक्षा और सरलताका निदर्शन और क्या हो सकता है? उस समय अङ्गरेजोंके सर्व्वव्यापी प्राधान्यके कारण यह उपयोगी सन् प्रचलित हुआ था।

और एक नये सम्प्रदायके प्रभुत्वने भारतवर्षके अधिकांश मनुष्योंके मानसक्षेत्रमें धीरे धीरे आधिपत्य फैलाया था। वह क्षत्रियोंके समान थे; परन्तु ज्यादा जगहोंमें वह क्षत्रियोंकी अपेक्षा अधिक साहसी थे। शङ्कराचार्य्यने जिस वैदिक मतके सरल अंशका परित्याग किया था, उन्होंने उसी अंशको फिर ग्रहण किया। वह नया सम्प्रदाय ब्राह्मणोंको अपवित्र समझ घृणा करता था। प्रमाण-प्रयोग द्वारा एकेश्वरत्व प्रचार करना और मूर्त्तिपूजामें ईश्वरको घृणाका विषय प्रकाश करना था। किन्तु उनकी यह प्रक्रिया धीरे धीरे समाप्त हुई थी। कारण, उस समय भी लोगोंका विश्वास था, कि जाति और वंशानुक्रमसे वह लोग जिन देवदेवियोंकी आराधना करते हैं, वह सब देव-देवी खास खास ज्ञान और शक्तिकी आधार स्वरूप हैं। कई एक पुस्तक पढ़के मनुका आईन-प्रकरण प्रचारित हुआ। इस समय मनुष्यकी चिन्ता और आचार-व्यवहार उसीके अनुसार चलने लगा। उस समय भी [illegible] विवेकवृन्द ब्राह्मणोंकी जाति-भेदमूलक गौरवमें अनास्था देख न सके। शैव और वैष्णव लोग अपनी जातिगत पवित्रताकी रक्षा करते थे, किन्तु मुगल और पठानोंने राजपूतजातिकी स्वातन्त्र्य-नीतिका अनुस-रण किया था। नये नये कुसंस्कारसे प्राचीन धर्म विश्वास क्रमशः दूर होने लगे। 'पाप' और 'पवित्र' 'योगी' और "संन्यासी" अलौकिक कार्य सम्पादनमें [illegible] और [illegible] पर अधिकार करने लगे। मुसलमानोंने धर्म-सम्प्रदाय उप-योगी देवताकी उपासना करनेके [illegible] हुई। इसप्रकार आचार-व्यवहार और धर्ममें [illegible]

विरुद्ध भावापन्न हो उठे। अल्पसंख्यक कितने ही मनुष्य क़ुरान और वेद प्रभृति ईश्वरवाक्योंका यथारीति पालन करने लगे, किन्तु अधिकांश लोग मानसिक उत्तेजनावश ब्राह्मण, मुल्ला, महादेव, मुहम्मद प्रभृतिके प्रति श्रद्धाहीन हुए। *

---

* गीवनने (History ii, 356) ठीक किया है, कि यूनानियों और रोमनोंकी नास्तिकतासे खृष्टधर्म्मके प्रचारमें बहुत सुविधा हुई थी। "कोयाटार्ली रिवो"के एक लेखकने भी उसके अनुकूल राय प्रकाश की है। सिकन्दर शाहके आक्रमणके समय और रोमराज्यके प्राधान्यके समय एशिया और युरोपके कुसंस्कारोंके आपसमें मिलजानेके कारण ही आजकलकी नास्तिकताकी सृष्टि होनेकी बात कोई पूरी तरह स्वीकार नहीं करते।

मुसलमानोंकी सभ्यता और शिक्षाके प्रभावसे यूरोपवालोंका मानवचेत गठित हुआ था, इस समय सभी उससे इनकार करते हैं। किन्तु शारीरिक और मानसिक विज्ञानके सम्बन्धमें हमारी वाध्यवाधकता "हेलम" स्वीकार कर गये हैं। (Literature of Europe, i. 90, 91, 149, 150, 157, 158, 189, 190.) अक्सफोर्ड कालेजके प्रतिनिधि, समालोचक और स्वभाव-कवि विलियम ग्रे (Sketch of English prose Liteature, P. 22, 37) केवल एशियाकी कल्पनाशक्तिकी प्रशंसा करके ही विरत हुए नहीं हैं,—उन्होंने मुक्तकण्ठसे स्वीकार किया है, कि "गथ" जातिकी प्रतिभापर उस कल्पनाशक्तिका प्रभाव फैला था। वह लोग भी उस ज्ञानके अधिकारी हुए थे और उसे

इसतरह आपसमें मतविरोध आरम्भ हुआ। इसके फलसे पहले चौदहवीं शताब्दिके आखिरी हिस्सेमें रामानुजके मताव-

---

उन्होंने सब जगह फैलाया था। पहले भारतवर्षसे मिश्रमें इसकी उत्पत्ति हुई; यूनानियों और रोमियोंने उसका परिवर्जित और परिमार्ज्जित अंश ग्रहण किया था। इस समय यह विज्ञान-शास्त्र आजकलके यूरोपीय लोगों द्वारा अधिक भावसे रक ठीक राहपर चलाया गया है। क्रस्तानोंकी विवेक-शक्तिकी अपेक्षा मुसलमानोंकी विवेक-शक्ति बहुत ज्यादा प्रखर और श्रेष्ठ थी, दार्शनिक लोगोंका विवेक-शास्त्र ही उसका सच्चा दृष्टान्त है। वर्तमान समय भी स्पेनकी राज्यशासन-नीतिमें, चिकित्सा और ज्योतिष-शास्त्रकी प्रचलित भाषामें, यूरोपके करद्राज्योंके प्रच-लित "गीत" समूहमें, उसका प्रमाण दिखाई देता है। यह गान अरब देशीय धर्मप्रचारकों और तुर्क या मराबनोंके उद्दे श्यसे गाये जाते हैं; या इससे मुसलमान पद्दलित [illegible] वीर-पुरुष "कोह" की कार्य्यावली भी वर्णित और [illegible] होती है।

"होवेल" ने (History of Inductive Sciences i [illegible] 276) ठीक किया है, कि अरब जातिने प्रधान विज्ञान-शास्त्र,—प्राकृतिक-विज्ञान या दर्शन-विज्ञान-शास्त्रकी उन्नतिके लिये यदि कुछ किया है, तो उसकी गिनती बहुत थोड़ी है। अरब जातिकी वैज्ञानिक उन्नतिके विषयमें होवेल [illegible] गौण भाव [illegible] है, कि [illegible] था नहीं, किन्तु उसमें कोई क्रम [illegible] नहीं हुआ। [illegible]

र्यों रामानन्दने काशीमें एक धर्म्म-सम्प्रदाय प्रतिष्ठित किया। एकधर्म्म—एकविश्वास पहले ही विलुप्त हुआ था। इसी समय विदेशी विजेताओंके राज्यपर अधिकार करनेसे धर्म्मप्रचारक और धर्म्मयाजकोंकी कार्य्य-प्रणाली भी विभिन्न हो गई; ज्ञाना-र्जनका आग्रह कम हो गया; पुराण या प्राचीन इतिहासोंमें कविकी कल्पना और वंशकहानी मिलाई जाने लगी; वेदके आ-धिपत्यमें कमी आ गई। * उत्तर-पश्चिम प्रदेशके (मध्यगङ्गाके

निम्नलिखित हेतुवादसे होवेल उनका दोष कुड़ा भी सकते है,—अरबजातिकी सब प्रतिभा-शक्तियां धर्म्मप्रचारमें नियो-जित हुई थीं। उनकी चेष्टासे फारिसकी दुष्ट-नीति सतुपथपर लाई गई थी, फिर भारतवर्षमें एकेश्वरवादिताकी प्रतिष्ठा हुई थी; और आजतक यूरोपीय लोग अफरिकाके जिन सब स्था-नोंको देखनेमें समर्थ नहीं हुए, अरबजातिने प्रतिभाके बलसे वहांके घोर मूर्त्तिपूजक धर्म्मका भी उच्छेद साधन किया था।

* आजकलके समालोचक यह बात स्वीकार करते हैं, कि बहुत दिनो पहले पुराणकी सृष्टि हुई है। फलतः "राजपूत" "भाट" या "कवि" और "चांद" प्रभृतिके असम्बद्ध विवरणकी प्रचलित संख्यामें, पृथ्वीराज और महम्मदकी परवर्त्ती वंशावली और उनके कार्य्यकलापोंका जैसा हाल दिखाई देता है, इसमें सन्देह नहीं, कि इन सब पुराणोंमें ऐसे ही असंख्य और आजकलके असम्बद्ध विवरण मिले हैं। पुराने विषयसे नये विषयको अलग करना कठिन है; जान पड़ता है समालोचक और प्रतिवादकारी मनुष्य कभी समझ नहीं सके हैं, कि सभा

उपकूलप्रदेशको) इस नये सम्प्रदायने महावीर रामचन्द्रको उपास्य देवता समझ ग्रहण किया। मुसलमानोंके प्राधान्यविस्तारके साथ ही साथ ब्राह्मण और क्षत्रियोंके वंशानुगत श्रेष्ठत्वकी नीति मिट गई। साथ ही साथ रामानन्दने प्रचार किया,— "ईश्वरके सामने सभी मनुष्य समान हैं।" रामानन्दने उपासना की भेदनीति फैलाई नहीं थी। उन्होंने सब श्रेणीके लोगोंको ही समभावसे शिष्यरूपमें ग्रहण किया था। वह प्रचार करते थे, कि सच्चे उपासक समाज-प्रकृतिकी अपेक्षा श्रेष्ठतर स्थानमें उन्नीत होते हैं और स्वाधीनता और मुक्ति पाते हैं। * इस चौदह वीं

लोचित और स्वल्प-दुष्ट रामायण और महाभारत ही पुराणोंमें सबसे श्रेष्ठ हैं। परवर्त्ती तोषामोदकारिगण आजकलके वंश-परम्पराकी प्रशंसा लिपिबद्ध कर गये हैं,—इस एकमात्र कारणसे उन्होंने प्रतिष्ठित अष्टादश पुराणोंकी असीम क्षमताकी और सारतत्त्वोंकी अवमानना करनेमें वृथा चेष्टा की है। जो हो, पुराणोंको ऐतिहासिक घटनावलीको पुङ्खानुपुङ्ख वर्णन न समझकर चिन्तास्रोतका गतिनिर्देशक ही समझना चाहिये।

* Compare "Dabistan ii, 179 and wilson As. Res" xvi 36 &c) अध्यापक विलसन् कहते हैं, कि (idem p. 44 and also xvii 186) केवलमात्र ब्राह्मण ही शङ्कराचार्य और रामानन्दके चलाये धर्म-सम्प्रदायके भीतर हैं। [illegible] ब्राह्मणोंने पहलेहीसे यह मत ग्रहण किया। रामानन्दके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कहते थे। [illegible] [illegible], कि [illegible] [illegible]

शताब्दिमें अध्यवसायशील पण्डित गोरखनाथने पञ्जाब प्रदेशमें "योगधर्म्म या सूत्र" का प्रचार किया और वहांके सब लोगोंने ही उसे आग्रहके साथ ग्रहण किया। यह योगसूत्र प्रकृत प्रस्तावमें बौद्धधर्म्मके एक साधन या कल्पनासे पैदा हुआ। किन्तु

पार करते नहीं थे। वह लोग समझते थे, कि यह नदी महादेव या महेशके निकट बहुत ही पवित्र है; परन्तु देश-भ्रमणके समय वह लोग इस नदीकी चारो ओर घूमकर जाते थे।

मध्यभारतके सभी समझाते, कि एक न एक दिन नर्म्मदा गङ्गाके स्थानपर अधिकारकर सबसे श्रेष्ठ पवित्र नदियोंमें गिनी जायगी। किन्तु ऐसे विचारका कोई कारण ढूंढे नहीं मिलता। इसका भी कोई प्रमाण नहीं है, कि यह नदी शिवके उद्देश्यसे उत्सर्गीकृत हुई है। महेश्वरका एक घूर्णावर्त्त है। गिरे हुए पत्थरोंके टुकड़े इसमें गोलाकृति और परिष्कृत हो कितने ही "लिङ्गकी" आकृति धारण करते हैं; यह धर्म्मयाजकोंके आयका प्रकृष्ट उपाय है। हिमालयकी किसी खास हिस्सेके नारायण-चक्रमें भी वैष्णवोंको वैसा ही लाभ होता है। इस घूर्णावर्त्तका सलिलकण 'पहाड़ी नदीकी चारो ओरके पत्थरोंका पवित्रताविधान करता है। देशी भाषामें कहा जाता है,—"रेवाके कङ्कड़ सब शङ्कर समान हैं," यानी नर्म्मदाके (रेवाके) हरेक पत्थरके टुकड़े ऐश्वरिकशक्तिसम्पन्न और शिवतुल्य है। महेश्वर "सुहेसर बाहु" या सहस्र-बाहु नामक एक क्षत्रिय राजाकी राजधानी थी, हिन्दियाके उसपार

दार्शनिक मत होनेके कारण व्यास और शाक्य दोनोंके शिष्योंने ही इस स्त्रको समभावसे ग्रहण किया था। जो हो, उस समय लोगोंका खयाल था, कि इस कालयुगमें पापी मनुष्य ऐसे महत और भयावह प्रायश्चित्त करनेमें समर्थ नहीं और पूरा मोक्ष पानेमें भी अक्षम है। किन्तु गोरखनाथने यह उपदेश प्रदान करना आरम्भ किया, कि कठोर मानसिक औदासी और उपासनासे अति अधम पापीका शरीर भी पवित्र स्वर्गी देवत्व पाता और उसकी आत्मा धीरे धीरे सर्व्वनियन्ता परमेश्व की आत्माके साथ मिलती है। उन्होंने शिवको ही शिष्यों एकमात्र उपास्य देवता मान इसके उपरान्त प्रचार किया, कि यह उपास्य देवता शिव ही जातिधर्म्म निर्व्विशेषसे सबके कठो अध्यवसायका और उपासनाका पुरस्कारविधान करेंगे। वह उस समय शिष्योंके सम्प्रदाय और धर्म्म-विश्वासके निदर्शन स्वरूप ललाटस्थ सामान्य चिह्नसे परितृप्त नहीं हुए। अन्यान्य सम्प्रदायोंसे उन्हें स्वतन्त्र करनेके लिये उन्होंने उनके कान छेद-नेकी व्यवस्था की। तबसे उनका शिष्यसम्प्रदाय "कानकटा (कनफटा) या छिन्नकर्ण योगी सम्प्रदायके नामसे परिचित है। *

अवस्थित "सिमाऊ" नगरसे कुछ दूर मथुरामके हाथसे वह राजा मारे गये। यह घटना ही बुद्धप्रिय प्राचीन शाक्य-वार वंशके ध्वंसका कारण जान पड़ती है।

* (Compare Wilson As. Res. xvii, 183, &c., and the Dabistan (Troyer's Translation, ii, 1.. &c.) [illegible]

इस तरह धर्मसंस्कारके पहले स्तर तय्यार हुआ। जातिभेदकी प्रथाके प्रचलित रहनेसे धनी और क्षमताशाली मनुष्योंका अभिमान और गर्व दृढ़रूपसे बद्धमूल हुआ था। धर्मका विश्वास और जीवनका सुखस्वच्छन्द-विसर्जन,—उसी जातिभेदके ध्वंसके उपायोंमें गिना गया। परवर्त्ती युगमें,

---

और मुसलमानोंमें अनेक विषयमें सादृश्य है, योगके सम्बन्धमें कहनेपर विज्ञानशास्त्रके मतसे दिखाई देता है, कि योग या औदासीन्य या आत्मज्ञान (विवेक) दोनो ही एक हैं। ऐसा ज्ञान उत्पन्न होनेपर आत्मा अमरत्व पाती और भाग्यचक्रके अधीन नहीं होती। इससे सच्चे विषयपर ज्ञान उत्पन्न होता और प्लेटोका विवेक ("Idea") या पृथिवीके आदिम गठनकी उपलब्धि की जा सकती है। और भी देखा जाता है, कि भारतवासी या यूनानी लोग कोई स्वीकार नहीं करते, कि मनुष्य इस असम्पूर्ण अवस्थामें ईश्वरमें लीन होते और सच्चे विषयमें ऐसा ज्ञान पा सकते हैं। (Compare Ritter, "Ancient Philosophy, Morrison's Translation," ii, 207, 384-386, and Wilson, 'As. Res,' xvii, 185) और भी बहुत पढ़नेसे मालूम होता है, कि मूलसूत्रके कपिल और पातञ्जलके समान मतके साथ प्लेटोका मत अनेक अंशमें बराबर है। जैसे,—ईश्वर और प्रकृति दोनो ही अमर—चिरस्थायी है; "महात्" या विवेक या जागतिक विवेक शक्ति और नोयस (Nous) या लगोज (Logos) सभी एक हैं। ऐसे ही और भी अनेक दृष्टान्त दिखाई देते हैं।

दार्शनिक मत होनेके कारण व्यास और शाक्य दोनोंके शिष्योंने ही इस स्तत्वको समभावसे ग्रहण किया था। जो हो, उस समय लोगोंका खयाल था, कि इस कालयुगमें पापी मनुष्य ऐसे महत और भयावह प्रायश्चित्त करनेमें समर्थ नहीं और पूरा मोक्ष पानेमें भी अक्षम है। किन्तु गोरखनाथने यह उपदेश प्रदान करना आरम्भ किया, कि कठोर मानसिक औदासीन्य और उपासनासे अति अधम पापीका शरीर भी पवित्र स्वर्गीय देवत्व पाता और उसकी आत्मा धीरे धीरे सर्व्वनियन्ता परमेश्वरकी आत्माके साथ मिलती है। उन्होंने शिवको ही शिष्योंके एकमात्र उपास्य देवता मान इसके उपरान्त प्रचार किया, कि यह उपास्य देवता शिव ही जातिधर्म्म निर्व्विशेषसे सबके कठोर अध्यवसायका और उपासनाका पुरस्कारविधान करेंगे। वह उस समय शिष्योंके सम्प्रदाय और धर्म्म-विश्वासके निदर्शनस्वरूप ललाटस्थ सामान्य चिह्नसे परितृप्त नहीं हुए। अन्यान्य सम्प्रदायोंसे उन्हें स्वतन्त्र करनेके लिये उन्होंने उनके कान छेदनेकी व्यवस्था की। तबसे उनका शिष्यसम्प्रदाय "कानफटा" (कनफटा) या छिन्नकर्ण योगी सम्प्रादायके नामसे परिचित है। *

अवस्थित "सिमाऊ" नगरसे कुछ दूर परशुरामके हाथसे वह राजा मारे गये। यह घटना ही युद्धप्रिय प्रधान ब्राह्मण-सार वंशके ध्वंसका कारण जान पड़ती है।

* (Compare Wilson As. Res, xvii, 183, &c, and the Dabistan (Troyer's Translation, ii, 1-3 &c) पूर्वोक्त ग्रन्थमें, देखोगे, समस्त [illegible] दिखाया है, कि [illegible]

इस तरह धर्म्मसंस्कारके पहले स्तर तय्यार हुआ। जातिभेदको प्रथाके प्रचलित रहनेसे धनी और क्षमताशाली मनुष्योंका अभिमान और गर्व्व दृढ़रूपसे बद्धमूल हुआ था। धर्म्मका विश्वास और जीवनका सुखस्वच्छन्द-विसर्ज्जन,—इसी जातिभेदके ध्वंसके उपायोंमें गिना गया। परवर्त्ती युगमें,

---

और मुसलमानोंमें अनेक विषयमें सादृश्य है, योगके सम्बन्धमें कहनेपर विज्ञानशास्त्रके मतसे दिखाई देता है, कि योग या औदासीन्य या आत्मज्ञान (विवेक) दोनो ही एक हैं। ऐसा ज्ञान उत्पन्न होनेपर आत्मा अमरत्व पाती और भाग्यचक्रके अधीन नहीं होती। इससे सच्चे विषयपर ज्ञान उत्पन्न होता और प्लेटोका विवेक ("Idea") या पृथिवीके आदिम गठनकी उपलब्धि की जा सकती है। और भी देखा जाता है, कि भारतवासी या यूनानी लोग कोई स्वीकार नहीं करते, कि मनुष्य इस असम्पूर्ण अवस्थामें ईश्वरमें लीन होते और सच्चे विषयमें ऐसा ज्ञान पा सकते हैं। (Compare Ritter, "Ancient Philosophy, Morrison's Translation," ii. 207, 334-386, and Wilson, 'As. Res,' xvii. 185) और भी बहुत ढूंढनेसे मालूम होता है, कि म्लेच्छके कपिल और पातञ्जलके समान मतके साथ प्लेटोका मत अनेक अंशमें बराबर है। जैसे,— ईश्वर और प्रकृति दोनो ही अमर—चिरस्थायी है; "महान्" या विवेक या जागतिक विवेक शक्ति और नोयज (Nous) या लगोज (Logos) सभी एक हैं। ऐसे ही और भी अनेक दृष्टान्त दिखाई देते है।

१४५० ई०में अज्ञात तन्तुवायसम्प्रदायभुक्त "कबीर" नामक रामानन्दके एक शिष्यने पौत्तलिक धर्म्म या मूर्त्तिउपासनाके प्रथाका उच्छेदसाधन किया। उनके प्रभावसे कुरान और शास्त्रका प्रभुत्व और कार्य्यकारिता और शिक्षित भाषाके व्यवहारका पक्षपातित्व ध्वंस हुआ। वह हिन्दू मुसलमान दोनो जातियोंको समभावसे शिक्षा देते थे; वह उन लोगोंको कल्पित कबीरकी उपासना कराने चाहते और भीतरी पवित्रता पानेमें सदा यत्नवान होनेका उपदेश देते थे। समग्र सृष्टि या जगतको वह "माया" या प्रतारणा और इन्द्रजाल-परिपूर्ण खोलती कहते थे। इसतरह उन्होंने मनुष्यकी दुर्ब्बलता और पाप कार्य्यमें आसक्तिके सम्बन्धमें तरह तरहका भय दिखाया था। प्रकृत पक्षमें कबीर ईश्वरका बाह्य वाहस्य स्वीकार करते थे, उन्होंने प्रचार किया था, कि राम या विष्णु ही ईश्वरके सर्वश्रेष्ठ विशुद्ध प्रतिकृति हैं। पूर्ब्बवर्त्ती संस्कारकोंकी तरह उन्होंने भी भ्रमवश जगदीश्वरको नाना आकृति प्रदान और बहुत गुणोंसे भूषित किया था। वह कहते थे,—ग्रहस्थाश्रम परित्याग करना अच्छा है, "साधु" या पवित्र, निष्पाप या विशुद्ध मनुष्य, सहिष्णु, धीर या निरीह उपासक ही इस जीवनमें सर्व शक्तिमानकी जीवन्त प्रतिमूर्त्ति स्वरूप है, किन्तु ऐसे सर्व प्रकारसे उनकी धर्म्म-संस्कार-नीति सीमाबद्ध हुई थी। तो भी, कबीरका यह संस्कृत मत स्पष्टरूपसे प्रचारित या लिपिबद्ध नहीं हुआ, या कोई पूरी तरहसे उपदेश भी कर नहीं सका। किन्तु यह विभिन्न आचार-पद्धतियों [illegible] उन्होंने भि प्रचलित भाषाका प्रयोग किया था [illegible]

प्रचारित ग्रन्थ समूह भारतवर्षकी नीच श्रेणीमें विशेष आदर-णीय हुए और बहुत फैले थे। *

---

* (Compare the Dablstan, ii,184 &c, wilson "As Researches" xvi, 53 and ward's Hindus iii 406, कबीर एक अरबी शब्द है, इसका अर्थ सबसे श्रेष्ठ है। अध्यापक विलसन कहते हैं, कि सन्देहकी बात है, कि कबीर नामका कोई मनुष्य था या नहीं। मोसन फानीने जिन कबीरका विषय कहा है, वह काल्पनिक पुरुष जान पड़ता है। जान पड़ता है, कि छद्मवेशधारी कोई ब्रह्मज्ञानी हिन्दूने यह उपाधि ग्रहण की थी। यद्यपि कबीर नाम विशेष संज्ञानिर्द्देशक है, किन्तु आजकल इसका बहुत प्रचार है। कबीर पितृमातृ-हीन असहाय अवस्थामें एक जुलाहे द्वारा प्रतिपालित हुए, और अन्तमें रामानन्दने उन्हें शिष्यरूपमें ग्रहण किया,—ऐसी ही साधारण कहानी प्रचलित है और यही कबीरका परिचय देनेमें यथेष्ट प्रमाण जान पड़ता है। सुना जाता है, कि उनकी मृत्युके बाद हिन्दू मुसलमान दोनो जातियोंने ही उनके शरीरको लेनेकी चेष्टा की थी। मेसन फानीने कहा है, कि कितने ही मुसलमान वैरागी या उस समय वैष्णव सम्प्रदायके योगी हुए थे। रामानन्द और कबीरके शिष्य लोग ही इस सम्प्रदायकी कईएक शाखा विशेष है। (Debistan ii 193) उस समय चिन्ता-स्रोतका और धर्म्ममतका आपसमें जो मेल था और इस समय भी उसकी उन्नति साधित होती है,—उसके और भी दृष्टान्त-स्वरूप मक्का "काबा"-रक्षकोंके प्रति ब्रह्मज्ञानी हिन्दू अकम-

खृष्टीय सोलहवीं शताब्दिके पहले हिस्सेमें चैतन्य नामक नदियाके एक ब्राह्मणने बङ्गालमें रामानन्दका धर्म्म-संस्कार प्रवर्त्तन किया। कितने ही मुसलमान उनके इस धर्म्ममें दीक्षित हुए। चैतन्य सब सम्प्रदायके और सब धर्म्मके लोगोंको ही अपना सम्प्रदायभुक्त करते थे। वह दृढ़ताके साथ कहते थे,—एकमात्र "भक्ति" या "विश्वासके" बलसे ही अपवित्रको पवित्रता साबित होती है। वह विवाह और गार्हस्थ्य-धर्म्मका अनुमोदन करते थे; किन्तु उनके शिष्योंने गुरुभक्तिके साधारण नियमका उल्लङ्घन किया था। उनमें कोई कोई कहते, कि ईश्वरके सामने गुरुकी उपासना करना भी कर्त्तव्य है* इस शताब्दिमें ही वल्लभ स्वामी नामक तैलिङ्गनाके एक ब्राह्मणने

नाथका उपदेश उद्धृत किया जा सकता है। नानकनाथने पहले उनके गृहस्वामीको अवस्थितिका विषय पूछ उनकी निन्दा की। बाद कोई प्रतिमा नष्ट की गई थी, उन्होंने यह उनसे पूछा। रक्षकोंने कहा, कि मनुष्यके हाथकी बनी मूर्ति उनके लिये उपास्य नहीं है। उन लोगोंको यह ज्ञान हुए उन्होंने कहा,—"यह मन्दिर भी तो मनुष्यके हाथका बनाया है, इसी मन्दिरके लिये भी सम्मान दिखाना उचित नहीं।" (Dabistan ii, 117)

* चैतन्य और उनके साथियोंके सम्बन्धमें निम्नलिखित किताबें देखने लायक हैं;—जैसे,—Wilson, "Asiatic Researches" xvi, 109 &c, and Ward on the Hindoos, iii, 467 &c. नानकका भक्ति या विश्वासके सम्बन्धमें [illegible]

प्रचलित उन्नतिशील संस्कृत धर्म्मसे फिर एक नवशक्ति प्रदान की। वह कहते थे—केवलमात्र विवाहित धर्म्म-गुरु ही ज्ञानोपदेष्टाके नामसे गिने जायेंगे, ऐसा नहीं। गृहस्वामी मात्र ही धर्म्मगुरुके पदपर वरणीय हैं और गुरु और शिष्य दोनो ही समभावसे संसार सुखभोगके अधिकारी हैं। शान्ति-प्रिय रोजगारी (वणिक) सम्प्रदायने इस नीति (धर्म्मोपदेश)को आग्रहके साथ ग्रहण किया। गोसाईं लोग पारिवारिक धर्म्माधिकरणके एकमात्र उपदेष्टा ठीक होनेपर वह लोग देशवासी सब मिहनती शान्तिपिपासु, लोगोपर आधिपत्य करने लगे। तब विश्वब्रह्माण्डको एकमात्र ईश्वरस्वरूप समझ उन लोगोंने "बाल गोपाल" यानी शिशु श्रीकृष्णकी उपासना करना आरम्भ की। इसतरह एक नई ईश्वरमूर्त्तिकी उपासना फैलानेसे प्रचलित पौत्तलिक धर्म्मकी गिनती फिर बढ़ी। *

सोलहवीं शताब्दिके शुरूमें इसतरह हिन्दुओंका मन उन्नतिकी राहपर दौड़ा। मुसलमानोंके साथ ही साथ हिन्दुओंके मनमें भी एक नवशक्तिका सञ्चार हुआ था। हिन्दुओंके धर्म्मने नवोन्नतिलाभके लिये बदलकर एक सजीवभाव

सच्ची रायके लिये, wilson, "As, Res, xvll, 312, देखने लायक है।

* See Wilson "Asiatic" Researches XVI, 85 &c, माधवके एक मतावलम्बी वैष्णव सम्प्रदायके,—जो सम्प्रदाय इस समय शैव लोगोंके साथ मिलनेकी चेष्टा करती है,—विवरणके लिये भी Wilson As, Res, xvı 100 देखने लायक है।

धारण किया। रामानन्द और गोरखने धर्म्मकी समताका प्रचार किया था। चैतन्यने उस समधर्म्माक्रान्त सम्प्रदायका फिर संस्कारसाधन किया। पौत्तलिक धर्म्मके उच्छेदसाधनके समय कबीरने देशप्रचलित भाषामें जनसाधारणको उपदेश दिया। वल्लभने जगतके साधारण कर्त्तव्य कामोंके साथ सकाम उपासनाके सम्बन्धकी बातें सिखाई थीं। किन्तु इन सब सदाचारी और क्षमताशाली मनुष्योंने नरजीवनके नश्वरत्वपर इतना विश्वास स्थापन किया था, कि यह नहीं समझे, कि मनुष्यकी सामाजिक अवस्थाकी उन्नतिसाधनमें विशेष कोई उपकार हो सकता है। उन लोगोंका प्रधान लक्ष्य था, [कि] बहुत देवार्चना, घोर मूर्त्तिपूजकता और पौरोहित्य-कार्य्यसे मु[क्ति] मिलती है। उन्होंने सन्तुष्ट शान्तिप्रिय मनुष्योंको ले भि[न्न] भिन्न पवित्र सम्प्रदाय बनाया था। वह लोग भावी सुख[की] आशासे भविष्यत् चिन्तामें डूबे हुये थे। परन्तु वह लो[ग] स्वजातिवर्गको समाज और धर्म्मबन्धन छोड़नेका उपदेश दे[ते] नहीं थे। या उन्होंने पुराने समयकी दूषित कुरीतियोंसे उन्हें छुड़ाकर उन्नत करनेकी चेष्टा नहीं की। उन लोगोंने जातिगत [illegible]नका बीज बिना रोपे, अपने अपने विभिन्न धर्म्मान्तरकी परिपुष्टि साधन की थी। उन्होंने जो आदेश प्रदान किये थे, उनका सम्प्रदाय इस समय भी उन उपदेशोंके अनुसार ही काम करता है। समाज और धर्म्मकी ऐसी अवस्थामें नानकने धर्म्म-संस्कारका प्रथम उपादान पाया था। नानकके प्रतिष्ठित इस दृढ़ और [illegible] भित्तिपर [illegible] [illegible] गोविन्दने [illegible] [illegible]

बनाई। उसीपर निर्भरकर उन्होंने प्रतिपन्न किया,—जाति, वंश, राजनीतिक अधिकार, धर्ममत, इन सब विषयमें ही ऊंचे और नीचे सभी समान हैं।

१४६९ई०में लाहोरके निकटवर्त्ती स्थानमें नानकने जन्म लिया।* उनके पिता कालू जातिके हिन्दू थे। कहते हैं,वह पुराने युद्धप्रिय

---

* कहा जाता है, कि लाहोरके उत्तर इरावती (Ravee) नदीके किनारे तलवन्दी गांवमें नानकने जन्म लिया। उस समय "भूटी" जातीय "राई-भुइया" वंश वहां राजत्व करता था। (Compare Malcolm, "SKetch of the SiKhs" p. 78, and Forster, 'Travels" 1. 292-3)। किन्तु एक हाथकी लिखी पुस्तकमें लिखा है, कि नानकके पिता तलयवन्दी गांवमें रहते थे सही, किन्तु धर्म-गुरु नानकने लाहोरसे पन्द्रह मील दक्षिण "कनाकच" गांवमें मामाके घर जन्म लिया था। किन्तु यह आश्चर्यका विषय नहीं है, कि पञ्जाब अञ्चलकी स्त्रियां प्रसवके समय विशेषत: पहले सन्तानके प्रसवके समय पितालयको ही उपयुक्त स्थान समझती हैं। ऐसे सन्तान माताके पितालयमें जन्म लेनेके कारण सचराचर "नानक" (स्त्रीलिङ्गमें "ननाकी"—"ननके" शब्दसे निष्पन्न,—माताका पितालय है) के नामसे अभिहित होते हैं। हिन्दू और हिन्दू-मुसलमान दोनों जातियोंमें ही "नानक" एक साधरण प्रचलित नाम विशेष है। नानकके जन्मवर्षके सम्बन्धमें अनेक मत दिखाई नहीं देता। किन्तु किस महीनेमें किस दिन उनका जन्म हुआ, इस विषयमें मतभेद दिखाई देता है। किसी किसी—

क्षत्रिय जातिके "वेदी" सम्प्रदायके भीतर थे। नानकके पिता अपनी जातिके अधिकांश मनुष्योंकी तरह अपने गांवके एक सामान्य रोजगारी थे। * नानक बचपनसे ही स्वभावतः धार्म्मिक और चिन्ताशील थे। अनेक जगह प्रमाण मिलता है, कि उन्होंने यौवनकालमें ही हिन्दू-मुसलमान दोनो जातियोंका प्रचलित धर्म्ममत सीखा और कुरान और शास्त्रोंके ज्ञानमें साधारण व्युत्पत्ति पाई थी † सुबुद्धि और स्वाभाविक

जगह दिखाई देता है, नानकका जन्मदिन, १५२६ विक्रमाब्दकी १३ वीं कार्तिक है; कहीं देखा जाता है, कि इस वर्षकी १८ वीं कार्तिको नानकने जन्म लिया। १५२६ विक्रमाब्द ईस्वी १४६६ अब्दके शेष भागका समसामयिक है।

* सैरुल मुताखरीनमें ("Brigg's Translation i, 110) लिखा है, नानकके पिता शस्यके व्यवसायी थे। दबीस्तानमें (ii, 247) देखा गया है, नानक स्वयं ही शस्यके गोलादार थे। सिखोंके विवरणमें नानकके पिताका कोई वर्णन नहीं है। किन्तु नानककी एक बहनके साथ जो एक [illegible]का विवाह हुआ था, यह सिखोंके इतिहासमें लिखा है। इस इतिहासमें और भी देखा जाता है, कि [illegible] बहनोई 'भगवति' [illegible] पास रोजगार [illegible] सहायता करनेके लिये नियुक्त हुए थे।

† फारसी भाषाकी एक [illegible] लिखी [illegible] गया है, [illegible] ... [illegible]

चपलताके कारण धर्म्ममतके नीच कुसंस्कारोंसे उन्हें विरक्ति हुई। वह शिक्षित और पण्डितसम्प्रदायके औदासीन्यपर असन्तुष्ट थे, दर्शनशास्त्रके आपातःमधुर गूढ़तत्त्वके आश्रयग्रहणमें उन्हें दर्प नहीं हुआ था। यह भी असम्भव नहीं, कि कबीर और गोरखनाथके धर्म्मोपदेशने उनकी धारणशील धी-शक्ति

हुसेन नामक एक मनुष्यसे शिक्षा पाई। वह नानकके प्रतिवेशी थे, नानकके पिताको बहुत चाहते थे; वह निःसन्तान और धनवान् थे। इस पुस्तकमें और भी लिखा है, कि नानक मुसलमानोंकी प्रसिद्ध पुस्तक पढ़ते थे। मेलकमके मतसे (Sk-etch, P, 14) मुसलमान लोग कहते थे, कि खिजिर या भविष्यद्वक्ता इलियाससे नानकने सबतरहका नैसर्गिक विज्ञान सीखा था। मुसलमानोंका प्रचलित विवरण पढ़नेसे मालूम होता है, कि नानकने बहुत बचपनमें वर्णमालामें पहले वर्णके उत्पत्ति विषयक दृढ़तत्त्व पूछ शिक्षक महाशयको बहुत चमत्कृत किया था। अरबी और फारसी भाषाकी वर्णमालामें यह वर्ण एक छोटी सरल रेखा या दागमात्र है, दूसरी भाषामें यह ईश्वरकी एकता प्रतिपन्न करता है। यीशुखृष्टने बारह वर्षकी उमरके समय वर्णमालाओंका गूढ़ मर्म्म समझा शिक्षकको कितना चमत्कृत किया था,—वह प्रमाणसिद्ध बाईबेलमें जैसे लिखा है, पाठकोंको शायद उसकी याद आ सकती है। (Strauss, Life of Jesus, 272)

पर सहज ही स्थायी प्रभाव फैलाया था। + जिस समय उन्हें चित्तोन्मत्तता उत्पन्न हुई, उसी समय नानकने गृह-परित्याग किया। वह अनुताप, चिन्ता, अध्ययन, मनुष्यजातिके साथ बहुत ज्यादा और विस्तृतरूपसे बातचीत परिचय और आचार-व्यवहार द्वारा विवेक या ज्ञानार्जनकी चेष्टा करने लगे। * सम्भवतः नानकने भारतवर्षकी सीमाके पारतक

---

* कबीरके ग्रन्थके किसी किसी स्थानका मर्म्म या सारसंग्रह "आदि ग्रन्थमें" बहुत जगह दिखाई देता है। आदिग्रन्थमें सब जगह ही,—कहीं, गोरखका और अधिकांश स्थलमें कबीरका मत उल्लिखित, या उद्धृत हुआ है।

* कुछ फकीरोंके साथ समय समयपर मुलाकात (Malcolm Sketch, P. 8, 13) करने और एक दरवेशसे (Dabistan, n. 247) और भी नियमितरूपसे उपदेश पानेसे नानकका हृदय अभिभूत हुआ था। ऐसी शिक्षा पानेसे नानकने अपने जीवनकी भविष्यत् गति ठीक करलेना चाहा था। मेलकमके विवरणमें लोकप्रीतिकर और भी कहानी देखी गई है, कि नानक जब [illegible] ईश्वरकी भक्तिमें मग्नचित्त हो अपने पशुओंको खेतमें [illegible] छोड़ देते थे, तब भी, वह शस्य-क्षेत्र सदा शस्यसे भरा रहता था। नानकने एक [illegible] समीप [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] छोड़ दिया गया है, तो यह चमत्कार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुआ है।

[illegible] इतिहासमें लिखा है, कि [illegible]

प्रसब किया था। वह एकान्तमें उपासना करते और वेद और कुरानके उद्देश्य विषयमें चिन्तारत रहते थे। वह बराबर व्यग्रताके साथ पण्डित धर्मयाजक और सरल धर्मानुरागियोंके साथ, ईश्वरकी इच्छा और मुक्तिका उपाय—इन दो विषयोंपर तर्कवितर्क करते थे। * प्लेटो, बेकन, डेकार्टे और

मुसलमानकर नानकने बातचीत और आचार-व्यवहार द्वारा उस हुमायूँविजेता बादशाहको अनेक विषयमें शिक्षा दी थी। उन्होंने बादशाहसे कहा था, कि हम दोनो ही बादशाह हैं; दोनो ही देश मनुष्योंका वंश स्थापन करनेकी चेष्टा करते है। यह सब बातें सुन बाबर बड़े ताज्जुबमें आये थे। हम केवल दो उदाहरण संग्रह कर सके है; उनमे एक स्पष्टतः "आदि ग्रन्थ" "आशाराम" और "तैलङ्ग" के अंशसे उद्धृत है। इन दोनोमें ही साधारणतः एक गांवके ध्वंस होनेका हाल और बादशाही वेशमें उनके राज्यपर आक्रमणकी बात लिखी है। मोसन फानीने (Dabistan, ii, 249) एक अमूलक घटना लिखी है। उन्होंने कहा है, कि नानक अफगानोंकी ओर असन्तुष्ट हो मुगलोंको भारतवर्ष लाये।

* साधारणतः सभी कहते हैं, कि नानक समग्र भारतवर्षमें घूमे थे, वह फारिस गये थे इसके उपरान्त उन्होंने मक्का देखा था। (Compare Malcolm, Sketch, p. 16, and Forster, "Travels." i, 295-6)। किन्तु उन्होंने कितने वर्ष-तक इसतरह देशपर्य्यटन किया और किस दिन अपने देश लौट आये,—इस सम्बन्धमें कोई ठीक हाल मालूम नहीं होता।

कर न पानेसे हताश हुए। मनमें मनुष्यका परस्पर विरो-धी देश और जातिसमूह और उनकी आचार पद्धति उनका लक्ष्यस्थल नहीं। नानक कहते थे,—सभी भ्रान्ति है। उन्होंने कुरान और पुराण दोनों ही पढ़ा था, किन्तु कहीं ईश्वरको देख नहीं सके। * नानक अपने देशमें लौट आये। उन्होंने कठोर संन्यासधर्म्म परित्याग किया, वह संसारमें बस गार्हस्थ्यधर्म्मका प्रतिपालन करने लगे। उनके दीर्घ जीवनका बाकी अंश धर्म्मके प्रचारमें बीता। वह सबको ही एकनिरा-कार चैतन्यस्वरूप जगदीश्वरकी उपासना करने, सत्पथपर रह धर्म्मार्ज्जन और जीवन-यात्रा निर्व्वाह करने और क्षमा और सत्यगुण सीखनेका उपदेश देते थे। नानकका सद्व्यवहार, एकाग्र ईश्वरनिष्ठा और प्रवृत्तिजनक सहृदयता—सभी प्रशंसाका

---

* नानकके उद्देश्यसे एक कविता प्रचलित है। उसका मर्म्म यों है,—

"बहुत शास्त्र धर्म्मग्रन्थ किया अध्ययन।
न पाया किसीने ईश्वरका निदर्शन॥
कुरान पुराण आदि हैं शास्त्र जितने।
प्रत्यय उनका किया कब है किसने॥"

आदिग्रन्थमें इस मर्म्मकी और भी कितनी ही कवितायें हैं। अधिकन्तु "रत्नमाला" नामक क्रोड़पत्रांशमें नानकने कहा है,—"वेद और कुरान प्रभृति धर्म्मग्रन्थ पढ़कर मनुष्य क्षणिक स्वर्गीय सुख पा सकता है; किन्तु ईश्वरके सिवा मुक्ति पाना मुशकिल है।"

दरवेश और संन्यासी,—सबको ही नानक समभावसे शिक्षा देते थे। जिन्होंने असंख्य मुहम्मद, विष्णु और शिवका अवतार ग्रहण और लयप्राप्तिको प्रत्यक्ष किया था, नानकने उन्हीं सर्वशक्तिमान अनन्तकालस्थायी, अक्षय, अव्यय ईश्वरके ईश्वरको याद करनेका उपदेश प्रदान किया था। * नानक कहते थे,—

मिल्टनने "समयका" नामचिह्न और परिमित प्रयोग निर्देश किया है। शेक्सपियरने भी समयकी एक सीमा स्थिर की है:—

"कालगति अनन्तसे पथपर प्रधावित।
पार्थिव स्थायित्वमें उसकी सीमा निरूपित॥
वर्त्तमान, भविष्यत्, भूत कालत्रय।
शान्तभावसे अनन्त-सीमा निरूपा॥"

"Milton, 'Paradise Lost,' v

'चिन्ताशक्ति जीवनकी होय खरीदी दासी।
जीवन-समय क्रीड़ा करे, पुतली जैसी खासी।
कालकी जगत्गति निर्णयमें प्रयास।
एकदिन अवश्य ही अवसान है उसका॥'

"Shakespeare, 'Henry IV, Part First' v, 4."

भारतवर्षमें इस समय दर्शन-शास्त्राध्यायी धर्म्मसम्प्रदायकी "सांख्य," 'पौराणिक' और "शैव" नामक तीन शाखायें हैं; उनके मतसे "काल" या समय मानसिक और भौतिक जगतका यथाक्रम २७, ३० या ३६ सार-समष्टि या प्रपञ्च समूहका एक है। इसतरह समयका चलता काल और स्वतन्त्र सत्ता निर्दिष्ट होता है।

* आदि ग्रन्थके परिशिष्टमें नानककी निम्नलिखित कविता

"पुण्य, दया-दाक्षिण्य दीर्घोचित कार्य्यकलाप और ज्ञानाध्ययन सभी अस्थायी हैं। जो ज्ञान अनन्तव्यापी और अनन्त-कालस्थायी है,—वही एकमात्र ईश्वरज्ञान है।' * जो सब गर्व्वित मनुष्य अपने कामपर विश्वास करते और उस विश्वाससे ही जो अनन्त जीवन या मुक्ति पानेमें प्रयासी होते हैं,—उनका तिरस्कार करनेके अभिप्रायसे ही मानो नानकने कहा है, कि केवल मात्र ईश्वरानुगृहीत मनुष्य ही उनके एकमात्र ईश्वर हैं। † परन्तु इच्छाशक्तिके अनुशीलनके और मानसिक वृत्तिसमूहके सद्व्यवहारके साथ ईश्वरानुग्रह विजड़ित है। इन सब मानसिक और इच्छाशक्तिको जो जैसा चलायेगा, वह उतना ही ईश्वरानुग्रह पायेगा। नानक कहते थे,—"तरह तरहके पुण्यकार्य्य, साधुता और सदाचार द्वारा मनुष्य मुक्ति या

मिलती है। कुछ धर्म्मप्रवर्त्तक गुरु-संन्यासीदलके विवरण-पर यह कविता लिखी गई थी ;—

"ईश्वरके जो ईश्वर है, वही हैं ईश्वर।
सर्व्वशक्तिमान वही हैं वही हैं परात्पर॥
हे नानक। तू यही जान निश्चय।
अनन्त गुणकी कभी धारणा नहिं होय॥"

* आदिग्रन्थके "आशा" नामक (Assa) अंशका आखिरी हिस्सा देखने लायक है।

† "आदिग्रन्थका" "आशा" राग (Assa Rag) और अंशका आखिरी हिस्सा और "रत्नमाला' (Ruttun Mala) नामक परिशिष्ट देखने लायक है।

ईश्वरमें लीन हो सकता है। मृत्युके उपरान्त जगदीश्वर मनुष्यसे पूछते हैं,—"क्या काम किया है?" * अधिकन्तु धर्मगुरु मनुष्यके कामोंके लिये यथायोग्य अनुताप करनेका उपदेश देते हैं। वह कहते हैं,—"यदि पापी मनुष्य मृत्युके समयतक ईश्वरसे क्षमा-प्रार्थना नहीं करता और अपनेको पतित नहीं समझता, तो ऐसी अवस्थामें वह कठोर शास्ति पाता है। †

नानकने स्वदेशवासियोंका प्रचलित धार्मिक मत ग्रहण किया था। वह कहते थे,—जन्मान्तर और देहान्तर ग्रहणसे आत्मा शास्ति पाती और पापमुक्त होती है। ईश्वरानुग्रह लाभ होनेसे आत्मा देहान्तर ग्रहणमें विरत होती है। वह परम सुखको ही आत्मा और ईश्वरका आवासस्थान समझते थे। उनके मतसे जीवन उड़नेवाली चिड़ियोंका प्रतिबिम्बस्वरूप

---

* The Adee Grunth, Purbhatee Ragnee. Compare Malcolm (Sketch, P. 161 &c.) and Wilkins, (As, Res, 1, 289, &c.)

† "नसीहत नामा" या (Nusseeut Nameh) फिरोन नामक एक कल्पित राजाके प्रति नानकका तिरस्कारमूलक अंश देखने लायक है। किन्तु ग्रन्थमें इस विषयका कोई उल्लेख नहीं है। जान पड़ता है, कि मनुष्यगत या निर्दिष्ट प्रयोग ग्रन्थकी साधारण भावके उपयुक्त न होनेके कारण इसका विवरण लिखा नहीं गया। फलतः यद्यपि इसमें नानकका मानसिक भाव वर्त्तमान है, तथापि निश्चित रूपसे रचित मालूम नहीं होता।

है जिस तरह आकाश ग्रहनक्षत्रकी तरह उसको चारो ओर अनवरत आवर्त्तन करती है। * अन्यान्य विषयमें भी प्रचलित भाषा और मासचित्र ज्ञान उत्पन्नकर नानकने ऐसी ही राय जाहिर की थी। वह कहते थे,—"अन्धकारमें भी (Unjun—अञ्जन) उज्वल और रोशन होता है, इन्द्रजाल और प्रतारणामें (Maya—माया) भी जो विचलित और लुब्ध नहीं होते, जो प्रलोभनमें रहकर भी विशुद्ध और अकलङ्कित हैं,—वह पुरुष ही सुखके अधिकारी हैं। ऐसा समझना न चाहिये, कि प्लेटो और व्यासकी रीतिके अनुसार नानक भौतिक जगत् और सत्ताके सम्बन्धमें चिन्ता करते थे। ‡

---

* "Adee Grunth", end of the 'Assa Rag'.

† "Adee Grunth", in the 'Sohes' and 'Ramkullee' (आदिग्रन्थका "सही" और "रामकली" अंश देखने लायक है)।

‡ अध्यापक विलसन, (As. Res', xvii 233 and Continuation of 'Mill's History of India', vii. 101, 102) नानकके धर्मज्ञान और मतोंको अकिञ्चितकर समझते थे, कारण, यह वेदान्त दर्शन और जड़ जागतिक औदासीन्यकी आदर्श बोधक सूक्ष्मतर उपलब्धि है। जगदीश्वरकी सर्व्वशक्तिमत्ताके सम्बन्धमें राय जाहिर करना बहुत ही कठिन है। ऐसा होनेसे किसी न किसी विशेष सम्प्रदायभुक्त होनेके दोषसे कलुषित होना ही पड़ेगा। राजनीतिक कवि मिलटन जब समझते थे,—"शरीर आत्माकी ओर दौड़ता है,'—तब शायद

नानक ऐसी धर्म्मशिक्षा देते नहीं थे, कि मनुष्यकी देह फिर जीती है, और आत्मा चिरकालव्यापी पाप और नरकाग्निकी यन्त्र

किसी विशेष सम्प्रदायके प्रति उनकी श्रद्धा थी, Paradise Lost, v), किन्तु धर्म्मगुरु प्रेमोन्मत्त सेग्टपालने जब कहा है; "भौतिक देह रोपित हुई है और स्वर्गीय देह उन्नीत होगी" (Corinthians, xv. 44) तब क्या उनकी अवज्ञा करना उचित है? या उनकी बातोंपर अविश्वास करना पड़ेगा? "क्या जगदीश्वरने स्वर्ग और पृथिवीको पूर्ण नहीं किया? या जगदीश्वर पृथिवी और स्वर्गमें विराजमान नहीं हैं, "(Jeremiah xxviii, 24)" "जिन जगदीश्वरमें हम-लोग वास करते, गमनागमन करते और जिनसे हमारा जीवन अधिष्ठित है" (Acts, xvii, 24), "जिनसे, जिनके लिये और जिनके द्वारा हम सब द्रव्य पाते हैं" (Roman xi 36) इन सब बातोंको पढ़कर भी क्या कहना होगा, कि ईश्वरके भेजे दूत और भविष्यद्वक्तागण नास्तिक और देहात्मवादी थे? जो हो, साफ समझमें आता है, कि जेरिमिया, पाल और नानकका दार्श-निक मत फैलानेके सिवा और दूसरा भी उद्देश्य था। उन्होंने लोगोंके दिलमें ईश्वरका महत्त्व और सत्यता बद्धमूल कर देनेकी चेष्टा की थी। जो भाषा सर्व्वसाधारणमें प्रचलित थी और जो भाषा कभी किसीको विपथगामी न करती, उन्होंने उस प्रच-लित भाषाके साधारण प्रयोगसे ही इस कार्य्यसाधनको बहुत उपयोगी समझा था।

सिख और ब्राह्मण्य धर्म्म,—इन दोनोंमें यथाक्रम जो

भोगती है। पुण्यकार्य्य द्वारा घोर नारकी, पापासक्त आत्मामें भी पवित्रता उत्पन्न होती है और आत्मा पर्य्यायक्रमसे नई देह धारण करती है,—ऐसे धर्म्मोपदेशको प्रदान करना ही श्रेष्ठ

साहृश्य और मतभेद प्रचलित है, उसके सम्बन्धमें अध्यापक वेलसनके (As. Res. xvii 233 237 238) के साथ मोसन फानीके (Dabistan ii 269, 270, 285, 286)को मिलाना उचित है। फिर इन दोनोंके साथ "सैरुल मुताखरीन" को मिलाकर देखना चाहिये। इन सबकी बातें सच्ची है। उनमें एकने सिखोंका—प्रधानतः गङ्गाके निकटवर्त्ती प्रदेशके सिखोंका—अधूरा और कुरीतिमूलक धर्म्मविश्वास पूरी तरह लिखा है, दूसरे नानकके फैलाये जिस धर्म्मशिक्षाका पण्डित लोग हमेशासे प्रचार करते है, उस प्रचलित धर्म्मका सच्चा हाल लिपिबद्ध कर गये हैं।

यहां एक बात याद रखना उचित है, कि नानक और गोविन्दकी प्रवर्त्तित शिक्षापर सिखोंका ऐसा विश्वास है, कि वह महम्मद प्रभृति प्रचारित ईश्वर-भक्तिकी समाधि और समाप्ति मात्र है। यथा, इब्राहीम, माइकेल और गेब्रिल प्रभृति स्वर्गीय दूतोंके प्रति मुसल्मान लोग जैसी भक्ति दिखाते है, उसकी अपेक्षा सिखोंको ब्रह्मा, विष्णु और सन्यास स्वर्गीय देवताओंकी उपासना,—ज्यादातर अयौक्तिक जान नहीं पड़ती। मध्ययुगके खृष्टधर्म्मप्रचारकोंने खृष्टधर्म्मके सार नियमको परित्यागकर, केवलमात्र भाषापर निर्भर रह निरवच्छिन्न बहुत देवार्चना फैलाई थी। सिखोंकी ईश्वरोपासना खृष्ट-प्रचारकोंकी एकेश्वरवादि-

समझनेके कारण नानककी ओर उपेक्षा दिखाना युक्तियुक्त नहीं। * नानक अरबदेशीय धर्मप्रवर्त्तक मुहम्मद और

ताकी अपेक्षा ज्यादा उपेक्षणीय है।—Hallam, "Middle Ages" iii, 346.

नानक पौराणिक बातोका नैतिक व्यवहार करते थे। इस सम्बन्धसे वार्डकी "हिन्दू" नामक पुस्तक देखने लायक है। (Ward on the Hindoo, iii, 465) वस्तुतः नानक सदा ही हिन्दुओंके धर्म्मज्ञानका उल्लेख करते थे. किन्तु वह मूर्त्ति पूजक नहीं थे। और एक बात सदा याद रखना उचित है, कि सेराटजान यूनानी लोगोंके दर्शनशास्त्रसे "दृष्टान्त" संग्रह करते थे, जिससे सेराटपाल भी यूनानी कवियोके काव्यका उपयुक्त प्रयोगकर सकते थे। बहुत दिन हुए मिलटन ऐसा प्रतिपन्न कर गये है, (Speech for the Liberty of Unlicensed Printing) प्राचीन समयमें "ड.इनि" इच्छा पता योशु खृष्टके दोत्यका भविष्य-व्यञ्जक कहा जाता था. इन सब बातोंसे ही कृत्रिमताकी पहचान हुई है: खृष्टधर्म्मप्रचारकगण भी बहु-देवार्चना-दोषसे दूषित नहीं है। इस समय वह लोग एमानविया या जुपिटरको धातोकी।कुमारी "मेरी" की प्रकृत प्रतिकृति समझ कलुषित नहीं है।

*मालाने "देशान्तर-प्रहरने" सम्बन्धमें साधारणतः मुसलमान लोग ऐसा कहकर आपत्ति करते है, कि एक धर्म्मको दुष्ट आत्मा दूसरे धर्म्मसे उसके पहलेको मजा। और गुप्त। इसकी बातें याद नहीं करतीं, इससे दूसरे धर्म्मको पवित्रताके

हिन्दुओंके ईश्वरावतारसमूहका भी उल्लेख करते थे। वह उन लोगोंको प्रतारक या कुरीति फैलानेवाले समझते नहीं थे। वह कहते थे, कि यह सब महात्मा सचमुच ही ईश्वरके भेजे हुए है। तब भी, उन लोगोंकी इतनी चेष्टा होनेपर भी पापका प्राधान्य वर्त्तमान रहनेको वजह बड़ा दुःख प्रकाश करते थे। नानकके मतावलम्बी नानकको ही अवतार समझते थे। वह लोग विश्वास करते थे, कि पतित पापियोंके उद्धारके लिये—अपने और अपनी जातिके लोगोंमें ज्ञानकी रोशनी—फैलानेके लिये—मानो वह स्वर्गसे उतर आये हैं। इच्छा करनेपर नानक

सम्बन्धमें आत्मामें कोई स्वाभाविक उत्तेजना-शक्ति नहीं रहती। आदमके पाप-ज्ञान और उसके फलस्वरूप आदमके वंशधरोंकी पापाशक्तिकी बातें मुसलमान कभी स्वीकार नहीं करते। ब्राह्मणोंकी ऐसी नीति है, कि इन्द्रियसमूहकी परिवर्त्तनशील प्रकृतिसे आत्मा अन्तमें पूरा स्वातन्त्र्य अवलम्बन करती है। मिश्र देशीय प्रचारकोंका मत ऐसा है, कि विचारके दिन नश्वर और पाप-देह पुनर्ज्जीवन पाती है। निरपेक्ष चिन्ताशील पुरुष इस विषयमें मिश्र देशवासियोंकी अपेक्षा ब्राह्मणोंका मत ही श्रेष्ठ समझेंगे। यद्यपि मोजेस इस विषयमें उदासीन थे, तथापि, इसराईल लोगोंके मनमें यह खयाल जमा रहा। इससे अन्यरूप धर्म्ममत प्रचारके लिये बहुत दिनोंतक बाधा पड़ी थी; अलौकिक कार्य्योंपर लोगोंका विश्वास होनेसे लोगोंके मनमें भी ऐसा विश्वास पुनर्ज्जीवित हुआ था। (see also note, p. 63-34.)

भी अपनेको वैसा ही समझ सकते थे; किन्तु उन्होंने ऐ नहीं किया।—नानकने किसी खास देवताकी उपासनाकी प्र नहीं चलाई और शिक्षा नहीं दी। सब जगह सब समय उन धर्म्ममत सभी ग्रहण कर सकते थे। नानक कहते थे,—व ईश्वरके एक खरीदे गुलाम और सर्व्वशक्तिमानके एक अज्ञावाह दूत मात्र हैं। नानकने सर्व्ववादिसम्मत सत्यधर्म्मको ही अप दौत्यकार्य्यका एकमात्र अस्त्रस्वरूप ग्रहण किया था। उनके ग्रन्थ विवेक और आत्मोत्सर्ग विषयक उपदेशोंसे भ

* नानकके उपदेशका मर्म्म यों है,—जगदीश्वर ही सर्व्वों सर्व्वा है, मानसिक पवित्रता ही पहला धर्म्म और सबसे श्रेष्ठ, प्रार्थनीय और साधनीय वस्तु है। नानक सबको आत्मोत्सर्ग और आराधना सीखनेका उपदेश देते थे। वह कहते थे, पहलेके प्रवर्त्तकोंका प्रचारित धर्म्म ईश्वर-नीति सभी अकिञ्चितकर है। वह भी अपनेको और प्रवर्त्तकोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ और असाधारणगुण और शक्तिशाली समझते नहीं थे। वह कहते थे, कि और सब लोगोंकी तरह लोगोंमें वह भी एक छोटे प्राणी विशेष हैं। अपने स्वदेशवासियोंको पवित्र जीवन बितानेका वह सदा उपदेश देते थे। (Compare the Dabistan, ii, 249, 250, 253, and see Wilson, As. Res. xvii. 234, for the expression "Nanuk thy slave is a free-will offering unto thee," अर्थात् "हे परमपिता! नानक आपका ही भृत्य है। आपने उसे स्वाधीन इच्छा प्रदान की है; मैं आपकी आराधना करता हूं।")

है। * नानकने एक बात कभी प्रकाश नहीं की, कि वह अपनी रचनावलीको ईश्वर वाक्यको प्रधान अनुलिपि समझते हैं और न वह उसको कोई अभिनव योग्यता या गुणको व्याख्या करनेके प्रयासी हुए। उन्होंने कभी अपने धर्मके प्रचार करनेमें अलौकिक कार्यकी सहायता नहीं ली और न यह कहा, कि अलौकिक कार्यकलापसे ही उनके फैलाये धर्मकी सत्यता बढ़ेगी। † वह कहते

---

* इसलमान पुस्तक-रचयिताओंने नानकको प्रस्तको और उपदेशसमूहको मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। (Compate the 'Seir-ool-Mutakhereen", P. 110, 111, and the 'Dabistan, p. 251, 252.)

एशियावासियोंके इन सब प्रशान्त पाण्डित्यपूर्ण नीतियोंके साथ युरोपके "वेरेन हेजेल"का मत मिला देखनेसे, बहुत अलगाव दिखाई देता है। वेरेन हेजेल (Travels, p. 283) कहते हैं, गुप्त, अनिर्दिष्ट, असार और झूठे तत्त्वकी मिलावटसे ग्रन्थ (Grunt'h) भरा है। उन्होंने स्वीकार किया है, कि सिख लोग एक ही ईश्वरकी उपासना करते थे, पौत्तलिकतासे घृणा करते थे और अन्ततः काल्पनिक जातिभेदकी अवमानना करते थे।

† आदि ग्रन्थका ('Adee Grunth) श्रीराग (Sirree Rag) अध्याय अच्छी तरह देखने लायक है। इस ग्रन्थके 'मझवार" (Majhvar) अंशमें लिखा है, कि नानकने अलौकिककार्यसम्पादनमें पारदर्शी एक प्रतारकसे कहा था,—"तुम अग्निमें अचल हो इसे वास करो; किरतुमाराच्छन

थे,—'एक ईश्वरके वाक्यके सिवा दूसरे किसी अक्षरसे आत्माको शुद्ध न करो धर्म्मनीतिकी पवित्रताके सिवा निष्ठावान् धर्म्मगुरु ऐसा कोई उपाय या अस्त्र नहीं है"। * नानक कहते थे,—"पृथिवीमें पुण्यकार्य्यरत धार्म्मिक लोगोंके लिये संन्यास-धर्म्म ग्रहण या संसार-धर्म्म परित्याग करना अकर्त्तव्य है। सर्व्वशक्तिमान् परमेश्वरके सामने साधु और गृही बराबर प्रिय और आदरणीय हैं।" यद्यपि उनके अपने दृष्टान्तसे मालूम होता है, कि हरेक मनुष्यका ही अपना स्वभावजात धर्म्म-कार्य्य-साधन कर्त्तव्य है; तथापि उन्होंने उनके समसामयिक वल्लभकी तरह विवाहित गुरुकी ओर घृणाका भाव प्रकाश नहीं किया।† हिन्दू गोजातिकी पूजा करते और मुसलमान सुअर (शूकर)

स्थानमें आहत शरीरसे समय बितावो; पत्थरका टुकड़ा तुम्हारा खाना हो; तुम टीका लगाकर बहुत मट्टीका ढेर दूर फेंक दो और तराजूसे स्वर्गको तोलो। इसके उपरान्त तुम पूछना, कि नानक क्या अस्वाभाविक काम कर सकता है?"

ष्ट्रसने (Strauss, 'Life of Jesus', ii 287) ठीक लिखा है, कि यीशुखृष्टने भी अलौकिक कार्य्यके साधनका उपाय ढूंढनेमें बहुत घृणा प्रकाश की है। (John, iv, 48). इसने कहा है, कि ईश्वरादिष्ट दूतोंने कभी शास्त्रसे या निजके मुखसे किसी अस्वाभाविक कार्य्यका उल्लेख नहीं किया।

* Malcom's Sketch, P. 20 21, 165.

† Adee Granth, particularly the "Assa Raginee" and "Ramkullee" Raginee (Compare the D...

की ओर घृणा दिखाते हैं। दो परस्पर विरुद्ध भावाक्रान्त विषयकी आलोचनाके समय नानकने विज्ञता और समदर्शिताका परिचय दिया था। इस प्रसङ्गसे जान पड़ता है, कि नानकने शिक्षाजनित कुसंस्कार और स्वाभाविक नम्रताको बहुत आदर दिया था। वह कहते थे,—"विधर्म्मियोंके दो अधिकार हैं। एक श्रेणीका गोजातिकी ओर सम्मान दिखाना; दूसरी श्रेणीका—शूकर जातिकी ओर जाति-क्रोध। किन्तु जो किसी जीवित प्राणीकी प्राणहानि नहीं करते, गुरु और पण्डित लोग उनकी ही प्रशंसा करते हैं। *

istan, ii, 271):—" आदिग्रन्थकी अश्विनी रागिणी और रामकली रागिणी अच्छी तरह देखने लायक है।

* आदिग्रन्थ "माझ" अध्याय (Adee Grunth, Majh chapter) मेलकमका सारसंग्रह ३६ पृष्ठ देखने लायक है (note and Page 137) यहां लिखा है, कि नानकने शूकरका मांस खानेसे मना किया। किन्तु प्रकृत-प्रस्तावमें हिन्दुओंके लिये ग्रामपशुआ शूकर-छौना सुअरका बच्चेका मांस सब समय ही जाति-धर्म्म-नाशक है। ("Munnoo's Institutes V, 19) "देवीस्थान" (Dabistan, ii, 28) में लिखा है, नानकने मादक द्रव्य (शराब) और शूकरका मांस खानेसे मना किया। वस्तुतः खाद्य निर्द्देशके सम्बन्धमें विपरीतमतव्यञ्जक बहुत दृष्टान्त दिखाये जा सकते हैं। वार्डने (Ward "On the Hindoos" iii., 466) प्रमाणित किया है, कि जो मांस भक्षण करते, नानकने उन्हें निर्दोषी कहा था।

इस तरह नानकने बहुत दिनोंके प्रचलित पुञ्जीकृत कुसंस्का
और कुरीतिसे अपने शिष्योंको मुक्त किया था। चित्तकी
एकाग्रता और स्वाभाविक आचार-व्यवहारका उत्कर्ष-साध

नानकने और भी कहा है, कि शिशु मातृस्तन्य
पीता है, वह शिशु असलमें मांस भक्षण करके ही जीवन
आरम्भ करता है। "गुरु रत्नावलीग्रन्थ' (Coor-Ratnaolee")
के रचयिताने भी इस मतका बहुत कुछ अनुसरण किया है।
उन्होंने पूछा था,—"मनुष्य स्त्रियोंसे विवाह करता है या
नहीं? धर्म्मपुस्तक पशुचर्म्ममें बांधी जाती है या नहीं।"
किसी विशेष सम्प्रदायके पुरुषोंने और भिन्नधर्म्मावलम्बी पण्डि-
तोंने समय समय पर नानकके साधारण नियमोंपर अयथा व्या-
ख्या दी है। उनकी ऐसी व्याख्यासे व्यवहारिक भावमें पशु-
जीवन रक्षाका विषय समझा जाता है। (Wilson, As.
Res, xvii, -35) किन्तु सिखोंका ऐसा कोई मनोभाव जान
नहीं पडता। जैन और अन्यान्य सम्प्रदायके मनुष्य मक्खी
और मकडी प्रभृतिके सम्बन्धमें इतने ज्यादा सावधान है, कि
इस प्रथाके पूरीतरह अवलम्बन करनेसे लोग उनका उपहास
करते है। भारतवर्षके कुछ 'रोमन-क्याथोलिक" खृष्टान सम्प्र-
दायने भी यही नीति अवलम्बन की है। भूपालकी "क्याथो-
लिक' सम्प्रदाय आदि "लेण्टके" समय (चालीस दिनका उपवास-
पर्व्व) नित्य व्यवहारकी मैली चीनी व्यवहारमें लाते नहीं है,
क्योंकि चीनी तय्यार होनेके समय बहुत प्राणियोंका प्राय नष्ट

ही श्रेष्ठ और प्रथम कर्तव्य रूपसे निर्दिष्ट हुआ था। उन्होने शिष्योंको साहस और स्वाधीनता प्रदान की; उनलोगोंके मनका सन्देह टूट गया। किन्तु नानकने कोई निर्दिष्ट नियम फैलाकर शिष्योंको सिकड़ीमें बांध नहीं दिया। इसतरह सब बातोंमें स्वाधीनता पानेसे दृढ़ विश्वासी उपासकोंका दल परिपुष्ट होता रहा, एक स्वतन्त्र सम्प्रदाय तय्यार हुआ। नानककी संस्कार-नीतिका साक्षात् फल स्वरूप धर्म्मविषयक और नैतिक उन्नति साधित होती रही। धर्म्मविश्वासी "सिख" या शिष्य नामसे अभिहित होते थे, उन्हें कोई अधीनस्थ प्रजा समझाता नहीं था। ऐसे सिद्धान्तमें उपनीत होगा असम्भव और गैर-जरूरी है, कि समाजसंस्कार और राजनीतिक-उन्नति-विधानमें नानक किसी सहजबोध्य और-गम्भीर मतके अधिकारी थे। समयके स्रोतमें शिष्योंका उन्नति--विधान छोड़, उन्होंने इहधाम परित्याग किया। अपना धर्म्म-सम्प्रदाय सङ्कीर्ण और समाजकी अवस्थाके अनुपयोगी समझ उन्होंने अपनेको धर्म्मविधि-प्रणयन-कर्त्ता समझ वह घोषणा कर नहीं सके। मनुका विधि-विधान, या जाति और वंशपरम्पराकी स्मरणातीत नीतिका बदलाव,—उन्होंने सम्भवपर समझा नहीं, उनके लिये वह विषय सहजसाध्य भी नहीं था। * जिससे उनके शिष्य कोई

---

* मेलकम ('Sketch' PP. 45'147) कहते हैं,—नानकने हिन्दुओंके सामाजिक नियमोंमें कुछ भी बदलाव नहीं किया। वार्ड (Hindoo, iii. 463) कहते हैं, कि सिखोंका अदालत या फौजदारी सम्बन्धी कोई कानून नहीं था। पुराने खष्टानोंको-

एक सम्प्रदाय-विशेष तय्यार कर न सकें और जिससे उनका सर्व्वसामञ्जस्य व्यञ्जक धर्म्मनीतिसमूह सङ्कुचित हो संसार-विरागी संन्यासियोंके धर्म्ममतकी तरह अलग न

संहिता या कानून आदिके सम्बन्धमें भी ऐसी ही निन्दा या प्रशंसा की जा सकती है। हम जानते है, कि सिखोंके सन्देह और कुसंस्कारके लिये और प्रमाण-सिद्ध किसी नीतिके अभावसे खृष्टधर्म्मप्रचारकोंको कितना कष्ट सहना पड़ा था (Acts. xv. 20, 28, 29, and Other Passages)। इङ्गलण्डकी धर्म्ममन्दिर-विषयक सप्तम संख्यक नियमावली और 'स्काट' लोगोंके धर्म्मस्वीकारका उन्नीसवां अध्याय पढ़नेसे धर्म्म-प्रचारके आजकलके धर्म्माचारियोंका वर्त्तमान विरक्तिभाव मालूम होता है। यहूदियोंके कानूनके लिये खृष्टान लोग कैसे दायी और सिखोंके जाति-व्यवहार और मनुप्रवर्त्तित नियमसमूह सिखोंको अग्राह्य करना चाहिये या नहीं,—इसमें सन्देह नहीं, कि इस सम्बन्धमें बहुत दिनोंतक वादानुवाद चलेगा। पहले 'जुड़ा' जातिका एक खृष्ट-सम्प्रदाय था; इस समय ब्राह्मण जातीय सिख वर्त्तमान हैं। उनका एक सम्प्रदाय दूसरे नहीं छूता, दूसरे सम्प्रदायके मतसे गोजाति पवित्र है। एक ही वंश और एक ही जातिके परिवारमें आपसमें विवाह-कार्य्य निर्व्वाह हो सकता है,—ऐसे खयालमें रहनेसे जातिभेद रहित होना असम्भव है। (Compare 'Ward on the Hindoos,' iii, 459 Malcolm 'Sketch' P. 157 note; and 'Forster's Travels' i. 293, 295, 308).

हो,- इस समयमें उन्हीं साधारण चेष्टा की थी। अपने रहते अपने पित्तार्थी सिज्ञानानु संन्यासी पुत्रको धर्म्माधिकारके उत्तराधिकारित्वसे वञ्चितकर वह अपने उद्देश्यसाधनके विषयमें क्तकार्य्य हुए थे। ऐसा कहते हैं, कि नानकको म्टत्युका समय नजदीक आ गया, उन्होंने अपने प्रिय शिष्योंको बुला उनकी योग्यता और स्वानुगत्यकी परीक्षा की थी, अन्तमें सरल और अनुरागी लेहनाको "श्रेष्ठ" पदपर स्थापित कर गये। शिष्योंके साथ जब नानक पैदल आगे बढ़ते थे, तो पास ही एक मनुष्यकी म्टतदेह दिखाई दी। उसे देख नानकने कहा,— "यदि हमसे तुम लोगोंको भक्ति हो, तो यह खाना (म्टतदेह) खाओ। "लेहनाके सिवा और सभी इधरउधर करने लगे। लेहनाने घुटनेपर भार दे बैठ म्टतदेहका काफन खोला, म्टतदेह स्पर्शकर उसके भक्षणका उपक्रम करते ही सबने आश्चर्यान्वित हो देखा कि वहांकी म्टतदेह अन्तर्द्धान हुई है और उसकी जगह नानक पड़े हुए हैं। तब गुरुने अपने विश्वासी शिष्यका आलिङ्गन किया, कहा,—उनमें और शिष्यमें कोई प्रभेद नहीं, उनकी आत्मा सदा शिष्यदेहमें विराजमान रहेगी। * तब नानकने लेहनाका नाम बदल

---

* अनेक पञ्जाबी ग्रन्थकारोंने यह कहानी लिखी है। डाक्तर मेकालीफने भी अपने सिख-इतिहासमें (i. 41) प्रकारान्तरसे इसका उल्लेख किया है। देवीस्थानमें ऐसा लिखा है, कि शायद चारों युगमें ही गो, घोड़ा हाथी और नरबलिकी प्रथा प्रचलित थी। इनसे मालूम होता है, कि नर-

"अङ्गे खुद" या "अङ्गद" (अपनी देह) नाम रक्खा। * ऐसे गल्पकी भीत चाहे जो हो, शब्द-साधन सच हो या झूट— किन्तु सिखोंका पूरा विश्वास था, कि परवर्त्ती प्रत्येक गुरुकी देहमें नानककी आत्मा अवतारस्वरूपमें आविर्भूत होती है। † "अङ्गद" सिखोंके गुरुपदपर प्रतिष्ठित हुए। नानक जिस भयसे भीत हुए थे, उनके पुत्र श्रीचन्द्र ‡ कार्य्यतः वही कर बैठे;

मोक्षार्थी पुण्यात्मा लोग मुक्ति पाते और हत मनुष्य फिर शरीर धारणकर पृथिवीमें अवतीर्ण होते हैं।

* (Comparo M‹lcolm, Sketch of the Sikns p 24 note,

† यही विश्वास सिख-धर्म्मका एक नीति विशेष है। Compare the Dabistan, (ii, 253, 281)—दबीस्तान देखने लायक है। "दबीस्तान" के रचयिता मोसन फानीके पास गुरु हरगोविन्दने "नानक" के नाम दस्तखतकर एक चिट्ठी लिखी थी।

‡ उदासियोंके कुछ हालके लिये वलसनका "एशियाटिक रिसार्च" के सतहवें अध्यायका २३२ पृष्ठ देखना चाहिये। (wilson "Asiatic Researches" xvii 232) यह सम्प्रदाय इस समय चारों ओर फैल पड़ा है। इस सम्प्रदायके सभ्य लोग सिखोंके साथ घनिष्ठताके लिये बहुत अभिमानी हैं। यह सभी नानकके ग्रन्थका व्यवहार करते और उसके प्रति भक्ति रखते हैं।

टिप्पनी।—नानकके सम्बन्धमें और मतोंके [illegible]

यह उदासी पार्थिव चिन्तासे स्पर्श उदासीन) नामक एक हिन्दू-सम्प्रदायको प्रतिष्ठाकर उनके गुरुपदपर वरित हुए।

नैपर उत्सुक पाठकगण मेलकमका "सार-संग्रह" (Malcoms Sketch) "देवीस्थानकी" दूसरी पुस्तक (Second volume of the Debistan) और डाक्तर मेकग्रीगरके इतिहासका पहला खण्ड,नव-संस्करण (Dr. Macgregor's History first volume) को आलोचनाकर देख सकते है। मूलग्रन्थ या नोटमे इसके लिखनेकी जरूरत जान नहीं पड़ी।

तृतीय परिच्छेद

सिख-गुरु या धर्मनायक; गोविन्द द्वारा सिख धर्मका संस्कार-साधन।

१५३९—१७०८।

(गुरु "अङ्गद.—गुरु अमरदास और 'उदासी' सम्प्रदाय;—गुरु रामदास:—गुरु अर्ज्जुन,—"प्रथम ग्रन्थ" और सिखोंका समाज गठन;—गुरु हरगोविन्द और सिखोंका सैनिक सम्प्रदाय;—गुरु हरगोविन्दराय:—गुरु हरकृष्ण;—गुरु तेगबहादुर:—गुरु गोविन्द और सिखोंकी राजनीतिक अवस्था;—गोविन्दके अनुगामी लान्दा वैरागी,—सिखोंकी प्रचार वृद्धि।)

सन् १५७९ ई०में नानक परलोक गये। उनके प्रियतम शिष्य अङ्गद सिखोंके गुरुपदपर अभिषिक्त हुए। अङ्गदने क्षत्रिय जातिके "तिहुन" वंशमें जन्म लिया था। विपाशा नदीके तीरवर्ती मेकालके पास खाडूर नामक स्थानमें १५५७ ई०में उनकी मृत्यु हुई। अङ्गदके धर्माधिकारके समयका ज्यादा विवरण कुछ पाया नहीं जाता। तब भी, उन्होंने नानकके पुराने सहचर बाला-सिन्धुसे नानकके सम्बन्धमें जो सुना था, नानकका जीवनी या सेवाके समय जो सब उपदेश पाया था और नानककी प्रकृतिके सम्बन्धमें स्वयं जो अनुधावन किया था,—केवलमात्र वही लिपिबद्ध कर गये हैं। दूसरे मतसे वह इकट्ठा

कर "ग्रन्थ में मिलाया गया। महात्मा नानकने उन्हें जो शिक्षा—जो नीति प्रदान की थी, अङ्गद जीवनभर उसीपर दृढ़ विश्वासी थे और उसका ही अनुसरण करते थे। अङ्गदने अपने दोनो लड़कोंमें किसीको भी धर्म्माधिकरण या अपने उत्तराधिकारीके उपयुक्त नहीं समझा। इसलिये ही अमरदास नामक एक परिश्रमी और धर्म्मनिष्ठ अनुचरको प्रचारकार्य्य और धर्म्माधिकरणपर प्रतिष्ठित कर गये थे। *

अमरदास भी गुरुकी तरह क्षत्रियवंशसम्भूत थे; किन्तु वह "भाले" शाखामें थे। बहुत मनुष्योंको अपने धर्म्ममें शिष्यरूपमें दीक्षितकर अमरदास धर्म्मप्रचारमें बहुत कृतकार्य्य हुए थे। कहा जाता है,—सहिष्णु अकबर भी दिल लगाकर उनका धर्म्मोपदेश सुनते थे। शिष्यमण्डलीकी तरह नानकके पुत्र श्रीचन्द्रके अनुचर लोग भी "प्रथम गुरु" के शिष्य मान

---

* बहुत लोग कहते हैं, कि अङ्गदने १५६१ संवत् या १५०४ ईस्वीमें जन्म लिया था। फिर कोई कोई कहते हैं,—१५५७ संवत् या १५०० ई०में अङ्गद पृथिवीमें अवतीर्ण हुए। साधारणत: सभी १६०६ संवत् (१५५२ई०) उनका मृत्यु काल ठीक करते हैं। कहीं कहीं उनके मृत्यु का वर्ष कुछ दिन पहले निर्द्धारित होता है। सिखोंके विवरणमें महीना और दिनकी बातें लिखी है, किन्तु उसपर विश्वास किया नहीं जाता। फरष्टरने (Forster Travels i, 296) १५४२ संवत् अङ्गदकी मृत्यु की तारीख बताई है। शायद भ्रमवश १५५२ संवतकी जगह १५४२ संवत् मुद्रित हुवा हो।

पड़ते हैं। अमरदासने घोषणा प्रचार की, कि संसारत्यागी "उदासिगण" कर्म्मकुशल संसारासक्त "सिख" सम्प्रदायसे बिलकुल अलग हैं। इस घोषणाके प्रचारसे उमरदासने उसका उपाय विधान किया, कि बहुत सम्प्रदायके आधिपत्यकी वजह सिखधर्म्म कलुषित या विलुप्त न हो। * अमरदास भी नानककी तरह गर्व्वके साथ कहते थे,—"अग्निमें जिनका विनाश नहीं, किन्तु अनुतापानलसे जो दग्धीभूत हैं, वही सच्ची सती हैं; अनुतप्त दीन मनुष्य ही ईश्वरोपासना ; आत्मप्रसाद पाता है। अमरदासने धीरे धीरे कुप्रथाका विनाश किया, कठोर विधि-विधान न फैलाकर प्राणके भीतर विश्वासका बीज बो दिया; लोगोंको सद्व्यवहारसे वशीभूतकर उन्हें दोषसंशोधनकी राह दिखा दी। † अमरदास प्राय: साढ़े बाईस वर्ष

---

* मेलकमने (Malcolm Sketch, P. 27) साफ कहा है, कि अमरदासने ही यह अलगाव किया, देवीस्थानमें (Dabistan, ii, 571) लिखा है, कि साधारणत: सिखोंके गुरुओंने ही यह स्वातन्त्र्य फैलाया। अबके कितने ही शिक्षित सिख समझते हैं, कि उदासी और नानकके प्रकृत शिष्योंमें यह अलगाव अर्जुनने ही पहले पहल प्रमाणप्रयोग द्वारा प्रतिपन्न किया था।

† "आदिग्रन्थ" के (Adee Granth, Soohee Chapter) सोही अध्यायका जो अंश अमरदास-रचित है,—वही देखने लायक है। फरस्टर कहते हैं,—नानकने सतीदाह छुड़ाया था और विधवाविवाहका अनुमोदन किया था। किन्तु नानकने

गुरुपदपर अधिष्ठित रहे। सन् १५७४ ई०में वह परलोक गये। उनके एक पुत्र और एक कन्या थी। * कन्याकी असीम पितृभक्तिसे और सेवाव्रतसे वह सुग्ध हुए थे, कहते हैं, इसीलिये और शिष्योंकी अपेक्षा अपने दामादको वह श्रेष्ठ समझते थे और अन्तमें उन्हें ही उन्होने "बरकत" या गुरुकी तरह गुणसम्पन्नके नामसे प्रचार किया था। ऐसा और भी कहा जाता है, कि उनको उस उच्चाभिलाषिणी कन्यासे गुरु प्रतिज्ञाबद्ध हुए थे, कि कन्याकी सन्तान-सन्तति ही कायदेके साथ गुरुपदपर प्रतिष्ठित होगी।

अमरदासके दामाद रामदास क्षत्रिय वंशकी "सोधी" शाखामें थे, स्त्रीके प्रेमके और गुरुके मनोनयनके वह उपयुक्त पात्र थे। बादशाह अकबर रामदासको बहुत चाहते थे; रामदा-

---

इस सम्बन्धमें कोई खास नियम विधिबद्ध नहीं किया था। पहले अकबर और जहांगीर (Memoirs of Jehangheer) और इसके बाद अङ्गरेजोंने इस प्रथाका नाश किया था। इससे पहले प्रमाणप्रयोग द्वारा ऐसे आत्मोत्सर्गके निवारणकी कोई चेष्टा हुई नहीं थी।

* उमरदासके जन्मकी तारीखके सम्बन्धमें सब जगह ऐसा ही हाल दिखाई देता है। उन सब वर्णनोंके अनुसार उमरदासने १५६६ सम्वत् या सन् १५०६ ई०में जन्म लिया। उनकी मृत्युका समय १६३१ सम्वत् (१५७४ ई०) स्थिर किया गया है। यहां एक विवरणमें व्यतिक्रम दिखाई देता है; इससे मालूम होता है, १५८० ई०में उनकी मृत्यु हुई।

सको उन्होंने कुछ भूसम्पत्ति भी दी थी। उस जमीनपर रामदासने एक पुष्करिणी बनवाई, वह पुष्करिणी ही "अमृतसर"—या "अमरत्वके आधारके" नामसे विख्यात है। रामदासका प्रतिष्ठित धर्म्ममन्दिर और उसकी चारो ओरकी पर्णकुटी उनके ही नामानुसार "रामदासपूर" के नामसे अभिहित हुई थी। *

रामदास सिख गुरुओंमें श्रेष्ठ और श्रद्धाभाजन थे। लोगोंके गृहस्थोपयोगी किसी "सूत्र" या नीतिका उन्होंने प्रचार नहीं किया; किसी तरहका कार्य्यकारी नियम भी वह बांध नहीं गये। वह सात वर्ष गुरुपदपर प्रतिष्ठित रहे। नानकके बादके सिख-गुरु बयालीस वर्षकी चेष्टासे भी दूनीसे ज्यादा सिख-संख्या बढ़ा नहीं सके। इससे साफ जान पड़ता है, कि नानकके फैलाये धर्म्मने किसतरह धीरे धीरे उन्नति पाई। †

---

* Malcolm, 'Sketch, p. 29, Forster Travels 1. 297 the Dabpistan ii. 275, सिख लोग कहते हैं, कि एक वैरागी अकबरके दिये इस दानके दखलके लिये विवाद करनेपर तय्यार हुआ था। वैरागीको ऐसा विश्वास था, कि यहांकी प्राचीन पुष्करिणी उसके सम्प्रदायके पृष्ठपोषक देवता रामके नामसे दी गई थी।—ऐसा कहकर ही वह विवाद करता था। किन्तु सिख गुरुने स्पर्द्धाके साथ कहा था, कि वही उन वीरके सच्चे प्रतिभूति हैं। वैरागी कोई प्रमाण दिखा न सका, रामदासने मट्टीके गभीरतम तलदेशको खुदवाकर अपने अनुचरोंको अपने कहे [illegible] को दिखाई।

† [illegible] [illegible]न्दिरके आरम्भमें भाई [illegible] सिंहने एक छापी

सन् १५८१ ई०में रामदासके पुत्र अर्ज्जुन सिखोंके गुरुपदपर वरित हुए। इस तरह उनकी माताकी (अमरदासकी कन्याकी) मनोवाञ्छा पूर्ण हुई। * अर्ज्जुन ही सबसे पहले नानकके दिये धर्म्मोपदेशोंका प्रकृत तात्पर्य्य समझ सके।

लिखी हुई पोथीका उद्धार साधन किया है। उसमें लिखा है, कि वह (नानक) अपने ८४ शिष्योंके साथ धर्म्म-विषयक बातचीत करते थे। उपर्य्युक्त प्रसङ्गका ऐसा ही मर्म्म है।

रामदासने १५८१ सम्वत्में (सन् १५२४ ई०में) जन्म लिया। सन् १५४५ ई० में उनका विवाह हुआ। सन् १५७७ ई० में अमृतसर (अमृतसरोवर) की प्रतिष्ठाकर उन्होंने सन् १५८१ ई०में इहधाम परित्याग किया।

* इसमें सन्देह है, कि रामदासके दो पुत्र थे या तीन। पृथ्वीचन्द्र (वनाम भारतमल्ल या धीरमल) अर्ज्जुन और महादेव उनके इन तीन पुत्रोंका परिचय मिलता है। इसमें भी संशय है, कि अर्ज्जुन और पृथ्वीचन्द्रमें कौन बड़ा और छोटा था। तब भी, यह स्थिरनिश्चय है, कि यद्यपि पृथ्वीचन्द्र पिताकी मृत्युके बाद धर्म्माधिकरणके दावी नहीं हुए, किन्तु भाईकी मृत्युके बाद उन्होंने उत्तराधिकारित्वके लिये जिद्द की। अर्ज्जुनको विष देनेकी चेष्टा करनेके कारण सबने ही उन्हें दोषी ठहराया। (Compare Malcolm, 'Sketch', p. 30 and Dabistan', ii. 273ff). शतद्रुके निकटवर्त्ती स्थानमें, विशेषतः फीरोजपुरके दक्षिण "कोटहारसहाई" नामक स्थानमें पृथ्वीचन्द्रके वंशधर आज भी रहते हैं।

सबसे पहले उन्होंने यह अवधारण किया, कि यह सब नीति जी-वन और समाजको किस अवस्थामें किस भावसे प्रयुक्त होती है। अमृतसरमें इनके शिष्योंका प्रधान धर्म्माधिकरणका स्थान ठीक हुआ था। पार्थिव भोग-लालसासे आकृष्ट हो इस पवित्र स्थानमें वह लोग एकता-सूत्रमें आबद्ध होते थे। जहां एक समय रामदासकी निर्ज्जन पर्णकुटी और पुष्करिणी मौजूद थी, वह स्थान इस समय बहुजनाकीर्ण शहर हो गया है,— वह सिखोंका एक महत् तीर्थस्थान गिना जाता है। * पूर्ववर्त्ती गुरुओंके सूत्र या नीतिको संग्रहकर अर्ज्जुनने एकत्र रचना की थी। † इससे कोई शताब्दि पहले धर्म्मसंस्कारकोंके बहुत परि-

---

* सिखोंके साधारण विवरणमें देखा गया है,—अर्ज्जुनने अमृतसरमें ही वासस्थान ठीक किया था। किन्तु वह कुछ दिनोंतक "तारण तरण" नामक स्थानमें वास करते थे, यह स्थान अमृतसर और शतद्रु विपाशा दोनों नदियोंके सङ्गमके बीचमें है। (Compare the 'Dabistan,' ii. 275)

† Malcolm, "Sketch," p. 30. लोगोंकी बातोंसे और कितने ही ग्रन्थकारोंका विवरण पढ़नेसे मालूम हुआ है, कि अर्ज्जुनने ही "प्रथम-ग्रन्थ"की रचना की है; किन्तु नानकके अनेक धर्म्मोपदेश अङ्गदने संग्रह कर रखे थे। फरष्टर (Forster, Travels, i. 297) कहते हैं, रामदासने पहले अपने पूर्ववर्त्ती गुरुओंका इतिहास और मूलसूत्र सङ्कलनकर उसमें टीका मिलाई। उन्हीं ग्रन्थकर्त्ताने प्रतिवादस्वरूपक वाक्यमें और भी ठीक किया है, कि अङ्गद ही इसके सङ्कलनकर्त्ता हैं।

पित और उपयोगी ग्रन्थसमूह संयोजित हुए। अन्तमें वह सब अपने हाथसे लिखे और उन्हें ; ईश्वरोपासनाकी विधि और सदुपदेशोंसे अधिकार अर्ज्जुनने घोषणा की, वह सङ्कलन ही सबसे श्रेष्ठ "ग्रन्थ" या धर्मशास्त्र है। शिष्योंके नैतिक और धर्म-संक्रान्त व्यापारपद्धति चलाने के लिये अर्ज्जुनने कई एक नियम बांधे। उन नियमोंके फैलानेके समय उन्होंने कहा,—साधारण लोग, यहांतक, कि धर्म्माचार्य्य ब्राह्मण भी वेदाध्ययनमें अकर्म्मण्य हो पड़े हैं, इस समय उनपर रत्तिभर भी विश्वास रखना न चाहिये। * इससे पहले शिष्यलोग जो सब पूजोपहार (प्रणामी) देते थे, अब वह रीतिके अनुसार करह्रपमें परिणत हुई। अर्ज्जुनके प्राधान्यके समय उनके शिष्य और सहचरोंने हरेक शहर और प्रदेशमें बसती फैलाई थी, धर्म्मोपदेष्टा गुरुकी ओर सम्मान दिखाने और उनकी पूजा और प्रणामी देनेमें सिख लोग आप ही आकृष्ट होते थे। सामाजिक रीति और स्वाभाविक गुरुभक्तिवशत; वार्षिक धर्म्मसभामें उपस्थित हो गुरुके पादपद्मपर सिख लोग जो प्रणामी प्रदान करते थे,धर्म्मनिष्ठ मनुष्योंसे संग्रह करनेके लिये अर्ज्जुनके प्रतिनिधि

---

* "Adee Grunth," in that Portion of the "Soohee" Chapter written by Arjoon. (आदिग्रन्थके "सूही" अध्यायका जो अंश अर्ज्जुनने लिखा है,—वह देखने लायक है।) "आदि या प्रथम ग्रन्थका" कुछ विवरण जाननेके लिये परिशिष्टका प्रथम अध्याय देखना चाहिये। (See Appendix i, "Adee" or "First Grunth,")

देशको सब जगहोंमें हो घूमता है। समसामयिक मोहन फानीने कहा है,—इस प्रथाके फैलनेसे सिख लोग कानूनके मुताबिक राज्यशासन-तन्त्रमें अभ्यस्त हो गये थे। * अर्थ संग्रह और प्रभाव फैलानेके और उपाय पैदा करनेमें भी अर्जुन अमनोयोगी नहीं थे। शिष्योंको अर्जुन विदेश भेजते थे। शिष्य लोग धर्मके जैसे विश्वासी और अनुरागी थे, वैसे ही व्यवसाय-वाणिज्यमें भी प्रखरप्रतिभासम्पन्न थे। उनके शिष्य तुर्किस्तानसे घोड़े खरीद सौदागरी करते थे; सौदागरी व्यवसायमें भी उन्होंने बहुत ख्याति-प्रतिपत्ति पाई थी। †

धर्मनिष्ठ तपस्वियोंमें अर्जुनने बहुत प्रतिष्ठा पाई थी। उनके जीवनचरित-लेखकगण कहते हैं, कि कितने ही योगी और धार्म्मिक पुरुषोंने उनसे शिक्षा पाई थी। वह धनी और वंशधर मनुष्योंके भी बहुत श्रद्धाभाजन थे। अर्जुनने लाहोर प्रदेशके राजस्व-सचिव चन्दूशाहकी कन्याके साथ अपने पुत्रका विवाह करना नामञ्जूर किया था। ‡ वह

---

* The 'Dabistan' ii, 270 &c, Compare Malcolm, 'Sketch,' p. 30.

† सिखोंके नाधारण विवरणमें ऐसा ही लिखा है। (Compare the 'Dabistan' ii, 271)

‡ Compare Forster, Travels i, 258. फारसी "अमदरुलाल" पहला पुस्तकका २६८ पृ० देखना चाहिये सिखोंका विवरण पढ़नेसे मालूम होता है कि नानकके पुत्र श्री चन्द्रको कन्याके विवाहके उपयुक्त पात्र नहीं मिले थे। चन्दूके

प्रधान राजनैतिक होनेके कारण बहुत समय उनसे परामर्श लेते थे। जहांगीरके पुत्र खुशरूने जब राजद्रोहको घोषणाकर कुछ दिनों पञ्जाबपर अधिकार किया तब अर्ज्जुनने ईश्वरसे उनकी मङ्गलकामना की थी। बादशाहने एक समय गुरुको अपनी मुलाकात करनेके लिये बुलाया; कहते हैं, प्रधानतः चन्दू

हृषितभावसे इस प्रस्तावका अपमानकर कहा था—"यद्यपि अर्ज्जुन एक विख्यात और धनी पुरुष है, तथापि वह एक भिक्षुकमात्र हैं।" ऐसी बात सुन उपहासके लिये अर्ज्जुन क्रुद्ध हुए थे। उनके क्रोधको शान्तिके लिये और फिर उनसे मित्रता स्थापन करनेके लिये चन्दूने बहुतेरी चेष्टायें की थी, किन्तु अर्ज्जुन उस विवाहके लिये किसी तरह सम्मत नहीं हुए।

नामके अन्तमें "शा" (शाह) शब्दका मेल,—भारतवर्षमें विस्तृतभावसे प्रचलित एक कुसंस्कार व्यञ्जक उपाधि मात्र है। यह फारसी भाषाका शब्द है, इसका अर्थ "राजा" है। किन्तु धर्म्मनिष्ठ-हिन्दुओंमें जैसे "महाराज" की उपाधि प्रचलित है, मुसलमान फकीरोंमें भी उसी तरह "शा या शाह" उपाधि प्रयुक्त होती है। इससे एक प्रधान सौदागर समझे जाते हैं, या 'साहु' या "साहुकार" शब्दके अपभ्रंशसे व्यवहृत होता है। यह शब्द 'शा' या "सुहाई" शब्दके अपभ्रंशरूपमें "नाम" या "पदवी" स्वरूप प्रयुक्त होता है। मुसलमान-धर्म्मसे दीक्षित नर्म्मदाके तीरवर्त्ती "गाण्ड" लोग सबके नामके "शाह" शब्दका व्यवहार करते हैं।

शाहको प्रोचनासे बादशाहने उन्हें सिकड़ियोंमें बंधवाय था। अर्ज्जुनके चन्दू शाहसे साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापन इनकार करनेपर अवसर पा बादशाहसे चन्दू शाहने प्रक किया,—अर्ज्जुन उच्चाभिलाषी पुरुष है, उसके द्वार भविष्यतमें अनिष्ट हो सकता है।" * सन् १६०६ ई०में अर्ज्जुनकी मृत्यु हुई। कितने लोगोंका विश्वास है, कि कारागारकी असह्य यन्त्रणा ही उनकी अकाल मृत्युका कारण है। किन्तु उनके शिष्योंका दृढ़ विश्वास है,—

* "Dab,s'an" ii, 272, 273, सिखोंका सब विवरणसे ही गुरुके अपमान और विचारके सम्बन्धमें एक मत है, कहीं उनकी राजद्रोहिताका छाप दिखाई नहीं देता। उन सब लोगोंने एकवाक्यसे घोषणा की है, कि बादशाह गुरुकी धर्म्म-निष्ठता और निर्दोषितासे सन्तुष्ट हुए थे, फिर भी, वह लोग कहते हैं, चन्दूकी ईर्षावश और आज्ञा न माननेसे गुरु बारबार कारारुद्ध हुए थे। (Compare, Malcolm, Sketch. p 32) मोसिन फानीने भी कहा है, खुशरूकी मङ्गलकामना करनेसे एक थानादार और एक मुसलमान संन्यासी भी जहांगीर द्वारा निर्व्वासित हुए थे। (Dabistan ii, 273) बादशाह जहांगीरने खुद स्वीकार किया है, कि जब वह लाहोरके मार्ग मा विद्रोहियोंको विध्वस्तकर शहरमें लौट रहे थे, तो उन्होंने थानादार शेखनिजाम नामक एक पुरुषको एक उपहार प्रदान किया। (Memoirs p. 81) जान पड़ता है, इसके उपरान्त उसके विद्रोहिताचरणकी [illegible]।

बादशाहको रजामन्दीसे गुरु एक दिन इरावती नदीमें स्नान करने गये थे, पहरादारोंकी भीत और चमत्कृत कर उस स्वच्छ-सलिला स्रोतस्विनीमें वह अन्तर्हित हुए। *

अर्जुनके धर्म्माधिकरणके समय, उनके शिष्योंके दिलमें नानकको नीतिसमूह मजबूत जम गई थी। † गुरुदास नामक उनके एक शिष्यने जैसा उदार मत प्रकाश किया था उससे गुरुके उद्देशमें सहज ही तरक्की हुई थी। गुरुदास अपने गुरुको व्यास या मुहम्मदके अभिषिक्त समझते थे। उन्हें विश्वास था,—"नानक ईश्वरके भेजे थे, वह बाह्य और आभ्यन्तरीण विशुद्धता और पवित्रताके फिरसे प्रतिष्ठाता थे, पृथिवीका बढ़ता हुआ पापभार और विभिन्न सम्प्रदायका निष्ठुर आचार व्यवहार दूर करनेके लिये ही नानकका आविर्भाव हुआ था। वह मुसलमानोंके अन्ध धर्म्म-विश्वास और उनकी उद्धत प्रकृतिके विरुद्धवादी थे;—हिन्दुओंके संन्यास धर्म्मसे

* Compare Malcolm Sketch. p. 33, the Dabistan. ii. 272-3; and Forster Travels i. 298.

एक विवरणके अनुसार मालूम हुआ है।—सन् १५६५ ई०में अर्जुनका जन्म हुआ था, किन्तु उनके जन्मका वर्ष सन् १५५३ ई० होना ही ज्यादातर सम्भव है। १६६३ सम्वत् १०१५ हिजरी या १६०६ ई०में उनकी मृत्यु हुई।

† मोसन फानीने (Mohsun Fanee, Dabistan ii. 270) विचारकर कहा है, अर्जुनके समय सिख लोग देशके सब शहरोंमे ही फैल पड़े थे।

घृणा करते थे। उन्होंने पापपथको छोड़ धर्म्मपथपर रह जीवन बितानेकी आज्ञा फैलाई थी। नानक जिन सत्यस्वरूप ईश्वरका विषय ठीक कर गये थे, उन्हीं अद्वितीय ईश्वरकी उपासना करनेका उन्होंने उपदेश दिया था। कहते हैं, इन धर्म्मनिष्ठ शिष्यके कठोर, फिर भी अनुरागपूर्ण विधानोंको अर्ज्जुनने "आदि ग्रन्थमें" मिलाना अस्वीकार किया। शायद उन्होंने समझा था, कि नानक जो नीतिसमूह लिख गये हैं, वह उनके उद्देश्य या अभिप्रायके लिये उपयोगी हैं, क्योंकि नानकके नीतिसमूह कभी किसीके दिलमें घृणा या भय नहीं दिखाते। बल्कि गुरुदासके हाथके लिखे ग्रन्थ व्यवहारिक कार्य्यकलापका रूपकवर्णना विशेष है; उसे ईश्वरका गुणानुवाद-मूलक सरल स्तोत्र कह नहीं सकते। उनके बनाये नीतिसमूहमें नानकका उद्देश्य और भी साफ़ साफ़ कहा जा चुका है। नानकका प्रधान उद्देश्य था,—हिन्दू-मुसलमान सभी उनका फैलाया अभिनव-धर्म्ममत ग्रहणकर नये भावसे विमोहित होंगे, गुरुदासने जो नीति प्रवर्त्तन की थी,—वह भी नानकके उद्देश्यसे बहुत फैली थी। नानकका गूढ़कल्पनाप्रसूत दिव्यज्ञान परिवर्त्तित भावसे लोगोंके दिलमें जम गया था; सभी उस नीतिका अवलम्बनकर नये उत्साहसे उत्साहित हुए थे। इन सब कारणोंसे गुरुदासका हस्तलिखित नीतिसमूह उपेक्षणीय नहीं है। नानक कभी छलते या धोखा देते नहीं थे, वह मनुष्यको पापासक्तिके लिये नहीं हो आक्षेप करते थ; वह सदेशवासियोंको दिखाते चाहते थे। गुरुदास प्रत्येक सिखजाति नानकको दयालुशक्ति समझते थे; उन्हें ईश्वरका अंश [illegible]

उनकी भक्ति करती थी ; उनका विश्वास था, कि जगत्का पाप-भार मिटानेके लिये ईश्वरके प्रतिनिधिके रूपमें उनका आविर्भाव हुआ था। भारतकी विभिन्न जातियोंकी भविष्यत आशा और चिन्ताके विषयकी आलोचना करनेसे, नानकप्रचारित नीति-समूहके शुभ उद्देश्यका उज्ज्वल प्रमाण मिलता है। *

---

* भाई गुरुदास वल्लभके इस नामयुक्त या "ज्ञानरत्नावली" नामक ग्रन्थ सिख बड़े आदरसे पढ़ते हैं। (Malcolm, Sketch, p. 30, note) यह पुस्तक चालीस अध्यायोंमें सम्पूर्ण और तरह तरहकी कविताओंसे रचित है। इसका कुछ अंश परिशिष्टके तृतीय भागमें उद्धृत हुआ है। मेलकम कृत "सार संग्रह" के १५२ पृष्ठमें यह देखा गया है। (Appendix iii, and in Malcolm, "Sketch" p. 152 &c) गुरुदास अर्ज्जुनके शाके थे ; यह अभिमान और गर्व्वके कारण गुरुके विरागभाजन हुए और इसीलिये गुरुने उनके नीतिसमूहको "ग्रन्थमें" मिलाना अस्वीकार किया। समय और चिन्ताके आवर्त्तनमें,—सिख लोग और एक अलौकिक कामकी बात कहते हैं,—गुरुदास अपने दोष और नीचताकी उपलब्धि कर सके थे। शिष्यका अनुताप समझ अर्ज्जुनने कहा, उनकी हस्तलिपि "ग्रन्थ" मिलाई जायेगी। किन्तु गुरुदास अन्तमें इतने धीर और नम्र हुए थे, कि गुरुसे उन्होंने प्रकाश किया था,—उनके नीति-समूह "ग्रन्थमें" मिलानेके उपयुक्त नहीं हैं। इसके उपरान्त गुरुने इस नियमका प्रचार किया, कि चाहे कुछ ही क्यों न हो; सिख जाति यह नीतिसमूह अवश्य पढ़ेगी। वह कहते हैं;

अर्ज्जुनकी मृत्युके बाद उत्तराधिकारित्वके नियमानुसार उनके एकमात्र पुत्र गुरुपदपर अभिषिक्त होनेके अधिकारी हुए। लेकिन वह उस समय बालक थे, सुतरां अर्ज्जुनके भाई पृथ्वीचन्द्र उस गुरुपदके पानेके लिये चेष्टा करने लगे। अर्ज्जुनके विरुद्ध भी उन्होंने कईबार षड़यन्त्र चलाया था,—उस विश्वासपर सिखोंने जल्द अर्ज्जुनके पुत्रको ही अपने गुरुपदपर प्रतिष्ठित किया। इसके भीतर ही पृथ्वीचन्द्रने कुछ शिष्य चुने थे; उन्होंने पृथ्वीचन्द्रकी नियमावलीका अनुसरण किया। इसतरह स्वतन्त्र सम्प्रदायका बीज अङ्कुरित हुआ;—विवाद और विप्लवनका सूत्रपात आरम्भ हुआ। अन्तमें सम्प्रदाय और धर्म्ममत जितना बढ़ा, विवाद और लड़ाई भी उतनी ही बढ़ गई। *
अर्ज्जुनकी मृत्युके समय उनके पुत्र हरगोविन्दकी उम्र ग्यारह

(Malcolm, "Sketch" p. 30 note) पिट अभिषेक या प्रतिष्ठाके सिवा अर्ज्जुन गुरुपदपर प्रतिष्ठित हुए। यह इन गुरुके असाधारण अनुज्ञासूचक क्षमताका एक उज्ज्वल दृष्टान्त है।

([Malcolm "Sketch" p. 30.) मेलकम कहते हैं—चन्दू शाह (या दुनीचन्द्र) गुरुदास एक ही पुरुष था, जो हो यहां वह भ्रममें पड़ गये थे।

* Malcolm, "Sketch," p. 30, and "Dabistan" ii, 273, इस सम्प्रदायके धर्म्मावलम्बी 'मीना' (Meena) नामसे अभिहित हैं। मोसन फानी कहते हैं, पञ्जाबमें यह शब्द "घृणा या अवज्ञासूचक" अर्थमें साधारणतः प्रयुक्त होता है।

बालसे ज्यादाकी नहीं थी। लेकिन शिष्योंसे चन्दूशाहकी दुश्मनीकी बात मालूमकर वह बहुत ही क्रुद्ध हुए। इसके बाद उन्होंने तरह तरहके उपायोंसे चन्दूशाहके विरुद्ध बादशाहको उत्तेजित किया, बादशाह द्वारा चन्दूशाहकी दण्डाज्ञा प्रचारित हुई। ऐसा भी कहा जाता है, कि बादशाहकी आज्ञाकी कुछ भी प्रतीक्षा न कर हरगोविन्दने खुद चन्दूशाहका निधन साधन किया। * चन्दूकी मृत्यु और हरगोविन्दके गुरुपद पानेके प्रथम समयका विवरण चाहे जैसा हो,—किन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि हरगोविन्दने बहुत थोड़े समयमें सिखोंके धर्म्मगुरु और नेतृपद पाया था। नानकने गार्हस्थ्य धर्म्मका नीतिसमूह फैलाया था, नानकके अनुज्ञासे वह सब नीतिसमूह अर्ज्जुन द्वारा व्यवहारोपयोगी हो गये थे। अब हरगोविन्दने जो नई शक्ति प्रदान की, उससे वह सब चटपट विस्तृत और सर्ववादिसम्मतरूपमें परिगृहीत हुई। अवस्थावश और स्वाभाविक प्रतिभाके बलसे हरगोविन्दने जो नई प्रथा फैलाई, उससे प्रचलित रीति-नीति आचार-पद्धति और धर्म्म-कर्म्मका अनेक अंश बदल गया। पिताकी अपमृत्युसे उनकी मानसिक वृत्ति विचलित हुई थी, उन्होंने पितृप्रदर्शित नीतिके अतिक्रम करनेकी इच्छा की थी। हिन्दू-धर्म्मशास्त्र बहुत नीच आदमीको भी आत्मरक्षाके लिये उपदेश देता है;

मतविशेषकी ओर आदिम खृष्टानोंका श्रद्धा समझ पालने उनका तिरस्कार किया। (I Corinthians, i, 10-13)

* Compare Forster, Travels," ii, 298.

हरगोविन्द मनुके उपदेश जानते थे। हिन्दूधर्म्मशास्त्रके उस प्रभावने उनके मनमें आधिपत्य फैलाया था; वह भी आत्मरक्षाके लिये तय्यार हो गये थे। * कूटराजनीतिक नियमानुसार अर्ज्जुन सौदागरोंकी तरह वाणिज्य करते थे, धर्म्मकार्य्यके समय याजकत्व करते थे लेकिन अब हरगोविन्दने अस्त्रग्रहण किया; विश्वासी और धर्म्मनिष्ठ शिष्योंके साथ हरगोविन्दने सम्राटके सिपाहियों साथ युद्ध करनेके लिये यात्रा की, हरगोविन्द असीम साहससे सैन्य परिचालनाकर अपने शत्रु या प्रादेशिक शासनकर्त्ताओंको युद्धमें पराभूत करते थे। नानकने खुद मांसाहार परित्याग किया था, उसीतरह ज्ञानवान् अर्ज्जुनने परिमिताचार अवलम्बनकर भोगोजनोचित दान और समताका उत्कर्ष साधन किया था। लेकिन दुःसाहसिक हरगोविन्द पशुका शिकार करना अच्छा समझते और मांसाहार करते थे। उनके शिष्योंने भी गुरुकी दिखाई रीतिका अनुकरण किया था। सैन्यके नेतृत्वमें,शत्रुके ढूंढ़नेमें और युद्धकी विपदाशङ्कासे यह युद्धप्रिय

---

* इस ग्रंथोक्त अनुमितके विषयमें मेलकम-कृत "सारसंग्रह"का ४४ और १८६ पृष्ठ देखने लायक है। (See Malcoml's, "Sketch", p. p. 44, 189.) जान पड़ता है,—मुसलमान-राजत्वके समय इस सम्बन्धमें मनुकी नीति बहुत दिनोंसे लोप हुई थी। सुतरां ऐसे खयालसे न्याय्यकी विषयमें युक्ति-तर्कके सम्बन्धमें बहुत कुछ संक्षेप किया गया था

† The 'Dabistan, ii 245 and Malcolm, "Sketch p, 35.

धर्म्मगुरु सदा ही आनन्द उपभोग करते थे। पिताका शोक, धर्म्मनेताका कर्तव्य और मनका उच्चाभिलाष—इन सबको मिलावटसे धर्म्मनेता हरगोविन्दका मन संगठित हुआ था। सम्भवतः उनके अनुसार ही वह कार्य्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हुए। अकबरके लड़केके राज्य शासनके समय सिखोंके आंशिक स्वाधीनता पानेपर भी हरगोविन्दका उद्देश्य पूरी तरह सफल नहीं हुआ। भगेलू और अपराधियोंको हरगोविन्द समभावसे शिष्यरूपमें वे दलभुक्त करते थे। यद्यपि वह अनेक समय अपनी रीति प्रकृतिका संशोधन कर नहीं सकते थे, तथापि किसीसे शत्रुता उपस्थित होनेपर वह लोग हरगोविन्दकी तरफ ही प्राणपणसे गुरुकी आज्ञाका प्रतिपालन करते थे। वास्तविक उनका ऐसा विश्वास था, कि धर्म्मनिष्ठ सिख लोग ही स्वर्ग जायेंगे। *

एक अस्तबलमें हरगोविन्दके आठ सौ घोड़े थे। तीन सौ सिख-सवार सदा उनके आज्ञावाही रहते थे। यदि हरगोविन्द कभी मारे जानेकी बात सोच मनमें डरते, तो साठ बन्दूकधारी पहरादार उनके शरीररक्षक नियुक्त होते थे। † हरगोविन्दने सिखोंमें ऐसी शक्ति दी थी, कि वह लोग उस शक्ति और उत्तेजनाके बलसे सब हिन्दू-जातियोंसे पूरी तरह अलग हो गये थे। हरगोविन्दकी मृत्युके बाद उनके शिष्योंने पहलेकी रीतिका फिर अनुसरण नहीं किया, उन लोगोंने संन्यासी और भिक्षुकोंकी सीमाबद्ध राहका अवलम्बन करना विपज्जनक समझा‡

* The Dabistan ii, 284, 286.

† The "Dabistan" ii, 277.

‡ मेलकम (Sketch, P. 34, 35) और फरष्टर दोनो

हरगोविन्द बादशाह जहांगीरके एक अनुचर हुए थे। जीवनके अन्तमें वह असमसाहसिक योद्धा पुरुष और उन्मत्त

होने स्वीकार किया है, कि मुसलमानोंके विरुद्ध धर्म्मविषयक वैरताचरणमें प्रवृत्त होनेसे हरगोविन्द बहुत ज्यादा इस बदलाके साधन करनेपर बाध्य हुए थे। हरगोविन्दकी पितृ-मृत्युका बदला लेनेकी इच्छाने ताकत पकडी। उन्होंने सिखोंको अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित किया, सच्चे योद्धाकी तरह सैन्यपरिचालनाकर उन्होंने शत्रुके विरुद्ध अस्त्रधारण किया था। सिख गुरु हरगोविन्दने जिस कारण ऐसे युद्धकी सजाव की. मोसन फानीने उसे आश्चर्य्यजनक और अस्वाभाविक नहीं समझा, सुतरां "देवीस्थान" नामक अपने ग्रन्थमें उन्होंने इस विषयका कोई कारण ठीक करनेकी चेष्टा नहीं की। नानकके फैलाये धर्म्म-मतसे संस्कारके सम्बन्धमें सिख लोग आप ही कहते हैं, कि मिथिलादेशके पौराणिक "जनक"के द्वार्थ-भाषिक नीतिके साथ उसका मेल है। नानकके शरीरमें उन महात्माकी सुक्ष्मात्माके प्रविष्ट होनेसे, नानक उनकी शक्तिसे अनुप्राणित हुए थे। ('Dabistan', ii 268)। व्यक्तिगत पौराणिक कहावतकी बातोंको मिलावटसे उन्होंने उनके शासनकर्त्ताके आदर्शको भारग्रस्त किया है।—अर्जुनको चूंकि पुत्र-सन्तान नहीं था, वह इहजीवनमें पुत्रकी माता न होनेके कारण हताश होने लगी। वह नानकके एकमात्र पुराने बन्धु 'भाई बुधा'के पास उनका आशी-र्वाद लेने गई। लेकिन भाई बुधाने उनकी अवज्ञा और बहु-मूल्य पूजोपहार देख असन्तुष्ट हो उनकी ओर दृष्टि नहीं फेरी।

धर्म्म तिम्बाकोंके नामसे परिचित हुए. उनका स्वाभाविक गुण सब जगह फैल गया था। सम्राटको फौजके साथ वह काश्मीर

इसके बाद वह नङ्गे पैर गरीब प्रजाके उपयुक्त कुछ सामान्य खानेकी चीज शिरपर ले अकेली उन महात्माके पास गईं। तब भाइ बुधाने उनके प्रति दयार्द्र हो हंसकर कहा,—उनके एक पुत्र-सन्तान होगा और वह पुत्र "देग" और "तेग" ('Deg and Teg.') दोनोका आधिपत्य करेगा। अर्थात् सरलभाषामे—साधारणत: खाद्य और तलवारभाण्डार (अस्त्रशस्त्र) है, लेकिन सार बातोंमें ईश्वरप्रसाद और राजशक्तिका अधिकारी होगा। जनकके "राज" और "योग" (१) शब्द भारतीय मुसलमानोंके "पीरी" और "मीरी" शब्द, यहूदियोंके भावी यीशु-खृष्ट (Messiah) और "मलकीजेदक"के पौरहित्य और राजत्व-

---

(१) राज मेन योग कुमाओमें (Raj men jog koomaio) हमेशासे ऐसा वाक्य व्यवहृत होता है. कि अविनश्वर पुण्य और धर्म्म अर्ज्जन करनेमें, या पृथिवीमें ऐहिक राजशक्ति परिचालनाके समय, सुख-स्वच्छन्दसे वास करनेमें और ईश्वरकी कृपा पानेके अभिलाषी होनेमे "राज और योगका आचरण करो।' आदि ग्रन्थमें भी ऐसा ही लिखा है। कुछ भाट कवि "सिउउइयास" (Suwelas, में भी इसका व्यवहार करते है। इसलिये बोका नामक एक मनुष्यने कहा था, 'रामदासने (चौथे गुरु) उमादाससे 'राज और योग'के सम्बन्धमें तख्त (Tukht) या सिंहासन पाया था।"

गये थे; उन्होंने एक समय मुगलोंके धर्म्मोपदेश मुल्लाओंके साथ पवित्र धर्म्म विषयपर तर्कवितर्क किया था। सिपाहि-

---

विषयक ज्ञानके साथ "तेग और देग' शब्द तुल्यार्थव्यञ्जक है। कहते हैं,—इसतरह हरगोविन्दने दो (तलवार) अस्त्रग्रहण किये थे,—एक उनकी परमार्थिक शक्ति और दूसरा उनका शासन-कर्त्तृत्व प्रकट करता था। वह समय समयपर ऐसी घोषणा करना अच्छा समझते थे कि एक उन्होंने पिताकी मृत्युके बदला लेनेकी इच्छासे और दूसरा मुसलमान धर्म्मके उच्छेदसाधन-कल्पसे धारण किया था। (See Malcom, "Sketch," P. 35),

जो हो, अर्ज्जुनकी मृत्यु और पुत्रकी योद्धृ-प्रकृति, इन दोनों कारणोंसे ही सिख जाति अस्त्र ग्रहण करनेपर वाध्य हुई थी। किन्तु उनका यह परिवर्तन कैसे साधित हुआ, वह साफ साफ मालूम नहीं होता; या उसका अनुसरणकर सच्ची घटना ढूंढ़ निकालनेके लिये भी कोई प्रमाण नहीं मिलता। पुराने खृष्टानोंके ऐतिहासिक विवरणके सम्बन्धमें भी ऐसा ही सिद्धान्त पाया जाता है। सीजरके समय जो युद्ध और राज्यशासन-कार्य्यसे घृणा करते थे, उन्होंने जिस परिवर्तन और उन्नतिके वलसे "डाइयूक्लिसियन" के राजत्वके समय सैन्यदलभुक्त हो सैन्यसंख्यासे राज्य भर दिया था। और अन्तमें "कनसटानटा-इन" नामक एक मनुष्यको ईसोपोव सैन्यदलका अधिपति माना था,—उसके सम्बन्धमें हम अनजान हैं, कि वह परिवर्तन और उन्नति कैसे संसाधित हुई थी।

योंको जो तनखाह देना पड़ेगी, उस तनखाहका रुपया अपने पास रखनेके लिये एक समय सम्राटके साथ हरगोविन्दका मतान्तर हुआ था। हरगोविन्दके बहुत ज्यादा शिष्य और अनुचर थे। पशुशिकारका उन्हें बड़ा शौक था, मनुष्यके गुरुरूपमें वह स्वाधीनताकी चिन्तामें विभोर हुए थे। वन और शिकारका कड़ा कानून लङ्घन करनेसे बादशाह उनकी ओर असन्तुष्ट हुए थे। अधिकन्तु अर्ज्जुनपर जो अर्थदण्ड हुआ था, अर्ज्जुनने उसे कभी परिशोध नहीं किया। इन सब कारणोंसे बादशाहने क्रुद्ध हो गवालियरके किलेमें हरगोविन्दको कैद कर दिया। वहां उनके लिये बहुत सामान्य आहारका बन्दोबस्त हुआ था। किन्तु विश्वासी सिख लोग उसपर भी अपने नेताको अलौकिक क्षमतासम्पन्न और प्रकृत गुणशाली समझ भक्ति करने लगे। इसके बाद वह सब गवालियरके दुर्ग-प्राकारके पास इकट्ठे हुए; जिस किलेमें उत्पीड़ित गुरु कैद थे, उस दुर्ग-प्राचीरके सामने वह लोग साष्टाङ्ग दण्डवत करने लगे। गुरुकी कारामुक्तितक उन लोगोंने ऐसा ही किया था। अन्तमें बादशाहने दयावश या कुसंस्कार प्रणोदित हो गुरुको कारागारसे मुक्त किया था। *

---

* Compare the Dabistan, ii, 273, 274 and Forster "Travels" 1, 290, 299,। देशी इतिहासपर निर्भरकर काश्मीर-भ्रमण और मुसलमान मुल्लाओंके साथ धर्मकी बातचीतका वृत्तान्त उद्धृत हुआ है। म न फानीके समझमें हरगोविन्द बारह सालतक कैदमें र थे । फरष्टर कहते है,

सन् १६२८ ई०में जहांगीरकी मृत्युके बाद हरगोविन्द मुसलमान बादशाहके अधीनमें ही काम करने लगे। लेकिन कुछ दिनोंके बाद ही उन्होंने पञ्जाबके राजकीय मुसलमान कर्म्मचारियोंके विरुद्ध अस्त्रधारण किया। उनका एक शिष्य तुर्कदेशसे कईएक बहु मूल्य घोड़े लाया था। कहते हैं, वह सब घोड़े बादशाहकी सम्पत्ति समझ अवरुद्ध हुए; एक घोड़ा पुरस्कार स्वरूप लाहोरके काजी (विचारकर्त्ता) ने पाया। गुरुने उस घोड़के खरीदनेका छलकर उसका फिर उद्धार किया। इस तरह अपमानित होनेपर विचारकर्त्ता काजी हरगोविन्दपर क्रुद्ध हुए। और भी एक कारणसे उनका क्रोध बढ़ा। सिखलोग कहते हैं, काजीकी कन्या और मुसलमान लोग कहते हैं काजीकी उपपत्नी गुरुपर आसक्त हुई थीं और गुरुने उन्हें अपहरण किया था। और और कारणोंसे भी हरगोविन्द मुसलमानोंके विरागभाजन हुए थे, सुतरां उनपर हमलाकर उनके सैन्यदलको विच्छिन्न करनेके लिये

पहले एक मुसलमाननेताने हरगोविन्दको बादशाहकी वश्यता स्वीकार करनेपर बाध्य किया। इन नेताकी मध्यस्थतामें उनकी कारामुक्ति हुई।

बादशाह जहांगीर अपने जीवनवृत्तान्तमें योगी और ऐन्द्रजालिक लोगोंकी ओर विश्वास और सम्मानके सम्बन्धमें बहुत दृष्टान्त दिखा गये हैं। खासकर उनके जीवनवृत्तान्तका १२६ प्रभृति पृष्ठ देखने लायक हैं। उनके एक ऐन्द्रजालिकके साथ उनके मुलाकातकी बात लिखी है

मुसलमान लोग दृढ़प्रतिज्ञ हुए थे। मुखलिस सेनापतिने उनपर आक्रमण किया। लेकिन अन्ततसरके निकटवर्त्ती स्थानमें बादशाहकी सब सैन्य सिक्खो द्वारा पराभूत हुई थी। कहते है,—इस युद्धमें उनकी पांच हजार सैन्यसे राजकीय सात हजार सैन्य हार गई। इसके बाद सिख धर्म्मावलम्बी एक डाकू लाहोरसे बादशाहके दो श्रेष्ठ घोडे चुरा ले गया था, इसके लिये प्रादेशिक सैन्य द्वारा गुरु फिर आक्रान्त हुए। लेकिन युद्धमें वह सब सैन्य विध्वस्त हुई और सेनापति लोग मारे गये थे। तब हरगोविन्दने विचार किया, कि शतद्रुके दक्षिण भातिन्दा नामक निर्ज्जन वन्य-प्रदेशमें जा कुछ दिन बसना ही अच्छा है,—सोचा, कि वहां वह निरापद रह सकेंगे, राजकीय सैन्य वैसे दुर्गम स्थानमें जा उनपर फिर आक्रमण करना निष्प्रयोजन या विपदसङ्कुल समझेगी। वह सुयोगकी प्रतीक्षा करने लगे। किन्तु वह सुयोग फिर न आया। नये झगड़ेमें पड़नेके लिये ही मानो वह फि. पञ्जाबमें आये। पायेन्दाखां नामक एक मनुष्यकी माता हरगोविन्दकी मजदूरनी थी। इस स्त्रीने एक समय बहुत प्राधान्य पाया। हरगोविन्द उस धात्री-पुत्रपर इतने दिनो बहुत दयापरवश थे और उसके साथ सरल व्यवहार करते थे। किसी समय घटनावश गुरुके ज्येष्ठ पुत्रका एक बहुमूल्य बाज-पक्षी उड़कर पायेन्दाखांके घर चला। पायेन्दाखाने उस बाज-पक्षीको खुद रखनेके लिये उत्सुक हो पिञ्जरेमे बन्द कर दिया। उस पक्षीको कैद करनेके कारण पायेन्दाखां कुछ अपदस्त हुआ था। पायेन्दाने गुरुसे छलना की और वह धीरे धीरे [illegible]

जाहिर दुश्मन हो खड़ा हुआ। पञ्जाबमें हरगोविन्दकी उपस्थितिसे उत्तेजना बढ़नेपर उनकी क्षमता मिटाने और शत्रुदमनकी इच्छासे पायेन्द खाँ बादशाहका सेनापति निर्दिष्ट हुआ। पायेन्दाखांने गुरुपर आक्रमण किया। लेकिन युद्ध-कुशल धर्म्मगुरुने उसके जवान भाईको अपने हाथों मार फिर युद्धमें जय पाई थी। इस युद्धमें एक सैनिक मनुष्यने उन्मत्तकी तरह गुरुपर आक्रमण किया था; गुरुने उसके अस्त्राघातसे आत्मरक्षाकर, उसे ।र रों तले गिरा दिया था; साथ ही ऊंचे स्वरसे कहा,—"तुमने जैसे पागलकी तरह मुझपर आक्रमण किया था, तलवार उसतरह व्यवहृत नहीं होती। मैंने तुम्हें जिसतरह निपातित किया है, उसीतरह शत्रु-ध्वंसके लिये तलवारका इस्तेमाल होता है।" गुरुके इस उपदेशपूर्ण वाक्यका अवलम्बनकर "दवीस्थानके" रचयिता इस विषयपर आये हैं,—"हरगोविन्द क्रोधपरवश हो किसीपर अस्त्राघात करते नहीं थे; वह मरे मनुष्यको उपदेश देनेके लिये बहुत विचारके साथ उसके मर्म्मपर आघात करते; कारण, शिक्षा-विधान करना ही गुरुका एकमात्र कार्य्य है।" *

---

* See the "Dabistan," ii, 275 (दवीस्थानकी दूसरी पुस्तकका २७५ पृष्ठ देखो)। खासकर पञ्जाबवालोंका आश्चर्य हाल इन देशवाले मुसलमान और सिखोंके देशीय विषयसे संग्रह हुआ है। पा खां, गुरुके एक शिष्यके घोड़ेके अपराधके सम्बन्धमें दबीस्थानका दूसरा हिस्सा—२८४ पृष्ठ देखने लायक है। (Dabistan ii, 284)

जान पड़ता है, इसके सिवा हरगोविन्दको और भी अनेकानेक विपदसङ्कुल और दुःसाहसिक काम पूरा करना पड़ते थे। इसी वजह वह समय समयपर घोर विपज्जालमें जड़ित होते थे, लेकिन उनके अनुचर सिख लोग हमेशा सुसज्जित रहते थे। धर्म्मविषयमें उनकी सुख्याति दिन दिन बढ़ने लगी। उनकी मृत्यु आनेसे पहले फारिस देशीय एक पुराने और विख्यात धार्म्मिक योगि पुरुष उनसे मुलाकात करने आये थे। * सन् १६४५ ई०में शतद्रुके तीरवर्त्ती कोरितपुर नामक स्थानमें हरगोविन्दने सुख-शान्तिसे इहधाम परित्याग किया। कालुर नामक स्थानके पहाड़ी राजाने हरगोविन्दको यह स्थान प्रदान किया था। इसके बाद गुरुभक्तिके निदर्शन स्वरूप सिखोंने आत्मत्यागकी भयावह मूर्त्ति धारण की। हरगोविन्दके एक राजपूत शिष्यने गुरुकी चिताग्निमें कूद कई कदम आगे बढ़ गुरुके पदप्रान्तमें आत्मसमर्पण किया। "जाट" जातीय एक शिष्यने भी ऐसा ही भयावह काम किया था। इन सब दृष्टान्तो द्वारा प्रणोदित हो और शिष्य भी ऐसे कामका अनुसरण करनेपर तय्यार हुए थे; लेकिन परवर्त्ती गुरु हररायने उनके ऐसे आत्मोत्सर्गमें बाधा दी। †

---

* The "Dabistan" ii, 280.

† देवीस्थानके लिखे अनुसार ऐसा ही प्रकट हुआ है। ('Deabistan', ii, 280, 281,) देवीस्थानके मूलपर ही कहा गया है, कि ३ य मुहर्रम, १०५५ हिजरी या सन् १६४५ ई०की १९वी फरवरीको हरगोसिन्दकी मृत्यु हुई है। मेकलमके

हरगोविन्दके समय सिखोंकी संख्या बहुत ज्यादा बढ़ी थी। अर्ज्जुनकी राजस्व-विषयक नीतिके फलसे और उनके पुत्रके अस्त्रधारण करनेके नामसे वृहत् साम्राज्यमें सिखोंका एक

"सारसंग्रह" (Malcolm Sketch P. 37) और फरष्टरके "भ्रमण-वृत्तान्त" ('Forster Travels' i 259)—दोनो ही ग्रन्थोंमें लिखा है, कि सन् १६४४ ई०में हरगोविन्दकी मृत्यु हुई। यही हाल सच्चा और सम्भवपर है। ऐसी गिनतीसे शायद उन्होने साफ समझा था, कि १७०१ संवत्, सन् १६४४ ई०के साथ बिलकुल बराबर है। लेकिन इस विषयमें उन्होने विचार नहीं किया, कि केवल सन् १६४४ ई०के पहले नौ महीनेसे १७०१ सम्वतके अन्तिम भागका मेल है। वर्त्तमान इतिहासकी और भी तारीखको गिनतीके सम्बन्धमें यही भ्रम दिखाई देता है। हाथको लिखी पुस्तककी आलोचना करनेसे मालूम हुआ, कि हरगोविन्दकी मृत्युके सम्बन्धमें भिन्न भिन्न तारीख बताई गई है;—देखा गया है, कि उनकी मृत्युका समय यथाक्रम सन् १६३७, १६३८ और १६३६ ई० ठीक ठीक है। लेकिन वहां कैसी वर्णना क्यों न रहे,—सभीमें एक गड़बड़ सिद्धान्त मिलता है। मोसन फानी कहते हैं,—उन्होंने १६४५ ई०में हरगोविन्दको जीवित देखा था; ('Dabistan', ii, 281) लेकिन इन सब विवरणमें उनकी मृत्युका समय कुछ पहले लिखा गया है। देशवासियोकी गिनतीमें भी हरगोविन्दके जन्मका समय १६५२ संवत्के प्रथम भागमें निर्दिष्ट होता है। १५६५ ई० मध्यभागके साथ यह एक है।

तक राज्य तयार हुआ। जब गुरु अपने सरल-विश्वासी मुसलमान भाईयोंके साथ कौतुक करते, या अभिमानके लिये उनका तिरस्कार करते, तब उनकी स्वभावसिद्ध गुप्त शक्ति प्रकाशित होती थी। एक दिन उनके बन्धुने कहा था,—"उत्तर रूमके राजाने दिल्लीके विषय और वहांके राजाका नाम और उनका वंश-विवरण जाननेके लिये एक दूत भेजा है, मैं बहुत ही ताज्जुबमें आया हूं, कि वह धार्म्मिक-प्रवर नरपति-श्रेष्ठ जहांगीरके नामसे अवगत नहीं हैं।" * लेकिन हरगोविन्द अपने वैचित्र्य जीवनमें प्रकृत कार्य्य भूले नहीं। सिखोंका दृढ़ विश्वास है,—नानककी आत्मा परवर्त्ती स्थलाभिषिक्त प्रत्येक गुरुकी आत्मामें प्रवेशकर उन्हें अनुप्राणित और नई शक्ति प्रदान करती है। † अपने शिष्योंके इस विश्वासको

---

* See the 'Dabistan', ii, 276, 277. (देवीस्थान द्वितीय पुस्तकका २७६, २७७ पृष्ठ देखो), मोसन फानी खुद ही इस प्रसङ्गमें मुसलमानबन्धु हैं। इस बातसे मालूम होता है, कि सिखलोग मुसलमानबन्धुको सचमुच ही आडम्बर-प्रिय समझते हैं। जिस समयकी बात कही जाती है, उस समय शाहेजहां बादशाह थे। देवीस्थानके अनुदित खण्डमें बत्सनीके मध्यस्थित अंशमें जहांगीरके बदले शाहेजहांको ही बातें लिखी हैं। सन् १६२८ ई०में जहांगीरकी मृत्यु हुई। ऐसा जान पड़ता है, कि हरगोविन्दके साथ मोसन फानीका परिचय, गुरुके जीवनके अन्तिम भागमें या १६४० ई०के बाद हुआ था।

† Compare the 'Dabistan', ii, 281.

और सम्मान दिखानेके लिये हरगोविन्द साधारणतः अपनेको नानकके नामसे ही अभिहित करते थे। हरगोविन्द जितना दर्शन-विज्ञान जानते थे और जितना ज्यादा उन्होंने ज्ञान पाया था, इससे उन्होंने समयके प्रचलित मतोंको ही ग्रहण किया। उनके मतसे,—ईश्वर अद्वितीय, विश्वसंसार इन्द्रजालमय,—सारतत्त्वहीन वाह्यासक्ति मात्र है। इसतरह वह ज्यादातर नास्तिक मत ग्रहण करनेमें प्रवृत्त हुए थे और इस विश्वब्रह्माण्डको उन्होंने ईश्वरका प्रतिकृति समझा था। तब भी, ऐसे विचारने उनके मनमें ज्यादा दिनों जगह नहीं पाई, या उनका हृदय उसमें मग्न नहीं हुआ। एक दिन एक ब्राह्मणने ऐसा कह उनका तिरस्कार किया था,—"यदि विश्वसंसार और ईश्वर एक ही है, तो यह जो थोड़ी दूरपर गदहा चरता फिरता है, गुरु होकर भी वह इस गधेके बराबर हैं।" ब्राह्मणके इस भर्त्सनावाक्यपर धीर-सहिष्णु हरगोविन्द केवल हंस दिये थे। * वह सोचते थे,—विवेक और बुद्धि हमारी एकमात्र परिचालक है। एक आदमीने प्रचार किया था, कि भाईके साथ बहनका विवाह ईश्वर-निषिद्ध है। उसके सम्बन्धमें गुरुका जो मत था, उस मनुष्यके प्रति गुरुके उत्तरसे ही वह प्रकट होता है। उन्होंने कहा था,—यदि परमेश्वर द्वारा यह मना है, तो यह गर्हित कार्य्य सम्पन्न करना मनुष्य लिये सुकठिन है। † हरगोविन्द पौत्तलिक धर्म्मसे घृणा करते थे,—समय समयपर

---

* Compare the 'Dabistan', ii, 277, 279, 280.

† The 'Dabistan', ii, 280.

वह नानकप्रवर्त्तित नीतिपद उपदेशोंको भी परित्याग करते थे। उनका ऐसा व्यवहार निम्नलिखित बातोंसे विचारा जा सकता है,—एक दिन उनके एक शिष्यने एक प्रतिमाकी नाक तोड़ दी थी। निकटवर्त्ती शासन-कर्त्ताओंने गुरुके पास उस शिष्यके नामपर अभियोग लगाया। सिख-शिष्य गुरुके पास आया। गुरुके पास उपस्थित हो अपराधीने दोष अस्वीकार किया, उसने निन्दा-स्तुतिके साथ कहा,—"यदि ईश्वर वहाँ उपस्थित हो उसके विरुद्ध गवाही दे सकें, तो वह अपनी इच्छासे प्राणदान करनेपर तय्यार है।" राजाने कहा,—"हे निर्ब्बोध। ईश्वर कैसे बात करेंगे।" राजाकी इस बातपर सिखने उत्तर दिया,—"अब साफ मालूम हो गया, कि कौन निर्ब्बोध है। ईश्वर यदि अपनी आत्मरक्षा कर नहीं सके, तो कैसे वह तुम्हारा उपकार करेंगे,—कैसे वह तुम्हें शत्रुके हाथोंसे बचायेंगे?' †

हरगोविन्दके ज्येष्ठ पुत्र गुरुदत्तने बहुत ख्याति-प्रतिपत्ति पाई थी, लेकिन पिताकी मृत्युके पहले ही वह मृत्युमुखमें पतित हुए। उनके दो पुत्र थे; उनमें एक सिखोंके गुरुपदपर वरित हुए थे। * यह नवाभिषिक्त गुरु हरराय कुछ दिनों

---

† The 'Dabistan', ii, 276.

* गुरुदत्त या गुरुदित्तके सम्बन्धमें अनेक आश्चर्य बातें देबीस्तानमें लिखी हैं। (See "Dabistan," ii, 281 282) उनकी स्मृति इस समय भी बड़े स्नेहके साथ रक्षित है। उनके शारीरिक सामर्थ्य और नैपुण्यके विषयमें अनेक बातें प्रचलित

किरीतपुरमें हीर । जब उन्होंने कालूरके राजाको अधीनता-पाशमें आवद्ध करनेके लिये उनके विरुद्ध सैन्य समावेश किया,

---

है। शतद्रु किनारे कीरितपुर नामक स्थानमें उनका समाधि-क्षेत्र है,—इस समय वह सिखोंका एक तीर्थ स्थान है। उनकी मृत्यु सम्बन्धी एक गप है, इस गपसे साफ मालूम होता है, कि सिखगुरु लोग अलौकिक क्षमताका नाटक रच साधारणको भक्ति और श्रद्धाके पात्र होनेसे इच्छा करते थे। गुरदित्तने एक दरिद्र आदमीकी स्तव-स्तुतिसे विचलित हो उसकी एक मरी गौको प्राणदान किया था। पुत्रकी इसतरह लोगोंके श्रद्धाभाजन होनेकी चेष्टा देख गुरदित्तके पिता खफा हुए थे। गुरदित्तने इसपर कहा था, "ईश्वरको एक जीवनकी आवश्यकता थी। मैंने जब इस जीवनकी रक्षा की है, तो मैं उन्हें अपना जीवन प्रदान करूंगा।' ऐसा कह गुरदित्तने जमीनमें लेट जीवन परित्याग किया। हरगोविन्दके कनिष्ठपुत्र अतुलरायके सम्बन्धमें भी एक ऐसी ही गप प्रचलित है। सुना गया है, कि उन्होंने एक शोकातुरा विधवाके मरे लड़केको जीवनदान किया था। उनके पिताने भी उनका तिरस्कारकर कहा था,—गुरु लोग पुण्य और पवित्रतासे क्षमता प्रकाश करेंगे। इन जना-नको किसी किसीने बालकके नामसे अभिहित किया है। गुरुदित्तने जो कहा था, वही उत्तर दे इन बालकने भी प्राणत्याग किया था। अन्तसरमें उनकी समाधि बनी; यह स्थान इस समय सिखोंका एक पवित्र तीर्थ स्थान है।

गुरदित्तके कनिष्ठ पुत्रका नाम धीरमल था। तदनन्तर

जो पहलेका वासस्थान छोड़ पूर्व और सीरमूर जिलेमें रहना ही उन्होंने अच्छा समझा। * इस अन्तिम स्थानमें उन्होंने कुछ दिनों शान्तिसे वास किया। इसी समय भारत-साम्राज्यके लिये दारा-शिकोह और उनके भाइयोंमें विवाद उपस्थित हुआ। दाराका पक्ष अवलम्बनकर उस विवादमें साथ देनेसे गुरु हररायकी शान्ति भङ्ग हुई। कोई खास कारण नहीं मिलता, कि किस लिये उन्होने दाराका साथ दिया था। युद्धमें दारा परास्त हुए,—उनकी साहाय्यकारी सैन्यने उनके विरुद्ध अस्त्रधारण किया; हरराय अपने ज्येष्ठ पुत्रको जामिन-स्वरूप प्रदान करनेपर बाध्य हुए। हररायके पुत्रने बादशा-हसे बहुत सम्मान पाया था। बादशाहने उन्हें शीघ्र ही मुक्ति दी। सुना गया है, कि कूटनीतिज्ञ औरङ्गजेबके ऐसे अनु-ग्रहसे हररायके मनमें ईर्ष्याका उद्रेक हुआ था। † हररायको

दोआबके करतारपुर नामक स्थानमें धीरमलके वंशधर लोग इस समय भी रहते हैं।

* See Dabistan, ii. 282. जहांकी छाया दी गई है, उसका नाम "टकसाल" या "टांसाल" हो सकता है। वह अम्बेलाके उत्तर अङ्गरेजोंके वर्त्तमान प्रधान अड्डा कसौलीके पास है।

मोसन फानीके विख्यात ग्रन्थमें सिख-इतिहास इसी अंशतक लिखा है।

† केवल देशीय विवरणपर निर्भर करके ही दाराके लिये गुरुके इस पक्षपातित्वका विषय लिखा गया है। दाराका

जीवन-लीला थोड़े ही में पूरी हो गई। सन् १६६१ ई॰में उन्होंने मानवलीला सम्वरण की। * उनका धर्म्मशासन बहुत ही धीर और गम्भीर था; यद्यपि उन्होंने कठोरता नहीं पकड़ी, तथापि वह लोगोंके बहुत श्रद्धा और भक्तिके पात्र थे। गुरुके अनुगृहीत सिक्खोंके वंशधर 'भाई' या साहबजादा-गण जितने ही हररायको किसी न किसी प्रिय और विश्वस्त शिष्यके वंशधरके नामसे परिचय देते हैं। † सिखोंकी अन्यान्य जो शाखा-

---

मानसिक स्वभाव और धर्म्मनीतिकी आलोचना कर देखनेसे वह पूरी तरह सम्भवपर जान पड़ता है।

* सभी प्रसिद्ध लेखक हररायकी मृत्यु समयके सम्बन्धमें एक मतावलम्बी हैं, लेकिन एक विषयमें उनकी मृत्युका साल सन् १६६१ ई॰ठीक हुआ है। कहते हैं, गुरुने सन् १६१२ ई॰में जन्म लिया: कोई कहते हैं—सन् १६२८ ई॰में उनका जन्म हुआ।

† इनमें भाई लेक्के दलभुक्त केवल वंशके प्रतिष्ठाता 'भाई भागटु' बहुत प्रसिद्ध थे। पारिस्की नमीन्दगीमें सम्पत्ति जब्त होनेसे अङ्गरेज-प्रवर्तित प्रथाके कारण हालसे इस वंशकी कुछ गौरवहानि हुई है। शतद्रु और यमुनाके मध्यस्थ 'कैथाल' नामक स्थानके सम्भ्रान्त "भाई" लोगोंके पूर्वपुरुष धर्म्मसिंह हररायके एक शिष्य थे।

पूर्वपुरुष गुरुके अनुचर था सहचर हों या न हों, आजकल बहुत पुण्यवान सिख-योगी मात्र ही "भाई" उपाधिसे भूषित होते हैं। दूसरी ओर "बेदी" और "सोधी" लोग प्रायः

सम्प्रदाय प्रचलित आचार-पद्धतिकी अपेक्षा ज्यादा शुद्ध नियमावलीका अनुसरण करता है, वह सम्प्रदाय भी गुरुके इस शान्तिपूर्ण धर्म्मशासन और प्राधान्यके समय तय्यार हुआ था।*

हरराय़के दो पुत्र थे। बड़ेका नाम रामराय और छोटेका नाम हरिकृष्ण था। हररायकी मृत्युके समय बड़े पुत्रकी उम्र १५ सालकी थी, छोटेकी उम्र केवल छः वर्षकी थी। रामराय दासीगर्भजात थे, सुतरां हररायकी मृत्युके समय छोटे

जातीय नामसे ही सन्तुष्ट हैं, इस नामसे ही वह अन्यान्य सम्प्रदायसे अपने स्वातन्त्र्यकी रक्षा करते आते हैं। "बेदी" लोग—"बाबा" या "पिता" के नामसे उक्त होते हैं। और जगह "सोधो" लोग गोविन्द और रामदासके प्रतिनिधिरूपमें परिचित हो अन्यायपूर्व्वक गुरु उपाधि लेनेके अभिलाषी हुए थे।

* इस सम्प्रदाय-समष्टिके "सुट-ह्री" या "सुथरा-साही" लोग ही विशेष प्रसिद्ध और उल्लेख-योग्य हैं। "सुच्चा" नामक एक ब्राह्मण उसके प्रतिष्ठाता हैं। लाहोरकी दुर्ग-प्राचीरके नीचे उनका एक "स्थान-डेरा" या आवास-स्थान है। (Compare Wilson, As. Res, xvii, 836) उनका नाम या निर्व्वाचन साधारणतः पवित्रता-व्यञ्जक है। फातू नामक हररायके और एक शिष्य क्षत्रिय जातीय पण्य-व्यवसायी थे, फातूने खुद ही "भाई पीरू" नाम ग्रहण किया था, या उन्होंने उपाधिस्वरूप पाया था। बहुत लोग समझते हैं, कि यह पुरुष "उदासियोंके" प्रकृत स्थापन कर्त्ता हैं।

पुत्रको ही सिखोंके गुरुपदपर बैठाया गया। इसके फलसे दोनो पुत्रोंमें गुरुतर विवाद उपस्थित होनेपर बादशाहपर उस विषयके मीमांसाका भार अर्पित हुआ। किसी किसी जगह लिखा है, औरङ्गजेब सिखोंके गुरु बनानेकी स्वाधीनतामें हस्तक्षेप करनेमें अनिच्छुक थे। लेकिन प्रचलित कहानी उल्लिखित हुआ है, कि एक ही तरह एक ही पहनावेसे सज्जित कुछ रमणियोमें उन शिशुने जिस बुद्धिमानीके साथ बादशाहकी बेगमको चुनकर निकाला था, उससे बादशाह बड़े ताज्जुबमें आये थे। उन्होंने घोषणा कर दी थी,—गुरुपदपर हरिकृष्णका इख्तियार ही अवधारित हो। उसके अनुसार हरिकृष्ण ही सिखोंके नेता और गुरुपदपर वरित हुए। लेकिन यह शिशु धर्मगुरु दिल्ली परित्याग करनेसे पहले वसन्तरोगसे आक्रान्त हो सन् १६६० ई० में उस नगरमें ही मृत्यु-मुखमें पतित हुऐ। *

सुना गया है, कि हरिकृष्णका जीवन-दीप जब निर्वापित होता आता था, तो उन्होंने इशारेसे समझा कर कहा, कि उनके परवर्ती सिख गुरु विपाशा नदी किनारे बाकोवालके

---

* Compere Malcolm 'Sketch' P. 38 and Forster 'Travels., i, 299 :—(मेलकमके "सारसंग्रह" का ३८ पृ० और फरष्टरके 'भ्रमण वृत्तान्त' के प्रथम पुस्तकका २९९ पृष्ठ मिलाकर देखो।) एक देशीय विवरणमें हरिकृष्णकी मृत्यु सन् १६६६ ई० में निर्दिष्ट हुई है, लेकिन सन् १६६४ ई० ही सर्वसम्मत उनकी मृत्युका ठीक समय है। सन् १६५६ ई० में उनका जन्म हुआ था।

निकटवर्ती "बाकाला" गांवमें दिखाई देंगे। इस गांवमें हरगोविन्दके बहुत आत्मीय स्वजन रहते थे। उनके पुत्र तेगबहादुर बहुत दिनोंतक देश घूमनेपर गङ्गाके तीरवर्ती पटनेमें कुछ दिनों रहे थे। इस समय वह "बाकाला" गांवमें रहते थे। रामराय गुरुपदका दावा करते थे, लेकिन उस समय भी वह बहुत दल बना नहीं सके। सुतरां तेगबहादुर ही सबकी रायसे सिखोंके गुरुपदपर वरित हुऐ, बड़े समारोहसे उनकी अभिषेकक्रिया सम्पन्न हुई। सुना जाता है, कि वह पितृ-तलवारके धारण करने लायक नहीं थे, उनके कार्य्यकलापमें भी उनकी ओर कितने ही लोगोंको सन्देह होता था; सुतरां रायरामकी धूर्त्तता और प्रतारणासे बहुत थोड़े दिनोंमें ही उनका जीवन और प्रभुत्व विपदजालमें जड़ित हुआ। * प्रतारक और

* Compare Malcolm, 'Sketch', P. 38, and Forster, "Travels", i, 299, and Browne's 'India Tracts' ii, 3, 4, देशी हस्तलिखित पुस्तकपर निर्भर करके ही तेगबहादुरके पिताकी तलवार ग्रहण करनेमें असम्मतिका विषय लिखा है। इस विवरणसे और भी एक गप है, कि उन्होंने ऐसा श्रेष्ठत्व पानेके पहले एक विशेष काम पूरा किया, उसके ही फलसे वह गुरुपदपर वरित हुए। मुक्कनशाह नामक एक शिष्यने "बाकाल" गांवमें जानेके समय धर्म्मगुरुको कुछ पूर्णोपहार देनेकी इच्छा की। लेकिन कितने ही आदमियोंके उपहारका दावा करनेपर मुक्कनशाह बिलकुल हतबुद्धि हो गये। उनके उपहारका मूल्य कुल ५२५) रुपये था। केवल मुक्कन ही उस उपहारका मूल्य जानते थे। मुक्कनशाहने उस समय प्रत्येक

शान्तिभङ्गकारी प्रभृतिके अपराधमें अभियुक्त हो वह दिल्लीमें आये। जयपुरके राजाने उनका प्रतिवाद हृदयसे सुना। इन राजपूतने उनके पक्षका समर्थनकर वादानुवाद किया था, कहा था,—ऐसे योगिपुरुषोंके लिये राजत्व-पदके अभिलाषकी अपेक्षा तीर्थ-पर्य्यटन ही अच्छा है और भावी बङ्गालपर आक्रमणके समय राजा गुरुको साथ लेंगे। * तेगबहादुर

मनुष्यको एक एक रुपया देनेका सङ्कल्प किया;—उन्होंने मनमें विचारा, कि जो मनुष्य सबके अन्तमें उपहार लेगा, उसे ही वह आशुउपलब्धि द्वारा गुरु समझेंगे। तेगबहादुरके बाकीपर दावा करनेसे वह गुरुपदपर वरित हुए थे,—इत्यादि।

* फरस्टर और मेलकम दोनोंने ही इस देशके विवरणका अनुसरण किया है। जिन राजाने तेगबहादुरको आनुकूल्य किया था और तेगबहादुर जिनके साथ बङ्गालमें युद्धके लिये गये थे,—उन्हें उन्होंने जयसिंह नामसे अभिहित किया है,—वीरसिंह—वही कृपालु राजा थे। टाड ('Rajastan', ii, 355) कहते हैं, जयसिंहके पुत्र रामसिंह पहले आसाम गये; लेकिन अपने कामका कोई विवरण उन्होंने नहीं दिया। आजकल जैसे सिख लोग रणजितसिंहके सिपाहियोंके नामसे परिचय देते हैं, उसीतरह बहुत पहले मरे हुए एक विख्यात मनुष्यके वर्त्तमान समयमें जीवित रहनेका परिचय देना—भारतवर्षमें आश्चर्यका विषय नहीं है। यह सही जान पड़ता है, कि पिता "मिरज़ा राजा"की सुख्यातिके चारों ओर फैलनेसे रामसिंहका नाम कुछ लोप हो गया था। इन दोनों प्रमाणोंसे

राजाके साथ पूर्व्व देश गये थे। वह फिर कुछ दिन पटनेमें रहे। एक इतिहासज्ञ पण्डित कहते हैं, कि इसके बाद आसामके शासनकर्त्ताओंके विरुद्ध जिस युद्धकी सजावट हुई थी, उसमें जीतनेकी इच्छासे तेगबहादुरने फिर सिखसैन्यका साथ दिया था। वह ब्रह्मपुत्र नदीके किनारे ध्यानमग्न हुए। सुनते हैं, कामरूपके राजाके मनमें विश्वास उत्पन्नकर तेगबहादुरने राजाको अपने धर्म्मसे दीक्षित किया था। *

कुछ दिनोंके बाद तेगबहादुर फिर पञ्जाब लौट आये; उन्होने शतद्रु नदीके किनारे कुछ जमीन खरीदी। यह स्थान इस समय "मखोवाल" नामसे अभिहित है; यह जमीन उनके पिताके अति प्रिय मनोरम वासस्थान कीरितपुरके नजदीक है। लेकिन यहां आकर भी वह रामरायकी वैरिता और प्रभुत्वमें हाथ अड़ा न सके। सिक्खोंकी प्रचलित कहावतसे मालूम

---

* आखिरी हिस्से में समसामयिक विख्यात ज्योतिर्व्वित् सवाई जयसिंह और पण्डितोंके प्रतिपालक राजा जयसिंह,—इन दोनो नामोंको आपसमें मिला, सिख ऐतिहासिक लोगोंने झगड़ेकी सृष्टि की है। इस विषयमें मेलकमने (Malcolm, 'Sketch", p. 37.) सम्भवतः फरस्टरका अनुकरण किया है। मेलकम कहते हैं,—उस समय तेगबहादुर दो सालके लिये कैदमें बन्द थे।

* हाथकी लिखी "गुरुमुखी" नामक संक्षिप्त विवरणके अनुसार तेगबहादुरकी जीवनीको आखिरी बातोंका दो अंश लिखा गया है।

हुआ है,—इन धार्म्मिक प्रवर धर्म्मोपदेष्टाको और एकबार बादशाहका अभियुक्त होना पड़ा था। यह कहना आधिक्य न होगा, कि तेगबहादुर पितृ-पदाङ्कके अनुसरणमें हासिल सिखा नहीं सके। कुछ दिनोंके बाद तेगबहादुरने शतद्र और हांसीके मध्यवर्त्ती जङ्गली हिस्सेमें अपना गुप्त वासस्थान ठीक किया। उस समय वह लूट और डकैती द्वारा शिष्योंकी और अपनी जीविका निर्व्वाह करते थे *। एक हिसावसे वह इन लोगोंके अपरिचित हो पड़े। विश्वस्त सूत्रसे मालूम हुआ, कि आदम हाफिज नामक एक मुसलमानधर्म्मानुरागीसे तेगबहादुरने मित्रता की। उनके यह मुसलमान दोस्त धनी मुसलमानोंसे कर संग्रह करते थे, तेगबहादुर भी उस समय अवस्थापन्न हिन्दुओंपर कर लगा अर्थ संग्रह करने लगे। वह लोग दोनो हो भागे अपराधियोको आग्रहके साथ आश्रय प्रदान करते थे। कुछ दिनोंमे ही उनका प्रताप और आधिपत्य फैल गया, देशकी उन्नतिके लिये वह लोग खास विघ्न बनकर खड़ हुए। इसके बाद उनके विरुद्ध बादशाह एक दल सैन्य भेजनेपर बाध्य हुए। युद्धमें तेगबहादुर और उनके मुसलमान

---

* सैरुलमुतखिरीनके लेखकने (Seiyol Mutakhereen, i, 112, 113) तेगबहादुरकी इस डकैती वृत्ति और विद्रोह-सूचक कार्य्य-कलापकी बातें लिखी हैं। हाथकी लिखी साधारण किताबोंमें भी इन अभियोगकी बातें लिखी हैं, लेकिन उनकी सफाईके सम्बन्धमें शुबहा पैदा होता है। कहलूरके राजाको गुरुने खोवालके मूल्यस्वरूप ५०० रुपये प्रदान किया।

दोस्त पराजित और कैद हुए। बादशाहने उन मुसलमान फकीरको निर्वासित किया और सिख-गुरु तेगबहादुरकी हत्याकी तय्यारी की।

दिल्ली जानेके समय तेगबहादुरने अपने पुत्रको बुलाया। हरगोविन्दकी तलवार द्वारा पुत्रको भूषितकर उन्हें ही सिखोंके गुरुपदपर अभिषिक्त कर गये। जानेके समय उन्होंने अपने पुत्रसे कहा,—दुश्मन उन्हें वध करने ले जा रहे हैं; उनकी हतदेह कुत्ते भक्षण करने न पावें। अन्तमें बदला और प्रतिहिंसाकी उपयोगिता समझा, पुत्रको उन्होंने आदेश दिया,—"बदला और प्रतिहिंसा ही पुत्रका एकमात्र कर्त्तव्य कार्य्य है।" इस प्रसङ्गमें और भी कहा गया है, कि तेगबहादुरके बादशाहके सामने आनेपर, कुछ अवमानना और अविश्वासके साथ बादशाहने उन्हें धर्मका ऐश्वरिकत्व प्रमाणके लिये अलौकिक कार्य्य दिखानेकी आज्ञा दी थी। लेकिन तेगबहादुरने जवाब दिया,—"ईश्वरकी उपासना ही एकमात्र कार्य्य है।" तब भी, वह एक काम करनेपर तय्यार हुए। उन्होंने एक पत्र लिख दिया; समझा दिया, कि जिसके गलेकी चारो ओर यह मन्त्र रहेगा, तलवारके आघातसे वंधा उसका गला अलग न होगा। इसके बाद उन्होंने अपने गलेकी चारो ओर उसे बांध हत्याकारीके सामने मस्तक झुकाया। लेकिन तलवारके एक दो आघातसे शिर अलग हो गया। कुसंस्काराच्छन्न विचारपति और तमाशाई सभी ताज्जबमें आये। अन्तमें देखा गया, कि कागजमें यह लिखा है,—"शिर दिया, सार नहीं दिया', मैंने मस्तक दिया है, लेकिन कुछ गूढ़ तत्त्व नहीं

दिया। आखिर उनका जीवन नष्ट हुआ; लेकिन उनका दो नवशक्ति और दिव्यज्ञान संसारमें मौजूद रहा। असभ्य और इन्द्रजालप्रिय जातिका उपाख्यान ऐसा ही है। तब भी, इसमें कोई सन्देह नहीं, तेगबहादुर सन् १६७५ ई०में जल्लादके हाथों मारे गये और क्रूर प्रकृति कुसंस्काराच्छन्न औरङ्गजेबने दिल्लीके राजपथपर सबके सामने उनकी मृतदेहकी और अवमानना दिखाई। *

तेगबहादुर अपने पिताकी तरह नम्र या पुत्रकी तरह उन्नतमना नहीं थे। वह कष्ट-सहिष्णु और रूढ़-प्रकृति थे। जो हो, उनके दृष्टान्तसे नानकके शिष्यलोग साहसी, रणकुशल और धर्म्मनिष्ठ जातिमें बदल गये थे। पिताकी तलवारके प्रति वह बहुत ज्यादा भक्ति दिखाते थे। शिष्योंको उन्होंने अपने अस्त्रधारी प्रतिबिम्बकी आज्ञा माननेका उपदेश दिया था। उनके ऐसे व्यवहारसे प्रमाणित होता है, कि वह धर्म्मयाजककी शक्तिकी अपेक्षा राजशक्तिको श्रेष्ठ समझते थे। वस्तुतः उस समयसे सिख-गुरुओंने उनकी शक्तिकी पर्यालोचना करना आरम्भ की, अनुचर लोग भी गुरुओंको ही "सच्चा बादशाह"—यानी "यथार्थ राजा" कह उनके आज्ञानुवर्त्ती होनेमें प्रवृत्त

---

* इस सम्बन्धमें सभी विवरण एकमतावलम्बी हैं, कि तेगबहादुर बहुत दृष्टांतरूपसे और नाथभावसे मारे गये। सन् १६७५ ई०के शीतमें (कोई कोई कहते हैं, 'मार्गशीर्ष' महीनेमें) उनकी मृत्यु हुई। यहाँ गणना मध्य [illegible] इनकी जन्मका साल कहीं १६१८ ई० और कहीं १६२१ ई० है।

हुए। फलतः शिष्योंने समझा था, कि गुरु लोग ही सच्चे राजा हैं, कारण, वह अस्त्र-साहाय्यसे राजशासन नहीं करते; वह न्याय-शक्तिसे शासनदण्ड चलाते हैं; वह धर्मपथ दिखानेवाले और मुक्तिदाता हैं। और सब राजा केवल सांसारिक क्रिया-कलापको सच्चा समझते हैं। सिखोंकी ऐसी बातें सब हालतमें ही उपयोगी हैं। इन बातोंकी गूढ़ कार्यकारितासे मुगल-बादशाहगण हतबुद्धि हुए थे; उनकी मानसिक शक्ति बहुत घट गई थी। एक विचक्षण मुसलमान ग्रन्थकारने उदाहरण द्वारा जाहिर किया है, कि तेगबहादुरने कई हजार सिपाहियोंके नायक व र जशक्ति प नेकी इच्छा की थी। *

---

* जिनकी बात लिखी गई है, वह सेरुलमुताखरीन (Seir-ool Mutakhereen, 1, 112) के ग्रन्थकर्त्ता सय्यद गुलाम हुसेन हैं।

ब्राउन अपने "इण्डिया ट्राक्टसमें" (Browne India, Tracts ii, 2, 3,) लिखते हैं,—तेगबहादुरने "यथार्थ राजा उपाधि धारण की, परन्तु उनकी वंशमर्यादा और गरिमा-सूचक "बहादुर" की पदवी ग्रहण करनेसे बादशाह क्रुद्ध हुए। उनकी हत्या करनेके लिये औरङ्गजेबका दृढ़सङ्कल्प इसी कारण था। वक्ष्यमाण वर्णनानुसार गुरु अलौकिक शक्तिसे बहुत घृणा करते थे। "सच्चा बादशाह" शब्दके सम्बन्धमें इस अध्यायका आखिरी हिस्सा देखने लायक है।

पिताकी तलवार लेनेमें तेगबहादुरकी असम्मति और अपने पद:शक्ती पूजाके बारेमें आदशप्रचार, यानी अपने अन्त:शर-

तेगबहादुर जब राजदण्डसे दण्डित हो मारे गये थे, उनके पुत्र गोविन्दकी उम्र पन्द्रह सालकी थी, सत्य कर्त्तव्यानुरोध, प्राणदाता गुरुका आखिरी उपदेश और भयान मृत्यु,—गोविन्दके दिलमें गंभीर स्थायिरूपसे बैठ गई पिताका प्राणदण्ड और अपने देशकी शोचनीय अवस्था विषय विचारते विचारते वह मुसलमानोंके चिरन्तन दुश्मन गये; वह विश्वस्त हिन्दुओंको एक अभिनव बहादुर जाति परिणत करनेकी महत् कल्पनासे अनुप्राणित हुए। उस सम गोविन्दकी बहुत बालावस्था थी, ज्यादातर उनके अनुचरों बादशाह सन्देह करते थे; सिखोंमें भी ऐसे कितने ही द थे; जो तेग बहादुरके पुत्रसे दुश्मनी करनेमें कुण्ठित हो नहीं थे। कईएक अनुरक्त शिष्योंकी ऐकान्तिकतासे मृ गुरुकी छिन्न देह फिर पानेपर गोविन्दने पिताकी अन्त्येष्टि-क्रिय सम्पन्न करनेका सुयोग पाया; इसतरह मृत आत्माकी सद् गति हुई और उनके आत्मीय लोगोंका माङ्गलिक कार्य्य पूर हुआ। * गोविन्दने कुछ दिन यमुनाके दोनो किनारोंवाले गिर

धारियोंकी आज्ञानुवर्त्ती हानेकी, अनुज्ञा—यह सब बात दश- प्रचलित विवरण की सत्यतापर निर्भरकर लिखी गई हैं।

* अपवित्र घृणित मेहतर जातिके कई आदमी तेगबहादु रकी विच्छिन्न देहको दिल्लीसे लाने के लिये भेजे गये थे। मङ्गन- शाह नामक सिख आदमीने मृत गुरुको गुप्त रूपसे माना था, उनकी बहुत कुछ चेष्टासे शिष्यलोग गुरुकी मृतदेह लानेमें समर्थ हुए थे।

गुरु गोविन्दसिंह

पहाड़ी प्रदेशमें जा निर्भय वास किया। वहां कई साल केवल बाघ और चीतेके सूअरके शिकारमें लग रहे। उन्होंने फारसी भाषा सीखी और जिन किताबोंमें जातीय माहात्म्य वर्णित हैं, उन्हें मनोभाण्डारमें नञ्चित कर रखा। †

प्रायः बीस वर्ष तक गोविन्दने इस तरह गायब रह समय बिताया था। * यौवन-समागमसे ही उनके भावी महत्त्वका

---

† गोविन्दकी पहली उम्रमें निर्ज्जनवास और कार्य्यकलापके सम्बन्धमें सब जगह ही एक तरहका हाल दिखाई देता है। लेकिन फरष्टरकी (Forster, "Travels" i, 3o1) "गुरुमुखी" वर्णना पढ़नेसे मालूम होता है, कि पहले गोविन्द पटनेमें आये; वहां कुछ दिनों रहनेके बाद वह श्रीनगरके पहाड़ी प्रदेशोंमें चले गये।

* अङ्गरेज या भारतीय ऐतिहासिकगण कोई सच्चा समय निरूपण करनेमें समर्थ नहीं हुए। तारीख और घटनावलीके अन्दाजेसे जान पड़ता है, —कि सन् १६९५ ई०में या पैंतीस साल-तककी उम्र न होनेतक गोविन्दने धर्म्मगुरुरूपसे नया काम ग्रहण नहीं किया। मेलकमने एक सिख-ग्रन्थकारकी बात लिखी है। (Malcolm, "Sketch,' P. 186 note) इन सिख-ग्रन्थकारके अन्दाजसे सन् १६९६ ई०में गोविन्दने धर्म्मसंस्कार आरम्भ किया। लेकिन इन सब मतोंके खण्डनके लिये, गोविन्दकी जितनी ही बातें या हस्तलिपि उद्धृतकर देखनेसे मालूम होता है, कि मृत्युके कुछ पहले गोविन्द जबसे भारतवर्षके दक्षिण प्रदेशमें गये थे, तबसे उनका धर्म्मसंस्कार आरम्भ हुआ।

लक्षण देख नानकको शिष्यमण्डलीने उनका साथ दिया। अब वह सिखोंके गुरु और नेतृपदपर वरित हुए। रामरायके शिष्योंके अपने गुरुकी उपेक्षाकर एक विरुद्ध मतावलम्बी सम्प्रदायमें बदल जानेसे रामरायकी क्षमता घट गई। चारो ओरके नरपतिगण गुरुका प्राधान्य बढ़ाने लगे; उन्होंने समझा,—गुरुको कोई उच्चाभिलाष नहीं है; उनके सम्बन्धमें किसी आशङ्काका भी कोई कारण नहीं देखा। पिताको शोचनीय मृत्युकी बात और औरङ्गजेबका निष्ठुर व्यवहार, गोविन्दके मनमें हमेशा जागता रहा। तरह तरहके शास्त्राध्ययन और ईश्वर-चिन्तासे गोविन्दकी मानसिक वृत्ति समुन्नत हुई थी, बहुदर्शितासे उनकी विचारशक्ति परिस्फुट हुई थी। गोविन्दने अब पिताकी अपमृत्युके और स्वदेशके उद्धारके लिये प्रतिहिंसा-वृत्ति दिखानेका अभिप्राय किया। नवशक्तिके बलसे उनकी उत्तेजना बढ़ी; वह अपने शिष्योंमें फिर नया प्राण सञ्चार करनेके लिये तय्यार हुए। उन्होंने नानक-प्रवर्तित सर्व्वसम्मत धर्म्मशिक्षाका नया संस्कार साधनकर उसमें ज्यादातर नटाक और उद्देश्य-साधनोपयोगी शक्ति-सञ्चार करनेका सङ्कल्प किया। प्रबल-शक्ति-सम्पन्न साम्राज्यमें रहकर भी वह उस साम्राज्यके ध्वंससाधनमें कृतसङ्कल्प हुए। सामाजिक अवनति और धर्म्मविषयक कुसंस्कार प्रभृतिमें भी उन्होंने आचार-पद्धतिकी सरलता, उद्देश्यकी अभिन्नता और दुर्दमनीय शिष्योत्साहको दिखाया। *

* अधिक [illegible] गोविन्दके [illegible] सम्बन्धमें [illegible]

गोविन्द बलवीर्य्यमें अद्वितीय, शारीरिक गठनमें अतुलनीय और उत्साहमें अटल थे। उन्हें अविवेचक उद्देश्यविहीन,

---

बातें देखी गई हैं,गोविन्दके बारेमें भी वैसी ही बातें जान पड़ती हैं,—पिताकी मृत्यु का बदला लेनेकी इच्छासे ही वह प्रधानतः मुसलमानोंके विरुद्ध अस्त्रधारण करनेपर बाध्य हुए थे। लेकिन गोविन्द और कारणोंसे भी ऐसे दुःसाहसिक काममें प्रवृत्त हुए। यह अस्वीकार करना किसी तरह उचित नहीं, कि वह सब कारण न्यायसङ्गत थे। वह उत्कट वध करनेकी इच्छासे अपने उस महत् उद्देश्यके सफल करनेमें यत्नपर हुए थे। वस्तुतः उत्पीड़ित होनेपर ऐसी इच्छा सबमें ही उत्पन्न होती है। पहले यूरोपियनोंमें जैसी प्रतिहिंसा-वृत्ति प्रबल थी; उस समय भारतवर्षमें भी वह भाव लोगोंके दिलमें जागता गया। यहांतक, कि एक प्रशस्त खृष्टधर्म्मानुरागी "हेडस" की छायाको प्रतिहिंसा वृत्तिके चरितार्थके कारण कोई भर्त्सना न कर, इस भावसे ही वह निर्दोषिताका प्रमाण देते हैं। नश्वर मनुष्यकी इस विषयमे अपनी खुद सहानुभूति इस समय भी संसारमें वर्त्तमान है,—

> प्रिय, पथ प्रदर्शक ! तुम ध्रुवतारा।
> पूछता हूं, प्रतिशोध क्या नहीं जगतमें ?
> नृशंस भीषण हत्यासे हृदय कांपे।
> जो लाञ्छन अपमान सहा है उसने,
> क्या उसका प्रतिशोध नहीं ? क्या दण्ड नहीं,—
> कलङ्क-कलुष-पूर्ण घोर पापाचारमें।

देवतागण;—शिव-ब्रह्मा-विष्णु इन्हें धारण कर उनका प्रभाव फिर प्रतिष्ठित करते हैं;—वह सभी उन्होंने प्रकट किया था। सिद्ध पुरुषोंने किसतरह भिन्न भिन्न सम्प्रदायकी सृष्टि की है;—किस तरह गोरखनाथ और रामानन्दने भिन्न भिन्न धर्मनीति-योंका प्रवर्त्तन किया;—अपना धर्म-प्रचार करनेके लिये हज-रत मुहम्मदने किस तरह अनगिनती शिष्योंको संग्रह किया था;—उसे उन्होंने समझाया था। इसके बाद गोविन्दने और भी कहा था,—उन सबने ही अपना अपना कुसंस्कार फैला पृथिवीको पापभाराक्रान्त किया था;—लोग उनका ही अनुसरणकर विपथगामी हुए हैं। उन सब कुप्रथाओंको नाशकर विशुद्ध धर्म स्थापनके लिये ही वह अवतीर्ण हुए हैं;—दुष्टका प्रहा-रकर पाप-ध्वंसके लिये ही उन्होंने मनुष्यदेह धारण की है। गोविन्द कहते थे,—यद्यपि उन्होंने श्रेष्ठ पद पाया है; तथापि दूसरोंकी तरह वह भी एक साधारण मनुष्य हैं,—ईश्वरके एक आज्ञावाही भृत्य हैं;—सृष्टि-कौशलके अत्याश्चर्य कार्या-वलीके एक परिदर्शकमात्र। जो कोई उन्हें ईश्वर-स्वरूप समझ उनकी अर्चना करेंगे, वह मनुष्य यातनाके स्थान नरककी चिराग्निमें दग्ध होंगे। उन्होंने प्रचार किया—हिन्दू-मुसलमान दोनों जातियोंकी शिक्षा, रीतिनीति,—सभी उनके लिये अनुपयोगी है; कुरान, पुराण प्रभृति धर्मग्रन्थोंका पढ़ना निष्प्रयोजन है; देवमूर्त्तिपूजक या मरे मनुष्यके उपासक कोई कभी परम स्वर्गीय सुख पा नहीं सकते। धर्मग्रन्थोंके पढ़नेसे ईश्वर प्रतिकृतिकी उपासनासे, या सामाजिक आचार-पद्धतिके कठोर अनुसरणसे ईश्वर-सान्निध्य नहीं मिलता।—किसी भी

अकपट होनेसे ही ईश्वरत्व और मुक्ति दोनो ही मिलती हैं। *
गोविन्दने धर्म्मप्रचारकी ऐसी ही प्रकृतिका अनुसरण किया था।
गोविन्दके शिष्योंने उससे अपने धर्म्ममतमें बहुरूपककी सृष्टि
की थी, उनकी स्वर्गीय कल्पनाके साथ तरह तरहके पार्थिव
चिन्ताका समावेश किया था। कहते हैं,—गोविन्दने "नैना"
नामक पहाड़की बहुत ऊंची चोटीपर जा वहांके देवी-मन्दि-
रमें कठोर तपस्याचरण किया था। उन्होंने देवीसे पूछा था,—
अगले समय वीरश्रेष्ठ अर्ज्जुन एक वाण द्वारा किस उपायसे
इकट्ठे लोगोंको भेद करनेमें समर्थ हुए थे। उत्तरसे गोवि-
न्दको मालूम हुआ, कि एकमात्र आराधना और आत्मोत्सर्ग
द्वारा ही वह क्षमता उन्हें मिली थी। गोविन्दने बनारससे एक
धर्म्मनिष्ठ ब्राह्मणको बुलाया। सुनते हैं,—इस जगत्‌के काममें
भी इस ब्राह्मणकी विशेष क्षमता थी। गोविन्द उन ब्राह्मणसे
छन्द वेदाध्ययन करते थे। अब गोविन्द एक भयावह उत्सव-
कार्य्य करनेको तय्यार हुए, गोविन्दने शिष्यमण्डलीको
बुलाया सबने ही उस दुःसाहसिक काममें योगदान करनेके
लिये कहा। उन्होंने सबके सामने उस ऐन्द्रजालिक
गुणोंकी धीरे धीरे परीक्षा की। बहुत परिश्रमके साथ
होम के लिये एक प्रकाण्ड "वेदी" निर्म्मित हुई। ब्राह्मणने
गोविन्दसे कहा,—अस्त्र-शस्त्रसे सुसज्जित हो देवी छायारूपमें

---

* 'विचित्र नाटक' से मेलकमने एक अंश उद्धृत किया है;
यहां उसे ही देखना चाहिये। (Malcolm, Sketch, P. 173 &c.)

गोविन्दको दर्शन देंगी, गोविन्द निर्भय अटल अचल भावसे और भक्तिके साथ देवीकी अर्चना करें और देवीके आगे वर-प्रार्थी हों। लेकिन गुरु भयसे अभिभूत हुए और आगे बढ़ न सके; तलवार तिरछी कर दी; जान पड़ता है, गुरुने उसके द्वारा उन भयङ्करी मूर्त्तिका अभिवादन किया। उन देवी-मूर्त्तिने उनका अभिवादन ग्रहण करनेके बहाने तलवारका स्पर्श किया, साथ ही साथ भीषण अग्निशिखामें एक स्वर्गीय अस्त्र लौह-कुठार दिखाई दिया। उस समय प्रचारित हुआ,—देवीकी प्रसन्नताका और अनुकूलताका यही निदर्शन है, लेकिन गुरु सन्त्रस्त और भीत होकर भी यत्न परक हुए थे। अब धर्मप्रचारमें जय पानेके लिये, या गोविन्द अपना प्राणदान करेंगे, या उन्हें,—अपने प्रियतम किसी मनुष्यका जीवन उत्सर्ग करना पड़ेगा। तब गुरु बहुत दुःखित हुए; उन्होंने कुछ हंसकर कहा,—इस पृथिवीमें अब भी अनेक कार्य सम्पन्न करना पड़ेगा; अब भी वह पिताकी सन्तप्त आत्माकी तुष्टि-विधान कर न सके। फिर उन्होंने सन्तानोंकी ओर इशारा किया। लेकिन मातृस्नेहके प्रबल होनेसे [illegible]

सन्तानोंको ले भाग गई, गोविन्दकी इच्छा [illegible]

उस समय उनके [illegible] प्रिय शिष्योंने [illegible]

लिये आग्रह प्र[illegible] गोविन्दने [illegible]

सुना, इसके [illegible] हुई। *

इसके बाद गोविन्दने फिर शिष्योंको इकट्ठा किया। समवेत शिष्यमण्डलीसे अपने देह-परिग्रहणका महत् उद्देश्य प्रकट किया, एक नया धर्म्म फैला। गोविन्दने कहा,—इसके उपरान्त एकमात्र खालसा या मुक्त पुरुष ही * आधिपत्य करेंगे। एकाग्र-चित्तसे और भक्तिके साथ ईश्वरोपासना करना पड़ेगी लेकिन कोई,सर्व्वशक्तिमानको किसी पत्थर या मृतमूर्त्तिकी उपासना न करेंगे; उसमें ईश्वरके प्रति अवमानना दिखाई देती है। एकमात्र विश्वास और भक्तिसे ही जगदीश्वर "खालसा"

---

note), और मेकग्रेगरके सिख-इतिहासकी वर्णना दूसरी तरह की है। ('Macgregor's History of the "Sikhs," i 71) कहते हैं, गोविन्द एक समय बहुत निद्राभिभूत हुए, निद्रावस्थामें उन्होंने षड़ैश्वर्य्यशालिनी देवी-मूर्त्ति विषयक एक स्वप्न देखा। सम्भवत: गोविन्दकी इस स्वप्न-विषयक कहानीसे ही वर्तमान घटनाका यथार्थ विवरण मालूम होता है; जान पड़ता है वह घटना ही इस उपाख्यानकी दीवार है। सुनते हैं,—सन् १६६६ ई०में यह प्रक्रिया सम्पन्न हुई। (Malcolm, "Sketch" p. 86)

* "खालसा" या "खालिसा" शब्द अरबी शब्दसे बना है। इसका व्युत्पत्तिगत अर्थ,—पवित्र, विशेष, मुक्त इत्यादि है। इस शब्दसे साधारणत: करद और मित्रराज्यसे पृथक-संज्ञक स्वाधीन राजा या राज्य जान पड़ता है। "खालसा" शब्दसे गोविन्दका राज्य निर्द्दिष्ट होता है,—या ऐसा मालूम होता है, कि सिख जाति ईश्वरानुग्रहीता है।

(श्रील यज्ञ-कुटार या देवीसंस्पर्श पवित्र तलवार द्वारा वह जन शासन करने लगे। इसी समय एकाएक उनकी स्त्री पञ्चविध

नामसे अभिहित होते हैं। दिल्लीकी चारो ओरके जिन राजपूतोंने मुसलमान-धर्म ग्रहण किया था,—"रांगुर" शब्दसे उनका ही उद्देश्य प्रयुक्त होता है। मालवेके राजपूत डाकू भी इसी नामसे परिचित हैं। "राणा" शब्दसे सद्वंशजात समझे जाते हैं। सम्भवतः यह उपाधि "रङ्क" (यानी दरिद्र मनुष्य) शब्दसे बना है। "रांग्रेथहा" शब्द "राङ्गर" शब्दका अपभ्रंश जान पड़ता है, लेकिन साधारणतः जैसा समझा जाता है, उसके अनुसार यह "रङ्ग" (वर्ण) शब्दसे निष्पन्न नहीं है। "रांग्रेथहा" सिख कभी कभी "मजहबी" या मुसलमान-धर्मावलम्बीके नामसे अभिहित होते हैं। भिन्न धर्ममें दीक्षित मुसलमान लोग इसी नामसे परिचित हैं, भारतवर्षके मेघर जातीय कितने ही मनुष्योंने उस समय मुसलमान-धर्म ग्रहण किया था।

हिन्दुओंको नये धर्ममें दीक्षित करनेकी कल्पनाके प्रसङ्गमें कहा जाता है,—गोविन्दने कहा था, वह छोटे पक्षीको ऐसी शिक्षा देंगे कि जिससे वह गृध्रको पददलित कर सके। (यहां मलकमके "सारग्रन्थका" ७४ पृष्ठ (Malcolm, Sketch, P. 74) देखना चाहिये; मेलकमने कहा है,—औरङ्गजेबकी ओर इशारा कर गोविन्दने यह बात कही थी। यहां और मतविरोध दिखाई देता है। विभिन्न ऐतिहासिक लोगोंने भिन्न भिन्न प्रकारसे इस बातको लिखा है उनके मतसे गोविन्दने ही इस बातका प्रयोग किया; लेकिन इस सम्बन्धमें कोई ठीक

मिष्टान्नपूर्ण- पात्र हाथमें ले सामनेसे निकल गई। तब गोवि-न्दने आनन्दके साथ कहा,—यही शुभ लक्षण है। उसी समयसे स्त्रियोंका आना शुभ लक्षण बताता है। इससे "खालसाके" कितने ही सन्तान-सन्ततिकी इक्षके पत्तेकी तरह दिन दिन बढ़ने-की सम्भावना हुई। तब उस जलसे चीनी मिला गोविन्दने उसका कुछ अंश पांच धर्म्म-विश्वासी शिष्योंके शिरपर छिड़क दिया। शिष्योंमें एक ब्राह्मण, एक क्षत्रिय और तीन शूद्र थे। उन्होंने उनको "सिं या सिंह" नामसे सम्भाषण किया: वह लोग "खालसा-के" नामसे अभिहित हुए। गोविन्द खुद शिष्योंसे "पाहुल" ग्रहणकर गोविन्दसिं या सिंह नामसे परिचित हुए। तब गोवि-न्दने कहा,—इसके बाद जब पांच सिख एक जगह इकट्ठे होंगे, तभी वह वहां आवेंगे। *

हाल लिख न सके, कि किनके उद्देश्यसे गोविन्दने यह बात कही थी; सभी इस बारेमें स्वतन्त्र मतावलम्बी हैं।

* कहते है,—यह नवदीक्षित ब्राह्मण दिल्लीके रहने-वाले थे। क्षत्रिय पञ्जाबका था। शूद्रमें एक झिउयार (कुम्हार) जातिका था; जगन्नाथ उसका वासस्थान था। दूसरा हस्तिनापुरका एक जाट और तीसरा एक "छीपा" यानी रङ्गरेज था, उनका वासस्थान गुजरातका द्वारका नगर था।

गोविन्दने प्रचार किया,—पांच शिष्योंके इकट्ठे होनेपर एक धर्म्मसमाज तय्यार होगा, या पांच सिखोंके समवेत होनेपर वहां निश्चय ही गुरु उपस्थित रहेंगे, उस समाजपर गुरुकी कृपा वर्त्तमान रहेगी,—सचाईके लिये मेलजमके सारग्रन्थका

गोविन्दने इस तरह जाति-भेद लोप किया। * सिखोंका

---

१८६ पृष्ठ देखना चाहिये। (Malcolm. Sketch, p. 186).

वस्तुतः "गोविन्द" शब्द "राम" शब्दकी एक अलौकिक उपाधि या कल्पित नाम मात्र है। इस उपाधिको हिन्दू लोग हमेशासे ग्रहण करते हैं। रणकुशल राजपूत लोगोंमें "राव" उपाधि प्रचलित है; "राव" शब्द,—इस "राम" शब्दका अपभ्रंश मात्र है। नये साम्य-व्यञ्जक संस्कारके प्रवर्तित होनेसे, गुरु और उनकी शिष्यमण्डलीने "सिं या सिंह" उपाधि ग्रहण की; इसतरह और सम्प्रदायोंसे उनका स्वातन्त्र्य रक्षित हुआ। साधारण बातोंमें "सिंह" शब्दसे "सिंह" मालूम होता है। लेकिन आलङ्कारिक व्यवहारसे इसका अर्थ—"योद्धा" या "शूर" है। राजपूतोंमें यह स्वातन्त्र्य-व्यञ्जक गुणवाचक नाम हमेशासे बहुत ज्यादा व्यवहारमें लाया जाता है। इस समय यह गोविन्दके शिष्योंके अपरिहार्य उपाधिस्वरूपमें व्यवहृत होने लगा। मुसलमान लोग "खां" उपाधिसे वंशगत समझे जाते हैं। सिखोंकी यह "सिंह" उपाधि भी [illegible] है। सिख लोग साधारणतः जैसे अपने पूर्वपुरुष [illegible] विविध नामसे अभिहित करते थे, [illegible] भी इसी तरह रणजित्सिंहकी बात कहनेके समय "सिंह साहब" उपाधिका प्रयोग करते हैं। यह शब्द अङ्गरेजी "सर [illegible]" [illegible] "सर [illegible]" [illegible] उपाधिकी तरह तुल्यार्थ-[illegible] है। [illegible] सिखको सम्मान सूचक नाममें

कुसंस्कार और भ्रमविश्वास दूर हुआ। उन्होंने विचारकर

बुलानेके लिये अपरिचित मनुष्य भी "सिंहजी" शब्दका प्रयोग करते है।

* गोविन्दने असलमें कोई विधिबद्ध नियम नहीं चलाया, उन्होंने समन्वयभावसे जातिभेद रहित किया था। सिख जातिने इस समय जो वंशस्वातन्त्र्य अवलम्बन किया है,—इस विषयमे भी न्याय्यआपत्ति दिखाई जा सकती है। सिख गुरु-ओमें किसीने यह नही कहा, कि ब्राह्मण और शूद्र आपसके विवाहसूत्रमें आवद्ध हो। गुरुओने यह भी कभी नहीं कहा, कि हरेक एक साथ बैठ एक ही वस्तु आहार करें। फलतः इसमें सन्देह नहीं, कि उन्होंने इस जातिभेद-नाशका बीज बोया था और वही बीज अन्तमें अङ्कुरित हो पत्र पुष्प-फलसे परिशोभित महावृक्ष हो गया। निम्नलिखित उद्धृत अंशसे यह साफ प्रमाणित हो गया। यहाँ याद रखना चाहिये, कि सिखगुरु लोग एकमात्र धर्म्म-विषयक एकताबन्धन और सामाजिक और राजनीतिक समता हीको बहुत ज्यादा श्रेष्ठ समझते थे,—

"जातिभेदकी चिन्ताको मनमें स्थान न दो; विनयी और नम्र हो, मुक्ति पाओगे"—यह नानकका सारङ्ग राग है।

"ईश्वर किसीसे प्रश्न न करेंगे, कि तुम कौन वंशसम्भूत और कौन जाति हो? वह केवल पूछेंगे,—क्या काम किया है?"—नानक,—प्रभाती रागिनी।

"जो मनुष्य सदा एकाग्रचित्तसे ईश्वरकी याद करते

देखा,—इस समय लोगोंके अन्तरको आकृष्ट करने और उन्हें ज्ञानकी प्याससे परितृप्त करनेकी जरूरत है; सिखोंको एकता-सूत्रमें बांधनेकी जरूरत है। इस एकताके फलसे जैसे दुर्बल मनुष्यों भी नवजीवनका नव-प्रभाव बढ़ा सकता है और धर्मनिष्ठ पुरुष लोग भी दूने उत्साहसे उपासनामें रत हो,—उसका उपायविधान करना ही उसका पहला कर्त्तव्य है। गोविन्दने कहा,—उनके सब शिष्य एक ही मन्त्रसे दीक्षित होंगे; पाँच

सदा तन्मय हो उनकी उपासना करते हैं—वह क्षत्रिय हो, ब्राह्मण हो, शूद्र हो या वैश्य हो,—निश्चय ही मुक्ति पायेंगे,—रामदास, विलावल राग।

"गोविन्द, रहित नामसे" (ग्रन्थमें यह दिखाई नहीं देता।)

Compare Malcolm Sketch, p. 45 note (मैलकमके सारसंग्रहके ४५ पृष्ठाका नोट देखना चाहिये।) यहां गोविन्दके बारेमें एक बात लिखी है। गोविन्दने कहा था,—हिन्दुओंके "पानसुपारी"के चार उपादान सुचारुरूपसे चर्वित होनेपर जैसा एकवर्णी हो जाता है, उसी तरह जब चारों जाति सुचारुरूपसे मिल जायगी, तो एक जाति तयार होगी।

वस्तुतः सब सिखोंने मिल एक साथ प्रसाद (दूसरा भाषामें—परसाद), या उपभोग्य खाद्य भोजन किया, मयदा, सूजी चीनी और दूध एक साथ मिला यह प्रसाद तयार होता है। आज भी हिन्दुओंमें यह प्रथा प्रचलित है। (See Wilson, "Asiatic Researches", xvi, 56, note, and xvii, 237, note.

प्रधान शिष्य होमजल छिड़क यह दीक्षाकार्य्य सम्पन्न करेंगे। *

---

* विचारशक्ति परिस्फुट या स्मृति-शक्तिका विकाश न होता, तो सिख लोग दीक्षा न पाते। जबतक वह उम्रदराज नहीं होते थे, तबतक गुरु उन लोगोंको दीक्षित नहीं करते थे। सात सालकी उम्रसे पहले कभी कभी बालिग न होनेपर, गुरु उन्हें दीक्षित न करेंगे। लेकिन इस विषयमें कोई बंधा हुआ नियम नहीं था। या जिस प्रथाके अनुसार यह दीक्षा-कार्य्य सम्पन्न होगा, उसकी प्रमाण-चिह्न कोई बाह्य-प्रक्रिया अच्छी तरह प्रकट नहीं हुई। बहुत जरूरी काररवाइयोंमें देखा गया है,—कमसे कम पांच सिख भी एकत्र होंगे। समय समयपर और एक व्यवस्था होती है, कमसे कम उनमें एक आदमीका भी ख्यातनामा होना जरूरी था। चाहे जिस पात्रमें चीनी और जल मिलाया जाय, शाणित छुरे द्वारा वह सञ्चालित होता है। लौहनिर्म्मित चाहे जिस अस्त्र द्वारा हो, यह काम सिद्ध हो सकता है। जो लोग मन्त्र लेंगे, वह हाथ जोड़ नम्रभावसे शिर झुका खड़े होंगे। गुरु जो मन्त्र,—जो धर्म्मनीति, उच्चारण करते हैं, दीक्षित मनुष्य बार बार उसकी ही पुनरावृत्ति करते हैं फिर उस पवित्र जलका कुछ अंश उसके मुखमण्डल और देहपर छिड़का जायगा; बाकी जल वह पीकर गुरुका सादर अभिवादन करेगा। तब गुरुकी जय हो,—की ध्वनिसे दिगदिगन्त प्रतिध्वनित होता है। इसके उपरान्त वह पुरुष सर्व्व समय ईश्वरसे सतता प्रकाश करेगा और सिखरूपमें उसका कर्त्तव्य पालन करेगा,—उसे ऐसी

अद्वितीय निराकार ईश्वर उनके एकमात्र उपास्य देवता हैं; नानक और उनके परवर्त्ती गुरुओंकी स्तुतिकी सिख लोग

अनुज्ञा दी जानेपर यह प्रक्रिया खतम होती है। दीक्षाके विशेष नियमकी प्रणालीका विवरण बहुत ज्यादा है; निम्न-लिखित ग्रन्थसमूह देखना चाहिये;—Forster 'Trave,'s i, 307; p. 182; and Princep's edition of Murray's Life of Runjeet Singh (p. 217) आखिरी ग्रन्थमें एक भारतीय सङ्कलनकर्त्ताके कुछ अंश उद्धृत हुए हैं।

पुराने समय एक सिखका पादोदक व्यवहारका भी नियम था। लेकिन जल्द ही वह प्रथा छोड़ दी गई थी। पैरकी उंगलियों द्वारा जलस्पर्श करनेका जो नियम पहले दिखा था, वह प्रथा भी अब लोप हुई है। पहली प्रथा सम्भवतः शिष्योंकी नम्रता और आनुगत्यकी परिचायक है। जिस जलमें ब्राह्मणकी वृद्धाङ्गुलि धोई गई है, हिन्दुओंके लिये वही जल पवित्र है। सम्भवतः यह खयाल ही—पहले और दूसरे नियमकी उत्पत्तिका कारण है। पैर और पैरकी उंगलियोंके बदले गोविन्दने तलवार प्रवर्त्तित कर उसके चिह्न-विशिष्ट देवदत्त बीज स्वरूपका श्रेष्ठत्व विधान किया था।

साधारणतः स्त्रियां यथारीति सिख-धर्ममें दीक्षित नहीं होतीं। लेकिन कभी कभी वह ऐसे नियमकी अनुसरण करती है। स्त्रियोंकी दीक्षाके समय जल और चानी मिलाई जाती है, अलिबत्त तलवारके एक किनारे द्वारा वह मिश्रित होता है।

बहुत भक्तिके साथ रक्षा करें। * "गुरुकी जय हो।"—यही उनका मूलमन्त्र था। † लेकिन धर्मपुस्तक "ग्रन्थके

---

* "Transanimate" (उत्तरकालके जीवित मनुष्यगण) शब्दका प्रयोग सम्भवतः आपत्तिजनक न होगा। सिखोंका विश्वास है,—परवर्त्ती हरेक शिष्यकी देहमें नानककी आत्मा अवतार लेती है। "विचित्र नाटकमें" (Vichitr Natuk) गोविन्द यह लिख गये हैं। गोविन्दने कहा है,—एक प्रदीप जैसे दूसरे प्रदीपको रश्मि बाँटता है, उसी तरह नानककी आत्मा देहसे देहान्तर ग्रहण करती है।

† सिख जातिके, धर्मसम्प्रदायका मूलमन्त्र सरल भाषामें —"वाह गुरु" है। अर्थात् "हे गुरो।" या "गुरुकी जय हो"। लेकिन विशदभावसे उनका मूलमन्त्र— "वाह गुरुकी फतह" है और "वाह गुरुका खालसा" है।—(गुरुके धर्म और शक्तिकी जय हो। गुरु और विजयका मङ्गल हो।—गुरुके धर्माधिकरण या राज्यकी कुशल हो।)—यह प्रमाण-सिद्ध नहीं है। लेकिन पहले की कही हुई बातें हमेशासे व्यवहृत होनेके कारण, वह सिखोंको अभ्यस्त हो गई हैं। "देग" और "तेग" शब्दद्वयमें जो गूढ़तत्त्व छुपा हुआ है, गोविन्दने उसके ही व्युत्पत्तिप्रतिपादनकी चेष्टा की। इन शब्दद्वयके सिखोंके अभिवादनके स्वरूपमें निर्दिष्ट न होनेपर भी, गोविन्दने जो नीति प्रदान की थी, उसके ही फलसे इस अभिवादनकी सृष्टि हुई है।

"आदिग्रन्थ" व ‾ खण्ड और अध्यायोंमें विभक्त है।

"ग्रन्थके सिवा और किसी दृश्य वस्तुकी ओर वह भक्ति न दिखावे। उसके प्रति अभिवादन करना भी उचित नहीं।*

खण्ड और अध्यायोंकी अधिकांश संख्याके पहले ही "एको उंकार, वाह गुरु-प्रसाद" प्रभृति बातें लिखी हैं। "अद्वितीय परमेश्वर और परम सुखी गुरुकी कृपा"—इन शब्दोंका सच्चा अर्थ है। "दशम बादशाहके ग्रन्थके" कुछ अध्यायोंके पहले "ऐको उंकार, वाह गुरुकी फतेह" यानी "परमेश्वर अद्वितीय और गुरुको ईश्वर प्रदत्त क्षमता है,"—इत्यादि लिखा है।

"गुरु रत्नावलीके" सिख ग्रन्थकारने "वाह गुरु" प्रभृति सम्बोधनकी सार्थकताके प्रतिपादनकी चेष्टा की थी। उन्होंने जो असली कारण निर्द्देश किया है, वह काल्पनिक और अकिञ्चित्कर जान पड़ता है,—

"वासुदेव (वासुदेव), पहले युग या सत्ययुगका सम्बोधन है,
हर हर, दूसरे युग या त्रेतायुगका सम्बोधन है,
गोविन्द गोविन्द, तीसरे या द्वापर युगका सम्बोधन है,
राम राम, चौथे युग या कलिका सम्बोधन है,
इससे ही यह पञ्चमयुग या नव-विधानका "वाह (वाहवा) गुरु" निष्पन्न हुआ है।

* "रहत नामा" या गोविन्दके जीवनकी नियमावलीमें एक मात्र ग्रन्थके प्रति भक्ति दिखानेकी बात लिखी नहीं है। सिक्खोंमें कितने ही गोविन्दको ईश्वर समझते थे। उनके इस कामके लिये गुरु उनसे घृणा करते थे। इस तरह गोविन्दने शिष्योंकी भावी पौत्तलिकता ध्वंस की थी।

समय समयपर अमृतसरके जलाशयमें स्नान करना चाहिये; सिखोंका मस्तकमुण्डन निषिद्ध है। वह सभी "सिंह" यानी सैन्य सम्प्रदायके नामसे आपसमें सम्बोधन करें। जड़ पदार्थोंमें केवल अस्त्रकी ओर वह अनुरक्त रहें। *

---

* सिख जाति लोहेकी ओर भक्ति दिखाती है। इसके सम्बन्धमें निम्नलिखित ग्रन्थ देखना चाहिये। जैसे,—

मूल पुस्तकमें इस विषयका जो बयान लिखा गया है—वह बयान ही सच्चा है। भारतवर्षमें सब जगह ही सब तरहके अस्त्रशस्त्रोंकी (हथियार मात्रकी) पूजा होती है। पश्चिम अञ्चलकी प्रचलित साधु भाषामें कहनेपर यह सब पवित्र नाम पड़ते हैं, और ईश्वरके नामसे सभी इनका उत्सर्ग करते हैं। प्रधानतः रोजगारी सौदागरोंमें ही इस प्रथाका बहुत प्रचार दिखाई देता है। वह लोग हर साल एक जगह सोनेका ढेर लगा उसके सामने धर्म्मकार्य्यके उत्सवादि सम्पन्न करते हैं। जो लोग पुरुषानुक्रमसे मुनीबी या नकलनवीसी करते हैं, वह भी इसी तरह मसीपात्र (दावात) की पूजा करते हैं। सैन्य-विभागमें भी इस प्रथाका अभाव दिखाई नहीं देता; सैन्याध्यक्ष लोग दशहराके दिन पताका और ढेरके ढेर अस्त्रशस्त्र ईश्वरके नामसे उत्सर्ग करते हैं। गोविन्दके शिक्षागुणसे उनके शिष्योंने जाति-व्यवसाय छोड़ दिया था। उनके पूर्व्व पुरुषगण हला-कर्षण, वस्त्र-वयन, मुनीबी प्रभृति कामोंमें नियुक्त थे। उस समय सिख-जातिने पूर्व्व पुरुषोंके उन सब रोजगारोंको छोड़ दिया। गोविन्दकी शिक्षाके प्रभावसे वह लोग समझें,—इस ४ १

अस्त्र-शस्त्रसे उनकी देह सदा भूषित रहेगी · वह सदा युद्धमें नियुक्त रहेंगे। सम्मुख समरमें प्रवृत्त हो जो मनुष्य शत्रु निधन

तलवार ही उनका एकमात्र अवलम्बन है। जिसके द्वारा क्षमता-प्रभुत्व लाभ होता है; जिसके साहाय्यसे निरापद निरुपद्रव समय बिताया जाता है, जिससे प्रात्यहिक खाद्यका संस्थान होता है;—उसकी ओर सम्मान दिखानेका ज्ञान सब देशोंमें ही परिस्फुट दिखाई देता है। हमारे (अङ्गरेजोंके) देशमें कोई नाविक नौ-विभागके कर्म्मचारीके नामसे परिचित होनेसे सम्मानार्ह समझे जाते हैं। दूसरे विभागके कामकी अपेक्षा नौ-विभागका काम उनके लिये श्लाघनीय है। भारतवर्षमें पुरुषानुक्रमिक व्यवसायकी प्रथा प्रचलित रहनेसे, इस भावने ऊंचा स्थान पाया है। दर्शन-शास्त्रकी भाषामें कहनेपर यह आत्माका पुनर्ज्जन्म सम्बन्धीय विशिष्ट नीति विशेष है। लेकिन विवेकशक्ति द्वारा विचारकर देखनेसे मालूम होता है, कि मनुष्यके प्रात्यहिक क्रियाकलापके सुचारुरूपसे परिचालित करनेके लिये ही यह नीति विधिबद्ध हुई है और परम सुखसे पूरी तरह साधन जानेतक यह नीति अनुसृत होगी। जो मनुष्य सदा प्रभु-चिन्तामें निमग्न रहते हैं, जो मनुष्य तलवारको ही एकमात्र अवलम्बनीय समझते हैं,—उनकी ही आत्मा निकृष्ट [illegible] मुक्त आत्मा सदा ईश्वरकी चिन्तामें रत रहती है।

"[illegible] पाइआ [illegible] प्रभु तराणा,"—इस वाक्यकी प्रकृत व्युत्पत्ति निर्णय करना सुकठिन है। जान पड़ता है इस वाक्यकी उत्पत्ति और व्युत्पत्ति एक ही तरहसे मिलकर हुई है। धर्म्मराज [illegible]

कर सकेगा, उसका ही जीवन सार्थक है, पराजित होकर भी जो हताश न होगा,—वही धन्य है, उनकी महिमा ही अतुलनीय है। उन्होंने स्वधर्म्मविरोधी तीन सम्प्रदायोंके साथ सम्बन्ध छोड़ दिया। जिन्होंने अर्ज्जुनके ध्वंसके लिये चेष्टा की थी, उस मिरमली सम्प्रदायको,—उनके पिताके निधन-काल्य-में जिन्होंने सहायता दी थी, उस रामरायके दलको,—और जो उनके खुद क्षमता फैलानेमें अन्तराय हुए थे,—उन मसन्दी लोगोंको गोविन्दने परित्याग किया। वह सब मुण्डित मनुष्योंसे या हिन्दू-मुसलमानोंसे घृणा करते थे। उस समय कुछ अधा-र्म्मिक आदमी कुसंस्कारके वशवर्त्ती हो शिशुकन्याकी हत्या करते थे, गोविन्द उन नृशंस मनुष्योंके विरुद्ध खड़े हुए थे। लेकिन धर्म्मग्रन्थमें इसका कोई निदर्शन नहीं है, कि गोविन्दने किस रीतिसे इस प्रथाके मिटानेकी चेष्टा की थी।' *

गुरु अविनश्वर आत्मापर आधिपत्य करते है, वह मुक्तिके पथ-प्रदर्शक हैं। लेकिन ऐहिक राजा, इन्द्रियवृत्तिकी परिचाल-नाके पथप्रदर्शक हैं। वह इन्द्रिय-सुखभोगकी लालसा और प्रबल वासनाके परिमित व्यवहारका व्यवस्था-बन्दोबस्त करते हैं। मुसलमानोंका भी ऐसा ही विश्वास है। और उनमें एकतात्प-र्य्यक मालिक हकोकी शब्द प्रचलित है।

* इस ग्रन्थके परिशिष्टमें गोविन्दका "राहत" और "टाङ्गान" नामक पुस्तक मिलाई गई है। उससे यह सम्प्रदाय और कित-नी ही और भी भेद-व्यञ्जक प्रथा दिखाई देती है।

प्रकृत धार्म्मिकका स्वाभाविक प्रभेद-व्यञ्जक असुविधा है पृ-

गोविन्दने एक बातमें जय पाई थी; वह धर्म्मप्रचार-से शिष्योंके प्रभु हुए थे। इस समय भी उनका एक बहुत

श्याम और नीलवर्णकी पोशाक पहननेकी प्रथा गोविन्दके किसी ग्रन्थमें दिखाई नहीं देती। ऐसा जान पड़ता है, कि इस बारेमें उनका कोई आदेश नहीं था। जान पड़ता है, प्रधानतः आचार-पद्धति और व्यवहारिक रीतिसे उनलोगोंने एक निदर्शन स्वरूप इस प्रभेद-व्यञ्जक रीतिको ग्रहण किया है। पहले नीलवर्णकी पोशाक पहनना एक तरहका विधमावीन था, उस समय उन लोगोंने यह प्रथा अनिर्व्वार्य्य समझी। सम्भवतः हिन्दुओंके प्रति विपक्षताचरणके फलसे ही इन दोनों प्रथाओंकी सृष्टि हुई। कितने ही ब्राह्मण संन्यासियोंने यत्नके साथ मस्तक-मुण्डन कराया; धर्म्मकार्य्यमें पहले दीक्षाके समय और निकट-सम्पर्कीय आत्मीयकी मृत्युपर हिन्दूजाति मस्तक मुण्डन कराती हैं। और भी एक आश्चर्यकी बात यह है, कि अनेक धार्म्मिक पुरुष और सम्भ्रान्त हिन्दू इस समय भी नीलवर्णसे घृणा करते हैं। अब भी राजपूत कृषक जमीनमें नील नहीं बोते। वह इस कामको लज्जास्कर समझते हैं। दूसरी ओर मुसलमान लोग नीली पोशाक बहुत पसन्द करते हैं। शायद मुसलमान राजत्वके समयसे ही नीलवर्णकी ओर हिन्दुओंका विद्वेषभाव उत्पन्न हुआ है। अन्यान्य पुस्तकोंमें कुमारके नीलवर्णकी पोशाक पहननेकी बात भी लिखी है। जो हो, नानकके वंशके उल्लेखके समय, "भाई गुरुदास" नामक एक सिख ग्रन्थकारने कहा है,—"जब हमलोग मक्के गये, तो उस समय नानकके पहनावेमें [illegible]

असमसाध्य काम बाकी है। वह काम है,—अविश्वासी प्रजा-पीड़नकारी विधर्म्मियोंके राज्यका ध्वंस-साधन। मुसलमानोंके

तरह नीलवर्णकी पोशाक थी। उसी तरह कोई सिख "सूफी" रङ्ग या कुछ सजातीय फूलके रङ्गसे रंगी पोशाक नहीं पहनते। बहुत दिनोंतक हिन्दू लोग इस रङ्गको बहुत पसन्द करते थे। लेकिन आजकल यह रङ्ग धीरे धीरे फकीरोंका बहुत आदरणीय हो गया है।

सिखजाति धूमपान नहीं करती; या और कोई नशीली चीज सेवन नहीं करती। निषिद्ध द्रव्योंमें पहले तम्बाकूकी सुंघनी ही निषिद्ध हुई थी। सुंघनी निषिद्ध द्रव्य है, इसलिये तम्बाकू भी कोई व्यवहारमें नहीं लाते। सन् १६१७ ई० भारत-वर्षमें पहले तम्बाकू आई। (M'Culloch's Commercial Diction ry, 'art Todacoo') हम समझते हैं, अकबरके किसी वंशधरने तम्बाकूके बाहर करनेकी वृथा चेष्टा की थी; लेकिन आजकल भारतीय मुसलमान लोग सभी धूमपान करते हैं—तम्बाकू व्यवहारमें लाते हैं।

अलगावका एक और चिह्न दिखाई देता है,—सिखलोग एक प्रकारका पायजामा पहनते हैं। लेकिन हिन्दू लोग जिस तरह गात्र छिपा रखते हैं, सिख लोग सभी उसके विपरीत भावसे पतलून पहनते हैं। रामीय युवकोंके लिये "टगा विरिलिस' द्वारा धर्म्माधिकार प्रदान करना जैसा जरूरी था, सिख-बालककी भी उसी तरह 'कछ' या पायजामा ग्रहण करना बहुत जरूरी था।

विस्मय और हिन्दुओंके *संस्कारमें भी उन्होंने "खालसा" या "सिंह" लोगोंके धर्म्मराज्यकी प्रतिष्ठा की है। पीर और मुल्ला, साधु और पण्डित,—सबको ही वह ताबे बना लाये हैं। लेकिन इस समय भी उनका एक काम बाकी है। वह काम,—प्रबलप्रताप मुसलमान-सम्राटकी सैन्यका निधन-साधन और असंख्य घृणित धर्म्मावलम्बियोंका उच्छेदविधान है। जिन्होंने प्राचीन रोमका दृढ़शासन और कूट-राजनीतिकी आलोचना की है; जिन्होंने आजकल युरोपके प्रभुत्वकी क्षमता और राज्यशासनकी नीतिका सुबन्दोबस्त प्रत्यक्ष देखा है,—उनके सामने शायद गोविन्दकी यह कल्पना और विधि-व्यवस्था असभ्यता और प्रलापका परिचायक जान पड़ती है। लेकिन एशियाका विस्तृत राज्यसमष्टि यूरोपके साधारे असभ्य जातिके अधिकृत राज्यकी तरह, असंख्य लोगोंके गम्भीर विश्वासकी दीवारपर प्रतिष्ठित नहीं है, वह एक ही जातीय विभिन्न राजवंशसे विभक्त है। सामयिक शक्तिके क्रमविकाससे और दलपतियोंकी प्रतिभाशक्तिसे वह लोग विजयोल्लाससे मत्त हुए थे। एक वंशके बाद दूसरा वंश धीरे धीरे प्राधान्य पाता है। साइरसने पारसिकी सैन्यके साहाय्यसे और मासिडो-नने कुछ फ्रान्सीसी सैन्यके साथ राज्यके बाद राज्य जय किया था। बाबर राज्यस्थापनका सूत्रपात कर गये अपनी मुहीमर

---

* हिन्दू रमणियां एक ही तरहका पहनावा पहनती हैं। लेकिन सिख रमणियां [illegible] तरहकी पोशाकें पहनती हैं। प्रधानतः उनका ऊंचा [illegible] पार्श्व-परिच्छद है।

सैन्यकी साहाय्यसे अकबरने उस राज्यकी प्रतिष्ठा की। "एकि-मोनिडिस' और ' कारलोविजियन" लोगोंकी तरह मुगलोंके राज्यमें ऐसा सुशासन नहीं था, बाबरके स्वजातीय लोगोंकी संख्या भी ज्यादा नहीं थी,—और उनके पुत्र सिंहासनच्युत हुए थे। लेकिन अकबर बहुत राजनीतिज्ञ, बुद्धिमान्, कृपालु और उदार-प्रकृति थे। उनकी दक्षता और सत्साहसिकता विशेष प्रशंसनीय है। उनके अनुचर लोग साहसी और उद्यम-शील थे। अकबर खुद कूटराजनीतिज्ञ और असाधारण प्रतिभासम्पन्न थे। इन्हीं सब वजहोंसे अकबर समग्र भारत-वर्षपर आधिपत्य फैलानेमें समर्थ हुए। उस समय अकबर लोगोंका अभाव समझ गये थे।

असाधारण परिचालना-शक्तिके बलसे, उन्होंने हिन्दू-मुसलमान राजपूत, तुर्क और पठानोंके आपसके विरोधी संस्कार और धर्म्ममतका समता-विधान किया था। पचास साल राजत्व करनेके बाद अकबर अपने उत्तराधिकारियोंके भोगके लिये एक बहुत विस्तृत और सुशासित राज्य छोड़ परलोक गये। लेकिन जहांगीरके एक पुत्र राज्यकी लालसासे पितासे साथ युद्धमें प्रवृत्त हुए। पीछे जब शाहेजहांने राजत्व किया, तो पहले उनके पुत्रलोग राज्य पानेकी आशासे आपसमें युद्धमें प्रवृत्त हुए थे और अन्तमें उन योद्धृगणमें एक दक्ष और लब्धप्रतिष्ठ पुरुष द्वारा शाहेजहां कैद हुए थे। औरङ्गजेब हमेशा डरते थे, कि कहीं उनका ही दृष्टान्त अवलम्बनकर दूसरा कोई आधिपत्य स्थापन न करे। औरङ्गजेब निष्ठुरप्रकृति थे। वह मुसलमानोंपर सन्देह करते थे। उनकी हठ और अत्याचार-उत्पीड़नसे हि

प्रजा भी उनके प्रति असन्तुष्ट थी; सभी उनसे घृणा करते थे। सुतरां बुढ़ापेमें औरङ्गजेबने केवल अशान्तिभोग किया था, उनके प्राणको शान्ति नहीं थी। कोई और जाति उनका साथ नहीं देती थी; राज-सभामें प्रायः ही विश्वस्त पुरुष दिखाई देते नहीं थे। असाधारण बुद्धिवलसे औरङ्गजेबने जीवनके आखिरी दिनतक राजत्व किया था; उस बुद्धिवलसे ही वह इतने दिनोंतक अपने हृदयका असारत्व छिपा सके थे, जीतेजी उनका असारत्व कोई समझ नहीं सका था; लेकिन मृत्युके बाद उनका सच्चा स्वभाव और असारत्व सभी समझ गये थे। मुगल-राजत्वमें राजनीतिक एकताका अभाव था। सिंहासनके लिये सदाके विवाद-विसम्वादसे नीति और आधिपत्यकी शृङ्खला नष्ट हुई थी। * मुगल साम्राज्यके अधीन छोटे छोटे बहुत राज्य थे। यह सब राजा बहुत अनिच्छाके साथ बादशाहकी अधीनता स्वीकार करनेपर वाध्य हुए थे। मुगल साम्राज्यके

---

* मुगल-राज्यमें यह दोष हमेशा मौजूद था; अकबरने "चौधरी" और परगना "कानूनगो" नामक दो पदोंकी सृष्टि की थी। इस समय यह दोनो पदवी वंशानुक्रमिक "शरिफ" और जमीन-जमा और धनसम्पत्तिके मौरुसी-तौरपर तरह तुल्यार्थ-ज्ञापक हैं। इसी तरह दीर्घकालस्थायी विधि-व्यवस्थाकारकगण कानूनगोके लिये अब भी बहुत आयोजन-साक्षेप हैं। इनमें जो पुरुष मुख्य और सत्यवादी हैं, उसे ही सिंहासन देनेसे राजसत्ता हुई है। नसरी शासनक्रम पुत्र-पौत्रादि परम्परासे उत्तराधिकार लिये स्थापित अनेक नियम संशोधित हुए हैं।

भीतर छोटे छोटे कितने ही जागीरदार भी थे। यह सब
राजवंश और वित्तभोगी जागीरदार सम्राटके शासनकार्य्यमें
विघ्न डालनेके लिये सदा चेष्टा करते थे, वह पहले भी विश्वास
करते थे और अब भी करते हैं, कि बादशाह केवल अपने स्वार्थ-
के लिये ही राजकार्य्य निर्व्वाह करते हैं, देशके लोगोके मङ्गल-
विधानके लिये वह कोई काम नहीं करते। लोगोके दिलमें यह
विश्वास ऐसा जमा था, कि सुशासित बुद्धिमान् पुरुषोकी सैकड़ों
चेष्टासे भी वह दूर नहीं हुआ। उस समय उच्चाभिलाषी
पुरुषके प्रभुत्व पानेमें समर्थ होनेपर, उसकी ही प्रशंसा-
ध्वनिसे हिन्दूमण्डल पूर्ण होता था। राजा और प्रजामें य-
ह वैरभाव दूर करनेके लिये अकबरने बहुत चेष्टा की थी।
वह इस विषयमें बहुत कुछ कृतकार्य्य भी हुए थे। लेकिन
उनके उत्तराधिकारी लोग उनके जैसे बुद्धिमान् नहीं थे।
देशमें स्वाधीनताका भाव पहलेसे ही जाग उठा था; धर्म्म-
विषयक असन्तोषके कारण वह भाव दिन दिन बढ़ने लगा।
बहुत थोड़े दिनोमें ही भारतका दक्षिण भाग अधिकृत हुआ;
उस समय औरङ्गजेब राजधानीमें मौजूद नहीं थे; वह उस
समय दूरदेशमें प्रभुत्वके अक्षुण्ण रखनेकी वृथा चेष्टामें लगे
थे। मुगल काश्मीरके सिवा हिमालयके दूसरे किसी प्रदेशपर
आधिपत्य स्थापन कर नहीं सके, उन सब जङ्गल गिरि-सङ्कटमें
एकाएक विद्रोहका सूत्रपात हुआ था। इसी समय शिवाजीने
महाराष्ट्रीय जातिकी सोई शक्तिको जगाया। उन्होंने कष्ट-
सहिष्णु पशुपालकोकी रीतिके अनुसार शिक्षा दे एकदल
सुनिपुण सैन्य तय्यार की, बादशाहके अधिकारसे कुछ ही

स्थान था, उनके पिताने यह आश्रम स्थापन किया था। * चमकौरमें गोविन्दका और एक आश्रयस्थान था,—यह स्थान शतद्रु नदीके निम्न-प्रदेशस्थ उपत्यकामें अवस्थित है। यह स्थान तेगबहादुरको बहुत प्रिय था। इस तरह कुछ सुरक्षित दुर्गके अधिपति हो गोविन्द परवर्त्ती पहाड़ी अधिवासियोंके आक्रमणसे निर्व्विघ्न रहने लगे। इसके बाद गोविन्द इन सब अर्द्धस्वाधीन राजाओंके राजकार्य्य परिचालनामें साथ देनेके प्रयासी हुए और इस तरह उन सब अर्द्धस्वाधीन राजाओंपर उनका प्रभाव फैला। उन्होंने मनमें सोचा,—दुर्गम पर्व्वत-श्रेणीमें धीरे धीरे आधिपत्य स्थापित होगा, उससे मुगलराज्यका उच्छेद-साधन अवश्यम्भावी है। गुरुरूपमें गोविन्द बहुत भेंट पाते थे; भारतवर्षके सब स्थानोंसे ही शिष्य संग्रहीत हुए थे, गोविन्दने सामरिक शक्तिकी प्रतिष्ठाकी उपयोगिताका अनुभव किया था। विद्रोहियोंकी तरह निरापद स्थानमें भागनेकी जरूरत समझकर भी अब वह अक्षम नहीं थे।

---

* मखोवालके बहुत ही नजदीक आनन्दपुर अवस्थित है। मखोवाल अपने वासस्थानको गोविन्दने पहले "आनन्दपुर" नामसे अभिहित किया। इससे जान पड़ता है, कि उनकी वासभूमि उनके पिताकी वासभूमिसे अलग और उसका अर्थ;—सुखस्थान था। यहां एक छोटे पहाड़पर एक "चौकी" है। कहते हैं, गोविन्द यहांसे सवा कोस दूर शरनिक्षेप करते थे,—अङ्गरेजी गणनासे इस दूरत्वका परिमाण प्रायः दो माइल है, कारण, पञ्जाबियोंके कोसका परिमाण अपेक्षाकृत कम है

उद्वेगका सञ्चार हुआ। उनके कार्य्यकलापसे पहाडी राजोंके दिलमें पहले भयका उद्रेक हुआ था। जो सब राजाके नामसे अधिष्ठित हुए थे, उनके ध्वंससाधनके लिये उन लोगोंने बादशाहकी सैन्यसे सहायताकी प्रार्थना की। औरङ्गजेबने लाहोर और सरहिन्दके शासनकर्त्ताओंको गुरुके विरुद्ध युद्धयात्रा करनेकी आज्ञा दी; लोगोंने ऐसा शोर मचाया, कि उनकी सहायताके लिये बादशाहके पुत्र बहादुर शाह युद्धक्षेत्रमें अवतीर्ण होंगे। * जो हो, बादशाही फौजने आनन्दपुरमें गोविन्दको घेर लिया। सब तरहके विपत्पातसे गोविन्द घमण्ड दृढ़प्रतिज्ञ और ...टल थे।

---

* मेलकम कहते हैं, (Malcom, 'Sketch,' P. 60, note) —इससे जान पड़ता है, कि यह युद्ध सन् १७०१ ई०में हुआ था। उसी समय बहादुरशाह दक्षिणकी राहसे काबुल भेजे गये थे। वस्तुतः सिखोंके कुछ विवरणसे मालूम हुआ है कि गोविन्दने बहादुरशाहका अनुग्रह पाया था, या उनके खयालसे बहादुर शाहके प्रति ही गोविन्दने दया प्रकाश की थी। "विचित्र नाटक"में गोविन्दने खुद कहा है,—विद्रोहदमनके लिये बादशाहके एक पुत्र भेजे गये थे। लेकिन गोविन्दने उनका कोई नाम नहीं लिखा। एलफिन्ष्टनने भी (Elphinstone, 'History', ii. 545) बहादुर शाहका नाम निर्देश नहीं किया। वस्तुतः जान पड़ता है, कि उन्होंने अनुमान लगा ही कहा है, शाहवंशके एक राजपुत्र सुलतानके नाम विद्रोह दमन करनेके लिये भेजे गये थे,—वह सरहिन्दके सिखोंसे विरुद्ध युद्ध करनेमें नियुक्त हुए थे।

इसी समय उनके कितने ही अनुचरोंने उन्हें छोड़ दिया था। उन्होने उनलोगोंको इहलोक और परलोकके लिये अभिशाप दिया, जिन्होने उनकी सहायता करनेमें द्विधा-भाव प्रकाश किया था। उनलोगोंको उन्होने अपना धर्म्म छोडनेपर वाध्य किया और घृणा और अपमानके साथ उन लोगोको विदा किया। लेकिन उनकी विपद दिनपर दिन बढ़ने लगी, धीरे धीरे सबने ही उन्हें छोड़ दिया। अन्तमें उन्होने देखा,--केवल बहुत थोडे शिष्योने ही उन्हें नहीं छोडा, केवल चालीस अनुरक्त शिष्य उनके आज्ञानुवर्त्ती रहे। उनकी म ता, उनकी दोनों स्त्रियां और दो सबसे छोटे सन्तान,—सभी सारहिन्दमें भाग गये थे; अन्तमें उनके दोनो पुत्र मुसलमानोंके हाथो पतित हुए थे, मुसलमानोंने उन्हें मार डाला। * उन चालीस अनुरक्त शिष्योंने कहा,—वह राजा और गुरु गोविन्दके साथ मृत्युसे आलिङ्गन करनेके लिये तय्यार हैं। उनके दुर्ब्बल-हृदयने भातृवृन्दके अभिशापमोचनके लिये प्रार्थना की, उन्हें मुक्तिकी आशा देनेके लिये अनुरोध किया। गोविन्दने कहा,—उनका क्रोध बहुत दिनोतक स्थायी न रहेगा। गोविन्द अपने यदृष्टपर ही निर्भर कर रहे। चमकौरका दुर्ग उनके अधिकारमें ही था, रातके समय भागकर गोविन्द निर्व्विघ्न वहां पहुंचे।

---

* गोविन्दके सन्तानोका हत्याविषयक विशेष विस्तृत विवरण ब्राउनके "इण्डिया ट्राक्ट"में लिखा है। ('Browne's India Traot ii, 6, 7.)

इस चमकौरके दुर्गमें गोविन्द फिर घेर लिये गये। शत्रुओंने उन्हें आत्मसमर्पण करने कहा, अथवा धर्म्म छोड़नेकी आज्ञा दी। लेकिन उनके पुत्र अजितसिंहने क्रोध प्रकाशकर संवादवाही दूतको निरुत्तर किया। इससे शत्रुओंकी फौज चारों ओरसे सिक्खोंको विपर्य्यस्त करने लगी। गुरु सब जगह ही उपस्थित थे, बाकी दो पुत्र भी उनकी आंखोंके सामने मारे गये; उनकी सुद्धीभर सैन्य भी प्राय: ध्वंस हुई। अन्तमें वह भागनेपर तय्यार हुए। तमसाच्छन्न रजनीके घोर अन्धकारमें गोविन्द शिविरसे बाहर गये लेकिन दो पठान सिपाहियोंने उन्हें पहचान उनकी राह रोकी। कहते हैं,—इन दोनों पठानोंने किसी किसी समय गुरुसे उपकार पाया था। उस समय दोनों पठान सिपाहियोंकी सहायतासे वह बिलोलपुर शहरमें पहुंचे। वहां आ गुरुने इसलाम धर्मके तृतीय प्रचारक पीरमुहम्मदके प्रति विश्वास स्थापन किया, वह उन्हींके पास रहने लगे। कहते हैं,—गुरुने एक समय पीरमुहम्मदके सामने

कुरान पढ़ा था। यहां गोविन्दने मुसलमानोंका अन्न भोजन किया था ;—प्रचार किया था, कि आपत्कालमें मुसलमानोंका अन्न ग्रहण करना दूषणीय नहीं है। इसके बाद नीलवर्णकी पोशाक पहन मुसलमान दरवेशकी तरह गोविन्द भेष बदल भातिन्दाकी पहाड़ी उपत्यकामें पहुंचे। शिष्यलोग फिर उनके पास इकट्ठे हुए, उनकी सहायतासे वह जासूसोंको दूर करनेमें समर्थ हुए। तबसे वह स्थान "मुक्तसर" यानी मुक्तिसरोवरके नामसे अभिहित है। गोविन्द भागकर हांसी और फीरोजपुरके मध्य-पथवर्ती दमदमा या विश्रामस्थान-को गये थे। तब बादशाहके कर्म्मचारियोंने समझा—गोविन्दकी सैन्य और उनकी क्षमता पूरी तरह घट गई है। इसी विश्वासपर उन्होंने बन्धुके सदृमय प्रदेशमें और ज्यादा दूर उनका अनुसरण नहीं किया।

गोविन्दने दमदमेमें कुछ दिनों वासस्थान बनाया, यहां शिष्यकी शक्तिका पुनरुद्दीपन और धर्म्मानुरक्त शिष्योंको मुक्तिकी आशा प्रदानके लिये "दशम-राजाका-ग्रन्थ" नामक "ग्रन्थ" के क्रोडपत्रके प्रणयनमें व्यापृत हुए। "विचित्र नाटक" या "अत्याश्चर्य्य कहानियां" इसके ही भीतर है। "विचित्र नाटक" दोनों ग्रन्थ ही ऐतिहासिक अंश है। जिन जगदीश्वरने पूर्व्वापर उनकी सहायता की थी, उन्हीं सर्व्वशक्तिमानके स्तोत्रसे इस ग्रन्थका उपसंहार हुआ है गोविन्दने कहा है,—उन्होंने जितने कार्य्य सम्पन्न किये हैं, वह स्वतन्त्र ग्रन्थमें सन्निविष्ट होंगे। उन्होंने जिन ईश्वरका साक्षात्कार पाया था, उनकी महिमा और पूर्व्वजन्मके सम्बन्धमें उनकी स्तुति कल्पना इसी—

उसमें संग्रह है। उन्होंने कहा—"उन्होंने जितने काम किये हैं, वह सब सर्व्वशक्तिमान ईश्वरके साहाय्यसे सम्पन्न हुए हैं:—'लो' लौह तलवारको ऐश्वरिक क्षमतासे ही उनको प्राबल्य हुई।" जब गोविन्द इस तरह निर्ज्जनमें रहते थे, तब एक दूतने आ उनसे बादशाहके पास उपस्थित होनेकी आज्ञा प्रकट की। लेकिन उन्होंने राजाके प्रति भर्त्सना-सूचक कुछ कहानियोंमें औरङ्गजेबकी आज्ञाका प्रत्युत्तर प्रदान किया। इन सब कहानियोंमें और अपने भेजे पत्रसे बादशाहके विनीत न हो बल्कि उनका क्रोध बढ़ाया था। उन्होंने बादशाहके कोपकी शान्तिकी चेष्टा नहीं की, बल्कि उन्होंने ऐसा कह बादशाहको भय दिखाया था, कि बादशाहके प्रति ईश्वर कुपित हैं। उन्होंने सम्राटसे कहला भेजा था,—बादशाहपर उनका विश्वास नहीं है, "खालसा" अब भी बादशाहके कु-कार्य्यका बदला लेनेको तय्यार हैं। उन्होंने नानक-प्रवर्त्तित धर्म्म-नीतिका विषय उठाया; अर्जुन और तेगबहादुरकी हत्याकी कहानी भी संक्षेपमें याद करा दी। उनके प्रति जो अन्याय व्यवहार किया

सार्थकता प्रतिपन्न होनेपर केरे निर्दोष साबित होते हैं। इसके बाद और एकबार औरङ्गजेबके सामने उपस्थित होनेके लिये गुरु आये थे। गुरु खद ही उनके पास जानेके लिये तय्यार थे। सुनते हैं;—इसी उद्देश्यसे बादशाहकी मृत्यु के कुछ दिनों पहले गोविन्द दक्षिणकी ओर बढ़े थे। *

सन् १७०७ ई०के शुरूमे औरङ्गजेबकी मृत्यु हुई। उनके ज्येष्ठपुत्र बहादुरशाह सिंहासनपर अधिकार करनेके लिये काबुलसे आये। उन्होंने आगरेके पास एक भाईको पराजित किया और मार डाला, फिर दक्षिण ओर जा दूसरे भाई कामबख्शको पराजित किया। कामबख्श बहुत घायल हुए और उससे ही उनकी मृत्यु हुई। जिस समय बहादुरशाह इस युद्धमें फंसे थे, उस समय गोविन्दको उन्होंने अपने शिविरमें बुलाया था। गुरु वहां गये, बहादुर शाहने उन्हें सम्मानके साथ ग्रहण कर बहुत सद्व्यवहार किया, गुरुने गोदावरी उपत्यकाके सैन्याध्यक्षका पद पाया। शायद बादशाहने समझा था;—राजद्रोही महाराष्ट्रोंके विरुद्ध विद्रोही "जाट" लोगोंके नेताका नियोग बहुत फलदायक होगा। उस समय गोविन्दने

---

* गोविन्दका वीर पुरुषोचित यह विवरण शुकासिंह विरचित "गुरु विलासमें" "विचित्र नाटक" और "गुरुमुखी" और फारसी भाषाके सङ्कलित प्रचलित ग्रन्थोमें लिखा है। इन सब ग्रन्थोका अधूरी प्रतिलिपिका आखिरी हिस्सा डाक्टर मेक्ग्रेगर द्वारा अङ्गरेजी भाषामें अनुवादित हुआ है। ('History of the Sikhs, p-p. 79—99)

देखा, कि बादशाहके अधीन काम ग्रहण ना करना बादशाहके सन्देह निरसन और अपने सैन्यदलके तय्यार करनेका प्रकृष्ट उपाय है। * दमदमेमें रहनेके समय गुरुने शिष्योंको भय दिखाया, कि अबसे जो उन्हें परित्याग करेंगे, उनके पूरे अनिष्टकी सम्भावना है। उन्होंने साहसी वीर बान्दाको दक्षिण प्रदेशका अस्त्रस्वरूप नियोग किया। शतद्रु के दोनो किनारे कितने ही सिख फिर इकट्ठे हुए। लेकिन इसके पहले ही इस संसारमें गोविन्दके कामका अन्त हो गया। उनके अदृष्टमें ऐसा— नहीं था, कि गोविन्द और कुछ लाभ करें। इसी समय एक अर्द्ध-व्यवसायी और अर्द्ध-योद्धा अफगान सामरिक विभागके काममें नियुक्त हुए थे, गोविन्दने उनके पाससे बहुतसे घोड़े

---

* गुरुने दाक्षिणात्यमें युद्ध करनेकी आज्ञा पाई;—सब सिख ग्रन्थकार इसे एकवाक्यसे स्वीकार करते हैं। लेकिन आजकलके मुसल्मान लेखक लोग कहते हैं,—पटनेमें गोविन्दकी मृत्यु हुई। समसामयिक ऐतिहासिक काफीखाँने बहादुरशाहके उदार-व्यवहारकी बातका समर्थन किया है। काफीखाँने कहा है, कि मुगल सिपाहियोंमें उन्होंने एक विशिष्ट पद पाया। (See Elphinstone 'History of India,' ii, 566, note), इस विषयमें कोई सन्देह न रहनेपर भी उन्होंने इसका समर्थन किया है, कि गोदावरी नदीके किनारे गोविन्दकी मृत्यु हुई। लोक परम्परागत जितने विवरण हैं, उनमें देखा गया है, १७६५ संवत्‌के कार्तिक महीनेमें या सन् १७०८ ई०के अक्तूबरमें "नादेर" नामक स्थानमें गुरु मारे।

संग्रह किये थे। * इन सौदागर या भृत्यने गुरुको अपने अभावकी बात प्रकाश की, वह प्राप्य रुपये पानेका दावा करने लगे। दावा बहुत रुपयोंका था ; सुतरां रुपये देनेमें विलम्ब होने लगा ; इस कारण अधीर हो उन अफगान व्यवसायीने गुरुके प्रति क्रोध प्रकाश किया। अन्तमें उसकी असंयत बातोंसे उत्तेजित हो तलवारके एक आघातसे गुरुने उसे मार डाला। मरे पठानकी मृत देह स्थानान्तरित की और कब्रमें रखी गई। उनके परिवारवर्गके सबने ही अधिनायककी मृत्युसे गोविन्दके निकट वश्यताका भाव प्रकाश किया। लेकिन उनके पुत्र लोग मनही मन पिताकी मृत्युके बदलेकी कामना पालने लगे, और उन साधनका सुयोग ढूंढने लगे। एक दिन वह लोग गुप्तभावसे गुरुके एकान्तवासमें गये, गुरु उस समय सो रहे थे ; उनके

* पहले छोटे छोटे दलसे अफगान और तुर्कमान सेनानायक-गण घोड़ा बेच रोजाना खर्च निकालते थे। उनके आक्रमणके समय बीच बीचमें समय समयपर भारतवर्षमें उपनिवेश स्थापित हुआ था, उसका अनुसरण करना बहुत ही आमोद-जनक है। लोगोंसे सुनते हैं,—मणिकला नगरके ध्वंसकारी और हरियानेके अन्तर्गत भाटनीके प्रतिष्ठाता,—सभी भिन्न-देशवासी थे। बादको उन्होंने उपनिवेश स्थापन किया था। वह अवस्थानुसार घोड़े आदि बेच जीविका-निर्वाह करते थे। वर्तमान समय भारतीय योद्धा अमीरखां भी खाद्यके लिये इसी तरह घोड़े बेचनेपर बाध्य हुए थे। ('Memoirs of Ameer Khan,' p. 16)

रक्षकोंमें कोई वहां नहीं था। उस अवस्थामें ही उन लोगोंने उनपर सांघातिक अस्त्राघात किया। गोविन्द उठ बैठे, हत्याकारी लोग पकड़े गये। लेकिन उन लोगोंके मुखमण्डलपर अस्वाभाविक विकट हास्यच्छटाने विकाश पाया; वह लोग अपने दोष-सस्खालनके लिये चेष्टा करने लगे;—उन्होंने इस कार्य्यकी सार्थकता सम्पादनके लिये युक्तिजाल फैलाया, तरह तरहके तर्ककी अवतारणा की। गुरुने सब सुना, उनके पिताके अदृष्टकी बात याद की; यह भी उनके मनमें उदय हुआ कि अपने पिताका बदला लेना बाकी है। उन्होंने दोनों हत्याकारोंसे कहा;—उन्होंने बहुत ठीक काम किया है। तब गुरुने आज्ञा दी,—इनका किसी तरहका शास्तिविधान न करके उन्हें छोड़ दिया जाय। * स्वयं गुरु अशक्त थे, इसलिये

शिष्योंने उनकी मृत्युके समय बहुत दुःखित भावसे उनसे पूछा,—कौन उन्हें सत्यधर्मका ज्ञान प्रदान करेगा? उनके इहलोक परित्याग करनेपर कौन उन लोगोंको विजय-पथपर परिचालित करेगा? उस समय गुरुने सबको आनन्द करनेका आदेश किया, उन्होंने सोचा,—निर्दिष्ट दश गुरुओंने उनका कर्त्तव्य पालन किया है। लेकिन वह इस समय ईश्वर या अमर गुरुको "खालसा" समर्पण किये जाते हैं। गोविन्दने कहा,—"जो गुरु साक्षात्कारके इच्छुक हों, वह नानकके ग्रन्थका अनुसन्धान कर देखें। गुरु सदा 'खालसा'के साथ वास करेंगे। दृढ़प्रतिज्ञ और विश्वासी हो, जहां पांच सिख इकट्ठे समवेत होंगे, वहीं मैं भी उपस्थित रहूंगा।" *

कि मानो उन्हें खुद अपना जीवन भाराक्रान्त जान पड़ता था और उन लोगोंके हाथसे मरनेके लिये वह तय्यार थे। सेयर-मुताखरीनसे मालूम हुआ, कि (i. 114), गोविन्द पुत्रशोकसे मृत्युमुखमें पतित हुए। (Compare Malcolm, 'Sketch', p. 70 note, and Elphinstone, 'History' ii. 564) नादेर धर्ममन्दिरके पुरोहितोंने और एक विवरण दिया है। वह लोग कहते हैं,—हरगोविन्दने पायेन्दाखांका हत्या-विधान किया, पायेन्दाखांके पौत्रने ही गोविन्दको मारा था; किन्तु इस विवरणसे यह मालूम नहीं होता, कि गोविन्दके साथ उन लोगोंके विवादका और भी कोई कारण था।

* मृत्युके समय गुरुने जिस आदेशका प्रचार किया, उसके बारेमें यह विवरण ही प्रचलित है। लोगोंका विश्वास है,—गो

सन् १७०८ ई०में गोदावरी नदीके किनारे "नादेर" नामक स्थानमें गोविन्द मारे गये। † उस समय गोविन्दकी उम्र

न्दने नानकप्रवर्त्तित धर्म्मका उद्देश्य पूर्ण किया था, वह लोगोंके उद्देश्योपयोगी हुआ था, आजकल वह शैव-धर्म्मकी एक प्रधान नीति है। गोविन्दकी माता और स्त्री, गोविन्दकी मृत्युके बाद भी कुछ काल जीवित रहीं। मृत्युके समय उन्होंने कहा था, कि साधारण "खालसा" लोगोंमें ही गुरु अवस्थित हैं; कोई निर्दिष्ट पुरुष गुरु होनेके उपयुक्त नहीं है। इस कारण सिखोंमें उत्तम धार्म्मिक पुरुष भी सम्मानजनक 'गुरु' नामसे अभिहित नहीं होते। 'भाई" शब्द उनकी सबसे ऊंची धर्म्मोपाधि है। मञ्चकृत वार्त्तामें इसका अर्थ "भ्राता" है; लेकिन व्युत्पत्तिगत अर्थसे अङ्गरेजी "वयोज्येष्ठ" (Older) शब्दके साथ इसका सादृश्य है।

४८ सालको थी। यदि कोई समझें, कि गोविन्दकी इस रहस्य-मय अकालमृत्यु से उनके सब जीवनका आशाभरोसा मिथ्या हुआ,—तो उन्हें याद रखना चाहिये,—

"मनुष्य निश्चय ही कल्पनाका गुलाम है। कल्पनाके मोह-मय पथमें वह मूढ़ सदा भीषण उत्साहके साथ दौड़ रहा है।" *

जब मुहम्मद मक्के से भागे, उस समय शायद "एक अरबके बरछाके आघातसे समग्र जगत्का इतिहास परिवर्त्तित होता था", † पद्यमें वर्णित सत्यकी प्रतिमूर्त्ति विख्यात एकिलेस (Achilles) ट्रय नगरपर बिना अधिकार किये ही भाग गये थे। "मारसिडन' लोगोंके अधिपतिकी थोड़ी उम्रमें मृत्यु-मुखमें पतित होनेपर भी, चिरकीर्त्ति अर्ज्जन की थी।

या चार आना और इसके सिवा तीर्थयात्राके समय अन्यान्य उप-हार भी प्रदान करते हैं।

रणजित्सिंह भी नादेरमें बहुत रुपये भजते थे। लेकिन उनके दिये रुपयोंसे जो इमारत बनना शुरू हुई, वह इस समय भी अधूरी है।

नादेरका एक और नाम,—"उपचाला" नगर है। दक्षिण और मध्यभारतने यह भक्तिसूचक "गुरुद्वारा" अर्थात् "गुरुगृह" नामसे अभिहित है।

* Sir Marmaduke Maxwll, a dramatic, poem, act, iv, scene 6.

† Gibbon, Decline and Fall of the Roman Empire ix 285.

सन् १७०८ ई०में गोदावरी नदीके किनारे "नादेर" नामक स्थानमें गोविन्द मारे गये। † उस समय गोविन्दकी उम्र

न्दने नानकप्रवर्त्तित धर्म्मका उद्देश्य पूर्ण किया था ; वह लोगोंके उद्देश्योपयोगी हुआ था, आजकल वह शैव-धर्म्मकी एक प्रधान नीति है। गोविन्दकी माता और स्त्री, गोविन्दकी मृत्युके बाद भी कुछ साल जीवित रहीं। मृत्युके समय उन्होंने कहा था, कि साधारण "खालसा" लोगोंमे ही गुरु अवस्थित हैं ; कोई निर्दिष्ट पुरुष गुरु होनेके उपयुक्त नहीं है। इस कारण सिखोंमें श्रेष्ठतम धार्म्मिक पुरुष भी सम्मानजनक "गुरु" नामसे अभिहित नहीं होते। "भाई" शब्द उनकी सबसे ऊंची धर्म्मोपाधि है। मशहूर बातोंमें इसका अर्थ "भ्राता" है ; लेकिन व्युत्पत्तिगत अर्थसे अङ्गरेजी "वयोज्येष्ठ" (Older) शब्दके साथ इसका सादृश्य है।

४८ सालको थी। यदि कोई समझें, कि गोविन्दकी इस रहस्य-मय अकालमृत्यु से उनके सब जीवनका आशाभरोसा मिथ्या हुआ,—तो उन्हें याद रखना चाहिये,—

"मनुष्य निश्चय ही कल्पनाका गुलाम है। कल्पनाके मोह-मय पथमें वह मूढ़ सदा भीषण उत्साहके साथ दौड़ रहा है।" *

जब मुहम्मद मक्केसे भागे, उस समय शायद "एक अरबके बरछाके आघातसे समग्र जगत्का इतिहास परिवर्त्तित होता था", † पद्यमें वर्णित सत्यकी प्रतिमूर्त्ति विख्यात एकिलेस (Achilles) ट्रय नगरपर बिना अधिकार किये ही भाग गये थे। "मारसिडन' लोगोंके अधिपतिके थोड़ी उम्रमें मृत्यु-मुखमें पतित होनेपर भी, चिरकीर्त्ति अर्ज्जन की थी।

या चार आना और इसके सिवा तीर्थयात्राके समय अन्यान्य उप-हार भी प्रदान करते हैं।

रणजित्सिंह भी नादेरमें बहुत रुपये भेजते थे। लेकिन उनके दिये रुपयोंसे जो इमारत बनना शुरू हुई, वह इस समय भी अधूरी है।

नादेरका एक और नाम,—"अपचाला" नगर है। दक्षिण और मध्यभारतमें यह भक्तिस्थल "गुरुद्वारा" अर्थात् "गुरुगृह" नामसे परिचित है।

* Sir Marmaduke Maxwll, a dramatic, poem, act, iv, scene 6.

† Gibbon, Decline and Fall of the Roman Empire ix 285.

सन् १७०८ ई०में गोदावरी नदीके किनारे "नादेर" नामक स्थानमें गोविन्द मारे गये। † उस समय गोविन्दकी उम्र

न्दने नानकप्रवर्त्तित धर्म्मका उद्देश्य पूर्ण किया था ; वह लोगोंके उद्देश्योपयोगी हुआ था , आजकल वह शैव-धर्म्मकी एक प्रधान नीति है। गोविन्दकी माता और स्त्री, गोविन्दकी मृत्युके बाद भी कुछ काल जीवित रहीं। मृत्युके समय उन्होने कहा था, कि साधारण "खालसा" लोगोंमे ही गुरु अवस्थित हैं ; कोई निर्दिष्ट पुरुष गुरु होनेके उपयुक्त नहीं है। इस कारण सिखोंमें श्रेष्ठतम धार्म्मिक पुरुष भी सम्मानजनक 'गुरु" नामसे अभिहित नहीं होते। "भाई" शब्द उनकी सबसे ऊंची धर्म्मोपाधि है। सशक्त बातोंमें इसका अर्थ "भ्राता" है ; लेकिन व्युत्पत्तिगत अर्थसे अङ्गरेजी "वयोज्येष्ठ" (Older) शब्दके साथ इसका सादृश्य है।

† कहते हैं,—गोविन्दने १७१८ संवत्के पौष महीनेमें सन् १६६१ ई०के लाखोर या सन् १६६१ ई०के शुरूमें जन्म लिया था। लेकिन उनकी मृत्यु १७६५ सम्वत् या सन् १८०८ ई०में हुई इसमें किसीका मतभेद दिखाई नहीं देता।

४८ खालसो थी। यदि कोई समझें, कि गोविन्दकी इस रहस्य-मय अकालमृत्युसे उनके सब जीवनका आशाभरोसा मिथ्या हुआ,—तो उन्हें याद रखना चाहिये,—

"मनुष्य निश्चय ही कल्पनाका गुलाम है। कल्पनाके मोह-मय पथमें वह मूढ़ सदा भीषण उत्साहके साथ दौड़ रहा है।" *

जब मुहम्मद मक्केसे भागे, उस समय शायद "एक अरबके बरछाके आघातसे समग्र जगत्‌का इतिहास परिवर्त्तित होता था", † पद्यमें वर्णित सत्यकी प्रतिमूर्त्ति विख्यात एकिलेस (Achilles) ट्रय नगरपर विना अधिकार किये ही भाग गये थे। "मारसिडन' लोगोंके अधिपतिके थोड़ी उम्रमें मृत्यु-मुखमें पतित होनेपर भी, चिरकीर्त्ति अर्ज्जन की थी।

या चार आना और इसके सिवा तीर्थयात्राके समय अन्यान्य उप-हार भी प्रदान करते हैं।

रणजित्‌सिंह भी नादेरमें बहुत रुपये भजते थे। लेकिन उनके दिये रुपयोंसे जो इमारत बनना शुरू हुई, वह इस समय भी अधूरी है।

नादेरका एक और नाम,—"अपचाला" नगर है। दक्षिण और मध्यभारतमें यह भक्तिस्थल "गुरुद्वारा" अर्थात् "गुरुगृह" नामसे अभिहित है।

* Sir Marmaduke Maxwll, a dramatic, poem, act. iv. scene 6.

† Gibbon, Decline and Fall of the Roman Empire ix 285.

"सिमय" और "स्कामाण्डर" लोगोंके साथ युद्धके समय वह जिस तुच्छ मृत्यु भयसे भीत हुए थे, उनके अदृष्टमें वैसी ही नृशंस और तुच्छ मृत्यु ही संघटित हुई थी। पूर्व्व और पश्चिम भूखण्डमें जिनकी अक्षयकीर्त्ति विराजमान थी, जिनकी यशोरश्मिसे दिग्दिगन्त उद्भासित था; जिन्होंने सर्व्वान्तःकरणसे जेरुसलीमके उद्धारके लिये सर्व्वस्व त्याग किया था;—ईश्वरके पवित्र नगरके विधर्म्मीके करतलगत रहनेके कारण और उनका उद्धारसाधन न कर सकनेपर, वह वीरश्रेष्ठ रिचार्ड भी लज्जा और दुःखसे अधोवदन हुए थे, उन्होंने फिर मुँह न दिखाया। वह जिस पुण्यभूमिके उद्धारसाधनमें अक्षम हुए, उस पुण्यभूमिकी ओर उन्होंने फिर पलटकर न देखा। वह पर्व्वतसे उतर गुलामोंकी जञ्जीरमें आबद्ध हुए। अन्तमें अज्ञात मृत्युसे उनका आशा भरोसा सभी खतम हुआ। * जो हो, कार्य्यसिद्धि द्वारा हर समय महत्वका अन्दाजा नहीं होता। सिक्खोंके अन्तिम गुरु गोविन्द जीसे जो अपना उद्देश्य साधन करनेमें

---

* सिंहतुल्य राजाका विषय जाननेके लिये गिबनकृत रोमराज्यकी अवनति और अधःपतन (Gibbon, Decline and Fall of the Roman Empire xi. 143) देखना चाहिये। टर्नर-कृत रुफिनस और रिचार्डका परस्पर मिलान देखना चाहिये। (Turner's History of England, P. 3[illegible]) रुफ़स और सालादीनका परस्पर आलोचन तुलनामें [illegible] नायकताके बारेमें हैलमकी सम्मति देखना चाहिये। (Hallam Middle Ages ii. [illegible])

समर्थ नहीं हुए, लेकिन वह एक पराजित और अधःपतित जातिकी विलुप्तप्राय: अस्तित्व और सोई वृत्तिको उत्तेजित और कार्य्यक्षम कर गये। नानक-प्रवर्त्तित धर्म्म-छत्रकी बलसे समाज-स्वाधीनता और जातीय प्राधान्यके अभिनव सुखकी लालसासे वह सभी उन्नत हो उठे; उन लोगोंका मन उस स्वाधीनता-सुखके पानेके लिये उत्कट इच्छासे परिपूर्ण हुआ। उस समय भी जीवन्त गोविन्दने उनमें स्वर्गीय शक्ति सञ्चालित किया, हृदयमें उद्दीपनाका अनन्तस्रोत प्रवाहित हुआ। समग्र सिख जाति एक ही जीवन्तआत्माकी अधिकारी हुई। गोविन्दने अपने प्रचारित धर्म्म और उपदेशोंसे केवल उन लोगोंकी मानसिक शक्तिको उन्नत और परिवर्त्तित किया था, उन लोगोंका शरीर सुगठित और क्षमताशाली हुआ था। इससे उन लोगोंने अशेष उन्नति पाई थी। इस तरह सिख जातिकी स्वाभाविक प्रकृति और वाह्य आकृतिकी उन्नति साधित हुई थी। एक सिख राजाको उनकी प्रतापशाली देह और स्वाधीन और वीरोचित आकृति देख सुन्दर रूपसे पहचान सकते हैं। किन्तु सिखधर्म्मके एक गुरु उनसे ज्यादा सहज ही पहचाने जा सकते हैं; कारण, उनकी आत्मा ईश्वर-सान्निध्य पानेके लिये व्यग्र थी;—उनकी आत्मा सदा ही ईश्वरकी चिन्तामें मग्न थी। उनके वह सब लक्षण देहसे सहज ही प्रकटित होते और उससे ही गुरु आसानीसे पहचाने जाते हैं। * जो हो, इन

* ऐसा वाह्यिक परिवर्त्तन पहले सर अलक्जन्डर वार्नसने देखा था। (Travels i 285, and ii, 39,) इलफि

सभी एक भाव—एक चिन्ता मनमें पोषण करते हैं। इस अभिन्न उद्देश्यसाधनसे ही वह लोग एकता-सूत्रमें एक ही समादायभुक्त हुए थे। उनके इस उद्देश्य—इस भावने और किसीके मनमें स्थान नहीं पाया। एक समय एक सम्प्रदाय खृष्ट-धर्म्मसे दीक्षित हुआ। यूनान और रोम देशके पण्डित लोग इन नवजीवनप्राप्त मनुष्योंकी प्रकृत शक्ति और तेजकी उपलब्धि कर नहीं सके। सुतरां सिखोंकी प्रकृत शक्तिको न समझकर उस विषयमें जितनी भ्रमात्मक घटनायें दिखाई देती हैं, उनसे लोगोंको ताज्जुबमें आनेकी कोई वजह नहीं है, या अङ्गरेज ग्रन्थकारोंके प्रति घृणा प्रकाश करनेकी जरूरत नहीं है। * टासिटस और सुहरोनियस समझते थे, पुराने क्रिस्तान

---

* ग्रन्थकर्त्ता प्रधानतः एच० एच० विलसनकी बात कहते हैं। उनकी शिक्षा और परिश्रमसे भारतवर्षके इतिहासकी ऐसी उन्नति साधित हुई है। (See, 'Asiatic Researches' xvi, 237, 238 and 'Continuation of Mill's History,' vii, 101 102.) मेलकमने भी यहां एकमत ग्रहण किया है (Malcolm, 'Sketch,' p. 144, 148, 150); लेकिन दूसरी जगह उस मतका वैलक्षण्य दिखाई देता है। ('Sketch, p. 43) जो हो, इन सब मतोंके साथ एलफिनस्टनके अधिकतर विशुद्ध मतकी तुलना की जा सकती है। (Elphinstone, 'History of India, ii, 562, 564) और सर अलकजन्दर बरनस (Sir, Alex, Burnes, 'Travels', i, 214, 28) . मेजर ब्राउनका मन्तव्य भी (Major Browne s, I

लोग यहूदी जातिके एक सम्प्रदाय विशेष है। वह दोनो सम्प्रदायके मौलिक पार्थक्य भेद करनेमें असफल हुए थे। इस धर्मको जिस गुप्त शक्ति और प्रकृत श्रेष्ठत्वके प्रभावसे उन सम्प्रदायकी सभ्यता दिन दिन उन्नतिके पथकी ओर दौड़ रही थी; जिससे उस सभ्यताकी चीण रश्मिकी निर्म्मल ज्योत्स्नालोकसे दिग्दिगन्त उद्भासित होने-लगा,—वह लोग उसका प्रकृत तथ्य या प्राणभुक्त श्रेष्ठत्व निर्णय करनेमें समर्थ नहीं हुए। *

गोविन्दके प्रिय शिष्य बन्दा दक्षिण भारतवर्षके रहनेवाले थे, वह "वैरागी" सम्प्रदायके एक संन्यासीके नामसे परिचित

'Tracts', ii, 4) इसके साथ तुलनीय है। मेजर माउनने प्रतिपन्न किया है, कि प्रटेष्टाण्ट और रोमियोंमें जो एकता थी, सिख और हिन्दुओंके धर्म्ममें भी परस्पर वैसी ही समता दिखाई देती है।

* See the 'Annals of Tacitus,' 'Murphy's Trac

है। * गुरुकी मृत्यु के बाद उनके शिष्योंकी कार्य्यप्रणालीकी

फिर, वोपिसकस नामक एक अपरिचित ऐतिहासिकने बादशाह हाड्रियान लिखित एक पत्रकी बात लिखी है। उसमें देखा गया है,—"सिरापी"के भक्तवृन्दके साथ खृष्टानोंकी तुलना की गई है, उससे सन्देह और भी बढ़ा है। विशप लोग प्रधानतः उन अस्वाभाविक देवताके घोर पक्षपाती और उपासक हैं, इन देवताकी उपासना "पलेमी" जाति द्वारा मिश्रमें पहले फैली। (Waddington, 'History of the Church,' P. 37.) यूसिवियसने खुद खृष्टान और एसेनिक् थिरापिउटी (Essenic Therapeutae) इन दोनोंने उसमें कोई विशेष पार्थक्य नहीं देखा। (Strauss, 'Life of Jesus,' i, 294) लेकिन अन्तिम एक सम्प्रदाय या जातिविशेष है,—यह लोग ऐश्वर्य और बुद्धिके अगोचरकी प्रहेलिकाका ढङ्ग रखते हैं।

यहां उल्लेख करना कर्त्तव्य है, कि मिष्टर न्यूमेनने भी टेसिटसकी इस वर्णनाको उद्धृत किया है,—यह वर्णना असलमें यहूदियोंके बदले खृष्टानोंको ही निर्द्देश करती है। (On the Development of Christian Doctrine, P. 205, &c) शायद, इस विषयमें उनकी ही वर्णना ठीक है। लेकिन पूर्व्ववर्त्ती पण्डितोंके मतके साथ उनके मतविरोधके किसी कारणका उन्होंने उल्लेख नहीं किया।

* कहीं कहीं देखा गया है, कि वन्दा उत्तर भारत

वर्णनासे उनगुरुकी बालवत्ता, सैन्यपरिचालन और उनके धर्मोन्मादकी बात अच्छी तरह समझमें आती है। जब बन्दा उत्तर-पश्चिम ओर पहुंचे, तब विजयकेतनस्वरूप, गोविन्दके द्वारा उठा बहुत सिख उनके पास इकट्ठे हुए। बन्दाके आनेसे सरहिन्दके निकटवर्ती मुगल-जमींदारी लोग भाग गये, तब उन्होंने उस प्रदेशके शासनकर्त्ताको पराजित किया, वह युद्धमें मारा गया। सरहिन्द लुट गया; गोविन्दके बच्चोंके शत्रुके हाथो फेंकनेवाले हिन्दू और उनके निधनकारी मुसलमान लोग, सभी प्रतिशोध-परवश सिखों द्वारा मारे गये। * इसके

रहनेवाले थे। मेजर ब्राउनने जिन अन्धकारका अनुवाद किया है, वह कहते हैं, कि जलन्धर दोआबमें बन्दाका जन्म हुआ। ('India Tracts, ii, 9)

बाद बन्दाने सरमूर पर्व्वतके नीचे एक किला तय्यार कराया, * शतद्रु और यमुनाका मध्यवर्त्ती भूमिखण्ड उनके अधिकृत हुआ, उस समय उन्होंने सहारनपुरका जिला ध्वंस कर डाला। †

इसी समय बहादुरशाहने अपने विद्रोही भाई कामबख्शको पराजित किया। महाराष्ट्रोंके साथ उनकी सन्धि स्थापित हुई। उस समय वह राजपूतानेके राजाओंको अधीनता-पाशमें आवद्ध करनेपर कृतसङ्कल्प हुए। इसी समय उन्होंने सुना,—अज्ञातकुलशील बन्दा द्वारा राजकीय सैन्य पराजित हुई है और दुश्मनका दल नगर लूट रहा है। ‡ वह बहुत जल्द पञ्जाब गये। दक्षिणापथसे विजय पा राजधानीमें प्रवेश करनेके लिये उन्होंने वहां जरा भी देर नहीं की। इसी

नाम वजीरखां था,—फौजदारखां नहीं। असलमें वजीरखां इस प्रदेशके "फौजदार" अर्थात् सेनानायक थे सही, लेकिन उस समय यह शब्द नामस्वरूप प्रयुक्त हुआ था और कोई उच्चपदस्थ कर्म्मचारी बताता है।

* सदवारा अम्बालेके उत्तर-पूर्व्व अवस्थित है। उसके पास ही मुखलिसपुर है। जान पड़ता है यही, सैरुलमुताख-रीनका "लोगढ़ या लौहदुर्ग है। (Seirool Mutakhereen, i, 115)

† Forster 'Travels' i, 304.

‡ निम्नलिखित ग्रन्थ देखना चाहिये,—Elphinstone, 'History of India' ii, 501 and Forster, 'Travels, i, 304 सन् १७०८-१०में यह संघटित हुआ।

समय उनके सेनापतियोंने पानीपतके पास एक दल सिखसैन्यको परास्त किया; बन्दा अपने किलेमें फिर शत्रु-सैन्य द्वारा परिवेष्टित हो अवरुद्ध हुए। लेकिन इस अवरोधके समय सिखधर्म्मके दीक्षित एक धर्म्मानुरागी अपनी इच्छासे नायकका वेश बना छद्मवेशसे जब बाहर निकल रहे थे, तब शत्रुओं द्वारा वह पकड़े गये और बन्दा अपने सब अनुचर वर्गके साथ वहांसे भाग गये। * इसके बाद कुछ सामान्य सामान्य युद्धमें जीतकर लाहोरकी उत्तरवर्त्ती पर्वत-मालामें जम्बूके पास बन्दाने अपना आवासस्थान स्थापित किया और वह पञ्जाबके बहुत अच्छे भूमिखण्डको बांटने लगे। इसी समय बहादुरशाह खुद लाहोरतक बढ़ आये थे; लेकिन सन् १७७२ ई०के फरवरी महीनेमें उनकी मृत्यु हुई। †

बादशाहकी मृत्यु होनेपर सिंहासनके लिये फिर विवाद उप स्थित हुआ। बादशाहके ज्येष्ठपुत्र जहांदारशाहने प्रायः एक वर्ष अपनी क्षमता अक्षुण्ण रखी थी, लेकिन सन् १७१३ ई०के फरवरी महीनेमें उनके भतीजे फर्रुखसियरने उन्हें पराजित

लिया और मार डाला। मुगलोंकी इन सब आभ्यन्तरीण विशृङ्खला और अन्तर्द्रोहसे सिखोंको बहुत सुविधा हुई; वह लोग फिर इकट्ठे हो अजेय हो गये और उन लोगोंने विपाशा और इरावतीके मध्यवर्ती स्थानमें "गुरुदासपुर" नामक एक वृहत् दुर्ग निर्म्माण करया। * लाहोरके शासनकर्त्ताने बन्दाके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की; लेकिन एक खण्डयुद्धमें वह पराजित हुए। तब सिखोंने सरहिन्दकी ओर एक दल सैन्य भेजी; वहांके शासनकर्त्ता वाजिदखां उनकी चाल रोकनेके लिये आगे बढ़े। एक धर्म्मोन्मत्त पुरुषने मृत्यु-पद विशेषसे उनके शिविरमें प्रवेशकर, उनपर गुरुतर रूपसे अस्त्राघात किया; उसी आघात से उनकी मृत्यु हुई। अधिनायककी मृत्युसे मुसलमान लोग छत्रभङ्ग हो भागनेपर बाध्य हुए; जान पड़ता है, यह नगर फिर दूसरी बार विजयोन्मत्त सिखोंके हाथमें नहीं आया। †

---

* गुरुदासपुर कुलानौरके बहुत नजदीक अवस्थित है; यहां अकबर बादशाहपदपर अभिषिक्त हुए थे। फारष्टर, मेलकम और अन्यान्य ऐतिहासिकोंने जिस साधारण विवरणका अनुसरण किया है, उससे जान पड़ता है, कि इस स्थानमें ही वर्णित "लोगढ़" अवस्थित है। जिन सब सारस्वत ब्राह्मणोंने सिखोंकी आचार-पद्धति और धर्म्मनीति अधिकांशरूपसे ग्रहण की थी, यहां आजकल उनका एक धर्म्म-मन्दिर प्रतिष्ठित है।

† तब भी, कितने ही विवरणमें देखा गया है, कि बन्दाने फिर सरहिन्दपर अधिकार किया था।

तथा अर्द्ध सभ्य और कुसंस्काराच्छन्न विजयियोंके स्वभावतः अव-मानणासूचक और लज्जास्कर प्रथानुसार दिल्लीकी ओर जा रहे थे, उस समय विजयी सिखोंके कटे शिर बन्दा और औरोंके सामने भालेसे वेध वहन करने लगे। * सिख लोग सभी धर्म्मके लिये प्राण-विसर्ज्जन करनेपर तय्यार हुए। उन लोगोंने आप-समें विवाद किया,—कौन आगे मारेगा। सभी इस काममें आगे हुए, सुतरां उनमें भी विवाद उपस्थित हुआ। अन्तमें आठवें दिन बन्दा खुद ही विचारकोंके आगे अभियुक्त हुए। विचारसे उनका दोष प्रकट होनेपर, एक सम्भ्रान्त मुसलमानने उनसे पूछा,—एक विचक्षण और ज्ञानी पुरुष हो, उन्होंने कैसे पापकार्य्य किया। यह जानकार भी, कि इस पापकार्य्यसे वह

क्षेत्रमें अवतीर्ण होनेसे पहले अब्दुलसमद एक साल लाहोरमें रहे, उसी विवरणके अनुसार मालूम हुआ,—सब पहाड़ी राजा उनकी सहायताके लिये आये थे; यह दोनों घटना ही सम्भव-पर जान पड़ती हैं।

* समसामयिक इतिहासके विवरणका उल्लेखकर सैरुल-मुताखरीनके लेखक (Seirool Mntakhereen, i 118, 120) और एलफिन्स्टन (Elphinstone 'History, ii, 576) दोनोंने ही कहा है,—सिख कैदियोंकी संख्या कुल ७४० थी। बाजिद-खांकी वृद्धा माताने किसतरह अपने पुत्रहन्ताको मारा था, वह सैरुलमुताखरीनमें लिखा है। जब वह तथा अन्यान्य कैदी लाहोरकी राहसे जा रहे थे, तब बाजिदखांकी माताने शिरपर एक पत्थर फेंक पुत्रहन्ताको मारा था।

अध्यवसायशील और साहसी सेनापति समझ सभी उनकी श्रद्धा करते थे। तब भी उनके अनुचरोंमें किसीने उनके प्रति सहानुभूति प्रकाश नहीं की। नानक और गोविन्दने जो धर्म्म-संस्कार प्रचार किया था बन्दा उस संस्कार-नीतिके गूढ़ उद्देश्य समझानेमें समर्थ नहीं हुए; सम्प्रदायविशेषकी नीति उनके हृदयमें बद्धमूल हुई थी। नानक और गुरु गोविन्दने जो धर्म्मनीति,—जो आचार पद्धति-प्रचार की थी, बन्दा उसके ही संस्कार-साधनमें प्रयासी हुए थे; अपने संन्यासधर्म्मकी रीति और हिन्दुओंकी धर्म्मनीति उसमें मिला उन्होंने उसी उद्देश्य-साधनकी चेष्टा की थी। धर्म्मानुरागी सिखोंने उनकी उस विधिके विरुद्ध संस्कार-साधनमें बाधा दी थी। शायद, बन्देके इस अवैध और अयाचित विधिप्रवर्त्तनकी चेष्टाके कारण, सिख लोग उनके जैसे एक दक्ष और अध्यवसायशील नायकके प्रति अवमानना दिखानेपर बाध्य हुए थे। *

---

* Compare Malclm, "Sketch", p. 83, 84, सैरुलमुताखरीनसे मालूम हुआ है;—बन्दा समय समयपर भारतीय मनुष्यों द्वारा "गुरु" नामसे अभिहित होते थे। (Seirool Mutakhereen, i. 114) वर्त्तमान समय भी ऐसे कुछ अर्द्ध-विश्वासी सिख दिखाई देते हैं; वह लोग बन्दाको ही अपने सम्प्रदायका प्रतिष्ठाता समझ उनका समादर करते हैं। बन्देने स्वतन्त्र एक धर्म्मसम्प्रदायस्थापनकी इच्छा की थी; लेकिन गोविन्दके सिख-सम्प्रदायके सिवा दूसरा कोई धर्म्म-सम्प्रदाय ज्यादा दिनों स्थायी नहीं हुआ। बन्देने और भी घोषणाकी थी, कि वह

बन्दे की मृत्यु के बाद सिखोंपर घोर अत्याचार उत्पीड़न चलने लगा। युद्धमें उन लोगोंका बहुत सैन्यबल क्षय हुआ था। जो धरे गये थे, वह भी शायद मारे गये या बाध्य हो उन्होंने अपना धर्मपरित्याग किया था। दुशमन प्रायश्चित्त-वृत्ति चरितार्थ करनेपर बद्धपरिकर हुए थे, वस्तुतः इस घोषणाके प्रचारित होनेपर, कि जो जितने सिखसैन्य मारेंगे, वह उसी हिसाबसे पुरस्कृत होंगे, सिखोंपर अमानुषिक अत्याचार चलने लगा। अन्तमें असहनीय अत्याचार उत्पीड़नसे सिखोंने लाचार बाध्य होकर हिन्दूधर्म ग्रहण किया; और सब धर्मका वाह्यिक चिह्नाव परित्याग करनेपर बाध्य हुए। धर्मानुरागी सिख लोग निभृत पर्वतकन्दरमें भाग गये; कोई कोई शतद्रुके दक्षिण-तीरवर्ती निर्जन अरण्य प्रदेशमें भाग गये। इसके बाद एक पुरुष कालतक सिखोंका और कोई विवरण इतिहासमें नहीं मिलता। *

इसनतरह ही मैं मानके बाद सिखधर्मकी फिर प्रतिष्ठा

हुई। उस धर्म्मनीतिने सबसे ऊंचे स्थानपर अधिकार किया; सिख-धर्म्मके प्रभावसे सभी परिचालित होने लगे। मनुष्योंके हृदयमें इस धर्म्मनीतिके बद्धमूल होनेपर, सिखधर्म्म दिन दिन उन्नतिपथपर अग्रसर होने लगा। पहले नानकने एक छोटा धर्म्म-सम्प्रदाय तय्यार किया था। नानकने इसका उपायविधान किया था, कि सम्प्रदायविशेषके प्रभावसे उनके शिष्य लोग कुपथपर न जांय। अपने उद्देश्य-साधन-फलसे नानकने पौत्तलिक हिन्दू-सम्प्रदाय और कुसंस्काराच्छन्न मुसलमान सम्प्रदायसे अपने शिष्योंको अलग कर लिया था। इसतरह और सम्प्रदायोंसे सिखोंका स्वातन्त्र्य परिरक्षित हुआ। अमरदासने इसका उपायविधान किया, कि जिसमें सिख सम्प्रदाय संन्यासी सम्प्रदायमें परिणत न हो। अर्ज्जुन सिखोंके समाजगठनका नियम बांध गये और उन्नतिशील सिखसम्प्रदायके क्रियाकलाप सम्पादनका और चरित्रगठनका नियम लिख गये। हरगोविन्द द्वारा अस्त्र-शस्त्रके व्यवहारका नियम और युद्धप्रथा प्रवर्त्तित हुई। अन्तमें गोविन्दसिंहके शिक्षा-प्रभावसे सिखोंके प्राणमें स्वतन्त्र एक राजनीतिक भाव उद्दीप्त हुआ। गोविन्दने उन्हें सामाजिक मुक्ति प्रदान की; इससे उनका कठोर समाज-बन्धन दूर हुआ;—जातीय स्वाधीनता पानेकी उत्कट आशासे वह लोग उन्मत्त हो उठे। इसके बाद फिर किसी व्यवस्थाप्रकरणक या शासननीतिकी जरूरत नहीं पड़ी। केवल गुरुओंके अद्भुत शिक्षा-प्रभावसे सिखोंके मनमें एक अदम्य प्रवृत्तिने विस्तृतभावसे आधिपत्य फैलाया था। पहले उनके मनमें अनिश्चित भावका उदय होता था; इस समय उनका वह अनिश्चित भाव उन्हें—

साधनोपयोगी हो तय्यार हुआ था। सिख धर्म्मकी यह प्रक्रिया इस समय स्वतःसिद्ध है। वर्त्तमान समय यह धर्म्म उन्नतिपथपर दौड़ा। इसके बाद इसका अनुभव करना बहुत ही मुश्किल है, कि इस धर्म्मके प्रभावसे क्या फल उत्पन्न होगा। पहले ही ब्राह्मणधर्म्मका अधःपतन हुआ था, ब्राह्मणलोग आचार-भ्रष्ट हुए थे। * उस समय मुसलमानधर्म्मकी उन्नति हो रही।

---

* सिख-धर्म्ममें भी परिवर्त्तनका विषय देखा गया है। धर्म्मपरित्यागमें समय समयपर शक्तिका आधिक्य सूचित होता है सही; लेकिन स्वधर्म्मपरित्याग सब समय ही दुर्बलताका परिचय प्रदान करता है; सम्प्रदायध्वंसका भी यही कारण था। सिख-सम्प्रदायकी संख्या बहुत ज्यादा थी। लेकिन गुरु गोविन्द प्रवर्त्तित मतको उन्नतिसे अन्यान्य सम्प्रदाय लोप हुआ था। इसतरह सिखोंमें नानकका "खालसा" और गोविन्दके 'खालसाती" नामसे जिस श्रेष्ठ सम्प्रदायका विषय फास्टरने लिखा है, (Forster, "Travels", p. 309) वह इस समय प्रायः दिखाई नहीं है। वस्तुतः पूर्वोक्त 'खालसा' शब्द ...

थी। सुतरां शक्तिसञ्चारक मुसलमान-धर्मके प्रवल प्रभावसे जब ब्राह्मण्य-धर्मका मूलोच्छेद साधित हुआ, तबसे ही सिख धर्म-की उत्पत्ति और विकाश हुआ। इस समय सिख धर्म पश्चात्य सभताके फलसे और खृष्ट धर्मके संस्पर्शसे धीरे धीरे उन्नतिपथपर अग्रसर होता है। बहुत दिनोंके बाद उसका फल प्रकाशित होगा,—परवर्त्ती वंशधरगण उसका अनुभव करनेमें समर्थ होंगे।

परिशिष्ट देखें। सिखोंके ग्रन्थमें सब विवरण लिखा गया है। गुरुओंने उनकी धर्मनीति और आचारपद्धतिकी वर्णना की है। नानक और गोविन्दने कुछ चिट्ठी-पत्रियां लिखी थीं। उनका सारसंग्रह और सिखोंके जीवन और धर्मनीतिकी विस्तारित वर्णना सभी प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ परि-शिष्टमें सन्निविष्ट हुआ है। कुछ सिख सम्प्रदाय और उसकी भिन्न भिन्न पदवी पञ्चम परिशिष्टकी सूचीमें भी संयोजित हुई है।

चतुर्थ परिच्छेद।

सिखोंका स्वाधीन राज्य

१७१६—१७६४।

(मुगल साम्राज्यका अध:पतन,—सिखोंका पुनराविर्भाव,—मीर मन्नू द्वारा सिखोंका निर्य्यातन और अहमदशाहके पुत्र तैमूरका उत्पीड़न;—"खालसा" सैन्य और "खालसा" राज्यकी स्थायी शक्तिका विकाश;—अदनाबेगका और रायके सेना-धीनमें महाराष्ट्रगण,—अहमदशाहका आक्रमण और विजय लाभ;—सरहिन्द और लाहोर प्रदेशमें सिखोंका राज्य स्थापन;—सर्दारोंके तरह सिखोंकी राजनीतिक प्रतिष्ठा।—[illegible] सम्प्रदाय।)

नीके सामने युद्धार्थ उपस्थित हो भारतवर्षके मुसलमानोंको चौंका दिया। * इधर दुर्द्धर्ष नादिरशाहने रक्त-रञ्जित राजधानीमें दूर-सम्पर्कित, तुर्क भाई मुहम्मदशाहसे अवज्ञाके साथ आलिङ्गन किया। † इसी समय रुहेलखण्डके अफगान उपनिवेशिक लोग और भरतपुरके हिन्दू जाट लोग बहुत शक्ति-सम्पन्न हो गये थे। ‡ जब लुटेरे विजेता नादिरशाहने लुटे हुए द्रव्यके साथ दिल्ली परित्याग किया, तब बादशाह हीनवल हुए; समाजविश्टङ्खला हुई;—यहांतक, कि जब निराश्रय बाबरने भारतवर्षमें प्रवेशकर अपने वंश-सामर्थ्यके उपयुक्त सिंहासन ढूंढा था, जान पड़ता है, उस समय भी ऐसी विश्टङ्खला नहीं हुई थी।

---

* सन् १७३७ ई०में पेशवा बाजीराव आगरेसे दिल्लीकी ओर गये। (See Elphinstone "History, ii, 609, and Grant Duff's History of the Mahrattas, i, 533, 534)

† भारत-आक्रमणमें कृतकार्य्य हो नादिरशाहने अपने पुत्रको एक खत लिखा था, यहां उसे ही देखना चाहिये। ('Asiatic Researches x, 545, 546)

‡ रुहेलोंके बारेमें बहुत प्रयोजनीय विवरण फ्रस्टरका "भ्रमणवृत्तान्त" देखना चाहिये (Forster, 'Travels, i, 115 &c.) एक विशेष प्रसिद्ध नेता हाफिज रहमतखांकी जीवनी "लण्डन ओरियण्टल ट्रांस्लेशन कमिटीकी' एक पुस्तकमें सन्नि-विष्ट है।

भरतपुर और धौलपुर हातरस और अन्यान्य छोट छोटे स्थानोंके जाटोंके स्वतन्त्र इतिहासकी जरूरत है।

समझा इसपर विश्वास किया था और भारतवासियोंका हृदय इस धर्मको ग्रहण करनेके लिये तय्यार हुआ था। सर्व्वसामञ्जस्य-मूलक ऐसी एक सरल नीति इतना जल्द लोग ग्रहण करेंगे,—इसका अनेक समय कितने ही लोग विश्वास कर नहीं सके थे। साधारणत: धीर और अनियमित भावसे इसधर्म्मकी गति प्रवाहित हुई थी। गोविन्दकी मृत्यु कालसे वर्त्तमान समयतक सिखोंके इतिहासकी आलोचनाके समय यह बातें याद रखना चाहिये।

नादिर शाहके आक्रमणके समय सिख लोग छोटे छोटे दलमें एकत्र समवेत हुए थे। आये हुए फारिस देशीय सैन्य-दलकी धन-सम्पति उन सब लोगोंने लूट ली थी। नादिरशाहके आगेसे जो भाग गये थे और फिर दिल्लीमें नृशंस हत्याकाण्डके आरम्भ होनेपर जिन्होंने पहाड़ियोंमें आश्रय लिया था, सिखोंने उनका सब सामान लूट लिया था। * इन सब अवैध कामोंके

---

* Browne, India Tracts, ii. 15, 14. मुगल बादशाहसे नादिरने सिन्धुदेश, काबुल और वितस्ताके निकटवर्त्ती लाहोरके चार प्रदेश पाये।

उस समय अब्दुलसमदके पुत्र जकरियाखां लाहोरके शासनकर्त्ता थे।

दिल्लीके बादशाहकी पराजय और राजधानीमें नादिरका प्रवेश यथाक्रम सन् १७३८ ई०की १३वीं फरवरी और मार्च महीनेके शुरूतक हुआ था। लेकिन उस समय तीन प्रधान पहले समाचारादि पानेकी पद्धति इतनी खराब और अङ्गरेजोंके लिये दिल्ली नगरी इतनी कम आदरणीय थी, कि अक्टोबर

लिये दख न पानेपर उन लोगोंने ज्यादातर दुःसाहसिक कामों
साधनका समय पाया। सिख लोग खुल्लमखुल्ला अत्याचार करने
लगे। अब उनका वह छद्मवेश न रहा। एक मुसलमान ग्रन्थ-
कारने कहा है, कि नाना दिग्देशसे अश्वारोही सिख सेना आ
इस पवित्र धर्म-मन्दिरमें ईश्वरोपासना करते थे। उनमें अधि-
कांश मारे गये थे, बाकी कई एक कैद हुए थे। लेकिन इस
पवित्र स्थानमें आनेके समय निगृहीत होनेपर भी उन लोगोंमें
किसीने अपना धर्मपरित्याग नहीं किया। * बादको कुछ सिखोंने
इरावती किनारेके डालेवाल नामक स्थानमें एक छोटा किला
बनाया। अबतक कोई उनकी बातें जानता नहीं था। इसके
बाद वह लोग जमीनाबाद और उसके पासवाले स्थानोंमें
समवेत हुए। उनका दल परिपुष्ट होने लगा, वहांके अधिवा-
सियोंसे उन लोगोंने कर वसूल करना आरम्भ किया। तब उन
लोगोंकी ओर सबकी ही दृष्टि आकर्षित हुई,—सभी सशङ्क
हुए। इससे पहले कोई उनके ऊपर ध्यान करता नहीं था। इस
समय लड़ाई आरम्भ हुई, उसमें सिपाही लोग छिन्नभिन्न
और उनके सेनापति मारे गये। फिर दूसरा सेना भेजी गई।
इस बार सिख लोग पराजित और उनमें अनेक कैदी हुए।

बहुत ज्यादा अपराधी लाहोर लाये गये, उन लोगोंकी हत्या या वधभूमि इस समय "शहीदगञ्ज"—या हत धर्मप्रिय लोगोंके स्थानके नामसे अभिहित है। * इस स्थानकी प्रसिद्धिका और एक कारण है; यहां भाई तारूसिंहकी कब्र स्थापित है। यह मस्तक मुड़ा अपना धर्म्म परित्याग करनेपर बाध्य किये गये थे। लेकिन गोविन्दके पहले बन्धुने कभी अपने विवेक या अपनी धर्म्मप्रकृतिकी अवमानना नहीं की,—दूसरेकी अधीनता भी स्वीकार नहीं की। सुतरां वर्तमान समयतक भी उनके प्रत्युत्तरकी बात सब लोग याद करते हैं। कोई कहते हैं, उनका उत्तर सच्चा था। कोई कहते हैं, वह छलनापूर्ण था। वह कहते थे,—मस्तकके बाल, शिखा (चोटी) और मस्तकावरण,—सभी परस्पर एकसूत्रमें आवद्ध हैं। मनुष्यके मस्तक और जीवनका परस्पर निकटका सम्बन्ध है और वह आनन्दके साथ प्राणदान करनेपर तय्यार थे।

इसी समय लाहोरके शासनकर्तृत्वपर जकारियाखांके दोनो लड़कोंमें घोरतर विवाद चलता था। जकारियाखां अब्दुलसमदके वंशधर थे, उन अब्दुलसमदने ही बन्दाको पराजित किया था। जकारियाखांके छोटे लड़के शाहनेवाजखांने

---

* इस विषयके पूरे हालके लिये निम्नलिख ग्रन्थावली देखना चाहिये ;—Browne, 'India Tracts, ii. 15, ; Malcolm, 'Sketch' P. 86, and 'Murray's Runjeet Singh by Princep, p. 4, इस समय जकारियाखांके ज्येष्ठपुत्र यहृयाखां पञ्जाबके शासनकर्ता थे।

अपने ज्येष्ठको राज्यच्युत कर जबरदस्ती सिंहासनपर अधिकार किया। राज्यमें अपनी क्षमता अक्षुण्ण रखनेके लिये शाहनेवा-जने अहमदशाह अबदालीके साथ एकताबन्धनमें आबद्ध होनेकी चेष्टा की। इसी उद्देश्यसे उन्होंने अहमदशाहके साथ खतकिता-बत शुरू की। सन् १७४७ ई०के जून महीनेमें नादिरशाहको मार अहमदशाह अबदालीने अफगानस्थानका प्रभुत्व पाया था। इसके बाद मध्यएशियाकी कुछ दुर्द्धर्ष जातिने दुर्रानी राजाका साथ दिया। यह सब जातियां दूर देशमें जा लूटमार करना पसन्द करती थीं,—यह लोग लुटेरोंके काममें बहुत पारदर्शी थे। इन सब जातियोंकी सहायता पा दुर्रानी राजाने समझा कि भारतवर्ष ही उनके विजय और लूटनेका उपयुक्त स्थान है। उनसे उनका अभीष्ट सिद्ध होगा —वह विशेष धनवान् होंगे। इस प्रकारकी कल्पनाकर उन्होंने शाह अभिमानीके मिलनेकी चेष्टा की थी। पहले लाहोरके शासनकर्त्ताने उनके प्रति राज-भक्ति दिखायी थी, दूसरे शाह नादिरशाहके [illegible]-लोंसे इन भागे हुए शासनकर्त्ताने दिल्लीमें बादशाहसे बड़ा सम्मान पाया था,—इन दो कारणोंसे वह भारतवर्षकी ओर बढ़े हैं। * जो हो अहमदशाहने सिन्धनद पार किया, लाहो-

रके शासनकर्ता राजद्रोहिताके अपराधमें तिरस्कृत और लाञ्छित हुए। तब कु-अभिसन्धिकी अपेक्षा सदाशयता ही प्रबल हो उठी। वह इस लिये कृतसङ्कल्प हुए, कि अफगान लोग ज्यादा आगे बढ़ न सकें। लेकिन वह युद्धमें जय पा न सके, अहमदशाह अबदाली पञ्जाबपर अधिकार कर बैठे। अहमदशाहने सरहिन्दतक उनका अनुसरण किया। यहां पतनोन्मुख मुगल साम्राज्यके वजीरके साथ उनका युद्ध हुआ। कुछ खण्डयुद्ध और कुछ चूड़ान्त युद्ध हुए। इन सब लड़ाइयोंका फल आक्रमणकारीके लिये इतना प्रतिकूल हुआ था, कि वह फिर पञ्जाबसे लौट आनेपर बाध्य हुए। इसी समय सतर्क सिखोंने अबदाली-सैन्य-पर पीछेसे आक्रमण किया, उन लोगोंने आत्मशक्तिपर विश्वास करनेका और एक प्रमाण पाया। एक सामान्य युद्धमें दिल्लीके मन्त्री गोलेके आघातसे मारे गये। इस युद्धमें उनके पुत्र मीर मन्नूने विशेष वीरत्व और कृतित्वका परिचय प्रदान किया था। सुतरां पिताकी मृत्युपर "मोईनुलमुल्ककी" उपाधि ग्रहणकर वह लाहोर और मुलतानके शासनकर्त्ताके पदपर अधिष्ठित हुए। *

यहां एलफिनष्टनका काबुलका विवरण देखना चाहिये। (Elphinstone, Account of Caubul, ii. 285) इस बारेमें उन्होंने इन सब विशेष विवरणोंका कुछ भी उल्लेख किया नहीं है।

* Compare Elphinstone, Cabul," ii. 285, 286 and Murray's Ranjeet Singh P. 6—8.

यह नये शासनकर्त्ता वीर्य्यवान् और चतुर थे। बादशाह को मङ्गलकामना करनेकी अपेक्षा अपना स्वार्थसाधन ही उनका प्रधान उद्देश्य था। शासनकार्य्यमें किसीको भी सलाह देते नहीं थे। अपनी बुद्धिके अनुसार ही वह सब काम पूरा करते थे। कौरामल और अदनावेगखां नामक बहुदर्शी दो पुरुषोंको अपने कार्य्यमें नियुक्तकर उन्होंने विज्ञताका परिचय प्रदान किया था; कौरामल उनके प्रतिनिधि हुए और अदनावेग जलन्धर दोआबके अध्यक्ष पदपर प्रतिष्ठित हुए। इसी समय विद्रोही सिख लोग शासन-कार्य्यके बाधक हो खड़े हुए। सुतरां शीघ्र ही उनलोगोंकी ओर राजद्रोही शासनकर्त्ताओंकी दृष्टि आकर्षित हुई। उन लोगोंने बहुत दक्षताके साथ सिख विद्रोह दमन किया। * अहमदशाहके आक्रमणके समय उन लोगोंने अमृतसरके निकटवर्त्ती 'राम रावनी' नामक एक गढ़ ध्वंस किया था। इसी समय उन लोगोंमें [illegible] सिंह "कलाल" नामक एक सुदक्ष सेनानायकने विशेष प्रतिष्ठा पाई। हिम्मत और बहादुरीके साथ सिख-सम्प्रदायमें एक नवशक्तिका सञ्चार किया; यही "जस्सा सिंह "कलाल" या "[illegible]

ह" उपाधि युक्त धर्म्म-सम्प्रदायका सैन्यदल था। * मीर मन्नूने अपनी क्षमताकी प्रतिष्ठा करके ही विद्रोहियोंके विरुद्ध युद्धयात्रा की। विद्रोही सिखोंका किला घिर गया; सिपाही विध्वस्त हो चारो ओर भाग गये। उन्होंने शान्तिस्थापनके लिये बहुत उपाय अवलम्बन किये। † इतनेमें उन्होने सुना,— अफगान लोग दूसरी बार भारतपर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़ रहे हैं; इस ओरसे उनकी सब कल्पना ही विफल हुई। इस विपदके निवारणके लिये उन्होंने वितस्ता नदी किनारे सैन्य समावेश किया। दुर्रानीके शिविरमें दूत भेजा गया; उन्होने इस विपदके दूर करनेके लिये उन्हें नाना प्रकारकी

---

* Compare 'Browne, 'India Tracts, ii. 16. उन्हों-ने कहा है, कि चरखासिंह, टीका सिंह, और शिरवरसिंह,— सभी युग्गा कल्लालके साथ एकता-सूत्रमें आबद्ध हुए।

† कौरामल और अदनाबेग दोनोने ही सिखोंके सीमान्त प्रदेशपर आक्रमण करनेके लिये वीर मन्नूको भेजा था। कौरा-मलका पहलेसे ही सिखोंकी ओर अनुराग था; और अदना-बेगने राजनीतिक उद्देश्य-साधनकल्पमें उन लोगोंके प्रति आक्र-मणसे अमत दिखाया था। (Compere Browne, 'Tracts. ii. 16, and Forster. Travels, i. 314, 315, 327, 328.) फरष्टर कहते हैं, सिखोंके अपरिणत सम्प्रदायको दमन करनेकी अपेक्षा मन्नूका और भी गुरुतर उद्देश्य मालूम हुआ था। स्वार्थको ज्यादातर जरूरी समझ उन्होंने इस दुर्ब्बल धर्म्म-सम्प्र-दायके ध्वंस करनेकी चेष्टा की नहीं थी।

सुविधा देना अङ्गीकार किया। अहमद शाहके अपने राज्यकी शासनशृङ्खला उस समय भी सुप्रतिष्ठित नहीं हुई थी। सर-हिन्दमें जिन युवकने उनका गतिरोध किया, वह उनकी दयापर मुग्ध हुए थे; शाह उनपर बहुत श्रद्धा करते थे। अबदाली, नादिर शाहके उत्तराधिकारी थे; इससे ही उन्होंने सिंहासन पाया था; उस समय नादिरशाह चार प्रदेशोंका कर पाते थे। अहमदको उसके देनेसे इनकार करनेके कारण वह सिन्धुके दूसरे किनारे लौट गये। *

मीर मन्नूने जिन उपायोंका अवलम्बन किया था; उससे उद्देश्यके सिद्ध होनेपर उन्होंने दिल्लीमें बहुत ख्याति प्रतिपत्ति लाभ की। लेकिन उनकी गूढ़ अभिसन्धिसे अवगत हो [illegible] सफदरजङ्ग बहुत भीत हुए, उन्होंने ज्योंही इस बारेमें [illegible] एक कल्पना की थी; इस समय उनके कार्यमें परिणत करनेके लिये चेष्टा की। फिर [illegible] उन्होंने मीर मन्नूका संग नहीं देना। उन्होंने यह प्रस्ताव किया, कि [illegible] मुलतानका शासनकर्तृत्व [illegible] बढ़ाना चाहिये। मीर मन्नूने [illegible]

जको लाहोरका सिंहासन पानेसे वञ्चित किया था। * मन्नू नादिरशाहकी क्षमता और सैन्यबल सभी अच्छी तरह जानते थे, उन्हें अपना अर्थ-सामर्थ्य भी समझना बाकी नहीं था। मन्नूने अपने प्रतिनिधि कौरामलको नये शासनकर्त्ताका गतिरोध करनेकी आज्ञा दी। शाहेनेवाजखां युद्धमें पराजित हुए और मारे गये। इससे विजयोल्लसित शासनकर्त्ताने अपने कृतकर्म्मा अनुचरको "महाराज" की उपाधि प्रदान की। † उन्होंने बाद १८के आधीनतापाशको पूरी तरह तोड़ स्वाधीनता अवलम्बन किया। सिखोंका विद्रोह दमित हुआ। दूसरे दूसरेकी कृतकार्य्यता पा उत्साहित हो, मन्नू अपने गूढ़ अभिसन्धिको कार्य्यमें परिणत करनेमें बद्धपरिकर हुए। अहमदशाहको उन्होंने जो राजस्व देना स्वीकार किया था, वह भी इस समय बन्द कर दिया। राजस्व अदामें छलना की गई; मन्नूने भी सब बाकी राजस्व प्रदान करनेका प्रस्ताव किया। लेकिन दोनो ओर कोई किसीकी ओर भी विश्वास स्थापन कर न सके। तब सैन्यके साथ अफगान-

---

* मुलतानके स्थानीय विवरणसे मालूम होता है, कि सन् १७३८—४० ई॰में जब नादिरशाहने हिन्दुदेशमें प्रवेश किया, तब जकरियाखांके छोटे लड़के हयातुल्लह खां मुलतानके शासनकर्त्ता थे। नादिरशाहका उद्देश्य था,—वह हिन्दुदेशपर अधिकारकर वहां राज्यस्थापन करेंगे। उस समय हयातुल्लहखांने उस पारिस देशीय विजेताकी वश्यता स्वीकार की। हयातुल्लहने नादिरशा[illegible] शाहेनेवा[illegible]की उपाधि पाई।

† Comp[illegible] b,' p. 10

राजने लाहोरको ओर यात्रा की। मन्नूने सीमान्त प्रदेशमें ही उनके साथ युद्ध करनेका प्रण किया; लेकिन अन्तमें नगर-प्राकारके मध्यस्थित एक सुरक्षित स्थानमें आश्रय लिया। मन्नू यदि शत्रु को बाधा दे आत्मरक्षा करनेमें यत्नपर होते, तो सम्भवतः अवदालीकी सब चेष्टायें विफल होतीं। लेकिन मन्नू उस बारेमें निश्चेष्ट रहे। वह दुर्गमें घिर गये। चार महीनेतक इसी अवस्थामें समय बिता अन्तमें अवदालीकी सैन्यके साथ वह युद्धमें प्रवृत्त हुए। इस युद्धमें कौरामल मारे गये, अद्ना-बेगने युद्धमें साथ नहीं दिया। तब मन्नूने देखा,—युद्धके ज्यादा दिनों स्थायी रहनेपर बहुत नुकसानकी सम्भावना है, सुतरां वह बहुत विचक्षणताके साथ राजधानीमें लौट विजेताके प्रति अपने अनुगत्यका अशेष परिचय देने लगे। अहमदशाहने बहुत रुपये पाये; लाहोर और मुलतान अफगान राज्यके अन्तर्भुक्त हुआ। अहमदशाहने मन्नूको असाधारण सैन्य-परिचालन-शक्तिकी बहुत प्रशंसा की,—उनके शासनकी क्षमतासे मोहित हुए। इस सब कार्योंसे अहमदशाहने मन्नूको ही नवविजित राज्यके शासनकर्त्ताके पदपर प्रतिष्ठित किया। इसके बाद काश्मीरपर अधिकारके लिये अहमदशाह नाना उपायोंका अवलम्बन करने लगे; लेकिन शीघ्र ही उन्हें अपने देशकी ओर लौट जाना पड़ा।* इसतरह विदेशियों द्वारा लाहोरके दूसरी बार आक्रान्त होनेपर उस प्रदेशकी शासन-क्षमता धीरे धीरे शिथिल हुई।

---

* Compare Elphinstone, 'Caubul', ii, 288, and Murray's 'Runjeet Singh', p. 10, 16.

चिरस्वाधीनतालोलुप सिखोंने फिर शिर उठाया और तरह तरहका उपद्रव शुरू कर दिया। अदना बेगने लाहोरके युद्धमें साथ नहीं दिया; स्वार्थसाधनोद्देश्यसे उन्होंने विद्रोही प्रजाका पक्ष अवलम्बन किया था,—उस समय सबके मनमें वह विश्वास ही बद्धमूल हुआ था। उस समय अदना बेगने सोचा,—उनके प्रति उस सन्देहका मूलोच्छेद करना ही युक्तिसङ्गत है। इस बीचमें सिखोंने अम्टतसर और पहाड़ी प्रदेशके मध्यवर्ती प्रदेशोंपर अधिकार किया था। अदना बेगने सोचा,—सिखोंको अधीनतापाशमें आबद्ध करना ही उनका एकमात्र कर्त्तव्य है। मखौलमें एक उत्सवके दिन उन्होंने उन लोगोंपर एकाएक आक्रमण किया, युद्धमें सिख अच्छी तरह पराजित हुए। सिख उन्हें मित्र समझते थे,—यही उनका अभिप्राय था। वह सिखोंके साथ सन्धिसूत्रमें आबद्ध हुए; यह ठीक हुआ, कि वह लोग नाममात्र थोड़ा बहुत कर प्रदान करेंगे। स्थिर हुआ, कि अपने अधीनस्थ लोगोंसे वह लोग परिमित परिमाणसे या निर्दिष्ट हारसे कर अदा कर सकेंगे। कितने ही सिखोंको तनखाह दे उन्होंने अपने कर्मचारी-रूपमें नियुक्त किया था। उनमें खनघरका तीय पुष्पासिंह नामक एक पुरुषने अन्तमें बहुत प्रतिष्ठा पाई थी। *

नये प्रभुके अधीन अपनी क्षमता फिर पानेके कई महीने बाद मीर मन्नूकी मृत्यु हुई। † उनकी विधवा पत्नी नाबा-

---

* Compare Browne, 'India Tracts', ii, 17 and Malcolm, 'Sketch', p. 82.

† फारस्टर ("Travels i, 315) और मेलकम ("Sketch,

लिग पुत्रकी अभिभाविका नियुक्त हुईं, उन्होंने लाहोरके शासन-कर्त्तृत्वके लिये पुत्रकी ओरसे कौशलक्रमसे बादशाहका स्वीकारपत्र संग्रह किया। बादशाह और दुर्रानी शाह दोनोंके साथ वह सद्भावस्थापनकी चेष्टा करने लगीं;—उन्होंने दोनोंकी अधीनतास्वीकारका भाव प्रकट किया। दक्षिणके पहले निजामके पुत्र मानीउद्दीनके साथ उनकी कन्याका विवाह हुआ। निजाम एक समय पतनोन्मुख भारत साम्राज्यके मन्त्री थे; उस समय उनके द्वारा अयोध्याके राजप्रतिनिधि कौशलक्रमसे पदच्युत हुए। * तब वजीरने अपने प्रभुके लिये एक प्रदेशपर अधिकार करनेके लिये चेष्टा की। खुद भी फिर विवाह करनेकी इच्छासे वह एक उपयुक्त पात्री ढूंढने लगी। उस समय उन्होंने लाहोरमें जा अपनी क्रोधपरायण स्वश्रूको स्थानान्तरित किया; कुछ दिनोंके लिये सब पञ्जाब अदनावेगके नाम-

---

P. 92) कहते हैं, सन् १७५२ ई०में मीर मन्नूकी मृत्यु हुई। ब्राउन ("Travels ii 11) कहते हैं, ११६५ हिजरीमें मारा था। यह अङ्गरेजी सन् १७५१ और १७५२ ई०के साथ एक है। मरे ('Runjeet Singh, p. 15) ने प्रतिपन्न किया है, अधीनता स्वीकार करनेके बाद मन्नू फिर ज्यादा दिनों जीवित नहीं रहे। लेकिन एलफिन्स्टनने कहा है,—सन् १७[illegible] ई०में राजप्रतिनिधिकी मृत्यु हुई।

* मानीउद्दीनका पहला नाम [illegible] है। महाराष्ट्रों द्वारा अपभ्रंशमें [illegible] नामोंमें [illegible] [illegible] अभिहित है।

मात्र शासनाधीन रहा। अन्तमें आहमद शाहने फिर भारत-वर्षमें आ पञ्जाबपर अधिकार किया। सन् १७५५-५६ ई०में शीतकालमें तुर्की शाह लाहोरके भीतरसे गये; उनके पुत्र तैमूरेजहांखां नामक एक मनुष्यके अभिभावकतामें उस प्रदेशके शासनकर्त्ता नियुक्त हुए। सरहिन्द अहमदशाहके राजभुक्त हुआ। गाजीउद्दीनके सब अपराधोंको अहमद शाहने क्षमा किया सही, लेकिन दिल्ली और मथुराको न लूटकर वह कन्धारको प्रत्यावृत्त नहीं हुए। सम्राट् वजीरके एक खिलौने थे, यह देख अहमद शाहने नाजिबद्दौला नामक एक रूहेला वंशीय सेनानायकको दिल्ली साम्राज्यके नाममात्र सेनापतिके पदपर प्रतिष्ठित किया, वह अवदालीके स्वार्थसाधनके लिये सदा चेष्टित रहे। *

---

* निम्नलिखित ग्रन्थावली देखना चाहिये:—Forster, "Travels" 1 316, 317 Browne, Tracts, ii 48 Malcolm, 'Sketch' P, 92, 94 Elphinstone, Caubul, ii, 288, 289 and Murray, "Runjeet Singh", P, 14, 15.

मीर मन्नूकी विधवा स्त्रीके नाममात्र शासनके समय उनकी प्रतिनिधि विकारखां नामक एक मनुष्यने बहुत प्रतिष्ठा पाई। अन्तमें उन्होंने विकारखांको मार डाला; कारण, विकारखांने उनकी क्षमताके प्रतिहत करनेका संकल्प किया था। जो हो, जान पड़ता है, सम्भवतः विकारखां उनके उपपति थे। (Compare Browne, ii, 13 and Murray, P, 14) विकार खांने लाहोरकी सुवर्ण मसजिद बनवाई थी।

युवराज तैमूरके दो उद्देश्य थे। उनका पहला उद्देश्य,—विद्रोही सिखोंको पूरी तरह विध्वंस्त करना था। दूसरा उद्देश्य,—अदनाबेगखांका दण्ड-विधान करना था। अदनाबेग खांका यही अपराध था, कि उन्होंने लाहोरके पुनरुद्धारके समय मन्त्रीको सहायता दी थी। इस समय सूत्रधरजातीय युश्राने अमृतसरके रामरावनीका पुनरुद्धार किया। सुतरां वह स्थान आक्रान्त हुआ; दुश्मनोंने दुर्ग धूलमें मिला दिया; मकान चूर चूर हुए; पवित्र सरोवर इन सब ध्वंसावशेषसे परिपूर्ण होने लगा। अदनाबेग युवराजका विश्वास करते नहीं थे; सुतरां वह पहाड़ी प्रदेशमें चले गये। अदनाबेग वहां बहुत छिपे छिपे प्रतिहिंसा-परवश सिखोंको सहायता दे उन लोगोंको उत्साहित करने लगे। वह लोग दलके दल इकट्ठे होने लगे। गोविन्द-प्रवर्तित धर्म्म उन दुर्द्धर्ष दृढ़मना ग्रामवासियोंके हृदयमें बद्धमूल था। कर्म्मासक्त शहरवासियोंकी तरह परस्पर-विरोधी स्वार्थचिन्तासे सिखजाति प्रकृत धर्म्मविमर्ष न कर कृत्रिम समाजके निर्द्धारित नियमके वशवर्त्ती नहीं हुई; वह लोग बाह्य लोकाचारपर विश्वास स्थापन नहीं करते थे। इसी समय लाहोर और उसकी चारो ओरके स्थानोंमें कितने ही घुड़सवार सिख दलके दल घूमने लगे; डाके द्वारा उनका जीवनयात्रा निर्व्वाह होती थी। युवराज और उनके अभिभावकने उन लोगोंको विध्वस्त करनेकी चेष्टा की; उन लोगोंने बहुत व्यायाम स्वीकार किया सही, लेकिन उनकी सब चेष्टा विफल हुई। सुतरां उन लोगोंने भागना ही अधिकतर निरापद और युक्तियुक्त समझा। विजयोल्लास सिख लोग कुछ दिनों

लाहोरपर अधिकार किये रहे। गुरुसिंहने पहले घोषणा की थी,—खालसा एक राज्यरूपमें परिणत होगा और उसके अधीन बहुत सैन्य नियुक्त रहेगी। उन्होंने ही इस समय उसमें एक स्थायी क्षमताका निदर्शन प्रदान किया। वह रुपयेकी मौजूदगीके लिये मुगलोंका टकसाल व्यवहार करते थे। उसमें जो रुपये तय्यार होते, उसमें छपा रहता था,—"गुरु कल्याण विजित साहसदके राज्यमें "खालसा"के अनुग्रहसे यह रुपये तय्यार हुए"। *

इसी समय दिल्लीके सन्त्रीने नाजिरद्दौलहको देशसे बाहर निकालनेका संकल्प किया। अपने उद्देश्यसाधनके लिये मन्त्रिवरने महाराष्ट्रोंसे सहायताकी प्रार्थना की। नाजिरद्दौलह अहमदशाह अब्दालीके प्रतिनिधि थे। इस समय अपनी क्षमता और निपुणताके प्रभावसे राजदरबारमें बहुत क्षमता-प्रतिपत्ति पाई थी। गाजीउद्दीनने पेशवाके भाई राघवसे दिल्लीकी ओर बढ़नेके लिये अनुरोध किया। राघवने

---

* निम्नलिखित ग्रन्थावली देखना चाहिये :—Browne "Tracts" ii. 19, Malcolm, "Sketch", P. 93 &c. Elphinstone, "Caubul", ii. 289; Murray's "Runjeet Singh, P 15".

अफगानोंके विवरणमें वे एलफिन्सटन कहते हैं, कि तैमूरकी एकदल सैन्य अदनाबेगसे पराजित हुई। पञ्जाबके मुसलमानोंकी वर्णनाका अनुसरण करके ही शायद मरेने सिखोंके लाहोरपर अधिकारके बारेमें कुछ नहीं कहा।

भी हुमत न कर सहन हो उसे स्वीकार किया। महाराष्ट्रोंने दिल्लीपर अधिकार किया और नाजिरद्दौलाह बड़े कष्टसे भाग गये। अदना बेगने देखा,—सिख लोग नाहक देर करते हैं, परन्तु वह लोग इतने ज्यादा पराक्रान्त और बलशाली नहीं थे, कि अदनाबेग बिना दूसरेकी सहायताके पञ्जाबका शासन करनेमें समर्थ हों। सुतरां सिन्धुनदतक आधिपत्य फैलानेके लिये उन्होंने महाराष्ट्रोंको बुलाया। सरहिन्दमें अहमदशाहके एक प्रतिनिधि शासनकर्त्ता थे। समवेत आक्रमणसे वह विताड़ित हुए। इधर सिखलोग अदनाबेगका पक्ष ले उनकी सहायता करते थे। इस समय उन लोगोंने सोचा,—दो पुश्तसे जो शहर उन्होंने क्रमागत लूटा है, जिनमें उनका स्वत्वाधिकार अक्षुण्ण है और उनके अधीनतापाशमें आबद्ध है, आज महाराष्ट्र लोग वही शहर लूटेंगे। सुतरां सिख लोग निश्चिन्त रह न सके; उनके असंयत व्यवहारसे महाराष्ट्र लोग कुपित हुए। सिख लोग लाहोर छोड़ चले गये। कई एक नगण्य दुर्ग छोड़ अफगान सैन्य चली गई, महाराष्ट्रोंने इस समय मुलतान, अटक और राजधानीपर अधिकार किया। अदनाबेग पञ्जाबके शासनकर्त्ता नियुक्त हुए, लेकिन सम्पूर्ण स्वाधीनता पानेकी जो सुख-आशा वह हृदयमें पालते आते थे, अकालमें कालकवलमें पतित होनेसे, उनकी वह आशा निर्मूल हुई,—प्रभुत्वप्रतिष्ठाके कई महीने बाद ही वह कब्रमें सो गये। •

• निम्नलिखित ग्रन्थावली देखना चाहिये:—Browne, "India Tracts," ii, 19, 20 Forster, "Travels" i, 317,

महाराष्ट्रोंने देखा,—समग्र भारतवर्षमें ही उस समय उनका प्रधानत्व है। इसी समय अयोध्यापर अधिकारकर रुहेला लोगों को विताड़ित करना पड़ेगा;—गाजीउद्दीनसे महाराष्ट्रोंने इस मर्म्मका एक प्रस्ताव उठाया;—दोनो पक्षका प्रीतिकर एक षड़यन्त्र चलने लगा। * इसी बीचमें पञ्जाबमें अधिकारच्युत होनेसे अहमदशाह दूसरी बार यमुनाकिनारेतक आये; उनके आनेके साथ ही साथ महाराष्ट्रोंके प्राधान्यका स्वप्न हमेशाके लिये विलुप्त हुआ। †

दुर्रानी-राज बलूचस्थानसे सिन्धुनदके किनारे किनारे उत्तर-की ओरसे पेशावर पहुंचे। वहांसे सिन्धुनद पारकर पञ्जाबमें आये। उनके आनेसे मुसलमानोंने मुलतान और लाहोर छोड़ दिया, अहमदशाहके आनेपर गाजीउद्दीनने बादशाहकी जान लेनेकी चेष्टा की। उस समय युवराज राजधानीमें उपस्थित नहीं थे। बङ्गालके नवाधिपति अङ्गरेजोंकी सहायतासे वह

318, Elphinstone, "Caubul" ii, 290 और Grant Duff's 'History of the Marhtta's, Ii, 132, सन् १७५८ ई॰के पहले अदनाबेगकी मृत्यु हुई।

* Compare, Elphinstone, History, of India, ii, 669, 670.

† जब नाजिरुद्दौलह और रुहेलोंने देखा, कि महाराष्ट्रोंने उनके गावोंको आग लगा दी है, तब उन्होंने अहमदशाहसे प्रस्थान करनेके लिये बहुत जिद की थी। (Elphinstone "India," ii, 670, और 'Browne, "Tracts," ii, 20.

अपनी प्रभुत्वप्रतिष्ठाकी चेष्टा करते थे और फिर शाहआलमकी उपाधि ग्रहणकर दिल्लीके बादशाहके पदपर अधिष्ठित हुए थे। युद्धमें महाराष्ट्र-अधिनायक सिन्धिया और होलकर पराजित हुए। इसके बाद अफगान-राजने दिल्लीपर अधिकारकी नशा-की ओर यात्रा की। उस समय महाराष्ट्र लोग मुसलमान राजत्व सदाके लिये लोप करनेकी चेष्टा कर रहे थे। अयोध्याके शुजाउद्दौलहके साथ सन्धिसूत्रमें आबद्ध हो ममवेत आक्रमणसे दक्षिणके हिन्दुओंकी क्षमता घटाना ही अहमदशाहका प्रधान उद्देश्य था। इसी समय एक सेनानायक पूनेसे दिल्लीकी ओर बढ़ रहे थे। उत्तर भारतवर्षके सब युद्धोंमें उन्होंने विशेष वीरत्वका परिचय दिया था। इस समय पेशवाके वंशधर और विख्यात महाराष्ट्र राजाओंने उनका साथ दिया। अपने बाहुबलपर निर्भरकर असंख्य सैन्यके साथ वह नवाभिषिक्त सेनापति दिल्लीके बहुत ही पास पहुंच गये। सदाशिवराव द्वारा अफगानोंके कई एक छोटे छोटे सैन्यदल दिल्लीसे विताड़ित हुए। महारा ष्ट्रोंने अफगानोंका प्रधान सैन्यांश दोआबका दुर्ग घेर लिया। इस समय उन्होंने विश्वास रावको भारतवर्षके सम्राट् और नरपतिके नामसे घोषणा करनेका प्रस्ताव किया, लेकिन उनका उद्देश्य सफल नहीं हुआ। सन् १७६१ ई० में प्रसिद्ध पानीपतके युद्धमें अहमदशाहने जय पाई। महाराष्ट्र लोग पराजित [illegible]। अपने प्रभापुञ्जयुक्त पेशवाका [illegible] [illegible] और हिन्दु-स्थानमें महाराष्ट्रोंकी [illegible] फिर नहीं [illegible] हुई। [illegible] महाराष्ट्रोंने [illegible] [illegible] [illegible] नहीं पाया, [illegible] [illegible] की क्षमता फिर नहीं पाई। [illegible] [illegible] [illegible] सिक्खियोंकी

क्षमता फैलानेमें बहुत सुविधा हुई; लोगोंके बिना जनाये विदेशियोंने प्रकारान्तरसे महाराष्ट्रोंकी कल्पना कार्य्यमें परिणत की। * इसके बाद युद्धकी समाप्तिके साथ ही साथ सरहिन्द और लाहोरके लिये दो प्रतिनिधि नियुक्तकर अफगान-सम्राट काबुल लौट गये। † सिख लोग इस युद्धके समयसे ही अवतीर्ण हुए; वह लोग दल बांध दुर्रानी सैन्यकी चारो ओर घूमते थे और सुयोगके अनुसार उनकी धनसम्पत्ति लूटते थे। कायदेके मुताबिक किसी शासननीतिके प्रवर्त्तित न रहनेसे उन्होंने ज्यादा शक्ति पाई थी। अपने अपने गांवमें उनका प्रभुत्व प्रतिष्ठित हुआ था; विदेशी सम्प्रदायोंके दमन करनेके उद्देश्यसे उन लोगोंने इससे पहले दुर्ग बनाना शुरू किया था।

---

* ब्राउनका "इण्डिया ट्राक्ट" द्वितीय खण्ड, २०३, २१ पृ०, एलफिनूसटनकृत भारतवर्षका इतिहास, द्वितीय खण्ड, ६७० पृष्ठ इत्यादि और मरे-विरचित "रणजितसिंह," १७ और २० पृष्ठ देखना चाहिये।

एलफिनूसटन कहते हैं, महाराष्ट्रीय सेनापति विलम्ब करने लगे; विश्वासकी हिन्दुस्थानके श्रेष्ठ सम्राटके नामसे घोषणा नहीं की। उनका उद्देश्य था,—जबतक दुर्रानी लोग सिन्धुनदके उस पार विताड़ित न हों, तबतक उनके पक्षमें चुप रहना ही कर्त्तव्य है।

† ब्राउनके (Browne, "India Tracts" ii, 21, 23) मतानुसार उन दोनों मनुष्योंका नाम,—लाहोरका बुलन्दखां और सरहिन्दका जिनखां था।

लोग इस पठानके अत्याचारसे बहुत ज्यादा क्रुद्ध हुए। एक-बार वह लोग जिन्दियालाके रक्षक हिन्दूके प्रति ऐसे ही कुपित हुए थे। वह मनुष्य सिख-धर्म ग्रहण करके भी अहमदशाह-का अनुरक्त हुआ था और उसने उनको बहुत सहायता की थी,—यही उनका अपराध था। जो हो, "खालसासैन्य" अम्टतसरमें समवेत हुई, प्रगाढ़ धर्मविश्वासियोंने पुण्यतोया सरोवरमें ईश्वरोपासना सम्पन्न की। इसउपलक्षमें ही सिखों-को "गुरुमाता या "राजसभा" या कहती सैनिक-सभाका पहला अधिवेशन हुआ। उन लोगोंने हौंगनखांका अधिकृत सब राज्य लूट लिया। अधिकतर लाभजनक फिर भी, विपदसङ्कुल कामके पहले अनुष्ठान स्वरूप उन्होंने जिन्दियालाको पत्र-पुष्पसे सुशोभित और अन्यान्य भूषणसे भूषित किया। *

लेकिन चञ्चलमति अहमदशाह फिर भारतवर्षमें आये। अहमदशाह अफगान वीरोंके श्रेष्ठ आदर्श थे। वह कष्टसहिष्णु अध्यवसायशील और अद्वितीय वीर-पुरुषके नामसे परिचित थे। लेकिन राज्याधिकारमें असीम प्रतिभाशाली होनेपर भी उनमें साम्राज्यगठनकी क्षमता नहीं थी। जान पड़ता है, कि इसलिये ही वह राज्यपर राज्य गवां फिर उसके उद्धारसाधनमें आजीवन व्याप्त रहे। सन् १७६२ ई०के अखीरमें अहमद-शाह लाहौर पहुंचे, उनके आनेपर सिख लोग शतद्रुके दक्षिण चले गये। उन लोगोंने समझा था, कि अहमदशाहके

---

* Compare Browne, 'India Tracts', ii 22, 23 Murray's Runjeet Singh", P. 26,

साथ युद्धमें नियुक्त होनेके पहले ही सरहिन्दके सिख भाइयोंके साथ मिलना जरूरी है और समवेत आक्रमणसे वहांके शासनकर्त्ता जिनखांको पराभूत करना उनका पहला और प्रधान कर्त्तव्य है। लेकिन लुधियानेकी राह ले लाहोरसे बहुत दूरके स्थानमें सैन्यपरिचालनाकी जरूरत पड़नेसे उन लोगोंका उद्देश्य सिद्ध नहीं हुआ। अहमदशाहके प्रतिनिधिके साथ युद्धमें प्रवृत्त होनेके पहले ही स्वयं अहमदशाहने उनका गतिरोध किया। दोनो ओरसे घोरतर युद्ध हुआ। इस युद्धमें सिख लोग पूरी तरह पराजित हुए। मुसलमानोंने जिस क्षमताके साथ सिखोंपर आक्रमण किया था, उसकी अपेक्षा अधिक निपुणताके साथ उन लोगोंने सिखोंका अनुसरण किया। लोग कहते हैं,—बारहसे पन्द्रह हजारतक सिख इस युद्धमें मारे गये। सिखोंकी यह पराजय आज भी "घलू घर" (Ghuloo Ghara) या घार बक्कूटके नामसे अभिहित है। * कैदियोंमें वर्त्तमान पटियाला वंशके प्रतिष्ठाता आलासिंह थे; उनका साहसिकतासे वीरश्रेष्ठ दुर्रानीराज सन्तुष्ट हुए थे। "मालवा"

* लुधियानेसे बीस मील दक्षिण गुजरवाला और बारनालाके बीचमें यह युद्ध हुआ। अनुमान होता है, कि मालेरकोटलाके हींगनखांके उपदेशके अनुसार शाह परिचालित हुए थे। ब्राउनका इण्डिया ट्राक्ट, द्वितीय खण्ड २१ पृष्ठ; फारस्टरका भ्रमण-वृत्तान्त, प्रथम खण्ड ३१८ पृष्ठ और सर ग्रिफिन विरचित रणजितसिंह २१ और २५ पृष्ठ देखना चाहिये। सन् १७६२ ई०के फरवरी महीनेमें यह युद्ध हुआ।

और "मञ्झासिंह" में अधिकतर पार्थक्य विधानकी उपयोगिता विजेता अहमदशाह समझ सके थे। अहमदशाहने उन्हें एक राज्यके राज-पदपर प्रतिष्ठितकर बड़े सम्मानके साथ विदा किया। इसके बाद सरहिन्द जा शाहने अपने मित्र या अधीनस्थ शासनकर्त्ता नजीबुद्दौलासे मुलाकात की। इसी समय कन्धारमें एक विद्रोहका सूत्रपात हुआ। सुतरां काबुली मल नामक एक हिन्दूको लाहौरके शासनकर्त्ताके पदपर प्रतिष्ठित-कर उस दूर देशके विद्रोहको दमन करनेके लिये अबदाली कन्धारकी ओर गये। वहां जानेसे पहले, पहले उन्होंने अपनी प्रतिहिंसा वृत्ति चरितार्थ की; उनके असभ्य कुसंस्काराच्छन्न अनुचरवर्गका अभीष्ट भी सिद्ध हुआ; अमृतसरका नवसंस्कृत मन्दिर उन लोगोंने ध्वंस कर डाला, उन्होंने मन्दिरके भीतर गोहत्या की और उस मरी गौको पवित्र सरोवरमें फेंक दिया; गाभी देहसे सरोवर परिपूर्ण हुआ। कितने ही त्रिकोणाकृति स्तम्भ इन सिक्खोंके छिन्नमुण्डमालासे भूषित हुए और विधर्म्मी शत्रुओंके लहूसे अपवित्र और अस्पृश्य मन्दिरोंका प्राचीर परिष्कृत और रञ्जित हुआ। *

सिक्ख जाति तब भी निरुत्साहित नहीं हुई। उनकी संख्या दिनपर दिन बढ़ने लगी; जातीयताकी एक अभिनव उत्तेजना उनके मनमें जागी, वे इस समय प्रतिहिंसापरायण और प्रतिफलप्रदानके लिये उद्यत हो उठे। उनके सेनानायक और

---

* Compare, Forster, Travels, 1, 320, and Murry's Runjeet Singh, p. 25.

नेतृवृन्द सभी यशःप्रार्थी और राज्यसंस्थापनके अभिलाषी थे। पहले उन लोगोंने कसूरके पठान-उपनिवेशपर आक्रमण किया; यह प्रदेश उनके अधिकृत हुआ और उन्होंने उसे लूट लिया। इसके बाद उन लोगोंने पहले शतुमालेर कोटलाके हींगनखांके विरुद्ध अस्त्रधारण किया। युद्धमें हींगन-खां पराजित हुए और मारे गये। अन्तमें सरहिन्दकी ओर अग्रसर हो सिखोंने सरहिन्दपर आक्रमण किया। उस समय दिल्लीके बादशाह हीनबल हो गये थे। सुतरां मुसलमान धर्मकी रक्षाके लिये वह सिखोंके विरुद्ध अस्त्रधारण कर न सके। सन् १७६३ ई०के दिसम्बर महीनेमें चालीस हजार सिख-सैन्यके साथ वहांके अफगान शासनकर्त्ता जिनखांका युद्ध हुआ। लेकिन इस युद्धमें जिनखां पराजित हुए और मारे गये। शतद्रु और यमुनाके मध्यवर्त्ती सरहिन्दकी विस्तृत उपत्यकापर सिखोंने अधिकार कर लिया,—फिर कोई उन्हें बाधा देनेमें समर्थ नहीं हुआ। सुनते हैं,—युद्धमें जय पा सिख लोग चारों ओर फैल पड़े। प्रत्येक सिख सवार गांव गांवसे दूसरे गांवमें जा। पूरी तरह [illegible] पर्यायक्रमसे अपना अपना कमरबन्द, असि-कोष, परिच्छद सामग्री और वर्मा निक्षेप करने लगे; इसतरह उन्होंने [illegible] सब गांव और जनपद अपने अधिकारभुक्त [illegible] लिया। सरहिन्द शहर पूरी तरहसे ध्वंस हुआ। गोविन्दसिंहकी माता और सन्तान लोग जहां मारे गये थे, उस [illegible] ईंट [illegible] करना पुण्यजनक और प्रशंसा [illegible] सिख लोग अब भी विश्वास करते हैं। इस युद्धमें [illegible] सिखोंके

ही सिखोंने यमुना पार किया। उस समय नाजिबद्दौलह "जाटों"के साथ युद्धमें व्याप्त थे। सूर्यमल सिखोंके सेनापतिके पदपर प्रतिष्ठित हुए थे। जो हो, इतनेमें सिख लोग सहारनपुर पहुंचे। अपने राज्यकी रक्षाके लिये नाजिबद्दौलह वह युद्ध छोड़ लौट आये। नाजिबद्दौलहने सोचा,—सामने युद्धमें प्रवृत्त होना युक्तियुक्त नहीं, आक्रमणकारियोंके साथ सन्धि-स्थापनकर या कुछ बलप्रयोग द्वारा आक्रमणकारियोंको विदूरित करना ही विधि-सङ्गत है। *

नाजिबद्दौलहने जाटोंके साथ युद्धमें जय पाई थी। उस युद्धमें सूर्यमल मारे गये। सन् १७६४ ई०में मृत सरदारके पुत्र वजीरने—राजप्रतिनिधिको दिल्लीमें घेर लिया। इधर कितनी ही सिख सैन्य भरतपुरके भावी राजाके साथ मिल गई। महाराष्ट्रोंने भी राजकीय शक्तिकी उपेक्षाकर उनका साथ दिया। * सरहिन्द से अधिकारच्युत होनेपर, अहमदशाहने सातवीं बार सिन्धुनद पार किया था, नाजिबद्दौलह विविध विपदजालसे जड़ित

* Compare Browne, 'India Tracts', ii, 24, and Murray's 'Runjeet Singh', p. 26, 27. किसी किसी विवरणमें देखा गया है, कि सिखोंने उस समय लाहोरपर भी कुछ दिनोंके लिये अधिकार किया था।

* Compare Browne, 'Tracts' ii. 24. इसी अवसरमें सब राजन्य-वृन्दने दिल्लीके शाह-शक्तिके राजाको लूट लिया था, सिखोंके प्रचलित उपाख्यानमें इस समय भी उन लोगोंका नाम दिखाई देता है।

ही यमुनाके निकटवर्ती स्थानमें बढ़े। इसी समय दिल्लीश अवरोध परित्यक्त हुआ, महाराष्ट्र शासनकर्त्ता होलकरकी मध्यस्थतासे या उनकी असम्पूर्णतासे सिखोंने दिल्ली परित्याग किया। इधर अहमदशाहके अपने देशमें, अपने राज्यमें विद्रोह उपस्थित हुआ। सुतरां उन्होंने सरहिन्दके पुनरुद्धारकी कोई चेष्टा नहीं की, एकाएक भारतवर्ष छोड़ अपने देशमें लौट गये। उन्होंने खुद पटियालेके आलासिंहको ही उस प्रदेशके शासनकर्त्ताके नामसे स्वीकार किया। इस समय उस राजाने समय देख गुरुके एक पूर्व्वबन्धुके वंशधरको जिनके विनिमयसे शहर पाया था, यह स्थान उन बन्धुको प्रदान किया था। जो हो, सिखोंके इतिहासमें देखा गया है, अहमदशाहने विशेष क्षतिग्रस्त हुए बिना निष्कृति नहीं पाई। अमृतसरके पास दोनोंमें दीर्घकालव्यापी घोरतर एक युद्ध हुआ। इस युद्धमें कोई पक्ष जय पानेमें सक्षम नहीं हुआ; लेकिन इस युद्धके फलसे अफगान लोग शीघ्र भारतवर्ष छोड़ चले गये। सिख सैन्यने अनायास ही लाहोरके शासनकर्त्ता काबुली मलका उच्छेद-साधन किया। इरावतीसे शतद्रुतक विस्तृत विशाल राज्य सिखोंके अधीनतापाशमें आबद्ध हुआ। सिखोंने पश्चात् पर

प्रभुत्व और सिखधर्म्मके प्राधान्यकी घोषणा की। गुरुगोविन्दने नानकसे जो "देग" "तेग" और फतेह"—ईश्वरानुग्रह, प्रभुत्वशक्ति और जयलाभमें क्षिप्रकारिता पाई थी,—मुद्राके ऊपरी भागमें वही लिखा गया। *

---

* ब्राउनका इण्डिया-ट्रक्ट द्वितीय खण्ड, २५ और २७ पृष्ठ; फरष्टरका भ्रमणवृत्तान्त, प्रथम खण्ड, ३२१, ३२३ पृष्ठ, एल-फिनृसटनकृत, काबुल दूसरी पुस्तक, २८६—२८७ पृष्ठ और मरे विरचित रणजितसिंह २६, २७ पृष्ठ देखना चाहिये।

मुद्रित रुपया "गोविन्दशाही"के नामसे अभिहित है। बादशाहके नामके व्यवहारसे सबने ही आपत्ति की थी। (ब्राउनकृत ट्राक्ट द्वितीय पुस्तक २८ पृ० देखना चाहिये।) आजकल जो सब रुपये प्रचलित हैं, उनसे मालूम होता है, कि छोटे छोटे नरपतिगणने यह मुद्रा चलाया। रणजितसिंहके राजत्वके समय एक प्रकारका रुपया प्रचलित था; उसके ऊपरी भागमें लिखा हुआ था,—"देग, वाह तेग, वाह फतेह, वाह नसरत बदरङ्ग याफ्त आज नानक गुरुगोविन्दसिंह।" स्थूलत: इससे मालूम होता है, कि ईश्वरानुग्रह क्षमता और विजयलाभ—जयलाभमें क्षिप्रकारिता—गुरुगोविन्दसिंहने नानकसे पाई थी। तृतीय अध्यायका ११६-१२१ पृष्ठकी टीकामें तेग, देग और फतेहके बारेमें कुछ मन्तव्य दिखाई देंगे। ब्राउन, (ट्राक्ट द्वितीय खण्ड, भूमिका सप्तम पृष्ठ) "देग शब्दकी कोई उत्पत्ति निष्पन्न नहीं हुई। सुतरां उन्होंने यह शब्द अर्थहीन अवस्थामें ही सन्निविष्ट किया है। लेकिन उन्होंने कर्नल पिलसनकी

प्रायः दो सालतक सिखोंके कार्य्यकलापमें किसीने हस्तक्षेप नहीं किया। इस अल्पमात्र अवसरके समय वह लोग अविकृत राज्योंके सीमानिर्द्देशमें लगे थे, अपनी स्वाधीनता और प्रभुत्वकी अनभ्यस्त अवस्थामें वह निर्णय करनेमें प्रवृत्त थे, कि उनका आपसमें क्या सम्बन्ध था। सिख धर्म्मावलम्बी प्रत्येक स्वाधीन थे;—सभी साधारणतन्त्रके एक एक सदस्य थे। लेकिन उनका आपसका संस्थान शारीरिक और मानसिक शक्ति मात्र-सबमें एक तरहका नहीं था। इस समय सभी समझ सकते हैं,—प्रत्येकका समानरूप शक्ति-सामर्थ्य नहीं है; उनमें प्रभुत्वका सम्बन्ध भी वर्त्तमान है। सुतरां प्रकारान्तरसे उन लोगोंने जागीरकी प्रथा प्रवर्त्तन की। राजा, प्रजा और सरदार लोग पर्य्यायक्रमसे आपसमें ईश्वरके नामसे सन्धिसूत्रमें आबद्ध हुए। अर्द्ध-सभ्य समाजमें राजा, जमीन्दार और प्रजामें जैसा आदान-प्रदानका सम्बन्ध रहता है, सिखोंकी तीनों श्रेणीमें भी वैसे ही आदान-प्रदानकी व्यवस्था हुई। वह लोग जानते थे —ईश्वर उनके एकमात्र आश्रयदाता और सहायकारी हैं, वही उनके एक मात्र विचारक हैं। वह एक ही धर्म्मपर विश्वास करते और लोगोंकी मङ्गल-कामना ही उनका एकमात्र उद्देश्य था। यह नीति अवलम्बन करते ही वह लोग सब कार्य्योंमें दृढ़

होते और युद्धादि कार्य्यमें लगे रहते थे। गोविन्दकी लौह-तलवारके प्रति वह लोग अपरिसीम भक्ति दिखाते थे; वह तलवार ही इहजगतमें उनका एकमात्र अवलम्बन थी। हर साल सामयिक वृष्टिपातका विराम होनेपर जब सेनानिवेश-स्थापनमें और कोई विपदाशङ्का रहती नहीं थी, तब पौराणिकवीर रामचन्द्रके उत्सव-उपलक्ष्यपर "शरवते खालसा"—या सब सिखजाति अन्ततः एकबार स्नान अमृतसरमें एकत्र होती थी। शायद वह समझते थे,—पुण्यक्षेत्र तीर्थ-स्थानमें धर्म्मानुष्ठान करनेसे पापकार्य्यसम्पादनसे मनमें भयका सञ्चार होता है; उससे सब स्वार्थ विदूरित हो लोगोंके मनमें शुभजनक कार्य्यमें प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। प्रधान प्रधान पुरुष और अधिनायकोंकी सभा "गुरुमाता" नामसे अभिहित है। इससे मालूम होता है,—गोविन्दके उपदेश और आदेशके अनुसार या सभी उनके गुरु और धर्म्मपुस्तकोंसे ज्ञान पाने और एक मतावलम्बी होनेमें यत्नवान होते थे। * जो

---

* "मात" शब्दसे "ज्ञान-शक्ति" और "माना" शब्दसे परामर्श या विवेक मालूम होता है। अतएव "गुरुमाता" शब्दका सच्चा अर्थ,—"गुरुका उपदेश" है।

मेलकम (, 'Sketch', p. 52.) और ब्राउनने (Tracts ii; ४॥) प्रतिपन्न किया है,—गुरु गोविन्दने यह 'गुरुमाता' मिलनेका आदेश दिया। गोविन्दने कोई विशेष प्रथा-प्रवर्त्तन की थी,—यह किसी विवरणमें दिखाई नहीं देती। उस बारेमें विश्वासके लायक कोई दिग्दर्शन एकर सिखाइना श्री—

सब अधिनायक इसी सदुद्देश्यसे समवेत होते थे, वह कोई किसीकी भी अधीनता नहीं स्वीकार करते थे। उन लोगोंके अनुचरोंमें अधिकांश मनुष्य उनपर अकपट श्रद्धा-भक्ति नहीं करते थे, या वह उनका आदेश नहीं पालन करते थे। वह आपसमें अधीन रह जागीर भोगते थे और जागीर-प्रथाओंके अनुसार आपसमें अधीन हो युद्ध करनेपर वाध्य होते थे। सुतरां सिख लोगोंने सामरिक रीतिके अनुसार इस समय अधिनायककी अधीनता स्वीकार की। विधिवद्ध विधानक्रमसे वह लोग इस

कठिन है। तब भी, वह जो नीतिप्रवर्तन कर गये, उस नीतिका साधारण उद्देश्य अनुयायी और उस समयकी राजनीतिक अवस्थाके अनुसार उन सब राजसभाओं और सैन्य-समितिके अधिवेशनोंका विधि-विधान बद्धमूल हुआ था। सब जगह ही मनुष्यजाति इस नियमकी वशवर्ती होती है, और सब जगह ही ऐसी सभा-समितियोंका अधिवेशन होता है। लेकिन स्मरणातीत समयसे भारतवर्षमें ऐसी सभा-समितियोंके अधिवेशनकी बद्धमूल प्रथा चली आती है। इस समय सिखोंका राज्यशासन ज्यादा दिनों स्थायी नहीं रहा; उस समयके अधिवासी भी ज्यादातर कष्टसहिष्णु थे। उनके स्वभावजात धर्म सब गुप्तविषयक विवरण और सिखोंकी शासनप्रणालीके बारेमें कुछ मन्तव्य फारस्टरके "भ्रमण-वृत्तान्तमें" सन्निविष्ट है। (Compare Forster, Travels i, 324, 80.) "गुरुमाता" की उत्पत्तिके बारेमें मालकमका मन्तव्य देखना चाहिये। (Malcolm Sketch i, 120)

सामरिक नीतिका आग्रहके साथ अनुसरण करने लगे। सब सिखराजोंके आपसमें मिल किसी राज्यपर अधिकार करनेपर, वह उस विजित राज्यको तुलांशमें आपसमें बांट लेते थे। वह अपना अपना अंश बराबर बांटकर अधीनस्थ छोटे छोटे सैन्य-दलके अधिनायकोंको प्रदान करते थे। फिर वह दलपति लोग अपने अपने अंशका छोटा छोटा अंश बांटकर कुर्फा-प्रजाके हकके नियमानुसार अधीनस्थ सैन्यमें विभक्त कर देते थे। *

---

* मेरे लिखित "रणजित् सिंह" नामक ग्रन्थका ३१—३७ पृष्ठ देखना चाहिये। सिखोंने कुछ राज्योंपर अधिकार किया था, उसे उन लोगोंने अपने शासनाधीनमें नहीं रखा। उन सब राज्योंसे वह "राखी या संरक्षणी राजस्व" (आश्रय देनेके कारण जो राजस्व पाया जाता है,) कायदेके मुताबिक अदा करते थे। इस "राखीका" परिमाण भिन्न भिन्न स्थानोंमें विभिन्न रूपका था। उत्पन्न द्रव्यके आधे हिस्सेसे पांच हिस्से तक इस राजस्वका परिमाण निर्द्धारित हुआ था। महाराष्ट्रोंका जैसा "चौथ" या उत्पन्न द्रव्यका चौथा अंश था; वैसा ही सिखोंका भी राखी या आधे अंशसे पांचवां अंश था। दोनो शब्दोंका अर्थ एक ही है,—अर्थात् "अत्याचार निवारणार्थ डाकुओंका वृत्तिस्वरूप वार्षिक देयका रुपया" है। लेकिन साधुभाषामें इसका अर्थ—"कर या राजस्व" है। (Compare Browne, India Tracts' ii. viii. and Murray's Ranjeet Singh', P. 32). कभी कभी सम्पत्ति इतने कम अंशमें विभक्त होती थी, कि दो तीन यहांतक, कि

लेकिन यह नियम सब अवस्थामें सब समय उपयोगी होता था। कारण, सिख लोग अधिकृत राज्यका कुछ अंश "सम स्वत्व" भोग दखल करते और उसके [illegible] लोग स्वभावतः ही अधिकारी थे। कितने ही सिख इस शर्तपर साथ भोग करते कि प्रधान राजशक्तिके प्रत्याहृत होते ही वह लोग स्वाधीनता लेते थे। फलतः यह सब सिख किसीकी प्रजा नहीं थे, या किसी जागीरदारकी अधीनता स्वीकार करते नहीं थे। वह लोग अपनी इच्छासे चाहे जिस मनुष्यके अधीनमें काम देते थे; वह खुद सत्यरक्षपरिचालना करते थे; "खालसा" या साधारण तन्त्रके नामसे नये नये राज्यपर अधिकारकर खुद ही उसे भोग दखल करते थे। सिख लोग कभी किसी निर्दिष्ट मनुष्यके अधीनतापाशमें हमेशा आबद्ध नहीं होते थे;—या किसी निर्दिष्ट मनुष्यके साथ पूर्व्वापर एकताबन्धनमें आबद्ध नहीं होते थे। सुतरां उनकी यह चिर-परिवर्त्तनशील विचित्रावस्था "राजनैतिक शासनप्रणाली" के नामसे अभिहित हो नहीं सकती। किसी रीतिपद्धतिकी रेखामात्र कल्पना करनेके समय पहले स्वाधीन सिखोंकी बातका उल्लेख करना पड़ता है। हमारी प्रकृतिगत नियमावलीकी प्रतिष्ठानुसार विचारकर देखनेसे भी उसका अकाट्य प्रमाण पाया जा सकता है। लेकिन

दश सिख एक ही गांवकी मालगुजारीके हिस्सेदार होते थे, या प्रधानका एक ही साथमें मालगुजारीके हिस्सेदार। अंश पाते थे। सुतरां सिख निर्दिष्ट सीमाके [illegible] [illegible] अपना [illegible] [illegible] था।

उस बारेमें सभासमितियोंकी विधिबद्ध नियमावली या उनके धर्म्मगुरुओंके उपदेशसमूहकी आलोचना करना निष्प्रयोजन है। जो हो, क्षमताशाली मनुष्य अपना प्रभुत्व फैला दूसरेके श्रद्धाभाजनके अभिलाषी हो पड़े। पशुबलसे अपनी अपनी क्षमताके प्रयोगके बलसे जो आयत्त किया जा सकता है, वह लोग उन सब पर अधिकार करनेके लिये उत्कट प्रयासी हुए। सुतरां भिन्न भिन्न जाति और वंशके आपसमें एकतासूत्रमें आबद्ध होनेपर भी एक दूसरेपर आक्रमण करनेमें वह कुण्ठित नहीं होते थे। जो हो, ईश्वरानुग्रहका कठोर अनुशासन हरेक सिखोंके दिलमें जाग रहा था। सिखधर्म्मावलम्बी हरेक मनुष्य ही ईश्वर-निर्द्दिष्ट "खालसा" की ओर भक्ति और सम्मान दिखाता था। लेकिन प्रगाढ़ धर्म्मविश्वाससे नवशक्ति सञ्चारितकर उन धर्म्मोन्मत्त लोगोंको उत्साहित और परिचालित करनेके लिये असीम प्रतिभा और अवस्थाविशेषकी प्रक्रियाकी बहुत ज्यादा जरूरत थी।

इसके बाद सिखलोग विभिन्न सम्प्रदायमें परिणत हुए। इन सब सम्प्रदायोंकी संख्या कुल बारह थी। हरेक सन्निबद्ध सम्प्रदाय "मिसिल" नामसे अभिहित होती थी। "मिसिल" एक अरबी शब्द है; इसका अर्थ;—तुल्य या समान-पदस्थ है।* हरेक "मिसिल" एक एक "सर्दारके" आज्ञानुसार परिचालित

---

* "मिसिल" या मिस्ल शब्दका यही व्युत्पत्तिगत अर्थ है। तब भी, याद रखना उचित है, कि अरबी शब्द (Misl शब्दका जैसा उच्चारण प्रचलित है, इसके सिवा इस शब्दके उच्चारणके...

होते थे, हमेशा एक राजा या सेनापति इस सरदारपदपर वरित होते थे। लेकिन यह उपाधि उस समय बहुत साधारण भावसे प्रयुक्त होती थी। सामान्य एक दलके नेतासे लेकर उस सम्प्रदायकी अन्तर्गत तुल्य स्वत्वाधिकारी "सिंह" लोगोंके दलपतितक;—छोटे बड़े सभी दलके अधिनायक या सेनापति सभी यह उपाधि पाते थे। इन सब सन्निबद्ध सम्प्रदायोंने एक ही समय समभावसे पूर्ण शक्ति नहीं पाई, लेकिन एक "मिसिल"से दूसरी उत्पन्न होती थी। इन सब सन्निबद्ध सम्प्रदायोंपर संयोग-नीतिका प्रभाव फैल पड़ा था और कोई कोई क्षमतालिप्सु दलपति उस समय समाज या दल छोड़ एक वृहत् दल तय्यार करते थे। प्रथम या प्रसिद्ध अधिनायकके नाम, ग्राम, जिला, या किसी पूर्व्वपुरुषके नामके अनुसार प्रत्येक "मिसिल" स्वतन्त्र नामसे अभिहित होती थी। कभी एकाध-मिसिल सामाजिक रीतिपद्धति या अधिनायकके किसी गुण-विशेषके अनुसार परिचित होती थी। ऐसे बारह सम्प्रदायोंके नाम और परिचय नीचे दिया जाता है।—(१) 'भाङ्गी' सम्प्रदाय है, इस सम्प्रदायके मनुष्य 'भङ्ग' नामक एक प्रकारका मादक द्रव्य पीना पसन्द करते हैं और इसलिये ही

वह लोग "भङ्गी" नामसे परिचित हैं।* (२) निशानिय सम्प्रदाय है, इस सम्प्रदायके मनुष्य युक्त-सैन्यके विजयकेतन-वाहियोंके अनुवर्त्ती होनेके कारण इस नामसे अभिहित होते हैं। (३) "शहीद" और "निहङ्ग" सम्प्रदाय है; जो धर्मके लिये प्राणविसर्जन करते हैं, उनके वंशधरगण इस सम्प्रदायके प्रतिष्ठाता और अधिनायक थे। (४) "रामगढ़िया" सम्प्रदाय है; अम्रतसरके "रामरावणी" या ईश्वराधिष्ठित दुर्गकी बाहरी चुद्रनचणीके नामके अनुसार यह सम्प्रदाय "रामगढ़िया" नामसे अभिहित है। सूत्रधर वंशजात युशासिंह द्वारा यह स्थान "रामगढ़" या ईश्वराधिष्ठित दुर्गके नामसे अभिहित है। (५) "नाकिया" सम्प्रदाय है, लाहोरके दक्षिण "नाकिया" नामक एक गांव था; उस प्रदेशमें ही इस सम्प्रदायकी उत्पत्ति हुई है। (६) "अहलूवालिया" सम्प्रदाय है; युशासिंहने पहले जिस गांवमें अर्क टपकानेके काममें अपने पिताकी सहायता की थी, उसी गांवके अनुसार इस सम्प्रदायका नामकरण हुआ है। इन युशासिंहने पहले "खालसा" का सैन्यसम्प्रदाय तय्यार किया था। (७) "घाणिया या कानिया" सम्प्रदाय

* "भङ्ग" के दरख्तसे भङ्ग उत्पन्न होती है। राजपूत लोग जिसतरह अहिफेनका सेवन करना पसन्द करते हैं, युरोपीय लोग जैसे उन्मादकारी मद्यपान करनेमें तय्यार हैं, उसी तरह सिक्खलोग भङ्ग पीनेमें अभ्यस्त हैं। स्वास्थ्य-नाश और बुद्धिभ्रंश होनेके कारण, यह मादकद्रव्य सब जगह ही निन्दनीय है।

है। (८) "फैजुल्ला पुरिया" या "सिंहपुरिया" सम्प्रदाय है। (९) "सुकारचाकिया" सम्प्रदाय है। (१०) "डालेवाला" सम्प्रदाय है; इस सम्प्रदायके मनुष्य सम्भवतः अपने अधिनायकको वासभूमि या गांवके नामसे इस नामसे अभिहित हुए हैं। (११) "क्रोड़ासिंहिया" सम्प्रदाय है; तृतीय अधिनायकके नामानुसार इस सम्प्रदायकी वर्तमान आख्या प्रदत्त हुई है। कभी कभी यह सम्प्रदाय "पञ्चघरिया" सम्प्रदायके नामसे अभिहित होता है। पहले अधिनायकके उनके गांवके अनुसार यह सम्प्रदाय "पञ्चघरिया" सम्प्रदायके नामसे उल्लिखित होता है। (१२) "फुलकिया" सम्प्रदाय है; आलासिंह और उनके अन्यान्य सर्दारोंके एक पूर्वपुरुषके नामानुसार यह सम्प्रदाय फुलकिया सम्प्रदायके नामसे अभिहित है। *

इन सब मिसिलोंमें फुलकियाके सिवा बाकी सबने शतद्रुके

---

* कप्तान मरेने ("रणजित्सिंह" २९ पृ० इत्यादि।—Captain Murray's 'Runjeet Singh,' p. 29 &c.) अपने पहले सिखोंकी इस "मिसिल" की प्रथा लिखी है। विशेषतः फरष्टर, ब्राउन, मेलकम, किसीने इस "मिसिलगठनकी" बात या इस शब्दका उल्लेख नहीं किया। सर डेविड अक्टरलोनीने पहले पहल सोचा था,—"मिसिल" शब्दसे जाति और वंश मालूम होता है; इससे सन्निविष्ट दल या सम्प्रदाय कुछ भी निर्दिष्ट नहीं होता। सुतरां सर डेविडने अपना निजामानुयायी नाम दिया है। (Sir D. Ochterlony to the Government of India, 30th December, 1809)

उत्तर पञ्जाब प्रदेशमें विशेष ख्याति-प्रतिपत्ति पाई है। वह सभी "माञ्झासिंह" नामसे परिचित हैं। लाहोरके चतुःपार्श्व-वर्त्ती विशाल भू-खण्डने माञ्झा नामसे अभिहित होनेके कारण देशके नामानुसार यही नाम पाया था। माञ्झा नामसे परिचित हो "मालवा" के सिखोंसे अपने स्वातन्त्र्यकी रक्षा की थी। सरहिन्द और शोर्षाके मध्यवर्त्ती विस्तीर्ण प्रदेशसमूह साधारणतः "मालवा" नामसे अभिहित है, और वहांके अधिवासी मालवासिंह नामसे परिचित हैं। माञ्झामें पहले "फैजुल्लापुरिया" "आहलुवालिया" और "रामगढ़िया" सम्प्रदायका अभ्युत्थान हुआ, लेकिन उनका वह प्राधान्य ज्यादा दिनों स्थायी नहीं हुआ। इसी समय "भङ्गी" सम्प्रदायने प्राधान्य स्थापन किया और कुछ दिनो उनकी ही क्षमता अक्षुस रही। इसके वाद "फैजुल्लापुरियोंके" "कालिया" नामक एक शाखा-सम्प्रदायके अभ्युत्थानसे "भाङ्गी" सम्प्रदायका प्राधान्य कुछ ध्वंस हुआ। इसके वाद रणजित्सिंहके अभ्युत्थानसे "सूकरचकिया" सम्प्रदायकी प्रभुत्वप्रतिष्ठासे "कालिया" लोगोंका प्राधान्य नष्ट हुआ। मालवेका "फुलकिया" सम्प्रदाय पटियाला-शाखा-सम्प्रदायका प्राधान्य स्वीकार करता था। आलासिंहको उपाधिभूषणसे भूषितकर अहमदशाह भी पटियालेका आधिपत्य और श्रेष्ठत्व प्र[illegible]पन्न कर गये थे। तब भी, [illegible]म्प्रदायसमष्टिने श्रेष्ठत्वके वारमें [illegible]नेके लिये [illegible]कमान "[illegible]ङ्गी सम्प्रदा[illegible]के आग पटियाला-श[illegible]खा-सम्प्रदा[illegible] पेचादुत [illegible]िहार था। 'निशानिया और 'शहीद" सम्प्रदाय शायद प्रहत मिसिल" तय्यार करनेमें समर्थ होते थे। उनकी खास खास शाखा स्वतन्त्र रहती और

खास कारणवश सभी उनका सम्मान करते थे। * "नाकिया" सम्प्रदाय कभी ख्याति-प्रतिपत्ति और प्राधान्य लेनेमें समर्थ नहीं हुआ; "डलवाला" और क्रोड़ा सिंघिया" नामक फैजुल्लापुरी सम्प्रदायकी दो शाखाओंने सरहिन्दपर आक्रमणकर उनके राज्यके अधिकांशपर अधिकार कर लिया था। शेषोक्त सम्प्रदायविशेषने ख्याति-प्रतिपत्ति अर्जन की थी सही; लेकिन अन्यान्य सम्प्रदायोंपर वह प्राधान्य स्थापन करनेमें समर्थ नहीं हुआ, या वह सब सम्प्रदाय उसके अधीनतापाशमें आबद्ध नहीं हुए।

"भङ्गी" सम्प्रदायका अधिकृत देश बहुत दूरतक विस्तृत था। उत्तर लाहोर और अन्तसरसे वितस्ता नदी और उसके नीचेके प्रदेशतक "भङ्गी" सम्प्रदायका आधिपत्य विस्तृत हुआ था। अन्तसर और पर्व्वतश्रेणीके मध्यवर्त्ती भूखण्डमें "कानिया" सम्प्रदाय रहता था। "भङ्गी" राज्यके दक्षिण, इरावती और चन्द्रभागाके मध्यवर्त्ती प्रदेशमें "सुकरचकिया" सम्प्रदायने प्रभुत्वकी प्रतिष्ठा की थी। लाहोरके दक्षिण-पश्चिम

---

* "निशानिया" और "शहीद" सम्प्रदायने स्वतन्त्र दो "मिसिलें" तय्यार की थीं,—कप्तान मरे यह कहनेके सम्पूर्ण अधिकारी नहीं हैं। और सम्प्रदायोंमें वितस्ताके पश्चिम जो रहते थे, उनमें ही स्वतन्त्र "मिसिल" या एकता रख-आबद्ध सम्प्रदाय वर्त्तमान थे। शतद्रु नदीके निकटवर्त्ती प्रदेशोंमें उस समय जो सब मतामत प्रचलित था, इस पुङ्खानुपुङ्ख विवरणमें कप्तान मरेने केवल उसकी ही वर्णना की है

प्रदेशमें इरावती नदीके किनारे "नाकिया" सम्प्रदाय रहता था। शतद्रु और विपाशाके सङ्गमस्थलके निचले प्रदेशमें "फैजुलपुरिया" सम्प्रदायने नदीके पश्चिम तीरस्थ प्रदेशपर अधिकार किया था। विपाशा नदीके पूर्व्व किनारे "आहलूवालिया" सम्प्रदायका आधिपत्य फैला था। "डालवाला" लोग शतद्रुके उत्तर और पश्चिम किनारे रहते थे, और "रामगढ़िया" सम्प्रदाय शेषोक्त दोनोंके भीतर पर्व्वतमालाके नीचेके अधिवासी थे। "क्रोड़ा सिंघिया" लोगोंने जलन्धर दोआबके कुछ अंशपर अधिकार किया था। शतद्रुके दक्षिणस्थ सुनाम और भतिन्दाके चतुःपार्श्ववर्त्ती प्रदेशोंमें "फुलकिया" लोग रहते थे। "शहीद" और "निशानिया" दोनों सम्प्रदायोंने नाना देशोंपर अधिकार किया था, अपने अधिकृत स्थानोंमें वह लोग रहते थे; उनके सिवा और किसी प्रदेशमें उनका सम्प्रदाय नहीं दिखाई देता था। इसीतरह यह दो "मिसिल" और कुछ सम्प्रदाय (इस सम्प्रदायसमष्टिने पहले सारहिन्दपर आक्रमण किया था) अर्थात् "भङ्गी," "आहलूवालिया," "उक्तवलिया," "रामगढ़िया" और "क्रोड़ासिंघिया" सम्प्रदायसमष्टि एकत्र समवेत हो फीरोजपुरसे करनालतक फैले हुए शतद्रुके दक्षिण पर्व्वतके नीचे विशाल भू-खण्डका आपसमें विभाग कर लिया था। इधर सरहिन्द और दिल्लीके मध्यवर्त्ती प्रदेशोंमे "फुलकिया" लोगोंने आधिपत्यस्थापन किया था। * यह स्थान पूर्व्वोक्त सम्प्रदायसमष्टिके अधिकृत स्थानके पास अवस्थित है।

---

* डाक्तर मेकग्रेगरने अपने "सिख-इतिहासमें" (History

समय समयपर दुर्दमनीय धर्म्मोन्मत्ततावश अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित हो अमृतसरके पहरादार नियुक्त होते थे। कभी कुसंस्कारवश उत्तेजित हो जहां चाहते चले जाते और समय समयपर उत्तेजनावश अकेले भ्रमणकर तलवारके साहाय्यसे जीविका अर्ज्जन करते थे। * वह लोग समय समयपर कुछ परिदर्शक

---

* मेलकमका सारसंग्रह देखना चाहिये (Malcolm, "Sketch", p. 116) गुरुगोविन्दने इस "आकली" सम्प्रदायकी प्रतिष्ठा की,—मेलकमने भी इस मतका समर्थन किया है। इस बारेमें गुरुगोविन्दका कोई लिखा विवरण नहीं मिला। शायद उससे यह बात मालूम होती, कि एकमात्र धर्म्मानुरागियोंको ही गोविन्दने सिख-सम्प्रदायके अन्तर्भुक्त करनेका संकल्प किया था या नहीं। सुतरां विभिन्न सम्प्रदायकी उत्पत्ति और गठनके सम्बन्धमें मूलग्रन्थमें जो विवरण दिया गया है, वही सच्चा है। सिखोंकी धर्म्म-प्रवृत्ति इतनी प्रबल थी, कि हरेक सिख किसी न किसी काममें लगा रहता था, या कोई व्यवसाय-वाणिज्य करता था। जो मनुष्य संसार-विरागी और स्वभावतः युद्धप्रिय नहीं थे, साधारण तन्त्रको मङ्गलकामनाके लिये उन्हें भी किसी न किसी काममें नियुक्त रहना पड़ता था। एक समय ग्रन्थकारने देखा था,—एक "आकली" शतद्रुकी समतल भूमिसे छोटे कीरितपुर शहरतक विस्तृत ढालू अथच पर्व्वतकन्दरके भीतरसे राह बना रहा है। उस मनुष्यने सब तरहका संसार-बन्धन परित्याग किया था। सभी उसकी बहुत प्रशंसा करते थे। किसी निर्दिष्ट स्थानमें इस मनुष्यके लिये लोग खाना

और विचारकको क्षमता ग्रहण करते थे। उनके कोई आधि-पत्य विश्वासघातकताके अपराधपर "खालसा"के सामने उपस्थित नहीं होते थे। उनके नामसे सबके मनमें भयका संचार होता था,—सब उन लोगोंका सम्मान करते थे। किसी मनुष्यके उनका विरागभाजन होनेपर, या साधारण-जनका कोई अनिष्टसाधन करनेपर, वह लोग समय समयपर उस मनुष्यका यथासर्वस्व लूट लेते थे। "आकली" सम्प्रदायने कुछ दिनों बहुत ख्याति-प्रतिपत्ति पाई थी और उनकी यह उच्चपदवी बहुत दिनों मौजूद थी। इसके बाद रणजितसिंहके अभ्युदयसे उनकी सब क्षमता और सब आधिपत्य ध्वंस हुआ। इस उन्मत्त सम्प्रदायको दमनकर जन-समाजमें अपनी अक्षय कीर्ति-की प्रतिष्ठा करनेमें उन सुदक्ष और अध्यवसायशील नरपतिने बहुत रुपये खर्च और कालक्षय किया था;—उन्होंने अद्वितीय कष्टभोग किया था।

और कपड़ा संग्रह कर रखते थे। उसको इस अध्यवसायशी-लता और एकाग्रताने मेषपालक हिन्दू जातियोंमें एक अभिनव प्रभाव फैला था। वह हिन्दू लोक आकलियोंको तरहकी पोशाक पहननेमें लगे थे। धर्मनिष्ठ पुरुष लोग जैसा सदा ईश्वरका भय करते हैं, उसी तरह वह पाठक भी तिके साथ धर्मालाप करते थे।

पञ्चम परिच्छेद।

सिखजातिके स्वाधीन राज्यस्थापनसे रणजित्-सिंहका अभ्युदय और अङ्गरेजोंके साथ मित्रता स्थापन।

१७६५—१८०८-६।

(अहमदशाहका भारतपर आखिरी आक्रमण;—सिखजातिके "भङ्गी" सम्प्रदायका प्राधान्यस्थापन,—तैमूरशाहका आक्रमण;—हरियानेका "फुलकिया" सिखसम्प्रदाय,—जाबिताखां;—सिखजातिमें "काणिया" सम्प्रदायका आधिपत्यस्थापन;—शाहासिंह सुकरचाकियाका प्रतिष्ठालाभ;—शाहे जमानका आक्रमण और रणजित्सिंहका अभ्युदय;—सिन्धियाके अधिनायकत्वमें उत्तर भारतके महाराष्ट्रोंका प्राधान्यस्थापन; जनरल पेरन और जार्ज टामस—सिखजाति और महाराष्ट्रोका सन्धिस्थापन;—सिखोंके साथ अङ्गरेजोंका सम्बन्ध,—सिन्धिया और होलकरके विरुद्ध लार्ड लेककी युद्धयात्रा;—सिखोंके साथ अङ्गरेजोंकी पहली सन्धि;—फ्रान्सीसियोंका भारतआक्रमणके लिये बाधा देनेका प्रयोग;—रणजित्सिंहके साथ मित्रता-बन्धन और शतद्रुके पश्चिम सीमान्तवर्त्ती सिखसर्दारोंकी रक्षाके लिये सन्धिस्थापन।)

सिखजातिने कर्नाल और हांसीसे वितस्ता नदीके किनारेतक विस्तृत भूखण्डमें आधिपत्य फैलाया था। उनका एकताबन्धन

अधिक दिनों स्थायी नहीं रहा; दुर्दैव अशिक्षित मनुष्य कार हो दुश्मनके वशवर्ती हुए; वह लोग समाजके कल्याणको अपेक्षा आत्मस्वार्थ हो प्रबल समझते थे। कुछ लोग प्रकृत या काल्पनिक अनिष्टसम्भावनासे कार्य्य करने लगे। तब उन लोगोंने सोचा,—प्रतिशोध लेनेका उपयुक्त समय आया है। और कितने ही मनुष्य पारिपार्श्विक अवस्थाके अनुवर्ती हो मालके नगर और जिलोंपर अधिकार करनेमें उद्बुद्ध हुए। धर्म्मनिष्ठ सिखलोग धर्म्म फैलानेके लिये बद्ध-परिकर हुए। भिन्न भिन्न राज्यमें जय पा और किसी किसी राज्यमें कर स्थापनकर वह लोग खालसाका साधारण राज्य बढ़ाने लगे। कुछ दिनों आरामके बाद नवोत्साहसे उत्साहित हो विभिन्न उद्देश्यसे प्रणोदित हो, जब सिखजातिका पुनरभ्युदय होने लगा, तब अहमदशाहने आखिरी बार भारतवर्षपर आक्रमण किया। उनके आक्रमणसे भीत हो सिखजाति फिर एकता-बन्धनमें आबद्ध हुई। वयोवृद्धिके साथ साथ रोगतापके आधिक्यके कारण अहमदशाहका उत्साह, कार्य्य-नैपुण्य और क्षमता घट गई थी; तब भी, उन अफगान नरपतिने अपने राज्यकी श्रेष्ठ उर्व्वरभूमि पञ्जाबके पुनरुद्धारके लिये और एकबार चेष्टा की। सन् १७६७ ई०में सिन्धुनद पारकर वह शतद्रुतक आगे बढ़े; वह और ज्यादा दूर नहीं बढ़े, सुतरां लाहोर परित्यक्त हुआ। जब उन्होंने समझा, कि सिखोंको पराभूत करना इस समय उनकी क्षमतासे बाहर है, तो उन्होंने उनके साथ सन्धिस्थापनकी चेष्टा की। इसी समय रणकुशल अमरसिंह पितामहने उत्तराधिकारसूत्रसे पटियालेके सिंह या मालवाके सिखोंके अधि-

नायकके पदपर वरित हुए। अहमदशाहने उन्हें ही महाराजकी उपाधि प्रदानकर सरहिन्दके सेनापतिके पदपर वरित किया। तब अहमदशाहने देखा, कि काटोचेरके राजपूत सर्द्दार भी उनके साथ मित्रतास्थापनके अभिलाषी हैं। अहमदशाहने उन्हें भी उपाधिभूषणसे भूषितकर जलन्धर दोआब और उससे लगे पहाड़ी प्रदेशका प्रतिनिधि नियुक्त किया। लेकिन सैन्यदलकी अव्यवस्थाके कारण उनका सब उद्देश—सब चेष्टा, व्यर्थ हुई। उनकी बारह हजार सैन्य काबुलकी ओर लौट गई अगत्या उन्होंने भी उनके साथ जाना ही अच्छा समझा। लेकिन जानेके समय अहमदशाह फिर विपर्यस्त हुए। सिन्धुनद पार करनेसे पहले ही रणजित्‌सिंहके पितामहके अधिनायकत्व और पारिपार्श्विक "भङ्गी" सम्प्रदायके एक सैन्यदलके साहाय्यसे "सुकरचाकिया" लोगोंने शेरशाहका रोहताशका पहाड़ी दुर्ग घेर लिया। सन् १७६८ ई॰में यह स्थान अधिकृत हुआ। इसकी अव्यवहितके बाद ही "भङ्गी" लोगोंने रावलपिण्डी और खानपुरके उपत्यकाका अधिकार फैला दिया। "शुकार" सम्प्रदाय आक्रमणकारी मुगलोंके साथ युद्धमें निज सत्साहस और अमशीलताकी लिये विख्याति पाई थी, इस समय वह लोग वैसे सत्साहस और सहिष्णुताका परिचय देनेमें सक्षम नहीं हुए। *

---

* फारष्टरका भ्रमणवृत्तान्त, प्रथम खण्ड, ३११ पृ॰, एल्‌फिन्‌ष्टनका 'काबुल' द्वितीय खण्ड, २८१ पृष्ठ; प्रे-विरचित 'रणजित्‌सिंह' २७ पृष्ठ, मरक्राफ्टका 'भ्रमणवृत्तान्त प्रथम

इसके बाद हरिसिंहके अधिनायकत्वमें "भङ्गी" लोग मुल-तानकी ओर गये। लेकिन दाऊद-पौत्र नामक एक मुसलमान सम्प्रदायके आक्रमणसे उनकी गति प्रतिहत हुई। नादिर शाहने दाऊद-पौत्रोंको काबुलसे हटानेकी इच्छा प्रकट की, नादिरशाहके उस उद्देश्यको जान, उन लोगोंने सिन्धु देश छोड़ पञ्जाबमें एक उपनिवेश स्थापन किया। अब भी वह स्थान भावलपुर नामसे अभिहित है। * इसके बाद हरिसिंहके

खण्ड, २७ पृष्ठ देखना चाहिये। ग्रन्थकारने जिन सब हस्त-लिखित पुस्तकोंकी आलोचना की है, उनकी आलोचना भी जरूरी है।

* एक समय नादिरशाह सिन्धु देशमें अपनी क्षमता फैला-नेके लिये गये; तब भावलपुर-वंशके पूर्व्वपुरुषोंने अपने स्वदेश शिकारपुरमें विशेष ख्याति-प्रतिपत्ति पाई थी। नादिरशाहने उन्हें उस प्रदेशका उत्तर-तृतीयांशका शासनकर्त्ता नियुक्त किया। लेकिन उस सम्प्रदायके प्रति अविश्वासवश नादिर-शाहने उन लोगोंको गजनीसे स्थानान्तरित करनेका सङ्कल्प किया। तब उस राजवंशने अपना स्थान परित्यागकर शतद्रु के उत्तरवर्त्ती प्रदेशोंपर बलपूर्व्वक अधिकार कर लिया। दाऊद (दविड) नामक उस वंशके विख्यात आदिपुरुषके नामसे यह सम्प्रदाय "दाऊद-पौत्र" नामसे अभिहित है। उनका विश्वास था,—वह लोग खलीफा अब्बासके वंशधर हैं। लेकिन वह लोग सिन्धु देशीय "बलूची" जाति थे, या वह लोग आदिम बलूची जाति थे;—सिन्धु देशमें अधिक दिनों रहनेके

साथ मुबारकखाने सन्धि स्थापन की। देशप्रसिद्ध मुसलमान फकीर जहांके अधिकारी थे, वह निरपेक्ष पाकपतन शहर ही दोनो पक्षकी साधारण सीमा निर्द्धारित हुआ। फिर हरिसिंह सिन्धुनद और डेरागाजीखांकी ओर जा, जबरदस्ती राज्यपर अधिकार करने लगे। जब वह राज्यके फैलानेमें लगे थे, तब उनके गुजरातके प्रतिनिधिने रावलपिण्डीपर अधिकारकर काश्मीर-प्रवेशकी चेष्टा की। लेकिन उनका वह उद्यम व्यर्थ हुआ; प्रतिनिधि वहांसे विताड़ित हुए और उनका सैन्यबल बहुत नष्ट हुआ। वृद्ध नाजिबद्दौलहको जगाधरी परगना और परिपार्श्विक नगरोंमें सबसे प्रधान शासनकर्त्ता समझ, रामसिंह भङ्गी उनके प्रतियोगी हो गये। इस समय यमुनाकिनारे और सुवृहत् दोआबमें रामसिंह भङ्गी और बघेल सिंह क्रोड़ा-सिंधियाने नाजिबद्दौलहके प्रति दारुण उत्पीड़न आरम्भ किया। उन लोगोंका उत्पीड़न असह्य हो गया, सुतरां अनन्योपाय हो, नाजिबद्दौलह उन दोनों सर्द्दारोंके विरुद्ध समवेत आक्रमणके लिये महाराष्ट्रोंसे साहाय्यकी प्रार्थना की। लेकिन

कारण उनमें बहुत कुछ परिवर्त्तन साधित हुआ था। शतद्रु के किनारे उनके आधिपत्यस्थापन और वासस्थान निर्द्देश करनेसे पुराने 'लुङ्गा' और "जोहिया" सम्प्रदायकी सभी जाति लोप हुई। उन लोगोंने सिन्धुदेशीय सेचन-प्रणाली द्वारा जल सींचनेकी प्रथा प्रवर्त्तित की थी। उस नदीके दोनों किनारे की पाकपट्टनके निम्नदेशमें उनके प्राचीन शिल्प-नैपुण्यका और कृषिकार्य्यका ज्वलन्त दृष्टान्त वर्त्तमान है।

१७७० ई०में उनकी मृत्यु होनेसे उनकी वह कल्पना,—अभिसन्धि व्यर्थ हुई। उनके उत्तराधिकारी पुत्रका स्वतन्त्र उद्देश्य था। विपदके समय मित्र समझ वह सिखोंको उत्साह देने लगे। *

इसी समय हरिसिंह भङ्गीकी मृत्यु हुई। झण्डासिंह उनके उत्तराधिकारी हुए। झण्डासिंहकी अधीनतामें सिखोंके क्षमता-प्राप्तिपत्रने सबसे ऊंचे स्थानपर अधिकार किया था। जम्बू करद-राज्यमें गिना गया। उस समय अफगानोंके बारबार आक्रमणसे और सिखोंके अविच्छिन्न राजद्रोह और लूटसे, समतल प्रदेशका व्यवसाय-वाणिज्य पहाड़ी प्रदेशके वक्र, फिर भी, निरापद राहमें परिचालित होनेसे, जम्बू प्रधान स्थानोंमें गिना गया। राजपूतवंशीय राजा रणजित देव भी बहुत सत्-स्वभाव सम्पन्न थे; रोजगारी उनपर विश्वासस्थापनकर आश्रयार्थी उनकी राजधानीमें इकट्ठे होने लगे। इसके बाद कसूरके पठान-राज्यसमूह करद-राज्यमें गिने गये। अन्तमें झण्डासिंहने अपने प्रतिनिधि मज्जासिंहको मुलतानपर आक्रमण करनेके लिये भेजा। लेकिन भावलपुरके राजासे मिल, सन्धिबद्ध अफगान-सर्दारोंने समवेत सैन्यसे उनपर आक्रमण किया, वह पराजित हुए; युद्धमें उनकी मृत्यु हुई। दूसरे साल, सन् १७७२ ई०में उन सहयोगी शासनकर्त्ताओंमें विवाद

---

* भावलपुरके परिवारका इतिवृत्त हस्तलिखित सिख-इतिहासमें देखना चाहिये। (फरष्टर भ्रमणवृत्तान्त प्रथम खण्ड १४८ पृष्ठ।)

उपस्थित हुआ। उनमें एकने भाण्डासिंहसे सहायताकी प्रार्थना की। अविवेचक सर्दार खुद किलेपर अधिकार कर बैठे। इसके बाद उत्तरकी ओर जा उन्होंने देखा,—जम्-सिंहासनके और एक प्रतिद्वन्द्वी सूरतसिंह सुकरचाकियाने और काणिया मिसिलके उन्नतिशील अधिनायकने जयसिंहकी सहायता पाई है। लेकिन अपने हाथकी बन्दूकके फटनेसे उस गोलेकी चोटसे सूरतसिंह मृत्युमुखमें पतित हुए। इसके बाद जयसिंहने बहुत तुच्छ उपायोंसे भाण्डा सिंहको मार अपनी नीचाशयताका परिचय दिया। इसतरह एक पराक्रान्त नरपतिको अपसारितकर, जयसिंह काणियाने बहुत प्रसन्नता पाई सही, लेकिन जम्बू प्रार्थी अपने हकनिर्द्धारण और स्वकृत्यसाधनके लिये वह अकेले ही मौजूद रहे और उन्होंने इस विषयमें चेष्टा भी की। तब सूत्रधरजातीय युशासिंहको विताड़ित करनेकी इच्छासे "काणिया" सर्दार जयसिंह सुशासिंह आहलूवालियाके साथ मिल एक षड़यन्त्र करने लगे। उस समय युशासिंह सूत्रधरके प्रभावसे अहमदशाहके नाममात्रके प्रतिनिधि कटोचरके घमण्डचन्द्र और पहाड़ी प्रदेशके राजपूत सर्दारोंने उनकी अधीनता स्वीकार की थी और उनका अधिकृत राज्य-समूह युशासिंह सूत्रधरके करदराज्यमें गिना गया था। जो हो, अन्तमें रामगढ़िया युशासिंह पराजित हो हरियानेके मरुप्रदेशमें भाग गये और डाके द्वारा जीविकानिर्वाह करने लगे। इसी समय सन् १७७४ ई०के मध्यमें काबूलके मुसलमान शासनकर्त्ताकी मृत्यु हुई। वह स्वाधीनभावसे राज्य-शासन करनेमें या दिल्ली या काबुलकी अधीनता स्वीकार करनेमें

कृतसङ्कल्प हुये थे। लेकिन कटोचरके अभ्युत्थानशील अधिपति बहुत दिनोंसे उनके देशप्रसिद्ध दुर्गपर अधिकार करनेके लिये लालायित थे। जो हो, कटोचरके नरपतिने जयसिंह कानियासे साहाय्यकी प्रार्थना की; जयसिंह भी सहायता देनेपर राजी हुए। समवेत आक्रमणसे वह सुदृढ़ दुर्ग अधिकृत हुआ। लेकिन सिख-सेनापति दुर्गपर खुद ही अधिकार कर बैठे। आसपासके राजा और ठाकुरोंपर बहुत दिनोंसे शुभासिंहका आधिपत्य था। जयसिंह इस समय राजकीय दुर्गपर अधिकारकर शुभासिंहका आधिपत्य हरण करने लगे। *

पञ्जाबके दक्षिणवर्त्ती प्रदेशोंमें "भङ्गी" सम्प्रदायके सिखोंने प्राधान्य स्थापन किया था। मानकेरा और मुलतानके दो वृहत् सुरक्षित दुर्ग सिखोंके अधिकारमें थे और वह लोग कालबासे दक्षिण सीमान्ततक सब नीचेके प्रदेशोंसे जबरदस्ती कर लेते थे। मुलतानसे अधिकारच्युत होनेपर अफगान-जातिने बहावलपुरमें राजधानी स्थापन किया। सिखोंने उस स्थानपर

---

* भावलपुरके राजाका इतिहास और सिखोंका हस्तलिखित विवरण देखना चाहिये। मरे विरचित "रणजित-सिंह" नामक पुस्तकका ३८ पृष्ठ और फ्रस्टरका "भ्रमणवृत्तान्त" प्रथमखण्ड, २८३, २८६, ३३६ पृष्ठ।

१७७० ई०में जम्बूके रणजित्देवकी मृत्यु हुई।

दैव-घटनाक्रमसे सूरतसिंह मारे गये, और सन् १७७४ ई०में बन्दासिंहका मस्तक छिन्नभिन्न हुआ।

पटियालेके उमरसिंहके साथ युद्धमें, सन् १७७० ई०में हरिसिंह भाङ्गी मारे गये।

अधिकार करनेकी चेष्टा की, लेकिन उनकी वह चेष्टा विफल हुई। सन् १७७३ में तैमूर शाहने पितृसिंहासन पाया। वह अन्तमें सिन्धुनद पारकर भारतवर्ष आये। लेकिन उनका उद्देश्य स्वतन्त्र था। सिन्धुदेश, भावलपुर और निम्न-पञ्जाब प्रदेशपर अधिकार करनेकी इच्छासे, उन्होंने लाहोरपर फिर अधिकार करनेकी चेष्टा नहीं की। सन् १७७७-७८ ई०में काबुलकी सैन्यके दो छोटे दलोंने मुलतानसे सिखोंको विताड़ित करनेकी चेष्टा की; लेकिन उन लोगोंकी यह चेष्टा व्यर्थ हुई। सन् १७७८-७९ ई०में शाह खुद फौजके साथ उनके विरुद्ध गये। 'भङ्गिओंके' नये अधिनायक गेदासिंह इस समय अन्यान्य सिख-अधिनायकोंके साथ विवादमें प्रवृत्त थे; उनके प्रतिनिधि लोगोंने प्रतिरोधका बहानाकर राजधानी उन्हें समर्पण की। सन् १७९३ ई०तक तैमूर शाहने वहां राजत्व किया; लेकिन वह इन कई वर्ष सिन्धिया, काश्मीरराज और उजबक लोगोंका विद्रोह-दमन करनेमें नियुक्त थे। यहांतक, कि सिखोंके रावलपिण्डीपर अधिकार करनेमें तैमूरने किसी तरहकी बाधा नहीं दी। उनके रुकेस-बुड़सवार कच्छसे अटककी सीमातक विस्तृत समतलक्षेत्रमें घूमे थे, वह सब प्रदेश सिखोंके अधिकृत हुए थे। *

---

* भावलपुरके राजाका इतिहास और अन्यान्य हस्तलिखित विवरण देखना चाहिये। Compare Browne, "India Tracts, ii", 28, and Forster, "Travels," i, 324. एलफिन्स्टन ("Caubul", ii, 303) कहते हैं, सन् १८०१ ई०में

इसी समय उमरसिंहने फुलकिया, हरियाना और दिल्लीके सीमान्ततक अपना प्रभुत्व संस्थापन कर लिया। उन्होंने सिरसा और फतेहाबादपर अधिकार किया; उनका राज्य बीकानेर और भावलपुरके राज्यके बराबर हो गया। उनके अधीनस्थ झिन्द और कैथलके योधगणने हांसी रोहतकको चारो ओरके सब प्रदेशोंपर आधिपत्य फैलाया था। इसी समय सरहिन्दके प्रदेशोंपर फिर प्रभुत्वको प्रतिष्ठा करनेके लिये दिल्लीके बादशाहने आखीर बार चेष्टा की। सुतरां उमरसिंह अपनी राजधानी पटियाले लौट जानेके लिये बाध्य हुए। सन १७७६-८० ई०में उस समयके मन्त्री और सम्राटके परिवार के फरखन्दाबख्त नामक एक सेनापतिके अधीनमें एक दल सेनाने युद्ध-यात्रा की। कर्नाल फिर अधिकृत हुआ; कितने ही लोगोंने राजस्व देना अङ्गीकार किया और विख्यात क्रोड़सिंहिया-अधिनायकने बघेलसिंहको वश्यता स्वीकार की। कैथलके देशसिंह बहुत अर्थदण्डसे दण्डित हुए। अन्तमें राजकीय सैन्यने पटियालेमें प्रवेश किया। उमरसिंहने बादशाहकी वश्यता स्वीकारकर राजस्व देना अङ्गीकार किया। तब बघेलसिंह अपने उद्देश्यसाधनके लिये बद्ध-परिकर हुए। इसी समय एकाएक समाचार आया—बृहत् एकदल सिखसैन्यने लाहोरसे यात्रा की है, शीघ्र मुगलसैन्य पानीपतकी ओर लौट गई। लेकिन उसके मनमें एक सन्देह हुआ,—मन्त्रिवरने सिखोंसे रिशवत पाकर अपनी धन-

---

सिखोंके हाथ मुलतान फिर अधिकृत हुआ। यह सन् १७७६ ई०तक स्वीकार नहीं करते।

लिप्साको चरितार्थ किया है, और इसीलिये विश्वासघातकताके साथ प्रभुका स्वार्थविसर्जनकर उन्होंने दुशमनका पक्ष लिया है। सन् १७८१ ई०में उमरसिंह एक कमउम्र उन्मादग्रस्त पुत्र छोड़ परलोक गये। इसके दो साल बाद, दुर्भिक्षके प्रकोपसे हरियाना जनशून्य हुआ, वहांके अधिवासी अनाहारसे मृत्यु-मुखमें पतित हुए और कितने ही बाहर चले गये। सिरसा मरुभूमिमें परिणत हुआ। उस समय एक बहुत विस्तृत प्रदेशमें सिखोंने हाथसे निकल स्वाधीनता अवलम्बन किया। इसके बाद सिख लोग फिर उस देशका उद्धार करनेमें समर्थ नहीं हुए। *

गङ्गा और यमुनाके मध्यवर्ती सिखोंने नाजिबुद्दौलाके पुत्र जाबिताखांको बहुत रुपये दे वशीभूतकर उनके साथ मित्रता स्थापन की। वह शासनकर्त्ता साम्राज्यसे नामसात मन्त्रिपद पानेके अभिलाषी हुए और वह मन्त्रित्व पानेके लिये उन्होंने तरह तरहका षडयन्त्र करना आरम्भ किया। इस समय राजकीय सैन्यके पराजयसे वह बहुत कुछ कृतकार्य्य हुए। सन् १७७६ ई०में उन्होंने दिल्ली नगरी घेरनेकी इच्छासे उस ओर

---

* लुटियानेकी सोमाके बारेमें मिस्टर रमबेल्ने सन् १८३६ ई०के एक कामका जिक्र किया है। यहां वह विवरण और हस्तलिखित इतिहास देखना चाहिये। फ्राङ्कलिन-कृत 'शाह आलम' ८६ और ६० पृष्ठ और शाहिनेवाजखां 'मिरितये आफताबनुमा' नामक भारत-इतिहासका सारसंग्रह देखना चाहिये।

यात्रा की; लेकिन युद्धका समय उपनीत होनेपर उन्हें अपनी क्षमतापर अविश्वास उत्पन्न हुआ। इधर बादशाह भी उन्हें और ज्यादा उत्तेजित और कुपित करनेमें अनिच्छुक थे। दोनों पक्षकी एक सन्धि हुई। बादशाहने जाबिताखांको ही सहारनपुरमें शासनकर्त्ताके नामसे स्वीकार किया। इस अवसरपर एकदल सिक्खसैन्यने जाबिताखांको सहायता की थी। उन्होंने उन लोगोंको अनुरञ्जित करनेकी प्रबल इच्छा प्रकाश की। विश्वस्तसूत्रसे मालूम होता है,—जाबिताखांने उनकी जातीय पोशाक पहन "पाहुल" या दीक्षा मन्त्र लेनेके बाद धरमसिंह नाम पाया था। *

जुशासिंह रामगढ़िया "अहलूवालिया" और "कान्हिया" सम्प्रदाय द्वारा आक्रान्त हो भागनेपर बाध्य हुए। तब हिसा-रके निकटवर्त्ती प्रदेशमें अपना आधिपत्य स्थापन करनेके लिये उन्होंने उमरसिंह फुलकियाकी सहायता पाई थी। वहांसे ही उन्होंने दिल्लीके सीमान्ततक बाहुबलसे राजस्व संग्रह करना आरम्भ किया। सन् १७८१ ई०में एकदल सैन्यने दोआबकी निम्न-भूमिपर आक्रमण किया; लेकिन बादशाहके सेनापति मिर्ज़ा खांकी वेगके साथ मेरटमें उनका एक घोरतर युद्ध

---

* फरष्टरका "भ्रमण वृत्तान्त," प्रथम खण्ड, ३२५ पृष्ठ, ब्राउ-नका "इण्डिया ट्राक्ट" द्वितीय खण्ड २९ पृष्ठ और फ्राङ्कलिन-कृत "शाहआलम," ७२ पृष्ठ देखना चाहिये, (Compare Forster, "Travels", i, 325, Browne, "India Tracts", ii, 29, and Francklin's "Shah Alum", p. 72)"

हुआ, उस युद्धमें सिखलोग पूरी तरह पराजित हुए। भिम्हके मंगपतिसिंह कैद हुए। तब भी, सन् १७८३ ई०में बघेलसिंह और अन्यान्य सेनापति लोगोंने बहुत ज्यादा सैन्य संग्रहकर गङ्गापार करनेकी इच्छा की। लेकिन नदीके उसपार बादशाहके सैन्यकी सतर्कताके कारण उनका वह उद्यम व्यर्थ हुआ, वह लोग गङ्गापार करनेमें असमर्थ हुए। पहले ही कहा गया है,—दुर्भिक्षके प्रकोपसे कितने ही लोग मृत्युमुखमें पतित हुए। युश्शासिंह बाध्य हो दोआब चले गये। सन् १७८५ ई०में सन्निवद्ध सम्प्रदायसमष्टिने रुहेलखण्डमें प्रवेशकर बरेलीसे चालीस मील दूर चन्दौसीतक विस्तृत सब देश लूट लिया। इस समय जाबिताखां घोषगढ़के दुर्गमें घिरे थे। धरवलके पहाड़ी राजा चन्द्रभागाके पश्चिम तीरवर्ती पर्व्वतके नीचे अन्यान्य राजपूतोंकी तरह करद-राजगणके अन्तर्भुक्त हुए। उनके ही पूर्व्वपुरुषने बादशाह औरङ्गजेबकी क्षमताकी उपेक्षाकर उनके पुत्र दाराको आश्रय दिया था; लेकिन यह इस समय उस पूर्व्व गौरवकी रक्षा नहीं कर सके। अयोध्याके सीमान्तसे सिन्धुनदतक सब देशोंमें सिखजाति ही उस समय प्रबल और प्रधान थी। परिव्राजक फरष्टरने कौतूहलच्छलसे कहा है,—दुर्गप्राचीरमें दो घुड़सवार सिख-सिपाही देख उन दुर्गाधिपति कमउम्र सर्दार बालकके और उनके अनुचर और प्रजाके मनमें महाभयका सञ्चार हुआ था। अरबसके स्थानीय राजकर्म्मचारियोंसे सम्बन्धयुक्त सिखलोगोंने विशेष सम्मान-सम्वर्द्धना पाई थी और विशेष सतर्कताके साथ उन लोगोंने सिखोंका बहुत उपकार किया था। साधारण अभ्यर्थनाकी

जाह समवेत पथिकवृन्दोंसे उन लोगोंने सम्मान पाया था,-- फ्रस्टरने और भी मनोमुग्धकर भावसे उसकी वर्णना की है। *

उस समय पञ्जाबके जयसिंह कानियाकी समता अद्भुत थी। चूरतसिंह सुकरचाकियाके पुत्र महासिंह इस समय उनके इच्छाधीन थे। उस समय मुसलमानोंने चन्द्रभागाके तीर-वर्त्ती रसूलियोंपर अधिकार किया था। उस नगरका उद्धार करनेके लिये जयसिंहने उन सर्दार-बालककी सहायता की। महासिंहकी प्रशंसा दिनो दिन बढ़ने लगी। अन्तमें जयसिंहके अधीनतापाशको छिन्नकर सन् १७८४-८५ ई॰में स्वार्थसाधनके लिये अपनी इच्छासे उन्होंने जम्बूके कार्य्यकलापमें हस्तक्षेप किया। सुनते हैं, जम्बूके कार्य्यकलापमें बाधा देनेसे, वह स्थान लुट गया। उसे लूटकर वह बहुत धनैश्वर्य्यके अधिकारी हुए और पीछे उन्होंने स्वाधीनता अवलम्बन की। अपनी इच्छासे जम्बू लूटने और स्वाधीनता अवलम्बन करनेसे जयसिंह उनके प्रति बहुत क्रुद्ध हुए। महासिंहने उनसे क्षमाप्रार्थना की और पापके प्रायश्चित्त स्वरूप वह सब ऐश्वर्य्य प्रदान करनेपर तय्यार हुए। लेकिन जयसिंहने उनका सब प्रस्ताव प्रत्याख्यान किया। इससे युवराजकी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हुई और अस्त्रके साहाय्यसे इस बातकी मीमांसा और प्रतिकार करनेमें

---

* फ्रस्टरका 'भ्रमणवृत्तान्त' प्रथम खण्ड, २८८, २९८, और ३२९ पृष्ठ और टीका। फ्राङ्कलिनका 'शाहआलम' ९३ और ९४ पृष्ठ और "मिरितमाफतावनुमा"का फारसी भाषाका पाण्डुलिपि देखना चाहिये।

वह सतमकूल्य हुए। इसके बाद उन्होंने गुशासिंह रामगढ़ि-
याके पास दूत भेजा। वह सेनापति खोई सम्पत्तिको फिर उद्धार
करनेका सुयोग पा बहुत ही प्रसन्न हुए। वह महासिंहके
साथ मिले और सहज ही उन्होंने संसारचन्द्रके पौत्र सिंघा-
रचन्द्रकी सहायता पाई। कानिया लोग आक्रान्त और
पराजित हुए। युद्धमें जयसिंहके ज्येष्ठपुत्र गुरुबख्शसिंह
मारे गये और वृद्ध जयसिंहकी शक्ति हो दुःखोंसे बहुत घट
गई। गुशासिंह अपने राज्यपर फिर प्रतिष्ठित हुए। संसार-
चन्द्रके पिता और पितामहने जिस दुर्गपर अधिकार करनेकी
बहुत इच्छा प्रकाशकी थी, संसारचन्द्रने वही "काङ्गड़ा" दुर्ग
पाया। इस समय महासिंह पञ्जाबमें विशेष क्षमतापन्न सबसे
श्रेष्ठ राजाके नामसे परिगणित हुए। उनके एकमात्र पुत्र
रणजित्सिंहने सन् १७८० ई०में जन्म लिया। रणजित्सिंहके
साथ अपनी शिशु कन्याके विवाहके सम्बन्ध द्वारा दोनों परिवा-
रका एकतावन्धन दृढ़रूपसे बद्धमूल करनेके प्रयासी हो, जयसिं-
हकी विधवापत्नीने सरदार महासिंहसे एक प्रस्ताव उठाया।
महासिंह उसपर सम्मत हुए। फिर महासिंहने गुजरातपर
आक्रमण करनेकी इच्छासे यात्रा की। सन् १७९२ ई०में उनके
पिताके मित्र "भङ्गी राजा" गुजरसिंहकी मृत्यु हुई। लेकिन
वह खुद भी उस नगरको घेरनेके समय विशेष पीड़ित हो पड़े
और दूसरे वर्षके शुरूमें केवलमात्र सत्ताईस वर्षकी उम्रमें कराल
कालकवलमें पतित हुए। *

---

* इसलिखित इतिहास और प्राउस देखना चाहिये।

सन् १७९३ ई०में शाहजमांने काबुलके सिंहासनपर अधिरोहण किया। भारत-साम्राज्यके लाभकी एक अकिञ्चित्कर आशासे उनका मन सदा परिप्लुत रहता था। सन् १७९५ ई०के आरम्भमें उन्होंने हसन अबदालतक जा वहांसे एक दल सैन्य पूर्वकी ओर भेजी। कहते हैं, उनलोगोंने रोहतकके दुर्गपर फिर अधिकार किया था। लेकिन उनके पश्चिमस्थ राज्यकी अरक्षित अवस्थाके कारण वह काबुल लौट जानेपर बाध्य हुए। दूसरी बार दुर्रानी आक्रमणका एक शोर हुआ। उस समय उत्तर-भारतके नरपति लोग अङ्गरेज और महाराष्ट्रोंके अत्याचारसे क्लिष्ट हो पड़े थे। सुतरां यह सम्भवपर

फरष्टरका भ्रमणवृत्तान्त प्रथम खण्ड, २८८ पृष्ठ, मरे-विरचित "रणजित्‌सिंह" ४२ और ४८ पृष्ठ; मूरक्राफटका "भ्रमणवृत्तान्त," प्रथम खण्ड, १०७ पृष्ठ॥ (Compare Forster "Travels" i, 288, Murray's 'Ranject Singh, p. 42, 48, and Moorcroft's "Travels", i, 127,) सुधासिंहके अपने राज्यकी फिर प्रतिष्ठा और "कनिया लोगोंके" पराजयका समय सन् १७८२ ई०में निर्द्धारित न हो,—सन् १७८५, १७८६ ई०में निर्दिष्ट होना ही युक्तियुक्त है। मरेने भी उसी मतका समर्थन किया है। इसका कारण, फरष्टरके विवरणके अनुसार ("Travels", 326 note) सन् १७८५ ई०में रुहेलखण्ड आक्रान्त हुआ और जो सुधासिंह उस समय उस युद्धमें व्यापृत होनेके नामसे स्थिरीकृत हुए थे वह उसी समय निर्व्वासन-दण्डसे दण्डित हुए।

ज्ञान नहीं पड़ता कि वह लोग दुर्रानी आक्रमणके भयसे भीत नहीं हुए। रुहेलखण्डके भूतपूर्व शासनकर्त्ता गुलाम मुहम्मदने, सन् १७९५-९६ ई०में पञ्जाब पार किया। अपने कल्पना-सार्थके परिणत करनेके उद्देश्यसे शाहजमांको उत्तेजित करनेकीही उनकी इच्छा थी। उनको इस दुःसाहसिक दुरभिसन्धि वर्थ।रण इच्छासे अवधके आसिफुद्दौलहकी ओरसे उनके प्रतिनिधियोंने गुलाम मुहम्मदका अनुगमन किया। लेकिन बादशाह शाहजमांका उस बारेमें अनुरोध करना ही उनका प्रधान उद्देश्य था, कि मुसलमान लोग सन्तुष्ट चित्तसे उन्हें निस्तारकारी नामसे ग्रहण करेंगे। सन् १७९७ ई०के शुरूमें तीस हजार फौज ले शाह लाहोरमें उपनीत हुए। सिखोंको चतुरस्त्रिनकर, अपने शास्त्रनिक आधिपत्यका भार नमपर उपयोगी रूपसे प्रकट करना,—उनका पहला उद्देश्य हुआ। कुछ राजा उनके साथ मिले। लेकिन सिख लोगोंके विना युद्धके उनकी वश्यता स्वीकार करनेके इच्छुक होनेपर भी, अपने भाई महमूदकी सन्देहमूलक कार्य्यप्रणालीसे वह अपने देशमें लौटे और इसलिये उस देशमें वह किसी तरहका विधि-बन्दोबस्त करनेमें समर्थ नहीं हुए। पराजित महाराष्ट्री और अङ्गरेजोंकी अपेक्षा सिख लोग बहुत कम भयविह्वल हुए थे। कारण, उस समय अङ्गरेजोंने उस विषयमें कोई ठीक समाचार नहीं पाया।

अवधके वजीरके साथ सबने ही सहानुभूति प्रकाश की। प्रेमोक्त सभी उनके राज्यमें विप्लवादिके कारण दुःखित हुए। उन लोगोंने बहुत विज्ञताके साथ रोयाकके अन्तर्गत अनूपशहरमें एक सेनानिवेश स्थापन किया। सबके भयविह्वल होनेसे

फारसके शाहको अफगान-राज्यपर आक्रमण करनेके लिये उत्सा-हित करनेकेलिये तिहरान एक दूत भेजा गया। सन् १७५८ ई०में शाहेजमांने फिर भारतपर आक्रमण किया। उनकी पांच हजार सैन्य बहुत दूरतक आगे बढ़ी; लेकिन वितस्ता नदीके किनारे विपक्ष सैन्य द्वारा आक्रान्त हो भग गई। शाह बैरीक लाहौरमें धुस कभी सिखोंको खुश करने लगे और कभी उनको भय दिखाने लगे। इसतरह भयप्रदर्शन और चाटुकार दोनों उपायोंको अवलम्बनकर वह अपने उद्देश्यसाधनमें चेष्टित हुए। इसी समय निजामुद्दीन नामक एक दुर्दम्य पठानने कसूरमें बहुत ख्याति-प्रतिपत्ति पाई थी। उन पठा-नने शाहेजमांका पक्ष लिया; लेकिन शाहेजमां उनकी मित्र-तापर एतबार कर न सके। जो हो, शाहेजमांने उन्हें ही सिखोंको और वीर युवक रणजितसिंहको दमन करनेमें नियुक्त किया। वह लोग शाहेजमांकी आत्ममर्यादापर विश्वासस्थापन कर न सके। इधर निजामुद्दीन भी उनके प्रभुत्वके स्थायित्वसे सन्दिहान हो पड़े। उन्हें भय हुआ,—शाहेजमांके लौट जानेपर प्रतिवेशी सिख लोग उनपर अत्याचार उत्पीड़नका बीभत्स अभिनय करेंगे, सुतरां निजामुद्दीन बहुत विचक्षण-ताके साथ सिखोंके प्रति अत्याचारकी पराकाष्ठा दिखानेसे विरत हुए। कुछ अधूरे खण्ड युद्ध हुए; लेकिन उनसे कोई सुफल नहीं हुआ। इसी समय महम्मदके उद्देश्यसे भी चेष्टा सफल हुई; उन्होंने फारिसके शाहकी सहायता पाई। सुतरां इत-भाग्य अफगान सम्राट् सन् १७९९ ई०के शुरूमें लाहौर छोड़ पश्चिमकी ओर लौट गये। शाहेजमांके दूसरी बार भारतपर

आक्रमणके समय रणजित्‌सिंहका सत्स्वभाव और आधिपत्य-प्रतिपत्तिकी क्षमता अफगान सम्राट् दुर्रानी शाह और सिखोंके मानसपटमें समभावसे अङ्कित हुई थी; तभी रणजित्‌सिंहके भावी महत्वकी बातकी उपलब्धि कर सके थे। उन्होंने लाहोरपर अधिकार करनेकी इच्छा प्रकाश की। विशेषतः क्षमता पानेके साथ ही साथ लाहोरपर अधिकारकी आकाङ्क्षा मनमें उदय हुई। जो हो, राजाने अपना गुरुभार युद्धास्त्रसमूह, जलप्लावित प्रबलवेगवती वितस्ता नदीके दूसरे पार ले जानेमें असमर्थ हो, राज्याभिलाषी सर्दारोंसे विज्ञापित किया,—इस समय युद्धोपकरण समूह नदीके उसपार स्थानान्तरित कर देनेसे बड़ा उपकार साधित होगा, राजा इसके लिये उन लोगोंके चिरकृतज्ञ रहेंगे। अतएव जितनी तोपें कौशलक्रमसे उद्धार की गई थीं, शाहके जानेके बाद ही वह सब भेज दी गईं। रणजित्‌सिंहने अपना अभीप्सित विषय पाया,—पुरस्कारस्वरूप रणजित्‌सिंहने पञ्जाबकी राजधानी पानेका एक सनद या राजकीय अभिनन्दनपत्र पाया। इसके बाद महाराजके इतिहासके साथ सिखोंका इतिहास केन्द्रीभूत हुआ। लेकिन उत्तर भारतमें महाराष्ट्रीय जातिके अभ्युत्थानसे और भारत-रङ्गभूमिमें अङ्गरेजोंके आनेसे सिखोंके शौर्य वीर्यमें बहुत कुछ बाधा पड़ी थी। *

---

* एलफिन्स्टन ("काबुल" द्वितीय खण्ड, ३०८ पृष्ठ—Caubul, ii, 308) कहते हैं, कि दिल्लीके एक आश्रित राजपूत द्वारा अनुरुद्ध हो शाहजमाने सन् १७९५ ई०में भारतके आक्रमणका भार ग्रहण किया, टीपू सुलतानने भी इस बारेमें

माधोजी सिन्धियाके कार्य्य नैपुण्यसे उत्तर-भारतवर्षमें महाराष्ट्रोंकी क्षमताका फिर उदय हुआ। नियमाधीन सैन्यदलके शिक्षा-नैपुण्यसे उनकी राज्यशासन-प्रणाली दृढ़ और स्थायी भित्तिसे बद्धमूल हुई। सन् १७८५ ई०में वह आगरेके अधिपति हुए; दिल्लीके नाममात्रके बादशाह शाहआलमने उन्हें नायबप्रतिनिधि नियुक्त किया। इसी समय वह युक्त-सिख राजोंके साथ एक युद्धमें प्रवृत्त हुए, युद्धके फलसे स्थिर हुआ,—यमुनाके दोनों किनारे उनकी समवेत विजितराज्यका दो तृतीयांश माधोजी पावेंगे और बाकी अंश "खालसा"के अधिकारमें रहेगा। * जान पड़ता है,—उनका यह मित्रता-बन्धन शाहआलमको उत्तेजित किया था। भावलपुर राजपरिवारके इतिहासपर निर्भरकर पराजित रुहेलासर्द्दारने गुलाममुहम्मदका भ्रमणवृत्तान्त और अवधके वजीरके दौत्यकार्य्यकी बात लिखी है। उस विवरणके अनुसार ही शाहआलम और सिन्धियामें प्रतिनिधि विनिमयकी बात लिखी गई। दूसरी घटनावलीके सामञ्जस्यसे प्रतिनिधि लोग भावलपुरके भीतरसे गये। लखनऊके आखिफ्हिलहके सन्देहमूलक योगायोगकी बातका अङ्गरेज ऐतिहासिकोंने उल्लेख नहीं किया। उत्तर-भारतके आक्रमणकारियोंके हाथसे मित्र-राजके उद्धारसाधनके लिये अङ्गरेज-गवरमेण्टने जो कष्ट स्वीकार किया था,—उन लोगोंने उसीका विस्तृत भावसे वर्णन किया है। तब भी भावलपुरके इतिहासकी वर्णना सब तरहसे विश्वासयोग्य जान पड़ती है।

* ब्राउनका "इण्डिया ट्राक्ट" द्वितीय खण्ड, २६ पृष्ठ। (Compare Browne's "India Tracts', ii, 29.)

पञ्जाब-केशरी

महाराज रणजित् सिंह।

और सन्धिस्थापन अवधको जयोद्देश्यसे ही हुआ था। लेकिन अङ्गरेज लोग अवधकी रक्षा करनेके लिये प्रतिज्ञावद्ध हुए थे। इस मित्रताका और एक उद्देश्य था,—दिल्लीश्वरकी क्षमता प्रतिपन्न करना और दृढ़ करना, क्योंकि, दिल्लीकी क्षमता अक्षुण्ण और दृढ़ करनेमें—वह लोग उद्‌बुद्ध हुए थे। लेकिन गुलामकादिर नामक एक रुहेलेके उद्यमसे महाराष्ट्रोंकी यह सब मन्त्रणा कुछ दिनोंके लिये व्यर्थ हुई थी। सन् १७८५ ई०में जाबिताखांके पुत्र, गुलामकादिरने पैतृक सिंहासन पाया। ज्यादा-कम एक साल बाद बादशाहके शरीर-रक्षक होनेकी आशामें उन्होंने एक दुःसाहसिक उपाय उद्भावन किया। धीरे धीरे वह निष्ठुरतर उपाय उद्भावन करने लगे, अन्तमें उन्होंने एक बहुत नृशंस और अमानुषिक निष्ठुरताका अभिनय किया। सन् १७८८ ई०में उसके द्वारा हतभाग्य बादशाहकी आंख फोड़ी गई। काल्पनिक ऐश्वर्यकी लालसासे उन्होंने राजप्रासाद लूट लिया और एक नगण्य युवकको अकबर और औरङ्गजेब-के सिंहासनाधिकारीके नामसे घोषणा की। इन सब कार्य्यकला-पोंसे सिन्धियाने अपने उद्देश्यसाधनका सुयोग पाया। परन्तु गुलामकादिर और अफगानोंकी निष्ठुरताके अवसानसे दिल्लीमें सिन्धियाका प्राधान्यस्थापन अनादरणीय या अशुभजनक प्रतीयमान नहीं हुआ। सभीने महासमादरसे दिल्लीमें उनकी अभ्यर्थना की। उनके विधि-सङ्गत शासनगुणसे लुटेरे मित्रलोग स्तम्भित हुए। इस समय उन लोगोंने देखा,— सिन्धियाके नामसे और कोई लुटेरोंको प्रश्रय देनेपर तयार नहीं है। आश्रयहीन गुलामोंकी तरह उनको अधीनता-

पाशमें रखनेके लिये सभी व्यग्र हो पड़े थे। जगाधरीके कुल-पति सर्दार रामसिंह कुछ दिनोंके लिये दोआबके कुछ देशोंके अधिपति थे। इस कालके भीतर ही पटियाला और सरहिन्दके अन्यान्य प्रदेशोंमें तीनबार आक्रान्त हुए और लूटे गये। इसी समय-महल उमरसिंहके हिन्दू दीवान नानूमल बहुत ही विषय-ज्ञताके साथ पटियालेके शासनदण्डकी परिचालना करते थे। क्रोड़ासिंघिया लोगोंके अधिनायकने बघेलसिंहके प्रति विश्वास-स्थापनकर उनके सैन्यकी सहायता पाई थी। उनके शुद्ध नैपु-ण्य और सामरिक शक्तिसे उमरसिंहकी अपरिसीम अवस्था थी। वह विविध उपायोंसे एकदल घुड़सवार सैन्य पोषण करते आते थे। पहले विरोधीय विषयके मीमांसकरूपमें वह कर संग्रह करते थे; दूसरे, पटियालेके राजाकी सहायता दे चौथ बल सिखोंसे राजस्व अदा करते थे। इसतरह वह मुगल और महाराष्ट्रोंके दाबीकृत विषय अदा करनेके लिये सहायता करने लगे। उनका यह दावा सहज ही परिशोध नहीं होता था, या उनके विरुद्ध बाधा देनेपर भी कोई साहसी नहीं होता था। *

सन् १७८७ ई०में जनरल पेरन दौलतराय सिन्धियाकी इस्त फौजके सेनापतिके पदपर वरित हुए। उनके स्वदेशवासी

---

* हस्तलिखित विवरण देखना चाहिये। फ्राङ्कलिनकृत "शाहआलम"—१७६-१८५ पृष्ठ। (Compare Franoklin's "Shah Alum", p. 176-185).

छि, क्योंकि उस समय काम छोड़कर चले गये। कुछ दिनोंके बाद पेरन उत्तर भारतमें महाराजके प्रतिनिधि नियुक्त हुए। लेकिन उनमें क्षमताकी अपेक्षा दुराकांक्षा और यशोलिप्सा ही अधिक थी। तब भी धारावाहिकरूपमें उन्होंने अपने उद्देश्य-साधनकी चेष्टा की थी। होलकर द्वारा सिन्धियाका प्रभुत्व विपर्यस्त न होनेपर और दुःसाहसिक जार्ज टामसकी स्वतन्त्रता-प्रियतासे और प्रभुताचरणसे पेरनकी अभिसन्धि व्यर्थ न होनेसे पेरन अपनी क्षमता या महाराष्ट्रोंका प्रभुत्व लाहोरतक फैला सकते। यह अङ्गरेज नौ-विभागके काममें बहुत अनजान थे, लेकिन स्वभावज उग्रता और दुर्विनीत-संस्कार-प्रियताके कारण, सन् १७८१—८२ ई०में वह मन्द्राजके एक जङ्गी-जहाजसे काम छोड़नेपर बाध्य हुए थे। कुछ दिनों उस प्रदेशके छोटे छोटे राजाओंके अधीन सामरिक कार्योंका भार लिया। वह भारतकी उत्तर सीमातक घूमे थे। सन् १७८७ ई०में देशविख्यात शमरू बेगमने उन्हें अपने काममें नियुक्त किया। पेरनने बेगमके अनुग्रहसे ऊँचा पद पाया। इसके बाद छः सालमें ही बेगमके प्रति असन्तुष्ट हो उन्होंने आप्पा कान्हरावके अधीनमें कार्यग्रहण किया। आप्पा कान्हराव सिन्धियाके एक प्रधान कर्मचारी थे। उनके अधीनमें ही पहले तो, उन्होंने सैन्य तय्यार की। जब महाराष्ट्रोंके काममें नियुक्त थे, तो टामस द्वारा एक दल सिखसैन्य कर्नालमें पराजित हुई। इसके बाद उन्होंने और भी कितने ही काम किये थे। लेकिन देशकी ऐसी विशृङ्खल और विच्छिन्न अवस्थाको उपलक्ष्यकर टामसने स्वतन्त्ररूपसे अपने प्रभुत्वकी प्रतिष्ठाके लिये एक नूतन लक्ष्य

उपाय उद्भावन किया, उनको सब राय स्थिर हो गई। इस वाद उन्होंने अतीतगौरव हांसीके टूटे प्राकारोंका फिर संस्कार कर अपने अधिनायकत्वमें वहां बहुत ज्यादा फौज एकत्र की। अन्तमें दुर्गकी चारो ओर तोपें चढ़वा दृढ़ प्रतिज्ञाके साथ राज्यपर अधिकार करनेके लिये आगे बढ़े। पेरन उनका प्रभुत्व देख शङ्कित हुए थे। यह विचारकर पेरन अधिक भीत और व्याकुल हो पड़े, कि होलकर टामसको उत्साह देते हैं और फरासीसी सेनापति चिरन्तन वैरी और प्रतिशोध-लोलुप लोकेश दादा और अन्यान्य महाराष्ट्र लोग टामसकी सहायता करते हैं। *

सन् १७९८ ई०में टामसने फुलकिया सम्प्रदायके भागसिंहके अधिकृत झिन्दन नगर अवरोध किया। इस राजा रायिलसिंह झोड़ासिंघिया और पटियालेके राजाकी भगिनीने एकत्र सन्निवेश हो इस स्थानपर फिर अधिकार किया। लेकिन हांसी लौटनेके समय टामसके आक्रमण करनेपर, वह लोग विताड़ित हुए। सन् १८०० ई०में टामसने फतेहाबादपर अधिकार किया। सन् १७८३ ई०में दुर्भिक्षके फलसे वह प्रदेश जनशून्य सा प्राय हुआ था; परवर्ती समय हरियानेके लुटेरे व्यवसायी भट्टी लोगोंने उसपर अधिकार कर लिया था। उनको क्षमताके प्रतिहत करनेके लिये पटियालेके राजाने अशेष चेष्टा की, लेकिन

---

* Francklin's Life of George Thomas p. 79 107 & and Major Sketch of Regular Corps in the Service of Indian Princes, p. 118 &c.

उनकी सब चेष्टा—सब उद्दाम व्यर्थ हुआ; भट्टी लोग वहां बहुत ख्याति-प्रतिपत्ति पाते रहे। जो हो, अन्तमें पटियालेके राजाने निरुपाय हो उन्हें अपनी प्रजाके नामसे स्वीकार किया था और उन्होंने टामसके साथ युद्धमें उन लोगोंको सहायता दी थी। इसके बाद पटियालेपर अधिकार करनेके लिये टामसको उत्कट कामना हुई, टामस उसीके अनुसार काम करनेमें क्ृतसङ्कल्प हुए। इसी समय राणाकी भगिनीने अस्थायी-रूपसे सिंहासनाधिरोहण किया, इससे उत्साहित हो टामस अपने उद्देश्यसाधनपर बद्धपरिकर हुए। लेकिन दलवाला सम्प्रदायके वृद्ध तारासिंहके प्रतिकूलताचरणसे कुछ बाधा पा टामस बड़ी सतर्कताके साथ काममें प्रवृत्त हुए। जो हो, तारासिंहके पराजयसे वह बहुतकुछ कृतकार्य्य हुए; मालर कोटलाके पठानोंने उनकी वश्यता स्वीकार की और रायकोटके भिन्न-धर्म्मावलम्बी मुसलमानोंने टामसको मुक्तिदाता समझ सादर ग्रहण किया। उन लोगोंने कुछ दिनों लुधियानेपर आधिपत्य फैलाया था और सभी समभावसे सिखोंके प्रति द्वेष-परवश हो गये थे। इसी समय साहबसिंह नामक नानक-वंशीय एक बेदी स्वयं अभिनव धर्म्मभावसे अनुप्राणित होनेके कारण प्रकाश हुए, उन्होंने बहुत ज्यादा फौज एकत्रकर लुधियाना घेर लिया। मालर कोटला उनके अधीन हुआ; सिखोंके धर्म्म-गुरुको प्रकृत प्रतिनिधिके नामसे मानने और उनके आज्ञाधीन होनेके लिये उन्होंने अङ्गरेज वीरके प्रति आदेश किया। लेकिन साहबसिंह ज्यादा दिनोंतक स्वदेशवा-सियोंको भी आज्ञाधीन रख न सके अन्तमें उन्हें गुनरके

उस पार लौट जाना पड़ा। वेदीकी अनुपस्थितिसे भी टामसकी कुछ बहुत उन्नति नहीं हुई। उनके विरुद्ध आगे पीछे सब तरफ ही षड़यन्त्र चलने लगा; सभी एकताबन्धनमें आबद्ध हो उनके विरुद्ध खड़े हुए। निरुपाय हो वह लुधियानेके निकटवर्त्ती स्थानसे हांसीके दुर्गमें चले गये। इसके बाद फिर युद्धक्षेत्रमें अवतीर्ण हो उन्होंने झिन्द प्रदेशके शासनकर्त्ताके अधिकृत "सफीदन" नामक एक पुराने शहरपर आक्रमण किया। युद्धमें उनकी हार हुई सही, लेकिन सिरापर विक्षिप्त न होने की वजह वह स्थान परित्यक्त हुआ। टामसने उसपर अधिकार किया। कहते हैं, उस समय उनके अधीन दश पैदल पलटनें और ६० तोपें थीं। वह जिन राज्यके अधिपति थे, उनका वार्षिक राजस्व ४ लाख ५० हजार रुपये था। इस विशाल राज्यके दो-तृतीयांश पर उन्होंने आक्रमणकर अधिकार किया था; और तीसरा अंश वह महाराष्ट्रोंसे जागीरदारस्वरूपमें पाते थे। उन्होंने पेरनके सन्धि प्रस्तावोंसे सन्दिग्धचित्तसे प्रत्याख्यान किया था सुतरां पेरन उनके ध्वंससाधनमें कृतसङ्कल्प हुए। ऐसी अवस्था-विपर्य्ययमें बाधा दे टामसने सिखोंके साथ सन्धिस्थापन की। इससे उन्होंने यह प्रमाणित करनेकी चेष्टा की, कि पेरनके विरुद्ध युद्ध करनेके लिये ही उन्होंने यह सिख-सैन्य नियुक्त की है। लेकिन जो पुरुष उनके ध्वंस साधनमें कृतसंकल्प हुए थे, या जिन्होंने पूरीतरह उनको पदानत करनेके लिये षड़यन्त्र किया था, प्रहत प्रस्तावसे उनके हाथसे निकलनेके लिये ही वह लोग अधिकतर प्रयासी हुए थे। महाराष्ट्रोंके अधीन पटियालेका दर्पानिशप्य देख फ्रान्सीसी

सेनापति एक प्रतिज्ञासे आबद्ध हुए ;—हरियानेके उमरसिंहको अधिकृत सब राज्य प्रत्यार्पण करना उन्होंने अङ्गीकार किया। आगत होबार ऊपर ही साथ पेरनकी सैन्य समष्टि ६० क्रोश दूरवर्त्ती स्थानसे विपर्य्यस्तकर अन्तमें सन् १८०२ ई०के सूरहमें टामस आत्मसमर्पण करनेपर बाध्य हुए। अङ्गरेजाधिकृत प्रदेशमें फिर आनेसे उसी साल उनकी मृत्यु हुई। *

इसतरह पेरन अभिकार क्षतकार्य्य हुए। एक ओर बुरक्विन नामक उनके एक कर्म्मचारी शतद्रुके पूर्व्व ओरके प्रदेशोंमें प्रभुत्व स्थापनकर कर संस्थापनकी चेष्टा करने लगे; दूसरी ओर सेनापतिने स्वयं अफगानराज्यके सीमान्तवर्त्ती पर्व्वतश्रेणी-तक राज्य फैलानेकी कल्पना स्थिर की,—सिन्धियाने वैसे पेशाव-

---

* प्रधानतः निम्नलिखित ग्रन्थ देखना चाहिये ;—फ्राङ्कलिनकृत "टामसका जीवनचरित," अध्याय २१ पृष्ठ प्रभृति; और मेजरस्मिथ कृत "भारतीय स्थायी सैन्यदलका सार संग्रह"। (Franklin's Life of Thomas p. 21 &c. and of Major Smith's Sketch of Regular Corps in Indian States.) पटियालेके राजाने जो कई बहुत दुःसाहसिक कामोंकी बातें सिख-इतिहासमें वर्णित हैं। उनमें जहनके पहाड़ी राज्यपर आक्रमण करना ही विशेष उल्लेख-योग्य है। उस राज्यसे ही पटियालेके राजाने किशोर छत्र और उसके अन्तर्गत सूर्य्योद्यानपर अधिकार किया। लेकिन पेरनके प्रतिनिधि बुरकुइनकी सहायता बिना वह इनकार्य्य हो नहीं सके।

उस पार लौट जाना पड़ा। बेदीकी अनुपस्थितिसे भी टाम सकी कुछ बहुत उन्नति नहीं हुई। उनके विरुद्ध आगे पीछे सब तरफ ही षड़यन्त्र चलने लगा; सभी एकसाथसबमें आवद्ध हो उनके विरुद्ध खड़े हुए। निरुपाय हो वह लुधियानेके निकटवर्त्ती स्थानसे हांसीके दुर्गमें चले गये। इसके बाद फिर युद्धक्षेत्रमें अवतीर्ण हो उन्होंने झिन्द प्रदेशके शासनकर्त्ताके अधिकृत "सफीदन" नामक एक पुराने शहरपर आक्रमण किया। युद्धमें उनकी हार हुई सही, लेकिन निरापद विवेचित न होने की वजह वह स्थान परित्यक्त हुआ। टामसने उसपर अधिकार किया। कहते हैं, उस समय उनके अधीन दश पैदल पलटनें और ६० तोपें थीं। वह जिन राज्यके अधिपति थे, उनका वार्षिक राजस्व ४ लाख ५० हजार रुपये था। इस विशाल राज्यके दो-तृतीयांश पर उन्होंने आक्रमणकर अधिकार किया था; और तीसरा अंश वह महाराष्ट्रोंसे जागीरदारस्वरूपमें पाते थे। उन्होंने पेरनके सब प्रस्तावोंसे सन्दिग्धचित्तसे प्रत्याख्यान किया था सुतरां पेरन उनके ध्वंससाधनमें कृतसङ्कल्प हुए। ऐसी अवस्था-विपर्य्ययमें वाधा दे टामसने सिखोंके साथ सन्धिस्थापन की। इससे उन्होंने यह प्रमाणित करनेकी चेष्टा की, कि पेरनके विरुद्ध युद्ध करनेके लिये ही उन्होंने यह सिख-सैन्य नियुक्त की है। लेकिन जो प्रथम उनके ध्वंस-साधनमें कृतसंकल्प हुए थे, या जिन्होंने पूरीतरह उनको पदानत करनेके लिये षड़यन्त्र किया था, प्रकृत प्रस्तावसे उनके हाथसे निकलनेके लिये ही वह लोग अधिकतर प्रयासी हुए थे। महाराष्ट्रोंके अधीन पटियालेका दर्पानिशन्य देख फ्रान्सीसी

सेनापति एक प्रतिज्ञामें आबद्ध हुए ;—हरियानेके उमरसिंहको अधिकृत सब राज्य प्रत्यर्पण करना उन्होंने अङ्गीकार किया। क्रमागत होनेवाले आपद ही साथ पेरनकी सैन्य समष्टि ६० मील दूरवर्त्ती स्थानमें विपर्यस्तकर अन्तमें सन् १८०२ ई०के शुरूमें टामस आत्मसमर्पण करनेपर बाध्य हुए। अङ्गरेजाधिकृत प्रदेशमें फिर आनेसे उसी साल उनकी मृत्यु हुई। *

इसतरह पेरन अधिकार हस्तकार्य्य हुए। एक ओर बुरक्वीन नामक उनके एक कर्मचारी शतद्रुके पूर्व्व ओरके प्रदेशोंमें प्रभुत्व स्थापनकर कर संस्थापनकी चेष्टा करने लगे ; दूसरी ओर सेनापतिने स्वयं अफगानराज्यके सीमान्तवर्त्ती पर्व्वतश्रेणी-तक राज्य फैलानेकी कल्पना स्थिर की,—सिन्धियाने वैसे पेशाव-

---

* प्रधानतः निम्नलिखित ग्रन्थ देखना चाहिये ;—फ्राङ्कलिनकृत "टामसका जीवनचरित," ग्रन्थका २१ पृष्ठ प्रभृति ; और मेजरस्मिथ कृत "भारतीय स्थायी सैन्यदलका सार संग्रह"। (Franklin's Life of Thomas p. 21 &c. and of Major Smith's Sketch of Regular Corps in Indian States.) पटियालेके इतिहासमें इनकी बहुत दुःसाहसिक कामोंकी बातें सिख-इतिहासमें वर्णित है। इनमें इनका पहाड़ी राज्यपर आक्रमण करना ही विशेष उल्लेख-योग्य है। उस राज्यसे ही पटियालेकी रानीने किशोर रूपका और इसके अन्तर्गत सूत्योद्यानपर अपना दखल अधिकार किया। लेकिन पेरनके प्रतिनिधि बुरक्वीनकी सहायता बिना वह कृतकार्य्य हो नहीं सके।

रका अधीनता पाश छिन्न किया था, वह भी उसी तरह सिन्धियाका प्रभुत्व-बन्धन विच्छिन्नकर स्वाधीनता पानेकी चेष्टा करने लगे। * इस अङ्गीकारसे वह रणजितसिंहके साथ सन्धिसूत्रमें मिले, कि समवेत आक्रमणसे सिन्धुदेशपर अधिकार कर लाहोरके दक्षिणस्थित सब देशोंका बराबर विभाग कर लिया जायगा। † लेकिन इसी समय होलकरसे पराजित होनेपर सिन्धियाकी क्षमता बहुत कुछ घट गई। महाराजने बारबार पेरनसे सैन्य-साहाय्यकी प्रर्थना की थी, वह सहायता देना उनके लिये अवश्य कर्त्तव्य होनेपर भी कितनी ही बहानोंसे प्रकारान्तरमें महाराजकी उस प्रार्थनासे पेरन इतने दिनो लापरवाही दिखाते आते थे। सिन्धियाने अङ्गरेजोंके साथ मिल सन्धि स्थापन की और स्वार्थसाधनोद्देश्यसे विधामतके दण्डस्वरूप पेरन पदच्युत हुए। तेजस्विताके साथ सैन्य परिचालना द्वारा युद्धक्षेत्रमें कोई अभिनव सामरिक कौशल दिखा पेरन अपना प्रभुत्व पानेमें फिर सक्षम नहीं हुए, या उन्होने कभी चेष्टा भी नहीं की। वह जानते थे, कि वह खुद दोषी हैं;

---

* मेलकमने (सार-संग्रह, १०६ पृष्ठ—Sketch p. 106) समझा, पेरन बहुत सहज ही सिखोंको पराभूतकर पञ्जाबपर अधिकार कर सकेंगे।

† सन् १८१४ ई० की ५ वीं जुलाईको दिल्लीके "रेसिडण्ट' ने सर डेविड अक्टरलोनीके पास एक पत्र भेजा। मालूम होता है,—रेसिडण्टके पास प्रतिनिधि और आवेदन भेजा गया। उसके अनुसार ही इस सन्धिकी बात की गई है।

सुतरां वह सन्निग्धचित्त महाराष्ट्रोंके पाससे भाग निरापद और शान्तिमय अङ्गरेजोंके राज्यमें चले गये। दिल्ली, सहारनपुर, मुरादाबाद, और गुरगांव प्रभृति स्थानोंको जीत उस समय अङ्गरेज लोग धीरे धीरे राज्य फैलानेकी सूचना दे रहे थे। *

खृष्टीय अट्ठारहवीं शताब्दिके शुरूमें बन्दाके अधिनायकत्वमें सिखजातिने विद्रोहताचरण किया। उस वक्त अङ्गरेज वणिकके नये उद्यमके समय उनके प्रतिनिधि लोग बादशाहके दरबारमें अवस्थिति करनेपर वाध्य हुए थे, इससे अङ्गरेज वणिकोंको विरक्ति हुई। वणिक-सम्प्रदायके सद्विवेचक लोग वाणिज्यकी सुविधाके हेतु ज्यादा अधिकारके लिये आवेदन करते रहे, उनलोगोंने शायद खालसा सैन्यके स्वजातिके "सिंह" लोगोंको वीरोचित मृत्यु प्रत्यक्ष देखी थी। लेकिन गोविन्दने जिस प्रतिभाबलसे सिखजातिको नई शक्ति और तेजसे अनुप्राणित किया था, उसे समझानेमें उस समय कोई सक्षम नहीं हुए। उन लोगोंके व्यवसाय, धैर्य और कार्य्यकारिताके बलसे जिस वृहत् साम्राज्यकी दीवार तय्यार हुई थी, उसकी भी उन लोगोंको उपलब्धि नहीं हुई। † चालीस सालके बाद

---

* Compare Major Smith's Account of Regular Corps In Indian States, p. 31 &c.

† ओरमी, "इतिहास", द्वितीय खण्ड, २२ पृष्ठ इत्यादि; और वेलसनकृत "मिल" तृतीय खण्ड, ३४ पृष्ठ इत्यादि। (See Orme, History, ii, 22 &c. and Mill Willson's edition, iii, 34 &c.) सन् १७१५, १७१६, १७१७ ई० तक भाग०

जिस विद्रोहके फलसे पठानोंमें विजय मिली, इसमें अमिय नामक एक व्यवसायीने विशेष गुणपनाका परिचय दिया था नानाकके सांसारिक-सम्प्रदायमुक्त वह "सिख" बाहरी सा सच्चासे भी धर्मका भाव फैलाते थे, वह लाडवकी धृष्ट और मिथ्यावादितासे प्रतारित हुए थे। वह विनयी अङ्ग

रो साल यह वणिकदल उद्देश्य साधनके लिये दिल्लीमें रहा उन आवेदनकारियोंमें प्रधानतः डाक्तर हेमिल्टनके अकृत्रिम स्वदेश हितैषणाके फलसे, बादशाहने कलकत्तेके निकट वर्ती ३७ गांवका एक दानपत्र इन्हें दिया। अङ्गरेजोंके उ अनुमति पत्रके फलसे पण्यद्रव्य शुल्करहित हुआ था। इ अन्तिम स्वत्वाधिकारके फलसे भारतवर्षके इतिहासमें अङ्गरेजोंके अभ्युदयकी सूचना हुई। वाणिज्य शक्तिके बढ़नेसे सब योग्य व्यवसायियोंको कोई विशेष सुविधा या लाभ न होनेपर भी अङ्गरेजोंमें प्रजाकी प्रभुत्वक्षमता बहुत ज्यादा बढ़ गई थी।

गोविन्दके ग्रन्थमें भी कमसे कम चार जगह यूरोपियनोंकी बातें लिखी हैं। उनमें अन्तिम एक अङ्गरेजके प्रति निर्दिष्ट है। पहले, "अकाल स्तुत" अंशमें यूरोपीय लोग भारतवर्षको विभिन्न जातियोंमें एक जातिके नामसे वर्णित हुए हैं, दूसरे और तीसरे २४ अवतारके "कल्की" अध्यायमें साफ-साफ यूरोपियोंके आचार पद्धतिकी प्रशंसा दिखाई देती है और चौथे पारिसदेशीय "हिकायत"में यूरोपियोंकी बात लिखी है उस समय एक यूरोपीय एक राजबालाके साथ विवाहके लिये युद्धार्थी थे; लेकिन वह उपन्यासके वीरपुरुषसे पराजित हुए।

जोंकी अवज्ञा और ईर्ष्या कारण भग्न-मनोरथ और निराश हो पड़े,—जिन्होंने नौचाशयताम और अपनी धनलिप्सासे अनुतप्त हो उन्होंने प्राणत्याग किया। * अबतक सिख लोग दिनों दिन उन्नतिके पथकी ओर बढ़ रहे थे, अबतक उनके क्रियाकलापकी ओर किसीकी दृष्टि सञ्चालित नहीं हुई। सन् १७८४ ई०में उनकी ओर हेष्टिंसकी दृष्टि आकर्षित हुई। उन्होंने सोचा,—दिल्लीकी राजसभामें एक अङ्गरेज प्रतिनिधि उपस्थित रहनेसे अवश्य वही सिखजाति उत्पीड़न कर न सकेगी। † लेकिन किस तरह दूसरेका भय करना चाहिये और किस तरह दूसरेके मनमें भयका सञ्चार करना होता है,—यह सब सिखजातिने सीखा था। कुछ दिनों बाद सिखोंने अङ्गरेज रेसिडराटको बुलाया, महाराष्ट्रोंके विरुद्ध अस्त्रधारण करनेके लिये आत्मरक्षाके उद्देश्यसे उन लोगोंने अङ्गरेजोंके साथ सन्धिसूत्रमें आबद्ध होनेकी चेष्टा की। सिन्धियाकी गतिविधि पर्य्यवेक्षणोद्देश्यसे दिल्लीके निकट जो तीस हजार

---

* फारष्टरके वर्णनानुसार अमिचन्द्र सिखके नामसे वर्णित हुए हैं। (Forster, 'Travels' i, 337) इस बातका वेलसन विश्वास नहीं करते, कि उन्होंने भग्न-मनोरथ हो प्राणत्याग किया। (Mill's, 'India', iii, 182, note, edition 1840.)

† ब्राउनका "इण्डिया ट्रेक्ट" द्वितीय खण्ड २९, ३० पृष्ठ. फ्राङ्कलिनकृत 'शाहआलम,' ११५, ११६ पृष्ठ देखना चाहिये। (Browne, 'India Tracts' ii, 29, 30, and 'Francklin's 'Shah Alom' p. 115, 116.)

सिखसैन्य थी, उनकी सहायता लेनेके लिये उन लोगोंने अनुरोध किया। * उस समय एक अभिनव और दूरदेशवाली जातिके सम्बन्धमें अङ्गरेजोंको बहुत थोड़ी समझ थी। दो पुश्त पहलेका एक विवरण देख लाहोरके अधिपति और रणकटन्द शायद हंसी रोक न सकेंगे। कर्नल फ्राङ्कलिनने कहा है,—"सिख जातिकी देह उन्नत है; उसकी मूर्ति उग्र है, उसकी दृष्टि तीक्ष्ण और मर्म्मस्पर्शी है। ***** वह यूफ्रेतीजका निकटवर्त्ती अरब जातियों जैसी है; लेकिन वह लोग हमेशा अफगानोंकी प्रचलित भाषामें बात करते हैं। **** उनकी सैन्य समष्टि २ लाख ५० हजार है;—दुर्द्धर्ष होनेपर भी, एकताके अभावके कारण कोई विशेष भयकी सम्भावना नहीं है।" † तत्त्वानुसन्धित्सु, ज्ञानी और चिन्ताशील फरष्टरने सिखोंके इस विशाल युद्धके बारेमें समयरूप वर्णनाओंपर बहुतकुछ विश्वास स्थापन किया है। और और पुराने ग्रन्थकारोंकी अपेक्षा

---

* Auber's 'Rise and Progress of the British Power in India', ii, 26, 27. जिन राजाने ऐसा प्रस्ताव किया था, उनका नाम—तुलसासिंह था। यमुनातीरस्थित रादौर-नामक स्थानमें वह रहते थे; बाद उन्होंने सिन्धियाके अधीन कार्य ग्रहण किया। फ्राङ्कलिनका "शाहआलम," ७८ पृष्ठका टीका देखना चाहिये। (Compare Francklin's 'Shah Alum', p. 78 note.)

† फ्राङ्कलिनका "शाहआलम," ७५, ७७, ७८ पृष्ठ देखना चाहिये। (Francklin's 'Shah Alum', p. 75, 77, 78.)

उन्होंने सिखोंकी संख्या का ज्यादातर ठीक निर्णय की है। १७८३ ई०में एक राय प्रकाशित हुई। उससे प्रतिपन्न हुआ,— एक दक्ष सेनानायक दुर्द्धर्ष साधारणतन्त्रके समाधिक्षेत्रमें सम्भवतः एकाधिपत्य पायेंगे और उसके पासके राजाओंके मनमें भयका सञ्चार होगा। रणजितसिंहके अभ्युत्थानमें यह विषय अच्छी तरह प्रमाणित हुआ था। *

सन् १८०३ ई० को ११ वीं सितम्बरको दिल्लीमें एक युद्ध हुआ। पाँच हजार सिखोंने उस युद्धमें साथ दिया; लेकिन एकाएक अशोगरके अवरुद्ध होनेसे वह विपुल सैन्यदल आश्चर्यान्वित हुआ। † महाराष्ट्र पराजित हुए और दलभङ्ग हो सिखलोग भाग गये. इसके कुछ ही दिनो बाद सिखोंने अङ्गरेज-सेनानायकको वश्यता स्वीकार की। समय समयपर ख्याति-सम्पन्न कितने ही राजोंसे मित्रता स्थापित होती थी; कभी कभी उनकी सहायता भी ली जाती थी। उनमें भाई लालसिंहने लार्ड लेकका हातित्व अपनी आंखों देखा था; झिन्दके शासनकर्त्ता कुलपति भागसिंहका नाम भी सविशेष उल्लेखयोग्य है। बाद वह थानेश्वरके असभ्य राजा भाङ्गासिंहके नामसे

* फरष्टरका "भ्रमण-वृत्तान्त" द्वितीय खण्ड, ३४० पृष्ठ; और ३२४ पृष्ठ देखना चाहिये। (Forster, 'Travels' ii, 340. See also p, 324) यहां फरष्टरने कहा है, कि सिखोंने पञ्जाबमें धर्म्मस्वत्व हड़ लिया था।

† Major Smith's 'Account of Regular Corps in India States', p 3 .

यह कृतकार्य्य हुए थे। इस समय "दीव" नामक स्थानमें पराजित हो वीरश्रेष्ठ महाराष्ट्रीय सेनापति फिर राजपूतानेमें विताड़ित हुए। इन सब युद्धोंके समय कर्नेल वरनरके अधीन छोटी एकदल अङ्गरेजी फौज सहारनपुरके पास समलीमें गुरुतर-रूपसे विपर्यस्त हुई। लेकिन कैथलके लालसिंह और झिन्दके बोधसिंह, दोनोंने यथासमय सहायता दी, अन्तमें वह स्थान शत्रुओंके हाथसे मुक्त हुआ। † इसी समय एकाहाव नामक एक महाराष्ट्र सेनापतिने दिल्ली और पानीपतके मध्यवर्त्ती राज्यों-पर अधिकार किया था। दोनो सिखराजोंने उनपर आक्रमणकर उन्हें मार डाला। इससे उपयुक्त पात्र समझ लार्ड लेकने उन्हें धन्यवाद दिया। लेकिन और सभी उनके मित्र राजा-ओंके प्रति अनुरक्त थे और उन लोगोंको सहायता देनेके अभि-लाषी हुए। करनल वरनरके साथ युद्धमें बूरियाके शेरसिंह मारे गये और लदवाके गुरदत्तसिंहके व्यवहारसे और कार्य्यकलापमें बाध्य हो अङ्गरेज सेनापति दोआबके जनपदसमूह और करनाल शहरसे उनको अधिकार-च्युत करनेमें कृतसङ्कल्प हुए। *

---

† हस्तलिखित स्मृतिलिपि देखना चाहिये। सन् १८०४ ई०में इस सहायताके विषयमें और सन् १८०३ ई०में दिल्लीमें सिखोंके इस युद्धके बारेमें तत्वानुसन्धित्सु अङ्गरेज ग्रन्थकारोंने कुछ नहीं लिखा। अङ्गरेज ऐतिहासिकोंने इस बातका लिखना अनुपयुक्त समझा था। (Mill's History, vi, 503, 592, editon 1840).

* लिके एलोंश मकी हस्तलिखित स्मृतिलिपि और

सन् १८०५ ई०में होलकर और अमीरखां, दोनोंने फिर उत्तर-भारतवर्षकी ओर का प्रयाण किया,—सिखजाति, या तब कि अफगान लोग भी उनका साथ देंगे। लेकिन एकाएक [illegible] लेककी उपस्थितिसे वह लोग और आगे न बढ़ सके। इसके बाद वह कुछ दिनों पटियालेमें रहे। वहांके [illegible] राजाके साथ उनकी स्त्रीसे जब विवाद चलता था, उनके साथमें अर्थसंग्रह करनेमें भी वह लोग कुण्ठित नहीं हुए। ¹ लेकिन जब अङ्गरेजी फौज करनालके पास पहुंची, तो होलकर उधर और भाग गये; वह जहां [illegible] हुए, वहांसे ही इच्छाके अनुसार अर्थसंग्रह करने लगे। शतद्रुके पश्चिम ओरके किसी सिख-सर्दारने उनका साथ नहीं दिया। कहते हैं, उनकी उत्तेजनासे पञ्जाबके कुछ सर्दारोंने उनका पक्ष अवलम्बन करना मञ्जूर किया था। रणजित्सिंह बहुत दिनों चुप रहे। अन्तमें अमृतसरमें होलकरके साथ उनकी मुलाकात हुई; अङ्गरेजोंके विरुद्ध महाराष्ट्रोंको कोई सहायता देनेके पहले ही, [illegible] कसूरको अधीनता-पाशमें आबद्ध करनेके लिये उन [illegible] [illegible]-शासनकर्त्ताने महाराष्ट्रोंसे साहाय्यकी प्रार्थना की। अमीर

अनुवाद [illegible] देखना चाहिये।

¹ अमीरखांने अपनी जीवनीमें स्पष्ट ही कहा है, कि होलकरने राजा और रानीका ऐसा तुच्छ विवाद देख अमीरखांसे मन्तव्यस्वरूप कहा था,— निश्चय परमेश्वरने हमलोगोंके लिये यह मौका भेजा है। तुम रानीका पक्ष अवलम्बन करो और मैं दूसरेकी सहायता करूं"

खाने प्रतिपन्न करना चाहा, कि निरीह मुसलमानोंके विरुद्ध पक्ष कोई दूसरा पक्ष अवलम्बन करनेकी इच्छा नहीं करते। किंकर्तव्यविमूढ़ यशोवन्तरावने पेशावरसे लौट आनेका प्रस्ताव किया। उस समय लार्ड लेक फौजके साथ विपाशा नदी किनारे रहते थे; अङ्गरेज-सेनापतिने भी किसी तरहका अन्याय दावा नहीं किया। सन् १८०५ ई०की २४वीं दिसम्बरको एक सन्धि हुई; उसमें होलकरने निरापद मध्यभारतसे लौट जानेकी अनुमति पाई। *

लार्ड लेक युद्धार्थ आगे बढ़े। लालसिंह और बाघसिंह नामक दो नरपतियोंने उनका साथ दिया। उनकी कार्यावली पहले ही कही गई है। बलहीन और निराश्रय साहबसिंहने पटियालेमें उनकी सादर अभ्यर्थना की। लार्ड लेकके हाथ दुर्गभार अर्पित हुआ; ब्रिटिशशासनमें उनका जो प्रगाढ़ अनुराग था, उसको उन्होंने विस्तारित रूपसे वर्णना की। बाघसिंह रणजित्‌सिंहके मामा थे। एक दल शिक्षित पैदल और गोलन्दाज सैन्यके साथ प्रतिद्वन्द्विता परिहार-कल्पमें उन विचक्षण सेनापतिकी सहायता लेना बहुत ही जरूरी था; किन्तु ऐसा साहाय्य लेना प्रशंसनीय काम नहीं पड़ा। कहते हैं,–रणजित्‌सिंहने छिपकर अङ्गरेजोंका शिविर देखा। उस समय अङ्गरेज-सेना-

---

* अमीरखांके इतिहासका २७५ पृष्ठ, मरे विरचित "रणजित्‌सिंह" ५७ पृष्ठ इत्यादि देखना चाहिये। (Compare Ameer Khan's 'Memoirs' p. 275, and Murray's Runjeet Singh, p' 57, &c.)

पति द्वारा क्रमसे सिन्धिया और होलकरकी क्षमता विध्वस्त हुई थी। रणजित्‌सिंहने शायद अङ्गरेज-सेनापतिकी सामरिक साज-सज्जा प्रत्यक्ष देखी थी। *अधिकन्तु जो सब राजपुरुष राज्यच्युत हो उस समय आश्रयकी प्रार्थना करते थे, उनके भाग्यके साथ जिसमें उनका अदृष्ट-बन्धन संघटित न हो, उस विषयमें चिरस्थायी किसी सुयोगके अनुधावनसे भी रणजित्‌सिंहने विशेष दूरदर्शिताका परिचय प्रदान किया। सुखासिंह कलालके आत्मपुत्र और भावी महाराजाके प्रिय साथी फतेहसिंह अहलूवालिया इस सन्धिस्थापनमें मध्यस्थ बने थे; बहुत जल्द सर्दार रणजित्‌सिंह और सर्दार फतेहसिंह, दोनोंमें एक सन्धि स्थापित हुई। उससे स्थिर हुआ, कि होलकर अन्ततःसरसे लौट जानेपर बाध्य होंगे और जबतक दोनो सर्दार बन्धुत्व-सूत्रमें आबद्ध रहेंगे, तब तक अङ्गरेज गवरमेंराट उनके राज्यपर अधिकारके लिये किसी षड़यन्त्रमें साथ न देगी। † इसी समय लार्ड लेकने कटोचके संसारचन्द्रके साथ बन्धुत्व स्थापन करनेकी चेष्टा की; दोनोंमें मित्रतासूचक चिट्ठी-पत्री चलने लगी, उस समय संसारचन्द्र पहाड़ी राजोंको वशीभूतकर रणजित्‌सिंहका पदाङ्क अनुसरण करते थे। लेकिन उनके साथ कोई सन्धि नहीं हुई; अङ्गरेज-सेनापति अम्बाला और करनालकी राहसे अधिकृत प्रदेशोंमें लौट आये। ‡

---

* मूरक्रफ्ट, 'भ्रमण-वृत्तान्त', प्रथम खण्ड, १०२ पृष्ठ। (See Moorcroft, 'Travels', i. 102.)

† सातवें परिशिष्टमें सन्धिकी शर्त्त देखना चाहिये।

‡ राजकीय कागज-पत्रादिसे मालूम होता है, कि कुछ

राजकार्य्यके व्यपदेशसे लार्ड लेक सरहिन्दके अनेक सिख-सर्द्दारोंसे बन्धुत्व-बन्धनमें आबद्ध हुए थे; सर्द्दारोंके साथ उनका घनिष्ठ बन्धुत्व हुआ था। उनमें कितने ही साहाय्य समयोचित और विशेष कार्य्यकरी और मूल्यवान हुए थे। बाघसिंह दिल्लीके निकट जो जागीर भोग दखल करते थे, दिल्लीके युद्धके कुछ बाद ही उसपर ही वह फिर अधिष्ठित हुए। सन् १८०४ ई०में और भी एक राज्य उन्हें और उनके बन्धु कैथलके लाल-सिंहको इकट्ठा दिया गया। इसके बाद, सन् १८०६ ई०में दोनो सेनापतियोंने फिर एक राज्य पुरस्कारस्वरूप पाया; उसका वार्षिक राजस्व—११ हजार पाउण्ड था। स्थिर हुआ, कि वह लोग जबतक जियेंगे, तबतक उस राज्यपर उनका भोगदखल रहेगा। उन लोगोंको विश्वास हुआ,—लार्ड लेक उस शर्त्तपर उन्हें फिर हांसी और हिसार प्रदान करना चाहते हैं, लेकिन उन मरुसदृश दोनो प्रदेशोंके लाभजनक जान न पड़नेके कारण, उन लोगोंने उस विषयमें आपत्ति की। छोटे छोटे नरपति लोगोंने भी अपने कामोंका उपयुक्त पुरस्कार पाया। इस मर्म्मसे वह लोग आश्वस्त हुए, कि अङ्गरेजोंके विरोधके पहले जो जिस राज्यके अधीश्वर थे, वह लोग पहलेकी तरह वह सब

दिनों कटोदमें एक संवाद-लेखक नियुक्त हुए थे। उन सब चिट्ठियोंके पढ़नेसे संसारचन्द्रके बारेमें यह मालूम होता है, कि रणजितसिंह कभी उन राजाके वंशगत श्रेष्ठत्वको नहीं भूले। वह लाहोरसे स्वाधीन थे,—अङ्गरेजोंने भी इन बातोंमें कभी भिन्नमत अवलम्बन नहीं किया।

राज्य उपभोग करेंगे,—इसलिये उनसे कोई राजस्व लिया जायगा। लार्ड वेलसलीकी कूट-राजनीतिके फलसे, इस समय चारों ओर घोर मिथ्यावाद प्रचारित होता था। जिस समय उनके ओर लोग तीव्र घृणाका भाव प्रकाशित करते थे, उस समय यह घोषणापत्र प्रचारित हुआ। अङ्गरेज-राजत्वकी सीमा यमुनातक निर्दिष्ट हुई; जयपुरके राजाके साथ पहले जो सन्धि स्थापित हुई थी, नीति-विरुद्ध होनेकी वजह इस समय वह सन्धि परित्यक्त हुई; भरतपुरके साथ भारत-गवरमेण्टका सम्बन्ध अनिश्चित रहा। सरहिन्दके सिखराजोंको इस सम्बन्धमें कुछ मालूम नहीं हुआ सही, लेकिन अङ्गरेजोंके साथ उनका सम्बन्ध विच्युत हुआ;—वह लोग आपसके उपकारके लिये एक दूसरेको साहाय्य देनेमें रहित हुए। *

सिखोंमें इस समय रणजित्‌सिंहका प्रभाव फैल पड़ा था; इसके बाद उनका ही विवरण फिर लिखनेकी जरूरत है। उस समय "भङ्गी" सम्प्रदायके कुछ अयोग्य शासनकर्ता लाहोरका आधिपत्य करते थे, उनके लाहोरपर अधिकार करना ही रणजित्‌सिंहका पहला और प्रधान उद्देश्य था। शाहेजमांके

---

* झिन्द, कैथल और अन्यान्य कुछ राज्योंका आदि दानपत्र और निश्चयताका निदर्शनस्वरूप अन्यान्य दलील वगैरह किसी किसी राजपरिवारने बहुत यत्नके साथ अबतक रख छोड़ा है। अङ्गरेजोंके कितने ही राजकीय पत्रोंसे मालूम होता है, कि झिन्दके भागसिंह, लार्ड लेक, सर जान मेलकम और सर डेविड अक्टरलनीके विशेष दयाके पात्र और श्रद्धाके भाजन थे।

लौट जानेके कुछ दिनों बाद ही रणजित्‌सिंहने बल और कौशलके
साथ शाहेजमांको प्रदत्त भूमि-समूहपर अधिकार किया।
लाहोर—रणजित्‌सिंहकी राजधानी गिनी गई। कानिया
(भाग्वी) सम्प्रदायके सहाय्यसे उन्होंने बहुत सहज ही "भङ्गी"
लोगोंको पराजित किया। भङ्गियोंने कसूरके निजामुद्दीनकी
सहायता पाई थी, लेकिन युद्धमें पराजित होनेपर उन लोगोंने
रणजित्‌सिंहकी अधीनता स्वीकार की। सन् १८०१—२ ई०में
वह पठान अविमृष्यकारिताके लिये अनुताप करने लगे। उनका
दुर्ग अवरोध और ध्वंस करना सुकठिन होनेपर भी पठान-
सेनापतिने जागीरदारोंकी तरह रणजित्‌सिंहकी अधीनता
स्वीकार की, नराधिपतिके अधीन अपनी सैन्यपरिचालना
करना ही उन्हें श्रेयः जान पड़ा। तरह तरहसे सिद्धि लाभकर
रणजित् स्नानके लिये तारणतरणके पवित्र सरोवरमें गये।
वहां फतेहसिंह अहलुवालियाके साथ उनकी मुलाकात हुई।
पहले ही कहा गया है, कि वह रणजित्‌सिंहके साथ बन्धुत्व
स्थापन करनेको तय्यार थे। इस समय उन दोनोंने बन्धुत्व-बन्ध-
नमें आबद्ध हो परस्पर शिरस्त्राण विनिमय किया। यही
बन्धुत्व परिचायक लौकिक आचारनीतिविशेष है,—यही
बन्धुत्व या भ्रातृत्वका निदर्शन है। देशप्रसिद्ध आखिरी "भङ्गी"
सेनापतिकी विधवा स्त्रीको वञ्चितकर सन् १८०२ ई०में सन्धिबद्ध
[illegible]होंने अमृतसरपर अधिकार किया। समवेत आक्रमणसे
[illegible]व विजित राज्योंका विजेताद्वयने विभाग कर लिया। सिख-
राज्यकी दूसरी राजधानीके अधिपतिके रूपमें अमृतसर पड़ा।
सन् १८०६ ई०में कटोचके अधिपति संसारचन्द्र अपनी क्षमता

कार्य्यको परिणत करनेमें चेष्टान्वित हुए, राज्यवर्द्धनकी आशा बलवती होनेसे उसके उद्देश्यसे जलन्धरके अन्तर्गत उर्व्वर दोआब क्षेत्रके कुछ अंशोंपर अधिकार करनेके लिये उन्होंने ऊपर ही ऊपर दो बार चेष्टा की। लेकिन रणजित्‌सिंह और उनके मित्र राजाओंके आक्रमणसे संसारचन्द्र विताड़ित हुए। सन् १८०१ ई०में संसारचन्द्रने फिर पहाड़ी प्रदेश परित्याग किया; होशियारपुर और विजवारा अवरुद्ध हुआ। लेकिन रणजित्‌सिंहकी उपस्थितिसे वह फिर लौटनेपर वाध्य हुए। इसके कुछ दिनों बाद ही गोर्खाओंके साथ उनका युद्ध आरम्भ हुआ; गोर्खा एक नई जाति थी; यह लोग पूर्व्व-पश्चिमके विस्तृत सब हिमालय प्रदेशोंपर जय पानेके अभिलाषी थे। *

---

* मरे विरचित, "रणजित्‌सिंह" ५१ और ५५ पृष्ठ। (Compare, Murray's Runjeet Singh, p. 51, 55.)

अम्बालेके राजनीतिक प्रतिनिधि कप्तान मरे और लुधियानेके राजनीतिक प्रतिनिधि (Political Agent) कप्तान वेड, दोनोंने ही रणजित्‌सिंहकी एक एक जीवनी लिखी थी। मारेके ग्रन्थसे कुछ नोट संग्रहकर, सन् १८३४ ई०में भारतगवरमेण्टके सेक्रेटरी थबी प्रिन्सेपने संशोधित और परिवर्द्धितरूपमें उसका मुद्रण-कार्य्य सम्पादन किया। ग्रन्थकार कप्तान वेडके कामका वृत्तान्त या उनकी वर्णना उन्होंने नहीं देखी। लेकिन वह समझे,—मरेकी रचनाकी अपेक्षा उनकी पुस्तक ज्यादातर ठीक है। व्यक्तिगत स्मृति और माचलिक समाचारपर निर्भरकर यह ग्रन्थ विरचित है,—समसामयिक अङ्गरे-

पञ्जाब छोड़नेके बाद एक वर्षमें ही शाहजमां अपने भाई महम्मद द्वारा सिंहासनच्युत हुए, महम्मदने उनकी दोनों आंखें फोड़ डालीं। लेकिन सन् १८०१ ई०में तीसरे भाई शाहशुजाने महम्मदको राजच्युतकर सिंहासनाधिरोहण किया। इन सब

लोके दलीलपत्रोंके अनुकरणसे लिखा नहीं गया है। कारण, उन सब दलीलोंमें केवल सामयिक मतामतका परिचय ही मिलता है। सन् १८०३ ई०के बादसे ही साधारणतः वह दलील प्रचुर परिमाणसे रखे जाने लगे। वस्तुतः अङ्गरेज कर्म्मचारियोंके अनुरोधसे सुचतुर भारतवासियोंके वर्णनासम्भूत वक्षमाण दोनों विवरण संगृहीत हैं। उनमें बूटाशाह नामक एक मुसलमानका और मोहनलाल नामक एक हिन्दूका लिखा इतिहास प्रसिद्ध है। वह ग्रन्थसमूह सब जगह ही मिल सकते हैं। कप्तान पेडने बहुत बातोंका तथ्यानुसन्धान किया है। लेकिन रणजित्‌सिंहकी कार्य्यावलीका अविच्छिन्न विवरणसंग्रहके लिये लोग उन दोनों कर्म्मचारियोंके विशेष ऋणी हैं।

सिखोंके साथ अङ्गरेजोंकी मित्रताके बारेमें जो विवरण दिखाई देता है, वर्त्तमान अध्यायके आखिरी अंशमें और षष्ठ और सप्तम अध्यायमें, उन सब विवरणोंका अनुकरण रचित है। ग्रन्थकारने गवरमेण्टके पत्रसे उसकी रचना की है। उन्हें विश्वास था, कि अपने हाथकी लिखी और सुरक्षित दर्शनादि न्यायतः व्यवहार की जा सकती है,—और ऐसा व्यवहार अदूषित नहीं है।

अन्तर्द्रोहोंसे अहमदशाहकी विदेशीय वृहत् साम्राज्यका शीघ्र अधःपतन हुआ। प्रदेश और नगरोंके दुर्रानी शासनकर्त्ता लोग हीनबल हो पड़े। रणजित्सिंह उन लोगोंके विरुद्ध अपने अस्त्रबलकी परीक्षा करनेमें पीछे नहीं हटे,—रणजित्सिंहके अविच्छिन्न आक्रमणसे वह लोग विच्छिन्न होने लगे। सन् १८०४—५ ई०में वह पश्चिमकी ओर गये, झङ्ग और शहवालके मुसलमान शासन कर्त्ताओंने उनकी वश्यता स्वीकार की। रणजित्सिंह उन लोगोंसे राजस्व अदा कराने लगे। मुलतानके मुजफ्फरखांने बहुमूल्य उपहार प्रदान किया; रणजित्सिंहने उनपर फिर आक्रमण नहीं किया। उद्देश्यसाधनमें कृतकार्य्य हो रणजित्सिंह सन्तुष्ट हुए। उन्होंने लाहोर लौट राजधानीमें "होली" उत्सव सम्पन्न किया। अन्तमें गङ्गास्नानार्थ हरिद्वारकी ओर बढ़ पञ्जावके पूर्व्व ओरके कार्य्यकलापकी अवस्था उन्होंने अपनी आंखो देखी। सन् १८०५ ई०के आखीरमें फिर एक बार उन्होंने पश्चिम ओर आक्रमण किया, इसबार झङ्ग-अधिपति दृढ़रूपसे रणजित्सिंहके अधीनतापाशमें आबद्ध हुए। लेकिन होलकर और अमीरखांके समीपवर्त्ती होनेपर, फतेह सिंहने पहले उन लोगोंपर आक्रमण किया। इसके बाद रणजित्सिंह खुद सिखोंके अधिकृत नगरोंकी ओर लौटे। उस समय जान पड़ा,—आसन्न विपद् उपस्थित है। एक ओर प्रबल महाराष्ट्रोंके एक विख्यात सेनापति एक अफगान-सेनापतिको विध्वस्त करनेमें प्रयासी थे; दूसरी ओर एक दल सुशिक्षित अङ्गरेजी फौज उनके पीछे पीछे सवार हुई। * उनका

* एलफिन्स्टन प्रणीत "काबुल" नामक ग्रन्थका द्वितीय

उद्देश्य और शक्ति-सामर्थ्य कोई जानता नहीं था।

सिखोंकी एक मन्त्रणा-सभाका अधिवेशन हुआ। लेकिन उनके नेतृवर्गके कई एक मनुष्य मात्र उस सभामें उपस्थित थे। पहले वह लोग सभी एक ही उद्देश्यके काममें प्रवृत्त होते थे; उन सबका ही विश्वास था,—हरेक काममें ईश्वर उनकी सहायता करते हैं; उस विश्वाससे ही शिक्षणिपुण मेषपालक जाति अत्याचार उत्पीड़नका प्रतिफल प्रदान करनेमें अनुप्राणित हुई थी, उस विश्वासपर निर्भर होकर ही और अभिनव शक्ति-बलसे ही वह लोग अहमदशाहको पराजितकर जयोल्लाससे मत्त हुए थे। इस समय उन लोगोंके प्रभुत्व-क्षमताप्रिय ऐश्वर्यप्रयासी सरदारोंके मनमें वह एकता और वह धर्मविश्वास वैसा प्रभाव फैलानेमें समर्थ नहीं हुआ। दुर्दान्त अशिक्षित मनुष्योंकी तरह सब तरहका नीति-बन्धन तोड़ वह लोग इन्द्रियसुखपरतन्त्र हो पड़े थे। वह लोग अपनी अपनी स्वार्थ-सिद्धिके लिये ही सदा व्यस्त रहते और संसार-सुखभोगकी लालसासे सदा चेष्टान्वित रहते थे। सुतरां कृषिजीवी अधिवासियोंके मनमें फिर एक अभिनव भावसे सिखधर्म्मकी प्रकृत शक्ति जगानेकी जरूरत पड़ी थी। वह लोग आपसमें स्वाधीन थे; और आपसमें मित्रता-बन्धनसे मिल भी गये थे। सुतरां स्वाधीनता और मित्रताकी वह कठोर सिन्धय-नीति बहु-विस्तृत

खण्ड, ६२५ पृष्ठ और मरे-विरचित "रणजित्सिंह" ५६, ५७ पृष्ठ। (See Elphinstone's 'Cabul' II, 375, and Murray's 'Runjeet Singh' p. 56, 57.)

साम्राज्यके पक्षमें अनुपयोगी हो पडी थी। वस्तुत: इससे एक मुख्य उद्देश्य साधित हुआ था,—भिन्न भिन्न सम्प्रदाय आपसमें मिलित और मिश्रित हुई थी सही, लेकिन उनमें प्रकृत प्रस्तावमें "मिसिल" विच्छिन्न हो पडी थी। अधिकांश लोग ही अपने अपने गांवमें स्वाधीन भावसे रहना अच्छा समझते थे। गांवोंमें राजस्व अदा करनेका कठोर विधि-विधान नहीं था; कितनी ही जगह करसंग्रह होता नहीं था;—कोई विचारव्यवस्था या कानून-अदालत प्रचलित नहीं थी। सामान्य सामान्य सर्दार लोग और उनके तनखाहदार नौकर कभी अपनी इच्छासे डकैती द्वारा दिन बितानेका यत्न करते और सभी अपनी ऐहिक प्रभुत्व-प्रतिपत्ति बढ़ानेके लिये चेष्टा करते थे। सामाजिक प्रथाके अनुवर्त्ती हो वह सब सर्दार और अनुचरवर्ग आपसमें एक दूसरेके प्रति विश्वास स्थापन करते थे। लेकिन आपसके अधीनतापाशमें रहनेकी कोई इच्छा करते नहीं थे। कोई कोई अङ्गरेजोंका पक्ष अवलम्बन करनेमें प्रयासी हुए थे। कोई कोई विजयी महाराष्ट्रोंके साथ अपने अपने भाग्य-ग्रन्थनकी उत्कट आकांक्षा प्रकाश करते थे। लेकिन वह सभी रणजित्‌सिंहके प्रति ईर्ष्यापरवश थे और उनके चिरन्तन शत्रु हो पड़े थे। एकमात्र रणजित्‌सिंह ही विदेशीय आक्रमणकारियोंको विदूरित करनेके अभिलाषी थे। वह जानते थे,—सामरिक प्राधान्य-स्थापनके लिये उद्देश्य साधनके विषयमें वह विद्रोही लोग ही एकमात्र अन्तराय हैं। उनको विश्वास था,—सामरिक प्रभुत्व प्रतिष्ठित होनेपर साम्राज्यके लोग समभाव, निरापद और सुख-स्वच्छन्दतासे अपना आपना

ऐश्वर्य-सम्पत्ति भोगदखल कर सकेंगे। वस्तुतः विभिन्न भिन्न धर्म्माक्रान्त अणु और विच्छिन्न उपादानसमूहके एकता विधानके लिये और संहति-प्रणोदित प्रयत्नसे रणजित्सिंहने विशेष बुद्धिमत्ता और चतुरताके साथ तरह तरहके उपाय अवलम्बन किये थे। वह कठोर परिश्रम और अध्यवसायके साथ उद्देश्यसाधनकी चेष्टा करने लगे। गोविन्दने जैसे स्वतन्त्रमतावलम्बी भिन्न भिन्न सम्प्रदायसमष्टिको एकता-सम्बन्धमें आवद्धकर उनकी एक जाति तय्यार की थी,—उन्होंने जिस तरह नानकके उपदेश और शिक्षाकी कार्य्यकारिता प्रतिपन्न की थी,—रणजित्-सिंहने भी उसी तरह क्रमवर्द्धिष्णु सिखजातिका एक सुव्यवस्थित और सुनियमवद्ध राज्य या साधारणतन्त्र तय्यार करनेमें बहुत ज्यादा चेष्टा की थी। *

होलकरने प्रस्थान किया। पहले ही कहा जा चुका है,—अङ्गरेज गवर्नमेण्टके साथ रणजित्सिंह मित्रता-बन्धनमें आवद्ध हुए थे, लेकिन सन्धिके स्थायित्वके वारेमें किसी तरहकी निश्चयता नहीं थी। उस समय नाभाके सर्दार और पटियालेके राजामें आपसमें विवाद चल रहा था, उसी सालके आखीरमें उस विवादके साथ दे पक्षावलम्बनके लिये रणजित्सिंह आये।

---

* मेलकमका "सारसंग्रह" १०६, १०७ पृष्ठ (Malcolm's "Sketch', p. 106, 107) लार्ड लेकके आक्रमणके समय सिखोंमें एकताका अभाव देख मेलकमने यह राय प्रकाश की। मरे-विरचित "रणजित्सिंह", ५७ ५८ पृष्ठ देखना चाहिये। (Compare Murray's "Runjeet Singh," p. 57, 58

इस विषयको आलोचना करना बहुत ही कौतूहलोद्दीपक जान पड़ता है, कि यमुना पारकर वहांके अधिपतियोंके साथ सब प्रकारके सम्बन्ध परिहारका कठोर आदेश बारबार प्रचारित होनेपर भी अङ्गरेज-कर्त्तृपक्षगण पहलेसे उस विवादमें योगदान करनेसे अस्वीकृत हो कर्त्तृपक्षीय लोगोंके आदेशानुयायी काम करते थे, या नहीं। रणजित्‌सिंहने प्रतद्रूपा किया। पतनोन्मुख मुसलमान परिवारका अधिकृत लुधियाना उनके द्वारा अधिकृत हुआ। उस मुसलमान परिवारने उस समय अङ्गरेज वीर जार्ज टामसका आश्रय लिया था। अतएव रणजित्‌सिंहके पितृव्य भिन्दकी अधिपति बाघसिंहने वह स्थान पाया। नाभा और पटियालेके इस विवादस्थलमें रणजित्‌सिंह नाभाके सर्दार यशोवन्त सिंहको सहायता देने गये और पटियालेके राजा साहबसिंहकी क्षमता घटानेके लिये वहां आये। लेकिन यशोवन्तसिंह और साहबसिंह, दोनो होने समझा,—रणजित्‌सिंहकी मध्यस्थता दोनो हीके लिये सांघातिक है। सुतरां दोनो ही उनके हाथसे मुक्ति पानेके लिये व्यग्र हो पड़े। बहुत ऐश्वर्य और एक तोप पा रणजित्‌सिंहने वहांसे प्रस्थान किया। वहांसे वह काङ्गड़ाके पहाड़ी प्रदेशोंकी ओर जा ज्वालामुखीकी स्वभावजात अग्निशिखामें स्वधर्मानुयायी उपासना समापन करनेमें चेष्टान्वित हुए। *

---

* मरे-विरचित 'रणजित्‌सिंह", ५६, ६० पृष्ठ देखना चाहिये। (Murray's Runjeet Singh", p. 59, 60.)
सन् १८०६ ई०की १७ वीं जूनको सर चर्लस मेटकाफने गवरमेण्टके

इसी समय उच्चाकाङ्क्षाके वशवर्त्ती हो कटोचके संसारचन्द्र अविम्ब्यकारिताके साथ "गोर्खाओंसे" घोरतर युद्धमें प्रवृत्त हुए; इससे उनकी क्षमता बहुत कुछ घट गई। अध्यवसाय-शील हृदय सिक्खसर्दार, पुराने पहाड़ी राजाओंमें सबको ही उस साधारण शत्रुके विरुद्ध उत्तेजितकर, एकता-बन्धनमें आवद्ध कर सकते थे। उस समय वह सभी वड़वालसे कर संग्रह करते थे। लेकिन प्रभुत्वप्रतिष्ठाकी एक उत्कट लालसाके अनुवर्त्ती हो संसारचन्द्रने कालुरके (या विलासपुरके) सर्दारकी क्षमता घटाई थी; उन हीनबल सिक्ख-सर्दारने निरुपाय हो नेपाल-सेनापतिका आश्रय ग्रहण करना ही अच्छा समझा। उमर-सिंह थापा हृष्टचित्तसे आगे बढ़े। शत्रुओंके प्रति इस पहले आक्रमणमें नालागढ़के सर्दार युवकने संसारचन्द्रकी सहायता की गोर्खा सेनापतिके आनेपर, वह वीरोचित तेजस्विताके साथ बाधा प्रदान करने लगे। लेकिन उनके ऐसे वीरत्व—ऐसी बाधा देने-

---

सरारको एक पत्र लिखा। इससे मालूम होता है, कि उस समय, सन् १८०६ ई०में, रणजित्‌सिंह इतने बलशाली नहीं थे, कि केवल मात्र बलप्रयोगसे मालवेके सिक्खोंके क्रियाकलापमें बाधा प्रदान करनेमें समर्थ होते। सन् १८०८ ई०की १४ वीं फरवरी और ७वीं मार्चको और सन् १८११ ई०की ३०वीं जुलाईको सर डेविड अक्टरलनीने जो पत्र भेजा, उससे मालूम होता है, कि पटियालेके राजा और अन्यान्य सर्दारोंके साथ सन् १८०५ ई०में आपसमें सहायताके लिये जो सन्धिका बन्दोबस्त हुआ था, उस समय अन्ततः वह बन्दोबस्त नष्ट हुआ था।

पर भी, सन् १८०५ ई०के आखीरमें शतद्रु और यमुनाके मध्यवर्त्ती विशाल राजखण्डमें गोर्खा-प्रभुत्व प्रतिष्ठित हुआ। उसी वर्ष उमरसिंहने शतद्रु पारकर कांगड़ा घेर लिया। ज्वालामुखी देखनेके समय, संसारचन्द्रने रणजित्‌सिंहसे सहायताकी प्रार्थना की। लेकिन उस सुदृढ़ दुर्गाधिकारके लिये बहुत धन-प्राण नाश होनेकी आशङ्कासे संसारचन्द्रने उनकी सहायता नहीं पाई; संसारचन्द्र अपनी क्षमतापर निर्भर करनेके लिये बाध्य हुए। सुतरां विदेशीय शत्रुओंको विताड़ित करनेके लिये कोई व्यवस्था बन्दोबस्त नहीं हुआ। *

---

* मारे विरचित "रणजित्‌सिंह" ६०, पृष्ठ, और म्हरक्राफ्टका "भ्रमण-वृत्तान्त" प्रथम खण्ड, १२७ पृष्ठ इत्यादि। (*Oowparo* Murrays Runjeet Singh", p° o 60, and *Moorcrofts* "Travels," 1, 127 & o).

पुराने राजपूत सिपाहियोंको विदाकर गुलाम मुहम्मद नामक एक मनुष्य आश्रयके प्रार्थी रहेला सर्द्दारके परामर्शसे संसारचन्द्रने अफगानी सिपाही नियुक्त किये। वह कहते हैं,—यह अपरिणामदर्शिता ही गोर्खोंसे उनके पराजय होनेका एकमात्र कारण है।

प्रजाके विद्रोही होनेसे नाहुनके राजाने गोर्खाओंसे सहायकी प्रार्थना की। राजाका पक्ष अवलम्बनकर विद्रोहियोंके शान्तिविधानके लिये गोर्खाओंने यमुना पार किया। फिर एक राजपूत सर्द्दारकी सहायताके लिये यह लोग शतद्रु पार हुए। एकता रहनेसे, नई जाति होनेपर भी कोई उसकी अबाधगतिके

सन् १८०७ ई०में रणजित्सिंह पहले कसूरपर आक्रमण करनेका उद्योग करने लगे। उस समय वहां फिर विद्रोह उपस्थित हुआ। इससे पहले वहांके शासनकर्त्ता निजामुद्दीन परलोक गये; उनकी मृत्युके बाद उनके उत्तराधिकारीने अधीनता-पाश तोड़ स्वाधीनता अवलम्बन की। इससे रणजित्सिंह बहुत उद्विग्न हो पड़े। शायद रणजित्सिंहने समझा था,—पठानोंके एक बड़े उपनिवेशपर अधिकारकर लाहोरके पुराने प्रतिद्वंदीका राज्य, अपने राज्यमें लानेपर उनके गुणगरिमासे और यशःप्रभासे दिग्दिगन्त उद्भासित होगा। पिताके पहले मित्र सूबधर जुधासिंहके पुत्र योधसिंह रामगढ़ियाकी सहायतासे रणजित्सिंहने उस स्थानपर आक्रमण किया। एकताके अभावसे उस समयके शासनकर्त्ता कुतबुद्दीन हीनबल हो पड़े थे, सुतरां वह किसी तरहकी बाधा देनेमें समर्थ नहीं हुए। अवरोधके प्रायः एक महीने बाद, कुतबुद्दीनने अपनी इच्छासे आत्मसमर्पण किया। उनके ग्रासाच्छादनके लिये रणजित्सिंहने शतद्रुके दूसरे किनारे एक खण्ड भूसम्पत्ति उन्हें प्रदान की। इसके बाद रणजित्सिंह मुलतानकी ओर बढ़े। वह प्राचीर परिवेष्टित नगर-दुर्ग उनके द्वारा अवरुद्ध हुआ। लेकिन यहां उन्होंने आशातिरिक्त बाधा पाई; दुर्गरक्षकोंने इतने वीरत्वके साथ उन्हें बाधा प्रदान की, कि वह दुर्गपर

प्रतिरोध करनेमें समर्थ नहीं हुआ। साधारण कागज-पत्रादिकी आलोचनासे मालूम होता है,—गोरखोंने, सन् १८०३ ई०में शतद्रुपर आक्रमण किया था।

अधिकार करनेमें समर्थ नहीं हुए। लेकिन दुर्गाधिपतिके वश देनेका इकरार करनेपर उसपर ही राजी हो, उन्होंने वहांसे प्रस्थान किया; वहाने वहाने लौट जानेके कारण वह सन्तुष्ट हुए। तब भी, उन्होंने अपनी अकृतकार्य्यता स्वीकार नहीं की। भावलपुरके नवाबके साथ इस समय उनकी जितनी बातें हुईं, उनसे उन्होंने उन कार्य्यकुशल नवाबके मनमें यह विश्वास दिलानेकी चेष्टा की थी, कि वह नवाबपर बहुत श्रद्धा करते और उसी श्रद्धासे वह उस सुरक्षित दुर्गको अफगान शासनकर्त्ताके हाथ समर्पण कर आये थे। *

उसी साल, सन् १८०७ ई०में रणजित्‌सिंहने मकुमचन्द नामक एक सुचतुर क्षत्रियको अपने काममें नियुक्त की। उनके प्रति रणजित्‌सिंहने जैसा विश्वासस्थापन किया था, क्षत्रियवीरने उस विश्वासकी सार्थकता प्रतिपन्न किया थी। उस समय पटियालेके राजाके साथ उनकी षड्यन्त्रकारिणी स्त्रीका घोर विवाद-विसम्वाद चल रहा था; रणजित्‌सिंह उन नवाभिषिक्त कर्म्मचारीके साथ उस गृहविवादमें साथ देनेके लिये गये। यह बात पहले छोलकर और कसीरखांको जैसी लाभजनक जान पड़ी थी, इस समय लाहोराधिपतिके लिये वह वैसी ही लाभजनक अनुभूत हुई। शिशु-पुत्रके भरणपोषणके लिये रानी उस समय दुर्व्वल स्वामीसे राज्यका एक बड़ा हिस्सा बलपूर्व्वक हाथमें लेना चाहती थीं। उस समय रानीने छोरेका

---

*'मारेका,—"रणजितसिंह", ६० और ६१ पृष्ठ। और भावलपुरके राजपरिवारका हस्तलिखित इतिहास देखना चाहिये।

हार और पीतलकी तोप देनेका प्रस्तावकर रणजित्‌सिंहसे साहाय्यको प्रार्थना की; रणजित्‌सिंह उस प्रलोभनसे मुग्ध हो पड़े; उन्होंने रानीको सहायता देना मञ्जूर किया। रणजित्‌सिंहने शतद्रु पार किया, बालकके भरणपोषणके लिये उन्होंने सालाना ५० हजार रुपये निष्पत्ति कर दिया। इसके बाद रणजित्‌सिंहने अम्बाला और पर्व्वतमालाके मध्यवर्त्ती एक राजपूत-परिवारके अधिकृत नारायणगढ़पर आक्रमण किया। लेकिन पहली बार वह वहांसे विताड़ित हुए, उनका बहुत बड़ा नुकसान हुआ। पीछे उन्होंने उस स्थानपर अधिकार किया। उस आक्रमणके समय दलवाला सम्प्रदायके पुराने राणा तारासिंह लाहोर सैन्यके साथ युद्ध करते थे; नारायणगढ़में उनकी मृत्यु हुई। उनके जलन्धर दोआबके राज्यपर अधिकार करनेके लिये रणजित्‌सिंह वहांसे लौटे। प्रतिभामध्यमें और तेजोवीर्य्यमें उन वृद्ध नरपतिकी विधवा पत्नी पटियालेके राणाकी बहनको बमकाम थीं। कहते हैं,—उन रमणीने अपनी पोशाक पहन रणसाजमें राहुनके दुर्गकी टूटी प्राचीरपर असिहस्त हो युद्ध किया था। *

सन् १८०८ ई०के शुरूमें उत्तर-पञ्जाबकी बहुतसी जगह लाहोर-राज्यके अन्तर्भुक्त हुई। स्वाधीन सिख-सर्द्दारोंमें

---

* Compare 'Murray's Runjeet Singh, p. 61, 63 इस अवसरपर रणजित्‌सिंहने पटियालेसे जो तोप पाई थी, उसका नाम—झारीखां रखा, सन् १८४५।४६ ई०में अङ्गरेजों द्वारा यह स्थल अधिकृत हुआ।

शतद्रुके किनारे रहे। *

लाहोरके अधिपतिकी कार्यप्रणाली से गवरनर-जनरल उस समय शतद्रुकी ओर एक दल फौज भेजनेमें सतसङ्कल्प हुए। गवरनर जनरल इस सम्बन्धमें पहले कुछ भी स्थिर कर नहीं सके। सन्धिसंस्थापनके प्रस्तावसे मिष्टर मेट्काफकी सहायता और रक्षणावेक्षण करना, उनका मुख्य उद्देश्य था। शतद्रुको उत्तर और रणजित्सिंहका प्रभुत्व सीमाबद्ध रखना भी उनका एक और कर्त्तव्य-कार्य निर्द्दिष्ट हुआ था। गवरनर-जनरलने उन लोगोंको ऐसा ही उपदेश दिया था। † कहते हैं कि उन लोगोंके प्रति एक और आदेशाज्ञा प्रचारित हुई थी;— रणजित्सिंहके साथ और एक प्रश्न बताना चाहिये, कि युद्धका साज-सरञ्जाम यथायोग्य बढ़ाना पड़ेगा; अङ्गरेज राज्यके सीमान्त प्रदेशोंमें रणजित्सिंहके सामरिक प्रभुत्वके विपर्यता-चरणमें उनके मनमें भयका उद्रेक न होगा, बल्कि वहां सिख-राजगण आधिपत्य करेंगे। सीमान्त प्रदेशमें रणजित्सिंहका आधिपत्य लोप होगा। इसके अनुसार, सन् १८०८ ई० से जनवरी महीनेमें सर डेविड अक्टरलनीके अधिनायकत्वमें एकदल सैन्यने यमुना पार किया। [illegible] और पटि

---

* मरे-लिखित "रणजित् [illegible] ([illegible]
[illegible]y's 'Runjeet Singh,' p. 66).

† स[illegible] १४ वीं [illegible] दि[illegible]
[illegible]र डेविड [illegible] [illegible]
उसे [illegible]

राहसे सेनापति लुधियानेकी ओर बढ़ने लगे। सारहिन्दके सब सर्द्दारोंने सादर उनकी अभ्यर्थना की; लेकिन एकमात्र" क्रोडा सिंहिया" सम्प्रदायके नाममात्रके अधिनायक योधसिंहने उनके प्रति किसी तरहका सम्मान नहीं दिखाया। लेकिन जानेके समय उनके मनमें भयका सञ्चार हुआ था, पीछे रणजि- तुसिंह प्रकाश्यभावसे उनके साथ विवादमें प्रवृत्त हुए। दोनो तरहकी सन्धिके प्रस्तावसे उन सर्द्दारने कई एक प्रतिनिधि भेजा, उनके साथ मुलाकात होनेपर वह और आगे नहीं बढ़े; विवाद-विसम्वाद उपस्थित होनेकी आशङ्कासे अपने सैन्यदलके पास रह वह वक्रगति अवलम्बनकर वहां विश्राम करने लगे। *

रणजितुसिंह कुछ असन्तुष्ट हुए। राज्यके पास अङ्ग- रेजी फौज रहनेसे वह कुछ व्याकुल भी हो पड़े। अङ्गरेज

* सन् १८०८ ई०की २०वीं जनवरी, ४थी, ६वीं और १४वीं फरवरीको सर डेविड अक्टरलनीने गवरमेण्टको बराबर कईएक पत्र लिखे। १८०८ ई०को १३वीं मार्चको गवरमेण्टने भी सर डेविड अक्टरलनीके पास पत्र भेजा। उन सबको परस्पर मिलाकर देखना चाहिये। सर डेविडने जो लिखा है, या जो कार्य्य सम्पन्न किया है, गवरमेण्टने उसका किसी तरह अनुमो- दन नहीं किया। इसलिये दुःखित हो सर डेविड अक्टरल- नीने [illegible] किया। (सन् १८०८ ई०की १८वीं अपरैलको सर [illegible] गण्टको एक पत्र लिखा, यहां उसे ही देखना चाहि[illegible]

प्रतिनिधिने उनके पास तरह तरहके प्रस्ताव उपस्थित किये; लेकिन कितनी ही वजहोंसे महाराज उन सबको लौटाने लगे। दक्षिण ओरस्थित उनके राज्यके बारेमें कुछ सन्देहके वशवर्त्ती हो मिस्टर मेटकाफ अपना भाव छिपाते थे,—उन्होंने इस विषयमें जो अभियोग किया, उसके बारेमें ब्रिटिश गवरमेण्टने पहले एक घोषणा प्रचार की थी। उससे स्थिर हुआ, कि उनके नव-विजित राज्य प्रत्यर्पित होंगे और वह अपनी सब सैन्य ले शतद्रु नदीके उत्तर जायेंगे,—इससे उनके साथ फिर सन्धिस्थापनको अनिर्व्वार्य्य दीवार अधिकतर दृढ़ होगी। *

जब ऐसी व्यवस्थासे कार्य्यावलीका अनुष्ठान हो रहा था, तब गवरनर जनरलने युरोपसे एक समाचार पाया। इससे उन्हें विश्वास हुआ, कि नेपोलियनने भारत-आक्रमणका सङ्कल्प परित्याग किया है, या वह उस अभिसन्धिको कार्य्यमें परिणत करनेसे

---

* सन् १८०९ ई०की १४वीं फरवरीको सर डेविड अक्टरलोनीने गवरमेण्टको एक पत्र लिखा, उसी साल १०वीं जुलाईको गवरमेण्टने सर डेविड अक्टरलोनीको जवाब दिया, यहां उसे भी देखना चाहिये। कर्नल लरन्स कहते हैं,—(Adventures in the Punjab, p. 31, note) सर चार्लस मेटकाफ और राज्योंकी बात जाननेके लिये भी चेष्टित हुए थे। उन्होंने महाराजसे कहा था, कि अङ्गरेजोंको उस समयके दावेको मान स्वीकार होनेपर इस विषयमें अङ्गरेजोंकी निरपेक्षता प्रकाश की जाए, कि महाराज और किसी स्थानपर अधिकार-प्रवेश न करेंगे, इस बातमें भी निरपेक्ष रहेंगे।

विरत हुए हैं। वह जिस भावसे उद्देश्यसाधनमें विरत हुए, उससे गवरनर जनरल समझे, कि आत्मरक्षाके लिये राज्यरक्षाके उद्देश्यसे, आपातत: किसी तरहकी सतर्कताकी जरूरत नहीं है।* अतएव प्रचारित हुआ, कि अङ्गरेज गवरमेण्टका इससमय यही प्रधान उद्देश्य है, जिसमें रणजित्सिंह शतद्रुके दक्षिणस्थ राज्योंपर अधिकार-प्रवेश कर, उन सब राज्योंपर अधिकार करने न पावें; उन सब राज्योंका निरापद-विधान ही अङ्गरेजोंका एकमात्र कर्त्तव्य था। यूरोपीय शत्रुके आनेकी सम्भावना न रहनेपर भी, अन्यान्य कारणोंसे दक्षिण-देशवासी सिखोंको आश्रयप्रदान करना युक्तिसिद्ध जान पड़ा था। तब भी, वह लोग बार बार जिद करने लगे,—रणजित्सिंह शतद्रुके पश्चिम किनारे अपनी सब सैन्य ले लौटें; बाद उन्होंने जिस राज्यपर अधिकार किया है; वह उन्हें प्रत्यर्पण किया जावेगा, लेकिन पहले उन्होंने जितने राज्य जीते थे, उनके फिर पानेके बारेमें महाराज किसी तरहका आग्रहातिशय्य प्रकाश न करें। परन्तु सब तरहके सन्देहका कारण निराकरणार्थ सर डेविड अक्टरलनी लुधियाना परित्यागकर सैन्यके साथ लौट सकते और वहां वह स्थायीरूपसे सेनानिवास स्थापनकर सकते थे। † लेकिन

---

* सन् १८०६ ई०की ३०वीं जनवरीको सर डेविड अक्टरलनीके पास गवरमेण्टने एक पत्र भेजा। यहां उसे ही देखना चाहिये।

† सन् १८०६ ई० की ३०वी जनवरी, ६ठीं फरवरी और १२वी मार्चको सर डेविड अक्टरलनीको गवरमेण्टने पत्र लिखा। उसे ही देखना चाहिये।

अङ्गरेज-सेनापति पूर्व्ववर्त्ती स्थानमें ही सेनानिवास-स्थापनकी उपयोगिता समझाने लगे; गवरमेण्ट उससे सम्मत हुई। उसके अनुसार अङ्गरेज-गवरमेण्टने आपातत: कुछ दिनोंके लिये पहले लिखे स्थानमें ही सेनानिवासके स्थापनकी आज्ञा प्रदान की। इसतरह लुधियानामें अङ्गरेजोंका एक स्थायी सेनानिवास स्थापित हुआ; इस बारेमें किसीने कोई बाधा नहीं दी। *

सन् १८०९ ई० के फरवरी महीनेमें सर डेविड अक्टरलनीने एक घोषणापत्र प्रचार किया। उसमें प्रचारित हुआ,—शतद्रु-के पूर्व्व तीरवर्त्ती सब राज्य अङ्गरेजोंके आश्रयाधीन हैं; वह लोग उन सब राज्योंका रक्षणावेक्षण करेंगे। लाहौराधिपतिके उन सब राज्योंपर वृथा आक्रमण करनेपर, अङ्गरेज-गवरमेण्ट उनके विरुद्ध अस्त्रधारण करेगी। † रणजित्‌सिंह उस समय समझे,—गवरमेण्ट वृथाही उनके साथ विवादमें प्रवृत्त होनेकी अभिलाषी है। उन्हें भय हुआ, कि पीछे मझाके और स्वाधीन राजा लोग अङ्गरेज-गवरमेण्टकी अधीनता स्वीकार करनेमें उद्यत हों और अङ्गरेज गवरमेण्ट सन्तुष्टचित्तसे उन्हें

---

* सन् १८०९ ई० की २९वीं मईको सर डेविड अक्टरलनीने गवरमेण्टको और सन् १८०९ ई० की १२ वीं जूनको गवरमेण्टने सर डेविड अक्टरलनीको पत्र लिखा। उनमें इन बातोंका उल्लेख है।

† अष्टम परिशिष्ट देखना चाहिये (See Appendix, No viii.)

आश्रय प्रदान करे। उन्होंने देखा,—इससे उनके साम्राज्य-गठनकी सब आशा-भरोसा समूल निर्म्मूल होगी। इस बारेमें विचारते विचारते उन्होंने विचक्षणताके साथ एक राय स्थिर की। उन्होंने प्रयोजनानुरूप सब सैन्य ले प्रस्थान किया; उनके बाकी जीते हुए राज्य परित्यक्त हुए। सन् १८०६ ई० की २५वीं अप्रेलको लाहोरके एकमात्र अधिपतिने अमृतसरमें एक सन्धिपत्रपर दस्तखत किया। स्थिर हुआ,—शतद्रु नदीके दक्षिण जिन सब राज्योंपर पहले उन्होंने अधिकार किया था, वह सब उनके अधिकारमें ही रहेगा; लेकिन भविष्यत्‌में उनकी राज्यलालसा शतद्रुके उपार और पश्चिम ओर सीमाबद्ध हुई। वह उस देशके सब राज्योंपर अधिकार कर सकेंगे, लेकिन वह सीमा पार कर न सकेंगे।*

इसी समय शतद्रु और यमुनाके मध्यवर्त्ती कुछ सिख, हिन्दू और मुसलमान राणाओंने अङ्गरेजोंका आश्रय लिया, वह लोग अङ्गरेजोंके आश्रितके नामसे प्रचारित हुए। इस समय इस विषयकी मीमांसाकी जरूरत पड़ी, कि विदेशीय शत्रुके आक्रमणसे उन लोगोंने किन किन शर्तोंपर आश्रय पाया। सर डेविड अक्टरलनीने प्रतिपन्न किया,—जब सर्द्दारोंने पहले अङ्गरेजोंसे आश्रयकी प्रार्थना की, तो अङ्गरेजोंके प्रति उनका जो विद्वेषभाव था, रणजित्‌सिंहके आक्रमणके भयसे वह विदू-

---

* नवम परिशिष्टमें सन्धिपत्र देखना चाहिये। मरे-विरचित "रणजित्‌सिंह" ६७ और ६८ पृष्ठ। (Compare Murray's 'Runjeet Singh,' p. 67, 68)

रित हुआ था। तब शायद वह लोग किसी प्रस्तावित प्रस्तावपर सम्मत होते ; यहांतक, कि कायदेके अनुसार राजस्व प्रदानसे इनकार करनेपर भी वह लग प　न हटते। * जब उन सर्द्दारोंने पहले प्रस्ताव उठाया, † अङ्गरेज-गवरमेराटने वह प्रस्ताव प्रत्याख्यान किया था। लाहोरमें उस समय जितने दूत भेजे गये, उनके दौत्य-कार्य्यसे सर्द्दारोंने एक नई शिक्षा पाई थी ; अङ्गरेजोंका आश्रयग्रहण वह लोग अपना मुख्य उद्देश्य समझते नहीं थे। उनका आश्रय अब अप्रधान उद्देश्यके नामसे गिना गया। अङ्गरेज-गवरमेराट दूरदेशस्थ किसी विदेशीय आक्रमणके भयसे जैसे भीत हुई थी, अङ्गरेजोंके उस भयसे उन-लोगोंने पञ्जाबके स्वेच्छाचारीके हाथसे मुक्ति पाई। फलतः इस समय इच्छासे कोई आश्रयका प्रार्थी होता नहीं था। उस समय जो नीति अनुसृत हुई थी, उसमें कहा गया था, कि अङ्गरेज लोग उन्हें आश्रितके नामसे स्वीकार करेंगे ; नहीं तो वह लोग दुश्मन गिने जायेंगे। † सर डेविड प्रतिपन्न करने लगे-

---

* सन् १८०६ ई०की १७वीं मार्चको सर डेविड अक्‍टरलोनीने गवरमेराटको एक पत्र भेजा। यहां उसे ही देखना चाहिये।

† सन् १८०८ ई०में गवरमेराटने दिल्लीके रेसिडराटको एक पत्र लिखा, यहां उसे ही देखना चाहिये। मेरब हुगल ("भ्रमण वृत्तान्त" २६६ पृ० ;—Travels, p. 299.) कहते हैं,—स्वार्थसाधनके उद्देश्यसे ही अन्ततः अङ्गरेजोंने पञ्जाब-समनकर राजकार्य्यमें बाधा दी थी। लेकिन उनके मतसे— न्याय्य उत्तराधिकारीके अभावसे सब राज्य ग्रासकर उसका उप

और इस विश्वासमें ही राजाओंने आशा की थी,कि स्वेच्छापूर्व्वक आश्रय मिलेगा। इधर गवरमेराटने नये आश्रयार्थी राजाओंके बारेमें उदार-नीति अवलम्बनकी इच्छा प्रकाश की। अन्तमें सन् १८०६ ई० की ३री मईको एक घोषणापत्र प्रचारित हुआ। स्थिर हुआ,—रणजित्‌सिंहके आक्रमणके सम्बन्धमें सरहिन्द और मालवाके सर्द्दार लोग प्रतिभूस्वरूप रहे; रणजित्‌सिंहके किसी समय उनपर आक्रमण करनेपर, अङ्गरेज गवरमेराट उन लोगोंको सहायता देगी; सर्द्दार लोग अपने अपने राज्यपर स्वाधिपत्य करेंगे, वह लोग स्वाधीन रहे; उन लोगोंको किसी प्रकारका कर देना नहीं पड़ेगा। लेकिन युद्धके समय अङ्गरेज-गवरमेराटको वह लोग सहायता देंगे। और भी कितनी ही शर्त्तें साव्यस्त हुईं; लेकिन यहां उसके फिरसे लिखनेकी जरूरत नहीं है। *

रणजित्‌सिंहके आक्रमण-भयसे मुक्त होते न होते कलह-प्रिय दुर्द्दान्त सर्द्दार लोग आपसके विवादमें प्रवृत्त हुए; किसी

स्वत्व भोग-दखल करना ही—अङ्गरेजोंका मुख्य उद्देश्य था। सर्द्दारोंके परस्पर विवादमें प्रवृत्त होनेसे उत्तराधिकारीकी नामौजूदगीसे धन-सम्पत्तिके साथ राज्य पानेकी राह प्रशस्त हुई थी। जो हो, परवर्त्ती समय राज्यग्रासका उत्कट अभिलाष उत्पन्न हुआ था। सन् १८०६ ई० में इस लालसाके वशवर्त्ती हो अङ्गरेजोंने काम नही किया।

* दशम परिशिष्ट देखना चाहिये। (See Appendix, No. x.)

दिया। इस बारेमें भी सर्दारोंको आश्वस्त किया गया, कि उन लोगोंको स्वाधीनता दी जायेगी और रणजित्‌सिंहके आक्रमणसे वह लोग सहायता पायेंगे। * ऐसी घोषणा प्रचारित होनेसे विवाद-विसम्वाद, अत्याचार उत्पीड़न और अयथा राज्य-आक्रमण सहज ही नहीं मिटा। सर डेविड अक्टरलनीके आनेपर योधसिंह रामगढ़ियाने तरह तरहके बहानोंसे ब्रिटिश-गवर्मेण्टके साथ सन्धिस्थापनकी अनिच्छा प्रकाश की। इसी समय बलपूर्व्वक उन्होंने कुछ राज्यपर अधिकार भी कर लिया था। सन् १८१८ ई०में उन्हें दमन करनेके लिये फौज भेजनेकी जरूरत पड़ी। योधसिंहने जिन सब स्थानोंपर बलपूर्व्वक अधिकार किया था, उसका पुनरुद्धार-साधन ही उस अभियानका उद्देश्य था। †

---

* ग्यारहवें परिशिष्टका घोषणापत्र देखना चाहिये। (See the Proclamation, Appendix, No xi.)

† सन् १८१८ ई० की २७वीं अक्टोबरको दिल्लीके रेसिडेण्टने राजाको अर्थदण्डसे दण्डित करनेके लिये अम्बालेके प्रतिनिधिके पास एक आदेशपत्र भेजा। सामरिक व्ययस्वरूप ६५ हजार रुपये उन राजासे अदा करानेके लिये अम्बालेके प्रतिनिधि आदिष्ट हुए। उस समय कुछ दिनों पहले उस परिवारके प्रधान पुरुष योधसिंह मुलतानपर नाधिकारकर रणजित्‌सिंहकी फौजके साथ लौट गये। महाराज उनको बहुत श्रद्धा करते थे। यह सोचकर वह सन्तुष्ट हुए, कि आश्रित सिख लोगों और अङ्गरेज कर्म्मचारी लोगोंने उत्तराधिकारित्वके नियमके बारेमें

किसीने अपनेसे हीनबल पासके राजाओंके प्रति अत्याचार-उत्पीड़न आरम्भ कर दिया। उन सर्दारोंको पूरी तरह अङ्गरेजोंकी अधीनता-पाशमें आबद्ध करनेके लिये गवरनर-जारल दूसरी बार अनिच्छुक थे। * लेकिन मिष्टर मेट्कालफने प्रतिपन्न किया, —उन सब सर्दारोंका एक दूसरेपर अथवा आक्रमण करनेसे रोकना जरूरी है और उन सबको ही रणजित्सिंहके आक्रमणसे मुक्त करना पड़ेगा। इस मर्मका सम्प्रति स्वतन्त्र घोषणा-पत्र प्रचार करना चाहिये। उन्होंने और भी कहा,—हमके विपद्निराकरणको इतनी निश्चयता न देनेपर उत्पीड़ित मनुष्य बाध्य हो लाहोराधिपतिका आश्रय ग्रहण करेंगे; उनके दिलमें आयेगा,—वही आश्रय देनेके एकमात्र उपयुक्त पुरुष हैं। सबवजसे बलवान हो लाहोराधिपति विद्रोह दमनका सुयोग पायेंगे; इस बारेमें उनका सन्धिलाभ भी अवश्यम्भावी है। † सभी इस मतकी यथार्थ उपलब्धि कर सके, सबने ही इस मतका समर्थन किया। सन् १८११ ई० की दूसरी अगस्तको दूसरा घोषणापत्र प्रचारित हुआ। इससे सर्दारोंको सतर्क कर दिया गया, कि कोई किसीके राज्यपर अथवा आक्रमण न करे, —अङ्गरेज-गवरमेण्टने इस विषयमें उन लोगोंको सावधान कर

* सन् १८०६ ई० की १० वीं अप्रेलको सर डेविड अक्टरलनीने गवरमेण्टको एक पत्र भेजा। वहां उसे ही देखना चाहिये।

† सन् १८०६ ई० की १० वीं जूनको मिष्टर मेटकाफने गवरमेण्टको जो पत्र भेजा, उसको ही बात लिखी जाती है।

दिया। इस बारेमें भी सर्द्दारोंको आश्वस्त किया गया, कि उन लोगोंको स्वाधीनता दी जायेगी और रणजितसिंहके आक्रमणसे वह लोग सहायता पायेंगे। * ऐसी घोषणा प्रचारित होनेसे विवाद-विसम्वाद, अत्याचार उत्पीड़न और अथवा राज्य-आक्रमण सहज ही नहीं मिटा। सर डेविड अक्टरलोनीके आनेपर योधसिंह आलुवालियाने तरह तरहके वहानोंसे ब्रिटिश-गवरमेराटके साथ सन्धिस्थापनकी अनिच्छा प्रकाश की। इसी समय वलपूर्व्वक उन्होंने कुछ राज्यपर अधिकार भी कर लिया था। सन् १८१८ ई०में उन्हें दमन करनेके लिये। फौज भेजनेकी जरूरत पड़ी। योधसिंहने जिन सब स्थानोंपर वलपूर्व्वक अधिकार किया था, उसका पुनरुद्धार-साधन ही उस अभियानका उद्देश्य था। †

---

* ग्यारहवें परिशिष्टका घोषणापत्र देखना चाहिये। (See the Proclamation, Appendix, No xi.)

† सन् १८१८ ई० की २७वीं अक्टोबरको दिल्लीके रेसिडेराटने राजाको अर्थदण्डसे दण्डित करनेके लिये अम्बालेके प्रतिनिधिके पास एक आदेशपत्र भेजा। सामरिक व्ययस्वरूप ६५ हजार रुपये उन राजासे अदा करानेके लिये अम्बालेके प्रतिनिधि आदिष्ट हुए। उस समय कुछ दिनों पहले उस परिवारके प्रधान पुरुष योधसिंह मुलतानपर अधिकारकर रणजितसिंहकी फौजके साथ लौट गये। महाराज उनको बहुत श्रद्धा करते थे। यह सोचकर वह सन्तुष्ट हुए, कि आश्रित सिख लोगों और अङ्गरेज कर्म्मचारी लोगोंने उत्तराधिकारित्वके नियमके बारेमें

दक्षिण प्रदेशस्थ "मालवा" सिखोंके इतिहासमें साधारण पाठकोंके लिये कौतूहलप्रद घटनावलीका असद्भाव हो सकता; भारतके शासनसम्पर्कमें जो समझना चाहते हैं, उ इतिहासमें उनके लिये भी कितनी ही ज्ञातव्य बातें विवृत र सकती हैं; लेकिन यहां उसकी पुङ्खानुपुङ्ख आलोच निष्प्रयोजन है। अब अङ्गरेज कर्मचारी ए ईएक गुरुतर सम स्यापूर्ण विषयकी मीमांसामें प्रवृत्त हुए। पहले प्रश्न उठा,— समशक्तिसम्पन्न राजोंमें विवाद उपस्थित होनेपर उस विवादमें बाधा देना चाहिये, कि नहीं, दूसरे, प्रादेशिक राजाओं और उनके मित्र राजाओं और अधीनस्थ व्यक्तिवर्ग या सर्दारोंमें आपसके मनोमालिन्यसे विवाद-विसम्वाद संघटित होनेपर अङ्गरेज-गवरमेण्ट कई नीति अवलम्बनकर;—उन सब झगड़ोंमें उन लोग को बाधा दे या नहीं; इत्यादि विषयकी मीमांसाके लिये अङ्गरेज-गवरमेण्ट मनोयोगी हुई। विभिन्न जातिकी विभिन्नरूप समाजिक रीति-नीतिके साथ हिन्दुओंके उत्तराधिकारित्व विषयक प्रचलित नियमोंका सामञ्ज- स्यविधान करनेमें उन लोगोंने बहुत परिश्रम किया,—भिन्न भिन्न जातिकी सामाजिक प्रथाके अनुसार उत्तराधिकारित्वके

में दूसरा अवलम्बन किया है। उन्होंने खुद अपनेको "ओड़ा- सिंहिया" मिसिलके अधिनायकके नामसे घोषणा की और निःसन्तान जागीरदारोंपर उत्तराधिकारीके नामसे दावा किया। जो हो, इस समय ब्रिटिश-गवरमेण्ट उन सम्प्रदायके प्रधान और उपयुक्त अधिनायक-रूपमें खड़ी हुई।

पुराने विधिसमूह प्रवर्त्तित करनेकी चेष्टा की। कृषिजीवी सिख-जातिके सहसा राज्याधिकारी होनेसे उनके सम्बन्धमें हिन्दू-शास्त्रानुसार उत्तराधिकारित्वका नियम निर्द्दिष्ट करनेके लिये बहुत चेष्टित हुए। इस मीमांसाके लिये भी अङ्गरेज-गवरमेण्टने बहुत चेष्टा की थी, कि उत्तराधिकारीकी नामौजूदगीमें कैसा बन्दोबस्त होना उचित है। उन लोगोंके दिलमें आया था, वृटिश जातिका नागरिक (मिउनिसिपल) विधिविधान ही श्रेष्ठ है, आश्रित मनुष्यकी रक्षाके लिये वह लोग जो सहायता करनेके लिये प्रस्तुत हैं, उसके द्वारा वह लोग प्रत्युपकारकी आशा कर सकते हैं। उन्होंने प्रतिपन्न करनेकी चेष्टा की,—स्वगोत्रज या सपिण्डज उत्तराधिकारीयोंके स्वत्वाधिकारकी सीमा बद्ध है; सम्पत्तिपर उनका जीवनस्वत्व है। जो लोग किसी तरहका राजस्व नहीं देते; उनकी सम्पत्तिके जब्त होनेकी अधिक सम्भावना है। राजस्व अदा न करनेसे जाना जायगा, कि सम्पत्ति बहुत जल्द ही खास कर ली जायगी। सिख-राज्य और अङ्गरेज राजत्वकी साधारण सीमा निर्द्दिष्ट करना भी उन लोगोंके और एक अनिवार्य्य काममें गिना गया। यहां कहीं कहीं उन लोगोंने रणजित्सिंहके दृष्टान्तका अनुसरण किया। उस समय उन लोगोंने प्रतिपन्न करना चाहा,—इस समय किसी प्रधान नगरके, अविक्रृत होते ही उससे सटे हुए पारिपार्श्विक गांव और जनपद समूहमें नया हक होगा, वह सब स्थान स्थानीय शासन-कर्त्ताओंकी राजधानीमें गिना जायगा। अधीनस्थ पुरुष कुछ पतित जमीन दखलकर उसपर खेती करते थे, वह सब जमीन राजाके

दक्षिण प्रदेशस्थ "मालवा" सिखोंके इतिहासमें साधारण पाठकोंके लिये कौतूहलप्रद घटनावलीका असद्भाव हो नहीं सकता; भारतके शासनसम्पर्कमें जो समझना चाहते हैं, उस इतिहासमें उनके लिये भी कितनी ही ज्ञातव्य बातें निहित रह सकती हैं; लेकिन यहां उसकी पुङ्खानुपुङ्ख आलोचना निष्प्रयोजन है। अब अङ्गरेज कर्म्मचारी * ईएक गुरुतर समस्यापूर्ण विषयकी मीमांसामें प्रवृत्त हुए। पहले प्रश्न उठा,—समशक्तिसम्पन्न राघोंमें विवाद उपस्थित होनेपर उस विवादमें साथ देना चाहिये, कि नहीं; दूसरे, प्रादेशिक राजाओं और उनके मित्र राजाओं और अधीनस्थ व्यक्तिवर्ग या सर्दारोंमें आपसके मनोमालिन्यसे विवाद-विसम्वाद संघटित होनेपर अङ्गरेज-गवरमेण्ट कई नीति अवलम्बनकर;—उन सब जगहोंमें उन लोग को बाधा दे या नहीं; इत्यादि विषयकी मीमांसाके लिये अङ्गरेज-गवरमेण्ट मनोयोगी हुई। विभिन्न जातिकी विभिन्नरूप समाजिक रीति-नीतिके साथ हिन्दुओंके उत्तराधिकारित्व विषयक प्रचलित नियमोंका सामञ्जस्यविधान करनेमें उन लोगोंने बहुत परिश्रम किया,—भिन्न भिन्न जातिकी सामाजिक प्रथाके अनुसार उत्तराधिकारत्विके

में दूसरा अवलम्बन किया है। उन्होंने खुद अपनेको 'कोडासिंहिया" मिसिलके अधिनायकके नामसे घोषणा की और निःसन्तान जागीरदारोंपर उत्तराधिकारीके नामसे दावा किया। जो हो, इस समय ब्रिटिश-गवरमेण्ट उन सम्प्रदायके प्रकृत और उपयुक्त अधिनायक-रूपमें खड़ी हुई।

शासन-दण्डके परिचालनकी जरूरत है। सिखोंके राज्यके बारेमें अज्ञता ही भ्रम और मनोदुःखका कारण है। उस बारेमें अङ्गरेजोंकी किसी प्रकारकी अभिज्ञता न रहनेसे अन्तमें उसके लिये वह लोग भ्रममें पड़े थे और वही उनके मनस्तापका कारण हो पड़ा। * सन् १८१८ ई०में सर डेविड अक्टरलोनीने "मारक्वइस आफ हेष्टिंसका" साथ अकपट स्वीकार किया था—भ्रम-विश्वासके वशवर्त्ती होकर ही उन्होंने सन १८०६ ई०का घोषणापत्र प्रचार किया। उन्होंने सोचा था,—उस समय शतद्रु और यमुनाके मध्यवर्त्ती प्रदेशोंमें मात्र कुछ शक्तिशाली सर्दार मौजूद थे; वही उन सब राज्योंके शासनसंरक्षणके लिये दायी हैं, उनपर ही शान्तिरक्षाका दायित्व निर्भर करता है। उन्होंने समझा,—"मिसिल" तयार होनेके समयसे ही उनकी इसमें दोष स्पर्श हुआ था। जब सब सिखोंके विच्छिन्न होनेसे अहमदशाहके समयसे लिहि खिखलोग भोगते आते हैं, उस समय उन लोगोंने वह व्यक्तिगत स्वाधीनता ही ली थी। राजाओंमें परस्पर क्या सम्बन्ध था और वह लोग ब्रिटिश गवर्मेण्टके साथ कैसे सम्बन्धसूत्रमें आबद्ध थे—इन सब विषयोंकी विवेचना करके ही सिखजातिकी अवस्था-विशेषके प्रति वृटिश-गवर्मेण्टने वैसा मनोयोग नहीं किया। † अपनी तरह समपरिमाण

* सन् १८१८ ई०की १७ वीं मईको छिपे हुए पत्रोंमें इसकी बहुत आलोचना हुई है।

† इसे वृटिश-गवर्मेण्टका सौभाग्य कहना चाहिये, कि टमास मनरो, डिवट लार्ड, सर डेविड अक्टरलोनी और ई० ए०

अधिकृत मानी गई। वह लोग अब पूरी तरह नागरिक (मिउ-निसिपल) शासन-नीतिके फैलानेमें प्रवृत्त हुए। इटिश प्रजासे अपहृत सम्पत्ति-समूहके लिये उन लोगोंने क्षति-पूरणका दावा किया। अपराधी लोग आत्म-समर्पणके लिये जिद करने लगे। पहलेकी विचार-पद्धतिके फिर प्रचलित होनेकी व्यवस्था हुई; परस्पर लेनदेनका नियम फैलनेपर भी वह पहली नीति दूर नहीं हुई। ब्रिटिशप्रजाको, हृत-सम्पत्तिके क्षतिपूरण-का दावा करनेके बारेमें और अपराधियोंके आत्मसमर्पणके विष-यमें पहले विचार-व्यवस्थासे जो स्वेच्छाचार-नीति अवलम्बित होती थी, अब उन सब विभागोंमें आदान-प्रदानकी व्यवस्था फैलनेपर भी पहली नीति पूरी तरह दूर नहीं हुई। प्रगल्भ और अविवेचक कर्मचारियोंके यथेच्छ कार्य-कलापसे इस्तत् साम्राज्यकी शासन-नीति और विचार-व्यवस्थाको अनेक समय निन्दाभाजन और असम्बद्ध कहा जाता है,—लोग उनको और पहले ही दोषारोपण करते हैं। उन सब कर्मचारियोंने सोचा, दूसरेकी ओर शक्तिके घटानेसे ही उनके प्रभुका जटिल स्वार्थ सुचारुरूपसे सिद्ध होगा। उनका विश्वास था;—अपने प्रभुके राज्यके मङ्गल-विधानके लिये कोई सुविधा पाते ही उनको अपनी स्वार्थसिद्धिका उपाय प्रशस्त होगा। अपनी अपनी स्वार्थसिद्धिके उद्देश्यसे ही उन लोगोंने सब तरहकी सुविधा ढूंढी। इन सब कार्य्य-कलापके लिये केवल निम्नपदस्थ कर्मचारी ही अपराधी नहीं हैं। भारतीय आम्यन्तरीण शासन-नीतिका पूरीतरह परिवर्तन करना कर्तव्य था। अब सर्व्वसाम्राज्य-मङ्गलक, न्यायसङ्गत और युक्तिपूर्ण विधि-विधान प्रवर्तनकी और

शासन-दण्डके परिचालनकी जरूरत है। सिखोंके राज्यके बारेमें अज्ञता ही भ्रम और मनोदुःखका कारण है। उस बारेमें अङ्गरेजोंकी किसी प्रकारकी अभिज्ञता न रहनेसे अन्तमें उसके लिये वह लोग भ्रममें पड़े थे और वही उनके मनस्तापका कारण हो पड़ा। * सन् १८१८ ई०में सर डेविड अक्टरलोनीने "मारक्विस आफ हेष्टिंसका" साफ अकपट स्वीकार किया था—भ्रम-विश्वासके वशवर्त्ती होकर ही उन्होंने सन १८०८ ई०का घोषणापत्र प्रचार किया। उन्होंने सोचा था,—उस समय शतद्रु और यमुनाके मध्यवर्त्ती प्रदेशोंमें मात्र कुछ शक्तिशाली सर्दार मौजूद थे, वही उन सब राज्योंके शासनसंरक्षणके लिये दायी हैं, उनपर ही शान्तिरक्षाका दायित्व निर्भर करता है। उन्होंने समझा,—"मिसिल" तय्यार होनेके समयसे ही उनकी इनमें दोष स्पर्श हुआ था। बाद सब मिसलोंके विच्छिन्न होनेसे अहमदशाहके समयसे जिन्हें सिखलोग भोगते आते हैं, उस समय उन लोगोंने वह व्यक्तिगत स्वाधीनता ही ली थी। राजाओंमें परस्पर क्या सम्बन्ध था और वह लोग ब्रिटिश गवर्मेण्टके साथ कैसे सम्बन्धसूत्रमें आबद्ध थे—इन सब विषयोंकी विवेचना करके ही सिखजातिकी अवस्था-विशेषके प्रति वृटिश-गवर्मेण्टने वैसा मनोयोग नहीं किया। † अपनी तरह समपरिमाण

---

* सन् १८१८ ई०की १७ वीं मईको छिपे हुए पत्रोंमें इसकी बहुत आलोचना हुई है।

† इसे वृटिश-गवर्मेण्टका सौभाग्य कहना चाहिये, कि क्याम मरे, जिरह लार्ड, सर डेविड अक्टरलोनी और डाक-

असभ्यजाति समूहमें सिखजाति बहुत उन्नति पा रही थी। जब इङ्गलण्डकी विस्तृत विप्राक शक्ति उनका गतिरोध करती,

---

टरट कर्नल वाड जैसे विचक्षण पुरुषगण शतद्रु के दोनो किनारे सिख-राज्यमें बहुत दिनोंतक प्रतिनिधिके रूपमें रहे। वह लोग आपसमें भिन्न-मतावलम्बी होनेपर भी अङ्गरेज राजत्वके मङ्गल-विधानार्थ एक ही उद्देश्यसे अनुप्राणित हो काम करते थे। उन लोगोंने अपने अपने सत्स्वभाव और प्रभुत्वके बलसे स्वदेश-वासियोंका गौरववर्द्धन किया था ;—वैदेशिक सभ्यजातिके शासनमें उन लोगोंने भारतवासियोंकी सहानुभूतिका आकर्षण किया था। इस बारेमें वह लोग बहुत चेष्टित थे, जिससे वैदेशिक शासन-नीतिकी कठोरता आज भी अनुभूत नहीं होती। विजयी अङ्गरेज-वीरपुरुषोंमें सर डेविड अक्टरलनी सबसे श्रेष्ठ थे, उत्तरभारतके लोगोंके हृदयमें वह स्मृति चिर-कालतक वर्तमान रहेगी। जिन नरपतिने इङ्गलण्डकी विप्राक शक्तिकी अधीनता स्वीकार की थी, वह भी सर डेविड अक्टर-लनीको बहुत चाहते थे ; उन्होंने सिपाहियोंके चित्तको भी आकर्षण किया था।

इसके सिवा अधीनस्थ निम्नपदस्थ कर्मचारियोंमें श्रेष्ठ पुरुष खास खास काममें नियुक्त रहते थे, कोई कोई स्थानीय शासन-कार्यमें लगे रहते थे। वह सभी स्वार्थसाधनोद्देश्यमें आपातमधुर और अधिकतर सुविधाजनक काममें ही आसक्त रहते थे। जिसमें स्वार्थसाधन अवश्यम्भावी, साधारणके प्रतिकूल होनेपर भी, उन सब कामोंके सम्पादनमें ही इस लोग

तो वह लोग उन्नतिके पथपर बढ़ते थे। उनकी राजनीतिके सम्बन्धमें परिमिताचार अवलम्बन करनेपर वाध्य हुए; स्वाधीनता

अधिक तत्पर हुआ करते हैं। वह लोग कुछ सुचतुर और न्यायपर शासनकर्त्ता हो सकते हैं; जिन्होंने बहुदर्शन और बहुत ग्रन्थ पढ़कर ज्ञानार्ज्जन किया है, यह सब शासनकर्त्तृगण कभी उनकी समकक्षता पानेमें समर्थ न होते। जो हो, उस समयके सुदक्ष और कार्य्यक्षम कर्म्मचारियोंके भी सामयिक सुयोगका सद्व्यवहार करनेके कारण, उनकी स्वाभाविक प्रतिभाकी कोई उपलब्धि नहीं करते। सुतरां मन्त्रियोंकी अनुपस्थितिके समय श्रेष्ठ राजशक्ति गुरुतर काममें हस्तक्षेप करनेकी अभिलाषी होनेपर उन्हें गवरमेण्टके स्थानीय प्रतिनिधियोंपर ही प्रधानतः निर्भर करना पड़ता था। वस्तुतः, मङ्गलविधानार्थ ही हो, या अनिष्टसाधनोंद्देश्यसे ही हो, सब कर्म्मचारी पक्षपातित्व करते थे, या एकदेशदर्शी होते थे। ग्रन्थकार बहुत थोड़े दिनों काममें नियुक्त थे; उस समय एक विचारसभा या संशोधनकारी मन्त्रिसभा थी। ग्रन्थकारने इसकी कृतज्ञता प्रकाश करनेके लिये अनेक कारणोंका अनुभव किया था। वह लोग कुण्झटिकापूर्ण वायुमण्डलमें सब प्रकारकी कार्य्यप्रणाली पर्य्यवेक्षण कर सकते थे। राजनीति और न्यायपरताकी सर्व्ववादिसङ्गत नीतिके अनुसार सब प्रकारके उद्देशमें ही वह लोग विचार करनेमें सक्षम थे। भारतमें अङ्गरेज-प्राधान्यके साथ उनका क्या सम्बन्ध था, वह लोग उसकी उपलब्धि भी करते थे। भारतमें अङ्गरेजोंका

और यथेच्छाचारके विरुद्धवादी हों, जिससे जनसाधारण साम्य-भाव अवलम्बन करें, वह लोग वैसी ही चेष्टा करने लगे।

प्राधान्य प्रतिष्ठित करनेके लिये कार्य्यावलीकी निर्दयता और एकताविधानकी जरूरत थी। उन लोगोंको सहिष्णुता अव-लम्बनका प्रयोजन था, साधारणके उपयोगी तथा शासननीतिका प्रवर्त्तन करना कर्त्तव्य था। उन लोगोंका इसपर भी दृष्टि रखना कर्त्तव्य था, कि जिससे इन सब शासननीतिकी कठोरता अनुभूत न हो।

षष्ठ परिच्छेद।

रणजित् सिंहकी प्राधान्यप्रतिष्ठासे मुलतान, काश्मीर और पेशावरकी विजय।

सन १८०६—१८२३-२४।

(रणजित् सिंह और अङ्गरेजोंके बीच आपसका अविश्वास धीरे धीरे दूर हुआ;—रणजित् सिंह और गोर्खा लोग,—रणजित् सिंह और काबुलके भूतपूर्व्व सम्राटगण,—रणजित् सिंह और काबुलके वजीर फतेहखाँ;—रणजित् सिंह या शुजा कोई काश्मीरपर अधिकार करनेमे समर्थ नहीं हुए;—फतेहखाँका निधनसाधन;—रणजित् सिंहका मुलतानपर आक्रमण पेशावर लूटना, काश्मीरपर अधिकार और सिन्धुतीरस्थित "डेराजात" प्रदेशोंको राजभुक्त करना,—अफगानोंकी पराजय, पेशावरसे कायदेके अनुसार राजस्वग्रहण,—काबुलके मुहम्मद आजमखाँ और कटोचके संसारचन्द्रकी मृत्यु;—रणजित् सिंहकी अप्रतिहत क्षमता और प्रभुत्व-प्रतिष्ठा,—१८१८—२१ ई॰में शाहशुजा द्वारा भारतपर आक्रमण,—नागपुरके आप्पा साहब,—परिव्राजक मूरक्राफ्ट,—रणजित् सिंहकी शासनप्रणाली, रणजित् सिंहकी त्रुटिविच्युति और सिखोंका पापाचार;—रणजित्

सिंहके अनुग्रहभाजन पुरुषगण और उनके विश्वासी नौकर या कर्म्मचारी लोग।)

इटिश गवरमेण्टने रणजित् सिंहके साथ सन्धि स्थापन की। देशमें शान्ति स्थापित हुई, रणजित् सिंह मित्रता-सूत्रमें आबद्ध हुए। लोगोंके मनमें सहज ही विश्वास बद्धमूल नहीं हुआ; क्रमवर्द्धिष्णु पादपकी तरह विश्वास बहुत धीरे धीरे उत्पन्न होता है। वाचिक वाद-प्रतिवादसे सन्देह और अविश्वास हमेशा दूर नहीं होता। जिस समय महाराजके साथ सन्धिस्थापनका आयोजन चलता था, उस समय अङ्गरेजकर्तृपक्षगण निश्चित रूपसे जान सके, कि महाराजने सिन्धियासे सन्धिका प्रस्ताव उठाया है। * उनकी राजधानी लाहोरमें कई वर्षतक गवालियर, होलकर और अमीरखाँ प्रभृतिके प्रतिनिधिगण प्रकाश्यभावसे आतेजाते रहे। † यह बात सबके ही नयनपथमें पतित हुई। उनके प्रभुओंने बहुत दिनोंतक इस आशासे सुख हो दिन बिताया, कि पञ्जाब और दाक्षिणात्यकी विभिन्न जाति एकतासूत्रमें आबद्ध हो विदेशीय विजेतृ-वृन्दको विताड़ित करनेमें

---

* सन् १८०६ ई०की १८ वीं जूनको रेसिडण्टने सर चेंचिस अक्टरलनीको इस मर्म्मका एक खत भेजा।

† सन् १८०६ ई०की १५ वीं अक्टोबरको सर चेंचिस अक्टरलनीने गवरमेण्टको इस मर्म्मका एक पत्र लिखा। और सन् १८०६ ई०की ५ वीं, ६ ठी और ७ वीं दिसम्बर और सन् १८१० ई०की ५ वीं और ३० वीं जनवरी और २२ वीं अक्टोबरका पत्र देखना चाहिये।

उद्बुद्ध होगी। अङ्गरेज शासनकर्त्ताओं को और भी विश्वास हुआ,—रणजित् सिंह इसलिये सिखोंको उत्तेजित करनेमें चेष्टान्वित हुए थे, कि सरहिन्दके सिख लोग अङ्गरेजोंके अधीनतापाशको छिन्नकर उनका पक्ष अवलम्बन करें, उनका और होलकरका पक्ष अवलम्बनकर आश्रयदाताओंके विरुद्ध अस्त्रधारण करनेके लिये उन्होंने सिखोंको परामर्श दिया। ‡ अन्यान्य खास खास घटनावली भी यहां लिखने योग्य हैं। सर डेविड अक्टरलनी जैसे सुचतुर सेनानायकने भी विचारकर देखा,—ऐसी सङ्कटापन्न अवस्थामें प्रयोजनीय द्रव्यादि सञ्चयकर रखना चाहिये और लुधियानेमें सेनानिवास स्थापनकर बाधा-प्रदानके लिये तय्यार रहना विधेय है। * इधर रणजित्सिंहके मनमें भी वैसा ही अविश्वास और सन्देह उत्पन्न हुआ। लेकिन रणजित्सिंहका अविश्वास हमेशा प्रकाश होता नहीं था; उनके व्यवहारसे भी कुछ मालूम होता नहीं था। तब भी समय समयपर अनिश्चित और हुमानी बातचीतसे उनके मानसिक अविश्वास और सन्देहका भाव प्रकाश हो पड़ता था, कभी कार्य्यप्रणाली और पत्रापत्रके नियमसे उनके अविश्वासकी बात प्रतिपन्न हो सकती थी; उनके कार्य्य-कलाप और आचार-

---

‡ सन् १८१० ई०की ५वीं जनवरीका गवरमेएटके नाम सर डेविड अक्टरलनीका पत्र देखना चाहिये।

* सन् १८०९ ई०की ३१ वीं दिसम्बर और सन् १८१० ई०की ७ वीं सितम्बरको सर डेविड अक्टरलनीने गवरमेएटको इस मर्म्मका पत्र लिखा।

व्यवहारसे भी उसको बहुत कुछ उपलब्धि होती थी, कभी पद-गौरवके कारण उनका वह अविश्वास प्रकाश हो पड़ता था। लेकिन उनकी प्रकाश्य बातचीत और वाद-प्रतिवादसे उनके मानसिक भाव-भङ्गिको कुछ भी उपलब्धि होती नहीं थी। दोनो राज्यमें आपसमें जो सन्देह और अविश्वास उत्पन्न हुआ था, वह धीरे धीरे दूर हुआ। तब रणजित् सिंहने समझा, कि शतद्रु नदी पारकर वह निर्विघ्न अपना राज्य फैलानेमें समर्थ हैं। उन्होंने अङ्गरेजोंको समझाया, कि वह अन्यान्य देशके जीतनेमें व्याप्त रहेंगे; सुतरां दक्षिण प्रदेशके कलह-प्रिय-मित्र राजाओंके कार्य-कलापमें हस्तक्षेपकर वह अङ्गरेजोंको विरत न करेंगे। सन् १८११ ई०में गवरनर जनरल और महाराज, दोनोमें उपहार आदानप्रदान हुआ। † दूसरे वर्ष महाराज-कुमार खड्गसिंहके विवाहोत्सवपर सर डेविड अक्टरलनीने योगदान दे महाराजका आतिथ्य ग्रहण किया। * इस समयसे सिखयुद्धके एक वर्ष पहलेतक सिख-आक्रमणसे अकिञ्चितकर

---

† इसी समय एक गाड़ी लाहोर भेजी गई। सन् १८११ ई०की २५ वीं फरवरीको दिल्लीके रेसिडराटने सर डेविड अक्टर-लनीको और सन् १८११ ई०की १५ वीं नवम्बरको सर डेविड अक्टरलनीने गवरमेराटको जो पत्र लिखा,—उसे ही देखना चाहिये।

* सन् १८११ ई०की १८ वीं जुलाई और १८१० ई०की २३ वीं जनवरीको सर डेविड अक्टरलनीने गवरमेराटको जो पत्र लिखा था,—उसे ही देखना चाहिये।

जनरवसे एकमात्र कार्यनिरत अलस व्यक्तिगणका ही आनन्दवर्द्धन होता था; सरलविश्वासी भयसे अभिभूत होते थे। लेकिन अङ्गरेज राजप्रतिनिधि गवरनर जनरल इससे जरा भी विचलित होते नहीं थे।

मिष्टर मेटकाफ लाहोर छोड़ चले गये। उनके चले जानेपर रणजित् सिंह लुधियानाके सम्मुखवर्त्ती फिलोरके सीमान्त-स्थान और अमृतसरके गोविन्दगढ़ नामक दुर्गको सुदृढ़ और सुरक्षित करनेमें कृतसङ्कल्प हुए; इसे ही उन्होंने प्रधान कर्त्तव्य निर्द्धारण किया। सिखजातिके धर्म्मस्थान उक्त राजधानीपर अधिकार करके ही, रणजित् सिंह उस दुर्गके निर्म्माणमें प्रवृत्त हुए थे। † इसी समय काटोचके संसारचन्दने गोर्खाओंको दमन करनेके लिये रणजित् सिंहसे सहायताकी प्रार्थना की। गोर्खालोग बहुत दिनोंसे काङ्ड़ाका दुर्ग घेरे बैठे थे, इस समय उनका अविच्छिन्न आक्रमण असहनीय हो उठा। राजपूतराजने यमुनासे वितस्ता नदीतक विस्तृत भूखण्डमें आधिपत्य फैलानेका विचार किया था। इस समय गोर्खाओंके आक्रमणसे उनका वह सुख-स्वप्न भङ्ग हुआ। गोर्खाओंको विताड़ित करना ही संसारचन्द्रका प्रधान उद्देश्य हो खड़ा हुआ; इस उद्देश्यसाधनके लिये ही उन्होंने रणजित् सिंहसे सहायता देनेकी प्रार्थनाकी पुरस्कारस्वरूप संसारचन्द्र सिखराजको काङ्ड़ाका दुर्ग प्रदान करनेमें प्रतिश्रुत हुए। लेकिन इसी अवसरमें संसारचन्द्रने एक

---

† मारे-विरचित "रणजित्‌सिंह", ७६ पृष्ठ। (Compare Murray's "Runjeet Singh," p. 76.)

व्यवहारसे भी उसको बहुत कुछ उपलब्धि होती थी; कभी पद-गौरवके कारण उनका वह अविश्वास प्रकाश हो पड़ता था। लेकिन उनकी प्रकाश्य बातचीत और वाद-प्रतिवादसे उनके मानसिक भाव-भङ्गिकी कुछ भी उपलब्धि होती नहीं थी। दोनो राज्यमें आपसमें जो सन्देह और अविश्वास उत्पन्न हुआ था, वह धीरे धीरे दूर हुआ। तब रणजित् सिंहने समझा, कि शतद्रु नदी पारकर वह निर्विघ्न अपना राज्य फैलानेमें समर्थ हैं। उन्होंने अङ्गरेजोंको समझाया, कि वह अफगान देशके जीतनेमें व्याप्त रहेंगे; सुतरां दक्षिण प्रदेशके कलह-प्रिय-सिख राजाओंके कार्य्य-कलापमें हस्तक्षेपकर वह अङ्गरेजोंको खिन्न न करेंगे। सन् १८११ ई०में गवरनर जनरल और महाराज, दोनोमें उपहार आदानप्रदान हुआ। † दूसरे वर्ष महाराज-कुमार खड्गसिंहके विवाहोत्सवपर सर डेविड अक्टरलोनीने योगदान दे महाराजका आतिथ्य ग्रहण किया। * इस समयसे सिखयुद्धके एक वर्ष पहलेतक सिख-आक्रमणके अतिरिक्त

† इसी समय एक गाड़ी लाहोर भेजी गई। सन् १८११ ई०की २५ वीं फरवरीको दिल्लीके रेसिडण्टने सर डेविड अक्टरलोनीको और सन् १८११ ई०की १५ वीं नवम्बरको सर डेविड अक्टरलोनीने गवरमेण्टको जो पत्र लिखा,—उसे ही देखना चाहिये।

* सन् १८११ ई०की १८ वीं जुलाई और १८१२ ई०की २२ वीं जनवरीको सर डेविड अक्टरलोनीने गवरमेण्टको जो पत्र लिखा था,—उसे ही देखना चाहिये।

कुछ विद्रोह दमन किये। लेकिन काङ्ड़ापर अधिकार न पा
लज्जा और घृणाके दारुण वृश्चिक-दंशनसे वह जर्जरीभूत
होने लगे। इसके बाद सर डेविड अक्टरलनीसे उन्होंने एक
प्रस्ताव उठाया,—वह दोनो मिल फौजके साथ सिन्धुनदकी
ओर यात्रा करें; पहाड़ी प्रदेशोंपर और समतल भूमिपर
अधिकारकर वह लोग उसे स्वतन्त्ररूपसे बांट लेंगे जिसपर जो
अधिकार करेगा, वह स्थान उसके ही अधिकारमें रहेगा। *
रणजित् सिंह अङ्गरेजोंकी साम्यनीति और भिन्न-जाति-विषयक
विधि-विधान कुछ भी जानते नहीं थे। उनके मनमें हुआ,
कि वह उच्चाभिलाष अङ्गरेजों द्वारा सीमाबद्ध हुए हैं; उन्होंने
अनिच्छाके साथ उनके उस प्रस्तावपर सम्मति दी। इस
समय कोई न कोई छलकर नेपालके मित्रलोग उनकी ममता
पानेके लिये हृष्टचित्तसे आगे बढ़ेंगे। महाराज रणजित् सिंह
ऐसा विचार, आकुल हुए,—उनके मनमें युगपत् भय-
विस्मयकी घोर विभीषिका उदय होने लगी। उन्होंने प्रचार
किया,—उमरसिंह थप्पाने जिस शर्तका प्रस्ताव किया था,
वह उसी शर्तपर उमरसिंहसे मिलनेको तय्यार हैं। इधर
गवरनर-जनरलने उन्हें उत्तर दे प्रकट किया,—पहाड़ी प्रदेशपर

(सन १८३१ ई०में कप्तान वेडने गवरमेण्टको जो खत लिखा था
उसे ही देखना चाहिये।)

* सन १८०८ ई०की १६वीं और ३०वीं दिसम्बरको स
डेविड अक्टरलनीने गवरमेण्टको एक पत्र लिखा था, उ
देखना चाहिये।

विश्वासघातकताका काम किया। उन्होंने गोर्खाओंको रण जित् सिंहके विरुद्ध अस्त्र-धारण करनेकी उपयोगिता समझा, दुर्गप्रवेशकी आज्ञा दी। नेपाल सेनापतिके प्रतिज्ञापाशमें आबद्ध हो उन्होंने उन्हें दुर्ग देना मञ्जूर किया। शर्त हुई,—उन्हें सपरिवार निर्विघ्न प्रस्थान करनेकी अनुमति प्रदान करनेसे वह नेपाल-सेनापतिके हाथ दुर्ग समर्पण करेंगे। महाराज संसारचन्द्रको सब अभिसन्धि समझ गये। उन्होंने मित्र-पुत्रको बन्दी किया और तरह तरहकी चतुरताके साथ वह काटमाण्डू-सेनापतिको प्रतारित और प्रवञ्चित करने लगे। इसी समय उमरसिंह थप्पाने उनसे प्रस्ताव किया,—दोनों सैन्य मिलकर पर्व्वतवासियोंपर आक्रमण करें और वह काङ्गड़ेके दुर्गपर अधिकार कर लेंगे या लुटे हुए द्रव्योंसे गोर्खाओंके भाग-मात्र दुर्ग उन्हें ही समर्पण किया जायगा। तृप्तिप्रदायक भाव प्रकाशकर महाराजने सहसा दुर्गमें प्रवेश करनेकी अनुमति चाही; लेकिन वह दुर्गपर अधिकार कर बैठे। संसारचन्द्रकी सब आशायें निर्म्मूल हुईं; उमरसिंह प्रतारित हुए। इस तरह प्रतारित हो उमरसिंह अपने ललाटके लिये ठोंक ठोंक विलाप करते करते शनद्र पारकर चले गये। * इनके बाद कार्य्यकुशल नेपाल-सेनापतिने अपनी फौजके पश्चाद्भागमें स्थित

---

* लाले-दिर्शचन स्यालिनसिंह, ६६, ६७ पृष्ठ देखना चाहिये। महाराजने 'नगाण पेज' कहा था—गोर्खा लोग [illegible] [illegible] लिखा [illegible] अभिमानी हैं। [illegible] समझे, कि उनको पासमें [illegible] रक्खा हो लिखा है।

आक्रमण किया है। इसके सिवा उन्होंने और भी सप्रमाण करनेकी चेष्टा की,—अग्रसर होना ही अधिकतर निरापद है। शतद्रु पारकर उसके दूसरे किनारे जानेकी इच्छा प्रकाश किये बिना, अङ्गरेज और किस उपायसे शतद्रुकी ओर बढ़ सकते थे? * फलतः सन् १८१४ ई०में एक युद्ध हुआ। सिखोंके राज्यके बहुत ही नजदीक पहाड़ी-प्रदेशों और समतल क्षेत्रोंमें अङ्गरेजोंका आधिपत्य फैला। गोर्खाओंने काश्मीरपर अधिकार करनेकी आशा छोड़ी; अधिकन्तु वह लोग अपने देश काठमाण्डूके बारेमें विचारविचलित हो उठे। उस समय किसीने रणजित् सिंहसे साहाय्यकी प्रार्थना नहीं की। अङ्गरेज प्रतिनिधियोंने संसारचन्द्रसे मित्रता स्थापनकर गोर्खा और उनके मित्र राजाओंके दमनार्थ उनसे ही अनुरोध किया। इस अविमृष्यकारिता और अवैध साहाय्यकी प्रार्थनाके लिये रणजित् सिंह घोर प्रतिवाद करने लगे। सर डेविड अक्टरलनीने उनसे कहा,—महाराजके प्रभुत्वमें किसी तरहका हस्तक्षेप किया नहीं गया है। उनके प्रति उपेक्षा न दिखाना स्वीकारकर अङ्गरेज-गवरमेण्टने अव्याहति पाई। बहुदर्शी हिन्दुस्तानके दूसरे राज्यके साथ सम्बन्धसूत्रमें सम्बद्ध होनेके लिये किसी तरहकी निष्फल प्रतिज्ञामें आबद्ध नहीं हुए। †

---

* सन् १८१३ ई०की २० वीं दिसम्बरको सर डेविड अक्टरलनीने गवरमेण्टको बराबर जो पत्र भेजा, यहां उसका ही उल्लेख किया गया है।

† सन् १८१४ ई०की १ ली और २० वीं अक्टोबरको गवर-

आक्रमणकारी गोर्खाओंके शास्तिविधानके लिये केवल वह अकेले शतद्रु नदी पार करेंगे, ऐसा नहीं; परन्तु यदि वह सरहिन्दके समतल क्षेत्रपर आक्रमण करेंगे, तो ऐसी अवस्थामें अङ्गरेज लोग उनकी सहायता करेंगे; दोनो राज्यकी सीमानिर्द्देशक शतद्रु नदी प्रकृतपक्षमें अलङ्घनीय है, गवनर जनरलके इस प्रस्तावसे उन्होंने उसका और एक प्रमाण पाया। इस समय रणजित् सिंहने अभीप्सित स्वीकारोक्ति और निश्चयता पाई; सुतरां पहाड़ी प्रदेशोंके निभृत कन्दरके लिये अभियानकी आवश्यकता आन न पड़ी, रणजित् सिंहने इस बारेमें और कोई बातचीत नहीं की। * लेकिन उमर सिंह अपने भाग्यविपर्य्ययसे बहुत दिनो दुःखानलमें दग्ध हुए; अपने दुरादृष्टकी विषज्वाला उनके मनसे सहज ही दूर नहीं हुई। पञ्जाबपर आक्रमण करनेके लिये उन्होंने अङ्गरेज-कर्तृपक्षियोंसे साहाय्यकी प्रार्थना की। उन लोगोंको विविध उपायोंसे उत्तेजितकर अपने दलमें मिलानेके लिये चेष्टान्वित हुए। उन्होंने प्रतिपन्न करनेकी चेष्टा की,—नेपालके साथ सन्धिस्थापनमें सभी देशवासी आपसके मित्रतासूत्रमें आबद्ध हुए हैं, या वह दोनो गवर्मेण्टके शत्रुओंमें गिने गये हैं। इसलिये रणजित् सिंहने अवैधरूपसे अटोचके गोर्खा-अधिकारपर

* सन् १८११ ई०की १२वीं सितम्बरको सर डेविड आक्टर-लोनीने गवरमेण्टको बराबर और सन् १८११ ई०की २२वीं नवम्बर और ४ थी अक्टोबरको सर डेविड आक्टरलोनीके लिये गवरमेण्टने जो पत्र लिखा,—यहां उन्हें ही देखना चाहिये।

स्थिर अनुधावनमें लग गये। फ्रान्स और शाह फारिसके आक्रमणकी आशङ्कासे उनकी राह रोकनेके लिये मिष्टर एलफिनष्टनने काबुलके अमीर शाह शुजासे सन्धि कर ली। इस सन्धिके बाद ही शाह शुजाके भाईने उन्हें सिंहासनसे उतार स्वयं उसपर कब्जा कर लिया। इससे पहले शाह शुजाने उन्हें सिंहासनसे उतारा था। आपने अपने सुचतुर मन्त्री फतेहखांके हाथों कुल राज्यभार सौंप दिया था और वही दक्ष मन्त्री फतेहखां रक्षाका काम चलाया करते थे। उस समय महाराज मुजियाबादमें थे और वहांके सिख-सरदारने उन्हीं दिनो इहलोक त्याग किया था। महाराज चाहते थे, कि मृत सरदारके परिवारवर्ग अलग किये जावें और वह स्वयं उस जगहको अपने कब्जेमें लावें। उसी समय उन्हें खबर मिली, कि शाह शुजा पूर्व आ रहे हैं। शाह शुजाको पक्का विश्वास न होनेपर भी यह आशा थी, कि कोई न कोई सिखराज्य उनकी मदद करेगा। शाहेजमानसे रणजित् सिंहने लाहोर नगर दानस्वरूप पाया था, इस समय वह उनको याद आया। उनके मनमें यह भय हुआ, कि मुट्ठीभर फौजके लिये समग्र पञ्जाब अङ्गरेजोंके हाथ चला जावेगा। इसीलिये आपने इस श्रेष्ठ राज्य-

---

महामान्य राजा सन् १८४६ ई० तक जीवित थे। अन्तिमकालतक वह सर डेविड अक्टरलनी और उनकी "अट्ठारह पाउण्डर" तोप और फौजको विशेष प्रशंसा करते रहे। ऊंचा पहाड़ी दर्रा पारकर वह तोप ले जा उन्होंने राजाको जो साहाय्य दिया था, उस साहाय्यकी भी वह विशेष प्रशंसा किया करते थे।

सतलज के किनारे उत्तर प्रदेशमें रणजित् सिंहका राज्य दृढ़ हुआ सही। लेकिन सन् १८१० ई०के आरम्भमें वह और एक नये विपद्-सागरमें निमग्न हुए। इससे उन्होंने फिर अङ्गरेजोंकी साम्य-नीतिकी आलोचना की;—उनके परामर्शके

मेटकाफने सर डेविड अक्टरलनीको जो पत्र लिखा था, उसमें यह सब बातें लिखी हैं। सन् १८१४ ई०की ११ वीं अक्टोबरको सर डेविड अक्टरलनीका वरावर दिल्लीके रेसिडण्टका पत्र और सन् १८१४ ई०की २६ वीं नवम्बरको सर डेविडने रणजित् सिंहको जो पत्र लिखा था, उसे ही देखना चाहिये।

सन् १८१४ ई०के युद्धमें सर डेविड अक्टरलनी समय समय-पर जय पानेके लिये निराश हुए थे। अन्तत: एकबार उन्होंने प्रकट भी किया था, कि उनकी रायमें, पहाड़ी प्रदेशोंमें जैसा युद्ध हो रहा था, भारतीय सैन्यदलमें सिपाही सैन्य उस पहाड़ी युद्धके लिये विशेष अनुपयोगी है। (सन् १८१४ ई०की १८-वीं दिसम्बरको सर डेविड अक्टरलनीने यह मर्म्म गवर्नमेण्टसे प्रकट किया था।) इन सब युद्धोंमें हिन्दूर (नालागढ़के) राजा रामचरणने अङ्गरेजोंकी विशेष सहायता की थी; उन्हों-ने बड़ी दक्षताके साथ सैन्यपरिचालना की थी। अङ्गरेजोंने उनसे बहुत उपकार पाया था। राजा रामचरण—हरिचन्द्रके वंशधर थे; हरिचन्द्र गुरुगोविन्दके हाथों मारे गये। सिक्ख राज्यके आक्रमणपर उन्होंने विशेष तत्परताके साथ अंगरेजोंकी सहायता की थी और उनका सब आक्रमण करने वालोंको अथवा मतिके रोकनेमें समर्थ हुए थे। वह

स्थिर अनुधावनमें लग गये। फ्रान्स और शाहे फारिसके आक्रमणकी आशङ्कासे उनकी राह रोकनेके लिये मिष्टर एलफिनष्टनने काबुलके अमीर शाह शुजासे सन्धि कर ली। इस सन्धिके बाद ही शाह शुजाके भाईने उन्हें सिंहासनसे उतार स्वयं उसपर कबजा कर लिया। इससे पहले शाह शुजाने उन्हें सिंहासनसे उतारा था। आपने अपने सुचतुर मन्त्री फतेहखांके हाथों कुल राज्यभार सौंप दिया था और वही दक्ष मन्त्री फतेहखां राज्यका काम चलाया करते थे। उस समय महाराज भुजियाबादमें थे और वहांके सिख-सरदारने उन्हीं दिनो इहलोक त्याग किया था। महाराज चाहते थे, कि मृत सरदारकी परिवारवर्ग अलग किये जावें और वह स्वयं उस जगहको अपने कबजेमें लावें। उसी समय उन्हें खबर मिली, कि शाह शुजा पूर्व्व आ रहे हैं। शाह शुजाको पक्का विश्वास न होनेपर भी यह आशा थी, कि कोई न कोई सिखराज्य उनकी मदद करेगा। शाहेजमानसे रणजित् सिंहने लाहोर नगर दानस्वरूप पाया था, इस समय वह उनको याद आया। उनके मनमें यह भय हुआ, कि मुट्ठीभर फौजके लिये समग्र पञ्जाब अङ्गरेजोंके हाथ चला जावेगा। इसीलिये आपने इस श्रेष्ठ राज-

---

महामान्य राजा सन् १८४६ ई०तक जीवित थे। अन्तिमकालतक वह सर डेविड अक्टरलनी और उनकी "अट्ठारह पाउण्ड" तोप और फौजको विशेष प्रशंसा करते रहे। ऊंचा पहाड़ी दर्रा पारकर वह तोप ले जा उन्होंने राजाको जो साहाय्य दिया था, उस साहाय्यकी भी वह विशेष प्रशंसा किया करते थे।

शक्तिके एक प्रतिनिधिको अपने पास रखनेकी चेष्टा की। *
रणजित् सिंह सुलतान और काश्मीरके पुनरुद्धारका वादाकर
उन भूतपूर्व्व अमीरका दिल बहलाने लगे। रणजित् सिंहने
कहा,—कि हिन्दुस्थानकी ओर ज्यादा दूर बढ़नेसे सम्राटको
बहुत कष्ट होगा ; इसलिये उनका कष्ट मिटानेके लिये रणजित्
सिंह स्वयं उनकी अगवानीके लिये आगे बढ़े। † शाहीवालमें
दोनोंकी मुलाकात हुई, किन्तु कोई बात तय नहीं हुई।
उस समय शाहके मनमें यह आशा जागी, कि अन्तमें सन्धि हो
जावेगी। बादको रणजित् सिंहकी अकपटता देख उनके मनमें
अविश्वास उत्पन्न हुआ और वह महाराजपर भरोसाकर नहीं
सके। ‡ उन दोनोंके बीचका सब तरहका सन्धि-बन्धन
विच्छिन्न हुआ ; लेकिन तब भी सन्धिस्थापनकी सम्भावना थी।
लेकिन महाराज उनके आसरे और समय न बिता, लौट आये ;
सम्राटके नामसे वह मुलतान समर्पणके लिये जिद करने लगे।
लेकिन उस स्थानपर अधिकार करना ही उनका प्रकट उद्देश्य
था। उस दुर्गकी प्राचीरके ध्वंसके लिये लाहोरसे रणजित् सिंह

---

* सन् १८०६ ई०की १०वीं और ३०वीं दिसम्बरको सर छे डि
अक्टरलनीने गवर्मेण्टको जो चिट्ठियां लिखी हैं, उनमें यह
बात कही गई है।

† सन् १८०६ ई०को ७वीं, १०वीं, १७वीं और ३०वीं दिसम्बर
और १८१० ई०की ३०वीं जनवरीको गवर्मेण्टने सर डेविड
अक्टरलनीको जो चिट्ठियां लिखी हैं, उन्हें देखना चाहिये।

‡ शाहशुजाका आत्मचरित सातवां अध्याय। (Shah

"जम जम" या "भङ्गी टोपी" नामक प्रसिद्ध तोप ले आये थे। लेकिन उनकी सब चेष्टा—सब उद्यम व्यर्थ हुआ। विफल-मनोरथ हो वह अपरैल महीनेमें वहांसे लौट आये ; उनका सब गर्व्व खर्व्व हुआ, एक लाख ८० हजार रुपये ले वह दुःख और क्षोभसे वहांसे लौट आये। * इस समय गवर्नर-जनरल कलकत्तेमें थे। वहांके शासनकर्त्ता मुजफ्फरखांसे उनकी चिट्ठी-पत्री चलती थी। रणजित् सिंह इससे बहुत डरे। उनके दिलमें आया,—मुजफ्फरखांके अङ्गरेजोंकी वश्यता स्वीकार करनेका प्रस्ताव उठानेपर अङ्गरेज लोग उनका वह प्रस्ताव ग्रहण करेंगे। सुतरां उन्होंने सर डेविड अक्टरलनीसे एक प्रस्ताव उठाया,—उनके "मित्रतासूत्रमें आवद्ध" दोनो शक्तियां एक साथ मुलतानपर आक्रमण करें ; पीछे वह विजित राज्य

Shooja's Autobiography, chap. xxii.) सन् १८३६ ई० की "कलकत्तेकी मासिक-पत्रिका" देखना चाहिये। (Calcutta Monthly Magazine)। शाहका आत्मचरित फिर कभी समाप्त नहीं गया। लेकिन प्रकृत प्रस्तावमें आदिग्रन्थ संशोधित और परिवर्त्तित हुआ था।

* सन् १८१० ई०की २री मार्च और २३वीं मईको सर डेविड अक्टरलनीने गवरमेण्टको जो पत्र लिखा था, उसमें यह बातें लिखी हैं। आखिरी चिट्ठीसे मालूम हुआ—दो लाख ५० हजार रुपये दिये गये थे। कप्तान मरे कहते हैं, कि १ लाख ८० हजार रुपये देनेका प्रस्ताव हुआ था। यहां उनकी ही बात उद्धृत हुई है।

शक्तिके एक प्रतिनिधिको अपने पास रखनेकी चेष्टा की। *
रणजित् सिंह मुलतान और काश्मीरके पुनरुद्धारका वादा कर
उन भूतपूर्व अमीरका दिल बहलाने लगे। रणजित् सिंहने
कहा,—कि हिन्दुस्थानकी ओर ज्यादा दूर बढ़नेसे सम्राटको
बहुत कष्ट होगा; इसलिये उनका कष्ट मिटानेके लिये रणजित्
सिंह स्वयं उनकी अगवानीके लिये आगे बढ़े। † शाहीवालमें
दोनोंकी मुलाकात हुई, किन्तु कोई बात तय नहीं हुई।
उस समय शाहके मनमें यह आशा जागी, कि अन्तमें सन्धि हो
जावेगी। बादको रणजित् सिंहकी अकपटता देख उनके मनमें
अविश्वास उत्पन्न हुआ और वह महाराजपर भरोसाकर नहीं
सके। ‡ उन दोनोंके बीचका सब तरहका सन्धि-बन्धन
विच्छिन्न हुआ; लेकिन तब भी सन्धिस्थापनकी सम्भावना थी।
लेकिन महाराज उनके आसरे और समय न बिता, लौट आये;
सम्राटके नामसे वह मुलतान समर्पणके लिये जिद करने लगे।
लेकिन उस स्थानपर अधिकार करना ही उनका प्रकट उद्देश्य
था। उस दुर्गकी प्राचीरके ध्वंसके लिये लाहौरसे रणजित् सिंह

---

* सन् १८०६ ई०की १०वीं और ३०वीं दिसम्बरको सर डेविड अक्टरलोनीने गवर्नमेण्टको जो चिट्ठियां लिखी हैं, उनमें यह बात कही गई है।

† सन् १८०६ ई०को ७वीं, १०वीं, १७वीं और ३०वीं दिसम्बर और १८१० ई०की ३०वीं जनवरीको गवर्नमेण्टने सर डेविड अक्टरलोनीको जो चिट्ठियां लिखी हैं, उन्हें देखना चाहिये।

‡ शाहशुजाका आत्मचरित नवम अध्याय। (Shah

वजीरके भाई मुहम्मदआजमखां द्वारा विताड़ित हो वह दक्षिणकी ओर भागनेपर बाध्य हुए। इसके बाद उन्होंने मुलतानके शासनकर्त्तासे सहायताकी प्रर्थना की; लेकिन शासनकर्त्ताने उन्हें मुलतानमें आनेसे मना किया। उसीके अनुसार वह कई मील दूर शिविर संस्थापनकर रहने लगे; तब भी मुलतानके शासनकर्त्ताने उनसे सद्व्यवहार नहीं किया। इसके बाद फिर वह उत्तरकी ओर बढ़े। उस समय सब जगह ही महम्मदके असंख्य शत्रु मौजूद थे; इसलिये वह दूसरी बार पेशावरपर अधिकार करनेमें समर्थ हुए। पेशावरके अधिकारके समय दो युद्ध हुए; एकमें वह पराजित हुए, दूसरेमें उन्होंने जय पाई। इसके बाद पेशावर उनके अधीनता-पाशमें दूसरी बार आबद्ध हुआ। लेकिन जिन लोगोंने उन्हें सहायता दी थी, इस समय वह सभी सम्राटकी ओर सन्दिहान होने लगे। उन लोगोंने विचारा,—सम्राट शाह शुजा वजीर फतेहखांके साथ षड़यन्त्रमें प्रवृत्त हुए हैं। या रणजित् सिंहका पदाङ्क अनुसरणकर उन लोगोंने शाह शुजाको कैद करनेकी इच्छा की। सन् १८१२ ई०में अटकके शासनकर्त्ता जहांदादखांने शाह शुजाको कैद किया, पहले कुछ दिनों शाहको अटकके

सर डेविड अक्टरलनीने गवरमेराटको और सन् १८४० ई०को २५वीं सितम्बरको गवरमेराटने सर डेविड अक्टरलनीको पत्र भेजा। उनमें इन बातोंका विस्तृत विवरण देखना चाहिये। मरे-विरचित रणजित् सिंह, ८०, ८१ पृष्ठ देखना चाहिये।
(Compare, Murray's Runjeet Singh, p. 80, 81)

दोनो ओर बराबर बांट लिया जायगा। * तब उन लोगोंके मनमें हुआ, कि रणजित् सिंह अङ्गरेजोंकी तरह अवरोध प्रणाली जानते नहीं हैं। सुतरां उन्होंने अङ्गरेजोंसे अवरोधकारी सैन्य और आग्नेय अस्त्रादिके साहाय्यकी प्रार्थना की। परन्तु नदी दोनो राज्यकी निर्दिष्ट सीमा निर्दिष्ट हुई थी; रणजित् सिंहने इसके ही जाननेकी इच्छा की थी, कि उत्तर ओर भी यह नदी राज्यकी निर्दिष्ट सीमामें गिनी गई है, या नहीं। लेकिन रणजित् सिंह कुछ तिरस्कृत हुए। अङ्गरेजोंने रणजित् सिंहसे कहा,—अङ्गरेज लोग बिना कारण या बिना अपराध कभी किसीपर आक्रमण नहीं करते। लेकिन दूसरी ओर उनको चिट्ठी-पत्रीका मर्म और ही था। इससे रणजित् सिंहको विश्वास हुआ,—मुलतानपर अधिकार करनेके सम्बन्धमें उन्हें कोई बाधा न होगा। †

रणजित् सिंहसे मुलाकात करनेके बाद शाह शुजा अटककी ओर बढ़े। उस समय काश्मीरके राजाके विरुद्ध उनके भाईने आक्रमण किया था। उन विद्रोही भाईकी सहायतार्थ शाह शुजाने सिन्धुनद पार किया। सन् १८१० ई०के मार्च महीनेमें सब पेशावर उनके अधीनतापाशमें आबद्ध हुआ। प्रायः छः महीनेतक यह स्थान उनके अधिकारमें रहा। बाद

---

* सन् १८१० ई०की ३ री जुलाई और १३ वीं [illegible] पत्र। यह पत्र गवर्नमेंटके पास कर्नल [illegible]ने भेजा था।

† सन् १८१० ई०की ८ वीं मार्च और १० वीं [illegible]को

वजीरके भाई मुहम्मदआजमखां द्वारा विताड़ित हो वह दक्षिणकी ओर भागनेपर वाध्य हुए। इसके बाद उन्होंने मुलतानके शासनकर्त्तासे सहायताकी प्रर्थना की; लेकिन शासनकर्त्ताने उन्हें मुलतानमें आनेसे मना किया। उसीके अनुसार वह कई मील दूर शिविर संस्थापनकर रहने लगे; तब भी मुलतानके शासनकर्त्ताने उनसे सद्व्यवहार नहीं किया। इसके बाद फिर वह उत्तरकी ओर बढ़े। उस समय सब जगह ही महम्मदके असंख्य शत्रु मौजूद थे; इसलिये वह दूसरी बार पेशावरपर अधिकार करनेमें समर्थ हुए। पेशावरके अधिकारके समय दो युद्ध हुए; एकमें वह पराजित हुए, दूसरेमें उन्होंने जय पाई। इसके बाद पेशावर उनके अधीनता-पाशमें दूसरी बार आवद्ध हुआ। लेकिन जिन लोगोंने उन्हें सहायता दी थी, इस समय वह सभी सम्राटकी ओर सन्दिहान होने लगे। उन लोगोंने विचारा,—सम्राट शाह शुजा वजीर फतेहखांके साथ षड़यन्त्रमें प्रवृत्त हुए हैं। या रणजित् सिंहका पराङ्क अनुसरणकर उन लोगोंने शाह शुजाको कैद करनेकी इच्छा की। सन् १८१२ ई०में अटकके शासनकर्त्ता जहांदादखांने शाह शुजाको कैद किया, पहले कुछ दिनों शाहको अटकके

सर डेविड अक्टरलनीने गवरमेराटको ओर सन् १८४० ई०को २५वों सितम्बरको गवरमेराटने सर डेविड अक्टरलनीको पत्र भेजा। उनमें इन बातोंका विस्तृत विवरण देखना चाहिये। मरे-विरचित रणजित् सिंह, ८०, ८१ पृष्ठ देखना चाहिये। (Compare, Murray's Runjeet Singh, p. 80, 81.

दुर्गमें रखा, बाद उन्हें उन्होंने काश्मीरके दुर्गमें भेज दिया। वहां शाहने प्रायः एक सालसे ज्यादा दिनों बन्दी अवस्थामें वास किया। *

रणजित्सिंह सुजानपर अधिकार करनेमें असमर्थ हुए। इस अकृतकार्यतासे भग्नमनोरथ हो, रणजित् सिंह और उनके मन्त्री मोहकमचन्द्र प्रान्तभूमिके भिन्न भिन्न कितने ही किले और मुसल्मान सर्दारोंको हस्तगत अधीनताग्रहणमें बाध्य करनेमें

---

* सन् १८१० ई०की १०वीं जनवरी, ८वीं फरवरी, और सन् १८१२ ई०की २७वीं अप्रेलको सर डेविड अक्टरलोनीने गवर्नमेण्टको बराबर जो पत्र भेजा, वहां उसे भी देखना चाहिये। सन् १८३९ ई०की "कलकत्ता मासिक पत्रिकामें" शाह शुजाके आत्मचरितके त्रयोविंश अध्यायसे चतुर्विंश अध्यायतक प्रकाशित हुए हैं; उसमें इस बारेमें अनेक विवरण पाये जाते हैं। (Shah Shoo'a's Autobiography, ch xxiii

व्याप्टत हुए। वह विम्बर, राजवरी और अन्यान्य स्थानोंके पहाड़ी राजाओंको शृङ्खलावद्ध करनेकी चेष्टा करने लगे। सन् १८११ ई०के फरवरी महीनेमें महाराज वितस्ता और सिन्धुनदके मध्यवर्त्ती नमककी खानिमें पहुंचे। शाह महम्मूदके सिन्धुनद पार करनेका समाचार पा रणजित् सिंह सैन्यके साथ रावल-पिण्डीकी ओर गये। उनका उद्देश्य जाननेके लिये वहांसे रणजित् सिंहने एक दूत भेजा। अपना उद्देश्य प्रकट करनेके लिये शाहने पहले ही रणजित् सिंहके पास दूत भेजा था। प्रतिनिधियोंने महाराजसे प्रकट किया,—काश्मीर-राजने शाहके भाई शाह शुजाका पक्ष अवलम्बन किया है; उनकी ही सहा-यतासे शाह शुजा इस समय भी मुलतानके पास अवस्थान करते हैं। काश्मीर-राजको शास्तिप्रदान करना ही शाहका अभिप्रेत था। इसके बाद दोनो ही सम्राट सन्तुष्ट हुए। लाहोर लौटनेके पहले दोनोमें मुलाकात हुई; दोनो वन्धुत्व-सूत्रमें आवद्ध हुए। लाहोरमें लौट महाराज कितने ही छोटे छोटे शासनकर्त्ताओंके राज्यसमूहपर अधिकार करने लगे। जब राज्यमें शासनशक्तिका अभाव था, जब सर्व्वसामञ्जस्यय-ञ्जक राजशक्तिका आधिपत्य देशमें फैला नहीं था, उस समय उन्होंने स्वाधीनता अवलम्बनकर प्रभुत्व स्थापन किया था। इस समय उन सबने ही रणजित् सिंहकी अधीनता स्वीकार की। *

---

* मरे साहब कृत "रणजित् सिंह," ८३ पृष्ठ इत्यादि। (Murray's 'Runjeet Singh,' p. 88 &c.) जिन सब-सर्दारोंका राज्य जबरदस्ती अधिकृत हुआ था, उनने "सिंह पुरिया

युवक महाराजकी अप्रतिहत गतिमें बाधा देनेके लिये और कोई समर्थ नहीं हुआ।

सन् १८११ ई०में अन्धे सम्राट शाह जमानने पञ्जाब छोड़ा। उनके साथ रणजित सिंहकी मुलाकात हुई। कुछ दिनों लाहोरमें रह उन्होंने अपने पुत्र इउनचको लुधियाने भेजा। वहां सर डेविड अक्टरलनीने उनकी विशेष समादरके साथ अभ्यर्थना की। युवराज समझे,—इनकी उपस्थिति और आतिथ्य किसीका भी वाञ्छनीय नहीं है; सुतरां वह लोग रणजित सिंहकी राजधानी छोड़ कुछ दिन मध्य-एशियामें परिभ्रमण करते रहे; कोई उन्हें आश्रय देनेके लिये सम्मत नहीं हुआ।*

या फैजुल्लापुरिया" मिसिलके बुध सिंह सबसे प्रधान थे। सन् १८११ ई०को १५वीं अक्टोबरको सर डेविड अक्टरलनीने गवरमेरटको बराबर जो पत्र भेजा, यहां उसे ही देखना चाहिये।

* मरे साहब कृत "रणजित सिंह," ८७ पृष्ठ। (Murray's Runjeet Singh,' p. 87.) "युवराजकी उपस्थिति रणजित सिंहको बड़ी ही विपज्जनक जान पड़ी थी। प्रायः निश्चय ही उनका अनुसरण करते। सन् १८०६ ई०की सन्धि-शर्तोंके अनुसार शाहने अङ्गरेजोंसे सहायताकी प्रार्थना की थी। जो हो, सहानुभूति और दयानुकम्पाके नियमादि परित्यक्त हुए; इसलिये सभी दुःखित हुए थे।" तब सबने ही सिद्धान्त किया, कि फ्रान्सीसियोंके आक्रमणमें बाधा दे आत्मरक्षा और राज्यरक्षा करनेके लिये ही सन्धि स्थापित हुई थी; एक भाईके विरुद्ध दूसरे भाईको सहायता देनेके लिये वह सन्धि स्थापित हुई नहीं

दूसरे वर्ष भूतपूर्व दोनों सम्राटोंका परिवार लाहोरमें वास करने लगा। महाराज उस समय काश्मीरकी उपत्यकापर अधिकार करनेकी इच्छासे काश्मीरके दक्षिण प्रदेशस्थ पहाड़ी राजाओंको अधीनतापाशमें आबद्ध करनेका आयोजन करने लगे। दूसरेके परित्राणके लिये उनके पक्षके अवलम्बनका भाव प्रकाशकर, वह अपनी सिद्धिकी राह सुगम करनेकी चेष्टा कर रहे थे। स्वराज्यकी भित्ति-भूमि दृढ़ीकरणकी इच्छासे रणजित् सिंहने शाह शुजाकी स्त्रीसे प्रकाश किया,—वह उनके स्वामीको मुक्त कर देंगे; काश्मीरमें शाह शुजाका आधिपत्य फैलेगा। रणजित् सिंहको आशा थी,—इस वीरोचित कामसे विजय-लक्ष्मीके उनकी अङ्कशायिनी होनेपर, वह विपन्न रमणी उनके दुःसाहसिक कामका उपयुक्त पुरस्कार प्रदान करेंगी; रमणीकी कृतज्ञताका निदर्शन स्वरूप वह जगत्‌विख्यात् "कोहेनूर" नामक हीरकखण्ड पावेंगे। लेकिन इसमें किसीको सन्देह न रहा, कि शाह शुजाको कैद करना ही उनका प्रधान उद्देश्य है। पहाड़ी राजाओंपर आक्रमणकर यद्यपि रणजित् सिंहने कुछ सिद्धि पाई। इसी अवसरमें उनके सर्वकनिष्ठ पुत्र खड्गसिंह जम्बूपर अधिकार कर बैठे। तब सन् १८१२

थी। आश्रयहीन शाहजादेको आश्रय देनेके लिये राजभक्त सर डेविड अक्टरलनी तिरस्कृत हुए थे। (सन् १८११ ई०की १८ वीं जनवरीको सर डेविड अक्टरलनीका बराबर गवरमेण्टका पत्र और सन् १८१० ई०के दिसम्बर और सन् १८११ ई०के जनवरी महीनेकी चिट्ठीपत्री देखना चाहिये।)

ई०के अन्तमें उन्होंने सुना,—काबुलके वजीर फतेहखांने सिन्ध नद पार किया है। काश्मीरपर अधिकार करना उनका प्रधान उद्देश्य है। रणजित् सिंहने यह समाचार सुन उनसे मुलाकात की; कहा,—दोनों विद्रोही राजाओंको दमन करनेके लिये वह वजीरको सहायता देंगे। एक विद्रोहीने राजाके भाईको आबद्ध कर रखा था, दूसरे सुलतानके शासनकर्त्ताने महम्मदकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये आपत्ति की थी। उन दोनोंको दमन करना ही उनका प्रधान उद्देश्य ठहरा। फतेहखां खुद भी रणजित् सिंहसे मुलाकात करनेके लिये अधिक उत्सुक हुए थे। वह समझे थे, कि रणजित् सिंहके प्रतिद्वन्द्वी होनेपर काश्मीरपर अधिकार करना उनके लिये असम्भव होगा। सुतरां अपने उद्देश्यसाधनके लिये फतेहखां स्वयं ही किसी प्रतिज्ञामें आबद्ध होनेके लिये राजी थे। स्वार्थसिद्धिको राह सुगम करनेके लिये वह रणजित् सिंहके प्रत्येक प्रस्तावका अनुमोदन करनेके लिये सम्मत थे। महाराज और वजीर दोनो होने आपसमें एक दूसरेको क्रीडा-पुत्तलिकी तरह अपने काबूमें रखनेकी चेष्टा की; लेकिन कोई पूरी सिद्धि पानेमें समर्थ नहीं हुए। सन १८१३ ई०के फरवरी महीनेमें काश्मीर अधिकार

वह जहां चाहें जा सकते हैं; सुतरां सम्राटने सिखसैन्यके साथ मिलना ही अच्छा समझा,—सिख सैन्यके साथ लाहोरमें आ शाह शुजा असलमें कैदियोंकी तरह रहने लगे * लेकिन महाराज पूरी तरह हताश नहीं हुए। उन्होंने जिन सब उपायोंका अवलम्बन किया था, वह सब एकवारगी ही निष्फल हो नहीं गये थे। महम्मदके सैन्यदलके काश्मीरमें वार वार जय पानेपर अटकके राजद्रोही शासनकर्त्ता बहुत भीत हुए थे। सुतरां बहुत सहज ही वह रणजित् सिंहको अटकका दुर्ग समर्पण करनेपर बाध्य हुए। इस अभावनीय अनुष्ठानसे फतेहखां बहुत ही क्रुद्ध हो पड़े। निर्लज्ज प्रतारकके नामसे वह महाराजके प्रति दोषारोप करने लगे। शाह शुजाके साथ गये सन्धिसूत्रमें आवद्ध होनेका भाव प्रकाशकर फतेहखांने महाराजको भय दिखानेकी चेष्टा की। महाराज अपने शक्ति-सामर्थ्यके प्रति दृढ़विश्वासी थे। सन् १८१३ ई०की १३ वीं जुलाईको अटकके पास घोरतर युद्ध हुआ। उस युद्धमें काबुलके वजीर और उनके भाई दोस्तमुहम्मद, मोखमचन्द्र-परिचालित सिख सैन्यसे पूरी तरह पराजित हुए। *

---

* मरे-कृत "रणजित् सिंह," ९२ और ९५ पृष्ठ; सन् १८१३ ई०की ४ थी मार्चको गवर्मेण्टके जवाबमें सर डेविड अक्टरलनीका पत्र; शाह शुजाका आत्मचरित" पञ्चविंश परिच्छेद। (Murray's 'Runjeet Singh,' p. 92, 95; Sir David Ochterlony to Government 4 th March 1813; and Shah 'Shooja's Autobiography' ch. xxv.)

* मरे-कृत "रणजित् सिंह," ९५ पृष्ठ। (Murray's

शाह शुजाको लाहोरमें कैदकर मुगल-सिंहासनका शोभा-सम्बर्द्धनकारी उज्ज्वल रत्न जगद्विख्यात हीरकखण्ड कोहेनूरको अधिकारमें लानेके लिये रणजित् सिंह समधिक उत्सुक हो उठे। तरह तरहके बहानेकर सम्राट पहले उनकी सब दयाकृत बातोंकी कुछ दिनों उपेक्षा करने लगे। यहांतक, कि परिमित परिमाणसे अर्थ देना भी स्वीकार नहीं किया। अन्तमें महाराजने खुद शाहसे मुलाकात की, दोनोमें बन्धुत्वस्थापन हुआ; दोनोने आपसमें शिर झुकाया, रणजित्‌सिंहके हाथमें हीरकखण्ड समर्पित हुआ। सम्राटने अपने ग्रासाच्छादनके लिये पञ्जाबमें एक जागीर पाई; और काबुलके पुनरुद्धारके लिये रणजित् सिंहने शाह शुजाको सहायता करनेके लिये प्रतिश्रुत हुए। *

इसके बाद फतेहखांका कार्य्यकलाप देखनेकी इच्छासे रणजित्‌सिंह सिन्धुनदकी ओर गये। उस समय फतेहखां रण-

---

'Runjeet Singh,' p. 95) सन् १८१३ ई०की पहली जुलाईको गवरमेण्टके जवाबमें सर डेविड अक्टरलनीका पत्र।

* मरे-कृत "रणजित्‌सिंह ९५ पृष्ठ, शाह शुजाका 'आत्म-चरित" पञ्चविंश अध्याय। सन् १८१४ ई०की १८वीं और २२वीं अप्रेलको सर डेविड अक्टरलनीने गवरमेण्टको और सन् १८१५ ई०की २५वीं अक्तोबरको दिल्लीके रेसिडेण्टको पत्र लिखा। हीरा पानेपर रणजित् सिंहने जिन सब उपायोंका अवलम्बन किया, शाहने वह सब वर्णन किया है। [illegible] विवरणको [illegible] पर विवरण जो रणजित सिंहके लिये [illegible] है। [illegible]

मदका प्रभुत्व दृढ़बद्ध करते थे। काश्मीरके अधिकारके लिये
राय स्थिर होनेपर उन्होंने शाह शुजाका पचावलम्बन करनेके
लिये बुलाया। इधर फतेहखां भी विशेष सतर्कताके साथ
कासमें प्रवृत्त हुए थे। धीरे धीरे ज्यादा सुयोगकी उपलब्धि
हुई; सहसा रणजित् सिंह लौटे। साथ ही साथ शाह
शुजाने धीरे धीरे उनका अनुगमन किया। राहमें उनकी
अधिकांश बहुमूल्य सम्पत्ति लुटी थी। लेकिन शाह शुजाका
विश्वास था,—सिख लोग ही इस कामके अपराधी हैं। रण-
जित् सिंहके अधस्तन कर्मचारिगण विशेषरूप विचारक्षम न हो
सके, लेकिन शाहके अपने घरमें ही शत और विश्वासघातकों-
का अभाव नहीं था। पञ्जाबसे जानेके समय शाह शुजाके जिन
उच्चपदस्थ कर्मचारियोंने मिस्टर अलफिन्सटनको परिचालक
और पथप्रदर्शक रूपसे नियुक्त किया था, शाहके दुःसमयमें
उन्हीं कर्मचारियोंने उनकी कितनी ही इच्छित बहुमूल्य स-
म्पत्ति हरण की थी। कोहिनूर और अन्यान्य बहुमूल्य तैजस-
पत्रादि धन-सम्पत्तिके निरापदकी बात, उन्हीं मीर अबुलहसनने
पहले सिखराजसे प्रकट की थी। लाहौरमें रहनेके समय
वही राजाके विरुद्ध षड़यन्त्रमें लिप्त हुए। इससे उन्होंने सम-
झा जाता था,—अफगानके सम्राटने काश्मीरके शासनकर्त्ताके
साथ मिल षड़यन्त्रमें योगदान किया है। उनकी इस विश्वास-

पहले एक लाख रुपयेकी एक जागीर चाही थी; लेकिन
उन्होंने पचास हजारकी एक जागीर पाई। लेकिन उस जागी-
रका उन्होंने पूरा अधिकार नहीं पाया; पूरा अधिकार पानेकी
कोई आशा भी उन्होंने नहीं की।

घातकतासे, सिखराजधानीसे उनके प्रभुके सपरिवार भागनेकी राह कण्टकित हुई। बहुत दिनोंकी चेष्टाके बाद अन्तमें सन् १८१४ ई०के दिसम्बर महीनेमें बेगम लुधियाने भाग गईं। शाह शुजाने समझा था,—उन्हें कैद रखना ही महाराज रण-जित् सिंहका प्रधान लक्ष्य है। उन्हें और भी विश्वास हुआ,—उनके नामसे अपना स्वार्थसाधन ही रणजित् सिंहका एकान्त उद्देश्य है। इसके कई महीने बाद ही शाहने खुद भी भाग पहाड़ी प्रदेशोंमें आश्रय लिया। वहां रणजित् सिंहसे असन्तुष्ट कुछ सिखोंने उनके साथ योगदान किया; काश्मीरपर आक्रमणके समय किस्तवारके शासनकर्त्ताने उनकी सहायता की थी। वह उपत्यकाकी भूमितक बढ़े सही, लेकिन उन्हें शीघ्र ही उस स्थानसे लौटना पड़ा। इसके बाद अकपट और बीर्षा-सापरवश पहाड़ी अनुचरोंके साथ वहां बहुत दिनों रहनेके बाद उन्होंने काबुलकी राहसे शतद्रु पार किया। सन् १८१६ ई०के सितम्बर महीनेमें शाह लुधियाने जा अपने परिवारवालोंसे मिले। * सीमान्त प्रदेशमें उनकी उपस्थितिसे वृटिश गवर-मेण्ट विशेष व्यतिव्यस्त हो पड़ी थी। वृटिश गवरमेण्टने ऐसी इच्छा प्रकाश की, जिससे सहारनपुर और कर्नालमें आनेके लिये उनपर दबाव डाला जाय। सर डेविड अक्टरलोनीको विशेष क्षमता प्रदानकर ब्रिटिश गवरमेण्टने आदेश किया,—सर रण-

---

* सरे लाइन कृत, "रणजित् सिंह," १०२, १०३ पृष्ठ। शाह शुजाका आत्मचरित पञ्चविंश और षड्विंश अध्याय। (Shah Shooja's Autobiography, chaps, xxv, xxvi.)

जित् सिंहसे कहे', कि हिन्दुस्थानकी सीमामें भूतपूर्व्व काबुल सम्राटकी उपस्थिति प्रार्थनीय नहीं है; उनका कार्य्यकलाप गवर्नमेण्टके लिये अशुभजनक जान पड़ता है। अङ्गरेज गवर्नमेण्टके इस आदेशपर भी उनके परिवारके भरणपोषण निर्व्वाहनार्थ पहले जो १८ हजार रुपयोंका बन्दोवस्त था, उनके आनेसे उस रुपयेका परिमाण बढ़ ५० हजार रुपये निर्द्धारित हुआ। उन्होंने स्वयं यथोपयुक्त सम्मान-सम्वर्द्धना और आदर अभ्यर्थना पाई। †

इसतरह शाह शुजा महाराजके हाथसे निकल गये। फिर काश्मीरपर अधिकारके लिये उन्होंने और कईबार चेष्टा की सही, लेकिन शाह शुजाके नामसे और कोई फलोदय नहीं हुआ। लेकिन उस पहाड़ी उपत्यकापर अधिकार करनेके लिये रणजित् सिंह बारबार चेष्टा करने लगे। उस समय उस प्रदेशके शासनकर्ता और अङ्गरेजोंके साथ चिट्ठी-पत्री चल रही

---

† सन् १८१५ ई०की २ री और २० वीं अगस्तको और सन् १८१६ ई०की १४ वीं, २१ वीं और २८ वीं सितम्बरको गवरमेण्टका भेजा सर डेविड अक्टरलनीका पत्र। वाफा बेगमको पहले ही खबर की गई थी, कि अङ्गरेजोंकी सहायता पानेके लिये शाहके परिवारवर्गका कोई स्वत्वाधिकार नहीं है। अङ्गरेज लोग उनके काममें हस्तक्षेप करनेकी इच्छा भी नहीं करते। (सन् १८१२ ई०की १६ वीं दिसम्बरको और सन् १८१३ ई०की १ ली जुलाईको दिल्लीके रेसिडेण्टने गवरमेण्टको जो पत्र लिखा है, वहीं उसे ही देखना चाहिये।)

थी। * पीर-पञ्जालकी पर्वतश्रेणीके दक्षिण भागस्थित शासनकर्त्ताओंके अधीनता-पाशमें आबद्ध होनेपर, सन् १८१४ ई॰के मध्यभागमें सामरिक अस्वस्थताके कारण बहुदर्शी सुचतुर मोहकमचन्द्र राजधानीमें ही रहने लगे। फिर भी, उन्होंने रणजित् सिंहको पहले ही सतर्क कर दिया, बरसात आनेपर जिस विपत्पातकी सम्भावना थी, उस बारेमें उन्हें उपदेश दे उस समय काश्मीरका आक्रमण कुछ दिनोंके लिये स्थगित रखनेको वह मन्त्री बारबार जिद करने लगे। लेकिन पहले ही सब बन्दोबस्त ही स्थिर हुआ था, सुतरां महाराजका सैन्यदल दो भागोंमें विभक्त हो काश्मीरमें प्रविष्ट हुआ। एक दल फौजने आगे बढ़ ऊंची प्राचीर उल्लङ्घन की। उन लोगोंके आक्रमणसे एक दल अफगान-सैन्य विताड़ित हुई। तब सैन्यदलने पूरे उद्यमके साथ "सुपेइन" नामक स्थानपर आक्रमण किया। लेकिन उनकी यह चेष्टा व्यर्थ होनेपर सिख-सैन्य पहाड़ी सङ्कीर्ण राहसे लौट आई। उस समय सिख-सैन्य बहुत दिनोंसे पहाड़ी-उपत्यकाके सीमान्त-प्रदेशमें अवस्थान करती रही। वहांके शासनकर्त्ता मुहम्मद आजमखांने, रणजित् सिंहके प्रधान सैन्यदलपर आक्रमण किया। महाराज वहांसे भागनेपर वाध्य हुए। इसी समय वर्षाका जलप्लावन आरम्भ हुआ; [illegible] उनके सैन्यदलका छत्रभङ्ग होने लगा; मितसिंह पडानिया नामक एक वीर और साहसी सर्दार मारे गये, [illegible]

* सन् १८१४ ई॰की २८ वीं नवम्बर [illegible] गवरमेण्ट-[illegible]

मेके मध्यभागमें रणजित् सिंह राजधानीमें लौट आये। उनकी सैन्यका अधिकांश ध्वंस हुआ; सुतरां साथी और अनुचर-विहीन रणजित् सिंह एक तरहसे अकेले खदेश लौटे। उनका अग्रगामी सैन्यदल निर्व्विघ्न लौट आया; आजमखांने उन लोगोको जानसे नहीं मारा। आजमखांने कहा, कि उस सैन्यदलके अधिनायकके पितामह मोकुमचन्दके प्रति श्रद्धा-परवश होकर ही उन्होंने उन लोगोको क्षमा किया था। प्रकृत पक्षमें प्रभुत्व पानेके लिये उस समय जो विवाद-विसम्वाद चलता था, उसमें योगदानकर स्वार्थसाधनोद्देश्यसे वजीर फतेह-खांके उच्चाभिलाषी भाइ स्वत: परत: चेष्टा करते थे। सुतरां सुख्याति अर्ज्जनकी राह साफ और सुगम करनेके लिये, प्रत्येक सुयोगका सद्व्यवहार करना जो विज्ञताका परिचायक है, उन्होंने उस विषयमें उसका विशेष रूपसे अनुधावन किया था। *

काश्मीरपर आक्रमणके समय विपुल वाहिनी सज्जित करना पड़ी थी; महाराजने यथासाध्य चेष्टा की थी। सुतरां फिर युद्धका साजसज्जा तय्यार करनेके लिये कुछ दिनोंका विश्राम

---

* मारे साहब कृत रणजित् सिंह, १०४ और १०८ पृष्ठ। (Murray's 'Runjeet Singh,' p. 104, 108.) सन् १८१४ ई०की ११वीं अगस्तको सर डेविड अक्टरलोनीने गवरमेण्टको एक पत्र भेजा, यहां उसे हो देखना चाहिये। रणजित् सिंहके लौटनेके कुछ दिनो बाद ही दीवान मुहकमचन्दकी मृत्यु हुई।

सन् १८१६ ई०में महाराजने त्रिभयोल्लाससे अमृतसरसे प्रत्यावर्त्तन किया। *

पञ्जाबके उत्तरस्थित समतल भूमि और पर्व्वतपादप्रदेश-स्थित प्रदेशोंके अधिकांश स्थलमें रणजित् सिंहका आधिपत्य फैला था। उन सब जगहोंमें उन्होंने शासनशृङ्खला स्थापित की थी। इस समय रणजित् सिंहका राज्य दक्षिण और पश्चिम दोनो ओर काबुलके अन्तर्भुक्त या नाममात्र शासनाधीन प्रदेशसमूहमें सीमाबद्ध था। इन सब स्थानोंके अधिकारके लिये महाराजने पहलेसे ही स्थिर किया था। लेकिन उनकी शारीरिक अस्वस्थताके कारण स्वास्थ्यहानि-हेतु एक सालके लिये उनकी कल्पना स्थगित रही। मुलतानपर अधिकार करना ही उनका पहला उद्देश्य था। सन् १८१८ ई०के आरम्भमें जम्नूके गर्व्व-खर्व्वकारी पुत्र खड्गसिंहके सेनापतित्वमें मुलतानपर आक्रमणके लिये उन्होंने एक दल सैन्य भेजी। यहां इसकी आलोचना या इस सम्बन्धमें कोई बात पूछना निष्प्रयोजन है, कि महाराज किस कारण मुलतानपर आक्रमणके लिये उद्बुद्ध हुए थे। उन्होंने समझा था,—अफगानोंकी तरह सिखोंमें भी इच्छामत हरेक देशपर अधिकार करनेकी क्षमता है। अविकन्तु अहमदशाहके वंशधरोंका अधीनता-पाश छिनकर मुलतानके प्रधान अधिकारीने स्वाधीनता अवलम्बन की थी। इसी समय बहुत अर्थका दावा किया गया; लेकिन वह दावा प्रत्याख्यात हुआ।

---

* मरे साहब कृत "रणजित् सिंह," १०८ और १११ पृष्ठ। (Compare Murray's 'Runjeet Singh,' p. 108, 111.)

उसी साल सन् १८१८ ई०में नाममात्र शासनकर्त्ता महम्मदके पुत्र कामरान द्वारा काबुलके वजीर फतेहखां मारे गये। पारिस-सैन्यने उस समय हिरातपर आक्रमण किया था; उन लोगोंको दमन करनेके लिये वह वजीर हिरात गये, उनके भाई दोस्त-मुहम्मद उनके साथ थे। जयसिंह अतिरियावाला नामक एक सिख राजाने भी उनका अनुगमन किया था। उस समय जयसिंहने असन्तुष्ट हो पञ्जाब छोड़ दिया था। फतेहखां कृतकार्य्य हुए; विशिष्ट उपाय-निर्द्धारणके लिये सभी उनकी प्रशंसा करने लगे। उस समय अहमदशाहके वंशधर हिरातमें राजत्व करते थे। फतेहखां हिरातपर अधिकार

(मूरक्राफटका "भ्रमण-वृत्तान्त" प्रथम खण्ड, १०२ पृष्ठा।—Moorcroft, 'Travels', p. 102.) सन् १७७६ ई०में "भङ्गी मिसिल"के सिखोंके विताड़ित होनेपर वर्त्तमान शासनकर्त्ता मुहम्मद मुजफ्फरखाने उसी समयसे मुलतानपर अधिकार किया था। सन् १८०७ ई०में वह तीर्थ देखनेकी इच्छासे मक्का गये; वह दो वर्षोंमें लौट आये सही, लेकिन उन्होंने पुत्र सरफराज खांके हाथमें हो नाम मात्र शासनभार अर्पण किया था। भावलपुर राजपरिचयके विवरणसे मालूम हुआ, कि रण-जित सिंहके आखिरी बार आनेपर वृद्ध-शासनकर्त्ताने, और पठानोंके समयकी तरह, इस बार भी शत्रुके दक्षिण सपरिवार जानेसे इनकार किया। लेकिन कठोर प्रतिरोधके विश्वाससे या हताश्वासवश हो, इस दुर्घटनाका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं। पाया जाता, कि वह इस कामसें प्रवृत्त हुए थे या नहीं।

करनेके लिये उत्सुक हुए। दोस्त-मुहम्मद और उनके [illegible]
बन्धु वहाँसे उन युवक शासनकर्त्ताको विताड़ित और राज्यच्युत
करनेके लिये नियुक्त हुए। दोस्त-मुहम्मदने कुछ नृशंसता
साथ अपना उद्देश्यसाधन किया, राजवंशीय रमणी
अङ्गसे रत्न उन्मोचनके समय सिपाहियोंकी धृष्टतासे रमणी
का अङ्ग स्पृष्ट हुआ। भगिनीके प्रति ऐसे अपमानसे कामरानके
अपने वंशके पुराने दुश्मनके हाथसे मुक्ति पानेके लिये यह
एक कारण पाया। पहले फतेहखांकी दोनो आंखें निकाली
गईं; बाद वह मारे गये। वस्तुतः इस पापाचरणसे अहमद
शाहके उत्तराधिकारियोंने फिर हिरात पाया सही, लेकिन
कुछ दिनोंके बाद ही वह लोग राज्यच्युत हुए थे। इस समय वह
लोग सम्भवतः और सब राज्योंका अधिकार पानेसे वञ्चित
रहे। काश्मीरके शासनका भार अपने भाइयोंमें जब्बार खांके हाथ
सौंप महम्मद आजम खां काश्मीरसे चले गये। पहले उन्होंने
शाह शुजाको ही फिर सिंहासनपर प्रतिष्ठित करनेकी इच्छा की,
लेकिन अन्तमें उन्होंने शाह अयूबको ही सम्राटके नामसे
घोषणा की और कई महीनेमें वह पेशावर, गजनी, काबुल और
कन्धारके अधिपति हुए। यह रणजित सिंहका

पथपर अधिकार करना ही या उसका सर्व्वेसर्व्वा होना ही—उनका उद्देश्य था। अटकके पहले मितरान, जहांदारखां वहां नियुक्त हुए; पेशावर उनके अधीन रहा; काबुलसे पेशावरकी रक्षाका भार उनपर अर्पित हुआ। फिर रणजित् सिंहके लौटनेके कुछ दिनों बाद ही वारकजई शासनकर्त्ता यारमहम्मदखां लौट आये; लेकिन हीनबल जहांदारखांने पेशावरकी रक्षाके लिये कोई चेष्टा नहीं की। *

इस समय काश्मीरकी ओर रणजित्‌सिंहकी दृष्टि सञ्चालित हुई। काश्मीरपर अधिकारके लिये वह आयोजन करने लगे। उसी समय मुहम्मद अजन खांके कुछ शिक्षित फौज ले प्रस्थान करनेसे वहांका सैन्यबल बहुत कुछ घट गया। लेकिन पेशा-

---

* मरे-विरचित "रणजित् सिंह" ११७ और १२० पृष्ठ। (Compare 'Murry's 'Runjeet Singh', p. 117, 120), शाह शुजाका आत्मचरित सप्तविंश अध्याय। ('Shah Shoojas' 'Autobiography' chap. xxvii.।) मुंशी मोहनलाल लिखित दोस्त मुहम्मदकी जीवनी, प्रथम खण्ड, ९९, १०४ पृष्ठ। ('Moonshee Mohan Lal's Life of 'Dost Mahomed', p. 99, 104.)

कप्तान मरे (p. 131) कहते हैं, ख्यातारी सम्प्रदायके जयसिंहने सन् १८२२ ई०में पक्ष परित्याग किया। लेकिन पहले दूसरे समयके निरूपणके समर्थनार्थ मिष्टर मेसनके भ्रमण-वृत्तान्तकी आलोचना करना चाहिये। (Compare Mr. Masson 'Travels', iii, 21, 32.)

सिंह सुजुधिया और संसारचन्द्रके कार्य्यकलापसे आत्म-रक्षाद व्याप्त रहनेपर रणजित् सिंहने दूसरे राजाके विरुद्ध अस्त्रधारन करना परित्याग किया। महाराजके प्राप्य राजस्वके लिये यह दोनो शासनकर्त्ता पहाड़ी प्रदेशोंके युद्धमें नियुक्त थे। शतद्रु के दोनो किनारे ही काबुलके राजाका राज्य था; साहसिकताके साथ उन्होंने रणजित् सिंहको राजस्व देनेसे इनकार किया। गोर्खाओंके वन्दुके पहले कामका प्रतिशोध लेनेके लिये यह सुयोग पा संसारचन्द्र वहुत आनन्दित हुए। सिन्धुनद अति-क्रान्त हुआ; लेकिन अङ्गरेज-शासनकर्त्ता लोग भी सदा तय्यार थे। विपक्ष सैन्यके सामने हो यादुजलसे उनके गतिरोधके लिये एकदल सैन्य सदा ही सज्जित रहती थी। रणजित् सिंहने बहुत जल्द फौजके प्रत्यागमनकी आज्ञा प्रचार की और सर्दार देशा-सिंहने खुद अङ्गरेज राज-प्रतिनिधिके पास उपस्थित हो अपनी दुष्क्रियाके लिये क्षमा की प्रार्थना की, यह भी उनका आदेश था। * इन सब भीतिशङ्कक घटनाओंकी समाप्तिपर महाराज विपुल वाहिनीके साथ काश्मीरपर आक्रमणके लिये गये। इसी समय कुछ फौज काबुलपर अधिकारस्थ अवस्थान कर रही थी,

---

* मरे विरचित "रणजित्सिंह", १२१ और १२२ पृष्ठ और मूरक्राफ्टका भ्रमणवृत्तान्त, प्रथम खण्ड, ११० पृष्ठ। (Compare Murray's 'Runjeet Singh, p, 121, 122, and Moor-croft, 'Travels', p, 210.) देशासिंहने, महाराजका मनोमा-लिन्य किसने किया था, उसके भी निरूपणार्थ चेष्टा कर देखना चाहिये।

इसी समय काबुलसे और एक दल अतिरिक्त सैन्यके आकर उससे मिल जानेपर उनकी संख्या बहुत बढ़ गई। दीवानचन्द्र नामक जिन ब्राह्मण सन्तानने मुलतानमें बहुत दक्षताके साथ सैन्याध्यक्षका काम किया था, वही अग्रवर्त्ती सैन्यदलके अधिनायकके पदपर वरित हुए; युवराज खड्गसिंहने एक दल रक्षा-सैन्य-व्यूहका सेनापतित्व पाया और स्वयं रणजित् सिंह एक दल "रिजर्व" फौज ले सब प्रकारके युद्धकी सामग्रीके सरवराहके उद्देश्यसे उनके पीछे रहे। अश्वारोही सिखसैन्यकी कुछ उत्कृष्ट सैन्य पैदल सैन्यके साथ पर्व्वतपर पैदल चलने लगी, उन लोगोंने कुछ हलकी तोप भी साथ ली थीं। सन् १८१९ ई०में सब्कोर्गी पहाड़ी पथ अतिक्रान्त हुआ, लेकिन उस समय सबने ही देखा, कि जबरखां उनके सामने युद्धसज्जासे प्रस्तुत है। पहले अफगानोंने आक्रमणकारियोंको विताड़ितकर दो तोपें छीन लीं, लेकिन वह लोग और अधिक कृतकार्य्य हो नहीं सके। पुनर्म्मिलित सिखोंने फिर आक्रमणकर एक तरहसे विनारक्तपातके युद्धमें जय पाई। *

काश्मीरपर अधिकारके कई महीने बाद रणजित् सिंह खुद पञ्जाबके दक्षिण-प्रदेशमें गये और काबुलका अन्यतम उपनिवेश सिन्धु-तीरवर्त्ती डेरागाजीखां विजयोन्मत्त सिखों द्वारा आक्रान्त हुआ। सिन्धु और चन्द्रभागाके सङ्गम-स्थलमें रणजित् सिंहके राज्यके अधीन भावलपुरके राणाका कुछ

---

* मेरे विरचित 'रणजित्‌सिंह', १२२—१२४ पृष्ठ। (Compare Murray's 'Runjeet Singh', p. 122—124)

किया। सिन्धुनदके दक्षिण किनारेवाले सब देश और उसके अन्तर्गत डेराईस्माइलखां उनके अधीन रहा, लेकिन लाहोरके जागीरदार-स्वरूप वह उसे भोग दखल किये रहे। *

फतेहखांकी मृत्युके बाद उनके भाई मुहम्मद आजमखांने भाईकी पूरी क्षमता पाई। सिन्धुनदके पश्चिम किनारे रणजित् सिंहको सीमाबद्ध करनेकी इच्छासे, वह सन् १८२२ ई०में पेशावरकी ओर गये। अटकके सम्मुखवर्ती खैराबादपर आक्रमण करना ही उनका पहला उद्देश्य था। आश्रय-विहीन सिख-शासनकर्त्ता जयसिंह उनके साथ थे। लेकिन अन्यान्य कारणवश वह शीघ्र ही लौट आनेपर बाध्य हुए। उनकी कार्यप्रणाली देख महाराज पश्चिम ओर आये; उन्होंने वहांसे पेशावरके शासनकर्त्ता यारमहम्मदखांके पास दूत भेज राजस्वका दावा किया। † वह शासनकर्त्ता रणजित् सिंहसे जितना डरते थे, भाई मुहम्मद आजम खांके षड़यन्त्रसे भी उतना ही डरते थे, सुतरां उन्होंने बहुमूल्य घोड़ा देनेका प्रस्ताव किया। महाराज उससे ही सन्तुष्ट हो वहांसे कौशलके साथ लौट आये। इसी समय शतद्रुके दक्षिणतीरवर्ती ओहादनी नामक स्थानपर अधिकारके

---

* मरे-विरचित "रणजित् सिंह", १२६ और १३० पृष्ठ और सर ए० बारनस कृत "काबुल"का ६२ पृष्ठ। (Compare Murray's 'Runjeet Singh' p. 129, 130 and Sir A. Burn-'s 'Caubul' p. 92.)

† मरे-विरचित "रणजित् सिंह", १३४—१३७ पृष्ठ। (Compare Murray's 'Runjeet Singh', p. 134—137.)

यारमहम्मदखांने जो घोड़े उपहारस्वरूप रणजित् सिंह-को प्रदान किये थे, मुहम्मद-आजम खांने उसका अनुमोदन नहीं किया। सुतरां सन् १८२३ ई०के जनवरी महीनेमें वह फिर पेशावर गये। यारमहम्मद भाईके साथ युद्ध न कर यूसुफ-जइयोंके पहाड़ी राज्यमें भाग गये, वह प्रदेश बहुवंशकी एक शाखाके हस्तच्युत हुआ। लेकिन सिखोंके प्रधान अध्यक्ष इस समय नजदीक ही अवस्थान कर रहे थे। वह उस समय अपनी क्षमताके श्रेष्ठत्व-प्रतिपादनके लिये प्रतसंकल्प हुए। १३वीं मार्चको उन लोगोंने सिन्धुनद पार किया, इसीयुध

है; सन् १८२२ ई०की फरवरीसे सितम्बरतक दिल्लीमें रेसिडराटके पास कप्तान मरे और कप्तान रसने जो सब पत्र लिखे थे, उनमें विस्तृत विवरण मिलता है। सन् १८२१ ई०की ७वीं नवम्बरको सर डेविड अक्टरलनीने कप्तान रसको जो पत्र भेजा और उसी ईस्वीकी २२वीं जूनको गवरनर-जनरलके दिल्लीके प्रतिनिधिने कप्तान मरेके पास और सन् १८२२ ई०की २३वीं अगस्तको गवरमेराटके पास जो पत्रादि भेजे,—उनसे अन्यान्य आवश्यकीय समाचार मिलते हैं। सन् १८२२ ई०की २५वीं अप्रेल, १३वीं जुलाई और १८वीं अक्टोबरको गवरनर-जनरलके प्रतिनिधिके पास गवरमेराटके पत्रादिसे भी बहुत विवरण मालूम होता है। कप्तान मरे कहते हैं, कि इसी अवसरमें अकाली फूलासिंह रणजित्सिंहने ही जोहदानी अधिकारका प्रस्ताव किया था। उनने दलकी दश हजार सैन्यको सैन्यदलभुक्त करनेके लिये उन्होंने रणजित् सिंहसे अनुरोध किया था।

नदीके दूसरे किनारे तोपें ले गये। सिन्धुनदके तीरवर्ती "खटक लोगोंका राज्य अधिकृत हुआ; आकोरा नामक स्थानमें महाराजने आश्रयविहीन ग्रयसिंह अतरियावालेको सादर बुला उनका सब दोष मार्ज्जन किया। मुसलमानोंने धर्म-युद्ध या "जेहादकी" घोषणा की; "खुट्टक" जाति और "यूसुफजई" सम्प्रदायकी प्रायः बीस हजार फौज धर्मयाजक और धर्म्मोन्मत्त पुरुषोंके बुलानेसे धर्म्मरक्षार्थं अविश्वासी विधर्म्मियोंके साथ युद्ध करनेके लिये इकट्ठा हुई। यह विशाल सैन्य नौशेरासे कुछ दूर पहाडी प्रदेशमें और इसकी चारोओर विभिन्न दलमें विभक्त हो रहने लगी। लेकिन काबुलकी नदीके पश्चिम उन लोगोंने शिविर स्थापन किया। एक ओर मुहम्मद-आजमखांने उस नदीके दक्षिण किनारे ऊंचे स्थानमें सेनानिवास स्थापन किया। स्वाधीन सामरिक सैन्यदलपर उनका जो प्रभुत्व था, उसपर वह विश्वास कर न सके; अपने भाईके सततासे प्रति भी वह सन्दिहान हुए। वजीरकी प्रतिरोध करनेकी इच्छासे रणजित सिंहने एक दल सैन्य भेजी; उस सैन्य दलने सशस्त्र लपकों र आक्रमण करनेके लिये नदी पार किया। अकाली सम्प्रदायके सिख लोग चकितकी तरह मुसलमान गाजियोंपर भीमवेगसे आक्रमण करने लगे। इस युद्धमें अमृतसरके धर्म्मोन्मत्त मोड़-गणके दुर्लंघ परिचालक फूलासिंह मारे गये; विपक्ष सैन्य सुविधा लायक स्थानमें अवस्थिति करती थी, सुतरां फूला-सिंहके सिपाही उस पैदल सैन्यसागरके विरुद्ध किसी न्यायी निदर्शनकी रक्षा कर नहीं सके। इसके बाद अफगान-फौजने उत्तेजित हो आगे बढ़ना आरम्भ किया; इससे लाहोरके ग्राम-

नकर्त्ताकी शिक्षित सैन्यदलमें विशृङ्खला उपस्थित हुई। जो हो, समवेत सैन्यके अग्निवर्षणसे और नदीके विपरीत तीरस्थ सुसज्जित सैन्यकी दृढ़तासे, उन लोगोंकी गति प्रतिहत हुई और अन्तमें रणजित् सिंहके यत्न और परिश्रमसे यह बाधा-प्रदान, जयलाभसे समाहित हुआ। साहसी और धर्मप्राण पर्व्वतवासी लोग इस पराजयके बाद फिर इकट्ठे हुए; "पीर-जादह" मुहम्मद अकबरके अधिनायकत्वमें, उन लोगोंने दूसरे दिन युद्ध करनेकी इच्छा प्रकाश की। लेकिन काबुलके वजीर उस समय बड़े कष्टसे भागे थे, सुतरां और किसीने उन लोगों-को उत्साह और सहायता नहीं दी। फौजने पेशावर ध्वंसकर डाला, लेकिन लोगोंके शत्रुभावके कारण उस विजित प्रदेशको शासनाधीन रखना मुश्किल हो गया। यारमहम्मदखांके वश्यतास्वीकारके प्रस्तावसे विचक्षण महाराज सम्मत हुए। बहुत थोड़े दिन बाद मुहम्मद-आजमखांकी मृत्यु हुई; उन-के साथ ही साथ पेशावर, काबुल और कन्धार प्रभृति तीनों राजधानियोंके तीनों भाइयोंके सैन्यदलकी एकता भी नष्ट हुई। शाह महम्मूद और उनके पुत्र कामरान हिरातमें शासन-कार्य्यकी परिचालना करते रहे। दूसरी ओर शाह आयूब अफगानस्थानके नाम मात्र सम्राटके नामसे विघोषित हुए थे; वह भी अपनी राजधानीमें अवस्थान करते थे सही, लेकिन उनकी कोई क्षमता न रही। *

---

* मेरे-विरचित "रणजित् सिंह", १६७ पृष्ठ इत्यादि; म्रक्र-फटका भ्रमण-वृत्तान्त, द्वितीय खण्ड ३३२, ३३४ पृष्ठ; और

सन् १८१३ ई०के आखीरमें रणजित् सिंह, अधिकृत विशाल राज्यकी दक्षिण-पश्चिम ओर गये। वहां विद्रोही मुसलमान

मेसनका भ्रमणवृत्तान्त, द्वितीय खण्ड ५८—६० पृष्ठ। (Compare 'Murray's Runjeet Singh' p. 137 &c.; Moorcroft's 'Travels' ii 333, 334, and Masson's Journeys iii. 58-60. रणजित् सिंहने कप्तान वेडसे कहा था, कि उनके शिक्षित सैन्यमें एकमात्र गोर्खा ही मुसलमान-आक्रमणमें अटल थे। सन् १८३९ ई०को ३री अप्रेलको कप्तान वेडने दिल्लीके रेसिडण्टके पास जो पत्र भेजा, उसे ही देखना चाहिये।—(Compare Wade to Resident at Delhi, 3rd April, 1839

पूर्ववर्णित नोटमें जिन धर्म्मोन्मत्त फूलासिंहकी बात कही गई है, उनका पहले ही दुर्नाम था। सन् १८०९ ई०में उन्होंने सर चार्लस मेटकाफके शिविरपर आक्रमण किया था। उस समय अङ्गरेज कर्म्मचारियोंका एकदल शतद्रुके दक्षिणवाले सब राज्योंमें जरीप करनेमें प्रवृत्त हुए। सन् १८१४—१५ ई०में उवहारमें उन्होंने एक दुर्ग बनवाया यह स्थान,—फोरोजपुर और भटनियारके बीचमें अवस्थित है। बहुतदिनोंसे यह स्थान अङ्गरेजोंके राज्यभुक्त जान पड़ता है। सन् १८२३ ई०को १५वीं मईको कप्तान मरेने दिल्लीके प्रतिनिधिके पास जो पत्र भेजा, उसे भी देखना चाहिये, (Capt, Murray to Agent Delhi, 15th May, 1823.) सन् १८३० ई में उन्होंने मिष्टर मेटकाफसे कहा, कि वह रणजित् सिंहके प्रति विशेष नाराज हुए हैं और सम्भव [illegible] अङ्गरेजोंके साथ योगदान करनेके लिये तय्यार

जागीरदारोंको हीनवल करना और हिन्दुदेशके सीमान्तवर्त्ती स्थानोमें अपनी क्षमता वद्धमूल करना ही, उनका उद्देश्य था। लेकिन इससे पहले ही वह वहांके प्रदेशके अमीरोंसे राजस्व लेनेकी चेष्टा करते थे। * उन्होंने शिकारपुरको तालपुरवंशके अधिकृत राज्यके नामसे स्वीकार करनेका वहाना किया ; लेकिन तब भी महाराज उद्देश्य स्थिर कर नहीं सके। सुतरां वह राजधानीमें लौट आये ; उनके आनेके साथ ही साथ संसारचन्द्रकी मृत्युकी वात उनसे प्रकट की गई। एक

हैं। उन्हें यह आज्ञा मिली थी, कि मूरक्राफट जहां इच्छा करें, वहां ही वह तोप औरतलवार ले जा सक। भ्रमणवृत्तान्त प्रथम खण्ड ६२० पृष्ठ। ('Travels' 1, 110)

दोस्त मुहम्मद खांके सम्बन्धमें सभी जानतेहैं, कि मिष्टर मेसन ('Journey's iii. 59, 60.) और मुंशीमोहनलाल ('Life of Dost Mohomed,' 127, 128.) दोनोंने ही प्रमाणित किया है, कि इस अवसरपर दोस्त मुहम्मद खांने घोर विद्रोहताचरण किया था। अङ्गरेज प्रतिनिधिगण और लोग पीछे इस घटनासे विस्मृत हुए थे। सिख और अफगान जाति असलमें शत्रुओंमें गिनी गई थी। तब वह लोग अवसरपर दैव-घटनासमूहसे जिसकी स्वार्थसिद्धिकी सम्भावना देखते, उसीके साधनके लिये इकट्ठे होनेपर तयार होते थे।

* Captain Murray to Governor-General's Agentr at Delhi, 15th Dec. 1825 and Capt Wade to the same, 7th. Aug. 1823.

सन् १८१२ ई०के आखीरमें रणजित् सिंह, अधिकृत विशाल राज्यकी दक्षिण-पश्चिम ओर गये। वहां विद्रोही मुसलमान

मेसनका भ्रमणवृत्तान्त, द्वितीय खण्ड ५८—६० पृष्ठ। (Compare 'Murray's Runjeet Singh' p. 137 &c., Moorcroft's 'Travels' ii 333, 334, and Masson's 'Journeys' iii. 58-60. रणजित् सिंहने कप्तान वेडसे कहा था, कि उनकी शिक्षित सैन्यमें एकमात्र गोर्खा ही मुसलमान-आक्रमणमें अटल थे। सन् १८३९ ई०की ३री अप्रेलको कप्तान वेडने दिल्लीके रेसिडण्टके पास जो पत्र भेजा, उसे ही देखना चाहिये।—(Compare Wade to Resident at Delhi, 3rd April, 1839

पूर्ववर्णित नोटमें जिन धर्मोन्मत्त फूलासिंहकी बात कही गई है, उनका पहले ही दुर्नाम था। सन् १८०९ ई०में उन्होंने सर चार्लस मेटकाफके शिविरपर आक्रमण किया था। उस समय अङ्गरेज कर्मचारियोंका एकदल शतद्रुके दक्षिणवाले सब राज्योंमें जरीप करनेमें प्रवृत्त हुए। सन् १८१४—१५ ई०में उवहारमें उन्होंने एक दुर्ग बनवाया। यह स्थान,—फीरोजपुर और भटनियारके बीच अवस्थित है। बहुत दिनोंसे यह स्थान अङ्गरेजोंके राज्यभुक्त जान पड़ता है। सन् १८२३ ई०की १५वीं मईको कप्तान मरेने दिल्लीके प्रतिनिधिके पास जो पत्र भेजा, उसे ही देखना चाहिये, (Capt, Murray to Agent Delhi, 15th May; 1823.) सन् १८३० ई० में उन्होंने मिस्टर मूरक्रफ्टसे कहा, कि वह रणजित् सिंहके प्रति विशेष असन्तुष्ट हुए हैं और समय मिलते अङ्गरेजोंके साथ योगदान करनेके लिये तैयार

जागीरदारोंको हीनबल करना और सिन्धुदेशके सीमान्तवर्ती स्थानोंमें अपनी क्षमता बद्धमूल करना ही, उनका उद्देश्य था। लेकिन इससे पहले ही वह वहांके प्रदेशके अमीरोंसे राजस्व लेनेकी चेष्टा करते थे। * उन्होंने शिकारपुरको तालपुरवंशके अधिकृत राज्यके नामसे स्वीकार करनेका बहाना किया ; लेकिन तब भी महाराज उद्देश्य स्थिर कर नहीं सके। सुतरां वह राजधानीमें लौट आये ; उनके आनेके साथ ही साथ संसारचन्द्रकी मृत्यु की बात उनसे प्रकट की गई। एक

हैं। उन्हें यह आज्ञा मिली थी, कि मूरक्राफट जहां इच्छा करें, वहां ही वह तोप और तलवार ले जा सकें। भ्रमणवृत्तान्त प्रथम खण्ड १२० पृष्ठ। ('Travels' 1, 110)

दोस्त मुहम्मद खांके सम्बन्धमें सभी जानते हैं, कि मिष्टर मेसन ('Journey's III. 59, 60.) और मुंशीमोहनलाल ('Life of Dost Mohomed,' 127, 128.) दोनोंने ही प्रमाणित किया है, कि इस अवसरपर दोस्त मुहम्मद खांने घोर विद्रोहिताचरण किया था। अङ्गरेज प्रतिनिधिगण और लोग पीछे इस घटनासे विस्मृत हुए थे। सिख और अफगान जाति असलमें शत्रुओंमें गिनी गई थी। तब वह लोग सम्भवपर दैव-घटना-समूहसे जिसकी स्वार्थसिद्धिकी सम्भावना देखते, उसीके शासनके लिये इकट्ठे होनेपर तय्यार होते थे।

* Captain Murray to Governor-General's Agentr at Delhi, 15th Dec. 1825 and Capt Wade to the same, 7th Aug. 1828.

समय उन शासनकर्त्ताने महाराजकी अपेक्षा अच्छी समझ पाई थी। इस समय वह संसारचन्द्रके पुत्रको ही पितृस्थलाभिषिक्तके नामसे स्वीकार करनेके लिये सम्मत हुए। युवराज खड्गसिंहने कटोचके मित्र राजाके उत्तराधिकारीके साथ बन्धुत्वका निदर्शन स्वरूप शिरस्त्राण विनिमय किया। †

इसी अवसरमें काश्मीर, मुलतान और पेशावर प्रभृति तीनों मुसलमान-अधिकृत प्रदेशोंपर अधिकारकर रणजित् सिंह वहां शासनदण्डकी परिचालना करने लगे। पहाड़ी प्रदेश या समतलक्षेत्र,—पञ्जाबमें सब जगह ही रणजित् सिंहका आधिपत्य फैला। राज्योंमें अधिकांशपर उन्होंने बाहुबलसे अधिकार किया था। लदाख और सिन्धुदेशके अधिकारके लिये उन्होंने जो कल्पना स्थिर की थी, उसकी कार्य्यप्रणालीसे वह अवश्य ही जाना जाता है। दूसरी घटनावलीके वर्णन अपदेशसे रणजित् सिंहकी कार्य्यप्रणालीके विवरणमें कुछ समयके निमित्त विरत होनेपर, जान पड़ता है, वह अप्रासङ्गिक न होगा। रणजित्सिंहकी प्रकृति और चरित्रको भाल हृदयङ्गम करनेके लिये, उन सब बातोंका वर्णन करना बहुत ही जरूरी है। देशके इतिहासके साथ उन सब बातोंका बहुत सम्बन्ध है।

---

† मेरे विरचित 'रणजित् सिंह', १४१ पृष्ठ (Murray's Runjeet Singh, p. 141.) संसारचन्द्रके वंश और राज्य विवरणके बारेमें मूरक्राफ्टका भ्रमणवृत्तान्त देखना चाहिये। (मूरक्राफ्टका भ्रमणवृत्तान्त, प्रथम भाग १४४—१४९ पृष्ठ।)

पहले ही कहा गया है, कि सन् १८१६ ई०में लुधियानेमें पहुंच, शाह शुजा स्वच्छन्दतासे दिन विताने लगे। लेकिन काबुल और कन्धारके विजयकी आकांक्षा कुछ दिनों उनके मनमें बद्ध-मूल रही। अङ्गरेजोंको विश्वास था,—शाह शुजाने नामर्दकी तरह भागकर प्राणरक्षा की थी, शाह शुजा इससे बहुत ही असन्तुष्ट होते और उनके प्रति घृणा प्रकाश करते थे। वह एक सम्राट थे; भाग्य-चक्रके कठोर निष्पेषणसे राज्य-धन खो, वह तरह तरहकी विपज्जालमें जड़ित हुए थे, विपन्न अव-स्थामें हृतराज्यके पुनरुद्धारके लिये दरवाजे दरवाजे सहायताकी प्रार्थना करते थे;—शाह शुजा ऐसा ही भाव प्रकाश करनेके प्रयासी हुए। फतेहखांके आक्रमणसे जब वह प्रपीड़ित हो पड़े, तो सिन्धुदेशके अमीरोंने उन्हें बहुत आशा दी थी। उनको उपलब्धि हुई,—दक्षिण ओरसे अफगानस्थानपर आक्र-मण करनेसे फललाभकी सम्भावना है। इस उद्देश्यसे उन्होंने अङ्गरेजोंसे अपनी सुविधाजनक अनेक बातोंका प्रस्ताव किया था; लेकिन अङ्गरेजोंने उसके प्रत्युत्तरमें कहा, कि विदेशोंके कार्य्यकलापके साथ उनका कोई संश्रव नहीं। और पारिपार्श्विक सबके साथ ही वह शान्ति और निर्व्विवादके साथ रहनेके अभि-लाषी हैं। शाह शुजा जब इसतरह स्थान स्थानपर साहाय्यकी प्रार्थना कर रहे थे, तो उसी समय फतेहखां मारे गये। सुह-म्मद-आजमखां शाह शुजाको बदना स्वीकार करनेपर राजी हुए। उनकी प्रति विश्वासवश शाह शीघ्र लुधियाना छोड़ चले गये। सन् १८१८ ई०के अक्तोबर महीनेमें शाह शुजाने वह स्थान छोड़ा, भवालपुरके नव्वाबकी सहायतासे डेराग़ाजीखां

उनके द्वारा अधिकृत हुआ। इसके बाद शिकारपुरपर अधि-
कारके लिये तैमूरको भेज वह खुद पेशावरकी ओर बढ़े।
उन्हें विश्वास था, कि वह दुर्रानियोंके सम्राटके नामसे परिचित
होंगे; उनके पेशावर जानेका भी यही उद्देश्य था। लेकिन
इसी समय मुहम्मद-आजमखांने उपयुक्त समय समझ प्रचार
किया;—वह स्वयं अयूबके वजीर हैं। शाह शुजा और
विपन्नावस्थामें विजड़ित होनेपर पर्वतश्रेणीके कुछ मित्र-सम्प्रदा-
योंका आश्रय ढूंढने लगे। दो महीनेके बाद वहांसे भी वह
विताड़ित हुए, शिकारपुरमें प्रवेश करनेके पहले ही महम्मद
आजमखां उनके सामने आये। सुतरां शाह शुजा वहांसे भी
भागे। पहले वह खैरपुर गये, इसके बाद हैदराबादकी
ओर बढ़े। सिन्धियान लोगोंसे कुछ अर्थ संग्रहकर शाह
वहांसे लौटे। इसके बाद शिकारपुरका पुनरुद्धारकर एक
साल वह वहां रहे। लेकिन मुहम्मद आजम खां फिर आये।
तब हैदराबादके शासनकर्त्ताओंने बहाना किया, कि शाह
शुजा अङ्गरेजोंको लानेका षड़यन्त्र कर रहे हैं। इस समय
उन्हें विताड़ित करनेके उद्देश्यसे ही मानो अर्थ अर्पित हुआ।
वहां भी निरापद न देख शाह शुजा दिल्ली भाग आये। अन्तमें
सन् १८२१ ई०के जून महीनेमें दूसरी बार लुधियाना आ रहने
लगे। उनके भाई अन्धे जमानखां ठीक उसी समय पारिस और
अरब देश घूमकर उसी राहसे वहां आये थे। शाह शुजाकी
निर्द्धारित वृत्ति उस समयतक उनका [illegible] यदा
हे समग्रहण उनके परिवारवर्ग ग्रहण करते थे। आरम्भमें
ब्रिटिश गवर्नमेण्टसे प्रार्थना करनेपर उनके भाइयोंके

लिये भी पहले १८,००० रुपये, फिर २४,००० रुपये वार्षिक वृत्ति निर्द्दिष्ट हुई। *

सन् १८२० ई०में नागपुरके हृतसर्व्वस्व महाराष्ट्र-राजा आप्पा साहब अङ्गरेजोंके पाससे भाग अमृतसर आये। उनके कार्य्यकलापसे मालूम हुआ था, कि उनके पास बहुत ज्यादा अर्थ है। रणजित् सिंहने इस लिये उनका पक्ष अवलम्बन किया, अमृतसरमें जा, उस विषयमें उन्होंने बहुत चेष्टा की। लेकिन महाराजके मित्र अङ्गरेजोंके साथ आप्पा साहबकी घोर शत्रुताकी बात जान, महाराज रणजित् सिंहने आप्पा साहबको

---

* Compare 'Shah Shooja's Autobiography,' ch, xxvii, xxviii, xxix, in the Calcutta Monthly Journal for 1839, and 'Bhawalpur Family Annals' (Manuscript)' कप्तान मारेने (History of Runjeet Singh, p, 103) कहा है, कि फिर सिंहासन पानेके लिये शाह शुजाने एकबार चेष्टा की थी; लेकिन उनकी वह चेष्टा विफल हुई। जो इस अंशमें अन्तर्निविष्ट हुआ है, उसके समर्थनार्थ निम्नलिखित पत्र विशेष उल्लेख योग्य हैं:—सन् १८१७ ई०की १०वीं मई और ७वी जूनको दिल्लीके रेसिडेण्टके पास गवरमेण्टका पत्र, सन् १८१८ ई०को २२ वी सितम्बरको और १०वीं अक्टोबरको और सन् १८१५ ई०की १ली अप्रेलको दिल्लीके रेसिडेण्टके पास कप्तान मरेका और सन् १८२१ वीं ई०की २८ अप्रेल, १०वीं जून और २७ वीं अगस्तको सर डेविड अकटरलोनीके पास कप्तान मरेका पत्र देखना चाहिये।

राज्य परित्याग करनेकी अनुमति दी। आप्पा साहब उस समय कुछ दिनोंके लिये संसारचन्द्रके राज्य कटोचमें रहने लगे। कटोचमें रह शतद्रुके दक्षिण और पूर्व ओर सब भारतवर्षपर अधिकार करनेके लिये शाहजमांके पुत्र युवराज हैदरके साथ जल्पना-कल्पना आरम्भ की। स्थिर हुआ, कि दिल्लीसे कमोरीन अन्तरीपतक विस्तृत विशाल राजखण्डमें दुर्रानी राजा होंगे, महाराष्ट्र स्वयं उनके वजीरकी तरह अधीन राजा बन, दक्षिणका शासन करेंगे। इस सङ्कल्पमें पञ्जाबने योगदान नहीं किया। लेकिन यह ठीक नहीं मालूम, कि रणजित् सिंह संसारचन्द्र या काबुलके दोनो भूतपूर्व शासनकर्ता इस अभिसन्धिमें लिप्त थे या नहीं। जो हो, उस समय जब यह घटना प्रचारित हुई, तब संसारचन्द्रने अपने अतिथिको दूसरी जगह आश्रय ग्रहण करनेके लिये वाध्य किया। सन् १८२२ ई०में आप्पा साहब मण्डी गये; यह स्थान शतद्रु नदी और काठ...के बीचमें अवस्थित है। वह सन् १८२८ ई०में अमृतसर गये और अन्तमें वह देश छोड़ दूसरे साल उन्होंने योधपुरके राजाका आश्रय ग्रहण किया। वह राज्य भी उस समय अङ्गरेजोंके अधीनतापाशमें आवद्ध था। सुतरां भूतपूर्व राजाको आत्म-समर्पणकी जरूरत पड़ी। लेकिन राजपूत-राजने इसपर तरह तरहकी आपत्तियां कीं; सुतरां आप्पा साहबको सिरापर रखना मञ्जूर करनेमें गवरमेण्टने और कोई आपत्ति नहीं की। सन् १८१८ ई०में उनकी मृत्यु हुई; इसके बाद सभी आप्पा साहबकी बात भूल गये। *

---

* Compare 'Murray's Runjeet Singh,' p. 126.

पहले ही कहा गया है, कि नूरपुरके पहाड़ी राजा, बीरसिंह सन् १८१६ ई०में राज्यच्युत हुए थे। वह भी शतद्रुके दक्षिण आश्रय ढूंढ रहे थे। इसी समय शाह शुजाके लुधियाना पहुं-चनेपर वीरसिंहने शीघ्र एक प्रस्ताव उठाया,—रणजित् सिंहके विरुद्ध अस्त्रधारणके लिये एकतासूत्रमें आबद्ध होना ही, उस प्रस्तावका उद्देश्य था। जब शाह बन्दी-अवस्थामें लाहोर रहते थे, तब महाराजने विभिन्न असन्तुष्ट राजपुरुषोंके सन्धिप्रस्तावसे पूरी उपेक्षा नहीं की थी। अङ्गरेजोंके साथ शाहके सन्धिकी बात उन्हें याद आई; यह वह जानते थे, कि राज्यभ्रष्ट राजा-ओंके उत्तेजित करनेके लिये उच्चाभिलाषी लोग कैसे तत्पर रहते हैं। इस समय उन्होंने अङ्गरेज कर्त्तृपक्षोंका उद्देश्य जाननेकी इच्छा की; लेकिन नूरपुरके राजाके प्रति भय दिखानेका बहाना कर महाराज अङ्गरेजोंके प्रति अपना सन्देह छिपानेमें चेष्टित हुए। उन्होंने प्रकट किया, कि उनकी फौज इस समय मुलता-नके पास अवस्थित है, सुतरां शायद वीरसिंह शतद्रुपारकर विद्रोह-वह्नि जला सकते हैं। तब शाह शुजा द्वारा प्रतिनिधियों-

---

Moorcroft's 'Travels', I. 109; and the 'quasi-official authority, the 'Bengal and Agra Gazetteer' for 1841, 1842 (articles "Nagpoor" and "Jodhpur") See also Capt. murray's Letters to Resident at Delhi, 24th Nov. and 22nd Dec. 1821, and the 13th Jan. 1822, and 6th June, 1824, and likewise Capt. Wade to Resident at Delhi, 5th march, 1824.

की आदर-अभ्यर्थना होनेपर सबने ही आपत्ति प्रकाश की और विताड़ित राजाका लुधियानेमें रहना भी अनभिप्रेत जान पड़ा। लेकिन रणजित् सिंहने समझा,—अपनी प्राधान्यरक्षाके लिये सब तरहके उपायोंके अवलम्बनसे उनका (शाहका) स्वत्व मोचन किया जा चुका है। लेकिन अङ्गरेज-राजकी सीमामें उनके द्वारा कोई उपाय अवलम्बित हो न सकेगा। महाराज इसीसे ही सन्तुष्ट हुए। उन्होंने समझा,—दक्षिण या पश्चिम, वह चाहे जहां रहें उनकी राजधानी लाहोर सब समय ही निरापद है; सुतरां विपत्पातकी क सम्भावना न जान महाराजने और कोई प्रतिवाद नहीं किया। *

सन् १८१८ ई०में विचक्षण परिव्राजक मूरक्राफ्टने आरकन्द और बुखारा देखनेकी इच्छासे भारत-प्रान्त परित्याग किया। पञ्जाबके पहाड़ी प्रदेशोंमें विशेष विपद्ग्रस्त हो वह रणजित् सिंहसे मुलाकात करनेके लिये लाहोर लौट गये। रणजित्

* सन् १८१६—१७ ई०में सरकारी कागजपत्रका, विशेषतः सन् १८१७ ई०को ११वीं अपरेलको गवरमेण्टका भेजा दिल्लीके रेसिडेण्टके पत्रका ही यहां उल्लेख किया है। इस साल वीरसिंहने अपने राज्यके पुनरुद्धारके लिये फिर एकबार चेष्टा की; लेकिन पकड़े जाकर गिरफ्तार हुए। (Murray's 'Runjeet Singh, p. 145, and Captain Murray to Resident at Delhi, 25 th Febauary 1827) अन्तमें, उन्हें कारासक्त किया गया। सन् १८४४ ई०में वह जीवित थे; लेकिन उस समय कोई उनका नाम भी लेता नहीं था।

सिंहने महासमादरसे उनकी अभ्यर्थना की। उनके व्यवहारसे महाराज और वृटिश गवरमेण्टका सब सन्देह दूरीभूत हुआ था। महाराजने अकपटसे अपने जीवनका सब वृत्तान्त मूर-क्राफटसे कहा था, उन्होंने परिव्राजक मूरक्राफटको अपनी घुड़-चढ़ी और पैदल फौज दिखाई थी और अवसरक्रमसे निःसन्देह अपनी राजधानीका हरेक हिस्सा दिखानेके लिये उन्हें उत्साह प्रदान किया था। चिकित्सादि विषयके नैपुण्यसे, सब विषयकी बहुदर्शितासे, अपने सरल अकपट व्यवहारसे और कार्य्यदक्षता और उत्साहसे मिष्टर मूरक्राफट सर्व्वजनप्रिय हुए थे और इससे उनके स्वदेशवासियोंको बहुत सुविधायें हुई थीं। ठीक ठीक राजस्वप्रदानकी अङ्गीकारके साथ साथ उन्होंने पञ्जाबमें इङ्गलण्ड-जात पण्यद्रव्य प्रवर्त्तन करनेकी अनुमति-प्रार्थना की। महाराजने उस प्रस्तावका कौशलके साथ प्रत्याख्यान किया था। कहते हैं, महाराजको विश्वास था, कि इससे राजस्व घट सकता है, विशेषतः ऐसे वक्तमें, जिनके परामर्शकी जरूरत है, वह सब प्रधान कार्म्मचारी बहुत दूर देशमें आक्रमणके लिये गये थे। मूरक्राफटके भ्रमणके लिये सब प्रकारका सुयोग दिया गया था; अन्तमें ऐसा बन्दोवस्त हुआ, कि यदि वह तिब्बत देशसे यारकन्द न पहुंच सकेंगे, तो उसी व्यवस्थामें वह काश्मीर रके भीतरसे काबुल और बुखारातक जावेंगे। अन्तमें उस राहका अवलम्बन करना ही उन्होंने अच्छा समझा। मिष्टर मूरक्राफट निरापद लदाख पहुंचे। सन् १८२१ ई०में रूसके मन्त्री युवराज नेसेलरोडके पाससे महाराजने एक पत्र पाया; इसमें मन्त्रिवरने एक सौदागरको रणजित् सिंहके काममें नियुक्त

करनेके लिये अनुरोध किया था। उन्होंने और भी लिखा किया था, कि पञ्जाबके व्यवसायी लोग रूस राज्यमें महा सम्मानके साथ अभ्यर्थित होंगे—रूसके बादशाह एक महाशय पुरुष हैं; वह अन्यान्य देशको भी सुख-समृद्धिकी इच्छा करते हैं—प्रधानत: सिखोंके राज्यके शासित राज्यके वह एक विशेष मङ्गलाकांक्षी हैं। रूस-मन्त्रीके भेजे हुए सौदागर रूसके दक्षिण प्रदेशमें राहमें ही मृत्यु मुखमें पतित हुए। अन्तमें मालूम हुआ था, कि छः सालसे पहले वह मनुष्य लाहोरके महाराज और लदाखके राजाके पास ऐसे ही पत्रवाहक दूतकी तरह भेजे गये थे। *

रणजित् सिंह एक विस्तृत साम्राज्यके अधिकारी हुए थे। उस राज्यके भिन्न भिन्न प्रदेशोंको एक सूत्रमें आवद्धकर उपयुक्त विधिविधानकी प्रवर्तनासे अपनी शासन क्षमता सम्पादन करनेपर शिक्षित और विज्ञ मनुष्य मात्र ही आनन्द अनुभव करते। लेकिन वह रणजित् सिंहकी प्रकृतिके उपयोगी नहीं हुआ, या सब सिख-जातिके पक्षमें भी वह अनुपयुक्त हुई थी। जबतक किसी राजनीतिक सम्प्रदायकी परिवर्तनशील शक्ति समयके व्यतिक्रमसे आप ही परिवर्तित या ध्वंस नहीं होती, तबतक उस सम्प्रदायकी शक्ति सीमाबद्ध होती, या उसके अन्तर्गत सब लोगोंकी उद्दामगति स्थगित होती है, वह शायद उस सम्प्रदायका

* Moorcroft "Travels", i, 99, 103, and see also 383, 387 with respect to a previous letter to Runjeet Singh.

अभिप्रेत नहीं था। नानक और गोविन्द जिस उद्दीपनाका सञ्चार कर गये थे, रणजित् सिंहके चरित्रमें वह पूर्णभावसे प्रकाश हुआ था। अपनी पार्थिव आकाङ्क्षाके परितृप्ति-साधनके उद्देश्यसे उन्होंने अपनी शक्ति नियोजित की थी और उससे उन्होंने अनुगत प्रजापुञ्जमें एकाधिपत्य विस्तार किया था। वह जानते थे, कि जिस शक्तिका ध्वंस करना या शासनमें रखना उनकी क्षमताके बहिर्भूत है, उसी शक्तिको वह एक निर्दिष्ट राहसे परिचालित करते थे; जिनसे सिखलोग उनसे शत्रुताचरण न करें, या परस्पर-विवादमें प्रवृत्त हो ध्वंस न हों, इसी उद्देश्यसे उन्हें राज्यविजय या दूरवर्त्ती स्थानोंमें युद्धके बहाने नियुक्त रखना ही, वह अपना एकमात्र कर्त्तव्य समझते थे। सिख-जातिकी पहली राजनीतिक प्रथा, कई एक कारणोंसे ध्वंस हुई थी;—पहले, उस प्रथाकी असम्पूर्णता थी, दूसरे, सुशिक्षित सभ्य गवरमेण्टका संस्पर्श था; तीसरे, एकमात्र श्रेष्ठ पुरुषका प्राधान्य था। इससे पहले ही "मिसिल" ध्वंस हुई थी, सिर्फ हलूवालिया और पटियाला (या फुलकिया) सम्प्रदायके सिखोंमें ही "मिसिल" की प्रथा मौजूद थी। लेकिन उनमें भी "हलूवालिया" लोग अपने सामन्तके प्राधान्यकी रक्षाके लिये रणजित् सिंहसे मित्रतासूत्रमें आबद्ध हुए थे और पटियाला और फुलकियोंने अङ्गरेजोंके कौशलसे स्वातन्त्र्य अवलम्बन की थी। रणजित् सिंहने ऐसा कभी खयाल नहीं किया, कि उनका राज्य या सिख-साम्राज्य एकमात्र पञ्जाबमें ही सीमाबद्ध रहेगा। उनकी ऐकान्तिक कामना यह थी,—"खालसा धर्म्मपर निर्भरकर और उनकी दक्षताके प्रति विश्वासवान् हो

वीर और धर्म्मविश्वासी मनुष्य जहांतक बढ़ सकेंगे, वहांतक वह सैन्यपरिचालना करेंगे। शासन-नीतिकी ऊंची कामनाएं या वाह्य सौकर्य्य-साधनमें वह कभी प्रयासी नहीं हुए। वह केवल राज्य-विस्तारके लिये ही सचेष्ट थे; वाणिज्य व्यापारमें उन्होंने जिस न्यायपरताका परिचय दिया था, अङ्गरेज प्रतिवेशियोंसे उसकी प्रशंसा सुननेके लिये वह आज भी उत्सुक नहीं थे। विभिन्न मतावलम्बी मूर्ख और उन्मत्त प्रजावर्गके सुशासनके लिये वह अङ्गरेजोंके प्रशंसा-भाजन बननेके प्रयासी नहीं हुए वह उत्पन्न शस्यका वाजिब हिस्सा लेते थे, रोजगारी अपने अपने लभ्यांशपर सन्तुष्टचित्तसे जितना करप्रदान करनेमें समर्थ होते थे, वह उतना ही लेते थे। उन्होंने प्रकाश्य लूट-तराज बन्द की थी; सिख-कृषकोंपर उन्होंने सामान्यसा कर निर्द्धारित किया था। स्थानीय कोई राजकर्म्मचारी किसी "खालसाको" तकलीफ देनेकेमें साहसी होते नहीं थे, राजस्व-संग्रहकारी लोग यदि कहीं भी अत्याचार व्यभिचारकी दारुण वाधा पाते, तो उनकी पदच्युति होती थी, उनके उद्देश्य-साधनके लिये कभी सैन्यकी सहायता दी जाती नहीं थी। जो अपने शासित अत्याचारका प्रतिकारकर शान्तिविधान नहीं कर सकते हैं; ऐसे क्षेत्रमें उनके अधीनस्थ कर्म्मचारी लोग सदा ही मनचेताके साथ काम करते थे। मित्र-जातिका सब ऐश्वर्य्य और सब शक्ति युद्धव्यपदेशसे और सामरिक अस्त्रादिनिर्माण और आग्नेयास्त्रादि तय्यार करनेमें उत्सर्गीकृत हुआ था। जागीर (Feudal) प्रथाके आदर्शानुसार उनकी राज्यशासनप्रणाली तय्यार हुई थी। इससे व्यक्तिगत उच्चाभिलाष चरितार्थ करने और

चरित्रगत स्वाधीनताकी रक्षाका सुयोग प्रदान किया गया था। ऐसे ही शासन-प्रणाली सिख-जातिके लिये विशेष उपयोगी हुई थी; उन लोगोंने यथेष्ट काम पाया था, वह लोग युद्धविग्रहमें अभ्यस्त हुए थे। एक नगरसे दूसरे नगरमें "खालसा"का आधिपत्य विस्तृत होनेसे उनकी सन्तोषवृद्धि होती थी; इससे उनके परिवारवर्ग धनशाली हुए थे। लेकिन रणजित् सिंह कभी स्वेच्छाचारी या अत्याचारीकी तरह क्षमता पाने या उपाधि लेनेके लिये यत्नपर नहीं हुए। वह धर्म्मानुष्ठानमें निविष्टचित्त थे, वह धार्म्मिक महात्माओंकी भक्ति करते थे और बहु-दान-धर्म्मा-चरणमें उनकी सहायता करते थे। रणजित् सिंह समझते थे,—ईश्वरानुग्रहसे ही सब बातोंकी सिद्धि मिलती है। वह अपने और सिख जातिको "खालसा" या गोविन्दके साधारण-तन्त्रके नामसे अभिहित करते थे। जब वह नङ्गे पैरों सिखगुरुओंके प्रति सम्मान दिखाते थे, जब वह अपने स्वदलभुक्त दीर्घश्मश्रु-समन्वित प्रसिद्ध पुरुषोंको पुरस्कृत करते थे; जब वह धर्म्मोन्मत्त "अकाली" सम्प्रदायके अमितापारप्रशमनके लिये उद्योगी होते थे; या जब वह विपक्ष-सैन्यको ध्वंसकर नये राज्यपर अधिकार करते थे;—तब कभी वह अपने प्रतिष्ठा-प्रचारके या स्वार्थसाधनके लिये उद्योगी होते नहीं थे, हरेक काममें ही गुरुके लिये "खालसा" सम्प्रदायकी सुविधाके लिये ईश्वरके नाम सम्पन्न करते थे। *

---

* लिखनेके समय या अपनी गवरनेमेण्टकी बातके समय,—रणजित् सिंह सदा ही 'खालसा' नामका प्रयोग करते थे।

सन् १८७२ ई॰में भैराट्रा और अलाई नामक दो फ्रान्सीसी

साधारणत: अपनी मुहरपर नामके पहले "आकाल सहाय —विशेषणका व्यवहार करते थे। उनके नामके पहले, "ईश्वर-साहाय्यकारी रणजित् सिंह"—विशेषण व्यवहृत होता था। इस विशेषणके व्यवहारके साथ इङ्गलण्डका साधारण तन्त्रका "ईश्वर हमारा साहाय्य है" पूरा सादृश्य है। अध्यापक वेलसनने ("Journal Royal Asiatic Society, No xvii, P. 51) कहा है, कि रणजित् सिंहने नानक और गोविन्दको स्थानच्युत किया था और जगत्‌के एकेश्वर शासनकर्त्ताके प्राधान्यकी उपेक्षा कर अपनेको ही "खालसा" का एकमात्र प्रतिकृति समझ घोषणा की थी। लेकिन उनकी इस वर्णनाका कोई प्रमाण नहीं है।

सिखोंकी शासन-प्रणालीके उत्कर्ष और साम्यभाव या कार्य्यकारिता और उपयोगिताके बारेमें मतानैक्य दिखाई देता है। इस तरहका मतभेद अन्यान्य गवरमेण्टके सम्बन्धमें विरल नहीं है। यह स्वत:प्रसिद्ध है, कि सिख गवरमेण्ट सिखोंकी विशेष उपयोगी हुई थी। कारण, ऐसी उपयोगिताका साधन करना हरेक शासकसम्प्रदायकी गवरमेण्टका प्रधान उद्देश्य है और उस उपयोगिताका प्रकृत गुण भी वर्त्तमान है। लेकिन शक्ति-विशेषके सम्बन्धमें मतामत प्रकाश करनेके लिये, उस समयकी सभ्यताका विशेषत्व स्मरण रखना चाहिये। पञ्जाबकी वर्त्तमान अवस्था देखनेसे मालूम होता है,—यह मध्ययुगकी उन्नतिशील इंगलैंडके साथ [illegible]

सेनापति फ़ारिस और अफ़गानस्थानकी राहसे लाहोर पहुंचे। वाद-प्रतिवादमें कुछदिन बीत गये। फिर वह लोग सभ्मान-सू-

---

चत्वसमूहके एक समवाय मिश्रणसे जोसे भाव ही दिखाई देता है, उसीकी तरह वह लोग अर्द्ध असभ्य थे; लेकिन वह लोग यौवनसुलभ स्वाभाविक तेज-गाम्भीर्य्यसे और अनेकानेक शिल्पवि द्याके विषयके साधारण ज्ञानसे परिपूर्ण थे। यह ज्ञान और गाम्भीर्य्य समाजकी उन्नत अवस्थामें जीवनका अलङ्कारस्वरूप है।

फिर, अम्रतसर जैसा एक नगर सिखजातिका प्रतिष्ठित है,— इस बातके स्वीकार करनेके लिये नाना अत्याचार-अविचार और दूषनीय राज्यशासन-प्रणाली विषयक बहुत अभियोग खण्डित हो सकते हैं। कर्नल फ्राङ्कलिनने केवलमात्र प्रचलित मतकी पुनरावृत्ति कर कहा है, ('Life of Shab Alum', p. 77) अधिकृत राज्यकी सब भूमिमें सिख-जाति बहुत ही अध्यवसायके साथ फसल आबाद करती थी। मुलतानमें कोई अभियोग मिष्टर मेसनको ('Journeys', i, 30, 398) सुनाई नहीं दिया। लेकिन मूरक्रफटने ('Travels', i, 123) काश्मीरियोंकी शोचनीय अवस्था देखी है। उनके परिभ्रमणके कुछ दिनों पहले दारुण-दुर्भिक्ष-प्रपीड़ित हजार हजार मनुष्य अपनी अपनी वासभूमि छोड़ भारतक्षेत्रमें आये थे। यह सब कुछ भी उन्होंने देखा नहीं। यह भी वह लोग भूल गये हैं, कि वही उपत्यका बहुत दिनोंतक अफ़गानोंके अधीन थी। फारस्टरने अफगान-शासनकी कठोरताका वर्णन किया है। ('Travels' ii, 26 &c.)

चक पदपर प्रतिष्ठित हुए। * साधारणतः कहते हैं,—ए दो सेनानायकोंके और उनके परवर्त्ती सहयोगी कोर्ट और एविटेबाइल नामक दोनो सेनापतियोंके विशेष परिश्रमसे सिक्ख सैन्यका इतना उत्कर्ष साधित हुआ था। लेकिन असलमें हरेक सिक्खकी स्वाभाविक नहिष्णुता और अध्यवसायता ही उस उन्नतिका मूलीभूत कारण है। हरेक नवोत्थानशील जाति जिस उपयोगी तेजःशक्तिके प्रभावसे प्रतिष्ठा पाती है, हरेक सिक्खोंके हृदयमें वह शक्ति जागी थी; महाप्राण धर्मोपदेष्टागण लोगोंके मङ्गलके लिये उद्देश्य-साधन और भौग्विश्वर्य विषयक जिस ज्ञान और भावका उन्मेष कर गये थे, हरेक सिक्खोंके हृदयमें वह बद्धमूल हुआ था। इन सब कारणोंसे ही सिक्ख जातिने इतनी उन्नति पाई थी। राजपूत और पठान लोग बहुत उत्साहसी और सदाशय [वीरजातिके नामसे परिचित हैं; लेकिन उन लोगोंका वह गर्व्व और साहसिकता व्यक्तिगत है; वह सिर्फ उन लोगोंका प्राचीन वंश और श्रेष्ठकुलजात्व है। वह लोग अपने अपने वंशके मर्यादा और सम्मानरक्षक किसी भी कामका अनुष्ठान करते नहीं हैं; साधारणीय राष्ट्र नैतिक उन्नति-साधनके लिये वह लोग पूरे उदासीन हैं। दुर्रानी और विदेशोंके कठोर शासनसे मुक्ति पानेके अभिलाषसे महाराष्ट्रोंने बहुत चेष्टा की थी; लेकिन किसी निर्दिष्ट आशा या उद्देश्यसे अनुप्राणित हो वह लोग काममें प्रवृत्त होते नहीं थे।

---

* मरे लिखित "रणजित्‌सिंह," १३१ पृष्ठ। (Murray's Ranjeet Singh, p. 131 &c.)

सिख अश्वारोही।

परन्तु उनकी सब चेष्टायें, सब उद्यम ही उद्देश्यविहीन और निराशापूर्ण थे। वह लोग स्वाधीन हुए थे सही, लेकिन यह नहीं जानते थे, कि किस तरह उस स्वाधीनताकी रक्षा होती है। इसलिये ही एक सुचतुर ब्राह्मणने उनके उद्देश्य-विहीन कार्य्यकलापका अवलम्बनकर, उन लोगोंको अपने उद्देश्य-साधनमें नियोजित किया था—अशिक्षित शूद्रोंके वीरोचित कामपर निर्भरकर "पेशवा"-वंशकी प्रतिष्ठा करनेमें समर्थ हुए थे। दुराकाङ्क्षापरवश सैन्यगण शिवाजी-अनुप्राणित शक्तिका और एक तरह सुविधानुयायी व्यवहार करने लगे। लेकिन उस जीवनशक्तिके किसी तरहकी सर्व्वसामञ्जस्यरक्षक धर्म्म-नीतिकी प्रवर्त्तनासे अनुमोदित या परिरक्षित न होनेसे, कई एक पुश्तके भीतर ही मुसलमानोंकी सबसे आखिरी चेष्टाके पहले सब महाराष्ट्र जातिने मुसलमानोंकी वश्यता स्वीकार की। वैदेशिक अङ्गरेजोंके प्रलुब्धाचरणसे महाराष्ट्रने वर्त्तमान हीन अवस्था पाई है। उस समय अकपट महाराष्ट्र शायद ही कभी दिखाई देते थे,—उनका वंश लोप हुआ था। विगत शताब्दिमें भी मेषपालक और कृषकजातीय बरछाधारी महाराष्ट्रीय सैन्य दिखाई देती थी। गोर्खाओंके सम्बन्धमें भी ऐसी ही राय प्रकाश की जा सकती है। वह भारतीय जाति, स्वाभाविक प्रतिभावलसे परवर्त्ती समयमें विशेष प्रतिष्ठान्वित हुई थी, लेकिन उसमें किसी तरहके धर्म्मविषयक आशाभरोसाका मिश्रण वर्त्तमान नहीं था। वह लोग राज्येश्वर हुए थे सही; लेकिन अपनी अपनी चिन्ताप्रवाहके निदर्शनस्वरूप कोई विशेष भी किसी समाजकी पतिष्ठा या नियम प्रणाली विधिवद्धकर ख्यातिलाभ कर नहीं

साधारण ज्ञानपर निर्भर करके ही, पैतृक तीर धनु और बरछा परित्यागकर आजकलकी नवाविष्कृत गोला-गोली और तोप-बन्दूक ग्रहण किया। मिष्टर फारष्टरने सन् १७८३ ई०में यह विशेषत्व और निरवच्छिन्न युद्धव्यापारमें इसकी उपयोगिता देखी थी। * सन् १८०५ ई०में सर जान मेलकमने भी यह नहीं समझा, कि महाराष्ट्रोंकी अपेक्षा सिख-अश्वारोही फौज अधिकतर शिक्षित है। † लेकिन सन् १८१० ई०में सर डेविड अक्टरलोनी समझ सके थे, कि अपरीक्षित शक्तिपर विश्वास-स्थापनकर सिन्धिया और होलकरकी फौजकी अपेक्षा स्वाभाविक वलवीर्य्य-साहसिकतामें वह अधिकतर दुर्द्दमनीय हो गये हैं, इसी कारण वह अति दक्ष गोलन्दाज सैन्यके सामने होनेमें साहसी होंगे। ‡ गत शताब्दिकी योद्धृजातिमें प्रचलित विशेष विशेष अस्त्र-शस्त्र इस समय जनश्रुतिमूलक हैं, महाराष्ट्रोंका वरछा अफगानोंकी तलवार, सिखोंकी बन्दूक और अङ्गरेजोंकी तोपें इस समय भी साधारण लोगोंसे सुनी जाती हैं। उनके अस्त्र-शस्त्रादिका आधिक्य और श्रेष्ठत्व ही कृतकार्य्यताका कारण है। भारतवर्षके वर्त्तमान अधिपति लोग जिस विजयगौरवसे अपनेको गौरवान्वित समझते हैं, वह गौरव उनकी बन्दूक तोपोंके उत्-कर्षसे वा संख्याधिक्यसे अर्ज्जित हुई नहीं है;—प्रकृत बात

* Forster's Travels', i. 332.

† Malcom's 'Sketch to the Sikh's, p. 150, 151.

‡ Sir D. Ochterloney of Government, 1st Dec. 1810.

रणजित्सिंहने कहा है, कि सन् १८०५ ई०में वह लार्ड लेकका सैन्यविभाग देखनेके लिये गये। * कहते हैं, सन् १८०८ ई०में मिष्टर मेटकाफकी शरीररचक अल्पसंख्यक सुश्रृङ्खला और सुनियमबद्ध सैन्य देख महाराजने उनकी बहुत प्रशंसा की थी। इस छोटे रचिसैन्यदलने एकबार अकालियोका आक्रमण व्यर्थ किया था। † इसके बाद कई साल बीतनेपर वह नियमानुवर्त्ती श्रृङ्खलाबद्ध स्थायी सैन्य तय्यार करनेमें मनयोगी हुए। सन् १८१२ ई०में सर डेविड अक्टरलनीने देखा, कि सब मनुष्योंने अङ्गरेजोंका पक्ष छोड़ा है या कामसे फुरसत ली है—उससे ही दो दल सिख-सैन्य तय्यार हुई है, इसके सिवा हिन्दुस्थानियोंका कुछ सैन्यदल उनसे ही कायदेके मुताबिक युद्धविद्या सीखता है। ‡ दूसरे साल महाराजने २५ पैदल सैन्यदल तय्यार करनेका

भी सैन्यदलके हिसाबसे वह लोग वेतनभोगी हैं, जो क्षत्रिय और अफगान जातिके अन्तिम वंशधरोंके स्वाभाविक गुणस्वरूप हैं, उनका वैसा एकाग्रचित्त और स्थिरमति, वंशगत वह तेजशक्ति, इस समय उनमें नहीं है। मूलग्रन्थमें यह मन्तव्य प्रधानतः हरियाना और रुहेलखण्डके और अन्यान्य उपनिवेश-समूहके पठान जातिके प्रति और राजपूतानेके छोटे छोटे जमीन्दारों और कृषकप्रजावर्गके प्रति ही प्रयुक्त है।

* मूरक्रफटका 'भ्रमणवृत्तान्त' प्रथम खण्ड, १०२ पृष्ठ। (Moorcroft, 'Travels', 1, 102.)

† मरेकृत 'रणजित्सिंह', ६८ पृष्ठ। (Murray's 'Runjeet Singh', p. 68.)

‡ Sir D. Ochterloney to Government, 27th Feb 1812.

प्रवर्त्तनकारी, शेहनाबसिंहके पिता और देशासिंह मजीठियाने मिष्टर मूरक्राफटके साथियोंसे कहा था, कि मुलतान पेशावर और काश्मीरपर स्वाधीन "खालसा" अश्वारोहियोंने अधिकार किया था। * धीरे धीरे पैदल सैन्यकी उपयोगिता ही श्रेष्ठ जान पड़ी, रणजित् सिंहको मृत्युसे पहले सिखजातिको सभी एक योद्धृजातिके नामसे स्वीकार करते थे। वह लोग केवल बन्दूक चलानेकी शिक्षा पाकर ही निरस्त नहीं थे, निरापद-स्थान-प्रयासी पैदल सिपाहियोंकी तरह केवल सैन्य-श्रेणीकी शोभा न बढ़ा, उन लोगोंने यह भी सीखा था, कि किसतरह तोपकी परिचालना करना पड़ती है।

इस तरह सिखसैन्यका परिवर्त्तन और संस्कार साधित हुआ। सेनापति अलार्ड और वेण्टूरा जब पञ्जाबमें सेनापतिके पदपर नियुक्त थे, तब रणजित् सिंह इसतरहके संस्कारके प्रयासी हुए थे। सौभाग्यवश उन्होंने कार्य्योपयोगी बहुत उत्कृष्ट उपादान पाया था और सुदक्ष सैनिक पुरुषोंकी तरह प्रतिभा-बलसे उन्हें व्यवहारके उपयोगी कर डाला था। वह लोग पूर्व्वप्रवर्त्तित रीति पद्धतिके सार्थकतासाधनमें भी चेष्टान्वित हुए थे। परन्तु उन्होंने फ्रान्सीसी पद्धतिक्रमसे सिखोंके समर-कौशलकी व्यवस्था की थी। आठ वर्ष पहले अदम-साहसिकता, सैनिक आदेशानुवर्तिता और कष्टसहिष्णुता सिखोंके प्रधान गुणमें गणनीय था, इस समय भी भारतीय सैनिकोंमें यह सब

---

* मूरक्रफट-कृत "भ्रमणवृत्तान्त," प्रथम खण्ड ६८ पृष्ठ।
(Moorcroft Travels', I, 98)

एबिटेबाइल—कोई भी सिख-सैन्यके प्रतिष्ठाताका नाम ग्रहण कर नहीं सके। फ्रान्सीसी सैन्याध्यक्षोंकी कार्य्यकुशलता और स्वाधीन-चित्ततासे लोगोंके हृदयमें यूरोपीय प्राधान्यका भाव बद्धमूल हुआ था; लेकिन असलमें उनकी शिक्षासे सिख लोग सैनिक-कार्य्यमें प्रकृतरूपसे पारदर्शिता पानेमें समर्थ नहीं हुए।

पहले ही कहा गया है, कि रणजित् सिंह जब बालक थे, तब गुरुबख्श सिंहकी कन्या महताब कुंवरिके साथ उनके विवाहका प्रस्ताव हुआ। गुरुबख्श काणिया (या घाणि) सम्प्रदायके सामन्तपदके एकमात्र उत्तराधिकारी थे, लेकिन वह युद्धक्षेत्रमें पिता महासिंहके साथ मारे गये। इन बालिकाकी माता सदाकुंवरि बहुत ही तेजःगर्व्वशालिनी और प्रभुत्व-प्रयासी थी। सन् १७६३ ई०में "काणिया" जयसिंहकी मृत्यु होनेपर, काणिया सम्प्रदायके कार्य्य-कलापमें उनका आधिपत्य ही सबसे प्रधान हो उठा। उन्होंने दामादको अपनी विधवा-माताका प्रभुत्व नष्ट करनेके लिये उत्साह प्रदान किया। कहते

सैन्यदलके लिये सरकारसे दो पाचक या रोटीवाले नियुक्त होते थे। हरेक आदमीके अपना अपना आटा गूंध रोटी बना देनेपर, सेंक देना उनका काम था। समय समयपर वह लोग स्वजाति या अपेक्षाकृत नीच मनुष्योंके लिये दूषित रोटी भी प्रदान करते थे। कार्टनमेराटके सिपाही बारिकमें रहते थे; हरेकके स्वतन्त्र घरकी व्यवस्था नहीं थी। यह प्रथा इस समय अङ्गरेजोंमें भी प्रचलित है।

है, भावी महाराजने केवल सत्तरह वर्षकी उम्रके समय राज्य रक्षणावेक्षणका भार अपने हाथ ले, व्यभिचारिणी अपनी माताको निहत किया था। उनके जीवनमें और उन्नतिके प्रारम्भमें सदा कुंवरिके पक्षका समर्थन करना बहुत ही बड़ा जान पड़ा था। कन्हिया मिसलकी सहयोगितासे ही वह लाहोर और अमृतसरपर अधिकार करनेमें समर्थ हुए थे। सदा कुंवरिने आशा की थी, कि रणजित् सिंहके उत्तराधिकारीकी मातामहीके हिसाबसे और अपने स्वत्वानुसार शासन कर्त्तीस्वरूप सिखोंके सब तरहके क्रिया-कलापमें वह सर्व प्रभुत्वकी क्षमता रखनेमें समर्था होगी; लेकिन उनकी कन्या निःसन्तान थी; रणजित् सिंह खुद भी सुचतुर और सतर्क थे। सन् १८०७ ई०में मालूम हुआ, कि महताब कुंवरिके सन्तानकी सम्भावना है। सबने ही विश्वास किया था, कि उनके गर्भसे एक कन्या सन्तानने जन्म लिया है, लेकिन रणजित् सिंहके युद्धक्षेत्रसे लौटनेपर सन्तान हुआ है, कहकर उन्हें दो सन्तान दिये गये। तब महाराजके मनमें सन्देह हुआ। शेरसिंह एक सूतधरके पुत्र और तारासिंह तन्तुवायके सन्तान थे, इस बातपर वह हमेशा विश्वासस्थापन करते थे। तब भी उनकी प्रख्यात मातामहीके यत्नसे वह लालित-पालित होने लगे;—समझे, कि सचमुच ही उन्होंने रणजित् सिंहके वंशमें जन्मग्रहण किया है। लेकिन सदाकुंवरिने देखा, कि इन दोनो बालकोंके नामसे वह कोई क्षमता पा नहीं सकीं। तब हताशभाव ही उस समयोंमें सन् १८१० ई०में [illegible] उन्होंने आविष्कार किया। [illegible]

किया है कह, उन्होंने प्रकाश्यभावसे रणजित् सिंहको निन्दाई और शास्तियोग्य निर्द्देश किया। वह यह भी प्रकट करनेमें कुण्ठित नहीं हुई, कि नवमिलित मित्रराजोंकी सहायतासे रणजित् सिंह अङ्गरेजोंके साथ युद्ध करनेमें कृतसङ्कल्प हैं। उनके इस आवेदनपर अङ्गरेजोंकी दृष्टि आकर्षित हुई ; लेकिन वह विद्रोहका कोई आयोजन करनेमें समर्थ नहीं हुए। सुतरां उन्हें पूर्व्व अवस्थामें अपने पदपर ही सन्तुष्ट रहना पड़ा। सन् १८२० ई०में रणजित् सिंहने शेरसिंहको असलमें पुत्ररूपसे ग्रहण किया ; उनका स्पष्ट उद्देश्य था, कि परिणाममें उनके द्वारा ही वह श्वश्रुका आधिपत्य लोप करेंगे। वह रमणी कानिया राज्यका अर्द्धांश उन युवाके भरणपोषणके लिये निर्द्देश करनेमें अनुरुद्ध हुई। लेकिन अन्तमें उससे इनकार करनेपर, वह आक्रान्त और कारारुद्ध हुई,—उनकी सब सम्पत्ति रणजित् सिंहके राज्यके अन्तर्भुक्त हुई। यह पहले ही कहा जा चुका है, कि अङ्गरेजोंकी मध्यस्थतामें शतद्रुके दक्षिण वड़ादनी नामक छोटी सम्पत्ति उन्हें फिर प्रत्यर्पित हुई थी। *

रणजित् सिंहने वृद्धावस्थामें "नाकिया" सम्प्रदायके अधिपति खुशानसिंहको कन्याका भी पाणिग्रहण किया था। सन् १८०२ ई०में उनके गर्भसे रणजित् सिंहके एक पुत्र हुआ—

---

* Compare 'Murray's Runjeet, Singh,' pp.—46, 51, 63, 127, 128, 134, 135, See also Sir D. Ochterloney to Government, 1st and 10th Dec, 1816, and this volume.

कुमार नौनिहाल सिंह।

महरा नाम्नी एक वाराङ्गनाने रणजित् सिंहपर बहुत अ प-पत्य-प्रभाव फैलाया था। फलसे, सन् १८११ ई०में उसका नामाङ्कित मुद्रा और पदक मुद्रण होना आरम्भ हुआ था। लेकिन रणजित् सिंहको एक मद्यपायी वा इन्द्रियसुखोन्मत्त मनुष्य समझना भी उचित नहीं है, ऐसा विश्वास करना भ अवैध है, कि सिखजाति पूरी निर्लज्ज और मनुष्यजातिके अपमानसूचक हरेक पापकार्यको प्रश्रयदाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि हरेक युगमें ही शिक्षित और सभ्य समाजकी अपेक्षा अशिक्षित और असभ्योंमें आत्मसम्मान और स्त्रियोंके सतीत्व और पतिव्रताका थोड़ा आदर था। जब किसी देशकी सब कृषकजाति अकस्मात् आधिपत्य और ऐश्वर्य्य पाती और समाजके विविध प्रतिवन्धकोंसे मुक्त होती है, तो उसके अधिकांश मनुष्य ही सुखके प्रलोभनमें अपना उत्सर्गकर नीचवृत्तिके चरितार्थ करनेमें यत्नपर होते हैं। लेकिन इतनेपरभी इस-तरहका व्यभिताचार साधारण नियम-पद्धतिसे बाहर है। जो लोग किसी समय सिखोंकी निन्दा करते हैं, फिर भी, वह दूसरे समय उनकी क्षिप्रकारिताके साथ दीर्घ कालव्यापी युद्धयात्रा की बात वर्णन करते हैं, उन्हें इस परस्पर-विरोधी मतकी बात याद रखना चाहिये। उन्हें एकबार विचारकर देखना चाहिये, कि हमारे स्वभावजात साधारण ज्ञान और ऊंची मनोवृत्तियोंसे जो हमेशा निन्दनीय और दुःसाह समझे जाते हैं, वह कभी किसी जातिके प्रकृतिगत आचार और अभ्यासमें गिने जा नहीं सकते। किसी देशके दुराचारी शासनकर्त्ताओंको साधारण अधिवासियोंका तरह नैतिक शासनमें आबद्ध रखना असम्भव

है। वह कभी शान्त स्वभावसे, निर्दिष्ट धानस्थानमें धर्मोपदे-शकी तरह सावधान रह नहीं सकते। कुछ व्यभिचारी शासकर्त्ता और उन्मत्तस्वभाव सिपाहीकी आचार-पद्धतिकी परीक्षासे हजार हजार पराक्रमी साहसी हृषक और धर्मशील सिक्खों के चरित्रपर विचार करना युक्ति-विरुद्ध है; अवनतिकी चरम दशा वाले सिपाहियोंका चरित्र देख, साहसी और दृढ़ सब सिपाहियोंको दोषी ठहराना न चाहिये। * उत्तर-भारतके

---

* कर्नेल ष्टिनवाकने भी ('Punjab', p. 76, 77) उनके आहारकी बातें मोटे ढङ्गसे लिखी हैं। उनके मतसे कुछ वीभत्स आचार लोगोंमें प्रचलित था। कप्तान मरे ('Runjeet Singh' p. 85) और मिष्टर वेग्न ('Journeys i, 435,) दोनोंने ही इन सब पद्धतियोंकी ओर बहुत साधारण भावसे दृष्टि दिखाई है। मिष्टर एल्फिन्ष्टनने भी ('Hist. of India' ii. 565) एक ही मत प्रकाशकर इस निन्दनीय इन्द्रियसुखपरताको सर्व्वव्यापी ठहराया है। जो हो, किसी जातिकी नीति पद्धति और आचारव्यवहारका विचार करने का, व्यभिचारियोंके कई एक दृष्टान्त देखकर साधारण उपसंहारमें उपनीत होना उचित नहीं। भारतवासी भी यूरोपियनोंकी बातें अतिरञ्जितकर वर्णन करते हैं; वारवनिताओंसे परिवेष्टित हो, अङ्गरेज लोग मद्यपान करते हैं और तरह तरहकी बातोंमें प्रतिज्ञाबद्ध होते हैं, नाट्य-काव्यमें और टंचार-अभिनयमें, यही वर्णित होता है। यह भी लिखना चाहिये, कि कारण या अकारण, वह लोग उनके कस्ताहिक व्यवहार करते हैं।

अपरापर प्रदेशोंके कृषकोंकी तरह पञ्जाबके कृषक लोग यव या गेहूंकी रोटी और एक एक गण्डूष जल पानेसे ही परितृप्त होते हैं। सिपाहियोंकी अवस्था भी बहुत उन्नत नहीं है; आमोद-उत्सवका समय छोड़, वह लोग दूसरे समय उन्मादकारी मादक द्रव्यादिका व्यवहार नहीं करते। धनैश्वर्य्य और पद-सम्पन्न अलस मनुष्य, या अधिकतर अकर्म्मण्य धर्म्मोन्मत्त मनुष्य ही उन्मत्तता और उत्साहप्रार्थी होते हैं, या मानसिक चिन्ताविहीनता और कार्य्यशून्यता दूर करनेके लिये मादक द्रव्य या मद्यका आश्रय ग्रहण करते हैं। आहाराहिके सम्बन्धमें व्ययबाहुल्य मुसलमानोंका स्वभावसिद्ध है—भारतवासियोंका वैसा स्वभाव नहीं है। यूरोपीय लोग जैसे अमित-व्ययिताके साथ खानेपीनेमें आमोद प्रमोद करते हैं, वह तुर्क और पारसियोंको नहीं मालूम, वैसा करनेसे मिताचारी हिन्दू लोग निन्दाभाजन बनते हैं। *

---

* फारस्टरने (Travels, 1, 335) सिखोंके मिताचारकी बात वर्णन की है। बहुसंख्यक उत्तेजक इन्द्रिय-सुखसे निस्पृहताके बारेमें अनेक दृष्टान्त दिखाये हैं। अपने मतके समर्थनार्थ उन्होंने करनल पलियरके विवरणका कुछ अंश उद्धृत किया है। मेलकमने भी ('Sketch', p. 141') सिखोंकी परिश्रमी और सरलके नामसे वर्णना की है; लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं, कि इनके जातीय शक्तिकी वृद्धि होना आरम्भ हुई, तबसे अधिकांश स्थलमें ही धनी और सबल मनुष्य विलासी और इन्द्रिय-सुखपरायण हो पड़े थे।

and Afghans,' ch. iv and vii. अजीमुद्दीन और देशासिंहके सम्बन्धमें निम्नलिखित ग्रन्थावली देखना चाहिये :— Moorcroft, "Travels, i. 94, 98, 110 &c. Lieut-Colonel Lawrence's work ; "The Adventurer" in the Punjab and Capt. Osborne's "Court and Camp of Runjeet Singh," आखिरी ग्रन्थमें महाराजके मन्त्री और खुशामदकारियोंके सम्बन्धमें अनेक आश्चर्य कहानियां लिखी हैं। लार्ड एलेनबराके लिये मिष्टर क्लार्कने इस विषयकी जो एक फिहरिस्त तय्यार की थी, ग्रन्थकारने सुविधाके साथ उसकी भी आलोचना की है। मोकुमचन्द्रकी बात पहलेहीही कही गई है। इस समय ब्राह्मण दीवानचन्द्रकी बात लिखी जा सकती है। जब मुलतान अधिकृत हुआ, तो वह प्रकृत सेनापति थे और काश्मीरपर आक्रमणके समय, उन्होंने ही अग्रवर्त्ती सैन्यकी परिचालना की थी। प्रकृत सिख-सिपाहियोंमें मिधसिंह वेरानिया भी बहुत ही साहसी और सहृदयके नामसे प्रसिद्ध थे।

सप्तम परिच्छेद।

मुलतान, काश्मीर और पेशावरके अधिकारसे रणजित् सिंहकी मृत्यु तक।

सन् १८२४—१८३९।

(अङ्गरेज और सिखोंका सम्बन्ध परिवर्तन ;—विविधकार्य ;—सिखोंका कार्य्य-कलाप-प्रदर्शनकारियोंके नैतिक प्रतिनिधि कप्तान वेड ;—जम्मूके राजगण ;—पेशावरके सय्यद अहमद शाहका विद्रोहाचरण ;—रणजित् सिंहकी ख्याति ;—रूपरके लार्ड विलियम वेनटिङ्कसे मुलाकात ;—सिन्धु देशपर अधिकारके लिये रणजित् सिंहकी मन्त्रणा और सिन्धुनदमें वाणिज्यपोत-परिचालनामें अङ्गरेजोंकी व्यवस्था ;—सन् १८३३-३५ ई०में शाह शुजाका आक्रमण और रणजित् सिंहका पेशावरपर अधिकार ;—राजा गुलाबसिंह द्वारा लदाखपर अधिकार ;—शिकारपुरमें रणजित् सिंहका छल और अङ्गरेजोंकी वाणिज्य-नीतिके वहिर्भूत सिन्धुदेशपर अधिकारके लिये रणजित् सिंहकी मन्त्रणा ;—अफगानस्थानके बारकजाइयोंके साथ अङ्गरेजोंका सम्बन्ध ;—रणजित् सिंहके आनेसे दोस्त मुहम्मदका भागना ;—अफगान द्वारा सिखोंकी पराजय ;—नौनिहाल सिंहका विवाह ;—सर हेनरी फेन ;—अङ्गरेज, दोस्तमुहम्मद और रूस जाति। शाह

पूनाका सिंहासन पाना,—अङ्गरेज द्वारा क्षमताह्रासके विषयमें रणजित् सिंहकी अनुभूति,—रणजित् सिंहकी मृत्यु।)

रणजित् सिंहने पेशावरपर अधिकार किया था सही, लेकिन उस देशके पूरी तरह वशीभूत करनेमें उन्हें बहुकालव्यापी युद्धमें निरविच्छिन्न भावसे व्याप्त रहना पड़ा। रणजित् सिंह सारे पञ्जाबके अधिपति हुए थे, लेकिन अङ्गरेजोंने इतने दिनों इधर दृष्टि-सञ्चालन नहीं की। जिस दिन नेपोलियनकी सैन्यके विरुद्ध अस्त्र धारण करनेके लिये अङ्गरेजोंने रणजित् सिंहसे साहाय्य लेनेकी प्रार्थना की, उस दिनसे ही सिख-जातिकी सामाजिक अवस्थाका और उनके उद्देश्यका परिवर्त्तन साधित हुआ। यमुना नदी और सतद्रु शुतरका समुद्रोपकूल उस समय अङ्गरेज राज्यकी निर्दिष्ट सीमा समझा जाता नहीं था। अङ्गरेजोंने नर्म्मदा नदी पार किया था, राजपूतानेके राज्य, करद-राज्यमें गिने गये थे। अन्तमें इस उद्देश्यसे, कि जिससे सब देश धनैश्वर्य्यशाली हो और हृष्टोपयोगी वाणिज्य-शृङ्खलसे दूरवर्त्ती प्रदेशोंके बांधनेके अभिप्रायसे वह लोग जलपथपर वाणिज्य सौकार्य्यार्थ विविध उपायविधानसे यत्नपर हुए थे; उद्देश्य-साधनार्थ बाध्य हो उन लोगोंने सिख-राज्यके उद्देश्यमें बाधा प्रदान करनेकी चेष्टा की थी। उस उद्देश्यके वशवर्त्ती होकर ही वह लोग अदृष्टपूर्व्व फिर भी सुनिश्चितरूपसे रणजित् सिंहके राज्यनाशके लिये यत्नपर हुए थे। यद्यपि गुरु गोविन्दने अपने अपने प्रतिभाबलसे जो धर्म्मसंस्कार और समाज-साधीनता विषयक नीति प्रदान की थी, कठोर

पार्थिव शासनके वशवर्त्ती हो निष्ठुरताके साथ उन लोगोंने उ
हस्तक्षेप करना आरम्भ किया था।

सन् १८२४ ई०में अटकके उत्तर सिन्धुनदके दोनो कि
कलहप्रिय मुसलमान जाति विद्रोही हो पड़ी। इससे सि
सेनापति हरिसिंहने बड़ी बाधा पाई। महाराज सैन्य-संग्रह
वहां आये और उन्होंने प्रस्तरगर्भ प्रबल सिन्धु नद पार किया
लेकिन असभ्य पहाड़ी लोग उनके आते ही भाग गये। या
महम्मद खां सिखोंकी स्वाधीनता स्वीकार करते नहीं थे; उन
बार बार वादप्रतिवादसे रणजित् सिंहकी सब चेष्टायें व
हुई। * सन् १८२५ ई०में गोर्खाओंके सन्धिप्रस्तावसे रणजि
सिंह बहुत आनन्दित हुए। अङ्गरेजोंका प्रभुत्व उनके लि
असहनीय हो पड़ा था, सुतरां गोर्खालोग रणजित् सिंहक
पहली शत्रुता भूल गये थे। लेकिन नेपालियोंका प्रकृत उद्दे
कभी न जान सकनेपर चञ्चलमति सिखराज शिकारपुरपर आक्र
मणके लिये चन्द्रभागाकी ओर गये। † इसी समय सिन्
देशमें घोर दुर्भिक्ष उपस्थित हुआ। लोगोंसे सुना गया, कि
अङ्गरेज लोग भरतपुरपर आक्रमणके लिये तय्यार हो रहे हैं।
सुतरां उसी वर्षके आखीरमें महाराज राजधानी लौट आये।

---

* कप्तान मरे-कृत "रणजित्सिंह १४१ और १४२ पृष्ठ।
(Capt. Murray's 'Runjeet Singh,' p. 141, 142)

† Agent at Delhi to Capt. Murray, 18th Mar
ch, 1825 and Capt. Murray in reply, 24th March
Compare also Murray's Runjeet Singh, p. 144.

उस समय जाट जातीय एक मनुष्यने यमुनातीरवर्त्ती सम राज्योपर अन्यायपूर्व्वक अधिकार किया था; इस समय उस मनुष्यने इरावती-तीरवर्त्ती "जाट" अधिपतिसे सहायताकी प्रार्थना की। लेकिन महाराजके उस दौत्यकी वातका अविश्वास करनेका वहाना करनेसे अङ्गरेज लोग उससे ही सन्तुष्ट हुए। जिन दुर्गाधिपतिने अङ्गरेजोंकी शिक्षित सैन्यदलको वाधा-प्रदानकर उनके भीतिव्यञ्जक अस्त्रशस्त्रादिके प्रति उपेक्षा दिखाई थी, रणजित् सिंहने उन दुर्गाधिपतिके साथ शत्रुताचरण नहीं किया। † तब भी ठीक उसी समय ही दुर्गाधिपतियोंके प्रति उनके अविश्वासके नाना कारण उपस्थित हुए। फतेह सिंह अहलूवालियाके ज्येष्ठ भाई युद्धके लिये तय्यार हुए; सुतरां वाध्य हो फतेहसिंहने दुर्ग असम्पूर्ण अवस्थामें रखा। अधि-कन्तु वह भयसे भीत हो शतद्रुके दक्षिण भाग गये। अङ्गरे-जोंकी सहायता-सम्भावनासे पैतृक राज्य सरहिन्द प्रदेशमें वह निश्चिन्त अवस्थामें रहे सही, लेकिन लार्ड लेकके साथ सन्धिकी वात स्मरणकर रणजित् सिंह आश्रयहीन मनुष्यका भय छुड़ानेके लिये यत्नपर हुए। अङ्गरेजोंके आश्रयमें उन सामन्तको दुर्द्द-मनीय जान रणजित् सिंहने उन्हें हस्तगत करनेकी चेष्टा की। सन् १८२७ ई०में फतेह सिंहके लाहोर आनेपर रणजित् सिंहने

---

† Captain Murray to Resident at Delhi, 1st and 3rd Oct. 1825 and Capt. Wade to Capt. Murray 5th Oct. 1825.

बड़े समादरके साथ उनकी अभ्यर्थना की; तब फतेहसिंह प्राय: सब राज्य फिर पाया। *

सन् १८२६ ई० में लाहौरमें रणजित् सिंह कठोर पीड़ा आक्रान्त हुए; उन्होंने यूरोपीय डाक्तर द्वारा चिकित्सित होने की इच्छा प्रकाश की। इसी समय डाक्तर मरे नामक एक सार्जन भारतीय-अङ्गरेज-सैन्यदलमें नियुक्त हुए। रणजित् सिंहकी चिकित्साके लिये भेजे जानेपर वह कुछ दिनों लाहौरमें रहे। लेकिन अनजान प्रतिवेशककी कार्य्यकारिताके सम्बन्धमें विदेशी चिकित्सक और नवप्रथावलम्बियोंका महाराज विश्वास करते नहीं थे, लेकिन समयकी कार्य्यकारिता, उपवास और

---

* Resident at Delhi to Capt Murray, 13th Jan, 1826; and Capt. Murray's "Runjeet Singh", p. 144. सन् १८११ ई०में वृद्ध शासनकर्त्ता अपने मित्र-भाईके डरसे (Turban brother) इतने डरे थे, कि उन्होंने ऐसी ही इच्छा प्रकाश की थी, कि वह स्वतन्त्ररूपसे अङ्गरेजोंके सम्पर्कीय थे।

शतद्रु के दक्षिण ममदतके मुसलमान शासनकर्त्ताने इसी कारण अङ्गरेजोंके अधीन-रूपमें गृहीत होनेके लिये बहुत चेष्टा की। अन्तमें हताश हो फतेहसिंहकी तरह भाग गये, बाद फिर वह लौटे। पहले यह काशुरके अधिपति थे। (Government to Resident a Delhi, 28th April, 1827, with Correspondence to which it relates, and compare Murray's 'Runjeet Singh', p. 145),

अपने डाक्तर देशकी बहुदर्शिता-लब्ध सुश्चियोग प्रभृति प्रति-वेधकके प्रति उनका अधिकतर विश्वास था। तब भी, रणजित्-सिंह विदेशी डाक्तरको रखना अच्छा समझते थे। वह समझते थे,—उनसे नाना विषयोंका समाचार मिलेगा और बहुत सहज ही उनका सन्तोष-विधान होगा,—इस उद्देश्यसे ही उन्होंने विदेशी डाक्तरको बुलाया। इसी समय गवरनर-जनरल लार्ड अमहर्स्टने उत्तरप्रदेशके देखनेका आग्रह प्रकाश किया; इसके लिये महाराज व्यग्र हो उठे। वह अङ्गदेशीय सैन्यके गुणपनाके तथ्य संग्रह करनेमें यत्नपर हुए। वह इन सब बातोंका अनुसन्धान करने लगे, कि ब्रह्म प्रयोंके साथ युद्धकी समाप्तिपर विजेता अङ्गरेजोंने कितने रुपयोंका दावा किया था। बारिकपुरके एक दल सिपाहियोंके विद्रोहिताचरणके विषयमें वह अनुसन्धान करते थे, कि उस विद्रोहके दमनके लिये देशी सैन्य नियुक्त हुई थी, या नहीं, इसके जाननेकी उन्हें इच्छा थी। *
सन् १८२७ ई०में शिमलेमें लार्ड अमहर्स्टके उपस्थित होनेपर और भी अधिकतर घनिष्ठता स्थापित हुई। उनकी अभ्यर्थनाके लिये और और अन्यान्य विषयके अनुसन्धानके लिये एक दूतने उनके आनेकी परीक्षा की थी। महाराजकी सभामें अङ्गरेज-सीमान्तके शासनकर्त्ता कप्तान वेड यह अभिनन्दन प्रतर्पण

---

* Capt Wade to the Resident at Delhi, 24th Sept, and 30th Nov, 1826, and 1st Jan, 1827, Compare 'Murray's 'Runjeet Singh', p 135.

करनेके लिये प्रतिनिधि स्वरूप भेजे गये। * दूसरे साल अङ्
रेजी सैन्यके प्रधान-सेनापति (जङ्गी लाट) लुधियानेमें आये।
रणजित् सिंहने मङ्गलकामना प्रकटकर उनके पास एक
भेजा; लेकिन भरतपुरके विजयीको पञ्जाबके किलोंके देख
निमन्त्रण दिया नहीं गया। †

---

* Government to Capt. Wade 2nd May, 1827.

† Murray's 'Runjeet Singh. P. 147. इसी स
विद्योत्साही पण्डित सोमा डि करसकी विद्यालोचनामें देश पर्य
और शिमलेमें अङ्गरेजोंका आवासस्थान निर्मित होनेपर
ओर तिब्बतके चीन देशवासियोंके और दूसरी ओर रणजित् सि
अङ्गरेजोंके विषयमें कौतूहलाक्रान्त हुए थे। इसी कारण मा
नामक स्थानके लामा पन्होंने अङ्गरेजोंके अधिकारभुक्त विशे
नामक स्थानके शासनकर्त्ताओंको निम्नलिखित पत्र लिखा था
—"प्राचीन समय 'फेफिलिंगा' लोग (अर्थात् फिरङ्गी या प्राङ्गा
"क्षुद्रकाय और असत् जातिका नामतक सुनाई देता नहीं था
"अब बहुसंख्यक "फेलिंगा" हरसाल ऊंचे प्रदेश देखते हैं
"इससे विशेहरके शासनकर्त्ता उनकी गतिविधिका पर्य्यवेक्षण
"सदा युद्धके लिये तय्यार रहनेपर वाध्य हुए हैं। प्रभुत्व प्रता
"शाली "लामा" इससे असन्तुष्ट हैं, उन्होंने एक दल सैन्य
"सदा युद्धके लिये सज्जित रहनेकी आज्ञा दी है। जिसमें
"अङ्गरेज उनके राज्यकी सीमा पार न करें इस सम्बन्धमें उन
"सतर्क किया जाय, यदि वह लोग मित्रता की इच्छा करें,
"उन्हें बसन्तके पहले पिकिन जाने दिया जाय। अङ्गरेजों

ब्रटिश और सिख-गवरनमेण्टमें जो कामनिर्व्वाह करना होगा, उसका भार दिल्लीके राज-प्रतिनिधिके हाथ दिया गया था। उन्होंने इस उद्देश्यसे अम्बालेके राजनीतिक प्रतिनिधि (एजण्ट) कप्तान मरेके प्रति आदेश प्रचार किया था। लुधियानेमें कप्तान वेड नामक उनके एक सहकारी थे; वहांके सैन्य-दलके सम्पर्कसे ही वह वहां अवस्थिति करते थे। जब कप्तान वेड लाहोरमें महाराजके दरबारमें उपस्थित थे, तो महाराजने एक इच्छा प्रकाश की; उनकी प्रार्थना थी—काम-काजकी सुविधाके लिये लुधियानेके कर्म्मचारीको शतद्रुके दक्षिणस्थ राज्यसमूहके प्रतिनिधिके पदपर वरित किया जाय; प्रतिनिधि दिल्लीके रेसिडण्टके अधीन रहेंगे; लेकिन अम्बालेके प्रतिनिधिके साथ उनका कोई सम्पर्क न रहेगा। * उनकी वह इच्छा

"युद्धनैपुण्य या ऐश्वर्य्यपर विप्रोहरके अधिवासियोंको विश्वास "करना उचित नहीं। इस समय बादशाह उनकी अपेक्षा ३० "पाड़ाव्" (१२० मील) उन्नत हैं; उन्होंने चार जातिपर "आधिपत्य स्थापन किया है; इस समय एक युद्धमें एशियाको "कः जाति घोर दुर्द्दिनमें पतित होगी; सुतरां जिसमें अङ्गरेज लोग उनके राज्यकी सीमा पार न करें, उस नियममें वेष्टित होना जरूरी है।" आपत्ति निवारणार्थ प्रार्थना और "अत्युक्तिपूर्ण और भी न जाने क्या लिखा गया था। (Political Agent Subathoo to Fesident at Delhy. 26th March, 1827.

* Captain Wade to Resident at Delhi, 20th June 1827.)

परिपूर्ण हुई। * लेकिन कहे हुए राज्यकी सीमाके निर्द्दशके समय देखा गया, कि कुछ सन्देहमूलक बातोंकी उस समयतक भी मीमांसा नहीं हुई; उन बातोंकी मीमांसा होना पहला कर्त्तव्य था। चुमकोंड़, अनन्दपुर मखवाल और गुरु गोविन्दके सगोत्रोद्भूत प्रतिनिधिवर्ग या "सोधी" सम्प्रदायके अधिकृत अन्यान्य स्थानोंमें अधिकारके हकसे रणजित् सिंहने दावा किया। उन्होने ओहदानियापर भी आधिपत्य फैलानेका अभिलाष किया; कारण, कई एक वर्ष पहले यह स्थान स्वत्वके अधिकृत होनेके कारण, वह वहांसे विताड़ित हुए थे। उस समय फीरोजपुर एक सन्तानहीन विधवाके अधीन था; रणजित् सिंहने वहां आधिपत्य फैलानेकी चेष्टा की। इसके बाद अहलूवालियोंका नगरसमूह अपने राज्यभुक्त करनेके लिये उद्योगी हुए। वह और भी अपरापर स्थानोंपर अधिकार करनेके लिये यत्नपर हुए थे, लेकिन उनके विशेष वर्णनाकी जरूरत नहीं है। † फीरोजपुर और फतेहसिंह अहलूवा-

* Government to Resident at Delhi, 4th Oot. 1827.

† Captain Wade to the Resident at Delhi, 20 th jan, 1828 and Capt. Murray to the same, 19th Feb. 1828.

अन्तमें फीरोजपुरके सम्बन्धमें गवरमेण्टने स्थिर किया था, (Government, to Agent at Delhi, 24th Nov. 1838) कि कुछ एकगोत्रोद्भूत उत्तराधिकारी (जिन्होंने स्वत्वाधिकारका दावा किया था) सभी हकदार न होंगे। हिन्दूके आईन।

परिपूर्ण हुई। * लेकिन कहे हुए राज्यकी सीमाके निर्द्धारके समय देखा गया, कि कुछ सन्देहमूलक बातोंकी उस समयतक भी मीमांसा नहीं हुई; उन बातोंकी मीमांसा होना पहला कर्त्तव्य था। चुमकोड़, अनन्दपुर मखवाल और गुरु गोविन्दके सगोत्रोद्भूत प्रतिनिधिवर्ग या "सोधो" सम्प्रदायके अधिकृत अन्यान्य स्थानोंमें अधिकारके हकसे रणजित् सिंहने दावा किया। उन्होंने ओहदानियापर भी आधिपत्य फैलानेका अभिलाष किया; कारण, कई एक वर्ष पहले यह स्थान शत्रुके अधिकृत होनेके कारण, वह वहांसे विताड़ित हुए थे। उस समय फीरोजपुर एक सन्तानहीन विधवाके अधीन था; रणजित् सिंहने वहां आधिपत्य फैलानेकी चेष्टा की। इसके बाद अहलूवालियोंका नगरसमूह अपने राज्यभुक्त करनेके लिये उद्योगी हुए। वह और भी अपरापर स्थानोंपर अधिकार करनेके लिये यत्नपर हुए थे; लेकिन उनके विशेष वर्णनाकी जरूरत नहीं है। † फीरोजपुर और फतेहसिंह अहलूवा-

---

* Government to Resident at Delhi,4th Oot. 1827.

† Captain Wade to the Resident at Delhi, 2o th jan, 1828 and Capt. Murray to the same, 19th Feb. 1828.

अन्तमें फीरोजपुरके सम्बन्धमें गवरमेण्टने स्थिर किया था, (Government. to Agent at Dalhi, 24th Nov. 1838) कि कुछ एकगोत्रोद्भूत उत्तराधिकारी (जिन्होंने स्वत्वाधिकारका दावा किया था) सभी हकदार न होंगे। हिन्दूके आईन।

परिपूर्ण हुई। * लेकिन कहे हुए राज्यकी सीमाके निर्द्धारके समय देखा गया, कि कुछ सन्देहमूलक बातोंकी उस समयतक भी मीमांसा नहीं हुई; उन बातोंकी मीमांसा होना पहला कर्त्तव्य था। चुमकोड़, आनन्दपुर मखवाल और गुरु गोविन्दके सगोत्रोद्भूत प्रतिनिधिवर्ग या "सोधी" सम्प्रदायके अधिकृत अन्यान्य स्थानोंमें अधिकारके हकसे रणजित् सिंहने दावा किया। उन्होने ओहदानियापर भी आधिपत्य फैलानेका अभिलाष किया; कारण, कई एक वर्ष पहले यह स्थान शत्रुके अधिकृत होनेके कारण, वह वहांसे विताड़ित हुए थे। उस समय फीरोजपुर एक सन्तानहीन विधवाके अधीन था; रणजित् सिंहने वहां आधिपत्य फैलानेकी चेष्टा की। इसके बाद अहलूहवालियोंका नगरसमूह अपने राज्यभुक्त करनेके लिये उद्योगी हुए। वह और भी अपरापर स्थानोंपर अधिकार करनेके लिये यत्नपर हुए थे; लेकिन उनके विशेष वर्णनाकी जरूरत नहीं है। † फीरोजपुर और फतेहसिंह अहलूवा-

---

* Government to Resident at Delhi, 4th Oct. 1827.

† Captain Wade to the Resident at Delhi, 20 th jan, 1828 and Capt. Murray to the same, 19th Feb. 1828.

अन्तमें फीरोजपुरके सम्बन्धमें गवरमेंटने स्थिर किया था, (Government, to Agent at Delhi, 24th Nov. 1838) कि कुछ एकगोत्रोद्भूत उत्तराधिकारी (जिन्होंने स्वत्वाधिकारका दावा किया था) सभी हकदार न होंगे। हिन्दूके आईन।

सिखाके पैतृक राज्यपर अधिकारके लिये महाराजने जो दावा किया था, वह प्रत्याख्यात हुआ, लेकिन अन्तमें देखा गया, कि ओहादनीपर अङ्गरेजोंके प्राधान्यस्थापनका भी हक न ठहरा। चुमकौर, आनन्दपुर और मखवालपर लाहोराधिपतिका हक ही स्वीकृत हुआ; कारण, वह स्थान अङ्गरेजोंके अधिकारमें रखना युक्तियुक्त जान न पड़ा। उनके मनमें आया कि स्वधर्म्मावलम्बी शासनकर्त्ता द्वारा ही सिखोंके याजक-सम्प्रदायके क्रिया-कलापका सुचारुरूपसे निर्व्वाह हो सकेगा। * फीरोजपुरके हाथसे निकल जानेपर रणजित् सिंह बहुत विरक्त हुए थे; लेकिन अङ्गरेज लोग सहस्र कण्ठसे उस प्रभुत्व विधायक स्थानकी प्रशंसा करते थे। † वर्त्तमान क्षेत्रमें नये बन्दोबस्तके अनुसार सबने ही समझा था, कि दोनो गवरमेण्टमें विवादकी सम्भावना बहुत विरल है।

असलसे और सिखोंकी पद्धतिके अनुसार परस्पर पृथक हो जानेपर उत्तराधिकारीका हक ध्वंस होता है। जो हो; अङ्गरेजोंकी पद्धति इतनी अनिश्चित है, कि सिखराज्य-सम्पर्कीय अवस्थाससूहमें फीरोजपुरके दावादारोंके अनुकूल कोई न कोई कारण पाया जा सकता है।

* Government to the Resident at Delhi, 14th November 1824.

† सन् १८२८ ई०में रणजित् सिंहने जिसका रमणीके लिये फीरोजपुरके गढ़ और विख्यात दुर्गका पुनरुद्धार किया। कप्तान मरेने इसका उल्लेख किया है। एक दरबार महलमें

कुलनाशकी आशङ्कासे इस परिवारके प्रधान मनुष्यकी अपेक्षा बालिकावृन्दकी माताने अधिकतर क्रुद्ध हो सन्तानोंके साथ शतद्रुके दक्षिण भागनेकी अभिसन्धि की। उन्हें लौटा लानेके लिये अनिरुद्धचन्द्र आदिष्ट हुए; लेकिन वह खुद ही भाग गये; सुतरां उनकी सब सम्पत्ति अवरुद्ध हुई। दुःखसे और विरक्तिसे माताकी मृत्यु हुई; अस्त्र-साहाय्यसे सिंहासनपर फिर प्रतिष्ठित हो छोटे राज्यके पुनरुद्धार साधनके लिये पुत्रने अङ्ग-रेजोंके साहाय्यकी प्रार्थना की; लेकिन उनकी चेष्टा व्यर्थ हुई। अन्तमें माताकी मृत्युके बाद, पुत्र भी उनके पश्चाद्गामी हुए। संसारचन्द्रके कुछ "असिद्ध" सन्तान भी थे। सन् १८२६ ई०में महाराजने स्वयं दो कन्याओंसे विवाह किया। उनकी अनु-कम्पासे एक पुत्र राजपदपर उन्नीत हुए, पितृराज्यका कुछ अंश पुत्रको प्रत्यर्पणकर महाराजने कुछ प्रतिहिंसा-वृत्तिके चरि-तार्थ करनेकी चेष्टा की। उस वंशके ही समवंश-पर्य्यायकी एक बालिकाके साथ महासमारोहसे हीरासिंहका विवाहोत्सव सम्पन्न हुआ। रणजित्सिंहकी उदारता और महत्वसे विमो-हित हो, अङ्गरेजोंके आश्रित कितने ही राजाओंने इस अवसर-पर महाराजको अभिनन्दन और नज्र दी। *

इसी समय एक अपरिचित मनुष्यने पेशावरके पास का विद्रोह-वह्नि जलाई। उत्तर-भारतके अन्तर्गत बरेली नामक

* मरे कृत "रणजित्सिंह," १४७, १४८ पृष्ठ। (Murray's Runjeet Singh', p. 147, 148,) and Resident at Delhi to Government, 28th Oct. 1828.

इस तरह अङ्गरेजोंके साथ रणजित् सिंहका सम्बन्ध घनिष्ठ हो पड़ा। इस समय वह जम्बूके प्रियतम प्रतिनिधियोंके मतसे ही अनेक स्थलमें निर्भर करने लगे। ध्यान सिंहके पुत्र हीरा-सिंहकी बाल्यावस्थामें ही महाराज उनके भावी महत्वका सञ्चय हृदयङ्गम कर चुके थे। इस बालकका स्वाभाविक सरलतासे और शिक्षा सौजन्यसे वह प्रसन्न हुए। महाराजने उन्हें राजाकी उपाधि दी। उनके पिताने प्रकृत भारतवासियोंकी तरह विशुद्ध वंशपरम्परानिर्दिष्ट स्थानीय किसी राजपरिवारकी कन्याके साथ पुत्रका विवाहकर अपने वंशको विशुद्धता प्रतिपादनमें प्रयासी हुए थे। सन् १८२८ ई०से वह काङ्गडेके शासनकर्ता मृत संसारचन्द्रकी कन्याके साथ इस विवाह-सम्बन्धके सुस्थिरके लिये चेष्टा करने लगे। फतहसिंह अहलूवालियाके पुत्रके विवाहोत्सवपर योगदान करनेके उद्देश्यसे अपनी बहनके साथ जम्बूके शासनकर्त्ता अनिरुद्धचन्द्र लाहोर देखने गये; वहां छिपे भावसे वह पूरीतरह ध्यानसिंहके नजरबन्द हुए। सुतरां नये शासनकर्त्ता अनिरुद्धचन्द्रने बड़ी अनिच्छाके साथ उस विवाहके प्रस्तावमें सम्मति प्रदान की। इस प्रस्तावित विवाहसे

इन विधवा भूम्यधिकारियोंकी सम्पत्तिपर आक्रमण किया था; (Captain Murray to the Agent at *Delhi*, 20th july 1823) राज-प्रतिनिधिगण लुधियानेकी अपेक्षा फीरोजपुरके राजनीतिक और सामरिक सुविधाके सम्बन्धमें बहुत प्रशंसा करते थे। (Government, to Agent at *Delhi*, 30th jan, 1824.)

कुलनाशकी आशङ्कासे इस परिवारके प्रधान मनुष्यकी अपेक्षा बालिकावृन्दकी माताने अधिकतर क्रुद्ध हो सन्तानोंके साथ शतद्रुके दक्षिण भागनेकी अभिसन्धि की। उन्हें लौटा लानेके लिये अनिरुद्धचन्द्र आदिष्ट हुए; लेकिन वह खुद ही भाग गये; सुतरां उनकी सब सम्पत्ति अवरुद्ध हुई। दुःखसे और विरक्तिसे माताकी मृत्यु हुई; अस्त्र-साहाय्यसे सिंहासनपर फिर प्रतिष्ठित हो छोटे राज्यके पुनरुद्धार साधनके लिये पुत्रने अङ्ग-रेजोंके साहाय्यकी प्रार्थना की; लेकिन उनकी चेष्टा व्यर्थ हुई। अन्तमें माताकी मृत्युके बाद, पुत्र भी उनके पश्चाद्गामी हुए। संसारचन्द्रके कुछ "असिद्ध" सन्तान भी थे। सन् १८२८ ई०में महाराजने स्वयं दो कन्याओंसे विवाह किया। उनकी अनु-कम्पासे एक पुत्र राजपदपर उन्नीत हुए, पितृराज्यका कुछ अंश पुत्रको प्रत्यर्पणकर महाराजने कुछ प्रतिहिंसा-वृत्तिके चरि-तार्थ करनेकी चेष्टा की। उस वंशके ही समवंश-पर्य्यायकी एक बालिकाके साथ महासमारोहसे हीरासिंहका विवाहोत्सव सम्पन्न हुआ। रणजित्सिंहकी उदारता और महत्वसे विमो-हित हो, अङ्गरेजोंके आश्रित कितने ही राजाओंने इस अवसर-पर महाराजको अभिनन्दन और भेट दी। *

इसी समय एक अपरिचित मनुष्यने पेशावरके पास आ विद्रोह-वह्नि जलाई। उत्तर-भारतके अन्तर्गत बरेली नामक

* मरे कृत "रणजित्सिंह," १४७, १४८ पृष्ठ। (Murray's Runjeet Singh', p. 147, 148,) and Resident at Delhi to Government, 28th Oct. 1828.

स्थानके सय्यद वंशसम्भूत अहमदशाह नामक एक मुसलमान वेतनभोगी सेनापति अमीरखांके अनुचर थे। उस समय महाराष्ट्र और पिण्डारी राजाओंके विरुद्ध जो युद्ध चलता था, उस युद्धकी समाप्तिपर जब उनके प्रभुका सामयिक सैन्यदल भङ्ग हुआ, उसी समय अङ्गरेजोंने अमीरखांको एक अधीनस्थ राजाके नामसे स्वीकार किया; युद्धमें विजय पानेके बाद, यह मनुष्य कर्म्मच्युत हुए। उसी समय सय्यद दिल्ली गये; अब्दुलअजीज नामक वहांके एक धर्म्मप्रचारकने प्रकट किया, कि उन्होंने अहमदको सत्यधर्म्म-निष्ठासे बहुत ज्यादा शिक्षा पाई है, उस समयको प्रचलित धर्म्मोपासनाके सब तरहकी कु-प्रथायें अहमदने निन्दनीय और दण्डाईके नामसे निर्दिष्ट कीं। उन्होंने प्राचीन धर्म्मप्रचारकोंकी धर्म्म-व्याख्याका उल्लेख नहीं किया, एकमात्र कुरानके उपदेशोंकी मनोयोगपूर्व्वक आलोचना करनेपर, वह सबको उपदेश देने लगे। उनकी यशोरश्मि चारो ओर फैली, इस्माईल और अब्दुलहई नामक शिक्षित, फिर भी, स्वतन्त्र-मतावलम्बी दो मौलवी सय्यदके शिष्य और अनुगत आज्ञावाहोंकी तरह उनके अनुरक्त हुए * सय्यदने

---

* मौलवी इस्माईलने सय्यद-अहमदके सम्बन्धमें एक पुस्तक उर्दू भाषामें (उत्तर-भारतकी प्रचलित भाषामें) लिखी। यह ग्रन्थ सदुपदेशपूर्ण और उसका मत समर्थनक्षम है। इस ग्रन्थका नाम,—"तकवियाउलईमान" या धर्म्मको दीवार है; यह ग्रन्थ कलकत्तेमें मुद्रित हुआ है। किताब दो भागोंमें विभक्त है। उसमें पहला हिस्सा ही इस्माईलका लिखा जान पड़ता

प्रचार किया,—सब कामकी आरम्भमें तीर्थयात्रा विशेष मङ्गल-सूचक है। सन् १८२१ ई०में प्रवास-गमनोद्देश्यसे जयोल्लाससे

है; दूसरे हिस्सेका कुछ अंश निकृष्ट है। इससे जान पड़ता है, कि यह किसी दूसरेका लेखनी-प्रसूत है।

सूचनामें (मुखबन्धमें) ग्रन्थकारने यह कहकर प्रार्थना की है, कि,—"जो एकमात्र ज्ञानी और विद्वान् पुरुष हैं, वही ईश्वर-
"वाक्य हृदयङ्गम करनेमें सक्षम हैं। ईश्वरने स्वयं कहा है, कि
"ईश्वरके उपदेशका प्रचार करनेके लिये असभ्य और अज्ञ
"मनुष्योंसे ही एक प्रचारक निर्दिष्ट होता है। उन जगदीश्वरने
"—स्वयं ही इच्छाकर वाध्यताकी राह इतनी सुगम कर रखी
"है। प्रधानतः दो वस्तुयें सबसे पहले प्रयोजनीय हैं। पहला
"एकेश्वर-वादित्वपर विश्वासस्थापन; एक ईश्वरके सिवा
"दूसरे किसीपर भी विश्वासस्थापन न करना, दूसरा, प्रचारकके
"सम्बन्धमें ज्ञानलाभ और उनके प्रति विश्वासस्थापन, यही
"ईश्वरादिष्ट नियमकी वाध्यता या वशवर्त्तिता है। कितने ही लोग "समझते हैं, कि योगिपुरुषोंका वाक्य ही उनका परिचालक
"है। लेकिन एकमात्र ईश्वरवाक्य ही पालन करना पड़ेगा;
"लेकिन शिक्षा पानेके लिये धार्म्मिक उपदेश पढ़ना पड़ेगा;
"क्योंकि वह सब धर्म्मपुस्तकके साथ सम्बन्धयुक्त है।"

इस किताबके पहले अध्यायमें एकेश्वरवादिताकी बात ही लिखी है। इस अध्यायमें योगी, देवदूत प्रभृतिकी प्रार्थना धर्म्मसम्मतके नामसे वर्णित हुई है। इसलामकी उपासनाके जो सब कार्य निर्दिष्ट हुए हैं, वह अनुत्तम हैं; इससे ईश्वर-

जहाजपर चढ़नेके लिये अहमदशाहने कलकत्ते तक परिभ्रमण किया ; उनको वह यात्रा महामहोत्सव-ज्ञापक थी। लेकिन वह शहरमें आ उन्होंने बहुसंख्यक शिष्य-संग्रह किये ; सभा-

---

वाक्यके प्रति पूरी अवमानना दिखाई देती है ;—इस अंशमें उन्होंने सम्प्रदायका वर्णन किया है।" पुराने पौत्तलिकगणने "कहा है, कि वह केवल मात्र शक्ति और छोटे देवताकी पूजा "करते हैं ; वह लोग उपास्य वस्तुसमूहको सर्व्वशक्तिमान्‌के "समपद वाक्यके नामसे स्वीकार नहीं करते ; लेकिन जगदीश्वरने "स्वयं इन सब अधार्म्मिकोंकी बातोंका उत्तर प्रदान किया है ;— "उनके अधर्म्माचरणका शास्तिविधान कर दिया है। इसीतरह "न्टत संन्यासी या मठवासीको ईश्वर समझ उनके प्रति सम्मान "दिखानेसे, क्रस्तान लोग तिरस्कृत हुए हैं। ईश्वर अद्वितीय "हैं ; उनका और कोई सहचर नहीं है ; एकमात्र उनके ही "लिये धूल्यवलुण्ठित हो अभिवादन करना और भक्ति दिखाना "कर्त्तव्य है ; और कोई वैसी भक्तिका पात्र नहीं है।" ग्रन्थ-कारने इसी भावकी अनेक बातें कही हैं। लेकिन अन्तमें वह सन्देहमें निपतित हुए हैं। दृष्टान्तस्वरूप,—मुहम्मद कहते हैं, कि ईश्वर अद्वितीय है ; पिता-मातासे मनुष्य मालूम कर सकता है, कि उसने जन्म लिया है, मनुष्य अपनी माताका विश्वास करता है ; तब भी, देवदूत या ईश्वरके भेजे हुए मनुष्यकी ओर विश्वास स्थापन कर नहीं सकता। दूसरी ओर एक पापी मनुष्यमें भी यदि धर्म्मज्ञान है, तब भी वह एक धर्म्मप्राण पौत्तलिकका अपेक्षा उच्चपदवाच्य है

समिति न करनेतक, उनके कार्य्यकलापको और किसीने इत्तिलात नहीं किया। वह तीर्थपर्यटनको मक्के और मदीने गये, साधारण लोगोंका विश्वास है, कि उन्होंने कुस्तुनतुनिया भी देखा था। लेकिन इस बातका कोई प्रमाण नहीं मिलता। चार साल बाद फिर दिल्लीमें आ धर्मविश्वासियोंको विधर्मियोंके विरुद्ध धर्मयुद्धकी घोषणा करनेके लिये आदेश किया। विधर्मी नामसे उन्होंने केवल सिखोंको ही लक्ष्य किया था, उनके कार्य-कलापसे भी यही जान पड़ता था, लेकिन उनका प्रकृत उद्देश्य पूरी तरह मालूम होता नहीं था। वह इस बारेमें विशेष सतर्क थे, जिसमें अङ्गरेज खफा न हों। लेकिन बहु-विस्तृत जनाकीर्ण देशमें वैदेशिक जातिका प्राधान्य प्रबल होनेपर, अलच्चितभावसे जन साधारणको उत्तेजित करनेमें उन्होंने प्रचुर सुविधा पाई। सन् १८२६ ई०में पांच सौ अनुचरोंके साथ अहमदशाहने दिल्ली परित्याग किया, उस समय ऐसा बन्दोबस्त हुआ था, कि निर्दिष्ट परिचालकके अधीन अपरापर सैन्यदल भी उनका अनुगमन करेगा। पहले प्रभु अमीर खांके वासस्थान "टौंक" नामक स्थानमें वह कुछ दिनोंके लिये रहे। बाद वहांके सामन्तपुत्र उस समयके नवाब भी इन सिद्ध पुरुषके शिष्यदलभुक्त हुए। इन नव-दीक्षित शिष्यने अहमदशाह कुछ वर्षोंकी सहायता पा मरुभूमिकी राहसे सिन्धुदेशके हैदरपुर नामक स्थानमें आये। वहां मीर रुस्तम् द्वारा ... सम्बर्धित हो, वह ... [illegible] ... प्रतीक्षा करने लगे। वह तभी उनके पीछे आ रहे थे। इसके बाद अहमद कन्धारको

ओर गये, लेकिन उनके उद्देश्यपर किसीने विश्वास नहीं किया, या सभी उन्हें भूल गये थे। इसी कारण उस समयके शासन-कर्त्ताने "वारिकणइयोंसे" कोई साहाय्य या उत्साह नहीं पाया; सुतरां गिलजइयोंके अधिकृत प्रदेशकी राहसे वह उत्तरकी ओर गये। सन् १८२७ ई० के आरम्भमें ही काबुल नदी पारकर वह पेशावर और सिन्धुनदके पूर्ववर्त्ती "यूसुफ-जई" सम्प्रदायके अधिकृत पर्व्वतमालाके अन्तर्गत "पञ्जटरमें" आये। *

---

* Compare Murray's "Runjeet Singh" p. 145 145.

गाजीके कहनोंईसे ग्रन्थकार सय्यद अहमदकी अनेक बातें जान सके हैं। एक सम्भ्रान्त मौलवीने भी उनका अनुसरण किया। बाद दोनोने ही टौंक प्रदेशमें सम्मानसूचक पद पाया था। सुंशी शहामत अलीसे भी वह कितनी ही खास खास घटनायें जान सके हैं। पीर मुहम्मद नामक काबुरं एक दृढ़-प्रतिज्ञ और कृतविद्य पठानने ही प्रधानतः उन्ह जरूरी समाचार दिये थे; वह उस समय अङ्गरेजोंके एक कर्म्मचारी थे। वह समझते थे, कि पाकपट्टन, मुलतान और ऊंचे नगरोंके पवित्र सान्निध्यके स्वत्वसे भी मेरी ही बात सच है। वस्तुतः हरेक मुसलमानने ही उनकी धर्म्मनीतिकी यौक्तिकता और उपयोगिता स्वीकार की थी। टौंकके राजा कुछ उत्सवके बहुत [illegible] पुर रघुना- [illegible] बेगमने भी टौंकके रा[illegible] प्रशंसा की [illegible] । धर्म्मभीरु की। [illegible] पाये।

रणकुशल यूसुफजइयोंमें "पञ्जटर" का राजपरिवार कुछ उल्लेख योग्य है। यारमहम्मदखांके षड़यन्त्रसे यूसुफजई लोग सदा सशङ्कित रहते थे। रणजित् सिंहकी अधीनता स्वीकार करनेपर अफगान-सम्राटके आक्रमणका भय यारमहम्मदके दिलसे दूर हुआ था। सुतरां सय्यद और गाजी लोग सशङ्कित जातिके नायकर्त्ताके नामसे सादर गृहीत हुए; सबने ही उनका प्रभुत्व स्वीकार किया। इसी समय एक दल सिख-फौज महाराजके स्ववंशोद्भूत बुधसिंह सिंधानवालाके अधीन अटकसे कई मील उत्तर आकोरोतक आगे बढ़ी। सय्यदने असम्पूर्ण रूपसे अपने सज्जित अनुचरवर्गको उस छोटे सिख-सैन्यदलपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। सिख-सेनापतिने सुरक्षित स्थानसे सैन्यकी परिचालनाकर अरक्षित पहाड़ियोंके शृङ्खलाविहीन आक्रमणको व्यर्थ किया। इस युद्धसे उनका कुछ बलक्षय हुआ; लेकिन वह और किसी युद्धमें शत्रुओंको पराजित कर न सके। सुतरां सय्यदका यशःसौरभ और सैन्यबल दिन दिन बढ़ने लगा। इस समय सय्यद जिससे यूसुफजई राजसमूहकी ओर अनुकम्पादि दिखानेपर वाध्य हों, ऐसे किसी प्रस्तावपर सय्यदको सम्मत करना ही यारमहम्मदखांने युक्ति-युक्त समझा। उन्होंने नीचमना मनुष्योंकी तरह विष-प्रयोगसे सय्यदको मार डालनेकी कोशिश की,—इस अपवादसे

कहते हैं, उनकी वकृता इतनी सार्वजनी हुई थी, कि दिल्लीके दरबारी सय्यद सिपाहसालार वाकी कमरा, उनके मालिकके नाम वायस करते थे

पेशावरके होनवल शासनकर्त्ता दोषी ठहराये गये। सन् १८२६ ई०में यह घटना का सम्वाद पा, उन्होंने कलकत्ता-सहायकी प्रार्थना की। यार-महम्मद शुलतान-से हम-बल और परा जित हुए; जनरल वेनटुरा और युवराज शेरसिंहके अधीन सिख-सैन्यके आ उपस्थित होनेपर, पेशावरने शत्रुके हाथों उद्धार पाया; इसके बाद यार महम्मदके भाई सुलतान महम्मदको यह स्थान प्रदान किया गया। महाराजके लिये लयला नामक प्रसिद्ध घोड़ा लानेका वहानाकर, सिख-सैन्य उस समय उसी ओर बढ़ रही थी। यह घोड़ा "काहार" नामक प्रसिद्ध दूसरे एक और घोड़े का जोड़ी था। लेकिन इससे पहले ही वारिकजइयोंसे "काहार" पा, महाराज बहुत आह्लादित हुए थे। *

सिख-सैन्यने शतद्रु की ओर प्रस्थान किया। सुलतान महम्मदखां और उनके भाई लोग यथासाध्य अपनी जागीर या

*Compare Murray's Runjeet Singh", p. 146, 149. सय्यद अहमदके अनुपरोक्ष विश्वास था, कि यार महम्मदने विष-प्रयोग किया है। उन लोगोंने यह भी कहा, कि अन्तमें गाजि-योंने बहुत कष्ट पाया था। सेनापति सफूरा उन्होंने लयला नामक एक घोड़ा लेनेमें समर्थ हुए थे। लेकिन यह बात सन्देहमूलक [illegible], कि असलमें वह नामका घोड़ा [illegible] किया गया था यह [illegible] वह घोड़ा पहले ही [illegible] ([illegible] pt, Wade to the Resid[illegible]t at Delh[illegible], May 17 th, 1829)

उपनिवेशसमूहकी रक्षा करते रहे। उसकी अवस्था विपद्-सङ्कुल समझ और उस प्रदेशके शासनदण्डकी परिचालना करना सहजसाध्य न समझ, रणजित् सिंहने आज्ञा दी, कि उक्त प्रदेशपर पूरी तरह अधिकार करनेमें कोई दोष न होगा। * लेकिन सय्यद अहमदशाहका प्रभुत्व काश्मीरतक फैला था; अधिकन्तु उस उपत्यका और सिन्धुनदके मध्यवर्त्ती पहाड़ियोंको लाहोरके शासनाधीन रखनेमें अनिच्छा प्रकाश की थी। सन् १८३० ई०के जून महीनेमें अहमदशाहने सिन्धुनद पारकर सेनापति अलार्ड और हरिसिंह नालवा-परिचालित सिख-सैन्यपर आक्रमण करनेकी कल्पना की, लेकिन वहां पराजित होनेपर वह सिन्धुनदकी पश्चिम ओर भागनेपर वाध्य हुए। कई एक महीनोंमें ही वह फिर सैन्यसंग्रह करने लगे और नवदलसे वलवान् हो सुलतान मुहम्मदखांपर आक्रमण किया। वारिकजई युद्धमें पराभूत हुए और सय्यद और उनके "गाजि-योंने" पेशावरपर अधिकार किया। कृतकार्य्यता पानेके साथ ही साथ उनका उल्लास भी क्रमशः वढ़ने लगा। किंवदन्तीके

---

* Capt. Wade to Resident, at Delhi, 15 th September 1830. महाराजने अपनेमें भी वारिकजइयोंके साथ विवादके अनेक कारण पाये थे। "खुटक" नामक दूसरी एक जातिको उन लोगोंने अधीनतापाशमें आवद्ध किया था। इसके सम्बन्धमें रणजित् सिंहने कहा था,—"वजीर फतेहखांने स्वीकार किया है, कि वह लोग लाहोरभावसे ही वास करेंगे। (Capt. Wade to Government, 9th Dec. 1831)

अनुसार मालूम हुआ, कि उन्होंने "खलीफा" नाम प्रचारकर अपने नामका मुद्राङ्कण आरम्भ किया। इस मुद्राके ऊपरी-भागमें निम्नलिखित बातें मुद्रित हुई थीं;—"सत्यनिष्ठ और न्यायपर अहमद,—धर्म्म-स्थापनकर्त्ता; उनकी तलवारको धारसे विधर्म्मियोंका ध्वंस साधित हो।" पेशावरके अधःपतनसे लाहोरमें कुछ भयका सञ्चार होनेपर सिन्धुतीरस्थित प्रदेशोंकी सैन्य-संख्या बढ़ी; कुमार शेरसिंह उसके सेनापति नियुक्त हुए। जिन्होंने स्वार्थपरताके वशवर्त्ती हो धर्म्म-विसर्ज्जन किया था, जिन्होंने धर्म्मकी अपेक्षा स्वार्थसिद्धिको ही श्रेष्ठतर समझा था, वह सब नाममात्रके मुसलमान शासनकर्त्ता भारतीय विजेताके अधीनता-पाशमें आवद्ध होनेसे घृणा करते थे; अधिकन्तु अहमदकी अविवेकतासे उनके अनुचर "यूसुफजई" लोग क्रुद्ध हो उठे थे। वह कृषकोंके उत्पन्न शस्यका दशमांश राजस्वस्वरूप ग्रहण करते थे। ऐसी प्रथाके फैलनेसे असन्तोषका कोई चिह्न ही दिखाई नहीं दिया उन लोगोंको यह मालूम हुआ था, कि हरेक बातोंमें धर्म्म-गुरुका हक वर्त्तमान है। इससे वह लोग सन्तुष्टचित्त हो करप्रदान करते थे। इसके बाद अहमदशाहने एक हीनताका परिचय प्रदान किया, उससे ही अनर्थ हुआ। उन्होंने आज्ञा दी, कि हरेक युवती स्त्रीके विवाहोपयुक्त उम्र पानेपर ही, उनका विवाह करना पड़ेगा; ऐसी आज्ञाके प्रचारित होनेपर अर्थलोलुप अफगान पिता-माताकी आमदनी राह बन्द हुई। अफगान-जाति साधारणतः अर्थ-ग्रहके नामसे प्रसिद्ध है; वह लोग हमेशा सबसे ऐश्वर्य्यशाली मनुष्यको

ही कन्या-प्रदान करते हैं। लेकिन सय्यद अपने दीन भारतीय अनुचरोंको एक एक कुमारी प्रदान करानेके अभिलाषी हुए थे। सच हो या झूठ, सय्यद अहमद उसी अपराधके दोषी ठहराये गये; उनकी कुअभिसन्धिकी बातपर नाना तर्क-वितर्क उपस्थित हुए; सभी सय्यदके विरुद्ध खड़े हुए; फलसे, असन्तोष बढ़ने लगा। सन् १८३० ई० के नवम्बर महीनेके आरम्भमें किसी निर्द्दिष्ट दरपर राजस्वका बन्दोबस्त कर वह सुलतान मुहम्मदको पेशावर प्रदान करनेपर बाध्य हुए। इसके बाद सिखोंके लिये युद्धार्थ सज्जित हो, शतद्रुके पश्चिम किनारे गये। मुट्ठीभर गाजियोंपर ही सय्यद प्रधानतः निर्भर करते थे; वही सुख-दुःखमें पहलेसे अबतक उनकी सहाय-ता करते आते थे। यूसुफजइयोंकी संख्या बहुत कुछ घट गई थी; सुतरां मुजफ्फराबाद और अन्यान्य स्थानके विद्रोही शासनकर्त्ताओंके बलवीर्य्यपर भी वह बहुत कुछ निर्भर करते थे। शेरसिंह और काश्मीरके शासनकर्त्ताकी ऐकान्तिक चेष्टा और यत्नसे पहाड़ी "खां" जातिने शीघ्र ही वश्यता स्वीकार की। तब भी अहमद निवृत्त नहीं हुए; बल्कि निरर ही अविश्रान्त चेष्टा करने लगे। बन्धुके पर्व्वतमालामें घोरतर युद्ध उपस्थित हुआ; पहले कुछ युद्धमें अहमद ही कृतकार्य्य हुए थे; उस युद्धके बाद कुछ समय निरुपद्रवसे बीता। सन् १८३१ ई० के मई महीनेके आरम्भमें बालाकोट नामक स्थानमें अहमद फिर आक्रान्त हुए; एकाएकके हमलेसे वह चौंक पड़े; सैन्यने उनपर टूट उन्हें मार डाला। यूसुफजइयोंने शीघ्र उनके प्रतिनिधिको निताड़ित किया, गाजी लोग देश

वहल देशदेशान्तर निकल गये; सय्यदका परिवार टौंकके नवावके पास आश्रय पानेकी आशासे हिन्दुस्थान गया। टौंक नवाव सय्यदके एक बड़े बन्धु थे; सय्यद-परिवारने समझा,-नवाव उन्हें महासमादरसे और सम्मानके साथ आश्रय प्रदा करेंगे। *

इस समय रणजित् सिंहकी यशःप्रभासे दिग्‌दिगन्त उद्भा सित हुआ। भिन्न देशवासी राज्य उनसे वन्धुत्वस्थापनके लिये व्याकुल हो पड़े। सन् १८२९ ई०में बलूचस्थानके रा प्रतिनिधिने आ सिख-राजको घोड़ा नज्रप्रदान किया। उ समय हरान्द और दाजिल नामक दोनो सीमान्त प्रदेशोंप भावलपुरके करद राजाने जबरदस्ती अधिकार किया था बलूच-राजप्रतिनिधिकी एकान्त इच्छा थी, कि वह दोनों प्रदेश "खां" शासनकर्त्ताको फिर प्रत्यर्पण किये जावें। †

---

* Captain Wade to Resident at Delhi, 21st March, 1831, पूर्व्व-पूर्व्व-वर्ष और इस सालका और दूसरी तारीखोंका पत्र भी देखना चाहिये। मेरे विरचित "रणजित् सिंह, १५० पृष्ठ देखना चाहिये। (Compare Murray's 'Runjeet' Singh, p. 150) सय्यदका "खलीफा" उपाधि ग्रहण, अपने नाम मुद्राङ्कण और भारतीय अनुचरोंको यूसुफजई कुमारी प्रदान,—सय्यदके अनुचरोंने यह सभी नामञ्जूर किया था।

† Captain Wade to the Resident at Delhi, 3rd May, 1829 and 29th April, 1830, उस समय हारान्द बहुत प्रसिद्ध था। (See 'Munshee Mohun Lal's Jou-

हिरातके शाह महम्मदके साथ भी महाराजको चिट्ठी-पत्री चलती थी। * युवक सिन्धियाके विवाहमें उपस्थित रह उन्हें सम्मानित करनेके लिये सन् १८३० ई०में गवालियरकी वैजाबाईने महाराजको निमन्त्रण दिया। † इसी समय अङ्गरेजोंके मनमें एक सन्देह उपस्थित हुआ। उन लोगोंने समझा, कि महाराज रूस-राजके साथ सन्धि-संस्थापनके लिये लिखापढ़ी करते हैं। ‡ सुतरां अङ्गरेजोंने भी महाराजकी खुशामद

---

rnal, under date 3rd March, 1836) भावलपुरका इतिहास पढ़नेसे मालूम हुआ, कि अपरापर कई एक मनुष्योंकी विश्वासघातकतासे नवाबने यह स्थान पाया था। प्रबन्धके सब राज्योंके पश्चिमसे जब वहावलखां वञ्चित हुए, तो इस इस स्थानके पुनराधिकारका भार सेनापति बेरट्राके हाथ समर्पित हुआ। (ग्रन्थकारने उन कर्म्मचारीसे ऐसा ही विवरण सुना था।)

* दिल्लीके रेसिडएटके लिये कप्तान वेडका लिखा पत्र, —तारीख, सन् १८२६ ई० की २१ वीं जनवरी, और १८३० ई० की ३ री दिसम्बर।

† दिल्लीके रेसिडएटके लिये कप्तान वेडका पत्र, सन् १८३० ई० की ७ वीं अपरेल। ऐसा कह महाराजने निमन्त्रण लेनेसे इनकार किया, कि जब उनके पुत्रका विवाह हुआ, तो सिन्धिया लाहोरमें नहीं थे।

‡ सन् १८३० ई० की २८वीं अगस्तको दिल्लीके रेसिडएटके लिये कप्तान वेडका लिखा पत्र।

आरम्भ की; उन लोगोंने कहा,—लाभजनक वाणिज्य-व्यवसा और न्याय्य अधिकारका विस्तारकर, उद्देश्य-साधनके लि ऐसी खुशामदकी जरूरत है;—स्वार्थसाधनोद्देश्यके लिये ऐसे खुशामद कभी निन्दनीय नहीं।

सन् १८३१ ई० में भारतके गवरनरजनरल लार्ड विलियम वेण्टिङ्क शिमले आये। गवरनरजनरलका कुशलक्षेम सुननेके और ब्रिटिश गवरमेण्टकी उन्नतिकी कामनासे, रणजित् सिंहका ऐकान्तिक अभिप्राय प्रकट करनेके लिये, सिख-राजप्रतिनिधि-वर्ग गवरनर-जनरलके साथ मुलाकातकी प्रतीक्षा करने लगे। ग्रीष्म ऋतुका प्रखर उत्ताप असहनीय हो गया, सुतरां गवरनर-जनरल लाहोरके दरबारमें प्रतिनिधि भेज लोकाचार-धर्म्म रखनेमें समर्थ नहीं हुए। लेकिन महाराजको धन्यवाद देनेके लिये लुधियानेके राजनीतिक प्रतिनिधि कप्तान वेड पत्रवाहकके रूपमें भेजे गये। यही स्थिर करना प्रतिनिधिका प्रधान कर्त्तव्यरूप निर्द्दिष्ट हुआ था, कि रणजित् लार्ड विलियम वेण्टिङ्कके साथ मुलाकात करनेके इच्छुक हैं या नहीं, या उनसे मुलाकातके लिये किसी तरहका प्रस्ताव करनेकी भी इच्छा करते हैं या नहीं। गवरनर-जनरलने समझा था, कि इस विषयमें अङ्गरेज-राजप्रतिनिधिके अग्रणी होनेकी जरूरत नहीं है। उपयाचकसे देशीय सामन्तके साथ मुलाकात करने जाना, अङ्गरेजोंके लिये मानहानिकर है। * लोगोंके मनमें यह

* सन् १८३१ ई० की २८वीं अप्रेलका कप्तान वेडके लिये गवरमेण्टका पत्र। मरे-विरचित रणजित् सिंह, १६२ पृष्ठ। (Murray's 'Runjeet Singh,' p. 162.)

बहुमूल्य करना ही गवरनर-जनरलका प्रधान उद्देश्य था, कि दोनो राज्यमें पूरी एकता वर्त्तमान है; लेकिन महाराज अपना प्रभुत्व दृढ़ करनेके लिये यत्नवान हुए। प्रबल क्षमताशाली प्रधान प्रधान अङ्गरेज शासनकर्त्ताओंने, उन्हें ही "खालसाके" प्रकृत नेताके नामसे स्वीकार किया,—उन्होंने सिख-जातिको यह बात समझानेकी चेष्टा की थी। युवराज खड्गसिंहका स्वत्व-प्रभुत्व स्वीकार करनेके लिये जिन्होंने भिन्नमत प्रकाश किया था वह सुचतुर शासनकर्त्ता हरिसिंह उनसे अलग थे। भावी उत्तराधिकारी खुद भी सिख-जातिका मनोभाव जानते थे। एक साल पहले उन्होंने बम्बईके शासनकर्त्ताके पास पत्रादि लिखना आरम्भ किया; उद्देश्य था—अन्त:सारशून्य सुख्यातिपूर्ण उत्तरादिसे उनके दिलमें शायद किसी आशाका सञ्चार हो सकता है। * रणजित् सिंहने उनसे एक सम्मिलनका प्रस्ताव किया, सन्

---

* इन पत्रादिके सम्बन्धमें फासि राजके मिकत्तरने सन् १८६० ई० की ६ठीं जुलाईको बम्बईके पोलिटिकल सिकत्तरके पास जो पत्र भेजा था, उसे ही देखना चाहिये।

रणजित् सिंह स्वयं हरिसिंहके शत्रु थे; यह किसी तरह विश्वासयोग्य नहीं है, कि अनुगत भृत्यने प्रभुके प्रति विश्वासघातकताचरण किया था। लेकिन हरिसिंह एक धर्मप्राण सिखके नामसे परिचित थे, वह एक उच्चाशय पुरुष थे खड्गसिंह सदा ही अपनेको विपदसङ्कुल समझते थे; सिंहासन पानेके सम्बन्धमें भी उन्हें सन्देह था रुपर नामक स्थानके सम्मिलनमें रणजित् सिंहकी दयताकी बात, एम. लाईने अति-

१८३१ ई० के अक्टोबर महीनेमें शतद्रु के किनारे रुपार नामक स्थानमें उनका सम्मिलन सङ्घटित हुआ। इसी समय इङ्ग-लण्डके राजाके पाससे कुछ घोड़े नज्र-स्वरूप लाये गये; लफ़्-टनण्ट वारनस सिन्धुनद और इरावतीकी राहसे उसे ले लाहोर पहुंचे। गवरनर-जनरलके साथ कईवार मुलाकात हुई। लेकिन एकवार चिर-बन्धुत्वके निश्चयता-स्वरूप रणजित् सिंहने एक लिखित सनद पानेकी प्रार्थना की और पीछे उन्होंने पाया। * तब लोगोंको यह विश्वास हुआ, कि इसके बाद अङ्गरेज लोग उनके परिवारवर्गकी रक्षणावेक्षण करेंगे; उनके वंशधर लोग अङ्गरेजोंकी सहायता पावेंगे। पहले ही रणजित् सिंहका कुछ उद्देश्य पूरी तरह सफल हुआ। लेकिन सिन्धुदेशके लिये वह विव्रत हो पड़े; उस प्रदेशके सम्बन्धमें कुछ अन्तःसारशून्य षड़-यन्त्रके समाचार उनके पास पहुंचे, उन्होंने अपनी व्यवस्था स्पष्टत: लिखी; विचारकर देखा,—अमीरोंके उपयुक्त सैन्यका अभाव है; उन्होंने लफटण्ट वारनसके कार्य्यकलापमें वाधा प्रदान की है; सुतरां अमीर लोग अङ्गरेजोंके प्रति भी सन्तुष्ट नहीं हैं। † सिन्धुके राजाओंके निकट जो प्रस्ताव

रञ्जित भावसे वर्णन की है; सुतरां मरेके रणजित् ग्रन्थमें प्रिन्सपके विवरणसे उसे सीखना चाहिये। (Princep's Account in Murray's "Runjeet Singh, p. 306.)

* मरे-कृत "रणजित् सिंह" १६६ पृष्ठ। (Murray's "Runjeet Singh, p. 166.)

† Murray's Runjeet Singh,' p. 167. मिन्सियाकी

उठाया गया था, उसका उद्देश्य और मर्म्म गवरनर-जनरलने अनुसन्धित्सु अभ्यागत मित्र राजोंसे कभी प्रकट नहीं किया। शान्तिस्थापनके लिये स्वार्थसिद्धिके उद्देश्यसे वह ऐसी व्यवस्था करनेमें प्रवृत्त हुए हैं,—उन्हें भय था कि शायद रणजित् सिंह उनका उद्देश्य जान प्रस्तावित कार्य्यकलापमें कोई अन्तराय उपस्थित कर देंगे। * रणजित् सिंह शायद समझ सके,—कि उनके प्रति अङ्गरेजोंका विश्वास नहीं है,—वह अङ्गरेजोंके अविश्वास जन हुए हैं, या इस विषयमें शायद उनका कोई विश्वास नहीं था। जो हो, सिन्धुनदमें वाणिज्यपोत चलनेके लिये महाराजको पक्षभुक्त करना जरूरी था; लेकिन उस विषयमें बहुत दिनोंतक कल्पना ही कल्पना चलती रही और उस पक्षमें अङ्गरेज कर्तृपक्षगण बहुत दूर आगे बढ़े थे। उस क्षेत्रमें अङ्गरेज लोग यदि किसी बातके छिपानेकी चेष्टा न करते,

---

सैन्यके सम्बन्धमें रणजित् सिंहका यह विवरण दाव्वा और मियानी विजयीके लिये सन्तोषजनक नहीं है, यद्यपि महाराजने उनकी साहसिकताकी निन्दा नहीं की, लेकिन उनकी शिक्षा और चालचलनकी निन्दा की है। जो हो, सन् १८३८ ई० में शाह शुजाके आक्रमणमें ही रणजित् सिंहके ऐसे सिद्धान्तकी सफलताका परिचय पाया गया है।

मिस्टर प्रिन्सपकी हिस्टरी-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वह उस समय गवरनर-जनरलके साथ थे।

तो ब्रिटिश गवरमेण्टकी मर्य्यादा अक्षुण्ण रहती,—कर्म्मपचगण नीतिसङ्गत ही काम करते थे।

परिव्राजक मूरक्राफटने अच्छी तरह समझा था, कि अङ्गरेजोंके वाणिज्य-विषयकी सुविधाके लिये सिन्धुनद बहुत उपयोगी है। सिन्धुनदमें वाणिज्य-पोतकी परिचालना कर सकनेपर, धीरे धीरे वाणिज्यका श्रीवृद्धिसाधन होगा। * सिन्धुनद और शाखा-नदी-समूहमें वाणिज्यपोतकी परिचालनाकी प्रस्ताव भारत-गवरमेण्टने अनुमोदन किया; अधिकांश लोगोंका जिसमें सुमङ्गल हो, जिसमें अधिकांश लोग धनैश्वर्यशाली हों, इस हितवाद-प्रथाके प्रचारकोंने भी भिन्नमत प्रकाश नहीं किया। राजा विलियमकी दी नजरकी चीजोंके जलपथसे रणजित् सिंहके लिये भेजनेका यह उद्देश्य था, कि उसके द्वारा कौशलसे सिन्धुनदमें वाणिज्य-व्यवसाय-सम्बन्धी अभिज्ञता मिल सकेगी लेफटेण्ट बरनसकी परीक्षाके फलसे यह स्थिरीकृत हुआ और विलियम वेण्टिङ्कको भी ऐसा ही विश्वास हुआ, कि गङ्गा नदीके वाणिज्य-व्यवसायके लाभालाभकी अपेक्षा, सिन्धुनदमें वाणिज्य-व्यवसाय चलानेसे अधिक लाभकी सम्भावना है। † उनके मतसे विश्वासका और भी प्रकृष्ट कारण था; उनका विश्वास था,—एक समय पश्चिम देशीय उपत्यका, पूर्व्वदेशीय स्थानकी

---

* मूरक्राफटका भ्रमण-वृत्तान्त। (Moorcroft, Travels p. 338.)

† Government to Colonel Potinger, Oct. 22nd, 1831, and Murray's 'Runjeet Singh', p. 153.

तरह सनाकीर्ण था। उन्होंने थोड़ी देरके लिये विचारकर देखा, कि राजनीतिक अन्तराय उपस्थित होनेपर, अलकाज-न्वरा-निसेवित नदीसमूहसे वाणिज्य-व्यवसाय निर्व्वाचित हुआ है, वृटिश-गवरमेराटकी तरह विधि-व्यवहारके फलसे, प्रभुत्व प्रचार करनेमें समर्थ होनेपर, वह सब विघ्न-विपत्तियां एक एक-कर अन्तर्हित होंगी। * अतएव वाणिज्यकी सुविधाके लिये सब लोगोंके उपकारार्थ सिन्धुनदमें वाणिज्य-पोत चलानेकी व्यवस्था और मन्त्रणा स्थिर हुई।

रणजित् सिंहको मुलाकातके कुछ पहले गवरनर-जनरलने कर्नल पटिञ्जरको हैदरावाद जानेकी आज्ञा दी। सिन्धुदेशके निम्नतर अंशमें वाणिज्यपोतके आनेजानेकी सुविधाके लिये निर्द्दिष्ट दारमें करप्रदान करनेकी व्यवस्थाकर सिन्धुदेशके अमीरोंसे बन्दोबस्तका भार उनपर अर्पित हुआ था। † इसकी दो महीने बाद, सन् १८३१ ई०के अन्तमें उन्होंने महाराजको इस मर्म्मका एक पत्र लिखा, वाष्पीय वोट देखनेके लिये महाराजने पहले जो इच्छा प्रकाश की थी, वह उनको मार्ज्जित बुद्धिका परिचायक था। दो राज्योंमें वाणिज्यके सम्बन्धमें दृढ़ता और घनिष्ठता सम्पादनकी मन्त्रणा चलती थी, सुतरां शीघ्र ही उनकी इच्छा पूरी होगी। इसी समय कप्तान बेह सिन्धु देश भेजे गये. कर्नल पटिञ्जर जिस उद्देश्यसे वहां भेजे गये थे, उसे समझा देना उनका प्रधान उद्देश्य

---

* Government to Col. Pottinger, 22 nd Oct, 1831.

† मरे-कृत "रणजित् सिंह" १६८ पृष्ठ।

था। रणजित् सिंहके दिलमें आया,—सिन्धु तीरस्थ वारिकण- इयोंके वही एकमात्र अधीश्वर हैं। सुतरां-सिन्धुदेशके दक्षिण- पूर्व्व प्रदेशस्थ अमीरोंके स्वत्वकी अपेक्षा इस प्रदेशमें उनका स्वत्व ही प्रबल है। सुतरां उन प्रदेशोंके अपने राज्यके अन्त- र्गत कर लेनेके लिये महाराज यत्नपर हुए। *

जब कप्तान वेडने अङ्गरेजोंकी सुविधाके लिये शतद्रुमें वा- णिज्य-बोट चलानेकी अनुमति प्रार्थना की, तो रणजित् सिंहकी मानसिक गति ऐसी ही रही। महाराजने स्वीकार किया सही, वह बहुत प्रसन्न हुए; लेकिन उसी समय उनके मनमें उदय हुआ,—अङ्गरेज लोग सिन्धुदेशकी राहसे निरापद्पूर्व्वक आनेजानेका पथ तय्यार करनेके लिये उद्योग करते हैं। करनल पटिञ्जरके साथ कुछ दल सैन्य तय्यार थी—इसके लिये उन्होंने पूछा और वह बहुत शीघ्र अमीरोंके ध्वंस साधनके लिये बार बार इच्छा प्रकाश करने लगे। † इसके बाद और भी प्रमाणित हुआ,—जब करनल पटिञ्जर अङ्गरेजोंकी ओरसे अपरापर सामन्तोंके साथ बन्धुत्व-बन्धनमें आबद्ध हो रहे थे, उस समय लाहोर राज्यमें वस्तु संग्रहार्थी और "तालपुर" सम्प्रदायने विवाद-संघटनो- द्देश्यसे हो मानो महाराजने मीरपुरके मोर अलीमुरादको उस समय डेरागाजीखां द्वारा देनेका प्रस्ताव उठा

* रणजित् सिंह सदा ही ऐसी युक्ति देखते थे। (Capt wade to Govt. 15th Jan. 1837.)

† Capt. wade to Governmet, 1st and 18th Feb. 1832.

था। ‡ लेकिन उन्होंने देखा, कि गवरनर-जनरल उद्देश्य-साधनमें कृतसंकल्प हुए हैं, सुतरां वह सिन्धु नद और शतद्रुमें लोगोंके मङ्गलके लिये वाणिज्य बोट चलानेकी अनुमति देनेपर स्वीकृत हुए। इस नवव्यवस्थाको देखनेके लिये उन्होंने मिथनकोटमें एक अङ्गरेज-कर्म्मचारीका वासस्थान निर्द्दिष्ट कर दिया। * यह भाव प्रकाश करनेकी महाराजने कभी इच्छा नहीं की, कि वह बहुत दिनोंके मित्रोंसे विवादमें प्रवृत्त हुए हैं। अङ्गरेजोंकी वाणिज्य-नीतिके प्रभावसे उनकी राजनीतिक क्षमता बहुत घट गई है और इसलिये वह शिकारपुरके आक्रमणका सङ्कल्प कुछ दिनोंके लिये परित्याग करनेपर बाध्य हुए हैं,—कप्तान वेडसे इस बातको छिपानेके लिये महाराजने कभी चेष्टा नहीं की। †

---

‡ Captain wade to Government, 21st Dec. 1831, and col. Pottinger to Government, 23rd Sept 1837.

* द्वादश और त्रयोदश परिशिष्ट देखना चाहिये। पहले चीजोंके महसूलकी फिहरिस्त तय्यार करनेकी बात उठी। इसके बाद हरेक नावके लिये कर लगा देनेका बन्दोबस्त ही ठीक समझा गया। हिमालयसे समुद्रतक राजस्वका परिमाण, ५७० रुपये निर्दिष्ट हुआ। उनमें लाहोर-गवरमेण्ट, शतद्रुके दक्षिण तीरस्थित राज्यके लिये १५५ रुपये ४ आना और पश्चिम किनारेके राज्यके लिये ३९ रुपये ५ आने १ पाई पावेगी—यही बन्दोबस्त हुआ। (Govt. to Capt. wade, 9th June, 1834, and Capt. wade to Govt. 13th Dec. 1835.)

† Capt Wade to Government, 13th Feb. 1832.

राजत्व करनेमें समर्थ हो सकते है। वृथा आशासे महाराज उन्हें आमन्त्रित करने लगे; अङ्गरेजोंने इधर बार बार उन्हें सतर्क कर दिया। सुतरां भूतपूर्व सम्राटकी सब आशायें निर्मूल हुईं। * सन् १८३१ ई० में उन्होंने फिर अस्त्रधारण किया; तालपुरके अमीरलोग अङ्गरेज-प्रतिनिधियोंकी उपस्थितिसे आन्तरिक घृणा प्रकाश करते और वह लोग नाममात्र शाह शुजाके प्रस्तावित विषयपर उत्साह प्रद न करते थे। † रणजित् सिंहके साथ सन्धि-स्थापनका प्रस्ताव चलने लगा। इसी समय सिन्धुदेशके लिये अङ्गरेजोंके साथ रणजित् सिंहका भी मनोमालिन्य हुआ; शाह शुजाके न्याय सिंहासनके पुनरुद्धारके लिये सहायता करनेमें वह अनिच्छुक थे। सिख-जातिने फारिस राजकी सीमान्त और समुद्रकिनारेतक राज्य फैलानेकी मन्त्रणा की। उस समय रणजित् सिंहने प्रस्ताव किया, कि समग्र अफगानस्थानसे गो-हत्या-निवारण हो और सोमनाथके मन्दिरका सिंहद्वार यदि पुराने मन्दिरमें पुनः प्रतिष्ठित हो, तो बहुत उपकार साधित होगा। शाह इन सब बातोंका अनुमोदन करनेमें सम्मत नही थे; वह तरह तरहके बहानेकर महाराजके उस प्रस्तावकी उपेक्षा करने लगे। रणजित् सिंहको याद दिलाकर शाहने कहा,—उनके प्रियमित्र अङ्गरेज लोग बेरोक गोहत्या करते हैं और ऐसी दैववाणी भी सुनी गई है, कि यवनो द्वारा

* Government to Resident at Delhi, 12th June, 1829.

† Capt. Wade to Government, 9th Sept. 1831.

की, कि वह कृतकार्य्य होनेपर उन लोगोंके प्रस्तावपर सम्मत होंगे। * रणजित् सिंहसे शाहने एक प्रस्ताव किया,—यदि वह सैन्य और अर्थ द्वारा साहाय्य करें, तो प्रत्युपकारस्वरूप पेशावर और सिन्धुनदके उसपार स्थित नगरसमूह शाह उन्हें अर्पण करेंगे। इससे रणजित् सिंहका आधिपत्य विस्तृत होगा, अधिकन्तु कोहेनूर हीरेके लिये वह महाराजको एक त्यागपत्र प्रदान करेंगे। महाराज चटपट कर्त्तव्य स्थिर कर नहीं सके; वह पेशावरका अतिरिक्त हक पानेके अभिलाषी थे सही, लेकिन ऐसा विचारकर महाराज भीत हो पड़े, कि कृतकार्य्यता पा सकनेपर शाह अपने दुरभिसन्धिसाधनकी चेष्टा करेंगे। † अधिकन्तु उन्होंने अङ्गरेजोंका प्रकृत उद्देश्य जाननेकी निश्चित इच्छा की; इसी उद्देश्यसे रणजित् सिंहने अङ्गरेजोंसे कहा, कि युद्ध-विग्रहादि सब कामोंसे ही वह लोग पक्षमुक्त रहेंगे, उन्होंने और भी कहा, कि अङ्गरेजोंके प्रति वह कभी विश्वास-स्थापन कर नहीं सकते। तीन पक्षमें प्रत्येकका ही विभिन्न और विपरीत उद्देश्य है, अधिकन्तु परस्परके उद्देश्यसे परस्पर विरुद्ध-धर्म्माक्रान्त है। वाणिज्यनीतिके अनुसार अङ्गरेजोंने इस बातपर एक आपत्ति उठाई थी, कि न्याय्य-स्वत्वाधिकारी राजनीतिज्ञ अधीश्वरके हृतराज्यके पुनरुद्धारके लिये साहाय्य [illegible] रणजित् सिंह सिन्धुदेशके अमीरोंके साथ विवादमें [illegible] रणजित् सिंहका [illegible] —उन्होंने

* Capt. Wade to Government, 10th Dec. 1832.

† Capt. Wade to Government, 31st Dec. 1832.

उक्त प्रतिवादका प्रत्याख्यान किया। भूतपूर्व सम्राटने सोचा कि उन्हें पूरी तरह करायत्त करना या शासनाधीन रखना ही महाराजकी प्रकृत इच्छा है। सुतरां उनकी सिन्धुयवच्छेदकी सन्धि व्यर्थ हुई। * दूसरी ओर तालपुरके अमीरोंने कपटाचारसे क्रमशः शिकारपुर-का उद्धार साधन करनेका विचार किया। इस उद्देश्यसे वह लोग इस ओर चेष्टा करने लगे, जिससे सिख-शासनकर्त्ता और शाहमें परस्पर सन्धि स्थापित न हो। †

रणजित् सिंहके साथ शाह शुजा किसी तरहके सन्तोषप्रद सन्धि-शर्तपर स्वीकृत हो नहीं सके। लेकिन प्रधानतः शिकारपुरके राज्यके सम्बन्धमें उनकी निरपेक्षता बहुत ही जल्दी जान पड़नेपर, रणजित् सिंहके साथ शाहने एक सन्धि-स्थापन की; इससे सिन्धुदेशके दूसरे किनारेके प्रदेश और सिखोंके अधिकृत राज्यसमूह सभी महाराजके हाथ समर्पित हुए। ‡ अङ्गरेजोंने भी उनके कामका और प्रतिवाद नहीं

---

* Capt. wade to Government, 9th April, 833.

† Capt. wade to Government, 7th March, 1833.

‡ इस सन्धिने ही सन् १८३८ ई० में त्रिपक्षीय सन्धिकी दीवार तय्यार की थी। सन् १८३३ ई० के मार्च महीनेमें यह सन्धिपत्र लिखा गया था, लेकिन अन्तमें उसी सालके अगस्त महीनेमें सभी इस सन्धिशर्तपर स्वीकृत हुए। (Capt. wade to Government 17th June, 1834)

किया; अधिकन्तु उन्हें आश्वास प्रदान किया गया, कि निर्दिष्ट दरमें उनके परिवारवर्गको हर साल वृत्ति दी जावेगी; सुतरां प्रत्यावर्त्तनके लिये पहलेकी तरह फिर उनके प्रति किसी तरहकी कठोर आदेशाज्ञा प्रचारित नहीं हुई। * अधिकन्तु उनकी सालाना वृत्तिका तीसरा हिस्सा उन्हें अग्रिम दिया गया। उसी समय राजनीतिक प्रतिनिधि लोगोंके मनमें ऐसा विश्वास उत्पन्न करनेके अभिलाषी हुए, कि शाहके कार्य्यकलापमें वृटिश गवरमेण्टका कोई स्वार्थ नहीं है, पूरी तरह निरपेक्षता अवलम्बन करना ही गवरमेण्टका उद्देश्य और उनकी स्थूलनीति थी। उन्होंने और भी कहा,—दोस्तमुहम्मदको भी उनके पत्रके उत्तरमें उन्हें निश्चयता प्रदान की जा सकती है। † मुहम्मद आजम खांकी मृत्युके बाद दोस्तमुहम्मद समग्र काबुलके अधिपति हुए थे; लेकिन अङ्गरेजोंके कार्य्यकलापसे वह सहसा भीत हो उठे। सन् १८३२ ई०में उन्होंने सिन्धुदेशके अमीरोंको सतर्ककर कहा, कि शाह शुजा फौजके साथ शिकारपुरकी रक्षाके लिये निश्चय हो आते हैं, सुतरां अमीरलोग इधर विशेष दृष्टि रखें, जिसमें शिकारपुरमें किसी तरहकी वाणिज्य-कोठी तय्यार होने

---

* Government to Capt. wade, 19th Dec 1832.

† Government to Capt Faithful, Acting political Agent 13th Dec. 1832, and to Capt. Wade. 5th and 9th of March, 1833

न पावे। * इसके बाद प्रचलित रीतिके अनुसार वह भारतके और अधीश्वरोंका मनोगत भाव जाननेके लिये उनसे पत्रालापमें प्रवृत्त हुए।

सन् १८३३ ई० के फरवरी महीनेके मध्यभागमें शाह शुजाने लुधियाना परित्याग किया। उस समय उनके साथ २,००,००० दो लाख रुपयोंकी सम्पत्ति और इनके आज्ञाधीन तीन हजार सशस्त्र फौज थी। † भावल खांसे उन्होंने एक तोप और कई एक ऊंट पाये। इसके बाद मई महीनेके मध्यभागमें सिन्धुनद पारकर उन्होंने निर्विघ्न शिकारपुरमें प्रवेश किया।

---

* भावलपुरके इतिहाससे मालूम हुआ, कि दोस्तमुहम्मदने ऐसा आदेश प्रचारकर अमीरोंको विचलित किया था। इससे सिद्धान्त किया जा सकता है, कि वाणिज्यके बहाने काबुलतक सब देशोंमें पहले जो सब "रेसिडेन्सी" या "कोठियां" बनवाई गई थीं, वह धीरे धीरे सैनिक-विभागीय दुर्ग या "छावनी"में परिणत हुई थीं। दोस्तमुहम्मदका प्रधान उद्देश्य था, कि शाह शुजाको दूर रखें। उन्होंने सोचा,—जबतक लाहौर आक्रान्त न होगा, तबतक अङ्गरेजसे उनको विपदाशङ्का अति विरल है। यह निर्णय करनेके लिये, कि अङ्गरेज लोग शाह शुजाके साथ कितने लिप्त थे, निम्नलिखित ग्रन्थ देखना चाहिये। (See, the 'Asiatic Journal', xix. 38, as quoted by Professor Wilson in Moorcrofts 'Travels', note, p. 340, vol. ii.)

† Capt. Wade to Government, 9th April, 1833.

सिन्धिया लोगोंने उन्हें कोई बाधा नहीं दी सही, लेकिन उन लोगोंने किसी तरहकी सहायता भी नहीं की। अन्तमें उन लोगोने विचारकर देखा,—"अपना वैभव शाहके हाथ सम्प्रदान करनेसे अपना ध्वंस ही अवश्यम्भावी है; सुतरां उन्हें और प्रश्रय न दे, उनके साथ युद्धमें प्रवृत्त होना ही अच्छा है।"* लेकिन सन् १८३४ ई० की ९वी जनवरीको शिकारपुरसे कुछ ही दूर उन लोगोने पूरी तरह पराजित हो अपनी इच्छासे शाह शुजाको नकद ५,००,००० पांच लाख रुपये प्रदान किये और वह लोग विजेताकी उपस्थितिके परिहारार्थ शिकारपुरके लिये सालाना कर देनेमें प्रतिज्ञावद्ध हुए। † इसके बाद शाहने कन्धारकी ओर जा इस नगरके पास ही अवस्थान किया। इसी सालकी १ली जुलाईको दोस्तमुहम्मद और उनके भाइयों द्वारा शाह फिर आक्रान्त हुए; युद्धमें उनकी पराजय हुई। ‡ बहुत दिनो देश-पर्य्यटनकर फारिसराज और हिरातके शाह कमरानसे आवेदन-निवेदनके बाद, उनको सहायतासे शिकारपुरके पुनरुद्धारके लिये शाहे शुजाने और एकबार चेष्टा की। ¶ सन् १८३५ ई० के मार्च महीनेमें शाह फिर लुधियाने लौट आये;

---

* Capt. wade to Government, 25th Aug, 1833 and the Memoirs of the Bhawulpur Family.

† Capt. wade to Governmant, 30th Jan. 1834.

‡ Capt wade to Government, 25th July, 1834,

¶ Capt. wade to Govt 21st Oct. and 29th Dec. 1834, and 6th February 1835

उस समय उनकी नकद और बहुमूल्य सम्पत्तिमें कुल कमोबे
प्रायः दो लाख पचास हजार रुपये थे। *

इधर रणजित् सिंह भी बहुत शङ्कित हुए। उनके मन
आया,—शाह शुजा निश्चय ही उनके बन्धुत्व-व्यञ्जक सन्धिप
और सन्धिके शर्तका परिहार करेंगे। भूतपूर्व्व सम्राटके उस
विषयमें सिद्धि पानेकी सम्भावना थी; सुतरां उनके कामयाब
होनेसे फलोत्पादित हो सकता था, इसमें बाधा देनेके लिये
वह सतर्कता अवलम्बनकी चेष्टा करने लगे। बारद राजाओंके
काबुलकी वश्यता स्वीकारकर अधीनतापाशमें आबद्ध होनेसे
पहले ही वह पेशावरपर आक्रमण करनेमें कृतसङ्कल्प हुए। †
महाराजके पुत्र नौनिहाल सिंहके नाममात्र सेनापतित्वमें और
सर्द्दार हरिसिंहके कर्तृत्वाधीनमें एक दल बड़ी फौजने सिन्धु-
नद पार किया। मन्यके साथ सेनापतिके पदपर प्रतिष्ठित हो
युवराजने सबसे पहले आगमन किया था; सुतरां उनकी
इस उपस्थितिके हेतुवादके अतिरिक्त राजस्व स्वरूप अधिक-
संख्यक घोड़ेका दावा किया गया। पहले मालूम हुआ, कि
यह दावोक्त विषय अनुमोदित होगा, लेकिन सन् १८३४ ई०
के मई महीनेकी ६ ठों तारीखको पेशावरका दुर्ग आक्रान्त
और अधिकृत हुआ। ‡ प्रबल पराक्रान्त हरि सिंहने सुलतान
मुहम्मद खांके साथ अन्तःसारशून्य कपट-सन्धि-प्रस्तावसे उपे-

---

* Capt wade to Government, 19th March, 1836,

† Capt. wade to Government, 17th june, 1834.

‡ Capt. wade to Government, 19th May, 18[illegible]

त्या की। वह अफगानोंके प्रति विद्वेष-भाव प्रकट करते थे; अधिकन्तु यह कल्पना भी उन्होंने उनसे छिपा नहीं रखी, कि पेशावरपार सिख-आधिपत्य विस्तृत होगा। *

इस समय सिख लोग पेशावरके सिवा और जगहोंमें युद्धमें नियुक्त थे। सन् १८३२ ई० में हरि सिंहने अटकके उत्तरकी कुछ मुसलमान जातिको अन्तिम बार पराजित किया; उन्हें दृढ़ शृङ्खलामें आबद्ध रखनेके लिये सिन्धुनदके दक्षिण किनारे एक दुर्ग बनाया। † सन् १८३४ ई०में एक दल सैन्यने डेरा इस्माईलखां पारकर ताक और बन्नू प्रदेशस्थ अफगानोंके विरुद्ध युद्धयात्रा की। लेकिन एक पहाड़ी दुर्गपर आक्रमण करने जा बहुसंख्यक फौज पराजित हुई और एक उच्चपदस्थ सेनानी और ३०० तोग मौसे अधिक सिपाहियोंने युद्धमें प्राणत्याग किया। इस पराजयसे महाराज विरक्त हुए। अङ्गरेज कर्त्तृपक्षोंको खास खास विभिन्न प्रकारके ज्ञातव्य विषयोंका विवरण प्रदान करनेके लिये उन्होंने अपने प्रतिनिधिको आदेश किया। लेकिन पीछे वह लोग महाराजकी सैन्यदलके श्रेष्ठत्वके विषयमें सन्दिहान हो निन्दावादमें प्रवृत्त हुए, इस आशङ्कासे उन्होंने कप्तान वेडको स्मरण कराया, कि पहले भी एक बार ऐसा ही हुआ था; लेकिन अन्तर अविश्वासका कोई कारण उपस्थित नहीं हुआ था,

---

* कई एक काल पहले जब वह लोगोंसे परिचित हुए, तो हरि सिंहको इस रायको पञ्जाबके सभी लोग जानते थे।

† Captain wade to Government, 7th Aug. 1

तबतक उसके अदूरदर्शी कर्मचारियोंने विलम्ब नहीं किया, वस्तुत: जनरल (सेनापति) खेखो और कालाङ्गाका गोर्खाओंका व्यवहार ही पहले व्यापारका प्रकृष्ट दृष्टान्त है। * सन् १८२३ ई०में कटोचके संसारचन्द्रके पोत अपने देशमें लौट आनेपर वाध्य हुए। संसारचन्द्रकी यशोख्यातिसे भावी वंशने कुछ राज कीय सम्मान और आधिपत्य-प्रतिपत्ति पाई थी। इसी कारण लुधियानेकी राहसे आनेके समय, राहमें अङ्गरेज-राजप्रतिनि धियोंने उनकी महासमादरसे अभ्यर्थना की। महाराज हृदय-हीन या निर्मम नहीं थे, या कूट राजनीतिके भी अभिलाषी नहीं थे। इन युवकके आनेपर महाराजने उन्हें ५०,००० पचास हजार रुपयेकी एक जागीर या वोधभूमि प्रदान की। * उसी समय इङ्गलण्डके राजाके लिये ग्रन्थ नक्ल ले उन्होंने एक राजाको कलकत्ते भेजनेका प्रस्ताव किया। सिन्धुदेशपर आक्रमणके समय उन्होंने एक कल्पना स्थिर की थी, उस बारेमें लोगोंको रायका निर्देश करना ही मतलबत: उनका उद्देश्य था। अन्तमें सन् १८३४ ई०के सितम्बर महीनेमें गुप्तरूपसे सिन्ध

---

* Capt. Wade to Govt, 10th May, 1831. शेर इस्माईलखां और उनकी चारों ओरको रास्तेमें फ्रान्साईसोंने लानेके लिये दो सालसे भी अधिक समय लगा था। Capt. wade to Govt 7th and 13th July 1831.

* Capt. wade to Government, 9th Oct, 1833 and 3rd June, 1835.

मजीठिया प्रमुख प्रतिनिधि लोग कलकत्ते भेजे गये ; वह लोग प्राय: डेढ़ साल वहां रहे। *

जब मिष्टर मूरक्राफट लुदकमें रहते थे, (सन् १८२१ ई०) तब उस प्रदेशके सभी रणजित् सिंहके भयसे सशङ्कित थे। काश्मीरके सिख-शासनकर्त्ताने इससे पहले ही राजस्वका दावा किया था। † लेकिन उस हीनबल दूरदेशस्थ जनपदपर पहले किसीने आक्रमण नहीं किया। बाद जम्बूके राजे इरावती और वितस्ताके मध्यवर्त्ती सब पहाड़ी राज्योंका शासन-भार पानेपर, कुछ दिनोंके बाद समझे थे, कि रणजित् सिंहके प्रति उनका प्रभुत्व स्थापित हुआ ; इस समय उन लोगोंका अनुरोध महाराजका उपेक्षणीय नहीं है। जम्बू-राजगणने अपनी क्षमताकी निश्चित उपलब्धिकर अन्तमें काश्मीरपर आक्रमण किया। राजा गुलाबसिंहके किस्तावरके सेनापति जोरावर सिंहने सन् १८३४ ई०में ले नामक स्थानके आभ्यन्तरीय गृहविवादमें योगदान किया, उन्होंने इस समय घोषणा प्रचार की, कि किस्तावरके राजा लोग पहले जिस पुराने राज्यके अधिपति थे, वह अवश्य ही उन लोगोंसे प्रत्यर्पित होगा। अन्तमें उन्होंने दक्षिणप्रदेशोंमें प्रवेश किया ; लेकिन सन् १८३५ ई० तक वह राजधानीमें पहुंच नहीं सके। उन्होंने एक पक्षका अवलम्बनकर उस राज्यके राजाको सिंहासनच्युत किया और

---

* Capt. Wade to Government, 11th Sept, 1834, and 4th April, 1836.

† Moorcroft, 'Travels', i, 420.

उनके बदले उनके राजद्रोही मन्त्रीको सिंहासनपर प्रतिष्ठित किया। पीछे जोरावरसिंहने तीस हजार रुपये वार्षिक राजस्व निर्द्धारण किया; वहांके दुर्गमें एक दल सैन्य स्थापित हुई। अन्तमें हिमालयके उत्तर-पाद-देशस्थित क्रमनिम्न स्थानके क्षुद्र लोगोंपर आधिपत्य फैला, सन् १८३५ ई०के अन्तमें लूटी हुई सम्पत्तिके साथ वह जम्मू आये। हृत-सर्व्वस्व राजाने लासामें चीनराज-कर्त्तृपक्षियोंके सामने अभियोग उपस्थित किया। उनके स्थलाभिषिक्त लोग कायदेके अनुसार राजस्व देने लगे; सुतरां उस अन्यायाधिकारकी ओर किसीकी भी दृष्टि सञ्चालित नहीं हुई। तब काश्मीरके शासन-कर्त्ताने एक अभियोग उपस्थित किया;— गुलाबसिंहकी वाणिज्यनीति प्रवर्त्तित होनेसे नियमित शाल-पशमकी कटतमें बहुत क्षति होती है, लेकिन शीघ्र ही इन विषयकी मीमांसा हो गई। अन्तमें अनुग्रहाकांक्षियोंके क्षमतालाभकी उच्चाकांक्षासे उनका आनुगत्य राजभक्ति और देखनेके लिये भी रणजित् सिंह उनके प्रति सन्दिहान हो उठे। *

पेशावरकी ओर ही रणजित्सिंहके भयका प्रधान कारण वर्त्तमान रहा; लेकिन सिन्धुदेशके सम्बन्धमें आशाकी मोहिनी

---

* Capt, wade to Government, 27th Jan, 1835, and Mr, Vigne, 'Travels in Kashmeer and Tibet', ii, 352; ग्रन्थकारकी हस्तलिखित पत्रिकाके अनुसार इनकी बाक्यावली संशोधित और परिवर्द्धित हुई है। युवराज खड्गसिंह जम्बूके परिवारकी मन्त्रणासे सशङ्क हुए थे। (Capt, Wade to Government, 10th Aug, 1836)

कल्पनासे उनके प्राण नाच उठे। अपनी अपनी क्षमतापर पहले अमीरोंको जो विश्वास था, पराजयके बाद वह विश्वास विदूरित हुआ। शाह शुजाके कन्धारसे पराजित हो लौटनेपर, हैदराबादके शासनकर्त्ताने महाराजसे एक प्रस्ताव उठाया; भूतपूर्व सम्राटके आक्रमणसे रक्षा करनेके लिये स्वीकृत होनेपर हैदराबादके नूरमुहम्मदने महाराजको शिकारपुर देना मञ्जूर किया। * इस प्रस्तावमें भी अङ्गरेज लोग प्रतिवादी हुए बिना रह न सके। अधिकन्तु रणजित् सिंहका भी सिन्धियान लोगोंपर उतना विश्वास नहीं था। उनकी उच्छृङ्खलता-दमनमें कृत-सङ्कल्प हो महाराजने विताड़ित काल्होराओंके एक प्रतिनिधिको सिन्धुनदके उसपारके राजेनपुर नामक स्थानमें वृत्तिभोगीकी अवस्थामें आवद्ध रखा था। † इस समय उन दोनोंके और वारिकजाइयोंके मनमें भीतिके सञ्चारके लिये, शाहके लुधियाने

---

* Captain Wade to Government, 6th Feb. 1835.

† Captain wade to Government, 17th June, 1834. सरफराजखां व्गाम गुलाम शाह "काल्होरा" सम्प्रदाय-भुक्त थे। यह तालपुरियो द्वारा विताड़ित हुए। कावुलसे उन्होंने जागीरस्वरूप राजेनपुर पाया और रणजित्सिंहने उसका संरक्षण किया। कहते हैं, इस राज्यसे १,००,०००) एक लाख रुपये राजस्व अदा होता था; उसमें राजकोषके लिये कुछ अंश स्वतन्त्र रखा जाता था। वस्तुतः इस जिलेका प्रकृत मूल्य ३०,०००) तीस हजार रुपयेसे अधिक नहीं था।

आनेपर उनसे महाराज फिर सन्धिका प्रस्ताव करने लगे। *
लेकिन उनके मित्र अङ्गरेजोंके व्यवहारमें ही बहुत बखेड़ा
उपस्थित हुआ। उनके असन्तोषका यथार्थ प्रमाण देनेके
लिये "सुजारी" डाकूदलने अमीरोंसे जो गुप्त सहायता पाई थी,
उसका दृष्टान्त उन्हें दिखाना होगा। † उन्हें और भी
सप्रमाणित करना पड़ेगा, कि शिकारपुर,—खुरासानके शासनकर्त्ताओंके
अधीन है; ‡ उन्हें दिखाना पड़ेगा,—"मिथनकोट"के
दक्षिण जो निम्नगामी नदी वर्त्तमान है, वह सिन्धुनद
नहीं है—परन्तु वह सन्धिपत्रमें उल्लिखित शतद्रु नदीके नामसे
परिचित है। उनके बन्धुत्वके निदर्शनस्वरूप उस चिरस्मरणीय
वागने अवतक उस नदीके प्रावल्यसे ही ऐसा सौन्दर्य और
अभिनवत्व पाया है। यह नदी ही राहके भूखण्डको उर्व्वरताविधानकर
समुद्रमें गिरी है;—इससे पूर्व्वखण्डको दो मित्र-

---

* Captain Wade to Government, 17th April, 1835, and other letters of the same year. (इसी सालके अन्यान्य पत्रादि।) उस समय भी महाराज कहते थे, कि शाह शुजाकी कृतकार्य्यतासे अङ्गरेज साम्य-नीतिका अवलम्बन करेंगे। इसका उद्देश्य—शायद अहमद शाहके सबसे श्रेष्ठ वंशका महल महाराजके मनमें उस समय भी जाग रहा था। लेकिन उनका दूसरा उद्देश्य, युरोपियन मित्रोंसे उनकी प्रा अभिसन्धि प्रकट करना था।

† Capt. Wade to Govt. 5th Oct. 1836.

‡ Capt. Wade to Govt. 15th Jan. 1837.

राजशक्तिके अधिकृत राज्यसमूह पृथकीकृत होनेपर भी, देखनेसे जान पड़ता है, मानो वह अविभक्त ही हैं। *

लेकिन सिन्धुनदमें वाणिज्य-बोट चलानेके लिये अङ्गरेजोंने सिन्धुदेशके साथ इस मर्म्मकी एक सन्धि स्थापन की थी। सुतरां रणजित् सिंहका वह प्रस्ताव उन्हें अप्रीतिकर जान पड़ा। उन लोगोंने कहा, कि जिसके साथ वह लोग स्वार्थ और बन्धुत्व-सूत्रमें आबद्ध है, उनके प्रति अवथा शत्रुताचरणका प्रश्रय देनेमें वह लोग किसीतरह स्वीकृत नहीं हैं, वह लोग महाराजके उस उद्देश्यसाधनके पूरे प्रतिवादी और उसके लिये वह लोग बहुत दुःखित है। † अतएव वह लोग उसी ओर यत्नपर हुए, जिससे रणजित् सिंह शिकारपुरपर आक्रमणकी चेष्टा परित्याग करें। उन लोगोंने सोचा, कि यह काम बड़े विचारके साथ करना होगा, कारण, हरेक मनुष्यके साथ बन्धुत्व-भावसे रहना, लोगोंके शान्तिविधानार्थ पक्ष अवलम्बन करना और प्रभुत्वकी प्रतिष्ठा ही उनका उद्देश्य था। ‡ अङ्गरेजोंके

---

* Capt. Wade to Govt. 5th Oct. 1836.

† Government, to Capt. Wade, 22nd Aug. 1836. रोमियोंने प्रतिपक्ष अवलम्बनके समय जैसी युक्ति दिखाई थी, ऐसे हेतुवादसे वह याद आती है। उनका बहाना यह था कि विदेशी लोग उनके बन्धुओंको उत्पीड़ित कर न सकेंगे।

‡ Government, to Captain wade, 22nd Aug. 1836

मनमें सदा ऐसा ही भाव जागता रहा। लेकिन इसी स
सीमान्त प्रदेशमें सिख और सिन्धियान लोगोंमें घोरतर विव
उपस्थित हुआ; इससे विपदाशङ्का बढ़ने लगी। सन् १८
ई० में मुलतानके शासनकर्त्ताने, मिथनकोटके दक्षिण सिन्धुनद
पश्चिम-तीरवर्त्ती "माजारी" नामक डकैत जातिका दण्डविध
किया। उन्होंने रोजानके दुर्गको सैन्यसे परिपूर्ण रखनेकी इच्छ
की थी; लेकिन उनके इस काममें महाराज प्रतिवादी हुए।
सन् १८३५ ई० में उन्हें विश्वास हुआ, कि सिखराज्य वा
सिख-दुर्गपर आक्रमण करनेके लिये खैरपुरके अमीर लोग भ
माजारियोंको उत्तेजित करते हैं। अङ्गरेजोंकी धारणा थी—
यह जाति सिन्धुदेशके अधीन है, लेकिन माजारियोंके स्वात-
न्त्र्यके बारेमें वाणिज्य-सम्बन्धीय बन्दोबस्त ही प्रतिपन्न हुआ;
इसलिये, कि वाणिज्य विषयके बन्दोबस्तके अनुसार वह लोग भी
जलकरका कुछ अंश पानेके अधिकारी थे। तब भी अङ्गरेजोंने
अमीरोंसे प्रकट किया,—जिससे वह लोग माजारियोंको शासना-
धीन रखें। अङ्गरेजोंकी यही आशा थी, कि इस उपायसे
उन लोगोंपर रणजित् सिंहके सब अधिकार लोप हो सकते हैं। †
अङ्गरेजोंकी इतनी चेष्टापर भी ऐसा आक्रमण चलने लगा; या
उन लोगोंको ऐसा ही समाचार दिया गया। सन् १८३६ ई०में

---

* Capt. Wade to Govt. 27th May, 1835.

† Government to Capt. Wade, 27th May, 1835, and 5th Sept. 1836; and Government to Col. Pottinger, 19th Sept. 1836.

अगस्त महीनेमें मुलतानके शासनकर्त्ताने रोजानपर अधिकार किया। * बादके अक्टोबर महीनेमें माणारियोंके युद्धमें पराजित होनेपर सिखोंने "कीन्" नामक एक दुर्गपर अधिकार किया। यह स्थान रोजानके दक्षिण अवस्थित और सिख-जातिके राज्यकी सीमासे बाहर है। †

इसतरह रणजित् सिंह बलप्रयोगसे अपनी राह साफ करनेकी चेष्टा करने लगे। लेकिन इसी समय अङ्गरेज लोग भी कूटनीतिसे उन्हें पराजित करनेमें कृतसङ्कल्प हुए। स्थिर हुआ, कि पृथिवीके सर्व्वसाधारणके वाणिज्यकी सुविधाके लिये सिन्धुनदमें वाणिज्य-बोट चलानेके उद्देश्यसे कप्तान वारनेस वाणिज्यके बहाने सिन्धुनदके तीरवर्त्ती प्रदेशोंमें जायेंगे। ‡ उन्हें यह उपदेश दिया गया, कि जिससे महाराजसे प्रकृत उद्देश्य प्रकट न हो, उससे यह भाव प्रकाश करनेके लिये ही उन्हें उपदेश दिया गया, कि एकमात्र वाणिज्य ही उनका उद्देश्य है। वस्तुतः वाणिज्य सौकार्य्यार्थ पहले मिथेनकोटमें ऐसे एक वाणिज्य-बन्दरके प्रतिष्ठित होनेका उपक्रम हुआ था, यह बात भी प्रकट की गई, कि ऐसे ही किसी और स्थानमें वाणिज्य-कोठी बनानेके लिये अङ्गरेज लोग महाराजसे साहाय्यकी आशा करते हैं। ¶ तब भी अङ्गरेज कर्त्तृपक्षीय लोग

---

* Captain Wade to Government, 27th Aug. 1836.

† Capt. Wade to Government, 2nd Nov. 1836.

‡ Government to Captain Wade 5th Sept. 1836.

¶ Government to Capt Wade, 5th Sep. 1836.

सिन्धुदेशके सम्बन्धमें वाणिज्य-नीति और राजनीति, दोनों ही नीतिके अवलम्बनकी चेष्टा करने लगे। जो हो, गवरनर जनरलने कहा, कि इस देशकी अवस्थाकी विशेष आलोचनाकर, उसके फलसे स्थिर हुआ है, कि इस देशके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना पड़ेगा। * उन्होंने और भी कहा, कि अमीर लोग रणजित् सिंहके भयसे अङ्गरेजोंका आश्रय ग्रहण करनेके अभिलाषी हैं। उनकी आशङ्कासे या उनके शत्रुतापरणसे पहले जो सब सन्धिप्रकरण टूट गये हैं, उनको सहायता देनेके लिये वह सब फिर बद ले जावेंगे। सबके आखीरमें अङ्गरेजोंने स्थिर किया, कि रणजित् सिंह और सिन्धियान लोगोंके कार्य-कलापमें योगदान करनेसे, इसके बाद जब हैदराबादमें एक अङ्गरेज प्रतिनिधि नियुक्त होंगे, तब वह लोग अन्यान्य अवान्तरिक सम्बन्ध-निर्देश कर देंगे।

रणजित् सिंहके बारेमें अङ्गरेज-शासनकर्त्ताओंने विचारकर स्थिर किया, कि राजनीतिक स्वार्थके कठोरताविचारसे सिन्धुनदके किनारेकी घमीनमें सिखोंकी क्षमता बहुत दूरतक फैलानेमें बाधा देनेके लिये वह लोग बाध्य हैं। जिन राज्योंको उन लोगोंने महाराजके अधिकृत राज्यके नामसे स्वीकार किया था, महाराजके अधिष्ठान उन राज्य-समूहपर हस्तक्षेप करना नीति-विरुद्ध होनेपर भी, उन लोगोंकी यह इच्छा थी कि वर्त्तमान सन्धि सम्बन्ध टूटना उचित नहीं, कारण, युद्ध उपस्थित होनेपर वाणिज्य फैलानेके लिये सिन्धुनदमें वाणिज्य-बोट चलानेमें विघ्न

* Government to Col. Pottinger, 26th Sept. 1836.

होगा। तब राजनीतिक प्रतिनिधिके प्रति आदेश हुआ, कि रणजित् सिंहको इस बारेमें बाध्य करना होगा, जिससे शिकारपुरपर आक्रमणकी आशा परित्याग करें। उद्देश्यसाधनके लिये भय दिखानेके सिवा, वह चाहे और जिस उपायका अवलम्बन करना जरूरी समझें, वही कर सकते हैं। शाह शुजा तब भी निराश हुए नहीं थे, उनसे सन्धिस्थापनकी बात चल रही थी। प्रतिनिधिकी ओर आदेश प्रचारित हुआ,—उन्हें प्रकट करना होगा, कि यदि वह लुधियाना परित्याग करेंगे, तो फिर वह लौटने न पावेंगे और उनके परिवारके भरण-पोषणके लिये जो वृत्ति दी जाती थी, वह भी बन्द कर दी जायगी। जिन माजारियोंकी अधिकृत भूमिपर सिखोंने अधिकार किया था, उनके सम्बन्धमें कहा, कि उनकी पराजयसे लोगोंका मङ्गल साधित हुआ है और उनका शासन-संरक्षण-प्रश्न भविष्यत्में किसी समय मीमांसित हो सकेगा। *

दूसरी ओर सिन्धियान लोगोंने "कैनेर" के दुर्गके अधिकारके सम्बन्धमें अभियोग उपस्थित किया। रणजित् सिंहने सिन्धियान लोगोंसे कहा, कि उनके वार्षिक राजस्वका परिमाण बढ़ाया जायेगा और अधिकृत दुर्गके फिर पानेके लिये उन्हें बहुत रुपये देना पड़ेंगे। रणजित् सिंहने सिन्धियान लोगोंसे इन सब बातोंका दावा किया। सिन्धियान लोगोंने उत्तरमें उनसे कहा, कि निरुपाय हो वह सभी अस्त्र-धारणके लिये दृढ़प्रतिज्ञ हुए हैं। †

* Government to Capt Wade, 26th Sept. 1836.

† Capt. Wade to Government, 2nd Nov. and 13th Dec. 1836.

उस समय सिन्धियान लोगोंको आश्रय देनेके लिये एक सन्धि प्रस्ताव चल रहा था; पटिञ्जरके उस सन्धि-प्रस्तावसे रणजित् सिंह उस कार्य्यसे निरस्त हुए; नहीं तो सिख लोग निःस ही सिन्धियानोंपर आक्रमण करते। वह विचारकर रणजित् सिंह शङ्कित हुए थे, कि शायद अङ्गरेज लोग महाराजके इस कामसे असन्तोषका चिह्न प्रकाशकर उन्हें बहाने अन्तमें सन्धि-शर्त तोड़ेंगे। उस समय कुमार खड़्गसिंह और नौनिहाल सिंह बहुत सैन्यके साथ सिन्धुनदके किनारे रहते थे; वेडसाहब अङ्गरेज-राजनैतिक-प्रतिनिधिके बादप्रतिवादसे और आपत्तिसे महाराज लाहोरमें रहते थे। रणजित् सिंहने विचारकर देखा था, कि इन सबसे सन्धिस्थापन और युद्ध-घोषणा दोनों होके उपयोगिता है। सुतरां कप्तान वेडने स्वयं महाराजकी राजधानीमें जानेका सङ्कल्प किया; प्रकाश्यभावसे ब्रटिश गवरन्मेण्टका मनुतापस्वरूप, वह जिस विपद-सागरमें कूदनेके लिये आगे बढ़ रहे थे, उस बातमें महाराजको समझानेके लिये वह लाहोर आये। महाराजने सब बातें ही सुनी और अन्तमें सम्मत हुए। उन्होंने कहा, अन्याय बातोंकी विवेचना करें ही वह सिख लोगोंके मतानुवर्ती हुए हैं; अमीरोंका पहला मकान कायम रखना उन्होंने स्वीकार किया। लेकिन वह इनेरका दूर्ग ध्वंस कर डालेंगे; रोझन और माधारियोंका राज्य उनके ही शासनाधीन रहेगा। * अङ्गरेजोंके शासित सिन्धमें

---

* Captain Wade to Government, 3rd Jan, 1837,

सम्मत होनेके लिये रणजित् सिंहके अधीनस्थ सामन्तोंने उन्हें वारवार मना किया। उनके विचारसे इसकी कोई निश्चयता नहीं थी, कि इस तरहका दावा कितने दिनोंमें और कहां खतम होगा। लेकिन महाराजने असम्मतिका भाव प्रकाशकर उन्हें महाराष्ट्रोंकी दो लाखसे अधिक फौजकी अवस्थाको याद दिखाई। * अङ्गरेजोंने उन्हें जो बाधा दी थी, उन सबको किसतरह भूलकर उन्होंने उन्हें क्षमा किया था, यह दिखानेके लिये पौत्रके विवाहोपलक्ष्यपर गवरनर-जनरल महोदयको उन्होंने आमन्त्रित किया था। रणजित् सिंहने विचारा था, कि वह अपने इन पौत्रको ही सिन्धु-विजयीके नामसे प्रसिद्ध करेंगे। † जो हो, वह निराश नहीं हुए, उन्हें आशा थी, कि किसी दिन उद्देश्य सफल होगा। उन्होंने अमीरोंके साथ राज्यकी सीमाका बन्दोबस्त स्थिर कर नहीं लिया; माधारियोंपर आधिपत्यके सम्बन्धमें जो प्रश्न उठाया गया था, उसकी मीमांसा भी स्थगित हुई। ‡ रोझानके परित्याग करनेकी भी। उनकी इच्छा नहीं थी, वहां सिखोंका ही अधिकार रहा। सन्

---

* Compare Capt. Wade to Govt. 11th Jan. 1837. इसके दृष्टान्तस्वरूप महाराष्ट्रोंकी शक्तिके ध्वंसकी बात सदा ही रणजित् सिंह लिखते थे, कि अङ्गरेजोंके साथ सब अवस्थामें ही क्यों बन्धुताचरण करना चाहिये।

† Capt. Wade to Government, 5th Jan. 1837.

‡ Capt. Wade to Govt. 13th and 15th Feb. 8th July and 10th Aug. 1837.

१८३८ ई०में वहांके शासनकर्त्ताने अधीनता स्वीकार की; वह सिख-राजको कायदेके मुताबिक कर देने लगे। इसके बाद यह राज्य सिख-राज्यके भीतर आ गया। *

इस समय इसके ही निर्द्दिष्ट करनेकी आवश्यकता है, कि अफगानस्थानके "बारिकजइयोंसे" कई सालतक अङ्गरेजोंका सम्बन्ध था। पहले ही कहा गया है, कि सन् १८२३ ई०में पेशावर सिखोंके करदराज्यमें मिला। इसके कुछ ही दिनों बाद मुहम्मद आजिमखां मृत्यु मुखमें पतित हुए। फतेहखां और मुहम्मद आजिम दोनो हीने जो आधिपत्य फैलाया था, उनके पुत्र हबीबुल्लह ही उसके नाममात्रके अधीश्वर हुए। लेकिन कुछ ही दिनोंके बाद मालूम हुआ, कि युवक अव्यव-स्थित-चित्त है; उनके स्वाभाविक क्रियाकलापसे उनके धूर्त्त और अधार्म्मिक पितृव्य दोस्तमुहम्मद खां, अपनी सम्पत्तिके नामसे काबुल, गजनी और जलालाबादपर अधिकार करनेमें समर्थ हुए। उनके भाइयोंका दूसरा दल स्वाधीनभावसे कन्धारमें शासन करने लगा और तीसरा दल रणजित् सिंहके करदस्वरूप पेशावरमें राजत्व करता रहा। † सन् १८२४ ई०में परिव्राजक मिस्टर मूरक्राफ्ट बारिकजइयोंके सदाचारसे बहुत सन्तुष्ट हुए थे लेकिन उनकी प्रतिपोषकतामें उनके बहुत रुपये खर्च हुए थे। ‡

* Capt. Wade to Govt. 9th Jan. 1838.

† Compare Moorcroft, 'Travels' ii. 345 &c. and Moonshee Mohun Lal, 'Life of Dost Mahomed Khan.' i. 130, 153 &c.

‡ Moorcroft, 'Travels', ii. 346, 347

सर्दार दोस्तमुहम्मदखां।

कई वर्ष बीतने पर पेशावरके सुलतान सुहम्मदखां विदेशियोंके आनेसे डरकर, लुधियानेके राजनीतिक प्रतिनिधिसे सब बातें प्रकट कर में प्रवृत्त हुए। * सन् १८२८ ई०में उन्होंने स्वाधीन राजाकी तरह वृटिश गवरमेगटके साथ सन्धिस्थापन करनेकी इच्छा की। † लेकिन कई एक भाई परस्पर विरोधी थे; उनमें अनेक ही स्वतन्त्र राज्य पानेके अभिलाषी हो पड़े; दोस्त सुहम्मदने प्रभुत्व पानेकी चेष्टा की। लेकिन उस समय फारिस-राजके आक्रमणकी बात लोगोंसे प्रकट होनेपर, पश्चिम ओरके वह सभी भीत हो पड़े। पूर्व्व ओर रणजित् सिंह बलप्रयोगसे राज्यके अधिकारमें प्रवृत्त हुए; इससे वह लोग अधिकतर भीत हो पड़े। अन्तमें अफगानस्थानके अङ्गरेज परिव्राजककी आक-स्मिक उपस्थितिसे उनके मनमें आशाका सञ्चार हुआ, कि भारतके वैदेशिक अधीश्वर लोग परस्परविरोधी राज्योंमें शान्ति-संस्थापन करेंगे। ‡ सन् १८३२ ई०में सुलतान सुमम्मदखांने

---

* Capt. Wade the Resident at Delhi, 21st April, 1828.

† Captain Wade to Government, 19th May, 1832 मिष्टर मूरक्राफ्टकी मध्यस्थतामें भाइयोंने पहले ही (सन् १८२३, १८२४) में यह प्रस्ताव किया था।

‡ बङ्गालके सिविलियन मिष्टर फरेष्टर और मिष्टर हारसिं दोनो ही इस समय अफगानस्थानमें थे। पूर्व्वोक्त मनुष्य सन् १८२६ ई०में और शेषोक्त मनुष्य सन् १८२८ ई०में वहां गया। सन् १८२८ ई०में मिष्टर नेवरने भी पञ्जाबकी

पुत्रकी मुक्तिके लिये फिर सन्धिप्रस्ताव करनेका प्रयास पाया, उस समय उनके पुत्र रणजित् सिंहके पास प्रतिभूस्वरूप रहते थे। * नव्वाब-उपाधि-प्राप्त काबुलके जब्बर खांने भी अङ्गरेजोंके सीमान्त कर्त्तृपक्षगणके पास वैसा ही पत्र लिखा; सन् १८३२ ई०में स्वयं दोस्त मुहम्मदने अङ्गरेजोंसे बन्धुत्वस्थापनकी चेष्टा की। † बहुत ही भलमनसियतके साथ उन सब चिट्ठियोंका उत्तर दिया गया; लेकिन उन्होंने कुछ दिनोंके लिये दूरवर्त्ती शासनकर्त्ताओंके साथ सब प्रकारकी घनिष्ठता परिहार करना ही युक्तिसङ्गत समझा था। ‡

सन् १८३४ ई०में अन्यायाचारी "बारिकजई" सम्प्रदाय और भी नये विपद्-जालमें जड़ित हुआ। शाह शुजा सिन्धि

राहसे अफगानस्थानमें प्रवेश किया। एक सालके भीतर ही बाकर हरलन नामक एक अमेरिकन भी उसी राहसे उनके अनुवर्त्ती हुए। सन् १८२९ ई०में हरलन लाहोर आये। इससे पहले ही अङ्गरेज कर्त्तृपक्षगणके मनमें उन्होंने विश्वास दिलाया था, कि वह अङ्गरेज-गवरमेण्टके और शाह शुजाके काबुल-सम्बन्धीय मामलोंके विषयमें प्रतिनिधि नियुक्त होना चाहते हैं। (Resident at Delhi to Capt. Wade, 3rd Feb. 1829.)

* Capt. Wade to Govt. 19th May and 3rd July, 1832.

† Capt. Wade to Govt. 9th July, 1832, and 17th Jan. 1833.

‡ Govt. to Capt. Wade, 28th Feb. 1833.

याम लोगोंको पराजितकर कन्धार पहुंचे और दूस[रे]
भाइयोंने अङ्गरेज-राज के पास रहनेकी एक बार और चेष्[टा]
की। वह लोग पहले होसे अङ्गरेजोंके रणकौशल और अस्त्र-
शस्त्रादिकी बात जानते थे; यह लोग जानते थे, कि खुशामदसे
सभी वशीभूत होते हैं। एकाएक जबरखांने पुत्रको लुधियाने
भेजनेका प्रस्ताव किया,—उन्होंने कहा, कि यूरोपीय विज्ञान-
बलसे और सभ्यताके फलसे पुत्रकी मनोवृत्ति बढ़ेगी। * जबर-
खांने दूसरेका पक्ष अवलम्बनकर दोस्त मुहम्मदकी तरफदारीका
भाव प्रकाश किया। लेकिन उनका स्वतन्त्र उद्देश्य था।
अङ्गरेज-जीवनकी रमणीयताकी प्रशंसाकर, उन्होंने राज-
नीतिक क्षमता पानेकी आशा की थी। इस चेष्टासे वह सबके
सन्देहभाजन हो गये। † इसीतरह उनकी सब बातोंपर
सन्देहकर, शाह शुजाकी चाल रोकनेके लिये दोस्त मुहम्मदने
काबुल परित्याग किया। लेकिन इसी समय सिखोंने पेशावरपर
अधिकार किया था, सुतरां किंकर्त्तव्यविमूढ़ शासनकर्त्ताने
लाचार हो और एकबार अङ्गरेजोंसे साहाय्यकी प्रार्थना की। ‡
वह अङ्गरेजोंकी वश्यता स्वीकारकर ग्रेट-ब्रिटनकी अधीनता-
पाशमें आबद्ध हुए। इसतरह अपने राज्यको जामिनकी तरह
रखनेकी चेष्टाकर, वह शाह शुजासे युद्धमें प्रवृत्त हुए। लेकि[न]

* Capt. Wade to Government, 8th March, 1834.

† Capt. Wade, to Government, 17th May, 1834. Compare Masson, 'Journeys', iii. 218, 220.

‡ Capt. Wade to Government, 17th June 18[34].

युद्धमें शाहके पराजित होनेपर, दोस्तमहम्मद विजयी सरदारोंके लिये अपनी विघ्न-विपत्तिकी बात भूल गये। सिखोंके पेशावर अधिकार करनेकी वजह, उन्होंने उनके विरुद्ध युद्धघोषणा की —विधर्मी आक्रमणकारियोंको—सबको ध्वंस करनेके उद्देश्यसे लोगोंको उत्तेजितकर, उन्होंने एक धर्मयुद्धकी घोषणाकी चेष्टा की। ¶ उन्होंने "गाजी" यानी धर्मरक्षाकारीकी उपाधि ग्रहण की, लेकिन "अमीर" उपाधि ग्रहणकर, उसीको उन्होंने उच्चवंशपरिचायकके नामसे घोषणा की। वह भाइयोंके पूरे असन्तोषकी ओर देखते नहीं थे; उन्होंने उनको अधीनता-पाशमें आबद्ध करनेकी इच्छा की थी, लेकिन उनके लिये उस समय भाइयोंके साहाय्यकी बहुत जरूरत हुई थी। *

दोस्त मुहम्मदखां बहुत ही प्रसन्न हुए। तब भी, वह किसी भिन्नधर्मावलम्बियोंसे साहाय्यकी प्रार्थना करनेके लिये इच्छुक न थे; धर्मनिष्ठ मनुष्योंकी ऐकान्तिकताएर भी उनका गहरा विश्वास था। सुतरां पेशावरके पुनरुद्धारके लिये उन्होंने भारतके अङ्गरेज-अधिवासियोंसे साहाय्यकी प्रार्थना की। † जो युवक लुधियानेमें शिक्षा पाने गये थे, वह इस पुरुष की कूटनीतिकी क्षमतासे मूर्छित हुए। अमीर, सिखोंके विरुद्ध अङ्गरेज-कर्तृपक्षगणके दिलमें विद्वेष और शत्रुभाव उत्पा-

---

¶ Capt. Wade to Government, 25th Sept. 1834.

* Capt. Wade to Government, 27th Jan. 1835.

† Capt. Wade to Government, 4th Jan. and 13th Feb. 1835.

नेकी चेष्टा करने लगे। अमीरने ऐसी कितनी ही बातोंका उल्लेख किया, कि उनके भतीजे और अङ्गरेजोंके अभ्यागतको ओर सिख-जातिने सन्देह किया है; उससे पञ्जाब पारकर राहमें बहुत बाधा-विपत्तियां सही हैं, लेकिन तब भी अङ्गरेजोंने स्वार्थसाधनके उद्देश्यसे, उनके मित्रता-बन्धनमें आबद्ध होना जरूरी नहीं समझा। उन्होंने दोस्त मुहम्मदको यह आश्वास प्रदान किया, कि प्रतन्त्रके पूर्व्व और यह लोग नवाब जबर खांके पुत्रके लिये विशेष यत्न करें। इसतरह उन्होंने तरह तरहके बहानेकर अमीरकी सानुनय-प्रार्थनाका सच्चा जवाब नहीं दिया। आंशिक सच्ची बातको अतिरञ्जित वर्णनाकर उन लोगोंसे उन्होंने कहा,—अफगान लोग अङ्गरेजोंकी तरह वाणिज्य-प्रिय हैं; वाणिज्यके लिये सिन्धुनदमें वाणिज्य-बोट चलानेके, अमीर लोग पृथिवीके सबसे श्रेष्ठ वाणिज्य[illegible], इस प्रियतम मन्त्र-णाके, पक्षपाती हैं। उन्होंने और भी कहा,—उनको आशा है, कि वाणिज्यके विषयमें जो यह रोशनी दी गई है, उससे दोनो गवर्मेण्टमें बन्धुत्व उत्तरोत्तर बढ़ता रहेगा; विस्मयाविष्ट रणक्लान्त अमीरसे उन्होंने सरल भावसे पूछा, कि अफगानस्था-नकी सीमातिरिक्त सक इन्दु नदी और काबुलमें वाणिज्य-व्यव-साय चलानेके लिये, किसी सहज राहके सम्बन्धमें उन्हें किसी बातका प्रस्ताव करना है, या नहीं? * रणजित् सिंहकी ओर

---

* Government to Cap. Wade, 19th April, 1834 and 11th February 1835. सन् १८३४ ई०के इन महीनेमें अब्दुलगफ्फारखां लुधियानेमें पहुंचे . दिल्लीमें पढ़नेके लिये पहले जो गफ़न्त स्थिर हुई थी, पीछे वह छोड़ दी गई।

भी अङ्गरेज-शासनकर्त्तागण उत्तर देनेके लिये बाध्य हुए। उस समय शाह और सिक्खोंमें घनिष्ठता बढ़ते देख, रणजित् सिंह सन्दिग्धचित्त हुए थे। उनकी इच्छा थी, कि युरोपीय अधिस्वामी लोग दोस्त मुहम्मदकी सहायता न कर उनका ही पक्षपोषण करेंगे। इधर गवरनर-जनरलने विचारकर देखा, कि बाधा देनेकी चेष्टा करनेसे घोरतर विपदकी सम्भावना है। गवरनर जनरलने और भी स्थिर किया,† कि ब्रटिश गवरमेण्टने जिस मित्रताका बहाना किया है, उससे दोस्त मुहम्मद समझे हैं, कि अङ्गरेजलोग उनकी सहायताके लिये तय्यार हुए हैं।*

इसतरह दोनो पक्ष अपनी अपनी क्षमतापर निर्भर रहनेमें बाध्य हुए। सिक्खोंके पेशावर-अधिकार करनेपर अमीरने उनका आश्रय लिया। रणजित् सिंहने पहले अमीर और सुलतान मुहम्मदखांमें विच्छेद करानेकी चेष्टा की। राज्यभ्रष्ट करद शासनकर्त्ता बहुत जल्द ही महाराजके प्रस्तावपर सम्मत हुए। उनके हृदयमें भयका सञ्चार हुआ था, कि रणजित् सिंहके पराजित होनेपर दोस्त मुहम्मद स्वयं पेशावरपर अधिकारकर बैठ जायेंगे। दोस्त मुहम्मद खैबर-घाटकी पूर्व्व ओरवाले प्रवेशद्वारमें पहुंचे और जबतक रणजित् सिंहका सैन्यबल एक स्थानमें एकत्र नहीं हुआ, तबतक रणजित् सिंह तरह तरहके प्रस्तावमें उनका चित्त विनोदन करते रहे। सन् १८३५ ई०की ११वीं मईको सिक्ख सैन्यने अमीरको घेर लिया। स्थिर हुआ, कि १२वीं मईको उनपर आक्रमण किया जायगा। ऐसे समयमें

---

† Govt. to Capt. Wade, 20th April, 1835.

अमीरने भागना ही अच्छा समझा। दो तोपें और कुछ रुपयी पीछे छोड़ अमीर भाग गये। इस उद्देश्यसे अमीर उन्हें साथ लेनेमें असमर्थ हुए, कि सिख-दूतोंके बन्दी-भावसे या प्रति-भूस्वरूप उपस्थित रहनेपर शायद कोई उपकार साबित हो। अमीरने इस उद्देश्य-साधनका भार, भाई सुलतान मुहम्मद खांके हाथमें अर्पण किया था; लेकिन समय समझ सुलतान मुहम्मद रणजित् सिंहके साथ योगदान करनेमें असमर्थ हुए। प्रतिनिधिगणको छोड़ देनेके लिये सुलतान मुहम्मद रणजित् सिंहके प्रियपात्र हो गये। सुलतान मुहम्मद और उनके भाइयोंने पेशावरमें कई एक जागीरें पाईं। लेकिन इस प्रदेशके शासनका बन्दोबस्त देखनेके लिये और सामयिक शासनकार्य्य चलानेके लिये, एक कर्म्मचारी लाहोरसे वहां गये। *

इस समय दोस्त मुहम्मद सिखोंके साथ युद्धमें विरत हुए। लेकिन भागनेसे वह सबके विरागभाजन हो गये; अनेकांशमें उनकी सम्मानहानि हुई। अङ्गरेजोंसे उन्होंने जैसी सहायता

---

* Capt. Wade to Govt. 25th April, and 1st, 15th and 19th May, 1835. Compare Masson, 'journeys' iii. 342 &c.' Mohun Lal's Life of Dost Mohomed' i. 172 &c., and also 'Dr. Harlan's India and Afghanistan, P. 124, 158. इस उपलक्षमें दोस्त मुहम्मदके पास भेजे गये दूतोंमें डाक्टर हरलन अन्यतम हैं।

कहते हैं, उस समय पेशावरको जयकरनेमें सिखोंकी ८०,००० हजार फौज थी।

पानेकी आशा की थी, वह आशा भी पूरी नहीं हुई; सुतरां उन्होंने फारिस-राजसे साहाय्यकी प्रार्थनाकी इच्छा की थी। * लेकिन अङ्गरेजोंके साथ सन्धि-स्थापन करनेकी अपेक्षा फारिस-राजके साथ मित्रता-बन्धन राजनीतिक हिसाबसे अधिक कार्यकारी काम जान पड़नेके कारण, दोस्त मुहम्मदने फिर गवरनर जनरलसे उसी प्रस्तावके उठानेकी चेष्टा की। उन्होंने कहा,—सिखलोग अविश्वासी हैं; बृटिश गवरमेण्टके स्वार्थ और मङ्गलकामनामें एकमात्र उन्होंने ही जीवनोत्सर्ग किया था। †
इधर कन्धारके भाई लोग भी हिरातके शाह कामरान द्वारा उत्पीड़ित होने लगे। दोस्त मुहम्मदने उनको किसी तरहकी सहायता नहीं की; सुतरां उन लोगोंने अङ्गरेजोंसे साहाय्यकी प्रार्थना की। इसी समय फारिस राजके आक्रमणकी आशङ्कासे कामरान डरे; इन कन्धारके भाइयोंका भय दूर हुआ; इसलिये ही उन्होंने फिर यूरोपीयनोंसे साहाय्यकी प्रार्थना नहीं की। *
दूसरी ओर, रणजित् सिंह भी अङ्गरेज और अफगानोंके बीच मित्रता-स्थापनके विशेष विद्वेषी थे; दोस्त मुहम्मदको अपने मतापाशमें आवद्ध करनेके लिये, रणजित् सिंह बहुत चेष्टा करने लगे। उन्होंने अमीरको पेशावर देनेकी अनिश्चित आशा दे, उन्हें कुछ घोड़े भेजने कहा। रणजित् सिंह जानते थे, कि

* Captain Wade to Government, 23rd Feb, 1836.
फारिस-राज्यने सन् १८३५ ई०में दोस्त मुहम्मदने प्रस्ताव उठाया।
† Capt, Wade to Government, 19th July, 1836.
* Capt, Wade to Government, 9th march, 1836.

लोगोंके मनमें अनुग्रह-प्रदानकी धारणा उत्पन्न करानेका, यही एकमात्र उपाय है। दोस्त मुहम्मद करदराज्यके स्वरूपमें भी पेशावरपर अधिकार करनेके अभिलाषी थे, लेकिन उन्होंने देखा, कि थोड़ा प्रदान करनेसे उस नजरके काबुलसे भेजे जानेकी बात सिखलोग प्रचार करेंगे। लेकिन वह लोग पेशावरका नाम न लिखेंगे। † भागनेकी बातके स्मृतिपटमें उदय होनेपर वह असहनीय यातना भोगने लगे। अन्तमें उन्होंने प्रकट किया, जो हो, घोरतर विपत्पातकी सम्भावना रहनेपर भी सिखोंके साथ युद्ध करना पड़ेगा। ‡ सिख-जातिने उनके भाई जबर खांको छोड़ दिया है; सर्दार हरिसिंह खैबर-पासका प्रवेश द्वार घेरे बैठे हैं; दुर्गम गिरिसङ्कटके बीच प्रवेशकर उद्देश्य-साधनके लिये जमरूदमें एक सुरक्षित दुर्ग बनवाया है; सुतरां वह उपायान्तर-विहीन हो, अस्त्रधारणके ही अधिकतर अभिलाषी हुए। * अमीरके पुत्रोंमें सुचतुर और रणकुशल मुहम्मद अकबरखांके सेनापतित्वमें काबुली फौज खैबरकी पूर्व ओर इकट्ठी हुई। सन् १८३७ ई०की ३० वीं अप्रैलको जमरूदका सेनानिवास आक्रान्त हुआ; लेकिन सिख सैन्यमें विशृङ्खला उपस्थित होनेपर भी अफगान सैन्य पूरी तरह जीत पा नहीं सकी। भागनेका बहाना कर हरिसिंह पीछे आनेवाले शत्रुओंको प्रान्तर भूमिमें लाये; अनन्दी भागती हुई और समदेतोन्मुख

---

† Capt. Wade to Government, 12th April 1837.

‡ Captain Wade to Govt 1st May, 1837.

* Capt. Wade to Govt. 13th Jan. 1837.

सैन्यके बीच और सेनापति सदा ही उपस्थित थे; लेकिन आक-
स्मिक आघातसे वह निहत हुए। इधर ठीक समयपर काबुलसे
और एक दल सैन्य आ उपस्थित हुई; विशृङ्खल और विपर्यस्त
छत्रभङ्ग सिख-सैन्य पूरी तरह हारी। उनकी दो तोपें शत्रुओंके
हाथ पड़ीं। अफगान लोग जमरूद या पेशावरपर अधिकार
करनेमें समर्थ नहीं हुए; अफगानोंने कई दिनोंतक वहांकी
छावनियां लूटीं; इसी समय सिख-सैन्य अतिरिक्त सैन्यदलके
साथ लाहोरमें एकत्र हुई। सुतरां उनसे युद्धकर फिर विप-
ज्जालमें जड़ित न होनेके लिये अफगान-सैन्य अपने देशमें
लौट गई। †

अनुमान है, कि पहले अफगान सैन्य विध्वस्त और विताड़ित
हुई थी। वह लोग कई एक तोपें छोड़कर भागे थे, लेकिन
ठीक समयपर शमसुद्दीनखां नामक अमीरके एक आत्मीयके
अधीनमें कुछ फौजके आ पहुंचनेपर, युद्धमें अफगानियोंकी
जीत हुई थी। इसपर भी सबका विश्वास था, कि यदि हरि-
सिंह न मरते, तो सिख-सैन्य जय पा सकती। नौनिहालसिंहके
विवाहोपलक्षमें और गवर्नर जनरल और अङ्गरेज-सेनापतिके
भावी परिदर्शन और उपस्थितिके उत्सवमें, लाहोरमें सैन्य प्रद-
र्शनीकी अवस्था हुई। वहां बहुत फौजके काममें नियुक्त रहनेसे
पेशावरकी उपत्यकाकी सैन्य-संख्या बहुत कुछ घट गई थी।

† Capt. Wade to Govt, 16th and 23rd May, and 5th July, 1837. Compare Masson, 'Journeys', iii. 382, 387, and Mohun Lal's 'Life of Dost Mahomed' i, 226 &c.

हरिसिंहकी मृत्यु से और सिख-सैन्यके पराजयसे लाहोरमें बहुत उद्वेगका चिह्न दिखाई दिया। लेकिन महाराजने बहुत ही चतुरताके साथ प्रजा-पुञ्जको उत्साहित कर लिया; सभी उनके बुलानेपर इकट्ठे हुए। कहते हैं, कि चन्द्रभागाके किनारेके रामनगरसे पेशावरतक छः दिनोंकी राहसे युद्धके लिये तोपें आई थीं, रामनगरसे पेशावरका दूरत्व दो सौ मीलसे भी अधिक है। * रणजित् सिंह खुद रोहितास (रोहतक)आये; इधर सुचतुर ध्येइन सिंह सीमान्तकी ओर बढे; अपने हाथों जमरूदमें एक स्थायी दुर्ग प्रतिष्ठित करा, उन्होंने अपनी प्रभुभक्तिका ज्वाज्वल्यमान दृष्टान्त प्रदान किया। † दोस्त मुहम्मद निष्फल विजय न पानेके उल्लाससे उत्फुल्ल होने लगे; जिस प्रदेशमें पूरी तरह अफगान-आधिपत्य विस्तृत था, वह उस प्रदेशका पुनरुद्धार करनेके लिये पहलेकी अपेक्षा अधिकतर अभिलाषी हो पड़े। लेकिन रणजित् सिंहने उनका चित्तप्रसाद पानेके लिये एक उपाय पैदा किया, उनसे अमीरकी सन्धि हुई; वह शाह शुजाके साथ भी सन्धिसूत्रमें आवद्ध हुए और उसी समय अमीर दोस्त मुहम्मद और और शाह शुजा, दोनोंने

---

* लफटण्ट-करनल हिनवक ('Punjab' p, 64, 68) कहते हैं, कि वह भी सिख-सैन्यके साथ बारह घण्टेमें तीन सौ मील चले थे; और सबने ग्यारह घण्टेमें यह राह खतम की।

† Mr. Clerk's Memorandum of 1842, regarding the Sikh Chiefs, drawn up for Lord Ellenborough'

उन्होंने सन्धि-स्थापन की। * लेकिन इसी समय अङ्गरेजों
वाणिज्य-दूत धीरे धीरे काल्पनिक वाणिज्यके बहाने सिन्धुनद
बहुत उच्चतर प्रदेशतक वाणिज्य-बोटपर अग्रसर हुए थे। इ
समय अङ्गरेज गवर्मेण्टके लिये ऐसे दिन आये, कि राजनीति
दिखावसे किसी कार्य्यमें हस्तक्षेप करना फिर विपदसङ्कुल
जान नहीं पड़ा; परन्तु शान्ति-सुखसे अवाध वाणिज्यके उत्क
साधनमें और सुविधाजनक सम्बन्धस्थापनके सम्पर्कमें, इसतरहके
मध्यस्थताका अवलम्बन करना या बाधाप्रदान विशेष लाभजनक
जान पड़ने लगा। अङ्गरेजोंने ऐसी घोषणा प्रचार की, कि
अङ्गरेज-शासनकर्त्ता लोग बड़े आनन्दके साथ दोनो पक्षों
सम्मानजनक सन्धिस्थापनकी मध्यस्थता करेंगे। उस समय
प्रतिवाद चलने लगा, कि ऐसी घोषणाके प्रचारसे भी दोस्त मुह
म्मद पेशावर जैसे लाभप्रद स्थानका स्वत्व-स्वामीत्व कभी
परित्याग कर नहीं सकते; सुतरां वैसी आशा करना भी अन्याय
है। बार बार ऐसे वाद-प्रतिवादसे अङ्गरेज-कर्त्तृ पक्षगणने
अफगानोंके प्रति ही अनुग्रह दिखाया। † तब भी, निश्चय
हुआ,—कप्तान वेड रणजित् सिंहका अभिप्राय निरूपण करनेमें
समर्थ होंगे और कप्तान वारनस अमीरका मतामत निर्द्धारण कर
सकेंगे। वस्तुतः शेषोक्त कर्म्मचारी कूटनीतिक क्षमतामें भूमि

* Compare Capt. Wade to Government, 3rd June, 1837, and Government, to Capt. Wade, 7th Aug, 1837.

† Government, to Capt. Wade, 31st July, 1837.

हुए। * एक ओर ईरानी जाति और दूसरी ओर रूसजाति का वृथा षड्यन्त्र चलने लगा। उनके आक्रमणके वृथा शोरके अकिञ्चितकर भयसे अभिभूत होनेपर सिख और अफगानोंका परस्पर विरोध मिट गया; काबुलके सिंहासनपर शाह शुजाकी फिर प्रतिष्ठा करनेके लिये इन सबने ही अङ्गरेजोंसे योगदान किया। प्रायः एक शताब्दिके बाद यरोपीय सैन्यके भारत-आक्रमणके भित्तिहीन जनरवसे, भारतके अङ्गरेज अधिपतिकी सुखशान्ति फिर टूटी; † फ्रांसीसी सेनापति अलार्डके कार्यकलापसे उनके मनमें और भी सन्देह उत्पन्न हुआ। इससे कई एक वर्ष पहले पञ्जाबमें रह अलार्ड अपने देश गये, बाद सन् १८३६ ई० में कलकत्तेसे हो वह फिर लौटे। जब वह फ्रांसमें थे, तब फ्रान्सीसी गवरमेण्टसे उन्होंने इस मर्मकी एक दलील पानेकी चेष्टा की थी, कि जब वह विपज्जालमें जड़ित होंगे, या अङ्गरेज-गवरमेण्टसे अगर लाहोर-राज्यके छोड़नेकी आज्ञा पायेंगे, तो रणजित् सिंह उन्हें फ्रान्सीसी दूतके नामसे स्वीकार करें। अङ्गरेजोंने समझा, कि अवस्थाके बिलकुल ही सङ्कटापन्न न होनेसे महाराजको वह दलील दी न जायगी। लेकिन अलार्ड

---

* Government to Capt. Wade, 11th Sept. 1837.

† सन् १८३१ ई० में भारतवर्षपर रूस-आक्रमणके भयसे गवरनरजनरल विचलित हुए थे। (See 'Murray's Runjeet Sing', by Princep. p. 168.) इस लिखित, इङ्गलेण्ड गवरमेण्टके मनमें भी ऐसी ही धारणा बद्धमूल हुई थी. लेकिन बह उन्होंने इसके बाद प्रकाश किया।

समझे, कि जब अपनी अवस्था बहुत विपद्सङ्कुल जान पड़ेगी, तब वह इस दलीलको दिखा साहाय्यकी प्रार्थना करेंगे। उन्होंने शीघ्र वह दलील वगैर; सिख-शासनकर्त्ताको दिखाया, सुनते हैं, जनरल अलार्ड लाहोरमें फ्रान्सीसी दूत नियुक्त हुए; कुछ दिनों-तक अङ्गरेज कर्त्तृपक्षियोंने उनके अभ्यागतको काल्पनिक प्रतारणाके लिये क्षमा की थी। *

---

* ग्रन्थकारने उसे ही दिया है, जिस भावसे दलीलपत्रको काममें लानेकी फ्रान्सीसी कर्मचारियोंने इच्छा की थी। जनरल वेण्टरा उसके एकमात्र उपयुक्त प्रमाण हैं, पहले जनरलसे उनसे इस बारेमें बातचीत हुई थी। परिसमें ब्रिटिश राजदूत और कलकत्तेके कर्त्तृपक्षगणसे जनरल अलार्डने खुद बातचीत की थी, वह इस विषयमें उनके मतानुवर्त्ती थे; अङ्गरेजोंका भी ऐसा ही मत था। .(Government to Capt. Wade 16th Jan. aud 3rd April, 1837.)

रणजित् सिंहके प्रति अङ्गरेजोंके कर्त्तव्यका विचारकर देखनेसे, इन दो सिद्धान्तोंसे, अङ्गरेजोंका सिद्धान्त, अङ्गरेज-जातिके उपयुक्त नहीं है। नौकरके लिये ऐसी चेष्टा अन्याय है, कि प्रभुकी अधीनता स्वीकार न कर वह स्वाधीन भावसे रहे। इससे उस भृत्यके पक्षका समर्थनकर ब्रिटिश गवर्मेण्टको बाधा देनेके लिये निश्चय ही वह कुपित होते।

रणजित् सिंहके पत्रसे कुछ किलिय, फ्रान्सीसी भाषामें "Emperour" या बादशाहके नामसे अभिहित हुए थे। (Captain Wade to Government, 15th Sept, 1837 फ्रान्सीसी

रणजित् सिंहने महासमारोहसे पौत्रका विवाहकार्य्य सम्पन्न किया। इस उपलक्ष्यमें भारतके गवरनर-जनरल, आगरेके गवनर (सर चार्लस मेटकाफ) और अङ्गरेज-सैन्यदलके कमाण्डर-इन चीफ (सेनापति) निमन्त्रित हुए। सन् १८३७ ई०के मार्च महीनेके प्रारम्भमें श्यामसिंह अतरिया-ला नामक एक सिख-सामन्तकी कन्यासे युवराजका विवाह-कार्य्य सम्पन्न हुआ। लेकिन अङ्गरेज कर्म्मचारियोंमें एकमात्र सर हेनरी फेन उस विवाहमें उपस्थित हुए। वह सुदक्ष सेनापति बहुत दिनोंसे बड़ी सतर्कताके साथ सामरिक शक्ति-सामर्थ्य और वीरोचित गुणावलीको पर्य्यालोचनाकर देखते थे। उन्होंने एक हिसाब स्थिर किया था, कि पञ्जाबको पूरी तरह पदानत करनेके लिये कितनी सैन्य और अर्थ-सामर्थ्यकी जरूरत है। लेकिन बहुत जल्द उन्होंने एक मूलनीति स्थिर की; उनके मनमें आया,—शतद्रु और राजपूतानेका मरुसदृश प्रदेश और सिन्धु-देश अङ्गरेजराज्यकी असली सीमामें गिना जा सकता है; पूर्व्वखण्डमें अङ्गरेजोंको ऐसे ही स्थानपर अधिकार करना चाहिये। * उस समय सिखोंके साथ युद्धकी कोई सम्भावना

जाति इस उपाधिसे गर्व्वित और सन्तुष्ट हो सकती थी; लेकिन सिखजाति इसका कुछ भी अर्थ समझती नहीं थी। फरासी और भारतीय पद्धतिके अनुसार "राजा" वा "रानी" शब्दके बदले 'Emperor' शब्दकी तरह 'बादशाह' शब्द व्यवहृत होता है।

* सरकारी कागजपत्रमें सर हेनरी फेनकी रायके आगे

नहीं थी ; परन्तु एक आगन्तुक मनुष्यकी भवमनसियतके खातिरसे वह शत्रुता-व्यञ्जक मन्त्रणाका परिपोषण कर नहीं सके। अतएव सर हेनरी फेनने अकपट चित्तसे और ऐकान्तिकताके साथ लाहोरके विवाहोत्सवमें योगदान किया। वह उस उत्सवपर सबका चित्तविनोदन करने लगे और अपनी कल्पनाको कार्य्यमें परिणत करनेके लिये उद्योगी हुए। रणजित् सिंहने साधारण समझसे समझ सकनेपर भी, फेनके काममें बाधा नहीं दी ; बल्कि सन्तुष्ट चित्तसे अङ्गरेज सैनिक पुरुषोंकी तरह ही स्वीकृत हुए। युरोपीय जातिके वीर-समाजमें नौरोचित कार्य्यकलापके लिये, गुणके हिसाबसे, रणकुशल सैनिक पुरुषोंमें उपाधि वितरणकी प्रथा प्रचलित है। इसलिये सैनिक-पुरुषोंकी उपाधिकी प्रथाकी तरह (Order cf Merit) प्रति

कोई उसे रख रह नहीं सकता ; लेकिन यह बात गवरनर-जनरलके पार्श्वचरगणसे अविदित नहीं है। हमें याद आता है, हमने कप्तान वेडसे सुना था, कि उनके हिसाबसे सिख-सैन्यकी संख्या कुल ९६००० है और उनके विचारसे दो सालतक युद्ध चलनेकी सम्भावना थी।

इस लाहोरके देखनेसे उनका बड़ा उपकार साधित हुआ था। बङ्गालकी सैन्यके सेनापति (Quarter Master General लफटण्ट कर्नल गार्डन, इसने इस प्रदेशका एक ठीक मानचित्र तय्यार करनेमें समर्थ हुए थे। पीछे जब सिखोंसे साथ युद्ध आरम्भ हुआ, तो यह मानचित्र ही विशेष कार्य्यकर हुआ था।

ष्ठाकी जल्पना-कल्पना कुछ दिनोंसे लाहोरमें चल रही थी। सम्भवतः ऐसी प्रणाली सब जातिके लिये उपयोगी होनेपर भी, प्रतिवेशी अङ्गरेजोंको सन्तुष्ट करना ही महाराजकी एकान्त इच्छा थी। इसलिये सर हेनरी बेनकी उपस्थितिमें अङ्गरेज-आदर्शका अनुकरणकर महाराजने पञ्जाबमें उस उपाधिकी प्रतिष्ठा करनेका सुयोग पाया। * अङ्गरेज कर्त्तृपक्षियोंके तुष्टि-विधानार्थ, या उनको लिप्त रखनेके अभिप्रायसे ऐसे उपायका अवलम्बन करना रणजित् सिंहके लिये स्वाभाविक नहीं था। महाराज इस विषयकी चेष्टा करते थे, कि कैसे अङ्गरेजोंका मनोरञ्जन होता है और जिसे वह स्वार्थानुबन्धनीय समझते थे, उसे भी अधूरा नहीं छोड़ते थे। साम्भर नमक और मालवेकी अफीम तय्यार करनेकी प्रणालीके सम्बन्धमें, उन्होंने अनेक विषयोंके जाननेकी इच्छा की और उसका नमूना मांग भेजा। † सन् १८१२ ई०में महाराजने इस बातकी परीक्षा की थी, कि सचमुच मित्रराजगण उनके प्रति अनुरक्त हैं या नहीं,— महाराजने अङ्गरेजोंसे पांच सौ बन्दूकें मांग भेजीं और उनके नैपुण्यकी बहुत प्रशंसा की थी। बहुत जल्द उन्हें "मस्केट" बन्दूकें दी गईं। लेकिन दूसरे समय फिर पांच हजार बन्दूकें मांगनेपर, उन्हें सन्देहका उद्रेक पैदा हुआ। ‡ उस समय

---

* गवरमेराटके लिये कप्तान वेडका पत्र। (Capt. Wade to Government, 7th April, 1837.)

† Captain Wade to the Resident at Delhi, 2nd Jan, 1831 and to Government 25th Dec 1835,

‡ Captain Wade to Government, 22nd July, 1826

बम्बई शहर जानेके लिये कई एक पगयन्त्रसे लदे हुए तय्यार थे; रणजित् सिंहने उसपर शुल्क वहांकी व्यवस्था। जितने बोट लौट आवेंगे, उनपर महाराजकी पैदल सेना के खास शस्त्र लदे रहेंगे। पीछे अङ्गरेजोंको यह बात मालूम हुई लेकिन इससे पहले वाणिज्य-नौकार्यार्थ महाराजकी ऐकान्तिकताके सम्बन्धमें सभी उनकी प्रशंसा करते थे। * उनकी इच्छा थी कि बन्दूकधारी फौज लुधियानामें तोप चलाना सीखे। महाराज उनके पास दस्ता भेज देते थे; उन्हें आशा थी कि अङ्गरेज लोग उनकी परीक्षाकर उन्हें गोला बारूद का सिखावेंगे। † महाराज युरोपीय युद्धप्रणालीका विस्तृत विवरण पूछा करते थे वह भारतीय सेनाके वेतन सम्बन्धी नियमावलीके और सिपाहियोंके लिये सभाकी अङ्गरेज-प्रवर्तित काइंन-प्रयकरलोंकी नकल लेकर, इस सब जटिल और अनुपयोगी प्रथाके विषयमें उपदेशदाताओंसे

---

* कप्तान वेडके लिये गवरमेण्टका पत्र, सन् १८३० ई० ११वीं सितम्बर।

† Captain Wade to Government, 7th Dec, 18[illegible].

‡ उस समय शाह शुजाके सिंहासनपर पुनः बैठनेकी बात स्थिर हो गई, तब रणजित् सिंहने लुधियानेमें गोरे भेजकर कहा, कि वह किस राजनैतिक कारणसे ही ऐसे कार्यमें नियुक्त हुए हैं। उन्होंने और भी कहा,—सैनिक-विभागीय कोई विषय छिपाके भी रखना उचित नहीं।

वह सम्मानसूचक उपाधि-भूषणसे भूषित करते थे। * वह उनसे यह पूछते थे, कि बेतकी मारके बदले किसी और दण्डकी प्रथा प्रवर्त्तित हो सकती है। † उन्होंने अपने अधीन ग्रास-नकर्त्ताके एक आत्मी-पुत्रको लुधियानेके स्कूलमें अङ्गरेजी भाषा सीखनेके लिये भेजा। ‡ महाराजकी इच्छा थी, कि गवरमेण्टको पत्रादि लिखनेके समय यह युवक उनका साहाय्य कर सकेगा। उस समय लार्ड विलियम बेण्टिकने फारसी भाषाके बदले अङ्ग-रेजी भाषामें कार्य्यादिके निर्व्वाह करनेकी इच्छा की थी। महा-राजने और भी कई बालकोंको लुधियानेके चिकित्सालयमें चिकित्सा सीखनेके लिये भेजा था। उस समयके राजनीतिक

---

* मेजर होमका ग्रन्थ प्रकाशित होनेसे भारतीय सिपाहि-योंकी सुख्याति बढ़ी, उन्होंने रणजित् सिंहके अनुरोधसे सिखोंके लिये कोर्टमार्शलके (सैनिकपुरुषोंका विचार) विचारका नियम बनाया। (Government to Captain Wade, 21st Nov. 1834.)

† Government to Capt. Wade, 18th May, 1835.—प्रकट किया गया, कि बेतकी मारके बदले निर्जन-कारावास ही उपयुक्त दण्ड है।

‡ Capt. Wade to Govt. 11th April, 1835. भारत-वर्षके कुछ राजे सदा ही सन्दिग्धचित्त थे। उन लोगोंको भी विश्वास था, कि अङ्गरेजी भाषा प्रचलित कर, सम्राटकी प्रकृत अभिसन्धि और षोडयापत्रको जानने न देना ही इस प्रस्तावका प्रधान उद्देश्य है।

प्रतिनिधि द्वारा वह चिकित्सालय प्रतिष्ठित हुआ था। महारा-जका उद्देश्य था—कि उनके सैन्यदलमें वह दोनों शिक्षित पुरुष बहुत सहायता कर सकेंगे। * रणजित् सिंहने ब्रिटिश शक्तिको कभी बाधा देनेका साहस नहीं किया, या उन लोगोंकी ओर उनका पूरा विश्वास भी नहीं था। लेकिन उन्होंने इस समय कुछ ऐकान्तिकताके साथ और कुछ अवसन्नताके साथ अङ्गरेज प्रतिनिधियोंके अनुग्रह भाजन होनेकी चेष्टा की थी।

इसी बीचमें अफगानोंने जमरूदमें जीत पाई। पहले ही कहा जा चुका है, कि उस युद्धमें सुदक्ष सेनापति हरिसिंहकी मृत्यु हुई। इन सब कुसमाचारोंसे पौत्रके विवाहोत्सवका आनन्द, रणजित् सिंहके मनमें बहुत दिनोंतक स्थायी नहीं रहा, यौवनके समय पौत्रके भावी महत्वके चिह्नकी उपलब्धि करके भी महाराज आनन्द प्रकाश कर न सके। वृद्ध महाराज उन "सच्चे सिख"का शोचनीय परिणाम सुन आंसू रोक न सके; उन्होंने उन्हें मनुष्य बनाया था; सुतरां उनके शोककी अवधि न रही। † पेशावरकी उपत्यकामें सैन्य समावेश…

---

* सन् १८३८ ई० में पेशावरके सैन्य-निर्वाचनका काम खतम हुआ। उस सैन्यके साथ इन दुवा पुरुषोंमें कोई एक युवराज तैमूरकी युद्धयात्राके समय खैबरमें उनका साहाय्य करनेके लिये नियुक्त हुए थे।

† यहां ब्रिटिश सैन्यके चिकित्सकने डाक्टर उडका लिख उल्लेख किया है। डाक्टर उड रणजित् सिंहकी चिकित्साके लिये अम्बालासे भेजे गये। उस समय रणजित् सिंह [illegible] छावनीमें रहते थे।

महाराज सीमान्त प्रदेशमें अपनी प्राधान्यकी प्रतिष्ठा करनेका प्रयास कर रहे थे, उस समय उनके जीवनके बाकी कई वर्षको दुःखभाराक्रान्त करने और उनके मनमें अशान्तिकी प्रचण्ड वह्नि प्रज्वलित करनेके अभिप्रायसे ही मानो अङ्गरेजोंने उन्हें बाधा दी। पूर्व्व और दक्षिण ओर उनका आधिपत्य पहले ही सीमाबद्ध हुआ था, उस समय पश्चिम ओर भी उन लोगोंने महाराजके प्रभावको सीमाबद्ध किया। अङ्गरेज जातिकी वाणिज्यनीतिके अनुसार सिन्धुदेश, खुरासान और पञ्जाबप्रदेशकी अर्द्धशिक्षित जातिवृन्दमें शान्ति-स्थापन करनेकी जरूरत थी; उसी ओर यत्नवान होना कर्त्तव्य था, जिससे वह सब जातियां श्रमशील हों और शिल्पादिकी उन्नति साधित हो। नवप्रतिष्ठित करदराज्यकी शासनप्रणालीको निर्द्दिष्ट राहसे परिचालनाके लिये वृथा चेष्टा की गई थी, सामरिकवृत्ति सम्पन्न राजोंमें साम्यविधानकी चेष्टा भी निष्फल हुई थी। उन लोगोंकी इच्छा थी, कि रणजित् सिंह पूर्ववर्त्ती समयके राज्य पानेसे ही सन्तुष्ट होंगे, सिन्धुदेशके अमीर लोग और हिरात, कन्धार और काबुलके शासनकर्त्ता लोग, अपने अपने राज्यको विपद्मुक्त समझते थे, लेकिन वह और अधिक राज्य पानेके प्रयासी न होंगे और अस्थिर-मति शाह सुजा अपने स्वप्रदत्त सिंहासनके फिर पानेकी सब आशायें और स्वत्व विना आपत्तिके परित्याग करेंगे। * तालपुरने, बारिकजाई और सिक्खोंसे

* Compare Government to Capt. Wade 15th Nov. 1837 and to Capt. Burnes and Capt. Wade

[illegible]स दूतके व्यवहारसे मालूम हुआ, कि पेशावरके सम्बन्धमें [illegible]पना आधिपत्य परित्याग करनेके लिये, अमीर किसी तरह [illegible]ीक्षत नहीं हैं। * इस पक्षपातित्वसे उन धूर्त्त शासनकर्त्ताने [illegible]क सुयोग पाया। वह सिखोंसे बहुत डरते थे; अमीर

---

* सर अलकजन्डर बारनसके पक्षपातित्वसे दोस्तमुहम्मदने [illegible]ाशा स्थापन की। अङ्गरेजोंके इन सुदक्ष नेतासे जो परिचित [illegible], उनसे यह बात छिपी नहीं है। अन्ततः सुलतान मुहम्म-[illegible]के लिये पेशावरके पुनरुद्धारकी वास्ते उनकी आशा थी,—वह मेसनके भ्रमणवृत्तान्तमें स्पष्ट ही लिखा है। (Masson's journey's iii, 423) दोस्तमुहम्मद और उनके भाइयोंके लिये सिखोंमें उस प्रदेशके अधिकारपर जो मन्त्रणा चल रही थी, वह सर अलकजन्डर बारनसके प्रकाशित पत्रमें प्रकाशित हुई है। (Letters of 5th Oct, 1837 and 26th Jan, and 13th March, 1838—Parliamentary papers,) इस सम्बन्धमें सतर्कता अवलम्बनके लिये गवरमेण्टने जो मन्तव्य प्रकाश किया, उससे (dated 20th Jan, and especialy of 27th April, 1838,) और मिस्टर मेसनके विवरणसे भी यह बात मालूम होती है। (Masson's 'Journeys', iii, 423, 448) मिस्टर मेसनके विचारसे सुलतान महम्मदको यह देश प्रदान करना ही, उचित काम होता। लेकिन मुंशी मोहनलालके मतानुसार (Life of Dost Mohomed, 1, 257 &c) मालूम होता है, कि पेशावरमें सिखोंके आधिपत्यके फैलनेकी अपेक्षा [illegible]ाइयोंको यह देश प्रदान करनेपर, अपने स्वार्थसे अधिकतर क्षति होना सम्भव था—अमीरने भी ऐसा ही विचारा था।

उनकी सन्धिसूत्रमें आबद्ध हुए थे, सिखोंके आक्रमणका भय दूर करनेके लिये वह ऐसा ही भाव प्रकाश करने लगे। अधिकन्तु वह पारिस-सम्राटके साथ फिर सन्धिका प्रस्ताव करने लगे। अङ्गरेजोंके मनमें भयका सञ्चार हुआ, कि वह लोग पेशावरमें आवेंगे और रणजित् सिंहके हाथसे परित्राणके लिये अङ्गरेज लोग सहायता करनेपर तय्यार होंगे,—इन्ही सब आशाओंसे उन्होंने रूसके राजदूतको सादर अभ्यर्थना की। कन्धारके भाइयोंके साथ बन्धुत्व स्थापनकर, सिखोंके काबुलपर आक्रमणकी बात प्रचारित होनेसे, दोस्तमुहम्मद निश्चय ही अपनी सफलताकी उपलब्धि कर सकते। * लेकिन इटिश गवरमेण्टने उनके इस शत्रुभावपर विश्वासस्थापन किया, या उनके मनमें यह खयाल हुआ। इसी समय भारतके राज्यच्युत कुछ युवराज उत्तर प्रदेशीय आक्रमणके परम्परागत समाचारसे अवगत हो, यत्नके साथ उस समाचारका प्रचार करने लगे। उस समय समग्र भारत एक नई आशासे अनुप्राणित हुआ, कि अङ्गरेजोंका विसदृश और अप्रिय आधिपत्य विलुप्त होगा और उनके ध्वंसावशेषपर एक दूसरी जातिका आधिपत्य फैलेगा;—अङ्गरेज

---

* कप्तान बेलकी इच्छा ऐसी ही थी। नाजिस्तान विषयमें सन् १८३७ ई०की ८वीं अक्टोबर और १५वीं मईको उन्होंने जो पत्र भेजा, उसमें उनका विचार संक्षिप्त भावमें वर्णन हुआ है। लेकिन नीतिप्रणालीके परिवर्तित भावसे अनुमत न होनेपर भी, या स्वतन्त्ररूपसे कार्यकारी न होनेपर भी उनका मत समर्थित हुआ था।

लोग उस जातिकी अधीनता स्वीकार करेंगे। * काबुल सेकमान वारनसके वापस बुलानेपर यह समाचार अधिक प्रचारित होने लगा। इसके फलसे गुरुतर प्रतिघातकी सम्भावना अनिवार्य्य हो उठी। इस समय एकताविधानके लिये सिन्धुकिनारे शान्तिस्थापनकी जरूरत थी। सुतरां विणयोक्तासे मध्य-एशियाका समतल क्षेत्र पारकर शाह शुजाको उनके पिताके सिंहासनपर करदरूपमें प्रतिष्ठित करना ही युक्तियुक्त जान पड़ा। उनके लह कल्पना कार्य्यमें परिणत करनेपर अभीप्सित उद्देश्य निश्चय ही सिद्ध होता। अङ्गरेज लोग विशेष ख्याति लाभ कर सकते;—यह अङ्गरेज नामके उपयुक्त ही काम होता। †

सन् १८३८ ई०के शुरूमें गवरनर जनरलने शाह शुजाको

---

* जिन लोगोंने उस समयका भारतीय कार्य्यकलाप देखा था, वही इस बातका परिचय प्रदान कर सकते हैं, कि उस समय लोगोंके मनमें यह भाव कहांतक बद्धमूल हुआ था। सन् १८३९ ई०को २०वीं अगस्तको गवरनर-जनरलकी "मीटिङ्ग" में यह विषय आलोचित हुआ है।

† इस अवसरपर वृटिश गवरमेण्ट इस समाचारसे विचलित हुई थी, उसके संक्षिप्त विवरणके लिये, सन् १८३८ ई०की १२वीं मईका गवरनर जनरलका "मिनिट" और उसी सालकी १ली अक्टोबरका घोषणापत्र उल्लेखयोग्य है। पारलीमेण्टकी अनुमतिक्रमसे यह दोनो ही विषय सन् १८३९ ई०के मार्च महीनेमें प्रकाशित हुए।

सिंहासनपर पुनःप्रतिष्ठित करना ठीक नहीं समझा। * लेकिन चार महीनेमे वही व्यवस्था ही गृहीत हुई और ब्रटिश गवर-मेराटका उद्देश्य प्रकट करनेके लिये उसी साल और उसी महीने सर विलियम मेगनटन रणजित् सिंहके पास भेजे गये। †

---

* Government to Capt. Wade 20th January, 1838

† वस्तुतः शाह शुजाकी पुनःप्रतिष्ठाके लिये इतना व्यग्र होनेका प्रधान कारण यह था, कि दोस्तमहम्मद अङ्गरेजों-से मित्रता स्थापन करनेकी अपेक्षा फारिस या रूस-राजके साथ सन्धिस्थापन करना ही श्रेष्ठ समझते थे। अङ्गरेजोंने इस नीतिका अवलम्बन किया था, कि यथासम्भव रणजित् सिंहको पक्षस्त करना ही—सर विलियम मेगटनका लाहोर जानेका उद्देश्य था। (See among other letters, Government to Capt. Wade 15th May, 1838) २०वीं मईको अङ्गरेज-दूत पञ्जाबके अन्तर्गत रूपर पहुंचे। कुछ दिनों अपना नगरमें रह पीछे वह लाहोरकी ओर बढ़े थे। ३१ वीं मईको रणजित् सिंहके साथ पहली बार और १३वीं जुलाईको उनकी आखिरी मुलाकात हुई। सर विलियम मेगनटन १५वीं जुलाईको फिर लुधियाने पहुंचे और शाह शुजाकी पुनःप्रतिष्ठाके लिये कुल शर्तोंका बन्दोबस्त करनेके लिये उनका वह दिन और उसका दूसरा दिन बीता।

इन प्रतिनिधिके आनेके दो महीने पहले रणजित् सिंहने बम्ब देखा था। सम्भवतः यही मालूम होता है, कि यहां उनका पहले-पहल बम्ब देखना या यही आखिरी बार देखना।

भारतवर्षकी प्रबलशक्तिके साहाय्यसे शाह शुजाको सैन्यके अधि-नायकत्वमें प्रतिष्ठितकर महाराज अपने उद्देश्यसाधनकी कल्पना कार्य्यमें परिणत करनेमें यत्नपर हुए। लेकिन सबने उस अव-स्थामें उनका सम्पूर्ण मतानुवर्त्ती होनेसे इनकार किया, पहले मित्रगणकी सहकारितामें भी वह विशेष विद्वेषी थे। यह विचारकर वह बहुत ही क्षुब्ध और क्रुद्ध हुए, कि उन्हें शिकार-पुर पानेकी सब आशाओंको ही विसर्जन करना पड़ेगा, लेकिन अङ्गरेज-शासनके कठोर नियमके अधीन रह उनकी क्षमता सीमाबद्ध रहेगी। एकाएक अपना नगरकी छावनी तोड़कर उन्होंने कहा,—अङ्गरेजदूतगण अवसरके अनुसार उनके अनु-वर्त्ती हो सकते हैं; या इच्छा करनेपर वह लोग शिमले भी लौट जा सकते है। लेकिन महाराजने समाचार पाया, कि वह

था। इसी समय वृद्ध राजाने अकृत्रिम, अविमिश्र सुख उपभोग किया था। सब प्रकारकी राजभक्तिका चिह्न देखकर, गुलाबसिंहने उनकी अभ्यर्थना की; महाराजके पैरोंपर गिर चालीस हजार पाउण्डके मूल्यकी भेंट (नज़र) प्रदानकर उन्होंने कहा,—महाराजके अधीनस्थगणमें वह सबसे अधम हैं; जिनपर महाराजने अनुग्रह किया है और जो महाराजके विशेष प्रिय-पात्र हैं, उनमें वही कृतज्ञ है। रणजित् सिंहने चाहे बर-साये, लेकिन इसके बाद उन्होंने देखा कि इनमें जहाँ पहले प्रेम और सम्मानके चिह्न और कुछ दिखाई नहीं देता था, वहाँ इस समय विद्रोह ही लक्षित होता। (Major M-cheson's letter to Capt. Wade 21st March 1808.

योगदान करें या न करें कल्पित व्यवस्था काममें परिणत होगी। तब उस समाचारसे शाह शुजाके साथ उनकी सन्धिका रूपान्तर या परिवर्त्तन साधित हुआ। लेकिन इस समाचारके न पानेतक महाराज इस विषयमें ही चुप रहे। तब बारिकजइयोंका प्रभुत्व ध्वंस करनेके लिये त्रिपक्षीय सन्धि स्थापित हुई। * अङ्गरेजोंने दूने उत्साहसे दोनों ओरसे एक साथ अफगानस्थानपर आक्रमणका विचार किया। पहले सिन्धुके अमीर लोग मित्रता-व्यञ्जक या आधीनता-सूचक प्रस्तावित इस सन्धिमें ही घृणा प्रकाश करते थे, सुतरां कन्धार जानेके समय राहमें शाह शुजा द्वारा उनकी क्षमताका ध्वंस होना ही सुविधाजनक था; दूसरे भूतपूर्व अधीश्वरको रणजित् सिंहके हाथ अर्पण करना किसी तरह भी युक्तिसिद्ध जान नहीं पड़ा। कारण, रणजित् सिंह अङ्गरेजोंके उद्देश्यसाधनमें यत्नपर न हो, प्रलोभनवश उन्हें सिखोंके कार्य्योद्धारमें ही नियुक्त करते। †

---

* रणजित् सिंहसे कहा गया था, कि यदि वह सन्धिके शर्त्तमें आबद्ध हो योगदान करनेसे इनकार करेंगे, तो उन्हें परित्याग किया जायगा;—यह विषय राजकीय साधारण कागज पत्रोंमें पाया नहीं जाता। बहुकालव्यापी वादानुवादके समय सन्देह दूर करनेके लिये केवल ऐसी ही युक्ति दिखाई गई थी। हम समझते हैं, कि मेजर मेकसन संवाद-वाहक नियुक्त हुए थे।

† सन् १८३८ ई०की १२वीं मईको गवरनर जनरलका "मिनिट" या मन्तिव्यसार और उसी महीनेकी १५वीं तारीखको पर विलियम मेगनटनके प्रति उनका दी उपदेशावली देखना

अतएव इस समय यह बन्दोवस्त हुआ, कि शाह स्वयं शिकारपुर और कोटाकी राहसे यात्रा करें; और पञ्जाबके महाराजकी भेजी हुई सैन्यसे सेनापतिके रूपमें शाहके पुत्र तैमूरकी राहका अवलम्बनकर काबुलकी ओर बढ़ेंगे। सन् १८३८ ई०के अन्तमें

चाहिये। इस आक्रमणमें अपना अंश-स्वरूप कुछ पानेके लिये रणजित् सिंह बड़े व्यग्र थे। शिकारपुरके पानेके बारेमें अधिक विपदकी आशङ्का जान महाराज जलालाबाद पानेके अभिलाषी थे। सैन्यका व्ययभार निर्वाहार्थ महाराज अस-लमें हरसाल शाहसे दो लाख रुपये राजस्व पाते थे; फिर भी यह कर देनेमें गवरनर-जनरल अबतक सन्तुष्ट नहीं थे। (See letter of Sir William Macnaghten 2nd July 1838) सुतरां वह शर्त लोप हुई।

रणजित् सिंहको काबुलके आक्रमणमें उत्साहितकर, अफगा-नस्थानमें एक मित्रराज्यकी प्रभुत्व-प्रतिष्ठाकी कल्पना, बहुत दिनोंसे ही चल रही थी। ऐसी कल्पनामें कितनी ही बातोंकी सुविधाकी आशा थी। गवरनर-जनरलका संचिप्तसार (12th Mar, 1838.) देखना चाहिये। पारलोमेण्टकी अनुमति-क्रमसे सन् १८३९ ई०में प्रतिलिपि मुद्रित हुई, और इस विषयमें सर विलियम मेगनटनके पत्रके सम्बन्धमें मिष्टर केयने जो वर्णन किया है, उन सबसे गवरनर जनरलके "मिनिट" का ग्रन्थकार-कृत संचिप्तसारका अनेक बातोंमें अनैक्य है। शाह शुजाको पुनः प्रतिष्ठाके सम्बन्धमें जो सन्धि हुई, उसे चौदहवें परिशिष्टमें देखना चाहिये।

अङ्गरेजी फौज फीरोजपुरमें पहुंची। अङ्गरेज राज-प्रतिनिधि और सिख शासन-कर्त्ताके परस्पर आतिथ्य-विनिमयसे एक विशाल अभिनयके उद्दीपनसे अधिकतर आडम्बर उत्पन्न हुआ। * असलमें रणजित् सिंहने सर्व्वोच्च स्थानपर अधिकार किया था, वह उच्चाकांक्षाकी चरम सीमातक पहुंचे थे; उन्होंने उन्नतिकी उच्च चूड़ापर आरोहण किया था। उनके कृषिजीवी पूर्व्व-पुरुषोंके प्रति जिस राज्यका अत्याचार असहनीय हो गया था, वह उसी राज्यके भाग्य-विधाताके सामने स्वीकृत

---

* इस उपलक्ष्यमें कई बार मुलाकात हुई। उनमें एक बार बड़ा आतिथ्य विनिमय हुआ था; जिस विषयकी आलोचना होना चाहिये। रणजित् सिंहने दो राज्यके बन्धुत्वको एक उंगलीकी बराबरीकर कहा था,—उंगलीका रक्ताभ और पीतवर्ण इतना मिश्रित है, कि यद्यपि दोनो आकृति दो तरहकी हैं, तथापि असलमें दोनो ही एक हैं। लार्ड आकलण्डने उत्तर दिया था,—महाराजकी उपमा बहुत ही सुन्दर है; कारण, अङ्गरेज और सिख दोनो जातियोंका वर्ण यथाक्रम—रक्त और पीतवर्ण है। रणजित् सिंहने भी उस उत्तरपर उसी भावसे कहा, कि वस्तुतः यह तुलना बहुत ही उपयोगी हुई है; कारण दोनो जातियोंका बन्धुत्व इनकी तरह उपादेय और हितकर है। [illegible] रूपसे और विशेषभावसे यथाक्रम उर्दू और अङ्गरेजी भाषामें उसका अनुवाद किया है; बोलनेके समय या लिखनेके समय—सब समय दोनोंको भाषामें अधिकार था।

हुए थे; उस समय भारतके विदेशीय अधिपतिगण उन्हें उच्चासनपर स्थान दे, उनकी ओर बहुत सम्मान दिखाने लगे। लेकिन उनकी तबीयत बहुत ज्यादा खराब हो गई। महाराज समझे, कि वह अङ्गरेजोंके साथ विवादमें प्रवृत्त हुए हैं। सुतरां जिन सब कामोंमें वह प्रवृत्त हुए थे, इन सबके सुचारुरूपसे सम्पादनके लिये वह विशेष औदासीन्य प्रकाश करने लगे। सन् १८३९ ई०के जनवरी महीनेमें अङ्गरेजोंके प्रतिनिधि कारनल वेडके साथ शाहजादह तैमूरने लाहोरसे यात्रा की। पेशावरमें सन्निबद्ध सैन्यदलको एकत्रित करनेमें बहुत कष्ट उठाना पड़ा। अन्तमें उपत्यकाओंमें कितनी ही फौजने छावनी स्थापन की सही, लेकिन रणजित् सिंहके पौत्र उनके सेनापतिके पदपर वरित हुए। अफगानस्थानियोंके सम्राटके साहाय्यार्थी मित्रसंग्रहमें व्यापृत न हो, वह लाहोरकी ओरसे मित्र पानेकी चेष्टा करने लगे; सुतरां युवराज तैमूर और अङ्गरेज-प्रतिनिधिके सन्धिप्रस्तावमें विघ्न उपस्थित हुआ। * धीरे धीरे रणजित् सिंहकी तबीयत खराब होने लगी। उन्होंने अप्रेल महीनेमें कन्धारपर अधिकार करनेका समाचार सुना। वहां सम्पदलके विलम्ब

* See among other letters, Capt. Wade to Government, 18th Aug. 18[illegible]7. कप्तान वेडके टेनिन्ट कार्यक ल अंके विल्सन विवरणके सम्बन्धमें लफटरट बारका प्रकाशित "जरनल" देखना चाहिये। (Lt. Barr's published 'Journal') उनके दौत्यके कूटराजनीतिक इतिहासके सम्बन्धमें सैयद महामत अलीकी "सिख और अफगान" नामकी पुस्तक देखना चाहिये।

होनेसे उनके हताश प्राणमें फिर एक नई आशाका सञ्चार हुआ, महाराज आनन्दगद्गद हुए। उनके मनमें आया,—अब भी अङ्गरेजोंका उच्छेदसाधन करना होगा। लेकिन काबुलके पूरी तरह अधिकृत होते न होते गजनी-अवरोधके पहले, तारीख २७वीं जूनको ५८ सालकी उम्रमें रणजित् सिंहकी मृत्यु हुई। अपनी सैन्य द्वारा खबर पाकर उन्मत्त होनेसे, रणजित् सिंहने अनिच्छा रहनेपर भी उस युद्धका अंशभार ग्रहण किया था, इससे जयलाभकी आशा समूल निर्मूल हुई।

रणजित् सिंहके अभ्युत्थानके समय पञ्जाब कुछ छोटे छोटे सन्निबद्ध राज्योंमें विभक्त था। वह भी धीरे धीरे हीनबल होते जाते थे। अफगान और महाराष्ट्रोंके उत्पीड़नसे विभिन्न प्रदेशके अधिपतिगण परस्पर विवादमें प्रवृत्त हो राज्यादि लूटते थे। लेकिन सभी अङ्गरेजोंकी अधीनता स्वीकार करनेपर तय्यार थे। उन्होंने विभिन्न छोटे राज्यसमूहको एकत्रकर एक राज्यकी प्रतिष्ठा की। अपने राज्यका सबसे श्रेष्ठ प्रदेश उन्होंने पवरद्को काबुल-सम्राटसे अपने अधिकारमें किया था। उनके कार्य्यकलापमें बाधा देनेका कोई कारण ही अङ्गरेजोंने नहीं पाया। उन्होंने देखा, कि कुहपट्टी फौज ही उनके स्वदेशकी सैन्य-सज्जा है। वह सभी वीर और साहसी थे; लेकिन यह कोई जानता नहीं था, कि युद्ध-विद्या एवं शिक्षाकी सामग्री है। पचास हजार सुशिक्षित सेलपार (Yeomanry) और सामरिक सैन्य और तीन सौसे भी ज्यादा युद्धकी तोपें रख रणजित् सिंह परलोक गये। प्रजाहन्दिकी प्रकृतिके अनुसार वह शासन-कार्य्य निर्वाह करते थे। लेकिन सामरिक शक्ति और

राज्य-प्रसारण इत्यादि समवेत काम भी उनकी राजनीतिमें अन्त-र्भुक्त था। जब सिखराज्यकी सीमा निर्दिष्ट हुई और उनके प्रभुत्वकी क्षमता या प्रतिभा विलुप्त हुई, तो सिखजातिकी छिपी तेजःशक्ति निरवच्छिन्न गृहविवादसे धीरे धीरे क्षय होने लगी। *

---

* सन् १८३१ ई० में कप्तान मरेने प्रतिपन्न किया था,—सिखोंका राजस्व-परिमाण २५० लाख पाउण्ड स्टरलिङ्ग या इससे कुछ ज्यादा था; सैन्य-संख्या—८२०० आठ हजार दो सौ थी। उनमें स्थायी पैदल सैन्य,—१५००० और तोपोंकी संख्या,—३७६ थी। (Murray's 'Runjeet Singh' by Princep, p. 185, 186) उसी साल कप्तान वारनसके हिसाबसे तय हुआ, कि सिख-र जका राजस्व-परिमाण,—२५० लाख; सैन्य परिमाण ७५,०००; २५,००० स्थायी पैदल, इसमें हो थे। (Capt Burnes, 'Travel', i. 287, 291.) मिष्टर मेसनने भी ('Journey's,' i. 430) समपरिमाण राजस्वका उल्लेख किया है। उनके हिसाब,—सैन्यकी संख्या ७०,०००; उनमें २०,००० शिक्षित सैन्य थी। सन् १८४५ ई० में लेफटनाण्ट-करनल ष्टिनवेक (Steinbach, 'Punjab' p. 58) ने जो विवरण प्रदान किया, उसके अनुसार सिख-सैन्यका परिमाण,—१,१०,००० है, इनमें ७०,००० स्थायी सैन्य थी। सन् १८४३ ई०को गवरमेण्टके लिये जो हिसाब संग्रह किया गया, वह सम्पूर्ण भ्रमपूर्ण होनेपर भी उसमें देखा जाता है, कि ४०,००० से ज्यादा शिक्षित पैदल सैन्य उस समय रणजित् सिंहके अधीन थी; कुल सैन्यका परिमाण १, १५०००

जब लार्ड अकलण्ड रणजित्सिंहके अतिथिरूपमें लाहौर और अमृतसरमें रहते थे, उस समय महाराजकी बात करनेकी ताकत बहुत कम थी। उनके शरीरका सामर्थ्य भी घट गया था; धीरे धीरे उनकी वाक्शक्ति लोप हो रही थी; पीछे उनकी धी-शक्ति भी अन्तर्हित हुई। उनकी मृत्युसे पहले नौनिहाल सिंह स्थानान्तरमें थे। सुतरां जम्बूके राजगण बहुत सहज ही गवरमेण्टकी सब प्रकारकी क्षमता बलपूर्वक ग्रहण करनेमें समर्थ हुए। सब सैन्य इकट्ठी की गई; और समग्र महाराजकी शिविका सैन्यश्रेणीके पाससे वहन की गई। ध्यानसिंह महाराजके लिये सदा ही शोकचिह्न प्रकाश करते थे। उन्हे देख जान पड़ता था, कि उन्होंने समग्र नरपतिसे आदेश पाया था; अन्तिम अवस्थाके समय, समय समयपर उन्होंने प्रचार किया था, कि रणजित् सिंह खड्गसिंहको अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर गये हैं। और उन्होंने कहा है,—ध्यान-

था, उनमें प्राय: ३७५ तोपें थीं। निर्दिष्ट हिसाबके लिये नीचे लिखी पुस्तकें देखना चाहिये;—Calcutta Review, iii, 176; Dr. Macgregor's 'Sikhs', ii, 86, and Major Smith's 'Reigning Family of Lahore,' App. note s, p. xxxvii. यह सभी ग्रन्थ कहीं कहीं ठीक और कहीं अपरिमित रूपमें हैं।

लाहौरके गवर्मेण्टके हिसाबके सम्बन्धमें द्वाविंश परिशिष्ट (App. xxii.) और लाहौरकी फौजके हिसाबके लिये त्रयोविंश परिशिष्ट (App. xxiii.) देखना चाहिये।

सिंह ही राज्यके वजीर, या मन्त्रीके पदपर प्रतिष्ठित होंगे।* ।
सैन्यसमूहने चुपचाप उसे ही मञ्जूर किया। † पञ्जाबमें

---

* Mr. Clerk's Memorandum of 1842 for Lord Ellenborough.

† रणजित् सिंहकी व्यक्तिगत आकृति और आचार-व्यवहारके अनेक विवरण लिखे गये हैं। उनसे जान पड़ता है, कि मरेकी "जीवनीका" प्रिन्सपका सङ्कलन अधिकतर विहत है। (Princep's Edition of Murray's 'Life', p. 178 &c.) लेकिन कप्तान अबवर्णका "दरबार और शिविर" (Capt. Osborne's 'Court and Camp'), और कर्नेल लरेन्सका "पञ्जाब-विजयी" (Capt. Lawrence's 'Adventurer in the Punjab') इन दोनो ग्रन्थोंमें बहुत चित्तयुक्त विषय और कहानियां सन्निविष्ट हैं। महाराजके सादृश्यके विषयमें जितने विवरण प्रकाशित हुए हैं, उनमें ध्यनरनल मिस इडनका चित्र ही सबसे श्रेष्ठ है। प्रधानतः आदिग्रन्थ ही ठीक और भावव्यञ्जक है। रणजित् सिंह कुछ खर्व्वाकृति थे। युवावयसमें वह हर तरहके पौरुषव्यञ्जक व्यायाममें विशेष पारदर्शी थे, लेकिन वृद्ध वयसमें वह निर्व्वल और स्थूलकाय हो गये थे। बचपनमें वसन्तरोगसे उनकी एक आंख नष्ट हुई थी; उनकी मानसिक शक्तिका श्रेष्ठगुण-व्यञ्जक उनका ललाट ऊंचा, गुरु और प्रशस्त था; लेकिन साधारण प्रतिकृतिमें उनका कुछ भी दिखाई देता नहीं था।

अभिनव और अयोग्य शासनकर्त्ताओंको अकपटभावसे यथा रीति अभिनन्दन पत्र प्रदान करनेमें सिख-जातिकी अपेक्षा सम्भवतः वृटिश-गवरमेण्ट ही अधिकतर प्रयासी थी।

अष्टम परिच्छेद।

महाराज रणजित् सिंहकी मृत्युसे वज़ीर जवाहिरसिंहकी मृत्यु।

सन् १८३९—१८४५ ई०

(पुत्र नवनिहाल सिंह द्वारा खड्गसिंहकी राज्यच्युति;—लेफ्टनेण्ट कर्नल वेड और मिस्टर क्लार्क,—नवनिहालसिंह और उसके राजत्व;—खड्गसिंहकी मृत्यु;—शेरसिंहका महाराजके नामसे घोषित होना;—लेकिन नवनिहालसिंहकी माताका राजकीय सब प्रकारकी क्षमता ग्रहण करना,—शेरसिंहको बलपूर्वक लाहौर और शेरसिंहका क्षमता पाना,—सिपाहियोंका राजकार्यमें हस्तक्षेप और पञ्चायतका राजनैतिक सम्प्रदाय गठन;—अङ्गरेजोंका गाढ़ा [illegible] अभिप्राय,—सिख जातिके प्रति अङ्गरेजोंका नैतिक प्रभाव,—सिक्खोंमें

सिखजाति,—चीनदेशवासियों द्वारा बाधा पाना और अङ्गरेजों द्वारा उनको दमनवाला घटना;—काबुलमें अङ्गरेज;—जनरल पलकका अभियान;—सिंधानवाला और जम्बूके दो परिवार;—शेरसिंहकी मृत्यु;—राजा ध्यानसिंहकी मृत्यु;—महाराज दलीपसिंह और वजीर हीरासिंहका घोषणाप्रचार;—निष्फल राजद्रोह;—पण्डित जुलालका कार्य्यकलाप और व्यवस्थावली;—हीरासिंहकी पदच्युति और प्राणदण्ड;—वजीर जवाहिरसिंह;—गुलावसिंहका वश्यता-स्वीकार,—पेशावारा सिंहका विद्रोह,—सिपाहियों द्वारा जवाहिरसिंहका निधन-साधन।)

हीनबल अकर्म्मण्य खड्गसिंहको सबने ही पञ्जाबके अधिपतिके नामसे स्वीकार किया। लेकिन मृत महाराजके ख्यातनामा पुत्र शेरसिंह अपने श्रेष्ठ हकको गुणावली प्रतिपन्नकर, ब्रटिश-प्रतिनिधिका चिन्ताकर्षण करने लगे। * नाममात्र राजाके औरसजात पुत्र नवनिहालसिंह सम्राटका कुल कार्य्य-भार अपने हाथ लेनेके उद्देश्यसे पेशावरसे बहुत जल्द लाहौर आये। अष्टादशवर्षीय युवक युवराजसे, मन्त्री और जम्बूके

---

* Govt. to Mr. Clerk, 12th July, 1839, पेशावरमें कर्नल वेडकी अनुपस्थितिके समय उनके स्थलाभिषिक्त मिष्टर लार्डने शेरसिंहके दूतको आवद्ध किया; बाद उन्होंने साधारण भावसे गवरनर-जनरलके पास अपना पत्र भेजा। इसमें जरूरी सब प्रकारको आज्ञा देनेके लिये सब बातें ही लिखी गई थी। लार्ड अकलण्डने शेरसिंहसे प्रकट करनेके लिये बहुत जल्द यह आज्ञा दी थी, कि खड्गसिंह ही उनके प्रभु हैं।

राजगण आन्तरिक घृणा करते थे। लेकिन महाराजके दुर्बल चित्तपर चेतसिंह नामक एक व्यक्तिने अपना प्रभाव फैलाया था; खड्गसिंहने ब्रटिश-राज-दूतके प्रभुत्वपर निर्भरकर सुखसे दिन बितानेकी इच्छा की थी। सुतरां बाध्य हो दोनों पक्ष परस्पर सम्मिलित हुआ। खुशामदकारियोंका ध्वंससाधन करना उनका पहला उद्देश्य था, दूसरा उद्देश्य था करनल वेडको स्थानान्तरित करना। वह कर्मचारी सिखोंके स्वत्वा-धिकारकारकी उदारभावसे व्याख्या करते थे और यह समझा देते थे, कि किसतरह अङ्गरेजोंके साथ युद्ध परिहार करना चाहिये, इन्हीं सब कारणोंसे वह रणजित् सिंहसे विशेष आदर और सम्मान पाते थे। महाराजके और प्रस्तावोंका उन्होंने अटलभावसे प्रत्याख्यान किया था, कि ध्यानसिंहकी मध्य-वर्तितामें महाराजके साथ सब प्रकारकी व्यवस्था स्थिर करना चाहिये। अफगान-राजगणके साथ षड़यन्त्रमें लिप्त होकर मिथ्या दोषसे दोषी ठहरा, वह अनौचित्य व्यवहारसे भावी उत्तराधिकारीके विरागभाजन हुए थे। राजाके दरबारमें उन्होंने जैसा कार्य्यभार ग्रहण किया था, उनसे सिक्खजाति समझती थी, कि वह खड्गसिंहके पास प्रतिभू-स्वरूप हैं। उनकी उपस्थितिपर नौनिहाल और घृणा प्रकाश करते थे, कोई कोई अङ्गरेजोंके प्रस्तावका अनुमोदन करनेमें पूरे अनि-च्छुक थे। फिर इनके प्रत्यक्ष करनेसे सभी पुरुष एकान्त इच्छा प्रकाश करते थे, कि जिनके लाहौरके यथार्थ गवर्नर-जनरलको [illegible] मन्त्रणा करें। करनल वे-डके बाधा देते था इस अनधिकार-चर्चासे वह भी भीत हुए थे।

महाराज खड़गसिंह।

सन् १८३६ ई०की ८वीं अक्टोबरको सवेरे युवराज और मन्त्रीने बहुत उच्छृङ्खलभावसे महाराज-प्रासादसम्पर्कीय पारिवारिक मर्यादा नष्ट की। बहुत ही दुर्दम्यताके साथ पारिवारिक नियम भङ्ग हुआ। यही सङ्कल्प उनके हृदयमें जाग्रत किया गया, कि भीत, चकित प्रभुके कई एक कदम आगे बढ़ते ही तेज-सिंहकी हत्या की जायगी। * करनल वेडके स्थानान्तरित होनेपर पञ्जाव पारकर वृटिश-वाहिनीकी परिचालनाका सुयोग उपस्थित हुआ। करनल वेडके स्थानान्तर जानेके साथ ही साथ दूसरे उपायसे वृटिश सैन्यकी परिचालना की व्यवस्था स्थिर हुई।

गवरनर-जनरलने एक व्यवस्था स्थिर की। इससे पहले कितनी ही जातीय अङ्गरेज-सैन्य शाह शुजाके साथ काबुल गई थी। गवरनर-जनरलने यह स्थिर किया था, कि वह बोलन-पासकी राहसे न लौटकर पेशावरके बीचसे आयेगी; गवरनर

---

* नवनिहालसिंह और गुलावसिंहके भाईकी उपस्थितिपर भी, गुलावसिंह स्वयं ही शोकावह व्यापारमें अग्रणी हुए; वही इस शोकावह कामके अभिनेता थे। लाहौरके दरबारमें वृटिश गवरमेण्टका दुःख प्रकाश करनेके लिये करनल वेड आये, कि क्या लाहौरमें ऐसा अत्याचार—ऐसा व्यभिचार सम्भव हो सकता है। (Government to Wade 28th Oct. 1839) खड्गसिंहके पास यह प्रकाश करनेके लिये सिक्ख सर्दार आये, कि खड्गसिंहके पिताकी अन्त्येष्टिके समयकी घटनायें सती-दाहकी प्रथा छोड़ने की अनुमोदित नहीं है।

जनरलने लाहोरमें आ रणजित् सिंहसे मुलाकात की थी, उस समयकी चिट्ठी-पत्रीसे यह बात सुस्थिर न होनेपर भी, महाराज जवानी व्यवहारसे इस प्रस्तावपर सम्मत हुए थे। * महाराजकी मृत्युपर शोक प्रकाश करनेके लिये,नये महाराजके अभिनन्दनकी इच्छासे और सबके अन्तमें गजनी-विजयियोंके साथ लार्ड कीनके लौटनेके सम्बन्धमें व्यवस्था स्थिर करनेके लिये, सन् १८३९ ई०के सितम्बर महीनेमें मिष्टर क्लार्क दूत-रूपमें भेजे गये। युवराज और मन्त्री दोनोंमें शत्रुता थी, अधिकन्तु क्षमता पानेके लिये दोनो ही षड़यन्त्र कर रहे थे। लेकिन वह दोनो ही पञ्जाबके केन्द्रस्थलमें ब्रिटिश सैन्यकी उपस्थितिके सम्पूर्ण विरोधी थे। उन्हें भय था,—सैन्यदल किसी न किसीके पक्षका अवलम्बनकर दूसरेका ध्वंस साधन करेगा; या छ्यित खड़गसिंहके साहाय्यार्थ दोनो पक्षके प्रतिकूल खड़ा होगा। लेकिन सैन्यदलका प्रवेशाधिकार पूरी तरह उपेक्षित हो नहीं सकता था उसकी राह रोकी न जायगी। उन लोगोंने डेरा-इस्माइलखांकी दुर्गम राह अङ्गरेजी सैन्यके लौटनेकी राह ठीक की और उन लोगोंने विज्ञताके साथ जिस पथका निर्देश किया, उससे राजधानी निरापद रही। अङ्गरेज लोग प्रतिज्ञाबद्ध हुए, कि भविष्यत्में अङ्गरेजी सैन्य कभी सिख राज्यके भीतर न जायेगा। †

---

* Government to Mr. Clark, 20th Aug, 1839.

† Mr. Clerk to Government, 14th Sept, 1839. इस निश्चयताके देनेसे गवरनर जनरल सन्तुष्ट नहीं हुए, कि अङ्गरेजी सैन्य फिर सिखराज्यके भीतरसे न जायेगी। (Govt. to Mr. Clerk, 4th Oct. 1839.)

सिख शासनकर्त्तागण इस नई सर्कार व्यवस्थापकके प्रति वहुत सन्तुष्ट हुए। वह कार्य्यकुशल और क्षमताप्राप्त कर्म्मचारी सबके ही बड़े प्रियपात्र थे। परिवर्त्तनके फलसे किसी नये विषयकी उत्पत्ति अनिवार्य्य थी। जिस समय शिमलामें दूत भेजा गया, तो छिपे तौरसे प्रकट किया गया, कि करनल वेड स्वयं लाहोरके शासनकर्त्ताओंके विरागभाजन हुए हैं। इस सम्बन्धमें लार्ड ऑकलैंडके पास ऊपरही ऊपर धीरे धीरे अभियोग चलने लगा, महाराजसे मुलाकात करनेके लिये वह कई दिनोंके लिये फौज छोड़कर गये * सन् १८३९ ई० के नवम्बर महीनेमें करनल वेड काबुलसे लौटे; उसी समय वह सिख-राजधानीमें आये। उस समय जितने ही लोग खड्गसिंहके प्राणविनाशकी चेष्टा कर रहे थे; या खड्गसिंह जिससे प्रभुत्वकी क्षमता परित्याग करनेपर वाध्य हो, इसके लिये कितने ही लोग उद्योगी थे। लेकिन वह सभी करनल वेडसे घृणा करते थे। उन लोगोंने धर्म्मानुष्ठानका वहानाकर खड्गसिंहको इसलिये दूर रखा, कि खड्गसिंह उनके हाथसे मुक्ति पानेकी आशासे शायद चिरशत्रुका आश्रय ग्रहण करेंगे; करनल वेडसे उनकी मुलाकात भी नहीं हुई। †

---

* See particularly, Government to Col. Wade, 29th Jan. 1840, and Col. Wade to Government, 1st April, 1840

† Compare Moonsh-e Sahamut Alee's 'Sikh's and 'Afghan's', p. 543 &c.; खड्गसिंहके प्रति अङ्गरेजोंने जो भाव प्रकाश किया था, उसके सम्बन्धमें ५६५ पृष्ठके "नोट"में जो

ही एक वाक्यसे उस प्रस्तावका प्रतिवाद किया। प्रधानतः कर्नल वेडकी दुर्नाम-रटनासे और उनके अपमानके लिये विच्छिन्न वृटिश सैन्यकी साजसज्जा युद्धोपकरणादि भेजनेके उद्योगमें बाधा देनेके साहसी हुए। गवरनर-जनरल इस समय काबुलकी ओर जानेके लिये एक सुगम राह सदा उन्मुक्त रखनेकी जरूरतकी उपलब्धि करने लगे। लाहोरके कलहप्रिय विभिन्न दलकी तृप्तिविधानके लिये उनके पक्षका समर्थनकर, वहांसे प्रतिनिधिको स्थानान्तरित कर दिया। लेकिन ध्यानसिंह और युवराज उद्देश्यसाधनमें हताश हुए। सङ्गीनहस्त प्रहरी सिपाहियोंको अपनी राहपर बढ़नेके लिये किसी तरहकी बाधा दी नहीं गई। उस समय गवरनर जनरलने उनके प्रस्तावका अनुमोदन किया। * सन् १८४० ई० के अप्रैल महीनेके शुरूमें मिष्टर क्लार्कने पञ्जाबके साथ अङ्गरेजोंका सम्बन्धस्थापन-सम्पर्कीय कार्य्यभार पाया। वह शिक्षित और बहुगुणसे भूषित थे; जरूरी सामयिक कामोंके सम्पादनके लिये वही एकमात्र उपयुक्त पुरुष थे। सिन्धुदेशको शासनाधीनमें रख जब अफ-

---

* इसी समय गवरनर-जनरलने कलकत्ते जानेकी इच्छा की। इसके लिये सिखोंके प्रिय और अपने अनुग्रहभाजन एक प्रतिनिधिको सीमान्त-प्रदेशका कार्य्यनिर्व्वाहके लिये नियुक्त करनेकी इच्छा की। उस समय लाहोरमें जो लोग आधिपत्य लाभ कर रहे थे, गवरनर जनरलकी इच्छा थी, कि उनके मनकी तुष्टिके लिये एक उपयुक्त मनुष्य उस कामपर नियुक्त हों। (Government to Capt. Wade, 29th Jan 1840.)

गानस्थानपर आक्रमण करना ही ठीक हुआ था उस समय जिस कारणसे कर्नल वेडका दौत्यकार्य सबसे श्रेष्ठ और मूल्यवान् समझा गया था इस समय उसी कारणसे मिस्टर क्लार्कका दौत्य भी भारतमें अङ्गरेजोंकी अनिश्चित शासन-नीतिके लिये विशेष मङ्गल-विधायक हो गया था। वस्तुतः दोनों ही कर्मचारी उस समयके सिखशासनकर्ताओंके विश्वासभाजन हुए थे। पञ्जाब गवरमेण्टकी मङ्गलाकाङ्क्षासे और अङ्गरेजोंकी स्वार्थनीतिके वशवर्त्ती हो, वह लोग सब कार्यनिर्वाह करते थे—उस समय सब विषयोंमें ऐसा ही भाव प्रकाशित होता था।

इसतरह सिख-शासनकर्ता और गवरनर-जनरल दोनोंहीने उस समयमें उद्देश्यका साधन किया। एक ओर महाराज उच्चाभिलाषी पुत्रकी तेजस्वितासे और विजयलालसासे बहुत व्याकुल हुए; दूसरी ओर पञ्जाबप्रदेशमें ब्रिटिश सैन्यकी बेरोक गति-विधिसे वह विशेष चिन्तित हो गये। वह यह विचारकर व्याकुल हुए, कि ब्रिटिश-इण्डियाके साथ इरोपके पश्चिमांशमें बन्धुत्वके चिरस्थायी बन्धनमें आबद्ध करनेके विचारसे, उनकी कामना परिपूर्ण होना सम्भव है। इसके बाद निकट-सम्बन्धीय और बहुत जरूरी दूसरी कई बातोंके व्यवस्था-विधानके लिये दोनों पक्षकी दृष्टि सञ्चालित हुई। सिन्धुनदके वाणिज्य-पोत चलानेके लिये अङ्गरेजोंने उदारतर सुविधाजनक वाणिज्य-नीतिका अनुसरण किया। सिन्धुनदके किनारे एक बन्दर बनानेके लिये वह लोग बार बार प्रयास करने लगे। उनके मनमें आशा थी कि यह बन्दर शीघ्र ही वाणिज्यका केन्द्रस्थल हो जायगा। *

* Government to Mr. Clerk, [illegible] May, 184[illegible]

जितने वाणिज्य-बोट सिन्धुनद और शतद्रुमें आतेजाते थे, सन् १८३४ ई०की सन्धिके अनुसार उनपर कर निर्द्धारित हुआ था। सन् १८३६ ई०में सिखलोग अङ्गरेजोंके परिवर्त्तनशील मतके अनुवर्त्ती नहीं हुए, पण्य बोझनेके बोटपर कर न लगा, पण्यकी कीमतके अनुसार निर्द्दिष्ट दरपर उन लोगोंने अपना ही वाणिज्यशुल्क स्थापन किया। * ऐसे नियमके अनुकूल होनेपर और एक नई प्रथाकी सृष्टि हुई,—सब वाणिज्य-बोटोंके अनुसन्धानके फलसे देर होने लगी। सन् १८४० ई० के जून महीनेमें वाणिज्यकी नावपर फिर परिवर्त्तित दरसे कर संस्थापित हुआ, लेकिन इसबार खाद्यद्रव्य, काष्ठ और पथरिया चना लादनेकी नावके नियमके वहिर्भूत होनेके कारण उसपर शुल्क लगाया नहीं गया। † लेकिन गवरमेण्टकी सेकड़ो

सिन्धुनदमें वाणिज्य-बोट चलाना स्थिरकर किनारेकी जमीनपर एक बहुत बड़ा वाणिज्य-बन्दर बनानेके उद्देश्यसे अङ्गरेजोंने बहुत चेष्टा की थी। (Government to Capt. Wade, 5th Sept. 1836.)

* Mr. Clerk to Government of India, 19th May and 18th Sept. 1839, and Government to Mr. Clerk, 20th Aug. 1839. For the Agreement itself, see Appendix vi.

† Mr. Clerk to Government, 5th May, and 15th July, 1840. For the Agreement itsl f, see Appendix xvi. दूसरे समय स्थानीय कर्म पद्धतिके समय समयपर बाहादु-

चेष्टाओंसे, बड़े सैन्यदलका आकस्मिक साहाय्य पानेपर भी सिन्धु नदमें बहुमूल्य वाणिज्यकी प्रथाके प्रवर्तित करनेकी आशा अबतक पूरी फलवती नहीं हुई। इस वारेमें यह कई कारण हो सकते है, कि असलमें सिन्धुदेश और अफगानस्थान बिलकुल अनुर्व्वर प्रदेश है; वहां अधूरी असभ्य जातिका वास है, उनका अभाव भी सामान्य है; आमदनी भी बहुत थोड़ी है। दूसरा कारण यह है, कि बहुत दिनोंसे भू-भागीय वाणिज्यमें बहुत मूलधन खर्च हुआ; उत्तर और दक्षिण भारत परस्पर उसी वाणिज्य-सूत्रमें ग्रथित था। राज-पूतानेकी पुरानी राहोंपर और मालवा उर्व्वर प्रदेशमें भी यही वाणिज्य-कार्य चलता था, उसी वाणिज्यके प्रभावपर कितने ही ऊंट और काठ मेषपालक जातिकी जीविका संस्थापित हुई थी। जिस राज्यमें बहुत दिनोंसे राजनीतिक विवाद-व्यवच्छेद चलता आता है, वहांके विज्ञ व्यवसायियोंकी चिरप्रचलित परिमित प्रथाका परिवर्तन-साधन करना समय सापेक्ष था; सुतरां अङ्गरेजोंकी उचित बुद्धि और विचारशक्तिके बदले पुराने गौरवके केन्द्रस्थलमस्तकपर

वाद चलने लगा, कि बांसके टुकड़े काटमें गिने जायेंगे या नहीं। इस विषयमें बहुत तर्कवितर्क चलता था, कि धान, चावल शस्यादिके अन्तर्भुक्त हैं या नहीं; भारतमें यह सब शस्यादिके अन्तर्भुक्त नहीं हैं। ग्रेन ('Grain') शब्दका विलायतमें निर्दिष्ट अर्थ रहनेपर आधुनिक शब्द 'Bread-stuff' या खाद्यद्रव्य" शब्दकी उत्पत्ति हुई है।

एक वाणिज्य-बन्दरकी प्रतिष्ठाकी कल्पना, घोषणा द्वारा प्रचारित हुई थी। *

जम्बूके क्षमताशाली राजाका ध्वंस-साधन करना ही नवनिहालसिंहका प्रधान उद्देश्य था। जम्बू-राजने सब राजशक्तियोंके ग्रहण करनेकी इच्छा की थी; पञ्जाबके विभिन्न प्रदेशमें कितने ही छोटे छोटे राज्य उनके अधिकारमें थे। इसके सिवा इरावती और वितस्ता दोनो नदियोंके मध्यवर्ती पहाड़ी जनपदसमूहपर लदाखमें वह आंशिकरूपसे शासन-दण्डकी परिचालना करते थे। मण्डी और काङ्गड़ेके पास राजपूत-राजगण स्वीकृत राजस्व देनेमें देर करते थे। इसी वहाने जम्बू राजने पूर्व्व प्रदेशीय पहाड़ी राज्योंमे वहुसंख्यक सैन्य भेजी। इस दुर्गम पर्व्वतश्रेणीमें उनके सैन्यदलने गुरुतर वाधा पाई; सुतरां वाध्य हो वह वार वार अतिरिक्त सैन्य भेजने लगे। उन्होंने जम्बूकी उत्तर पूर्व्वांशमें एकदल सैन्य संस्थापन की।

---

* जो हो, सन् १८४६ ई०में जलन्धर-दोआबके राज्यभुक्त होनेपर फिर परीक्षा शुरू हुई। उस समय सबको ही आशा थी, कि होशियारपुर वाणिज्यका केन्द्रस्थल होगा; लेकिन वह आशा भी विफल हुई। अङ्गरेज-शासनकी भावी उपयोगिताकी उपलब्धिकर अनेक सहृदय पुरुषोंकी अपूर्ण आशाके कितने ही निदर्शन भारतमें सब जगह ही दिखाई देते हैं। अङ्गरेज-शासनमें वस्तुतः ही विविध नीति और आर्थिक उन्नतिकी सम्भावना सच्ची है, लेकिन वहुत धीरे और परिश्रमके साथ विविध उपायोंसे शासनप्रणालीका परिवर्त्तन करना जरूरी है।

यही उनका प्रधान उद्देश्य था, कि वह सैन्यदल लाहोरसे आनेवाली सैन्यके साथ मिल परस्पर साहाय्य कर सकती है। सुचतुर सेनापति वेण्टूरा और रणकुशल युवक राजा अजितसिंह सिन्धानवाला, इस सैन्यवर्गके सेनापति नियुक्त हुए। लेकिन कोई राजा ध्यानसिंहके मङ्गलाकांक्षी या उनके प्रति अनुरक्त नहीं थे। * सुतरां उन राजोंको सम्पूर्ण आयत्ताधीन रखनेके सम्बन्धमें अपरिणत-वयस्क युवराजकी कल्पना बहुत समीचीन जान पड़ी। लेकिन क्रमवर्द्धिष्णु लाहोरराज्यकी और पुनःप्रतिष्ठित काबुलराज्यकी सीमा निर्द्दिष्ट करनेके सम्बन्धमें अङ्गरेज कर्त्तृपक्षियोंके साथ विवाद उपस्थित होनेपर उनको सब मन्तव्य ही विच्छिन्न हो गई। इसी समय दोस्तमुहम्मद सैन्य भियानसे प्रस्तुत हो रहे थे, इस आक्रमणके भयसे खुरासानके अङ्गरेज शासनकर्त्तागण कांपे, लेकिन तब भी वह लोग जिस शत्रुके भयसे कम्पित हुए थे, उस शत्रुके आक्रमणसे पराह सुगम हो गई। युवराज इस अपराधके अपराधी ठहराये गये, कि उन्होंने दोस्तमुहम्मदखांके साथ बन्धुत्व स्थापन किया है और वह कलहप्रिय राजोंको शाह शुजाके अधीनतापाशसे छिन्न करनेके लिये उत्साहित कर रहे हैं। इनसे अङ्गरेजोंके साथ उनका और भी मनोमालिन्य हुआ। उस समय राज मन्सूरकी बात सन्धिपत्रमें लिखी नहीं गई, या जो प्रकार भारतमें लाहोरके अधिकारगत नहीं है, शाह शुजाके कानमें किस

---

* Compare Mr, Clerk to Government, 8th Sept. 1840.

अङ्गरेज कर्म्मचारी व्याप्टत थे, उन लोगोंने भी विजेता सिखोंकी अपेक्षा दुर्रानियोंका जबरदस्त हक समझा था,—वह भी अस्वीकार किया जा नहीं सकता। पञ्जाब गवरमेण्टके मतानुसार पेशावर प्रदेश सन् १८३४ ई०में शाहने स्वतन्त्ररूपसे समर्पण किया था और सन् १८३८ ई०की सन्धिके शर्तके अनुसार उसपर लाहोराधिपतिका स्वत्वाधिकार हुआ था; इसी समय पार्थक्य-विधायिनी नदीके किनारेकी जमीनमें उस प्रदेशको छोटे छोटे अंशमें विभक्त करनेका प्रस्ताव चलने लगा। * नवनिहालसिंहके मुहराङ्कित दलीलादि प्रदर्शित हुए; दोस्त मुहम्मदके अङ्गीकृत अर्थसाहाय्यके देनेके बारेमें भी उसमें लिखा था। विश्वास-घातकता-मूलक सब अभियोग ही दूर हुए सही, लेकिन उनका नामाङ्कित मुहर जाली ठहराया गया। पञ्जाबके वृटिश राजप्रतिनिधिने स्वीकार किया, कि अप्रकाश्य और राजद्रोहमूलक उपायका अवलम्बन करना, स्वाधीन और अकपट सरलविश्वासी सिखोंकी स्वाभाविक वृत्ति नहीं है। †

---

* See particularly Sir Wm. Macnaghten to Government, 24th Feb. and 12th March, 1840.

† Government to Mr. Clerk, 1st Oct. 1840, and Mr. Clerk to Government, 9th Dec. 1840. करनल स्टिनबेकका ग्रन्थ देखना चाहिये ('Punjab', p. 23) वह कहते हैं, कि अङ्गरेजोंके उच्छेदसाधनकी इच्छासे दुवराजने नेपाल और काबुलसे साहाय्यकी प्रार्थना की। लेकिन शायद वह भूल गये हैं, कि जम्बूके राजगणको ध्वंसकर पञ्जाबका अधिपति होना ही नवनिहाल सिंहका प्रधान उद्देश्य था।

इसी समय खिलजी-वंशीय राजद्रोहियोंने पेशावरके पास कोहट नामक स्थानमें सुलतान मुहम्मदकी जागीरमें आश्रय ग्रहण किया था; उनके निकटवर्ती होनेसे स्वेच्छाचारी शाह और उनकी साम्यनीतिके अनुसरणकारी अङ्गरेजोंके विरुद्ध शासन-कार्य्यमें विघ्न पड़ा था। वारिकलके शासनकर्त्ता सुलतान मुहम्मद खाँ, उन लोगोंको कैदकर लुधियाने भेजनेपर बाध्य हुए। *

इसी समय देखा गया, कि नवनिहाल सिंहने इङ्गलण्डसे जिस विपत्पातकी आशङ्का की थी, वह अभी दूरीभूत हुए हैं। अब वह पितामहके प्रियतमोंके सीमातिक्रान्त क्षमताके उच्छेद साधनमें उद्योग करने लगे। इस समय महाराजकी मृत्युका समय धीरे धीरे नजदीक आ रहा था। विश्वस्तसूत्रसे मालूम हुआ कि अतिरिक्त मादकद्रव्यके सेवनसे और पुत्रकी कृतघ्नतामें निष्ठुरतासे थोड़े दिनोंमें ही वह मृत्युमुखमें पतित हुए हैं। लेकिन ऐसे अयोग्य और दुर्बलचेता शासनकर्त्ताको कोई ध्यान करता नहीं था। सन् १८४० ई० की ५वीं नवम्बरको ३८ वर्षकी उम्रमें खड़गसिंहकी मृत्यु हुई। उनकी उम्र ज्यादा न होनेपर भी उन्होंने क्रमसे वृद्धत्व पाया था। उनकी मृत्युके बाद नवनिहाल सिंह राजाके नामसे विभूषित हुए और वह राज-शक्तिपर अधिकार कर बैठे। लेकिन जिस दिन महाराजकी

* Government, to Mr, Clerk, 12th Oct, and Mr, Clerk to Government 14th May, 10th Sept, and 24th Oct, 1840

खचित चाकचिक्यशाली राजमुकुटसे उनका मस्तक परिशोभित हुआ, उसी दिन वह मारे गये। वह अपने पिताकी अन्त्येष्टि चिता-सज्जाका शेष अनुष्ठान सम्पादनकर गुलाबसिंहके ज्येष्ठ-पुत्रके साथ सिंहद्वारसे आ रहे थे, उसी समय उस अट्टालिकाका कुछ अंश टूट पड़ा; मन्त्रीके भाईके लड़केकी उसी समय मृत्यु हुई; नवनिहालसिंहको इतनी कड़ी चोट लगी, कि कुछ देर बेहोश रह उन्होंने रातमें ही प्राणत्याग किया। यह ठीक मालूम नहीं हुआ, कि नवनिहालसिंहके मारनेके लिये जम्बूके राजोंने ऐसी अभिसन्धि की थी, या नहीं। लेकिन उन लोगोंको इस दोषसे मुक्त करना नितान्त दुःसाध्य था; यह भी निश्चित है, कि यह पापकार्य्य उन लोगो द्वारा सम्भव हो। आत्मरक्षा ही दोषस्खालनका एक मात्र हेतु है। कारण, इसमें सन्देह नहीं, कि युवराजने उनकी अवनतिके लिये और सम्भव-पर होनेपर उनके ध्वंससाधनके लिये षड्यन्त्र किया था। * इस-

---

* Compare Mr. Clerk to Government, 6th, 7th and 10th Nov. 1840. सन् १८४१ ई० में मिष्टर क्लार्कने एलेनबार्डेराके लिये जो संक्षिप्तसार संग्रह किया था, उसमें उन्होंने और भी कहा था, कि जनरल वेएट्राकी समझसे दैवघटनाक्रमसे सिंहद्वारका पतन हुआ था। विस्तृत विवरण जाननेके लिये, लेफटएट कर्नल ष्टिनवेकका "पञ्जाब" नामक ग्रन्थ (p. 24) और मेजर स्मिथका "लाहोरका राजवंश" ('Reigning family of Lahore', p. 35 &c.) नामक ग्रन्थ देखना चाहिये। कप्तान गार्डनर नामक एक चाक्षुष-प्रत्यक्षकारी अङ्गरेज इसपर नि-

तरह बीस वर्षकी उम्रमें नवनिहालसिंह निहत हुए सबने ही आशा की थी, कि वह एक सुदक्ष और वीर्य्यवान शासक-तीके नामसे परिचित होंगे। यदि अकालमें उनका जीवनसंहार न होता और स्वार्थनीतिके अनुसार अङ्गरेज लोग उनके कु- अंशको अन्याय समझकर स्वीकार न करते, तो सिन्धुदेश औ अफगानस्थानपर उनकी क्षमता विस्तृत होती। यहांतक, कि हिन्दूकुश पार करके भी वह अपनी लालसाकी परितृप्तिका प्रचुर सुयोग पाते। अन्तमें शायद वह आत्मश्लाघा कर सकते, कि भारतके नवजीवनप्राप्त कृषिजीवियों द्वारा महम्मद और तैमूर-के लूटनेका और अत्याचारका पूरा प्रतिफल दिया गया।

सिखराजमन्त्री और अङ्गरेज राजप्रतिनिधिने नम्रस्वभाव-सम्पन्न विश्वासक शेरसिंहको ही पञ्जाबके सिंहासनाधिरोहणका एकमात्र योग्य पुरुष समझा। जब महाराजकी मृत्यु हुई और उनके पुत्र मरे, तब शेरसिंह स्थानान्तरमें थे, इस समय जिसमें शेरसिंह घनिष्ठ बन्धुवर्गके समर्थन करनेका यथेष्ट समय और अवसर पावें, इसलिये ध्यानसिंहने पूर्वोक्त घटनाओं [illegible] सम्भव था, छिपा रखा। उस समय जो संघटित हुआ था उससे सर्वसाधारणकी स्वतः ही [illegible] सीमान्त प्रदेशमें शासन संरक्षणकी सुश्रुषाके लिये [illegible]

[illegible] वर्णनाकी भित्ति-स्वरूप मरे [illegible] गया है। यह कह दिया गया है; उनका [illegible] ध्यानसिंहने [illegible] नहीं सकता।

प्रतिनिधि उन्हें बार बार आदेश करने लगे। * लेकिन शेर-सिंहके वंश और जन्मके विषयमें बहुत सन्देह था, उनकी प्रभुत्वकी क्षमता बहुत थोड़ी थी, वह लोगोंके प्रिय नहीं थे। वह जम्बूके राजोंके अधिकांश सिख सामन्तके विशेष घृणा और अश्रद्धाभाजन हो गये थे। अतएव खड्गसिंहकी विधवा पत्नी और मृतयुवराजकी माता चन्द्रकुंवरि स्वयं राज-प्रतिनिधि (अभिभाविका) नियुक्त हो सब राजकार्य चलाने लगीं। वस्तुतः अकस्मात् अजानित भावसे कार्य्य समाधा हुआ; लेकिन जो लोग उनके इस कामसे किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हुए थे; उस समय उनमें किसीने बाधा नहीं दी कोई आपत्ति नहीं की। कुछ ख्यातनामा पुरुषोंने उनके पक्षका समर्थन किया सही, लेकिन रणजित् सिंहके निकट सम्पर्कीय और स्ववंशजात "सिन्धानवाला" राजवंश ही प्रधानतः उनकी सहायता करने लगा। प्राप्त-यौवन हीरासिंहके स्वत्वाधिकारको जबरदस्त कर-नेके लिये इन रमणीने उनके पोष्यग्रहणका प्रस्ताव किया; वृद्ध महाराजके उनके पोष्यरूप ग्रहण न करनेपर भी सामाजिक प्रथाके अनुसार उन्हें ग्रहण किया था। फिर अपनी कन्याके गर्भवती होनेकी घोषणाकर उन्होंने परस्पर विरोधी विभिन्न दलपति-गणको हतबुद्धि कर डाला। उस समय शेरसिंहके विवाहका प्रस्तावकर एकदलने उन रमणीको दलभुक्त करनेकी चेष्टा की; लेकिन अवज्ञा प्रकाशकर चन्द्रकुंवरिने इस विवाहके प्रस्तावको

---

* Compare Mr. Clerk to Government, 7th Nov. 1840, and also Mr. Clerk's Memorandum of 1842.

उठा दिया। दूसरी ओर अधिकतर सच्चा कारण दिखाकर उन्होंने कहा, कि उत्तरसिंह सिन्धानवाला ही योग्य पुरुष है। कारण, इस विवाहके अनुष्ठित होनेपर उत्तर-भारतकी प्रचलित सामाजिक प्रथाके अनुसार, परिवारमें वह सम्मान-सूचक उचित पद पा सकेंगे। जो हो, महाराजकी विधवा पत्नीने राज्याधिकारका अपना हक विधिपूर्वकरूपसे प्रतिपन्न किया, कई समाह बीतनेपर पञ्जाब गवरमेण्ट इसतरह गठित हुई;—पहले "माई" या "माता"—प्रधानतः शासनकर्त्री या नवनिहालसिंहके भावी सन्तानकी अभिभाविका या प्रतिनिधि नियुक्त हुईं, दूसरे, शेरसिंह—सहकारी प्रतिनिधि या अभिभावक या मन्त्री सभाके सभापति हुए; ध्यानसिंह—वजीर या शासन-विभागके मन्त्री नियुक्त हुए। लेकिन यह विधि-व्यवस्था बहुत दिनोंतक स्थायी नहीं रही। कुछ दिनोंके बाद ध्यानसिंह और शेरसिंह दोनों ही भिन्न भिन्न समयपर लाहोरसे बाहर रहने लगे। अङ्गरेजोंके सामने उस समय बहुत काम उपस्थित हुए थे; एकने विचारा, कि वही एकमात्र सक्षम हैं। उन्हें आशा थी, कि सुचारुरूपसे उस कामके निर्वाहित होनेपर, लोगोंके मनमें ऐसा विश्वास उत्पन्न होगा, कि शासन-दण्डकी परिचालनाके लिये उनकी ही साहाय्यकी एकमात्र जरूरत है। लेकिन दूसरे पुरुष, दोनों ही उपहार और अधिक तनखाह देना मञ्जूरकर सेनाका साहाय्य पानेकी आशासे परोक्षमें प्रच्छन्न भावसे चेष्टा करने लगे, उस समय उनके मनमें ऐसा ही भाव उत्पन्न हुआ, कि जरूरत पड़नेपर, बल-प्रयोग द्वारा कार्यसिद्धि हो सकती है। लेकिन ऐसी दशाके साथ शेरसिंहका मैत्रक एक उल्लिख हुआ था,

रानी झिन्दन या चन्द्रावती।

कि जिससे मन्त्रिवर उनके प्रति सन्दिहान हो विचारने लगे, कि अधिकतर उपयोगी उपायावलम्बकी जरूरत पड़ेगी या नहीं। उसीके अनुसार अङ्गरेज-कर्त्तृपक्षगण कभी जिस बातको जानते नहीं थे,—वह उन्हें स्मरण कराया गया,—काबुलके सिंहासनपर शाह सुजाकी प्रतिष्ठाके लिये जब परामर्श-सभाका अधिवेशन हो रहा था, उसके कई महीने पहले रणजित् सिंहकी प्रियतमा रानी या उपपत्नी रानी भिन्दनने दलीप नामक एक पुत्र प्रसव किया था। *

बृटिश राजप्रतिनिधिने (गवरनर जनरल) कभी माई चन्द्र-कुंवरिको उनके स्वामी और पुत्रकी एकमात्र उत्तराधिकारिणी या उनके राज्यकी अधीश्वरीके नामसे स्वीकार नहीं किया। लेकिन क्षमताप्राप्त प्रतिनिधिगण द्वारा दोनो राज्यका राजकार्य्य निर्व्वाह करनेसे गवरनर जनरल उनके राज्यको असलमें अङ्गरेज राज्यके अन्तरभुक्त समझते थे। जो हो, पञ्जाबमें शान्ति और शृङ्खला स्थापनके लिये गवरनर जनरल विशेष उद्विग्न थे। अफगानस्थान-की उनकी कार्य्यावलीकी अवस्थाके साथ ही साथ उनका उद्वेग

* Compare Mr. Clerk to Government, of dates between the 10th Nov. 1840, and 2nd Jan. 1841. उल्लिखित पत्रादिके सिवा प्रधानतः ११वीं और २४वीं नवम्बर और ११वीं दिसम्बरका पत्र देखना चाहिये। यह सच जान पड़ता है, कि दलीप नामक किसी बालकके अस्तित्वके विषयमें, अङ्गरेज कर्मचारी लोग कुछ भी जानते नहीं थे।

भी बढ़ने लगा। दोस्तमुहम्मदने इसी समय सिंहासन पानेकी चेष्टा की; एकमात्र अङ्गरेज सैन्यके साहाय्यसे उनके समर्थन होनेके दृढ़ सङ्कल्पके अतिरिक्त सैन्य भेजनेकी जरूरत पड़ी; सुतरां खड़गसिंहकी मृत्युके पहले ही उनके हजार सिपाही काबुल जानेके उद्देश्यसे फीरोजपुर पहुंचे थे। * लाहौरके गृह विवादसे इस प्रबल सैन्य-स्रोतकी गति प्रतिहत नहीं हुई, या उन लोगोंने वहां देर करनेका अवसर नहीं पाया। निर्विवादके साथ सिपाही लोग धीरे धीरे चलने लगे, पेशावर पहुंचकर उन लोगोंने देखा, कि दोस्तमुहम्मद कैद हुए हैं। एक दम अवसरप्राप्त सैन्य द्वारा प्रहरी-परिवेष्टित हो राज्यच्युत अमीर पञ्जाबकी राहसे गये। उस समय शेरसिंह लाहौरका दुर्ग अवरोध करनेमें व्यापृत थे, तब भी उन्होंने पहले ही निश्चितताके साथ सिख-सीमाके उसपार अङ्गरेजी फौजके आनेजानेकी राह ठीक कर दी। इस बीचमें मुसलमान जातिने भी पूर्णतरह अधी-नता स्वीकार की थी। सुतरां अङ्गरेज सेनापति दूसरे उपायसे गृहविवादकी बात कुछ भी जान नहीं सके; केवल समाचार लेखकोंके प्रचारसे और लोगोंकी जबानी यह सब बातें उनपर प्रकट हुईं। †

---

* Government to Mr. Clerk, 1st and 2nd Nov. 1840, and other letters to and from that functionary.

† दक्ष और सुचतुर [illegible] [illegible] नामा [illegible] [illegible] परिचालित हुई थी। मुसलमान और सिख [illegible] [illegible]में उनका नाम दोनोंमें विशेष परिचित है।

वस्तुतः इस बारेमें गवरमेण्टने कोई घोषणा प्रचार नहीं की, कि लाहोरके सिंहासनका उत्तराधिकारी कौन होगा। लेकिन सबको ही विश्वास हुआ, कि शेरसिंह ही राज्यके प्रकृत अधिकारीके नामसे स्वीकृत हुए हैं। उस समय माई चन्द्रकुंवरिके मन्त्रीलोग समझे, कि राजा ध्यानसिंहका आश्रय न ग्रहण करनेपर युवराजके अप्रकृत स्वत्वाधिकारमें और अङ्गरेजोंके प्रभुत्वक्षमतामें बाधा देना असम्भव है। ध्यानसिंहनेभी कभी महारानीका प्रधान मन्त्रीत्व पानेसे अनिच्छा प्रकाश नहीं की। गुलाबसिंह सबसे चतुर और विचक्षण थे। विचक्षण रमणीकी स्वाभाविक जटिल शासन प्रणालीको उन्होंने अपने परिवारकी उन्नतिके लिये सुविधाजनक और कितने ही विषयोंमें वर्त्तमान देखा। वस्तुतः पक्षपातित्वके दोषसे कलुषित और सिख-धर्म्मके अनुवर्त्ती साधारण-ज्ञान-विशिष्ट रानीके शासनमें यह सब कुछ भी दोष वर्त्तमान रह नहीं सकते। लेकिन माईके मन्त्रियोंने पूरी अपरिचित अवस्थामें रहनेसे अनिच्छा प्रकाश की। ध्यानसिंहने भी दूर रह उपयुक्त समय पा साहाय्य देनेके लिये, शेरसिंहको आश्वास दिया। इधर युवराजने अपने सिंहासन पानेके सम्बन्धमें अङ्गरेज-प्रतिनिधिका मतामत जानना चाहा। अङ्गरेजोंने उस बारेमें उत्तर दिया,—अङ्गरेजोंने उन्हें अच्छी तरह समझाया, कि जो लोग बत्तीस वर्षोंसे सिखोंके मित्रतासूत्रमें आबद्ध हैं, वह लोग पञ्जाबमें केवल दृढ़-शासन-नीतिका प्रवर्त्तन देखनेकी इच्छा करते हैं, युवराज ऐसा ही उत्तर पाकर सन्तुष्ट हुए। *

---

* See Mr. Clerk's letters to Government, of Dec. 1840, and Jan. 1841, generally that of the 9th Jan.

सन्तोंके साहाय्यसे शेरसिंहने कई एक सैन्य-विभाग अपने हाथ किया था। उन्हें विश्वास था, कि यदि वह साहसपर निर्भरकर उनके सेनापति होंगे, तो सब सैन्य-विभाग उनके पक्ष-का समर्थन करने खड़ा होगा। युवराज या उनके प्रिय अनुचरों-की व्यग्रतासे भी काम बहुत जल्द संघटित हुए। सन् १८४१ ई० की १ली जनवरीको जब उन्होंने अकस्मात् लाहौरपर आक्रमण किया, तब देखा, कि ध्यानसिंह उस समयतक भी जम्मूसे आये नहीं हैं, परन्तु उनकी अव्यवस्थित मतलबसे विनीतभावसे सन्तोंका पक्ष अवलम्बन करनेकी अपेक्षा गढ़की सर्व्वविदित अधिष्ठात्री रानीके अनुकूल युद्ध करना ही श्रेष्ठ समझ गुलाबसिंह सुसज्जित हुए हैं। लेकिन शेरसिंह और ज्यादा प्रभुत्व-शक्तिकी परिचालना कर नहीं सके; उनकी फिर कोई क्ष-मता नहीं रही। वह खुद भी धैर्य्यावलम्बन कर नहीं सके। सुतरां बहुत जल्द उनकी प्रबल सैन्य दुर्ग तोड़नेके लिये आगे बढ़ी। गुलाबसिंहने कुछ दिनों प्रतीक्षा करनेके लिये कहा और उन्होंने उन लोगोंसे प्रभुतादत्त परित्याग करनेके लिये कहा; लेकिन उससे कोई फल नहीं मिला। १५वीं जनवरीको ध्यानसिंह और प्रधान प्रधान कई सर्दार आ पहुंचे; दो दलोंमें विभक्त थे, उन लोगोंने कोई न कोई पक्ष अवलम्बन किया। अन्तमें विवादकी मीमांसा हो गई; माईको सनदें दी, जागीरें स्वीकार किया। उन्होंने एक वृहत् साम्राज्य पाया; लेकिन शेरसिंह पहलेके महाराजके नामसे घोषित हुए; ध्यानसिंहने फिरसे बार साम्राज्यके वजीरका पद पाया; सामयिक एक रुपयेकी हर्ष स्वाधीनदर्पके सिपाहियोंकी तनखाह बढ़ाई गई। सिपाहियोंने

समझा, कि वह लोग नये महाराजके अप्रियभाजन होंगे। उत्तरसिंह और अजितसिंहने सबसे पहले नाना उपायोंसे राजधानीसे भाग अन्तमें अङ्गरेजोंका आश्रय ग्रहण किया। लेकिन लेहनासिंह नामक और एक प्रधान पुरुष, जिन्होंने कुलू, और मण्डीके पहाड़ी प्रदेशोंमें छोटे सैन्यदलकी परिचालना की थी, उनके साथ राजधानीमें ही रहे। *

शेरसिंहको राजसिंहासनपर प्रतिष्ठित करनेके लिये सिपाहियोंने मञ्जूरी दी थी। लेकिन सैन्यरूपमें उनको परिचालना करनेको, या प्रजारूपमें उनके शासन पालन करनेकी क्षमता नहीं थी। सुतरां उनकी अक्षमता समझ, और अपनी क्षमता और वीरत्वपर विश्वासवान हो, जिन सब कर्म्मचारियोंने उनसे शत्रुता की थी, या सैनिक-विभागके हिसाबमें जिन कर्म्मचारियोंने प्रतारणापूर्व्वक उन्हें तनखाह पानेसे वञ्चित किया था, इस समय वह लोग उन्हें उसका फल देनेमें प्रवृत्त हुए। उन लोगोंने कितने ही घर मकान लूटे, कितने ही निर्दोष मनुष्य मारे गये। कईएक युरोपीय कर्म्मचारी भी उनके ऐसे ही विरागभाजन हुए थे, सहृदय और सत्स्वभावसम्पन्न जनरल कोर्ट प्राणभयसे भागे, फक्स नामक एक साहसी अङ्गरेज-युवक बहुत [illegible]से मरे। एकमात्र [illegible] सिपाहियोंमें ही यह [illegible] आज्ञा नहीं थी या केवल [illegible] पहा[illegible] प्रदेशमें ही यह [illegible] नहीं था, परन्तु काश्मीर और

---

* See Mr. Clerk's letters, of dates from 17th to 30th Jan. 1841.

लोग इस विशृङ्खलाको बहुत ही कौतूहल और उद्वेगके साथ देखने लगे। इस समय जब उन्होंने शहरादि और नगर समूहको लूटनेकी सम्भावना देखी और जनपदतु-प्रदेशमें जब अत्याचारका स्रोत प्रवाहित हुआ, तो सुसभ्य और क्षमताशाली राजशक्तिका कर्त्तव्य-प्रश्न आप ही मनमें जागा, इस अत्याचार अविचारके निवारणके लिये ऊंचा शोर उठा; लेकिन जिन सब बातोंसे अत्याचारके दमनकी बात अभिव्यक्त हुई थी, वह विरुद्ध-धर्म्माक्रान्त और परस्पर विरोधी थी। इन सबसे भी सिपाहियोंमें एक ओर जैसी विशृङ्खला उपस्थित हुई, दूसरी ओर राज्य-विस्तारकी उत्कट लालसा वैसी ही बलवती हो गई। सैनिक पुरुषोंके हिसाबसे सिखजातिकी निकृष्टताके सम्बन्धमें कृत्रिम विश्वास उनके मनमें बद्धमूल हुआ; जम्बूके राजोंकी पहाड़ी सैन्यकी श्रेष्ठत्वके विषयमें उन लोगोंका विश्वास हुआ; उस समय एकमात्र जम्बूके सर्दारगण ही कर्म्मचारी और नौकरोंको वशीभूत रखनेमें समर्थ हुए थे। अङ्गरेज कर्त्तृपक्षियोंका विचार था,—कृषिजीवी सिखजातिने एक ऐसा प्रभुत्व पाया है और धर्म्महानिकी आशङ्कासे उत्तेजित और उन्मत्त न होनेपर उनका वीरत्व और रणकुशलता सन्देह मूलक है। लेकिन राजपूतोंका एकमात्र प्राचीन नाम ही कितने ही साहसिक राजोंके असंख्यक अनुचरोंका सर्व्वविध वीरत्वव्यञ्जक है। सुतरां फिरुज शहरके युद्धके दिनसे पहले सब अङ्गरेज सदस्योंके मनमें सिखोंके सम्बन्धमें एक भ्रमधारणा बद्धमूल थी; उससे उन लोगोंका उद्देश्य व्यर्थ हुआ था। *

* सिख सैन्यके अनुमानसे और पञ्जाबके अपराध पहाड़ी

इसतरह अङ्गरेज लोग किसी न किसी कामके निर्वाहके लिये अनुबद्ध हुए। अङ्गरेजोंके एक प्रतिनिधि काबुलमें शाह शुजाको सम्राटके पदपर प्रतिष्ठित करनेके लिये भेजे गये थे; इसी समय रणजित् सिंहके आखिरी उत्तराधिकारीकी मृत्यु से, उन्होंने बहुत सुविधा पाई। उन्होंने प्रचार किया— लाहोरके साथ पहले जो सन्धि हुई थी, इस समय उसकी मीयाद पूरी हो गई है। इसतरह अङ्गरेज गवर्मेण्टने मनो-भाव प्रकाशकर पेशावरको अफगानराज्यके अन्तर्भुक्त

राजाओंकी सैन्य संख्याकी गिनतीमें कितने ही भ्रम दिखाई देते हैं। सन् १८४१ ई०को २री जनवरी और १३वीं अपरैलको मिस्टर क्लार्कका लिखा गवर्मेण्टके लिये पत्रमें, यह पूरी तरह प्रदर्शित होता है। विशेषतः उसी सालका ८वीं और १०वीं जनवरी और सन् १८४२ ई०को १५वीं जनवरी, १०वीं फरवरी और २३वीं अपरैलका पत्र भी उनका लिखा है। मिस्टर क्लार्कने जिस विषयका उल्लेख किया है, वह सन्दिग्ध है। उन्होंने कहा है, कि सिखजाति पहाड़ी अधिवासियोंके भयसे सतर्क है, पहाड़ी लोग सिखजातिकी अपेक्षा अधिकतर साहसी हैं। सिखजाति जिन अफगानोंको दमन कर नहीं सकी, राजपूतगण उन्हीं अफगानोंको दमन करनेमें समर्थ हैं। लेकिन साहब यह भूल गये हैं, कि एक शताब्दिमें ही पुराने राजपूतानेने उनका [illegible] [illegible] और महाराष्ट्र, दोनों जातियोंने अपना [illegible] खो दी थी। यहाँतक, कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रदेशके [illegible] [illegible], सिखोंके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

करना चाहा। इस अविमृष्यकारिताके लिये, ब्रटिश गवरमेण्टने उनकी बहुत भर्त्सना की सही, लेकिन सिखोंके प्रति किसी तरहकी विश्वासघातकताका भाव प्रकाश न कर; भविष्यतमें सिन्धुकिनारेके डेराजात और पेशावर, हीनबल दुर्रानीराज्यके अन्तर्भुक्त करनेकी आशासे, ब्रटिशगवरमेण्ट उल्लसित हुई। उसके मनमें आया,—खिन्धानवाला सर्द्दारगण और जम्बूके राजों द्वारा सिख राज्य बहुत जल्द दो भागोंमें विभक्त होगा। * शतद्र किनारेके अङ्गरेज राजप्रतिनिधिने यह कभी नहीं सोचा, कि लाहोर-साम्राज्य इतना जल्द ऐसी प्रणालीसे विच्छिन्न होगा। इसलिये अपने रणनैपुण्य, सैन्यदलके शिक्षाचातुर्य्य और अङ्गरेजनामके पदत्व-पर विश्वास स्थापन करके ही चौगुनी ज्यादा विद्रोही सैन्यको विध्वस्त करनेके लिये उन्होंने केवल बारह हजार सैन्यके साथ सिख-राजधानीकी ओर युद्धयात्राका विचार किया † उनका

---

* See especially Government to Sir Wm. Macnaghten, of 28th Dec 1850 in reply to his proposals the 20th Nov. गवरनर जनरलने प्रतिपन्न किया था, कि किसी एक निर्दिष्ट राजाके साथ सन्धि हुई नहीं है, परन्तु सिखराज्यके साथ ही वह सन्धि हुई थी। जबतक इस मित्रताका कर्त्तव्य-पालन और दायित्वके साथ काम होगा,तबतक वह निष्पन्न अ-क्षुण्ण रहेगी,—गवरनर जनरलका यह सिद्धान्त सुनिश्चित हुआ।

† Mr. Clerk to Government, of the 26th March 1842.

उद्देश्य था,—पञ्जाबमें शान्ति और सफलता स्थापन शेरसिंहको स्थायी प्रभुत्वकी प्रतिष्ठा और साहाय्य प्रदानके पुरस्कारस्वरूप चालीस लाख स्वर्णमुद्रा ग्रहण करना। इस उद्देश्यसे ही वह मुट्ठीभर सैन्यके साथ सिक्ख-सैन्य सागरमें कूद पड़े थे। ऐसे औत्सुक्य और क्षिप्रकारिताके साथ वह लोग आगे बढ़े, उससे महाराज समझे कि प्रजाके हाथसे ही उनकी रक्षा, अवश्यम्भावि है, सिपाहियोंके हाथों ही राज्यनाश अवश्यम्भावी है।* गवरनर-जनरल भी कलकत्तेमें सिक्ख-राज्यपर आक्रमण करनेके लिये तय्यार नहीं थे; लेकिन यदि महाराज स्वयं और सिक्खजातिके अधिकांश, अङ्गरेजोंसे ऐसी मध्यस्थताका प्रस्ताव करते, तो गवरनर-जनरल बलप्रयोग करनेके लिये तय्यार

---

* जब शेरसिंह सिक्ख राज्यके प्रस्तावसे सहमत हुए, तो कहते हैं, कि उन्होंने एक कुरानी [illegible] स्थापितकर उसे फिर हटा लिया था। इससे [illegible] लगा गया था, कि यदि वह उसकी [illegible] तो सिक्खोंका [illegible] [illegible]

थे, * इसके बाद लाहोरके पास सिपाहियोंमें विवाद की विशृङ्खला प्रशमित हुई। लेकिन सबके मनमें विश्वास पैदा हुआ, कि राज्यलोलुप अङ्गरेजोंके साथ सन्धि-सम्बन्ध संस्थापित हुआ है। सिख सिपाही विदेशीयके साहाय्यकी प्रार्थनाके इतने विद्वेषी थे, कि विदेशियोंके प्रभुत्व प्रवर्त्तनके लिये उन लोगोंने राज्य-च्युत भाईके साथ षडयन्त्र किया था,—इस अपराधमें लहनासिंह खिन्वानवाल मण्डीके पहाड़ोंमें अपने अनुचरों द्वारा कैद हुए। † और एक कर्मचारीके गर्हित कार्य्यकलापसे सिख-जातिका सन्देह अविश्वास और घृणा और भी बढ़ी। यह बादको अङ्गरेजोंके बन्धुत्व और साम्यनीतिके व्यवस्थापक प्रतिनिधि निर्व्वाचित हुए थे। शाह शुजाके लिये मेजर ब्रोडफुट नामक एक कर्मचारी "सापर" और माइनर" नामक दोनो विभागके सैन्यसंग्रहमें नियुक्त हुए। उस समय इन सम्राटके परिवारवर्ग और पत्नी-पुत्रादिके साथ अन्धे शाह शुजाके काबुलकी ओर बढ़नेपर, विभिन्न परिच्छदधारी कितने ही प्रहरी सिपाहीके परिचालनाका भार, उनके हाथ दिया गया। सन् १८४१ ई०को सिख-सैन्यकी विद्रोहवह्नि जब राजधानीसे प्रदेशसमूहमें फैल रही थी, तब उन्होंने पञ्जाबमें प्रवेश किया। इसी समय लाहोर-गवरमेण्टने

---

* Government to Mr. Clerk, 18th Feb. and 29th march, 1842. वस्तुतः गवरनर जनरलने ऐसी राय प्रकाश की, मिष्टर क्लार्कने स्वयं साहाय्यमें बाधा प्रदानका प्रस्ताव किया है। महाराजको इस विषयमें कोई राय नहीं थी।

† Mr. Clerk to Government, 25th March 1841.

और वहांके वृटिश-एजण्ट सभी सन्त्रस्त हो उठे। इसी समय एक दल सिख सैन्य सिन्धुनदके पास ही छावनी संस्थापनकर अवस्थान करती थी, उसके मनमें भयसञ्चारके लिये पहलेके आदेशानुसार एक दल सुसज्जित सैन्य जलालाबादसे बहुत जल्द भेजी गई। लेकिन अतिरिक्त रूपसे खैबरपास निर्म्मुक्त करनेसे पहले ही शाहके परिवार और अनुचरवर्ग निर्व्विघ्न उस स्थानको परित्यागकर आगे बढ़े थे। सुतरां इन सब कार्य्यकलापसे केवल सिखोंकी उत्तेजना और उनकी अविश्वास और सन्देहकी वृद्धि हुई थी। इससे शेरसिंहने सुयोग पा कलहप्रिय दुर्दमनीय सिखसैन्यसे प्रकट किया, कि पञ्जाबको चारो ओरसे अङ्गरेजी फौजने घेर लिया है; वह लोग सिखोंके साथ युद्धके लिये हमेशा सुसज्जित अवस्थामे रहते हैं। *

सन १८४१ ई०के मध्यमें सिखसैन्यका अमानुषिक अत्याचार और गर्हित कार्य्यप्रणाली सभी निरस्त हुआ था। लेकिन राज्य-व्यवस्थाके साथ सैन्यका जो सम्बन्ध था, इस समय वह सभी परिवर्त्तित हो गया था। अब सिपाही लोग अद्वितीय क्षमताशाली और सर्व्वनामशस्यश्रृङ्खल गवरमेण्टके शासनास्त्रस्वरूप नहीं रहे। वह लोग विचारते थे, परन्तु लोगोंके मनमें ऐसा विश्वास था, कि वह लोग खिलाफातके प्रतिनिधि सम्प्रदाय

---

* सन १८४१ ई० को २५वीं मई और १०वीं जून, गवरमेण्टके लिये मिष्टर क्लार्कका पत्र। (Compare Mr. Clerk to Government, 25th May and 10th June, 1841.)

है ;—उनका सम्प्रदाय ही "खालसा"के नामसे अभिहित है, सर्व्वसाधारणको सुख समृद्धिके विधानके लिये और प्राणस संरक्षणके बहाने वह जाति या सतर्णाग्रसि एकत्र सम्मिलित थे। शिक्षित सैन्यके हिसावसे उनकी कार्य्यकुशलता बहुत कुछ विनष्ट हुई थी। उच्चाकाङ्क्षा और सम्प्रतिसमहके उनके हृदयमें बद्धमूल होनेसे प्रकृत शिक्षाका अभाव विदूरित हुआ था। वह लोग नीतिसङ्गत और सदाचार युक्त एकताको कार्य्यकारिताको समझते थे। गोविन्द प्रवर्त्तित साधारण तन्त्रको सांसारिक सम्प्रदायकी तरह वह लोग उनको युद्ध-सज्जा और योद्धवेशमें ही आत्माभिमान करते थे। सैनिक पुरुषोंकी तरह योद्धवेशसे सज्जित हो गोविन्दके साधारण तन्त्रके प्रतिनिधि सम्प्रदायके नामसे परिचित होना ही वह लोग श्लाघनीय समझते थे। साधारण नियमानुसार सैनिकगुरु-घोषित कर्त्तव्यके पालनमें वह लोग यथासम्भव अपने अपने निर्दिष्ट सेनापति या नेताके आदेशानुवर्ती होनेके लिये

आलोचित होता था ; प्रकृत सिख सैन्यके हिसाब, उनकी योग्यताको लोग विचारकर देखते थे, या अपने अपने ग्राममें उनका कैसा प्रभुत्व वर्त्तमान है और वह लोग कैसे धर्म्मपरायण हैं, इन सब विषयोंके विवेचित होनेपर, वह लोग "पञ्चायत" सभाके सदस्य नियुक्त होते थे। वस्तुतः पञ्चायतकी प्रथा भारतमें सब जगह ही प्रचलित है। जो लोग जो जाति, जो वंश, जैसे पुरुष, जैसे वाणिज्य-व्यवसायी या चाहे जो काम क्यों न करें,—वह जातियां वंश व्यवसाय-वाणिज्य या वृत्तिके प्रधान प्रधान पुरुष एकत्र समवेत हो सम्मिलनसे जो स्थिर करते हैं, वह सभी प्रत्येक ही अपने अपने प्रधान पुरुषोंकी आज्ञाके वशवर्त्ती होते हैं। सैनिक-विभागकी आवश्यकताके अनुसार एक समितिके गठित होनेपर, यह प्रथा पञ्जाब प्रदेशमें और भी अधिकतर प्रस्फुट हुई थी। इसतरह सिखोंने प्रतिनिधित्वकी जो क्षमता पाई थी, उसकी बहुत अपरिणत अवस्थामें भी सिखजाति अपने शासनकर्त्ताके निर्व्वाचनमें हस्तक्षेप कर सकती थी, वह लोग उस समय बहुत कुछ एक मतावलम्बी होते और उनका अनुमोदन निष्फल होता नहीं था। समय समयपर इन सब सभासमितिके अनुसन्धिक्रमसे या कार्य्यकलापसे स्वेच्छाचारी सिपाही लोग विद्रोही प्रजाके साथ योगदान करते थे। असन्तुष्ट विद्रोही लोग सैनिक पुरुषोंके स्वेच्छाचार या अत्याचार-अविचारका प्रश्रय देते थे, अन्य अथच-कुल, वेतनभोगी सेनाकी तरह वस्तुस्वभावसम्पन्न होते थे। उनकी प्रतिज्ञा प्रायः ही चपलतर या अस्थायी थी, या अज्ञताकी परिचायक थी। कोई दृढ़ विश्वास या धारणा उनके मनमें बद्धमूल होती

स्वीकृत होनेमें सम्मत नहीं हुए। लेकिन वह जिस विषयका उद्देश्य अभिप्राय स्वयं अच्छी तरह समझते नहीं थे, उस बारेमें किसी तरहका बन्दोबस्त करनेके लिये वह बिलकुल ही असम्मत थे, इसलिये वह नाना विषयोंकी मीमांसामें विलम्ब करने लगे। वह कहाकर, कि ऐसा बन्दोबस्त अन्ततमरकी उन्नतिका अरोक होगा और गो-हत्याके सम्बन्धमें आपत्ति दिखा, नदीसम्बन्धके वाणिज्यशुल्कमें वह विलम्ब करने लगे। उन्होंने कहा,—अङ्गरेजोंके जातिमें जो पञ्जाबमें पदार्पण करेगा, केवलमात्र वही गो-मांस भक्षण कर सकेगा। * सन् १८४० ई० में जब अफगानस्थानमें भारतीय सैन्यका समावेश हुआ, तो गवरनर जनरलने फिर यह विषय लाहोरके कर्मचारी-योंको दिखाया। प्रायः एक सालसे ज्यादा दिनोंके बीतनेपर शेरसिंह यह स्वल्प परिमाणमायासे और परिवर्त्तित दरमें वाणिज्य-शुल्क ग्रहण करनेमें स्वीकृत हुए और किसी एक निर्दिष्ट स्थानसे इस करके संग्रह करनेकी सम्मति प्रदान की। लेकिन

---

* Compare Colonel Wade to Government 7th Nov. and 8th Dec. 1832. भारतवर्षमें ऐसा प्रतिवाद हमेशासे दिखाई देता है। यह वास्तवमें न्यायसङ्गत जान पड़ता है, या असलमें यह भी अनुमान किया जा सकता है, कि प्रस्तावित विषयमें वह लोग यथायोग्य रूपमें लाभवान हो सकते हैं। लेकिन यही ऐसी आपत्तिका मूलीभूत कारण है, कि धर्म ही एकमात्र अवलम्बन है और अङ्गरेज लोग धर्मके परिवर्तनमें समर्थ नहीं है। ऐसी भीतिजनक या अनिच्छाज्ञापक सब बातोंमें ही धर्मविषयक आपत्ति की जा सकती है।

साथ उनके परिवारवर्गका मनोमालिन्य उत्पन्न हुआ। इसलिये उन्होंने ज्येष्ठपुत्रको वञ्चितकर कनिष्ठ पुत्रको सिंहासन देनेका प्रस्ताव किया। कितने ही लोगोंका अनुमान था, कि सिंहासन पानेके लिये राज्यके प्रकृत उत्तराधिकारी काश्मीरके शासनकर्त्ता और लदाखके जम्बूराज-प्रतिनिधि जोरावरसिंहसे साहाय्यकी प्रार्थना करेंगे। इस उद्देश्यसे सन् १८४० ई०में वह पिताके पाससे भाग गये; "ले" नामक स्थानमें जा वह आश्रयकी जगह ढूंढने और साहाय्यकी प्रार्थना करने लगे। इसी समय लदाखके साचीगोपाल राजा गयाटुन टानजिनने जम्बूके राजगणके अधीनतापाशको तोड़नेका विचार किया; इसी उद्देश्यसे वह अहमद शाहसे साहाय्य पानेकी चेष्टा कर रहे थे, उस समय जोरावारसिंह उपस्थित नहीं थे। उनके स्थानान्तरमें रहनेके कारण, समय देख एक दल "इसकारदो" सैन्यने "ले" पर आक्रमण किया,—वहांके शासनकर्त्ताके पुत्रको कैद करनेके लिये वह आगे बढ़ी। इस आकस्मिक आक्रमणसे जोरावरसिंहने एक सुविधा पाई,—इसी बहाने उन्होंने युद्धकी घोषणा की। सन् १८४० ई०के मध्यमें उन्होंने "छोटे तिब्बत" पर (Little Tibet) अधिकार किया सही, लेकिन इसाउस और इसोदासके मध्यवर्त्ती पहाड़ी राज्य इतने दुर्द्धर्ष थे, कि सालाना सात हजार रुपये कर देनेके इकरारपर अहमदशाहके परिवारवर्गको ही उस प्रदेशके शासनका भार सौंपकर वह लौट आये। * इस समय इस हस्तकार्य्यताके पानेसे और लाहौरके

* Compare Mr. Clerk to Gov, 26th April, 9th and first May, and 25th Aug, 1840.

अन्तर्विद्रोहमें जोरावरसिंह बहुत साहसी हो गये। उन्होंने गिलगिटसे राजस्व लेना चाहा, उन्होंने ऐसा अभिप्राय भी प्रकाश किया, कि यरकन्दके चीनदेशीय शासनकर्त्ताके साथ वह विवाद करनेमें प्रवृत्त होंगे, लदाखके नाथिपलके पुराने हकको फिर उठा लाना नगरोंके धर्मस्थानक रजा गरदार गारो और मानसरोवर आदि पर उन्होंने स्वाधिकारका दावा किया।

गुजारीमें बड़ा नुकसान पहुंचा; वह लोग अपने अपने राज्यकी रक्षाके लिये भयसे सन्त्रस्त हो उठे। सन् १८३८ ई०में नेपाल-गवरमेण्ट जिस षड़यन्त्रमें लिप्त थी, फिर वही षड़यन्त्र शुरू हुआ, लाहोरके सुचतुर राजमन्त्री और असन्तुष्ट सिन्धा-नवालावंशीय सर्दारोंके साथ नेपाल-गवरमेण्टकी फिर उस बारेमें पत्रादि चलने लगे। * पृथिवीकी परिधिके

---

* Compare Mr. Clerk to Government, 16th August & 23rd November, 1840, and 7th June The Government to Mr. Clerk, 19th Oct. 1840. मातवर सिंह नामक एक विख्यात गोर्खाने इसी समय पञ्जाबमें आश्रय ग्रहण किया था। उनकी उपस्थितिमें ही सिख और गोर्खाओंका या गोर्खा और जम्बूके विद्रोहियोंका आपसमें सन्धि-प्रस्ताव चल रहा था। सन् १८३४ ई०में इन पुरुषके शतद्रु पार जानेपर लाहोर सैन्यके एक उच्चपदस्थ कर्म्मचारीके काममें वह नियुक्त हुए; या शायद राजदरबारमें उन्होंने कोई ऊंचा पद पाया था। वह सब बातोंमें ही सिद्धि पाने लगे, नेपाल गवरमेण्ट उनके भयसे बहुत डर गई। अन्तमें अङ्गरेजोंके लिये वह इतने कार्य्यक्षम हो गये, कि सन् १८४० ई० में जब सनानैक्यके कारण काटमण्डूसे युद्धकी सम्भावना हुई तो अङ्गरेजोंने उनसे सब बातोंका ही प्रस्ताव उठाया था। अङ्गरेजोंने उन्हें इस उद्देश्यसे हस्तगत किया, कि युद्धकी जरूरत पड़नेपर उन्हें ही सत्वाधिकारीके नामसे स्वीकार करेंगे और वह किसी पक्षके नेताके नामसे स्वीकृत

अर्द्धांश परिमित द्वीपके स्वत्वपर अङ्गरेज-गवर्नमेण्ट चीनदेशके साथ युद्धमें प्रवृत्त हुई थी। इसके सिवाय सम्राजशक्तिके चीनके अधिकृत निकट-देश, साम्राज्य विस्तारके लिये सुयोग प्रदानकर भारतके अङ्गरेज शासकोंको विघ्न उत्पन्न करना किसी तरह भी उचित नहीं था। भारत और नेपालकी सेनाको हिमालय पार करने देना, उस समय अयौक्तिक जान पड़ा। पीछे उन लोगोंने विचारकर देखा, कि पेकिनके सम्राट अवश्य [illegible] शत्रुताशाली अङ्गरेजोंके साथ मिलेंगे, इससे स्वाधीन सिक्खोंके हृदयमें भयका सञ्चार होगा। अधिकन्तु प्रस्तावित सन्धिके संघटनमें अधिकतर प्रतिबन्ध होगा।

अतएव उन लोगोंने स्थिर किया, कि शेरसिंह अपने करद राजा-ओंको लासाका राज्य परित्याग करनेके लिये अनुमति देंगे। सन् १८४१ ई०की १०वीं दिसम्बर शेरोंके समर्पण करनेका दिन स्थिर हुआ, वहां यह देखनेके लिये एक अङ्गरेज कर्म्मचारी गये, कि प्रधान लामा (Grand Lama) का आधिपत्य पूरी तरह पुनःप्रतिष्ठित हुआ है या नहीं। महाराज और उनके अधीनस्थ राजे इसपर सम्मत हुए, जोरावरसिंहके प्रति लौट जानेका आदेश प्रचारित हुआ। लेकिन इस आदेशवाणीके उनके पास पहुंचनेसे पहले ही, या उसके अनुसार कार्य्य-समाधा होनेसे पहले ही, निदारुण शीतसे वह तिब्बतीय सैन्य द्वारा परिवेष्टित हुए। तिब्बतीय सैन्यको तुषार बरफ-समाच्छन्न राहसे चलनेका पुराना अभ्यास था। समुद्रतलसे बारह हजार फुट या इससे ज्यादा ऊंची जगहमें शीतके समय सुशिक्षित लासा-सैन्यने जोरावर सिंहको अवरुद्ध किया। भारतीय समतल-भूमिके और हिमालयके पाददेशस्थ अधिवासी लोग लकड़ीके अभावसे बहुत विपदग्रस्त हो पड़े। शीतके समय वहांके जल-वायुके अनुसार खाद्यद्रव्यकी तरह जलानेकी लकड़ीकी भी बहुत जरूरत है। यहांतक, कि किसी किसीने हाथ सेंकनेके लिये बन्दूकका काष्ठखण्ड (कुन्दा) तक जला डाला था। दिसम्बर

किनारे उस समय जो युद्ध चल रहा था उस युद्धमें साहाय्य देनेके लिये तातार प्रदेशमें जानेका उनका अनुरोध था। सन् १८४१ ई०को १८वीं अगस्त और २०वीं अक्टोबरको गवर्मेण्टके लिये मिष्टर क्लार्कका पत्र देखना चाहिये

अवरोध किया। "कालमुक्त' और पुरानी "शुकपो" या "शाकी"
जाति, काश्मीरपर फिर आक्रमण करनेके बारेमें आलोचना
करने लगी, "ग्रेटा" और "लेसा" के तिब्बतकी तातारगण
वहां सैने और लूटनेकी आशासे आनन्दसे उत्फुल्ल हुए;
लेकिन इसी समय हिमालय पारकर जलस्रोतकी तरह सैन्यने
आना आरम्भ किया। दक्षिण प्रदेशकी तलवारधारी और
तोप चलानेवाली सैन्य, भीरु भोटियोंके भयसे भीत हो गई;
सुतरां लेका अवरोध छोड़ा गया। सन् १८४२ ई०के सितम्बर
महीनेमें गुलावसिंहके सेनापतिने कौशलक्रमसे लासाके वजीरपर
आक्रमणकर ले और रोहतकके मध्यवर्ती स्थानसे उन्हें विता-
ड़ित किया; वहां सेनापतिके सिपाहियोंने शीतऋतुके आगम-
नकी प्रतीक्षामें रहनेका विचार किया था। इसके बाद लासा
और लाहोरके कर्तृपक्षीयोंमें एक सन्धिका प्रस्ताव हुआ।
इससे अङ्गरेजोंकी इच्छाके अनुसार सब विषय ही पहलेकी
तरह पुराने नियमाधीन रहे। उस समय अङ्गरेजके अधिकृत
देशसमूहमें शालपशमके व्यवसायके पुनः प्रतिष्ठित होनेपर,
परहिंसापरवश चीनवासियोंके और पराजित सिखोंके कार्य-
कलापमें फिर किसी तरहकी बाधा देनेकी जरूरत नहीं पड़ी। *

---

* सन् १८४६ ई०की मार्च महीनेमें अन्ततसरमें जब गुलाब-
सिंह जम्बूके सिंहासनपर महाराजके पदसे अभिषिक्त हुए, तो
लासाके लामाके साथ उनकी सन्धिके प्रत्यक्ष निदर्शन स्वरूप
उनके लिये पीले रङ्गकी और चीन देशियोंके लिये लोहितवर्णकी
पताका उड़ाई गई थी। प्रत्येक केतनमें हो सन्धिकर्त्ताओंके

लेकिन उन लोगोंने उसपर विश्वास स्थापन नहीं किया। वह लोग सुलतान मुहम्मदखांके एकान्त अनुगत थे; शाहशुजाके शत्-पक्षीयोंके साथ वह षड़यन्त्र करते थे, प्रकृत या आनुमानिक सन्देहवश, सुलतान मुहम्मद इससे एक वर्ष पहले लाहोरसे कहीं चले गये थे। * क्रमशः पेशावरके विपद्सङ्कुल पदसे जगरल एविटेबाइलको स्थानान्तरित करना जरूरी जान पड़ा। सिखोंके मन्त्रियोंमें ध्यानसिंहका प्रभुत्व-प्रभाव ही प्रबल था। जम्बूके राजोंकी कार्य्यदक्षताके सम्बन्धमें और उनके सैन्यदलके श्रेष्ठत्वके बारेमें अङ्गरेजोंने जो राय प्रकाश की, वह किसीसे छिपी नहीं है; इससे लोगोंके मनमें पक्षपातित्वका विश्वास बद्धमूल हुआ था। † अतएव शेरसिंहने प्रस्ताव किया, कि जिन पुरुषने काश्मीरमें शान्ति और सुशासनकी व्यवस्था की थी, उन्हें ही अफगानोंका प्रदेश प्रदान किया जाये। लेकिन

---

* जम्बूके राजाओंके और पेशावरके वारिकजयियोंके बीच परस्पर इस आनुमानिक सन्धिके सम्बन्धमें गवरमेण्टके लिये मिष्टर क्लार्कका पत्र (Dated 8th Oct. 1840.) अन्यान्य दलीलोंमें अच्छीतरह उल्लेख योग्य है।

† मिष्टर क्लार्कने ध्यानसिंहकी कार्य्यनैपुण्यकी और रण-प्रतिभाकी शायद बाहुल्यरूपसे वर्णना की थी। उन्होंने उसपर विश्वास स्थापन किया था। जनरल वेञ्चूराके दिलमें आया था कि राजा बहुत स्वल्प-बुद्धि-सम्पन्न थे। उनके खुद मन्त्रीके प्रति विद्वेषी होनेपर भी इन सब विषयोंकी तरह और उपयुक्त विचारकके नामसे वही प्रशंसायोग्य हैं।

लेकिन उन लोगोंने उसपर विश्वास स्थापन नहीं किया। वह लोग सुलतान मुहम्मदखांके एकान्त अनुगत थे; शाहशुजाके शत्रु-पक्षीयोंके साथ वह षड़यन्त्र करते थे, प्रकृत या आनुमानिक सन्देहवश, सुलतान मुहम्मद इससे एक वर्ष पहले लाहोरसे कहीं चले गये थे। * क्रमशः पेशावरके विपदसङ्कुल पदसे जनरल एविटेवाइलको स्थानान्तरित करना जरूरी जान पड़ा। सिखोंके मन्त्रियोंमें ध्यानसिंहका प्रभुत्व-प्रभाव ही प्रबल था। जम्बूके राजोंकी कार्य्यदक्षताके सम्बन्धमें और उनके सैन्यदलके श्रेष्ठत्वके बारेमें अङ्गरेजोंने जो राय प्रकाश की, वह किसीसे छिपी नहीं है; इससे लोगोंके मनमें पक्षपातित्वका विश्वास बद्धमूल हुआ था। † अतएव शेरसिंहने प्रस्ताव किया, कि जिन पुरुषने काश्मीरमें शान्ति और सुशासनकी व्यवस्था की थी, उन्हें ही अफगानोंका प्रदेश प्रदान किया जाये। लेकिन

---

* जम्बूके राजाओंके और पेशावरके वारिकजयियोंके बीच परस्पर इस आनुमानिक सन्धिके सम्बन्धमें गवरमेराटके लिये मिष्टर क्लार्कका पत्र (Dated 8th Oct. 1840.) अन्यान्य दलीलोंमें अच्छीतरह उल्लेख योग्य है।

† मिष्टर क्लार्कने ध्यानसिंहके कार्य्यनैपुण्यकी और रण-प्रतिभाकी शायद बाहुल्यरूपसे वर्णना की थी। उन्होंने उसपर विश्वास स्थापन किया था। जनरल वेन्टूराके दिलमें आया था कि राजा बहुत स्वल्प-बुद्धि-सम्पन्न थे। उनके खुद मन्त्रोंके प्रति विद्वेषी होनेपर भी इन सब विषयोंकी तरह और उपहुत विचारकके नामसे वही प्रशंसायोग्य है।

ऐसे बन्दोवस्तके अनुसार काङ्गड़ेके निकटवर्त्ती स्थानसे खैबर-पासतकके विस्तृत समग्र पहाड़ी प्रदेश, अङ्गरेजोंके दिये से और आहलुवालिके शत्रुओंके हाथों निपतित होते। सिक्ख देशमें बहुत ही कठोरताके साथ उनकी उग्रहलता दमित हुई थी; काबुल नदीके किनारे वह लोग जिस स्थायी व्यवस्था-विधानकी चेष्टा कर रहे थे, घोर विपदसङ्कुल उस व्यवस्था-विधानमें बाधा उत्पन्न करनेके लिये वह लोग बद्धपरिकर हुए। अतएव, सन् १८४१ ई०के प्रारम्भकालमें पेशावरके सिंहासनपर गुलावसिंहके निर्वाचनमें अङ्गरेज प्रतिनिधिने आपत्ति की। *

इसके बाद प्राय: दो महीने बीते। सन् १८४१ ई० को २री नवम्बरको एकाएक काबुलमें एक राष्ट्रविप्लव उपस्थित हुआ। अङ्गरेजोंके इतिहासमें वह एक मर्म्मभेदी घटना है; ऐसा दुर्दिन, जान पड़ता है उनके भाग्यमें और कभी नहीं आया। उस समय सर्वत्र ही सिपाहियोंका आधिपत्य विस्तृत था, सभी सैनिक पुरुषोंके अधीन थे। उन लोगोंके प्रभुत्व-प्रभावसे सभी ध्वंसके मुंहमें पतित होने चले थे। ऐसे कोई वीर पुरुष नहीं थे, कि जो उनके सैनिक प्रभुत्वको ध्वंसकर उन लोगोंपर आधिपत्य पाते और उनके प्रभावसे खड़ीभर सन्तोष निर्विघ्न लौटती। या वीर पुरुषोंकी तरह साहसपर निर्भरकर अङ्गरेज-सेनानिवासको शत्रुके हाथसे रक्षाकर फिर शान्ति स्थापन

---

* सन् १८४१ ई०को २री अगस्त, मिस्टर क्लार्कके लिये गये मेटकाफ और सन् १८४१ ई० को २०वीं अगस्तको क्लार्कके लिये मिस्टर क्लार्कका पत्र।

करते। * उस समय अङ्गरेज सैन्यदलके उच्चपदस्थ कर्म्मचारियोंके मनमें भयका सञ्चार हुआ था; ऐकान्तिक अध्यवसाय बहुत ही साहससे सर विलियम मगनटनने उन लोगोंके उस कापुरुषोचित भयको छुड़ानेकी चेष्टा की, लेकिन उनकी सब चेष्टायें—सब उद्यम विफल हुए। इसी समय कई एक अङ्गरेज सेनापति खुरासानका अवरोधकर वहां रहते थे, अयथा अथच गुरुतर कार्य्यभारसे वह लोग क्लान्त हो पड़े थे। वह लोग भी इस समय भयसे व्याकुल हो उठे, इन दूरवर्त्ती सेनानायकोंकी भय-विह्वलताके विष-वीजने भारतके शासनकर्त्ताओंके मनमें प्रभावका विस्तार किया। इन्हीं सब कारणोंसे भयसे अभिभूत हो उन लोगोंने साधु-संकल्प परित्याग किया। इस समय दुर्रानियोंके साथ सन्धिशर्त्तका तोड़ना और मित्रता-बन्धनका विच्छिन्न करना ही स्थिर हुआ। अङ्गरेजोंने स्थिर किया,—सिन्धुकिनारे यहांतक कि उसके पीछेसे शतद्रुतक विस्तृत भूखण्डमें सैन्य-संग्रहकर सेनानिवास स्थापन करना पड़ेगा। भय-विस्मयसे

---

* सिन्धओंकी सिपाहियोंमें साहसी और सक्षम पुरुषोंका अभाव नहीं था। सुना जाता है, कि हतभाग्य मेजर पटिञ्जरने एक कापुरुषोचित शोचनीय प्रत्यावर्त्तनमें असत प्रकाश किया था। तब भी, दलोलपतकी सत्यता दिखानेके लिये एकमतानुवर्त्तिता दिखानेके कारण दुर्भाग्यक्रमसे कन्धार और जलालाबादके खाली करनेके आदेशपत्रपर भी उन्होंने अपने नामका दस्तखत किया था तब भी वह असत प्रकाश करनेमें पीछे हटे गये हैं।

ऐसे बन्दोबस्तके अनुसार काबुलके निकटवर्ती स्थानसे खैबर-पासतकके विस्तृत समग्र पहाड़ी प्रदेश, अङ्गरेजोंके मित्रों और शाहशुजाके शत्रुओंके हाथों निपतित होते। किन्तु देशमें बहुत ही कठोरताके साथ उनकी उच्छृङ्खलता दमित हुई थी; काबुल नदीके किनारे वह लोग जिस स्थायी व्यवस्था-विधानकी चेष्टा कर रहे थे, घोर विपदसङ्कुल उस व्यवस्था-विधानमें बाधा उत्पन्न करनेके लिये वह लोग बद्धपरिकर हुए। अतएव, सन् १८४१ ई०के शरदऋतुमें पेशावरके सिंहासनपर गुलाबसिंहके निर्वाचनमें अङ्गरेज प्रतिनिधिने आपत्ति की। *

इसके बाद प्रायः दो महीने बीते। सन् १८४१ ई० की २री नवम्बरको एकाएक काबुलमें एक राष्ट्रविप्लव उपस्थित हुआ। अङ्गरेजोंके इतिहासमें वह एक मर्मभेदी घटना है; ऐसा दुर्दिन, जान पड़ता है उनके भाग्यमें और कभी नहीं आया। उस समय सर्वत्र ही सिपाहियोंका आधिपत्य विस्तृत था, सभी सैनिक पुरुषोंके अधीन थे। उन लोगोंके प्रभुत्व-प्रभाव सभी ध्वंसके मुंहमें पतित होने चले थे। ऐसे कोई वीर पुरुष नहीं थे, कि जो उनके सैनिक प्रभुत्वको ध्वंसकर उन लोगोंपर आधिपत्य पाते और उनके प्रभावसे सहीसर अङ्गरेज सैन्य निर्विघ्न लौटता। या वीर पुरुषोंकी तरह मार्शनपर निर्भरकर अङ्गरेज-सेनानिवासको शत्रुके हाथसे रक्षाकर फिर लौटते [illegible]

---

* सन् १८४१ ई०की ३री अगस्त, मिस्टर क्लार्कके लिये मिस्टर मेटकाफ और सन् १८४१ ई० की २०वीं अगस्तको [illegible] लिये मिस्टर क्लार्कका पत्र।

करते। * उस समय अङ्गरेज सैन्यदलके उच्चपदस्थ कर्म्मचारियोंके मनमें भयका सञ्चार हुआ था ; ऐकान्तिक अध्यवसाय बहुत ही साहससे सर विलियम मगनटनने उन लोगोंके उस कापुरुषो-चित भयको छुड़ानेकी चेष्टा की, लेकिन उनकी सब चेष्टायें—सब उद्यम विफल हुए। इसी समय कई एक अङ्गरेज सेनापति खुरासानका अवरोधकार वहां रहते थे, अयथा अथच गुरुतर कार्य्यभारसे वह लोग क्लान्त हो पड़े थे। वह लोग भी इस समय भयसे व्याकुल हो उठे, इन दूरदर्शी सेनानायकोंकी भय-विह्वलताके विष-बीजने भारतके शासनकर्त्ताओंके मनमें प्रभा-वका विस्तार किया। इन्हीं सब कारणोंसे भयसे अभिभूत हो उन लोगोंने साधु-संकल्प परित्याग किया। इस समय दुर्रा-नियोंके साथ सन्धिशर्त्तका तोड़ना और मित्रता-बन्धनका विच्छिन्न करना ही स्थिर हुआ। अङ्गरेजोंने स्थिर किया,—सिन्धुकिनारे यहांतक, कि उसके पीछेसे शतद्रुतक विस्तृत भूखण्डमें सैन्य-संग्रहकर सेनानिवास स्थापन करना पड़ेगा। भय-विस्मयसे

---

* सिन्नओयोंके सिपाहियोंमें साहसी और सक्षम पुरुषोंका अभाव नहीं था। सुना जाता है, कि हतभाग्य मेजर पटिञ्जरने इस कापुरुषोचित शोचनीय प्रत्यावर्त्तनमें अमत प्रकाश किया था। तब भी, दलीलपत्रकी सत्यता दिखानेके लिये एकमतानु-वर्त्तिता दिखानेके कारण दुर्भाग्यक्रमसे कन्धार और जलाला-बादके समर्पण करनेके आदेशपत्रपर भी उन्होंने अपने नामका दस्तखत किया था तब भी, वह अमत प्रकाश करनेमें पीछे हटे नहीं थे।

अङ्गरेज लोग उस समय अभिभूत हुए थे। सुतरां आकस्मिक मोहमोरकी अस्वाभाविक कल्पनाशक्तिके भयसे वे लोग तरह तरहके भौतिक व्यापारकी अवतारणा करने लगे। हिन्दुस्थान साम्राज्यकी रक्षाके लिये उन लोगोंने स्थिर किया, कि उन्हीं सब सैन्य द्वारा काल्पनिक अफगान-सैन्यस्रोतकी अप्रतिहत गतिको अवरोध करना पड़ेगा। * कार्य्यक्रम

---

* Compare Government to the Commander-in-Chief 2nd Dec. 1841, and 10th Feb. 1842; Government to Mr. Clerk, 10th Feb. 1842, the Government to Gen. Pollock, 24th Feb. 1842. ऐसे विपत्‌कालमें जिस नीतिका अवलम्बन करना चाहिये था, उस बारेमें जिन लोगोंने राय प्रकाश की थी, उनमें मिस्टर राबर्टसन, आगरेके लेफटेनण्ट गवरनर, पोलिटिकल सेक्रेटरी सर हावर्ट मेडक प्रभृतिका नाम सविशेष उल्लेखयोग्य है; इन लोगोंने ही, पेशावरमें एक सेनानिवास स्थापन करनेका परामर्श दिया था। कौंसिलके मेम्बर मिस्टर प्रिन्सप और गवरनर जनरलके प्राइवेट सिक्रेटर मिस्टर कलविनने प्रतद्र की और सैन्यके प्रत्याहरणका अनुरोध किया था। जो हो, उस समय सभी भविष्यत घटनावलीके विषयमें चिन्ता करने लगे।

प्रधान सेनापतिने स्वयं देखा, कि अङ्गरेजी सेना [illegible] भारतवर्षकी रक्षा करनेमें असमर्थ है। मिस्टर क्लार्कने देखा कि यदि जलालाबाद शत्रुके हाथों पतित होता है, तो पञ्जाबी जाति निश्चय ही भारतपर आक्रमण करेगी, फिर कोई कुछ भी उन्हें बाधा दे न सकेगी।

मित्र सिखोंकी ओर वह लोग अधिक विश्वास स्थापन कर न सके। इन विषयोंमें उनका साहाय्य पाना विशेष कार्य्यकारी होनेपर भी, जिस प्रणालीसे साहाय्यकी प्रार्थना की जाती और जिस भावसे सिपाही लोग युद्धमें नियुक्त होते, उससे अङ्गरेज लोग लाहोर-सैन्यके साथ बहुत अवज्ञा प्रकाश करते थे; उनके कार्य्यकल पसे सिखसैन्यकी निरुत्साहता प्रकाश होती थी। *

फीरोजपुरसे सिपाहियोंके चार दलने गमन किया। उनके साथ कुछ भी तोपें या घुडसवार फौज नहीं थीं; सुतरां इन लोगोंकी रक्षा करनेका भी कोई उपाय नहीं था। उनकी सब

---

* पूर्व्ववर्त्ती नोटमें जिस संक्षिप्तसारका विषय उल्लिखित हुआ है, उससे सिख-सैन्यके प्रति मिष्टर क्लार्कके अवज्ञासूचक वाक्यसे अफगानोंको बाधा देनेमें उनकी अक्षमता जान मिष्टर काल-विनने शतद्रकी ओर सैन्य प्रत्याहृत करनेके लिये अनुरोध किया। इन दोनो जातियोंकी आपेक्षिक-साहसिकताके सम्बन्धमें करनल वेडकी भी वही राय थी। वह अनुमान करते थे, कि मुंशी शहामत अलीके "सिख और अफगान" नामक ग्रन्थका ५२५ पृष्ठका नोट उनके हाथका लिखा है। वह कहते हैं, सिख-जाति सदा ही "खैबर" जातिसे डरती है। वस्तुतः जनरल एविटवाइल जब लूटनेवाली पहाड़ी जातिसे परिवेष्टित एक राज्यके शासनकर्त्ता थे, तो प्रकृतपक्षमें वह यह मत ग्रहण कर सकते थे। दूसरी ओर, जब वह सिखसैन्यके प्रति विद्वेषभावापन्न हो, अङ्गरेजोंके उद्योगसे गिरिसङ्कटमें रहे, तो वह कौशलक्रमसे ऐसे मतावलम्बी हो सकते थे।

चेष्टायें विफल हुईं; वह लोग खैबर पासको खोल नहीं सके। स्थानीय अङ्गरेज कर्मचारिगण रोकानिकमाके साथ पेशावरके सिख सैन्य दलको उत्साहित करने लगे। सिपाहियोंके सहायता करनेपर जलालाबादतक पहुंचनेसे अङ्गरेज कर्मचारियोंने सिखोंको बहुत ही व्यतिव्यस्त कर डाला। लेकिन अङ्गरेजोंके अभिप्रायके अनुसार उन लोगोंने सिख-गवर्नमेंटसे उस सम्बन्धमें कोई निर्व्वन्धातिशय्य प्रकाश नहीं किया। उस समय अङ्गरेजी सैन्यकी पराजयका समाचार प्रचारित होनेसे, उन लोगोंके भयविह्वलतामें विश्वास-स्थापन बहुत मङ्गलप्रद जान पड़ा। अपरापर विषयोंके बारेमें इस देशकी प्रतीक्षा न करनेपर भी सिख-शासनकर्त्ता उस समय सिपाहियोंको "पक्ष" या दलि टोकी तरह ग्रहण करनेपर बाध्य हुए। उस समय सैन्य परिचालनाका उद्देश्य उपेक्षित हुआ। अङ्गरेजोंने कहा, सम्भवतः भयविह्वलताके कारण सिख-राजने इस अनुरोधकी रक्षा नहीं की। अन्तमें पूरा अविश्वास और भयवश यह प्रस्ताव प्रत्याख्यात हुआ। जिसने गवरनर जनरल रञ्जिट जन मि०...

बाध्य हुआ। इसके बाद वेदेशिक जातिके साथ मिलकर युद्ध करनेमें सिखोंने अनिच्छा प्रकाश की। अङ्गरेजोंके वेतनभोगी सिपाहियोंके सब समाचार पानेपर, अफगानोंके साथ मित्रता संस्थापनके लिये गवरनर जनरलको अधिकतर विद्वेष उत्पन्न हुआ। *

इसके बाद जलालाबादकी सैन्यदलको साहाय्य देनेकी ही इस समय बहुत जरूरत हुई। सुतरां सन् १८४२ ई० के वसन्त-ऋतुमें एकदल सुसज्जित अङ्गरेजी फौज पेशावरमें उपस्थित हुई। लेकिन कामके वक्त उस समय भी सिखोंके साहाय्य लेनेकी जरूरत पडी। उस समय शाहशुजाके "त्रिपक्षीय" सन्धिकी एक अप्रचलित शर्तसे अङ्गरेजोंने सिखोंसे साहाय्यकी

---

* इस अंशके सब विवरण, प्रधानतः ग्रन्थकारके सरकारी और अर्द्धसरकारी पत्रादिके संक्षिप्त विवरणसे गृहीत हैं। अलीमसजिदके अधिकारकी अकृतकार्यताके सम्बन्धमें, सन् १८४२ ई०की ७वींको मिष्टर क्लार्कके लिये गवरमेराट लिखित पत्रका उल्लेख किया जा सकता है। इसके सम्बन्धमें और भी कहा जा सकता है, कि मिष्टर क्लार्कने १०वीं फरवरीके पत्रमें निर्देश किया है,—अङ्गरेज-कल्पित किसी आकस्मिक आक्रमणसे सिखसैन्य स्वेच्छाक्रमसे साहाय्य न देगी; लेकिन उनकी बहुदर्शिता अभ्रताके अनुसार जिस उपायसे आक्रमण करनेपर सिद्धि पानेकी ज्यादातर सम्भावना थी, वैसा युद्धके समय या अवरोधके वक्त वह लोग स्वभावतः ही साहाय्य देनेमें उद्योगी होंगे।

सकेगा, इसतरह महाराजकी पूरी सहानुभूति और साहाय्य पानेके बारेमें कोई विघ्न नहीं रहा। * लेकिन अङ्गरेजोंके दिलमें आया, कि धर्मप्राण सिखसैन्य सम्भवतः राजद्रोही है, फिर भी, वीरोचित तेजःप्रभावसे वह लोग निकृष्ट हैं। सुतरां अङ्गरेजोंने जम्बूकी सिपाहियोंको ही श्रेष्ठ समझा। गुलाबसिंहके प्रति ऐसा उद्देश्य प्रचारित हुआ, कि वह पेशावरमें जा अबाध्य और राजद्रोही "खालसा" सैन्यको दमन करें और जनरल पलककी यथासाध्य सहायता देना मञ्जूर करें। † इसी समय राजाने कश्मीर और अटकके मध्यवर्ती कुछ विद्रोही जातिकी क्षमता कम करनेका विचार किया था। जिस तिब्ब-

---

* अफगानयुद्धके समय अङ्गरेजी सैन्यके साहाय्यार्थ, प्रहरी सैन्य सैन्यादि और शकट-यानादिके संग्रहमें, सिखजातिने जैसी सहायता की थी, उसके सम्बन्धमें मिष्टर क्लार्कके पत्रादि (of the 15th Jan, 18th May, and 14th June, 1842) सविशेष उल्लेखयोग्य है। आखिरी पत्रमें उन्होंने लिखा है, कि सन् १८३९ और १८४२ ई०के बीच सिखजाति द्वारा १७,३८१ ऊंट संगृहीत हुए थे।

† अङ्गरेजोंने पहले उधर दृष्टिपात नहीं की, कि गुलाबसिंह कार्य्योद्धारके लिये गये या नहीं। वस्तुतः मिष्टर क्लार्कने राजाके साहाय्य पानेके विषयपर प्रस्ताव किया, लेकिन उनके साहाय्य देनेमें बाधा देनेके सम्बन्धमें, उन्होंने कोई बात नहीं की। ऐसी अवस्थामें आनुमानिक विषयपर या यथेच्छ वर्णनापर विश्वास स्थापन करना अनुचित है।

रिक्त सिखसैन्यने अङ्गरेज-सेनापतिका सम्पूर्ण सन्तोषविधानकर, अपना दोष स्खालन किया। उन लोगोने जम्मूके राजाको कोई आश्वास वाक्य नहीं दी; वैदेशिक शक्तिकी कार्य्यसिद्धि या प्रतिशोध लेनेकी अपेक्षा वह अपने स्वार्थसाधनको ही प्रियतर समझे और उद्देश्यके साधनार्थ वह जल्द लदाखके सीमान्त प्रदेशकी ओर बढ़े। जनरल पलक्रने स्थिर किया, कि जलाला-बादपर अधिकार करनेके लिये वह सब सिखसैन्य जलाला-बादमें छोड़ जायेंगे, लेकिन प्रधान अङ्गरेज सैन्यदल काबुलमें गई। इसी अवसरमें कारनल लरन्सने समय देख, एक वीरोचित काम किया; उनको मध्यस्थतामें एक दल लाहोर सैन्य अङ्गरेजी सैन्यकी अनुवर्त्ती हुई। * पहले पहले आक्रमणमें उन लोगोंने जैसा प्रतिशोध प्रदान किया था, उसी प्रतिशोधकी कामनासे उन लोगोंने इसबार भी अङ्गरेजी सैन्यके साथ योगदान किया। उन लोगोंने उस समय पूरी तरह प्रमाणित किया था, कि स्वाधीन भावसे अपनी अपनी प्रथाओंके अवलम्बनका अवसर देनेपर, वह लोग हर तरहसे विपदके सामने होनेमें समर्थ हैं।

साथ मिस्टर लरन्सका नाम इङ्गलैंडमें ग्रथित है; सभी उनका सम्मान करते थे।

* कलकत्तेके "रिविउ" समाचारपत्रका प्रबन्ध; तृतीय संख्या १८० पृष्ठ पेशावरके कारनल वाइल्ड सर ज्ञार्ज पलक्र और राजा गुलावसिंहकी कार्य्यावलीके सम्बन्धमें इस ग्रन्थका नाम लिखा जा सकता है।

सन्धि विलुप्त हुई। * लेकिन अफगानकी राजधानीपर आक्रमणका विषय बहुत जरूरी जान पड़नेपर, बहुत ही विस्तारके साथ वह नीति अवलम्बित हुई। † उस समय अङ्गरेजोंने देखा,—काबुलमें जाड़ेका दिन बिताना पड़ेगा; इसकी बहुत कुछ सम्भावना भी थी। विजयी सैन्यके भारतवर्षमें न लौट आने-तक किसीने विश्वास नहीं किया, कि अङ्गरेज लोग एक बड़े साम्राज्यपर अधिकारकी आशा परित्याग करेंगे। इसके बाद सिख लोग जलालाबाद लेनेमें सम्मत हुए; लेकिन इस स्थान-

---

* सन्धिके प्रस्तावसे किसी एक पक्षका अवलम्बन करनेसे, सिखोंने जो पाण्डुलिपि प्रस्तुत की, उससे सिखजाति सिन्धुके अमीरोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ लिखी गई। काबुलके शासनकर्त्ताकी स्वीकारोक्तिके अनुसार सिखजाति प्रधानत: इस सन्धिकी मूली-भूत है, उन लोगोंने पक्षभुक्त होनेके विषयमें बहुत कुछ खण्डन किया है। जो हो, यह सन्धि कभी निष्पन्न नहीं हुई।

† जिस भावसे अङ्गरेज लोग अफगानस्थानसे फौज लौटा लाये थे, सिखजातिने उस कु-प्रथा या घृणाजनक बातका बार बार उल्लेख किया था। (Mr. Clerk to Government, 19th July, 1842.) जिन सब प्रधान पुरुषोंने पहले काबुलपर आक्रमणकी बात बहुत ही विनीत भावसे प्रकट की थी, मिष्टर क्लार्क उनमें अन्यतम है। इसके बाद इतना जल्द काबुल परित्याग करनेके बारेमें उन लोगोंने घोर प्रतिवाद किया था। (See his letter above quoted and also that of the 23rd April, 1842.)

के हस्तान्तर करनेका आदेश जनरल पलकके पास पहुं
पहले ही सेनापतिने दुर्ग-ध्वंस कर डाला। • उस स
वालाहिसारमें जिन्हें कौशलक्रमसे राजपदपर प्रतिष्ठित कि
था, उस राजाको ही सेनापतिने दुर्गका ध्वंसावशेष प्रदान कि
लाहोरकी शासन-प्रणालीमें विशृङ्खला होनेपर शेरसिंह
घृणाजनक नजराने देनेके बोझसे अव्याहति पानेमें प्रायः कां
क्षुक नहीं थे। पञ्जाबको राहसे निरापद जानेकी सम्मति दे
सुहम्मदने भी उस समय मुक्ति पानेका आदेश पाया था
अङ्गरेजोंके विरुद्ध युद्धकर अकबरखांने पिताने जय पाई, इस
उनका यशःसौरभ चारो ओर उद्भासित हुआ; सबने शा
दका प्रकाश की। उस समय शासनमें अयोग्य शाह शुज
अकबरखांके पिताके हाथ समर्पणकर, उसे साथ मित्रता
स्थापन करना ही अङ्गरेजोंने ठीक समझा। †

इसी समय गवरनर जनरलने फीरोजपुरमें एक दल सैन्यके समावेशका संकल्प कर विज्ञताका परिचय प्रदान किया। अफगानस्थानमें फिर विपत्की सम्भावना होनेपर उसके प्रतिकारार्थ उस सैन्यदलको तय्यार रखना ही उनका उद्देश्य था। भारतके नरपतिगणको उन्होंने और एक बात मालूम

नहीं सके। अफगानस्थानके साथ सब सम्बन्ध तोड़नेके लिये, गवरनर जनरलने जो प्रतिज्ञा की, सिख लोग वह सब जानते थे; लेकिन स्थायी भावसे इस सम्बन्धकी रक्षा के लिये अधिकांश पुरुषोंने जो राय प्रकाश की, सिख लोग वह भी जानते थे। अधिकन्तु उन लोगोंने देखा, कि नवागत सैन्य द्वारा सब दुर्ग ही अधिकृत हैं और स्वेच्छाक्रमसे राज्यपरित्यागकी नीति उन लोगोंके लिये पूरी तरह नई थी। अतएव वह लोग कुछ दिनों प्रतीक्षा करते रहे। सिपाहियोंके लौटनेमें स्वाधीनभावसे काम करना जब उन लोगोंके लिये सहजसाध्य जान पड़ा, तो दोस्तमुहम्मदके छुटकारेमें वह लोग फिर अधीनता-पाशमें आबद्ध हुए। उन लोगोंके पञ्जाबकी राहसे अमीरके निरापद परिचालन करनेमें प्रहरी-स्वरूप नियुक्त होनेपर, उनके साथ सिख लोग कोई प्रस्ताव कर नहीं सके। जितने दिनों सिखजाति अङ्गरेजोंकी नीतिके अनुसार अधीनतापाश छिन्नकर स्वाधीनभावसे शासनकार्य्यके परिचालनामें अभ्यस्त नहीं हुई थी, तबतक सुलतान मुहम्मदखां और अन्यान्य शासनकर्त्ताओं द्वारा सिखजाति कार्य्य सम्पन्न कर सकती थी। (Compare Mr. Clerk to Government, 2nd Sept. 1842.)

—उससे जय पानेमें भी सौकार्य्यविधान करनेके लिये महाराजने वन्धुत्वका जो नियत प्रमाण प्रदान किया था, उससे यह स्थिर हुआ, कि गवरनर जनरल उन्हें खुद ही धन्यवाद प्रदान करेंगे। महासमारोहसे उस उत्सवको सम्पन्न करनेके लिये उस समयको उद्दीपनावश और भी स्थिर हुआ, कि काबुलसे जो दो सैन्यदल युद्धमें जय पा लौट रहे हैं, वह किसी तरहकी उच्छृङ्खलताचरण न कर अङ्गरेजोंकी उदारता और साम्यनीतिका परिचय प्रदान करेंगे। अलकजन्दर ओर पुरुकी युनानी सेन्य द्वारा पञ्जाब प्रदेश मेखिडनकी अन्तर्भुक्त होनेके बाद, फिर इतनी ज्यादा यूरोपीय सैन्य कभी भारतक्षेत्रमें एकत्र समवेत हुई नहीं थी। सिखजाति साधारणतः एक कारणसे सन्तुष्ट हुई थी; इसलिये ही उन लोगोंने इस सम्मिलनकी विशेष चेष्टा की थी, जिसमें पश्चिम सीमान्तमें अङ्गरेज उपस्थित न हों। किन्तु अन्यान्य अवस्थामें क्षमता और ऐश्वर्य्यका वैभव दिखानेमें सुविधा था, वह बहुत गर्व्वित हो सकते थे। शेरसिंहने निःसन्देह खुद लार्ड एलेनवराके साथ मुलाकातके लिये प्रतीक्षा की नहीं थी। वह शासनकार्य्यमें अपनी अक्षमता समझ सके थे, सिखोंके अत्याचारके लिये और जो सब राजद्रोही अमीर उस समय अपने अपने महलकी चिन्ताकर भयसे कांपे थे इस सन्देहसे कि उनके साथ वह लिप्त हुए हैं, उन्हें जो कैफियत देना चाहिये, उसे विचारकर वह अनर्थक भीत हुए थे। यही विचारकर वह आकुल हो पड़े, कि पञ्जाब प्रदेशपर अधिकार करनेसे समग्र अफगानस्थानका पूरी तरह अधिकार करनेका पहला सोपान गठित होगा। शेरसिंहको

अपनी ओर भी विश्वास नहीं था। अनुचरगणकी प्रतिहिंसा वृत्तिके चरितार्थके भयसे भी वह बहुत डरे थे। उन लोगोंका विश्वास था, कि शेरसिंह स्वार्थसाधनोद्देश्यसे खालसा सैन्यके उत्सर्ग करनेमें तत्पर हैं। यह ध्यानसिंहका अभिप्रेत नहीं था, कि शेरसिंहके साथ गवरनर जनरल मुलाकात करें। अधिकन्तु वह स्वभावतः ही सन्दिग्धचित्त थे; ध्यानसिंहको भय हुआ, कि उनके प्रभु अङ्गरेज-प्रतिनिधिको उत्तेजितकर उनके ध्वंस-साधनमें प्रवृत्त होंगे, या उनसे वैदेशिक प्रभुत्वसे उद्धारसाधनमें चेष्टित होंगे। शेरसिंह और उनके मन्त्री दोनों ही उल्लसित हुए, कि जिस मतविरोधके लिये लुधियानेके लहनासिंह मजीठियाका विशिष्टरूपसे समादर किया नहीं गया, इस समय उसी मतविरोधके बहाने अङ्गरेजोंके विरुद्धाचरणमें महाराजके साथ उनका सम्मिलन असम्भव है। • मुलाकातको

अवहेला और अवमाननाके लिये लार्ड एलेनवरा सपमुच ही क्रुद्ध हुए थे; लेकिन आरम्भसे ही उनके प्रति ऐसी अवमानना दिखाई गई थी। उनका क्रोध सहज ही प्रशमित होनेका नहीं था। येकिन प्रकृत भावी उत्तराधिकारीके साथ भी स्वयं

यदि लार्ड एलेनवरा उन्हें लाहोरके सिंहासनपर प्रतिष्ठित रखते, तो वह निश्चय ही अङ्गरेजोंका आश्रय ग्रहण करते।

सिन्धुके अमीरोंके साथ जिस सन्धिका प्रस्ताव हुआ था, वह अन्यायमूलक और सन्देहजनक था। उसके बारेमें थरनटनकृत भारतवर्षका इतिहास देखना चाहिये। (See "Thornton's History" vi 447.) जो हो, इन सब अपराधोंकी कैफियत देनेके लिये सिख लोग कभी नहीं आये।

सर्दार तेहनासिंह जिस मतविरोधके कारण हुए थे, वह संक्षेपमें नीचे दिया जाता है,—सीमान्त प्रदेशमें गवर्नर जनरलके आगमनसे प्रचलित आचार-प्रथाओंके अनुसार यह सर्दार उनकी अभ्यर्थनाके लिये भेजे गये। उस समय ऐसा बन्दोबस्त हुआ, कि गवरनर जनरल लुधियानेके सर्दारका समादर करेंगे, इसी विचारसे दिन और समय स्थिर हुआ, और सब बन्दोबस्त भी यथोचित भावसे सुस्थिर हो गया। मिष्टर क्लार्कने खुद राजाके साथ मुलाकातकर उन्हें गवरनर जनरलके पास लानेके लिये गये। उनके प्रति ऐसा आदेश था, कि सिखोंके शिविरकी ओर वह आधी राहतक चलेंगे। सर्दारने विचारा था समझा, कि मिष्टर क्लार्क उनके शिविरमें आवेंगे; सतर वह निश्चिन्त हृदयसे बैठे रहे। इधर मिष्टर क्लार्क दो घण्टे उनसे

सिक्खोंने जब क्षमाकी प्रार्थना की, तब एलेनबराके भय सन्दे-
हका कारण ही अन्तर्हित हो गया। सन् १८४३ ई०के फर-
महीनेके शुरूमें सैन्य-दलके टूटनेका निर्दिष्ट समय आया।
गवरनर जनरलने दूर देशसे आये हुए वृटिश सिपाहियोंको
और अधिक दिनोंतक रखनेकी इच्छा नहीं की। इसतरह
शेरसिंहके साथ मुलाकात नहीं हुई; लेकिन लार्ड एलेनबराने
कम उम्र बालक युवराज प्रतापसिंहसे मुलाकात की। जिस
समय बाढ़के जलमें सिन्धुनदका दोनों कूल प्लावित था, उस
समय जैसी क्षिप्रकारिताके साथ बहुसंख्यक सिक्खसैन्य प्रहरी
स्वरूप शतद्रु के उसपार भेजी गई, और जैसी निपुणता और
चतुरताके साथ सैन्य परिचालित हुई थी; [illegible] [illegible]

योंके सैन्यकी संख्या अधिक होनेपर भी अङ्गरेजी सैन्यके सिद्धि पानेका आत्माभिमानका कारण रहनेपर भी, इस विषयको उन लोगोंको विशेष मनोयोगके साथ देखना कर्त्तव्य था। युवराजने भी उसी तरह भारतीय अङ्गरेजी सैन्यको देख सिख-राजने बहुत ही आग्रहके साथ जलालाबादकी उद्धारकारी सैन्यदलकी परीक्षा ली, और विस्मयके साथ सहिष्णु सिपाहियोंकी अकपट प्रशंसा करने लगे। अन्तमें सुसज्जित सैन्यदल टूटी, फीरोज-पुरके समतल क्षेत्रमें फिर असंख्य शुभ्र छावनीकी श्रेणियां दिखाई नहीं दीं। विपन्न शेरसिंह घोरतर विपदकी अव-सानसे बहुत शीघ्र अन्तःसर आये, उन्होंने ईश्वरको धन्यवाद प्रदान किया। इन सब कामोंके खतम होनेपर उन्होंने दोस्त-मुहम्मद खांकी बहुत समादरके साथ लाहोरमें अभ्यर्थना की और सन् १८४३ ई०के फरवरी महीनेमें वह बन्धनमुक्त अमीरके साथ सन्धिसूत्रमें आबद्ध हुए। लेकिन इस सन्धिपत्रमें अङ्गरे-जोंकी नज़र जलालाबादका कोई उल्लेख नहीं रहा॥ *

लेकिन शेरसिंह अधनीस्थ राजे और प्रजागणसे डरते थे। सन् १८४२ ई०के जून महीनेमें माई चन्द्रकुंवरिके आकस्मिक या सन्देहमूलक मृत्युसे यद्यपि उनका भय बहुत कुछ घट गया था, † तथापि विद्वेषभावापन्न ध्यानसिंहके प्रभुत्वसे वह

---

* सन् १८४३ ई०की १५वी फरवरी और १७वी मार्चको मिस्टर क्लार्कने लिये गवरमेराटने एक पत्र लिखा था, यहां उसे ही देखना चाहिये।

† सन् १८४२ ई०की १५वीं जूनको गवरमेण्टके लिये मिस्टर

उद्विग्न हुए। उस समय उन्होंने भाई गुरुमुखसिंहके प्रस्ता वोंपर किसी तरहका विश्वास प्रकाश न कर, उनके मतसे काम करने लगे। एक दिनरावसे यह पुरुष उनके मन्त्री थे और धार्म्मिकके नामसे उनकी बहुत सुख्याति भी थी, सभी जानते थे, कि वह एक प्रसिद्ध योगी और चमत्कारी पुरुषके लड़के थे। * देशके विरुद्ध पक्षको एकमात्रतमें गायब

बाकेका पत्र। दासियोंके मुंहसे सुना गया, कि रणजीतसिंहकी विधवा पत्नी, ऐसे गुप्तरूपसे आहत हुई थीं, कि वह कुछ देरके बाद ही मृत्युमुखमें पतित हुईं। इस नृशंस आचरणका केवल इतना बयान दिया गया था, कि उन्होंने किसी अपराधके लिये हत्याकारी नौकरोंका तिरस्कार किया था; लेकिन कोई इसका विश्वास करना चाहते नहीं थे, कि इस कामसे शेरसिंह निर्लिप्त थे।

करनेके अभिलाषी हों, अङ्गरेज-गवरमेण्टने शुभ उद्देश्यसे, फिर भी, असम्भव आशासे प्रणोदित हो सिन्धानवाला राजगणके प्रति फिर अनुग्रह प्रकाश करनेका अभिलाष किया। उन लोगोंके भयसे अङ्गरेज-प्रतिनिधिको बहुत सतर्कताका अवलम्बन करना पड़ी थी और महाराज खुद भीत और सन्दिहान हुए थे। * स्वाभाविक अकपटताके कारण शेरसिंह इस मित्रता-बन्धनके विरोधी नहीं थे; बल्कि उन्होंने जम्बू-राजोंके समवल-सम्पन्न इन राजपरिवारको धीरे धीरे मित्रतासूत्रमें आवद्ध करनेकी इच्छा की थी। ध्यानसिंहने भी उनके प्रत्यावर्त्तनमें किसी तरहकी बाधा नहीं दी। उन्होंने विचारा था, कि इस समय माई चन्द्रकुंवरिने इहधाम त्याग किया है, सुतरां उन लोगो द्वारा बहुत उद्देश्य साधित होंगे। इसतरह अजि-तसिंह और उनके पितृव्यने फिर लाहोर-राजसभामें अपने अपने स्थानपर अधिकार किया। इतना होनेपर भी, सन् १८४३

* सन् १८४२ ई०की ७वीं अप्रेलको गवरमेण्टके लिये मिष्टर क्लार्कका पत्र, और सन् १८४१ ई०की १२वीं मईको मिष्टर क्लार्कके लिये गवरमेण्टका पत्र। सन् १८४३ ई०की ५वीं सितम्बरको गवरमेण्टने करनल रिचमण्डको जो पत्र लिखा, उसे भी देखना चाहिये। सन् १८४३ ई०के जून महीनेमें मिष्टर क्लार्क आगरेके लफ्टण्ट गवरनर हुए, सीमान्त प्रदेशमें लफ्टण्ट करनल रिचमण्ड प्रतिनिधिरूपसे उनके स्थलाभिषिक्त हुए। रिचमण्ड एक विख्यात सैन्यधारी थे; उस समय उन्होंने लार्ड आक्लैण्डके अधीन बहुत प्रसिद्धि पाई थी।

ई०के गरमीके दिनोंमें ध्यानसिंहने समझा, कि महाराज उनकी प्रतिपत्ति धीरे धीरे घटती जाती है। इधर गुरुमुख सिंहकी कु-मन्त्रणासे भीत होनेके भी अनेक कारण थे। गुरुमुखसिंह जैसे एक पुरुष द्वारा लोगोंके उत्तेजित होनेसे उसके विद्वत्मण्डलको भी वह उत्तेजित कर सकते थे। इसके बाद मन्त्रिवर फिर बालक दलीपसिंहकी बातकी आलोचना करने लगे। इन्होंने सिन्धानवाला राजाओंके मनमें इस विश्वासके [illegible] बद्ध करनेकी चेष्टा की, कि केवल अपने वंशकी राह [illegible] करनेके लिये ही वह लोग लाहौरमें आनेके लिये [illegible]

राजाके नामसे घोषणा करनेके लिये ज्ञाति-बन्धुवर्ग, ध्यानसिंहके साथ मिल दुर्गकी ओर बढ़े। पिर-मतके मन्त्री इस समय अपने फन्देमें आप ही पड़ गये; इस समय वह अपने पाप-कार्य्यके सहायताकारकोंके क्रीड़ा-पुतलीस्वरूप हुए; अधिकतर निर्ज्जनमें रहनेके लिये ही मानो वह अपने प्रिय सहचर और आज्ञावाहियोंसे विच्छिन्न रहे। जिस धृष्ट निर्लज्ज राजाने कुछ दिनो पहले उनके अद्वितीय प्रभुके रक्तसे हस्तरञ्जित किया था, उसी राजाने ही उस समय गोलीसे उनकी हत्या की। *
षड़यन्त्रकारी लोग इसतरह अपने अपने काममें बहुत कृतकार्य्य हुए, लेकिन ताच्छिल्यवश उन लोगोंने मन्त्रीके पुत्रको मारा या कैद नहीं किया। इधर महाराजकी हत्याके समाचारसे सिपाही लोग जैसे सन्तुष्ट हुए थे, ध्यानसिंहकी मृत्युसे वह लोग वैसे ही दुःखित हुए। मालूम हुआ, कि उन लोगोंने ध्यानसिंहकी हत्याकी बातको कभी दिलमें जगह दी नहीं थी। अपनी विपदाशङ्कासे हीरासिंह सन्तानोचित कर्त्तव्य साधनमें उदबुद्ध हुए। जो लोग हत्याकाण्ड साधित हुए थे, उसके लिये वह एकमात्र सिन्धानवालोंको ही सच्चा अपराधी बना सकते थे। उनके बन्धु और उनके पिताकी नृशंस मृत्युका प्रतिविधान करनेमें सम्मत होनेपर, उन्होने सिपाहियोंको यथेष्ट पुरस्कार देना मञ्जूर किया था। सभी सैन्यने उनके कहनेसे सम्मत

---

* सन् १८४३ ई०की १७वीं और १८वीं सितम्बरको लफटएट करनल रिचमण्डने गवरमेण्टके लिये जो पत्र लिखा, उसे भी

महाराज दलीपसिंह।

गत हुए थे; लाहोर आनेके समय सर्दार उत्तरसिंह सिन्धा-नवालाने दुर्ग अवरोधका समाचार पा धर्म्मप्राय ख्यातनामा भाई बीरसिंहके प्रभुत्वको घोषणाकर गांवके अधिवासियोंको उत्तेजित करनेकी चेष्टा की थी; लेकिन कुल "खालसा" सैन्यको समवेत देख, हीरासिंहके दूतका कार्य्यकलाप छोड़ उन्होंने शीघ्र अङ्गरेजके राज्यमें प्रवेश किया। *

नये मन्त्रीने मासिक दो रुपये आठ आने यानी पांच शिलिं रहसे हरेक सिपाहियोंकी तनखाह बढ़ा दी। पहलेका जो बाकी पड़ा था, उसे भी उन्होंने परिशोध किया। सिपाहियोंने सोचा, कि वही राज्यके अधिपति हैं: वह लोग अर्थ संग्रहकी चेष्टा करने लगे, या जम्बू-दलपतिगणको विताड़ित और पूर्व्व वर्णित भाई बीरसिंहको धर्म्मयाजक और राजपदपर प्रतिष्ठित करनेकी भ्रान्ति दिखा लोगोंमें विशेष सम्मानार्ह और भयप्रद होनेकी चेष्टा की। † बालक महाराजके मामा जवाहरसिंहने यथायोग्य रूपसे ऊंचेपदपर अधिकार किया; लेकिन रानीके परिवारवर्गमें एकता नहीं रही। युवक युद्धमें अनभिज्ञ और कार्य्यमें अपटु भ्रातुष्पुत्रका प्राधान्य पानेसे मर्म्माहत हुए। प्रभुत्व पानेके लिये सुचेत् सिंहने एक दल तयार किया ‡ साहाय्यके लिये उन्होंने

---

* लफटण्ट-जनरल रिचमण्डका पत्र, सन् १८४३ ई०की २१वीं सितम्बरसे ९वीं अक्तूबरतक।

† सन् १८४६ ई०की २६वीं सितम्बरको गवरनेरलके लिये लफटण्ट-जनरल रिचमण्डका पत्र।

‡ सन् १८४३ ई०की १६वीं और २२वीं अक्तोबरको गवरनेरलके लिये लफटण्ट-जनरल रिचमण्डका पत्र।

सर्दार जवाहरसिंह ।

पड़नेपर जवाहरसिंह शीघ्र कैद हुए। पहले जिस शिक्षासे उनका स्वभाव बना था और जिस शिक्षाके बलसे वह कार्य्यवली सम्पन्न करते थे, जीवनके अन्तमें उन्होंने उसी नीतिकी शिक्षा ली। *

जो हो, तब भी हीरासिंह क्रमशः विपद्-जालसे जड़ित होने लगे। फतेहखां राणा नामक एक मनुष्य ही अपने प्रभुके प्रस्तावित हत्याकाण्डमें गुप्तमन्त्रणा देनेवाला था। लोगोंका ऐसा ही अनुमान है, कि जब रणजितसिंहने एक पक्षमें राजाको ग्रहण किया, उस समय चतुरताके साथ कु-अभिप्रायसे यह मनुष्य छिपा बैठा था। जब सैन्यराशिने दुर्गपर आक्रमण किया, तब इन नमकहराम नेताने अपने देश डेरा-इस्माइलखां नामक स्थानमें भागकर राजद्रोहकी सूचना देनेकी चेष्टा की थी। मुलतानके विद्रोही और इस शासनकर्त्ता उनके ऐसे उद्यममें उत्साह दिखाते थे, उस समय वैसी ही अनुमति होना विशेष उद्वेग और अधिकतर दुश्चिन्ताका कारण हुआ। † इन सब विद्रोहके दमन करनेके उपायके अवलम्बन करते न करते, काश्मीर सिंह और पेशावरा सिंह नामक रण-

---

* सन् १८४३ ई०को २८वीं नवम्बरको लफटनट-करनल रिचमण्डने गवरमेण्टको जो पत्र लिखा, यहां उसे भी देखना चाहिये।

† सन् १८४३ ई०की ३१वीं दिसम्बरको लफटनट-करनल रिचमण्डने गवरमेण्टके लिये जो पत्र भेजा, यहां उसे भी देखना चाहिये।

सम्मत हुए। स्वतः इन बालकके शासनके समय उनकी वश्यता स्वीकार करनेमें लोगोंने इधरउधर किया था। *

लोगोंको विश्वास था, कि राजा सुचेतसिंहने काश्मीरासिंहकी समस्त मन्त्रणासे अप्रकाश्य भावसे उनकी सहायता की है। जवाहरसिंहका छुटकारा भी उनके ही सम्मतिक्रमसे हुआ है। राजाको विश्वास था, कि वह सिपाहियोंमें सबके प्रियपात्र हैं; प्रधानतः जो अश्वारोही सैन्य कुछ अशिक्षित है और जो स्थायी शिक्षित पैदल और शस्त्रचालनाकारी सैन्यदलको शृङ्खलाबद्ध कार्य्य-प्रणालीसे कुछ ज्यादा ईर्ष्यापरतन्त्र हैं, उनके ही वह अधिक प्रियपात्र हैं। वह बहुत विरक्ति और अनिच्छाके साथ पहाड़ी प्रदेशमें गये, भ्रातुष्पुत्रको बहिष्कृतकर सिंहासनपर अधिकार करनेके लिये उस समय भी उनका उत्कट अभिलाष था। सन् १८४४ ई०की २६वीं मईको तीसरापहर कई एक अनुचरोंके साथ वह अकस्मात् लाहोरमें आये, लेकिन अधिकांश सैन्यदलने उनकी विनीत प्रार्थनाकी उपेक्षा की। उसका एक कारण यह था, कि हीरासिंह दानमें मुक्तहस्त और प्रतिज्ञामें अटल और बहुत ही उदारचेता थे; दूसरा कारण यह था, कि जितने सुचतुर प्रतिनिधि सैन्यदल समूहके "पञ्चायत" स्वरूप नियुक्त होते थे—या उन लोगो द्वारा "पञ्चायत्" सभा तय्यार होती थी, वह अपने अपने महत्व की आत्मसम्मानको विशेष उपलब्धि कर सकते थे; एकमात्र

---

* सन् १८४४ ई०की २७वीं मार्चको लफ्टनण्ट करनल रिचमण्डका पत्र।
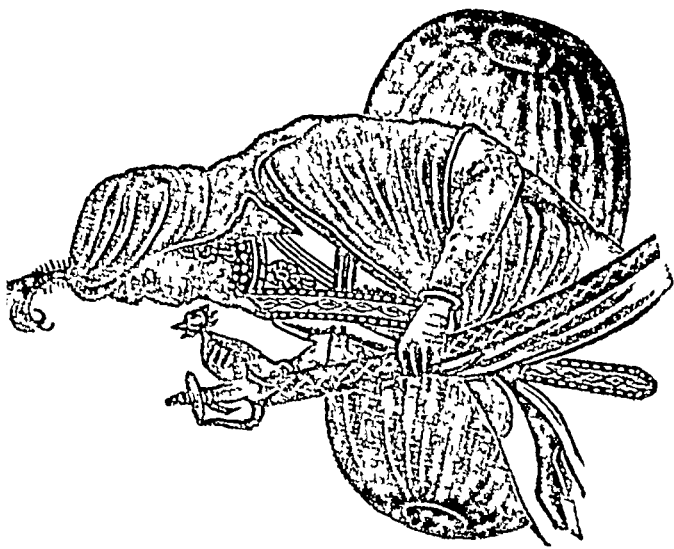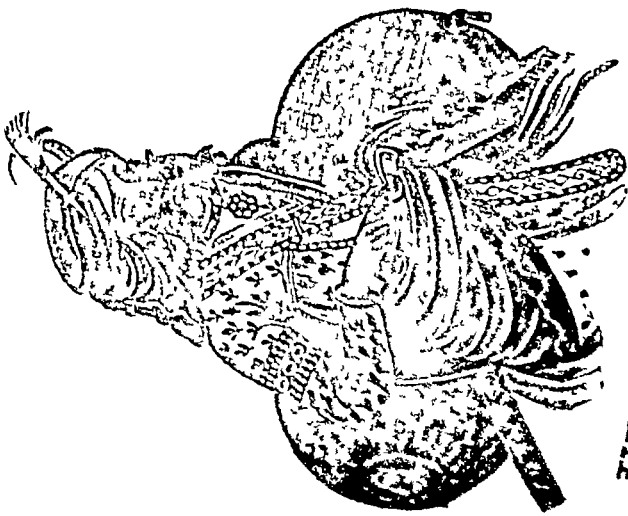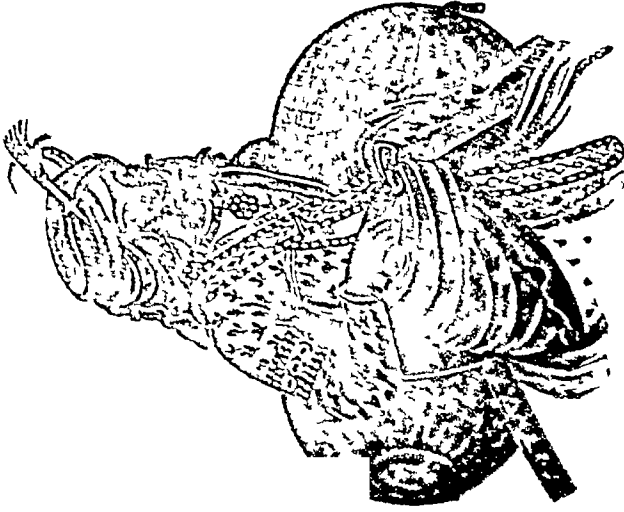
राजा सुचेतसिंह ।

राजा हीरासिंह ।

राजा सुचेत्‌सिंह ।
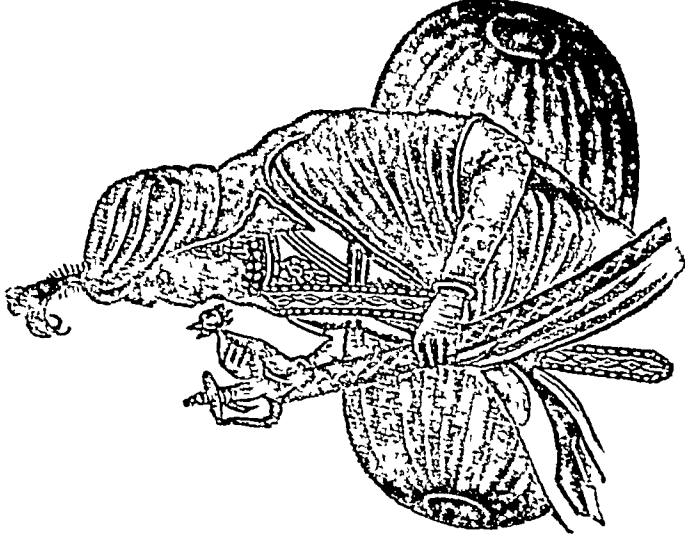
राजा हीरासिंह ।

फीरोजपुरके पास रहने लगे। इन सब बातोंकी याद दिला वह "खालसा" सिपाहियोंको उत्तेजित करने लगे, कि असन्तुष्ट-चित्त काश्मीरासिंह उनके साथ योगदान करेंगे, लेकिन इधर वीरसिंह चुटगे टेक समवेत "खालसा"से अनुग्रहकी भिक्षा मांगने लगे;—सिन्धानवाला लोग अङ्गरेजोंसे साहाय्यके प्रार्थी और पूरी तरह उनके ही अनुगत हैं। शीघ्र एक वृहत् सैन्यने लाहोरसे यात्रा की; लेकिन विद्रोही दलसे भाई वीरसिंहको स्वतन्त्र स्थानमें रखनेके लिये उनकी इच्छा बहुत ही प्रबल हो उठी; सिपाहियोंने सोचा, कि ऐसे धर्म्मप्राण महापुरुषपर आक्रमण करना धर्म्मविरुद्ध और अपवित्र है। जो हो, उसी महीनेको ७वीं तारीखको भाई वीरसिंहसे प्रस्थान करनेका अनु-रोध प्रकटकर, उनके पास प्रतिनिधि भेजा गया। प्रतिनिधि-गणके कु-वाक्यवर्षणसे बहुत ही क्रुद्ध हो सर्द्दार उत्तरसिंहने अपने हाथों एक प्रतिनिधिको मार डाला। इस नृशंस व्यापा-रके फलसे शीघ्र युद्धका सूत्रपात हुआ। उत्तरसिंह और काश्मीरासिंह दोनों ही मारे गये। इसके बाद देखा गया, कि भाई वीरसिंह भी एक गोलाके आघातसे मृत्युमुखमें पतित हुए,—मृतस्तूपमें उनकी मृतदेह पड़ी हुई थी। इस युद्धमें जम्मूके राजपूत वीर, लाभसिंह सेनापति थे; काश्मीरासिंहके परिवारवर्गको हस्तगत करनेपर, उनके छिपानेमें राह अधिक-तर सुगम हो गई। लेकिन स्त्रियों और बालकोंको लाहोरमें लानेके सम्बन्धमें पैदल सिक्ख-सैन्यने असम्मति प्रकटकर घोर प्रतिवाद किया। सिपाहियोंके इस प्रतिवादसे और भाई वीर-सिंहकी मृत्युसे मर्म्मभेदी विलाप चिह्न देख मौन और मनक्लान्त

छिन्न-विच्छिन्नकर राजा और उनके परामर्शदाता दोनो हीने अतिरिक्त पहाड़ी सैन्यके संग्रह करनेकी मन्त्रणा की है। उन लोगोंने स्थिर किया, कि ऐसे उपायकी सार्थकताका प्रतिपादन करना जरूरी है, कमिटीमें यही स्थिर हुआ, कि सन्तोष-जनक प्रमाण न देने और सन्देहभञ्जन बिना कोई सैन्यदल लाहोर परित्याग कर न सकेगी। इसतरह हीरासिंह सिन्धु देशकी अङ्गरेजी सैन्यके भावी साहाय्यकी आशामें रहे। उनके साथके कई एक सैन्यदलके उस समय शतद्रुकी ओर जानेसे उनका सन्देह बढ़ा। दूसरी ओर उससे अङ्गरेजोंके हाथसे सिखजातिके आसन्न विपद्की बात जना दी। "खालसा" सैन्य इस अङ्गरेजी सैन्यके सामने होनेमें पूरी अनिच्छुक थी। अङ्ग-रेज कर्तृपक्षीयोंसे प्रतिश्रुत खाद्यद्रव्य और अन्यान्य जरूरी द्रव्योंके संग्रहका बहानाकर, एकदल सिख सैन्य कुशकी ओर और कितने ही सैन्यदल राजधानीके सन्निकटवर्त्ती स्थानमें भेजे गये। * वस्तुतः रणजित् सिंह भी समय समयपर ऐसे ही उपायका अवलम्बन करते थे; उस समय अङ्गरेजी सैन्यके असंख्य होनेपर भी उनका भय बढ़ता नहीं था। † लेकिन बराबर सिद्धि पानेके कारण और अङ्गरेजोंके कामनें नियुक्त स्थायी और शिक्षित सैन्यदलके उस समयके लज्जाकर और

---

* लफटनण्ट करनल रिचमण्डका पत्र; सन् १८४४ ई०की २२वी मार्च और सन् १८४३ ई०की २०वी दिसम्बर।

† सन् १८४२ ई०में सर डेविड अक्टरलोनीका पत्र; तारीख १९वी अक्टोबर।

पञ्जाब-अधिपतिका विशेष प्रियपात्र हुआ था। अतएव सन् १८१६ ई० या अङ्गरेजी प्रभुत्वके प्रवर्त्तनके बाद ही यह गांव उसे दिया गया, लेकिन अङ्गरेज कर्त्तृपक्षीयगण इस बारेमें कुछ सा ध्यान नहीं रखे। यदि प्रमाणित हो, कि यह गांव ब्रटिश-राजत्वके सम्पूर्ण बाहर और उससे स्वतन्त्र है, तो इस स्थानको हस्तान्तर करना अन्याय और विधिविरुद्ध था। नाभाके राजाने धानासिंहके प्रति असन्तुष्ट हो सन् १८४३ ई०में फिर उस दानको वापस लिया; लेकिन उनके सिपाहियोंने राजाके इस कामसे जागीरदारोंकी ऐश्वर्य्यसम्पत्ति सभी लूट ली। इससे लाहोर गवरमेण्टने अभियोगका कारण पाया और उसी सुयोगसे उनका पक्षावलम्बन किया। * लेकिन बहुसंख्यक रूपये और "असुद्रित" चांदी और स्वर्ण-पिण्डके सम्बन्धमें ब्रटिश-गवरमेण्टकी मीमांसा-निष्पत्तिसे हीरासिंह और उनके परामर्शदाताने और भी अधिकतर आपत्ति की। राजा सुचेत्‌सिंहने इस अर्थराशिको फीरोजपुरमें गुप्तभावसे सञ्चित रखा था; उनकी मृत्युके बाद सञ्चित अर्थके अपहरण करनेकी चेष्टा करनेपर उनके नौकर लोग पकड़े और दण्डित किये गये। उस अर्थराशिका परिमाण १५,००,००० पन्द्रह लाख रुपये और इरानी अफगान-युद्धके समय अङ्गरेज गवरमेण्टके प्रति कृतज्ञताके फलस्वरूप देनेके उद्देश्यसे, ऐसा ही समझा गया था, कि वह फीरोजपुर भेजा गया। अङ्गरेज-गवरमेण्ट भी

* Lieut. Col. Richmond to Government, 15th and 28th May 1844

इस समय आश्रित सिख राजोंसे कर्ण वे रही थी। लाहोरके मन्त्रोंने इस अर्थराशिका दावा किया; स्वाभाविक उत्तराधिकारी पुत्रके न रहनेसे उक्त जागीरदारोंकी सब सम्पत्तियां सरकारमें राज्यभुक्त हुईं; अधिकन्तु सम्राटके विरुद्ध अस्त्रधारणकर मरनेसे राजद्रोहिताके अपराधसे मरे मनुष्योंकी सम्पत्तियां न्याय्यभावसे दण्डस्वरूप राजकोषभुक्त हुईं। लेकिन ब्रिटिश गवरमेण्टने विचार नहीं किया, कि स्वत्वाधिकारीकी राजद्रोहितासे उक्त सम्पत्तिपर उनके अधिकारका हक ज़रा भी नष्ट हुआ नहीं है। उन लोगोंने कहा, कि जम्मू या पञ्जाबके कानूनके अनुसार इस सम्पत्तिपर अधिकारके हकका प्रमाण न्याय्यरूपसे अङ्गरेजोंको आईन-अदालतमें प्रमाणित करना जरूरी है। तब लाहोरके अनुकूल स्थिर हुआ, कि अङ्गरेजोंको किसी प्रजा या प्रतिवादीने इस धनसम्पत्तिका दावा किया नहीं है; और न्यायसङ्गत या देश-प्रचलित स्वत्वाधिकारीको उसके समर्पणके लिये वह सम्पत्ति यथासमयपर पञ्जाबके शासनकर्त्ताके हाथ समर्पित होगी। लेकिन उसपरभी अङ्गरेज कर्मचारियोंने युरोपके प्रचलित नियमानुसार और धार्मिक [illegible] नहीं दिखाया। उन लोगोंने कहा, कि यदि म[illegible]राज प[illegible] प्रकट करते, कि आईन-मुताबिक उत्तराधिकारियोंको इस धन सम्पत्तिके प्रत्यर्पणके उद्देश्यसे मित्र सरकारोंने उनके समर्पण लिये गया, गुलाबसिंह और ध्यान सिंह दोनों [illegible] इसने साहिब 'सिंहोंनक यार' आदि [illegible] लेकिन इस प्रस्तावपर कोई [illegible] नहीं हुआ, उसका कारण [illegible] और [illegible] [illegible]

हुआ था; दूसरा कारण, भारतीय आईन और आचारपद्धतिके अनुसार, लाहोरके राज-सभासद्गणने विचार किया, कि उनके स्वत्वाधिकारके आदि और प्रथम कारणसमूह अखण्डनीय हैं। इसतरह यह धन-सम्पत्ति ही असन्तोषका मूलीभूत कारण हुआ। बाद अङ्गरेजोंने लाहोरपर अधिकारकर गुलाबसिंहको काश्मीर प्रत्यर्पण किया, और जबतक अङ्गरेजोंने उसका मौष्मिक-मूल्यस्वरूप लाहोर ग्रहण नहीं किया,— तबतक यह असन्तोष वर्त्तमान रहा। *

---

* इस अर्थराशिके प्रत्यर्पण और आबद्ध रखनेमें जो तर्क उठे, उसके सम्बन्धमें निम्नलिखित पत्रादि देखना चाहिये;— Lieut-Col. Richmond to Gov. of the 7th April, 3rd and 27th May, 25th July, 10th Sept. and 5th and 25th Oct. 1844; and of Government to Lieut-Colonel Richmond of the 19th and 22nd April, 17th May and 10th August of the same year) ब्रटिश विचारालयने किसी सम्पत्तिको मालिकोंके हकपर विचार विषयक जो नीति विधिबद्ध हुई है, उसके अनुसार और लाहोर और जम्बूके आईनके अनुसार उत्तराधिकारित्वमें साधारण और व्यक्तिगत हकमें कोई पार्थक्य दिखाई नहीं देता। बल्कि, असाधारण अप्रकाश्य विचारादिके आईनके अनुसार हो प्रधानतः यह व्यवहारिक प्रथा चली आति है, कि जो मृत मनुष्य जिस जातिका और जिस प्रदेशका अधिवासी है उसी जाति और उसी देशगत प्रथाके अनुसार ही उस सम्पत्तियोंका बंटवारा

हीरासिंहने अपने कार्य्यकलापसे आशातिरिक्त फल पाया। जिस प्रथाक्रीसे राजकार्य्य परिचालित होता था, उसमें उनकी

और उसका बन्दोबस्त होगा। हमेशा जब विरोधीय मनुष्य एक ही विदेशी राज्यके प्रजा हैं, सो विवादकी निष्पत्तिके लिये सम्राटके हाथमें ही वह समर्पित होती है। उस समय यह हेतुवाद दिखाई देता है, कि विरोधीय स्थानमें पक्षपातका हक अच्छीतरह मीमांसित हो सकता है और हरेक शासनकर्त्ता ही न्यायवान और विचारक्षम हैं।

वक्ष्यमाण दृष्टान्तमें एक निःसन्तान राजद्रोहीकी सम्पत्तिमें एक सन्धिबद्ध मित्रराज्यके अधिकारका हक माननेमें इनकार करनेपर, भारत-गवरमेण्ट और कलकत्तेके आईन व्यवस्थापक और विचारपतिगणकी अपेक्षा युरोपको भिन्न जाति सम्पर्कीय आईनकी असम्पूर्णता सर्व्वतोभावसे अधिकतर निन्दनीय है। अधिकन्तु इस सम्पत्तिमें कोई हटिशप्रजा या आश्रित मनुष्य दावा नहीं करते हैं। विटनने यह नीति विधिबद्ध की है, कि एक विदेशी मनुष्यकी सम्पत्ति उसकी धानीय ऐश्वर्य्य समष्टिका अंश मात्र है; और उस सम्पत्तिके विदेशीय आईनके अनुसार ही उक्त सम्पत्तिका [illegible] होना चाहिये है (Bk. n. chap. viii secte 109 and 110). लेकिन यहां प्रधानतः या साधारण सम्वाद (मुकद्दमाकारी) प्रतिवादीके वक्ष्यमाण पंथमें Section [illegible] उन्होंने घटनाओं और मुकद्दमोंकी बातें लिखी हुई हैं। [illegible] [illegible] १८५४, [illegible]

श्रेष्ठ और असाधारण दक्षता और क्षमता प्रमाणित हुई। लेकिन उपर्युक्त दान और प्रीतिजनक सम्भाषणसे राजा उनकी प्रशंसा करते थे। ज्वाला नामक एक ब्राह्मण पण्डित-सम्प्र-

---

सम्राटगण अन्ततः इङ्गलण्डमें बृटिश प्रजाके नामसे मुकद्दमा दायेर कर सकते और अभियोग ला सकते हैं।

जागीरदारोंके (या करदवृत्तिभुक् लोगोंके) राज्य और ऐश्वर्य्यविषयक पुराने देशके प्रचलित कानूनादि वरनियरके भ्रमण-वृत्तान्तमें दिखाई देते हैं। ("Bernier's Travels," i. 145-137.) यहां गवरमेण्टके पूरे हकका अधिकार है। वृत्ति-भुक् मनुष्य लोग केवलमात्र जीतेजी सम्पत्तिके पदपर भोग दखल कर सकेंगे और कृपणता या प्रजापीड़न द्वारा उन लोगोंने जो अर्थ उपार्ज्जन किया है, वह साम्राज्यकी सम्पत्ति है। साधारण मनुष्य और एक विताड़ित सम्राटमें उनका दोष या उनकी प्रतारणाके सम्बन्धमें विचार करना कष्टकर हो सकता है; लेकिन राजद्रोह और विद्रोहके सम्बन्धमें सन्धिबद्ध राज्य और राज्यकी प्रजामें विचारके समय कोई क्लेश या विघ्न दिखाई नहीं देता। जिस गवरमेण्टने उन्हें परित्याग किया है, उनके विरुद्ध कोई भागा हुआ राजद्रोही या देशहितैषी मनुष्य षड्यन्त्रकर उन लोगोंको आश्रयस्थल कलुषित करनेमें सक्षम नहीं। जिस राज्यके अनुग्रहसे वह लोग प्रतिपालित और इतने अनुगृहीत हुए हैं, अचिन्त्य और दूषणीय कार्य्यमें प्रवृत्त होनेसे पहले उनकी सम्पत्ति हस्तान्तरित या स्थानान्तरित कर निर्भीक पूर्वक राज्यका प्रतारणाविधान कर नहीं सकते. इसी नीतिसे विरत होनेपर कष्ट निवारित होगा।

ो उत्तेजित करने लगे। ऐसा नहीं, कि गुलाबसिंहको भय
िखनेका उनका कोई कारण नहीं था, उन अविवेचक राजाने
सम्प्रति सुचेतसिंहका सब राज्य आत्मसात् कर लिया था;
कारण, उन्होंने सोचा था, कि वही इस सम्पत्तिके एकमात्र
उत्तराधिकारी हैं।*

सब प्रकारके कामोंमें ही ज्वालाके वीरत्व और दक्षताका
परिचय पाया गया था। लेकिन किसी किसी समय वह बहुत
ही अविमृष्यकारीकी तरह काम करते और बहुत ज्यादा
कामोंके साधनमें चेष्टित होते। सम्भवतः वह सिखोंकी प्रकृतिको
अच्छी तरह समझ नहीं सके और सचमुच गुलाबसिंहके
प्रति भी उन्होंने ताच्छिल्य प्रकाश किया था। असलमें
सुचेतसिंहकी जागीरोंको उनके (सुचेतसिंहके) भती-
जेके साथ अंश विभाग कर लेनेपर रखा बाध्य हुए
थे।† इधर फतेहखां तावनाने फिर डेराजातमें एक विद्रोह
आरम्भ किया,‡ चितोरसिंह अतरियावालाने रावलपिंडीके

* सन १८४४ ई० की १२वीं अगस्त और १०वीं अक्टोबरको
गवरमेण्टके लिये लफ्टएट कारनल रिचमण्डने जो पत्र लिखा
उसे ही देखना चाहिये।

† सन १८४४ ई०की ३०वीं अक्टोबरको लफ्टएट कर्नलके
लिये गवरमेण्टका पत्र।

‡ सन १८४४ ई०की १४वीं जूनको गवरमेण्टके लिये लफ्टएट
कर्नल रिचमण्डका पत्र।

एक अयोग्य मनुष्य ही प्रधान पदपर उन्नीत किया गया। लेकिन पीछे ऐसा मालूम हुआ, कि इस मनुष्यने असदुद्देश्यसे अपचरित्रा रानी झिन्दनकी नीच प्रवृत्तिपर अपना प्रभाव जमाया था। पण्डितप्रवर फिर स्वाभाविक उद्धत-प्रकृतिके कारण इधर हो, महाराजकी माताके प्रति असत्कारसूचक वाक्य प्रयोग करनेमें साहसी हुए और रानीके भाई जवाहरसिंहके प्रति अवमानना और घृणा प्रकाश करनेमें भी वह कुण्ठित नहीं हुए। हठकारी सिपाही लोग रोषपर,यथा सर्दार लोग [illegible] भाई जवाहरसिंह द्वारा उत्तेजित हुए। पूर्वोक्त सर्दारोंके अन्यथा निधन-साधनसे, खालसाके सन्तान सन्ततिगण पहलेसे ही उत्तेजित हुए थे; इस समय महामहिम महाराजकी विधवा पत्नीने उन सभी लोगोंसे सानुनय निवेदन किया। तब

हीरासिंहकी शासन-प्रणालीके एकाएक टूट जानेसे, कुछ दिनो राज्यमें विशृङ्खला उपस्थित हुई। मालूम हुआ, कि राज्यमें मानो दायित्वज्ञानसम्पन्न कोई प्रधान पुरुष वर्त्तमान नहीं है। लेकिन अन्तमें धीरे धीरे मालूम हो गया, कि जवाहरसिंह और रानीके प्रियपात्र लालसिंह—दोनो ही शासन-कर्त्तृवर्गमें अत्यधिक क्षमताशाली हैं। * इसी समय पेशावरासिंह अङ्गरेजोंके पाससे भागे थे। जब वह शतद्रु पारकर भागे, तो वह अङ्गरेजोंके तत्त्वावधारणमें और आयत्ताधीनमें संस्थापन हुए, लेकिन उस मुहूर्त्तमें उन्होने सबसे श्रेष्ठ क्षमता पानेकी कोई चेष्टा नहीं की। जिन्हों ने हीरासिंहके प्रति उनके अन्यायका प्रतिशोध बहुत ही अमानुषिक भावसे लिया था, उन्होने उनका ही पक्ष अवलम्बन किया था। † प्रभुभक्ति

राटके लिये मेजर ब्रडफुटका पत्र। (Compare Major Broadfoot to Govt. 24th and 28th Dec. 1844.)

* सन् १८४४ ई०की २४वीं और २८वीं दिसम्बरको गवरमेराटके लिये मेजर ब्रडफुटने जो पत्र लिखा था; यहां उसे ही देखना चाहिये।

† सन् १८०५ ई०की ४थी जनवरी और सन् १८४४ ई०की २८वी दिसम्बरको गवरमेराटके लिये मेजर ब्रडफुटने जो पत्र भेजा था उसे ही देखना चाहिये। (Compare Major Broadfoot to Government 24th Dec. 1844, and 4th Jan. 1845) मेजर ब्रडफुट कहते है, कि पनजरी मल्लोनेमें क्षमता और प्रभुत्व पानेके लिये उत्साह तय्यार है।

राजा लालसिंह ।

गुलावसिंहका वश्यता स्वीकार ॥

गुलावसिंह अपने सैन्यदलकी आपेक्षिक निकृष्टताके सम्बन्ध सभी जानते थे। इस समय वह सब प्रकारके कौशलका अव लम्बन करने लगे। गुलावसिंहने सैन्यदलके "पञ्चायतके" लोगोंमे अकातर अर्थदान किया, व्यक्तिगत सम्मान देख, वह उन कमिटी-समूहके सदस्योंको सन्तुष्ट करने लगे और राजत्व और प्रभुत्व पानेकी आशा दिखा, फिर उन्होंने पेशावरासिंहको उत्तेजित किया। जितनी सैन्य उनके पास वश्यता स्वीकारकी उपयोगिता और स्वार्थकता प्रतिपन्न करने गई थी,—जिन्होंने उनको अधीनतापाशमें आवद्ध करने की चेष्टा की थी, वह उन सिपाहियोंको पारितोषिक प्रदानमें प्रतिश्रुत हुए। इन्होंने परिवारवर्गके सर्व्वसाधारणको अधिकृत सम्पत्तिका कुछ अंश देना स्वीकार किया और राजदण्डस्वरूप २५,०००,००) पैंतिस लाख रुपये देना मञ्जूर किया। * किन्तु जब अङ्गीकृत दान प्रत्याहृत होने चला, तो लाहोर और जम्बूके अनुचरवर्गमें वादानुवाद उपस्थित हुआ और परिणाममें वह साङ्घातिक संघर्षमें परिणत हुआ। अन्तमें फतहसिंह मान नामक एक दृढ सिखराज और ...चरा नामक और एक मनुष्य राहमें आक्रान्त हो मारे गये। †

---

* सन् १८४५ ई० की ११वी मार्चको गवरनमेण्टके लिये मेजर ...डफुटका पत्र। (Major Broadfoot to Government, ...h March, 1845.)

† सन् १८४५ ई० की ३री मार्चको गवरनमेण्टके लिये मेजर ...टका पत्र। (Major Broadfoot to Government, ...arch, 1845.)

हेकके हस्तय † और तारीख १०वीं जुलाईको अतारी-राज चित्तौरसिंहकी कन्याके साथ महाराजके विवाहोपलक्षमें दोनो ही आनन्दोत्सवके समय गुलावसिंह वहां उपस्थित थे। अन्तमें परवर्त्ती महीनेके आखीरमें बहुत कुछ अमताधीन हो वह चले गये। लेकिन उनको नम्रताके कारण सब सिपाहियोंने ही उन्हें आदरके साथ ग्रहण किया और सबके अन्तमें अंग्रेज-कर्म्मचारियोंने भी उनके प्रति विश्वास स्थापन किया। सबको मनमें विश्वास हुआ, कि पहाड़ी राजपूत सिपाही भी विग्रहमें सिख-सैन्यके समकक्ष नहीं हैं।

सन् १८४४ ई०के सितम्बर महीनेमें लूटनेके अपराधमें पकड़ा गया एक मनुष्यके हाथ सुलतानके हृदय शासनकर्त्ता राजके

---

† सन १८४५ ई०की २४वीं मईको गवर्नमेण्टके लिये मेजर ब्रडफुटका पत्र। (Major Broadfoot to Government, 24th May, 1845.)

मारे गये। तब भी पार्श्ववर्त्तियोंके अविचारके कारण इन पुरुषने बहुत कुछ स्वाधीनता भोगी थी।* दीवानकेपुत्र मूलराज अपने पिताके पदपर नियुक्त हो, या हीरासिंहको पतनोन्मुख गवरमेण्टके सम्मतिक्रमसे पितृपदके उत्तराधिकारीस्वरूप राजकार्य्यमें आशातीत नैपुण्य और दक्षता दिखाने लगे। इसी समय प्रादेशिक सिपाही लोग विद्रोही हो गये, कई एक सिख-सैन्यने भी उस विद्रोहमें योगदान किया था; बहुत ही वीरत्वके साथ उस विद्रोहको दमनकर मूलराज सबके प्रशंसाभाजन हुए। मृत दीवानके उत्तराधिकारीरूपमें उन्होंने आधा राज्य पाया। उनके कनिष्ठ भाईने अन्यायके साथ उस राज्यके स्वत्व-स्वामीत्वका दावा किया, मूलराजके स्वाभाविक नैपुण्यके साथ उन्हें भी विताड़ित किया। मूलराज अपने भाईको वेदखल स्थानीय सब विपदोंसे ही मुक्त हुए, लेकिन अतिरिक्त भू-सम्पत्ति कण्ट्राक्टके (चुक्ती या नियमपत्रके) लिये लाहोरकोर्टने जो दावा किया, उसको वह दृढ़रूपसे उपेक्षा करने लगे और उत्तराधिकारित्वके साधारण नियमके अनुसार देशके अतिरिक्त "नजराना" या साहाय्य देनेमें भी उन्होंने वैसी ही आपत्ति की। अतएव गुलाबसिंहके अधीनता स्वीकार करनेपर बहुत जल्द मुलतानके विरुद्ध सैन्य भेजनेका प्रस्ताव हुआ। "रेजिमेण्ट" और "ब्रिगेड" सैन्यदलको समवेत

---

* सन् १८४४ ई०की १०वी अक्टोबरको गवरमेण्टके लिये लफटण्ट करनल रिचमण्डका पत्र। (Lieut-Col. Richmond to Government 10th Oct. 1844.)

पञ्चायत-प्रमुख "खालसा"ने इस प्रस्तावका अनुमोदन किया। इस प्रस्तावको सुन नवप्रतिष्ठित शासनकर्त्ता अधीनता स्वीकार करनेपर बाध्य हुए। सन् १८४५ ई०के सितम्बर महीनेमें यह बन्दोबस्त हुआ, कि वह शासनकर्त्ता १८,००,००० अठारह लाख रुपये राज-दण्ड स्वरूप प्रदान करेंगे। पुरानी-पत्रमें लिखे हुए रुपयेके अतिरिक्त रुपये देनेके दावेसे उन्होंने छुटकारा पाया सही, लेकिन पहले दावाकृत विषयके कई वर्षोंमें परिशोध करने का वह बहुत कुछ छोटे छोटे जनपदसे वञ्चित हुए। *

इस समय पेशावरासिंहके कार्य्यकलापसे नये वजीर बहुत ही उद्विग्न हुए। मुलतानके शासन कर्त्ताने उन्हें जो आशा दी थी या गुलाबका उद्देश उतना बड़ा नहीं था। पेशावरासिंहके इन कार्य्यकलापसे उनके उद्वेगकी अवधि नहीं रही। युवराज आत्माभिमानी, गर्व्वित, इन्द्रिय-परवश और भोग [illegible]

---

* इस अंशकी घटनावलीकी वर्णनामें, [illegible] ग्रहाम, अपने संक्षिप्तसारपर ही निर्भर किया [illegible]। सन् १८४४ ई०के नवम्बर महीनेमें मुलतानमें सिपाही-विद्रोह हुआ। [illegible] दिल्लीके सिपाहियोंको परिवर्तन किया; [illegible] करनेसे इनकार करनेपर [illegible] गई। [illegible] सन् १८४५ [illegible] आ, पर [illegible] लाहौर-दरबारमें उनके [illegible] हुई।

लेकिन रणजित्सिंहके घनिष्ठ आत्मीय होनेके कारण सिखजाति उनके प्रति अनुरक्त थी। इस समय गुलाबसिंह अपने शैल-निवासमें निरापद रह युवराजको उत्साहित करने लगे। जब जवाहरसिंहने महाराजको ले ब्टिश राज्यमें भागनेका भय दिखाया, तो जिन दो सैन्यदलने जवाहरसिंहको कैद किया था, इस समय उसी सैन्यदलके साहाय्य पानेके विषयमें उन्हें निश्च-यता दी। जवाहरसिंहने इस विषयपर आक्षेप नहीं किया। पेशावरासिंहको बाधा देनेके सम्बन्धमें, उनके मनमें यह नहीं उदय हुआ, कि सिपाहियोंके विचारकी क्षमता राज्यके लिये कहांतक हितकर है। अपना अपमान ही उनकी चिन्ताका प्रधान कारण हुआ। प्रभुत्वके पदपर प्रतिष्ठित होनेके कुछ दिनों बाद ही उन्होंने बहुत निर्दय और नृशंसयकी तरह नाक और कान छेद अपराधी सिपाहियोंके सेनापतिको शास्ति दी। पेशावरासिंहने सोचा, कि उन्हें उत्साह दिया गया। वह अपनी योध भूमि सियालकोटमें सैन्य-संग्रह करने लगे। लेकिन इतना जल्द उनके अधिकारका हक स्वीकार करनेमें सिखजाति किसी तरह सम्मत नहीं थी। वह बड़ी विपद्में पड़े और जून महीनेमें भागकर स्वाधीनभावसे घूमने लगे। लेकिन जुलाई महीनेके अन्तमें अटकके दुर्गपर आक्रमणकर वह महाराजके पदपर प्रतिष्ठित हुए। बाद उन्होंने दोस्तमुहम्मदखांको चिट्ठी लिखना आरम्भ किया। इन जाली राजाके विरुद्ध 'अकाली' सम्प्रदायके सर्दारसिंह भेजे गये और उनको मश्रा-यताके लिये डेरा-इस्माईलखां एकदल सैन्यने यात्रा की। राजा अपने दुर्गमें आबद्ध हो अपनी अवहेलना समझ रहे। इन्हीं

सिख लोग असन्तुष्ट हुए थे और "खालसा" सम्प्रदायके सदस्यको हिसावसे उनके सरल विश्वासपर भी सिखजातिका अविश्वास उत्पन्न हुआ था। हीरा सिंह और पण्डित ज्वालाके निर्वासनसे उनकी प्रतिहिंसा वृत्ति चरितार्थ हुई सही; लेकिन वह जल्द समझ गये, कि वह केवलमात्र सिपाहियोंके हाथके क्रीड़ा-पुत्तलीविशेष थे,—लोगोंका उद्देश्यसाधन करनेके लिये ही सिपाही लोग उनके साथ मिले हैं। इस समय "पन्थ खालसाजी" अर्थात् सच्चे धर्म्म-समाजके नामसे सिपाहियोंने प्रधानतः अपना ही परिचय देना आरम्भ किया। * अधिकन्तु समस्त सैनिक पुरुषगण जिस शक्तिसे अनुप्राणित हुए थे, उससे जवाहरसिंहके मनमें बहुत ही भय उत्पन्न हुआ। जम्बूके विरुद्ध सिद्धि पानेमें भी वह अपना परिणाम सोचकर भय-विह्वल हुए और उन्होंने दो वार शतद्रुके दक्षिण भागनेकी चेष्टा की लेकिन उनके नज़रबन्दके राजाके इस असद् उपायके अवलम्बनसे सब सिपाही बहुत ही क्रोधित हुए। तब उन्हें जान पड़ा, कि वह नजरबन्द अवस्थामें हैं, सुतरां भागकर निकलनेमें

---

* या "शरवते खालसा"—सुक्त मनुष्योंका समाज। मेजर ब्रडफुटने, (सन् १८४५ ई०की २री फरवरीका पत्र,—letter of nd Feb. 1845.) सोचा, कि सिपाहियोंको यह उपाधि उनकी चिट्ठियोंमें नई है। उन लोगोंने इस उपाधिको अन्यायपूर्वक ग्रहण किया। लेकिन इसके बादमें गवर्नमेण्टने उनसे प्रकट किया कि दफ्तरके पुराने कागज पत्रोंके अनुसार यह पुराना शब्द है।

योंकी एक सभा हुई। उन सबने ही एकवाक्यसे स्थिर किया, कि साधारण तन्त्रके विरोधी और विश्वासघातक जवाहरसिंहको प्राणदण्ड होगा, कारण, किसी अपराधी मन्त्रीके अपसारित होनेके लिये, कलहप्रिय, विशृङ्खल और अर्द्ध-असभ्य गवरमेण्टके लिये प्राणदण्डकी आज्ञा ही एकमात्र उपाय है। सुतरां २१वीं सितम्बरको जवाहरसिंहने "खा-सा" सभामें अपनी दुष्क्रिया-अभियोगका खण्डन करनेके लिये हाजिर होनेकी आज्ञा पाई। वह हाथीकी पीठपर चढ़ वहां गये लेकिन परिणामकी चिन्तासे भीत हो वह शिशु महाराजको और कुछ स्वर्ण और मणि माणिक्य साथ ले चले। सिपाहियोंके पुरोभागमें पहुंचते ही हाथीपर रखे उपहार और विपुल अर्थराशिके प्रदान करनेकी प्रतिज्ञा कर कुछ क्षमताशाली डिपटी और कर्मचारियोंको उन्होंने स्वदलभुक्त करनेकी चेष्टा की। लेकिन उनके प्रति लोगोंका कठोर अभिप्राय प्रकट किया गया, कि महाराज उनके पास रहने न पावेंगे और उनकी कोई बातें सुनी न जायेंगी। महाराज कुछ ही दूरकी एक छवनीमें रखे गये और एकदल सैन्यने आगे बढ़ बन्दूककी गोलीके एक ही आघातसे वजीरको मार डाला। * ठीक उसी समय मन्त्रीके खुशामदकारी और मनुष्य भी मारे गये सही, लेकिन किसी तरहकी लूट या हत्या-

---

* Compare Major Broadfoot to Government 26th Sept 1845, यहां कहा जा सकता है कि सिखजातिका साधारण विश्वास था, कि जवाहरसिंह अङ्गरेजोंको बुलानेके लिये प्रस्तुत थे और 'खालसा'के प्रति भी उनका सन्देह था।

दीवान दीनानाथ।

फकीर नूरुद्दीन ।

कि वह राज्यको अधीन रखनेमें सक्षम हैं। अधिकन्तु उन्होंने खजानची दीनानाथ, वेतनदाता भगवत्राय और नूरुद्दीन नामक दूसरे एक पुरुषकी प्रतिभा और साधुतापर यथेष्ट विश्वास स्थापन किया। आखिरी पुरुष अपने वृद्ध और स्थविर भाई अजीजुद्दीनकी तरह अङ्गरेजोंके साथ सन्धि और युद्धादिके विशेष विवरणसे अवगत थे। सिपाहियोंने पहले ही कहा था, कि इन तीन मनुष्योंके साथ जवाहरसिंहका परामर्श होना चाहिये। लेकिन दायित्व-ज्ञान-सम्पन्न कर्म्मचारी अपने सुयोगकी सभी सुविधायें समझ सके थे। इस समय धीरे धीरे सिपाहियोंके यूरोपीयोंसे युद्ध करनेके लिये उत्तेजित होनेपर राजा लालसिंह वजीरके पदपर प्रतिष्ठित हुए। सर्दार तेजसिंह सेनापतिके पदपर फिर निर्व्वाचित हुए। सन् १८४५ ई०के नवम्बर महीनेसे पहले यह सब कर्म्मचारी अपने अपने पदपर नियुक्त हुए। *]

---

* इस अंशमें ग्रन्थकारने घटनावलीकी वर्णनामें अपने संक्षिप्त नोटोंका ही प्रधानतः अवलम्बन किया है।

नवम परिच्छेद।

अङ्गरेजोंके साथ युद्ध।

सन् १८३५—१८४८ ई०।

सिख और अङ्गरेजोंके युद्धका कारण,—सीमान्त प्रदेशमें अशान्तिकी सम्भावनासे अङ्गरेजोंका आतङ्क,—सन १८०८ ई० के सन्धिनियम नियमके विरुद्धाचरणमें बाधा देनेका उद्योग,—सिखोंके सन्देहका क्रमविकास;—अङ्गरेजोंके आक्रमणकी विपदाशङ्का;—अङ्गरेज प्रतिनिधियोंके प्रति अविश्वासवश सिखोंकी उत्तेजनाका बढ़ना;—अङ्गरेजोंकी शक्तिसामर्थ्यके निर्णयके लिये सिखोंकी दृढ़प्रतिज्ञा;—सिखोंका रणनैपुण्य,—सिखसेनापतिगणका उद्योग;—स्वेच्छापूर्व्वक फीरोजपुरका परित्याग;—मुदकीका युद्ध;—फीरुशाहका युद्ध और सिखोंका भागना;—अङ्गरेज और भारतवासियोंके सम्बन्धमें इन सब निष्फल विजयोंके पानेका परिणाम;—सिखोंका फिर शतद्रु पार करना;—बद्दोवालका खण्ड युद्ध;—अलीवालका युद्ध।—सन्धिप्रस्तावमें राजा गुलाबसिंहकी मध्यस्थता;—सुबरांवका युद्ध;—सिख-सर्द्दारोंकी अधीनता स्वीकार और अङ्गरेजों द्वारा लाहोरपर अधिकार,—पञ्जाब परिच्छेद—दलीपसिंहके साथ अङ्गरेजोंकी सन्धि,—गुलाबसिंहके साथ अङ्गरेजोंकी सन्धि,—उपसंहार, भारतमें अङ्गरेजोंका पद-सामर्थ्य।)

अङ्गरेज-गवर्नमेण्ट बहुत दिनों पहलेसे ही सिख किये थे

कि बाध्य हो पञ्जाबको आत्माभिमानी सिख-सैन्यसे युद्धमें प्रवृत्त होना पड़ेगा। भारतीय जनसाधारणने केवलमात्र विदेशियोंकी उन्नतिके विषयमें अनुधावन किया था। यह लोग एक दूसरे राज्यके अङ्गरेज-राज्यके साथ संयोजनका समाचार सुननेको उत्सुक थे। लेकिन इस विषयमें पूरा अनुसन्धानकर उन लोगोंने अपनी अपनी कौतूहल-वृत्तिके चरितार्थ करनेका यत्न नहीं किया, कि किस कारणसे राज्यसंयोजित हुआ। घोर स्वार्थपर सिखनायकगण सदा ही सोचते थे, कि जिससे वह लोग सुख-स्वच्छन्द और निर्व्विवादसे अपने राज्यमें भोगदखल करनेमें समर्थ हों, उनके देशकी कार्य्य-प्रणालीमें ऐसे ही प्रतिकूलताचरणकी जरूरत है। यह सब ऐश्वर्य्यशाली फिर भी हीनबल राजगणने, रणजित् सिंहकी श्रेष्ठतम प्रतिभाके सामने और जिस निगूढ़ शक्तिसे अस्त्रशस्त्रसे सज्जित सिख-जातिको अनुप्राणित किया था, उस अव्यक्त शक्तिके सामने विशेषरूपसे निन्दनीय और तिरस्कृत होते थे। इस तरह उन लोगोंने निर्व्वोधकी तरह आशा की थी, कि किसी तरहका परि-वर्त्तन साधित होनेसे ही उन लोगोंके सब अभीष्ट सिद्ध होंगे। लेकिन यह बात सन्देहजनक है, कि सिखसैन्यके हिन्दुस्थानमें सबसे श्रेष्ठ प्रबलपराक्रान्त शक्तिके साथ युद्धमें प्रवृत्त होनेके विषयमें वृथा गर्व्व करनेसे भी, प्रथम युद्धके पहले दो तीन महीनेमें सिखोंके आन्तरिक भावसे युद्धमें प्रवृत्त होनेके उत्सुक हुई थी या नहीं, उस समय भी चलन्य देवपाओंने सोचा था कि एकमात्र आत्मरक्षाके लिये ही यह लोग युद्धमें आनेके लिये तय्यार हो रहे हैं।

जिस समय राज्यमें सिख-सैन्य ही अधिकतर प्रबल हो उठी, उस समयसे ही अङ्गरेज-कर्त्तृपक्षीयगण जान गये, कि शासनदण्ड खण्ड खण्ड विच्छिन्न होगा ;—सब जगह ही लूटने वालोंका दल दिखाई देगा और साधारणतः समानके प्रति सुसभ्य जातिकी इतिकर्त्तव्यता और अपने अपने अधीनस्थ प्रजावर्गके प्रति शासनकारी राजशक्तिके कर्त्तव्य-कार्य्यमें बड़ी संघर्ष पैदा करनेके लिये समवेत होंगे। इस तरह सीमान्तके जिलोंको सुरक्षित और दृढ़ करनेके उद्देश्यसे और पूर्व-आक्रमणमें बाधा देनेकी उपयोगी सैन्य हमेशा सुसज्जित रखनेके लिये, यथानियम सब उपाय ही किये गये। जितनी सैन्य अन्ततः समरूपसे प्रतिफल दे सकती थी, या अङ्गरेजोंके नामके प्राधान्यका प्रमाण दे सकती थी, उतनी उपयोगी सैन्य भी संग्रहीत हुई।* यही ब्रिटिश गवरमेण्टका स्पष्ट और नियमित उद्देश्य था। लेकिन सिखोंने दोनों राज्यकी आपेक्षिक अवस्थामें स्वतन्त्र मत ग्रहण किया ; वह लोग सन्निहित ब्रिटिश शक्तिसम्पन्न प्रतिद्वन्द्वियोंको अथवा उच्चाकाङ्क्षासे डरे, यह वह लोग समझ नहीं सके, कि जब आभ्यन्तरीण गृह-विवादमें उनको आन्तरिक निकृष्टताका और भी नीच परिचय पाया गया है, तो दूसरे क्यों उनके डरसे डरेंगे। उनके लिये बाधा देनेके उपायका

* Compare Minute by the Governor-General, of the 16th June, 1845, and the Governor-General to the Secret Committee, 1st October, 1845, (Parliamentary paper, 1846.)

अवलम्बन, पहले आक्रमणके आयोजनके नामसे उपलब्धि हुई। तब सिख लोग इस सिद्धान्तपर आये, कि बहुत जलद उनका देश आक्रान्त होगा। दुर्ब्बल और स्वल्पबुद्धि शक्तिपुञ्जका ऐसा दृढ़ विश्वास भी अयौक्तिक जान नहीं पड़ता;—कारण, याद रखना चाहिये, कि सभ्यतामें भारतवर्ष यूरोपकी बराबरीका नहीं है, बल्कि भारतवर्षने उस समय भी पाश्चात्य सभ्यताकी उज्ज्वल आलोक रश्मिको पाया नहीं था,—भारतवर्ष उस समय भी असभ्यताके घोर अन्धकारमें निमग्न था। मध्य-युगमें खृष्टीय राज्यमें राजनीतिक सभ्यता, धर्म्म और कर्त्तव्यज्ञान शायद जैसा समादृत और हृदयङ्गम होता था; वैसा वर्त्तमान समयमें पूर्व्वखण्डमें भी उसका आदर नहीं था। अधिकन्तु काबुलसे आसाम वेली और सिंहल द्वीपतक विस्तृत समग्र हिन्दुस्थान एक राज्यके नामसे अभिहित होता और इस विशाल भूखण्डके अन्तर्गत किसी राज्यकी बात करनेसे ही लोगोंके मनमें एक ही राजा और एक ही वंशके प्राधान्यका स्वतः ही उदय होता। भारतके विक्रमाजित् और चन्द्रगुप्त, तुर्क और मुगल प्रभृति भिन्न भिन्न राजगण और वंशपरम्पराके प्राधान्य और राजत्वकी बातोंसे सब लोग विशेष परिचित थे। इस समय अङ्गरेजों द्वारा फिर राज्यके विजयकी या अधिकारकी बात सुन हिन्दू, मुसलमान सबने ही समझा, कि अङ्गरेज जातिका भाग्य-बल बहुत ही महत् और उनके अस्त्रशस्त्रादि दुर्निवार और अनिवार्य हैं। कोई कोई राजा शायद दुःख प्रकाश करते और कहते थे, कि उनका राज्य छीना जाता और वह क्रमसे राज्यसे गिरे जाते हैं, लेकिन जनसाधारण कभी ब्रिटिशइन्द्रको अन्यायसे

अधिकार करनेके दोषमें अभियुक्त न करेंगे; वा अन्ततः धर्मविरुद्ध और नीतिविरुद्ध दुराकाङ्क्षाके नामसे भी अ ङ्गरेजोंके प्रति दोषारोप न करेंगे।

भारतीय दूसरी जातिकी तरह सिखोंके इस साध विश्वासपर एकमात्र पञ्जावके प्रति ब्रटिश-गवरमेण्टके वि व्यवहारका सम्बन्ध संयोजित होनेकी जरूरत थी, कि पहले तरह वर्तमान समय भी अङ्गरेज लोग हमेशा अपनी क्षम फैलानेके स्वतः अभिलाषी हैं। सन् १८०६ ई०में अ पूर्व-खण्डमें फ्रान्सीसी आक्रमणका आतङ्क प्रशमित हुआ था, और यमुना नदीको ही जब राज्यकी सीमा निर्दिष्ट करनेकी प्रतिज्ञा अनुमोदित हुई नहीं थी, तब अङ्गरेज-राजप्रतिनिधि गवरनर-जनरलने कहा था, कि रणजित् सिंहको असन्तुष्ट और उत्तेजित करनेकी अपेक्षा, लुधियानेकी ओर जो कई सैन्य-दल भेजा गया है, उसे कर्नालकी ओर लौटा लाना ही बेहतर है। और इस उद्देश्यसे उन्होंने एक आदेशाज्ञाका भी प्रचार किया था। * वस्तुतः इस प्रस्तावके अनुसार काम करना युक्तियुक्त जान नहीं पड़ा; लेकिन गोर्खा-युद्धके अन्तमें पहाड़ी पुलिस प्रहरीके लिये सबाथू नामक स्थानमें जो प्रादेशिक सैन्य संग्रहीत हुई थी वह, सन् १८३८ ई०के अफगानयुद्धके समय सिख-सीमान्तमें लुधियानेका सैन्यसमूह ही अङ्गरेजोंके एक-मात्र सशस्त्र सैन्यदलमें गिना गया था। शतद्रु-तीरस्थित

---

* Government to Sir David Ochterlony, 30th January, 1809.

अग्रगामी सैन्यके, निर्दिष्ट स्थानसे किसी तरहको सामरिक या राजनीतिक उद्देश्य साधित हुआ नहीं था; लेकिन यह सिक्खोंके साथ मित्रताके स्पष्ट प्रतिरूपकके नामसे सूचित होती थी। जिससे स्वल्पमात्र घनिष्ठता और मित्रता निश्चित प्रमाणित होती थी, कि क्षमताकी निकृष्टताके कारण वह लोग हमेशा पहलेके अङ्गीकार आश्रयस्वरूपका अवलम्बन करनेके अभिलाषी थे। लाहोरके सिवा और सब सिक्खराज्यके स्वत्वा-वेक्षणके कारण प्राणके नाससे और राजाके निःसन्तान परलोक जानेसे, उत्तराधिकारीके अभावसे, सन् १८३५ ई०में लुधियानेसे ७० मील दक्षिण शतद्रु-किनारेके छोटे फीरोजपुरपर अङ्गरेजोंने अधिकार किया। समर विभागके विचारसे देखनेपर इस स्थानकी सब सुविधा की बात बहुत ही अभिनिवेशके साथ प्रशंसित और आलोचित होती थी और पञ्जाबकी राजधानीके सान्निध्यके कारण रणजित् सिंहने भविष्यत्‌में भयका कारण जान, इस स्थानपर अपने अधीन राज्यके नामसे दावा किया था। *
सन् १८३८ ई०में महाराजके इस भयको अङ्गरेज लोग अच्छी तरह समझ सके थे, कि यह नगण्य शहर भविष्यत्‌में सेनानिवासमें गिना जायेगा। इसी समय खुरासान जानेके लिये फीरोजपुरमें बारह हजार फौज समवेत हुई थी। फौजके आगे बढ़नेके निर्दिष्ट दिनके पहले ही मालूम हुआ था, कि फारिस-सैन्यने हिरातका अवरोध छोड़ दिया है। तब स्थिर हुआ था, कि कल्पित आक्रमणमें विजय पानेपर, फकत वहां सेना रखा-

* See Chap. vi and also note in the book.

सैन्यकी जरूरत नहीं पड़ेगी, तबतक वहां एकदल छोटो सैन्य रहेगो। * लेकिन अफगानिस्थान और सिन्धुदेशमें परवर्त्ती युद्धके समय इस नव-प्रतिष्ठित सेनानिवासने स्थायीभाव धारण किया। बाद सन् १८४२ ई०में शतद्रु किनारेके दो सेनानिवासको साहाय्य न देनेपर अम्बालेमें स्थायीरूपसे वृहत् एकदल सैन्य भेजा गया और वहांसे सिख-सीमान्तके अधिकतर निकटवर्त्ती स्थानमें पहाड़ी प्रदेशमें अङ्गरेजी सैन्यदलके रहनेका यही एक अन्यीभूत कारण गिना गया। † इसपर भी सिख लोग

---

* उस समय ऐसा ही बन्दोबस्त हुआ था। लेकिन जान पड़ता है, कि इस सम्बन्धमें किसी तरहकी दलील लिखी पढ़ी नहीं गई थी। लेकिन सबको ही आशा थी, कि शाह शुजा सिंहासनपर प्रतिष्ठित होंगे और एक सालमें अङ्गरेजी सैन्य प्रत्याहृत होगी।

† इन सब कारणोंका प्रमाणस्वरूप ग्रन्थकार किसी लिखे हुए पत्रका उल्लेख कर नहीं सके हैं। लेकिन वह कहते हैं, कि यह सब प्रयुक्त हुआ था। आगे बढ़नेका उपाय स्थिर हुआ, लेकिन यह दुःखका विषय है, कि सरहिन्दमें कोई सेनानिवास स्थापित हुआ नहीं था। शतद्रुके प्रधान प्रधान पथका केन्द्रस्थलस्वरूप पञ्जाबके सम्पर्कमें इस स्थानमें एक सेना-निवास स्थापन करनेकी सुविधा और उपयोगिता बहुत दिनो पहलेसे ही सर डेविड अक्टरलोनीने प्रमाणित की थी। (Sir David Ochterlony to Government, 3rd May, 1810.) लेकिन पटियालेके सिखोंके प्रति कुछ अनमनस्यिताका

सन् १८०८ ई०की सन्धिबन्धनकी बात या शर्त्तका पालन करते थे ; लेकिन भारतवर्षमें अङ्गरेजोंकी परिवर्त्तनशील अवस्थाके अनुस-ङ्गिक,नानाविध विचार-आलोचनामें अङ्गरेजोंने उनका ग्राह्य भी नहीं किया।

जिससे शहरके लोगोंके मनमें विश्वास स्थापित हो, लूटनेवाले विभिन्न सम्प्रदायके विरुद्ध वहांके सिपाही हो जिससे उनको बाधा देनेमें कृतकार्य्य हो सकें, उस समयमें निश्चियता देनेके लिये लुधियाने और फीरोजपुरमें उस समयके उपयुक्त अतिरिक्त सैन्य स्थापित हुई। यह कभी सिख-राज-कर्त्ता पक्षीयगणसे छिपाया नहीं गया, कि देशकी चिरप्रचलित गवरमेण्टकी असहाय अवस्था ही इसका एकमात्र कारण है। * सिखजातिने यह कभी अस्वीकार किया नहीं था, कि राज्यके निरापदके कारण अङ्गरेज यथेच्छ सैन्यका वन्दोवस्त और उसके लिये व्यवस्था कर सकते हैं और इस विषयमें वह लोग सावधान हैं ; लेकिन जिन्होंने अपनी दुर्व्वलताकी उपलब्धि की थी, लाहोरसे किसी विपत्पातकी सम्भावनासे उन लोगोंने कभी उसे स्वीकार

व्यवहार किया गया, उस समय सरहिन्द उन लोगोंके ही अधिकारमें था। लेकिन किसी तरह उधर लहरी फिर भी अकस्मात् समयोपयोगी उपाय गृहीत होता।

* Compare the Governor-Generel to the Secret Committee 2nd December, 1845 (Parl. papers, 1846) and also his Dispatch of the 31st December 1845 parl, papers p, 28.)

किया नहीं था। इसतरह युक्ति-तर्कको हरेक प्रणालीसे और नीतिसे सिख इस सिद्धान्तमें उपनीत हुए, कि अङ्गरेज लोग उन्हें भय दिखाते हैं। दूसरे और भी अनेक विषयोंके अङ्गरेजों द्वारा उपेक्षित या अविवेचित होनेपर, सिखोंका यह विश्वास और भी मजबूत हुआ। असलमें रणजित सिंहके पोतेकी मृत्युके साथ ही साथ जब रणजित सिंहका वंश-लोप किया गया था, तो शाह शुजाको पेशावर प्रत्यर्पणकर सर वि-लियम मेकनाटनने सिख-राज्यको छिन्न-विछिन्न करनेका जो प्रस्ताव किया था, सिखोंको उस बारेमें कोई खबर ही नहीं गई; लेकिन जब सरकारी पत्रादिमें और गुप्त-सलाह-सभामें इस विषयपर अनेक तर्क-वितर्क और विचार-मीमांसायें हुईं तो ऐसा समझना भी वृथा था, कि लाहोर गवरमेण्ट इस मतलबसे बिलकुल ही अनभिज्ञ थी। या वहां ही शान्ति सुश्रृंखलको प्रदान करनेके लिये सर अलेकजान्दर बारनसने पहले सरकार उसकी इच्छा प्रकाश की थी, सिख-गवरमेण्ट उससे भी अनजान थी। सन् १८४३ ई०में सिख राजधानीमें जा वहांकी सैन्यको विताड़ित करनेके लिये उन्होंने जो सैन्य भेजनेका प्रस्ताव किया था, अन्ततः वह भाव्यमान स्मृति अवश्य ही सिख-सर-चीफ़्सके दिलमें जाग रही थी। * फिर, सन् १८४४ ई० और सन् १८४५ ई०में इन समाचारोंके चारों ओर फैलनेपर सबके मनमें यह धारणा बद्धमूल हुई कि इसबार, अंग्रेजोंने पु

* Compare the Governor-General to the Secret Committee, December 2nd 1845.

बांधनेके लिये अङ्गरेज लोग नौका या जलयान तय्यार कर रहे हैं और मुलतानपर आक्रमण करनेके लिये बहु लोग भिन्न देशीय सिपाहियोंको सुसज्जित कर रहे हैं। * उत्तर-पश्चिम प्रदेशके भिन्न भिन्न असंख्य सैन्यदलके साथ अतिरिक्त सैन्यके योग दान करनेसे क्रमशः उनके दलकी पुष्टि होती है और उसी सैन्यके लिये यथेष्टरूपसे युद्धकी सामग्री संग्रह होती है। † इस

---

* मुलतानकी ओर युद्धयात्राके लिये पांच हजार सैन्यको सुसज्जित करनेके उद्देश्यसे प्रकृतमें जिन सब आवश्यकीय द्रव्योंके संग्रहका आयोजन हुआ था, सन् १८४४—४५ ई०में साधारण सरकारी पत्रादमें वही आलोच्य विषय है। दृष्टान्त-स्वरूप,—कलकत्तेका मिलटरी बोर्ड और उनके अधीन विभिन्न विभागीय कार्म्मचारियोंने जो पत्रादि लिखे गये, उन्हें ही देखना चाहिये।

† लार्ड एलेनबरा और लार्ड हार्डिञ्जने युद्धके आयोजनके सम्बन्धमें जो विस्तृत विवरण तय्यार किया था, कलकत्तेके रिविउ नामक समाचारपत्रमें प्रेषोक्त इन महदंशके पुस्तकके प्रारम्भके समय का प्रथम देखना चाहिये लोगोंका विश्वास और धारणा है, कि लफटराट कनिंघ सरेंसने यह प्रबन्ध लिखा था।

सन् १८३८ ई०तक सीमान्तकी इस सैन्यका परिमाण निम्न-लिखित हिसाबसे निर्दिष्ट हुआ है,—साधारणमें दस रेजिमेंट और दो रेजिमेंट थी। उनके अधीन छः तोपें थीं, इस लोग एलोइँगा कुल २५०० सैन्यके बराबर है। इसके अतिरिक्त पुष्टिलानेवाले सैन्यको दजा और पौराणिकके स भैन्यका संग्रह

उससे भी उसका सन्देह बहुत कुछ बढ़ा था। सन १८४३ ई० के जून महीनेमें सिन्धर क्लार्क आगरेके लफ्टनाण्ट गवरनरके पदपर प्रतिष्ठित हुए, सिखोंके कार्य कलापके बारेमें लफ्टनाण्ट कर्नेल रिचमण्डने सिन्धर क्लार्कके स्थानपर अधिकार किया। अन्तमें पूर्वोक्त कर्मचारीके कार्यान्तर ग्रहणपर, दूसरे वर्षके नवम्बर महीनेमें मेजर ब्रडफुटने उनका पद ग्रहण किया। मेजर ब्रडफुटके अध्यवसाय और साहसके सम्बन्धमें सबको ही उस समय पूर्ण विश्वास था। किन्तु राजनीतिक और आन्तरिक कामोंसे ब्रिटिश गवरमेण्टका मनोभाव प्रकट करनेके लिये भारतवर्षकी प्रचलित प्रथाके अनुसार केवल एकमात्र उपायसे ही वह निरूपित होता था, ब्रिटिश गवरमेण्टके क्षमताप्राप्त कर्मचारियोंकी मध्यवर्तितामें भारतीय राजोंके साथ गवरमेण्टका कार्य निर्वाहित होता था। उन कर्मचारियोंका व्यक्तिगत चरित्र उनकी कार्य्यप्रणालीसे प्रतिबिम्बित होता था,—वह जो कहते थे, या जो काम करते थे, सब विषयमें ही उनकी व्यक्तिगत चरित्र-प्रकृति प्रतिफलित होती थी। इसलिये इन कर्मचारियोंके कार्यकाल परसे ही गवरमेण्टका गूढ़ उद्देश्य प्रकट होता था। सुतरां इन कर्मचारियोंके कार्य्य व्यापारसे मित्र-सम्प्रदायगण

आगे बढ़े, तब उन्होंने इसी मतके वशवर्त्ती हो काम लिया था। कानन्दपुर सख्वाल एक रोषभूमि है, दाईं वर्ष पहले इस स्थानका दावा परित्याग करना ही श्रेयस्कर जान पड़ा था। विशेषत: जब रणजित् सिंह ही विशेष अधिकार-प्राप्त भूस्वामियोंके साथ यथोपयुक्त कार्य्य निर्व्वाह करनेमें सक्षम थे, तब सब प्रकारका दावा परित्याग करना ही अङ्गरेजोंके लिये श्रेय: था। * अधिकन्तु लाहौरके अधिकृत नटकूपुरकी ओर आगेके लिये एक दल बुड़चढ़ी फौज फतेहपुरके पास ही स्वतन्त्र पाकर गई। उसके उद्देश्यसे हमेशा वहां जो सैन्यदल रखा जाता था, उनमें अश्वारोही प्रहरी सिपाहियोंका साहाय्य करना और उनका बल बढ़ाना ही उनका उद्देश्य था। लेकिन सन् १८०६ ई०की सन्धिके नियमके सबसे दोनों गवरमेण्टमें जो बन्दोबस्त हुआ, उसके अनुसार बिना ब्रिटिश एजण्टकी अनुमतिकी अपेक्षा किये ही सैन्यदलने शतद्रुपार किया। लेकिन यह मुट्ठीभर सैन्य जिस उद्देश्यसे वहां

गोर्खाओंपर आक्रमण करनेमें समर्थ होंगे। (Government, to Sir David Ochterlony, 4th October, and 22nd November 1811.)

जाती थी, उस विचारसे वह परिवर्तित नियम सैन्यदलके लिये प्रयुक्त हो नहीं सकता। जो हो, तब भी मेजर ब्रडफुटने सैन्य-दलको लौट जानेकी आज्ञा दी। लेकिन आज्ञा पालनमें उन लोगोंको दीर्घसूत्री और उदासीन समझ, वह खुद ही प्रहरी सैन्यके साथ उनके पीछे दौड़े। जिस समय यह लोग जलमें उतर नदी पार कर रहे थे। उसी समय पकड़े गये। अङ्गरेज पदातियाँ गोली बरसाने लगे; लेकिन सिख सेनापतिने उनके साथ किसी तरहका विवाद-विसम्वाद नहीं किया। इस भयसे ही वह अङ्गरेजोंके साथ युद्धमें विरत रहे, कि ऐसे किसी काम द्वारा पीछे लाहोर-गवरमेण्ट विपद्ग्रस्त न हो। * अधिकन्तु पुल बनानेके लिये बम्बई प्रदेशमें जो नव नौकायें तय्यार हो रही थीं, सन् १८४५ ई०के प्रारम्भकालमें वह नौकायें फीरोजपुर भेजी गईं। मेजर ब्रडफुटने एकदल सुप्रस्त और सुसज्जित प्रहरी सैन्यको उनके रक्षार्थ अनुगमन करनेका आदेश दिया, जिसमें नावें निर्दिष्ट स्थानमें निरापद पहुँचाई जा सकें और फीरोजपुरमें न बोंधे जा जानेपर, वह नाविकदलको पुल बनानेमें नियुक्त हो। उस समय इन सब कार्यकलापोंसे विपदकी सम्भावना प्रकाशित होनेपर, उन्होंने एक तरहसे स्वीकार किया, कि सिखोंके साथ प्रतियोगिता आरम्भ हुई है। †

---

* Compare Major Broadfoot to Government, 27th March, 1845, सुनते हैं, कि गवरमेण्टने इन सब कार्यकलापका अनुमोदन नहीं किया।

† पञ्जाबके उस समयकी अवस्थाके अनुसार प्रत्येक नावके

शतद्रुके पूर्व्व ओरके जनपद समूहके सम्बन्धमें और विशेष विशेष स्थानोंमें जितने उपाय अनुष्ठित होते थे, उनमें मेजर ब्रडफुटने जो मत अवलम्बन किया था और पीछे प्रधान गवर-मेण्टने जिसे ग्रहण किया था, उस मतका अधिकतर समर्थन किया जा सकता है। वस्तुतः काल्पनिक और झूठे कारणोंके अनुसार या सर डेविड अक्टरलोनीकी अनिश्चित घोषणा द्वारा, या रणजित् सिंहके प्रभेदयुक्त निर्व्वन्धातिशयके फलसे यह कार्य्य-प्रणाली अवलम्बित हुई थी। और भी विश्वास हुआ कि विरोधीय रन्ध्यांश यदि परित्याग करना हो अभिप्रेत हो तो बिना अस्त्र धारण किये ही यह स्थान परित्याग करनेपर बाध्य किया जा सकता है। लेकिन मेजर ब्रडफुटके प्रति काममें अङ्गरेज-गवर-मेण्टकी पूर्व्वकल्पित स्थिरप्रतिज्ञताका परिचय पाया जाने लगा और हितैषिताकी अपेक्षा शत्रुताका भाव ही अनुभूत हुआ। *

डेडेके साथ एक एक यूरोपीय कर्म्मचारीके अधीन सैन्यदल भेजनेकी जरूरत हुई। जो हो, उस समय छोटी छोटी लोह-निर्म्मित नाव लिये प्रहरी सैन्यकी सहायसे ही इमनद, नदीसे पार जा सकते थे। एक वर्ष [illegible] पड़ा। सुर-क्षित ह बहुत दिनोंसे यहां रहता था, सिक्खोंने उसके प्रति सौजन्य दिखानेके सिवा दुर्व्यवहार नहीं किया।

* साधारणतः भारतके अङ्गरेज लोग समझते हैं,—मेजर ब्रडफुटके नियोगसे ही सिक्खोंके साथ युद्धकी सम्भावना खड़ी हुई थी। उनका ही यह दृढ़ विश्वास था कि यदि मिष्टर क्लार्क उस प्रतिनिधिके पदपर अधिष्ठित रहते तो शायद

मीलतक आगे बढ़ी। सिन्धुनद और पर्व्वतमालाके मध्यवर्त्ती इन दोनों राज्यकी सीमा किसी स्थलमें ही स्पष्टरूपसे निर्दिष्ट नहीं था, तुरन्त मुट्ठीभर सैन्यका उद्देश्य सहज ही मालूम हो गया था। लेकिन शासनकर्त्ता सर चार्लस नेपियरने शीघ्र एक दल सैन्यको रजनाकी निम्नभूमि कई मील दूरवर्त्ती काश्मोर जानेकी अनुमति दी, इस आक्रमणसे अपने राज्यके सीमान्त प्रदेशकी रक्षा करना ही सैन्य अभियानका उद्देश्य था। इधर लाहौर कर्त्तृपक्षोंने भी इसमें पहलेसे ही सतर्कता अवलम्बन की थी। लेकिन जो सब कारण दिखाये गये थे, उसे उन लोगोंने यथेष्ट स्वीकार नहीं किया, लेकिन सिन्धुदेश-विजयीके इसतरह इतना शीघ्र इतनी तत्परताके साथ उपायका अवलम्बन करनेपर सिखोंने समझा, कि पञ्जाबके साथ युद्ध संघटन करना ही अङ्गरेजोंका पूरा अभिलाष है और यह सब बन्दोबस्त उसके ही प्रमाणस्वरूप मानकर गृहीत हुए। *

मुलतानके शासनकर्त्ताको लाहौरकी अधीनतासे मुक्त करने और सिखजातिसे उनको स्वतन्त्र रखनेमें समर्थ हुए हैं।

* सुना गया, कि काश्मोरमें एकदल सैन्य स्थापन करनेके लिये सर चार्लस नेपियर बहुत उद्विग्न हुए थे। लेकिन सुप्रिय गवर्नरजनरलने वहां एकदल यूरोपीय सैन्यके भेजनेका आदेश छोड़ दिया। इसी समय पञ्जाबसे अङ्गरेजोंके प्रकृत वाध्यताके सम्बन्धमें सर चार्लस नेपियरको एक कांपता इच्छा होती, उसका भी उल्लेख किया जा सकता है। (Compare Major Smyth's Reigning Family of Lahore, Intro

तो वह लोग आत्मसम्मान और स्वाधीनताके धनको जलाञ्जलि दे धनैश्वर्य और सुख-स्वच्छन्दता पानेके लिये ही व्याकुल हो पड़े; इसतरह महाराज शेरसिंह सिन्धानवाला और अन्यान्य सभी शत्रु-मित्रमें गिने जानेके लिये तय्यार हुए और उन लोगोंने वैदेशिक शक्तिपर समग्र आश्रयका भार अर्पण किया। जैसे सिपाहियोंकी शक्ति प्रबल होने लगी, और उन लोगोंने जिस तरह "कमिटी" या समिति प्रणालीसे शक्ति-संग्रह करना आरम्भ किया; राजकीय शासनकर्त्तागण और गवरमेराटके कार्य्यमें नियुक्त वीरगण भी वैसे ही एक नई विपदके भयसे सन्त्रस्त हुए। वह लोग शायद कभी धीरे धीरे इस दुर्द्दमनीय सैन्य सम्प्रदायकी स्पृहाके वशवर्त्ती होते; या उनमें एक ऐसा दक्ष और पराक्रान्त नेताका आविर्भाव होता, कि वह मनुष्य अन्यान्य सबकी शक्ति समष्टिको सोख, धनी स्वार्थपर और दुर्ब्बल व्यक्तिगणका सर्व्वनाश साधन करता हुआ अनुचरवर्गोंका तृप्तिविधान करता। जम्बूके राजा किसी समय अङ्गरेजोंसे घनिष्ठता स्थापन करनेके बड़े ही विरोधी थे। इस समय वह अङ्गरेजोंकी बिना सहायताके लाहोरके मन्त्रीरूपमें अपनी क्षमताके कायम रखनेमें अक्षम हुए, और वह पहाड़ी प्रदेशके जागीरदार स्वरूप अपने निरापदकी बातसे हताश्वास हो पड़े। इधर लालसिंह, तेजसिंह और अन्यान्य क्षमतापन्न नेतृवृन्द सिपाहियोंको दमन कर नहीं सके। सुतरां सिपाही लोग शासनके सम्बन्धमें अपनी अपनी क्षमताकी उपलब्धि करने लगे। उन लोगोंने सोचा,—क्षमता कायम रखनेके लिये सिपाहियोंको जरा विश्राम किये इन्हें निरुद्ध करना ही

युक्तियुक्त है; इस उपायसे इन्हें स्थानान्तरमें रखना ही एक मात्र प्रकृष्ट उपाय है। यह वह लोग जानते थे, कि इस युद्धमें वह लोग छिन्न-विच्छिन्न होंगे और उनकी दुर्दमनीय क्षमता ध्वंस होगी। उन लोगोंका और भी विश्वास था, कि लोगोंके प्रति कर्त्तव्य पालन करनेकी अपेक्षा, इस उपायसे वह लोग निश्चिन्तरूपसे मन्त्रीके नामसे स्वीकृत होंगे और क्षमता पानेकी राह भी साफ रहेगी। सुतरां जिससे पञ्जाबकी स्वाधीनताका लोप होना अवश्यम्भावी था वैसे युद्धसे निवृत्त होनेके लिये उन लोगोंने निर्ब्बन्धातिशय प्रकाश नहीं किया। * यदि सिपाहियोंकी सुचतुर सम्प्रदाय (Co-

---

* Compare Inclosures to the Governor-General's letter to Secrit Committee of 31st December, 1845, "Parl. paper", 26th Feb. 1846, p. 27 (गुप्तसभाको गवरनर जनरलने सन् १८४५ ई०की ३१वीं दिसम्बरको जो पत्र लिखा था, वह और पार्लिमेण्टका कागजपत्र—२६वीं फरवरी, सन् १८४६, २७ पृ० देखना चाहिये) यहां भग्नोत्साह जवाहरसिंहका अमिताचार और महारानीके गुप्तप्रणयके सम्बन्धमें जिस विषयका उल्लेख करना अनावश्यक है, पार्लिमेण्ट महासभामें भेजे हुए कागजपत्रमें इन सब घटनाओंके सम्बन्धमें केवल लाहोर दरबारमें (Court) षड्यन्त्रता और मूर्खताका ही परिचय प्रदान किया गया है। शायद समय समयपर जवाहरसिंहको नशेमें उन्मत्त होते देखा गया है; महारानीने शायद उनके व्यभिचारकी बातको बहुत कुछ छिपाकर रखा है,

mmities) समष्टि अङ्गरेजोंके पक्षमें भी किसी तरहकी सामरिक लाभ-सज्जाकी उपलब्धि कर न सकते, ऐसी अवस्थामें,— पहले वह लोग पराक्रान्त महाराज रणजित् सिंहके आदेशके अनुसार किसी विषयमें तत्त्वजिज्ञासु न हो दिल्लीकी ओर यात्रा

लेकिन लोगोंके सामने शायद उन्होंने अभद्रोचित व्यवहार किया था। प्रधानतः जब विदेशीय मनुष्य उपस्थित रहते थे, उस समय अन्ततक राजदरबारकी बहुत जरूरी रीतिनीति बहुत सतर्कताके साथ पालित होती थी। शाहजादाओंका गार्हस्थ्य-जीवन बहुत ही दूषणीय और लज्जास्कर हो सकता है, लेकिन लोगोंकी नैतिक व्यवस्था आदरणीय है। अधिकन्तु शासनकार्य्यमें नियुक्त पापीगणने भी जनसाधारणकी इस अवस्थाकी विशेष प्रशंसा की है। अतएव सिद्धान्त हुआ, कि क्षमताशाली मनुष्योंके असत्स्वभावके और पापकी तुलनामें साधारण कार्य्य-प्रणालीमें उसका प्राबल्य बहुत थोड़ा ही बढ़ा था। अधिकन्तु इन सब व्यक्तिगत दोषको अतिरञ्जितकर सबके सामने प्रकाश करनेकी स्वाभाविक प्रवणता भी वार्त्तावाहकोंमें अच्छी तरह मौजूद थी; और द्वेषपरवश या लालसा-परतन्त्र हो इन सब विषयोंको विस्तृतभावसे वर्णना करनेमें भारतका कूट-नैतिक कार्य्य सदा ही दूषणीय कहकर निन्दित और भर्त्सित हुआ है। और भी एक आखिरी बात यह है, कि हिन्दुस्थानमें अङ्गरेजोंके देशीय (native—भारतीय) न्यायकर्त्ताधारी लोग धनधान्य लाभमें ही बेतरह लगे और अर्थ-लोलुप हैं। वह लोग प्रायः ही अशिक्षित, गर्हणीय

युक्तियुक्त है; इस उपायसे इन्हें स्थानान्तरमें रखना ही एक मात्र प्रकृष्ट उपाय है। यह वह लोग जानते थे, कि इस युद्धमें वह लोग छिन्न-विच्छिन्न होंगे और उनकी दुर्दमनीय क्षमता ध्वंस होगी। उन लोगोंका और भी विश्वास था, कि लोगोंके प्रति कर्त्तव्य पालन करनेकी अपेक्षा, इस उपायसे वह लोग निश्चिन्तरूपसे मन्त्रीके नामसे स्वीकृत होंगे और क्षमता पानेकी राह भी साफ रहेगी। सुतरां जिससे पञ्जाबकी स्वाधीनताका लोप होना अवश्यम्भावी था, वैसे युद्धसे निवृत्त होनेके लिये उन लोगोंने निर्व्वन्धातिशय प्रकाश नहीं किया। * यदि सिपाहियोंकी सुपतुर सम्प्रदाय (Co-

---

* Compare Inclosures to the Governor-General's letter to Secrtt Committee of 31st December, 1845, "Parl. paper", 26th Feb. 1846. p. 27 (गुप्तसभामें गवरनर जनरलने सन् १८४५ ई०की ३१वीं दिसम्बरको जो पत्र लिखा था, वह और पार्लामेण्टका कागज-पत्र—२६वीं फरवरी, सन् १८४६, २७ पृ० देखना चाहिये) यहां भगोत्साह जवाहरसिंहका अमिताचार और महारानीके गुप्तप्रणयके सम्बन्धमें किसी विषयका उल्लेख करना अनावश्यक है, पार्लामेण्ट महासभामें भेजे हुए कागजपत्रमें इन सब घटनाओंके सम्बन्धमें केवल लाहौर-दरबारमें (Court) अकर्म्मण्यता और मूर्खताका ही परिचय प्रदान किया गया है। शायद समय समयपर जवाहरसिंहको मादकोन्मत्त होते देखा गया है, महारानीने शायद उनके अभिचारकी बातको बहुत कुछ छिपानेकी चेष्टा की थी,

विद्र्‌ पसरसे पूछा,—"खालसा" राज्य धीरे धीरे सङ्कीर्ण होता जाता है और लाहोरकी समतल भूमि बड़े ही दूरदर्शी विदेशी यूरोपियनों द्वारा धीरे धीरे अधिकृत होती है; तब भी क्या उन लोगोंको निरुद्वेगचित्तसे दर्शकोंकी तरह टकटकी बांधकर देखना चाहिये? तब उन लोगोंने एकवाक्यसे उत्तर दिया, कि गोविन्दके साधारणतन्त्रभुक्त सभी प्राणपात करके भी राज्यकी रक्षा करेंगे और समवेत खालसा सैन्य युद्धाभियानकर स्वेच्छा-क्रमसे आक्रमणकारियोंके साथ युद्धमें प्रवृत्त होगी। * जिस समयकी बात कही जाती है, अर्थात् नवम्बर महीनेके प्रारम्भमें लुधियानेके पास दो जनपद पृथकभावसे स्वतन्त्ररूपसे स्थापित हुए। उनमें व्यवच्छेद उत्पन्न हुआ। जिन सब अपराधी मनुष्योंने इन दोनो जगहोंमें आश्रय लिया था, उन लोगोंको नहि प्रत्यर्पण किया नहीं गया,—ऐसे व्यवहारसे यह हेतु-वाद दिखाई दिया। † जब अङ्गरेज और सिख दोनो पक्ष ही आपसमें समभावसे शान्तिभोग कर रहे थे, तो ऐसा व्यवहार बड़ा ही अस्वाभाविक और नीतिविरुद्ध

---

* मूल ग्रन्थमें जो विवरण दिया गया है, उसके अनुसार अनेक विवरण ही उस समयके खास खास आदमियोंके पत्रादिमें साधारणतः दिखाई देता था।

† सन् १८४५ ई०की २१वीं नवम्बरके बादसे ही सम्भवतः मेजर ब्राडफुटके सरकारी पत्रादि बन्द हुए। शायद इसी कारण ही सरकारी चिट्ठीपत्रोंमें इस सम्बन्धका कोई विवरण दिखाई नहीं देता।

करनेपर भी—वर्त्तमान समयमें लालसिंह और तेजसिंहको तरह अर्थलोलुप मनुष्योंका कपट उत्साह और परामर्श सुनते नहीं थे। लेकिन गवरमेण्टके कर्म्मचारियोंकी राय और उद्देश्य सभी हठकारी सिपाहियोंके विश्वासके साथ मिल गये—सब सिपाहियोंने विश्वास किया। जब विपक्षदलने सिपाहियोंसे

या सदंशजात नहीं हैं। उनके खयालसे किसीकी भी बदनामी या अपवादसे ही प्रभुको सन्तुष्ट किया जा सकता है; या उनके सुरमें सुर मिला सकनेसे ही प्रभुभक्तिकी पराकाष्ठा दिखाई जा सकती है। जिनके साथ शत्रुता या मनोमालिन्य है, प्रधानतः उनकी अपवाद-घोषणा करना ही इस अशिक्षित सम्प्रदायका एकमात्र लक्ष्य है। यहां खुशामद करनेका अभ्यास बद्धमूल और स्वाभाविक है। लोगोंका विश्वास है, कि अङ्गरेज लोग अपनी प्रशंसा सुनकर खुश होते हैं और दूसरेके निन्दावादसे आनन्दित होते हैं। यह सब विश्वास इतने प्रबल हैं, कि सन्धिबद्ध राजा या आश्रित राजगणके पा[illegible] जुबानी या लिखित समाचार (रिपोर्ट) भेजनेपर, स्थानीय [illegible] पदस्थ कर्म्मचारीगण प्रतियोगिगणकी निन्दास्तुच[illegible] कोई [illegible] बिना कहे रह नहीं सकते। यही सबब है, जिससे ला[illegible] समाचारदाताने अपने व्यवसायोपयोगी स्व[illegible] ही इस व्यभिचारिताके दृश्यका वर्णन किया है। इसका और एक यह भी कारण हो सकता है, कि शायद उसका विश्वास था, कि अङ्गरेज जाति जो सुनने या जाननेकी अभिलाषी [illegible] उसे ही प्रदान कर रहे हैं।

वस्तुतः कुछ अङ्गरेज कर्म्मचारी और भारतीय सिपाहियोंका विश्वास था, कि दृढ़ताके साथ सैन्य परिचालना कर कुछ थोड़े आग्नेय-अस्त्र—गोले गोलियोंके साहाय्यसे वह लोग युद्धमें जय पा सकेंगे। लेकिन यह उन लोगोंके दिलमें कभी नहीं आया, कि यहां बड़ी दक्षता और चतुरताका परिचय देना पड़ेगा, घोरतर युद्ध होगा और यह युद्ध बहुत दिनोंतक चलेगा। †

अङ्गरेज लोग शत्रुओंको तुच्छ समझकर ही विरत नहीं हुए। सिखोंके पहले आक्रमणकी बात उन लोगोंने बहुत दिनों पहलेसे ही समझ रखी थी। लेकिन यह आक्रमण जिस भाव और जिस उपायसे सम्पादित होने को था, उस सम्बन्धमें अङ्गरेज लोग बड़े भ्रममें पतित हुए थे। उन

युद्ध किया था सही, लेकिन उनकी अपेक्षा सिख सैन्य किसी अंशमें निकृष्ट नहीं थी। तब भी उन्होंने यह स्वीकार किया था, कि लाहोरकी गोलन्दाज सैन्य बहुत ही दुर्द्धर्ष है; उनकी रायसे गोलन्दाज सिख सैन्य गोले बरसानेमें बहुत ही उस्ताद थी। पहले (Adventurer in the Punjab, p 47, note k) ग्रन्थमें उन्होंने सब राष्ट्र सैन्यकी ही प्रशंसा की है।

† मेजर स्मिथकी रायसे अङ्गरेजोंके सिपाही सैन्यगण सिख-सैन्यकी बहुत प्रशंसा करते थे। लेकिन अङ्गरेज लोग खुद ही सिखोंको कापुरुष और अहङ्कारी कहते थे। (Major Smith's "Reigning Family of Lahore, Introduction," xxiv, and xxv.) Compare Dr. Macgregor, 'History of the Sikhs' ii, 89, 90.

होगा। उनकी आशाके कारणकी अपेक्षा भयका का
अधिक था; कारण, सिखोंने देखा, कि एक लाहोरकी
सिवा सैन्य परिचालनाका और कोई उपाय नहीं है।
रेजोंने निर्व्वचातिशयसे गोविन्दके शिष्योंपर घृणा करना
किया। अङ्गरेज-गवरमेण्ट गोविन्दके शिष्योंकी वर्त्त
शक्तिको प्रकृत भावसे समझ नहीं सकी; सुतरां यह
निरवच्छिन्न विजय पानेके वारेमें महत् अशुभजनक
सांघातिक रुकावट हो खड़ी हुई। यह बात पहले ही
गई है, कि सन् १८४२ ई०में अङ्गरेजोंने समझा, कि सिख
अफगानोंके बराबरकी नहीं है; या उनके प्रतिद्वन्द्वि
चरणमें भी अधम है। इसके बाद उन्होंने समझा, कि सि
जाति वीरोचित संग्राममें जम्रूदी पहाड़ी जातिकी अपे
भी निकृष्ट है। सन् १८४५ ई०में सरकारी समाचारसे लाहोर
सिपाही लोग "इतर" जातीय (Rabble) के नामसे अभिहि
हुए। यद्यपि परवर्त्ती वर्णनामें सैन्यदल देशीय योद्धा औ
गृहस्थसमूहसे तय्यार होनेके कारण उक्त हुई थी, तथापि
तबतक भी अङ्गरेज लोग प्रचार करने लगे, कि सैन्य समुदाय
हिसाबसे लाहोर-सैन्य दिनपर दिन क्षय हो रही है। *

* Major Broadfoot to Government, 18th and 25th January, 1845, एक नाम पहले इन्टाट जनरल ... (Calcutta Review, No iii. p. 176, 170) कहा था, कि भारतीय अन्याय शक्तिपुञ्जकी तरह सिख-सैन्य बहुत हो गिर है। ...

वस्तुतः कुछ अङ्गरेज कर्म्मचारी और भारतीय सिपाहियोंका विश्वास था, कि दृढ़ताके साथ सैन्य परिचालना कर कुछ थोड़े आग्नेय-अस्त्र—गोले गोलियोंके साहाय्यसे वह लोग युद्धमें जय पा सकेंगे। लेकिन यह उन लोगोंके दिलमें कभी नहीं आया, कि यहां बड़ी दक्षता और चतुरताका परिचय देना पड़ेगा, घोरतर युद्ध होगा और यह युद्ध बहुत दिनोंतक चलेगा। †

अङ्गरेज लोग शत्रुओंको तुच्छ समझकर ही विरत नहीं हुए। सिखोंके पहले आक्रमणकी बात उन लोगोंने बहुत दिनों पहलेसे ही समझ रखी थी। लेकिन यह आक्रमण जिस भाव और जिस उपायसे सम्पादित होने को था, उस सम्बन्धमें अङ्गरेज लोग बड़े भ्रममें पतित हुए थे। उन

युद्ध किया था सही, लेकिन उनकी अपेक्षा सिख सैन्य किसी अंशमें निकृष्ट नहीं थी। तब भी उन्होंने यह स्वीकार किया था, कि लाहोरकी गोलन्दाज सैन्य बहुत ही दुर्द्धर्ष है; उनकी रायसे गोलन्दाज सिख सैन्य गोले बरसानेमें बहुत ही उस्ताद थी। पहले (Adventurer in the Punjab, p 47, note k) ग्रन्थमें उन्होंने महाराष्ट्र सैन्यकी ही प्रशंसा की है।

† मेजर स्मिथकी रायसे अङ्गरेजोंके सिपाही सैन्यगण सिख-सैन्यकी बहुत प्रशंसा करते थे। लेकिन अङ्गरेज लोग खुद ही सिखोंको कापुरुष और अहङ्कारी कहते थे। (Major Smith's "Reigning Family of Lahore, Introduction, xxiv, and xxv.) Compare Dr. Macgregor, History of the Sikhs" ii, 89, 90.

लोगोंने विचारकर नहीं देखा, कि—सम्भव था यहांतक, कि सैनिक सम्प्रदाय बलपूर्वक नदीपार करनेमें बाध्य होगी; और समभावसे घोरतर युद्ध करेगी। खालसाके विद्रोहजनक मनके सम्बन्धमें अङ्गरेज लोग सब जानते थे; यह भी वह लोग जानते थे, कि सिक्ख सैन्य एकता और गम्भीर भावकी अधिकारी है। तब भी, अङ्गरेजोंने इन सबकी समभावसे उपेक्षा की। इन लोगोंको उस समय भी विश्वास था, कि घोरतर विशृङ्खला और युद्ध होगा; इससे अङ्गरेजोंके बाधा देनेकी जरूरत पड़ेगी और वह लोग अपनी सुविधाके अनुसार यथेच्छाचार कर सकेंगे। *

---

* Compare the Governor-General to the Secret Committee, 31st December p 1845 (Parl. Papers, 1846) and the 'Calcutta Review', No, xvi, p. 475.

सिक्रेट कमिटी या गुप्त मन्त्रणा-सभाके लिये गवरनर जनरलका पत्र तारीख ३१वीं दिसम्बर सन् १८४५ ई०। (पारलियामेण्टका कागजपत्र सन् १८४६ ई०) और कलकत्ता रिविउ पत्रकी सोलहवीं संख्याका ४७५ पृष्ठ। इसी समय 'सिक्खोंका [illegible]' एक विषयपर भारतवर्षमें बहुत वादानुवाद चला था। इस बारेमें यहां दो एक बातें बहुत जरूरी हैं। वह विषय यों है,—मेजर ब्राडफुटके सहकारी कप्तान निकल्सन उस समय फिरोजपुरमें रहते थे। निकल्सनने बार बार मेजर ब्राडफुटसे प्रकट किया, कि सिक्ख सैन्य शतद्रु नदी पार करनेके लिये उद्योगी हुई है। तब भी मेजर ब्राडफुटने [illegible] गवरनर-जनरलको न तब [illegible] नहीं किया। उनके दिलमें यह नहीं आया, कि निकल्सन [illegible]

ऐसे विश्वासके वशवर्त्ती होनेपर, नया पुल बनानेके लिये बोट, सैन्यदल और तोपें प्रभृति युद्धोद्दीपक सब चीजें ही बहुत ज्यादा संगृहीत हुई थीं। लेकिन रसद, युद्धोपकरण, मानादि

पार करनेमें समर्थ होगी। भारतीय अधिवासियोंने यह बात स्वीकार की। उनके मनमें आया, कि लार्ड निकलसन या, तो कई महीने ; या एक साल या उससे भी ज्यादा दिनो पहले ही समझ गये थे, कि किसी निर्दिष्ट समयमें अङ्गरेजोंके अधिकृत प्रदेशसमूह सिख सैन्य द्वारा आक्रान्त होंगे। इस बारेमें लार्ड निकल्सन लोगोंकी तरह बिलकुल ही अनभिज्ञ थे, कि अन्तमें सिख सैन्य क्या करेगी। सन् १८४५ ई०के दिसम्बर महीनेसे एक सप्ताह या कमसंख्यक दिनोंमें शतद्रुके पार न होनेतक, कोई भी कुछ कह नहीं सका। सच्ची बात कहनेपर मेजर ब्रडफुटने लार्ड निकल्सनके सब रिपोर्टों पर ही अविश्वास किया था। लाहोर-सैन्यकी युद्ध-यात्रा, पास आनेकी बात, शतद्रु किनारे लाहोर-सैन्यका सेनानिवास स्थापन और शतद्रुके पार करनेके सम्बन्धमें उनकी प्रगाढ़ स्थिरप्रतिज्ञता, प्रभृति सब बातें ही लार्ड निकल्सनने प्रकट की थीं, मेजर ब्रडफुटने इन सब बातोंपर विश्वास न कर सिखोंकी राजधानी लाहोरसे जो समाचार पाया था उसके विरुद्धमत ज्ञापन होनेपर भी उसपर ही विश्वास स्थापन किया। ब्राडफुटने समझा था, कि सिख-सैन्यके आखिरी कार्यकलापके सम्बन्धमें यह समाचार ही उनके उद्दे-श्योपयोगी है। [illegible] मतादिसे यह प्रमाणित हो रहता है कि [illegible] है। सन् १८४५ ई०की [illegible]

और चिकित्सोपकरण प्रभृति युद्धके समयकी जरूरी चीजें सब दिल्लीमें पड़ी रही; कोई कोई चीज आगरेसे आई थी

दिसम्बरको गवरनर जनरलने इस मर्म्मका "गुप्त-समितिके" पास एक पत्र लिखा था। (Parl. papers, 1846, p. 26, 27.)

"कलकत्ता-रिविउकी" सोलहवीं संख्यामें जो एक प्रबन्ध प्रकाशित हुआ था, उस प्रबन्धके लेखकने मेजर ब्रडफुटके दोषस्खालनकी चेष्टा की है। उन्होंने यही दिखाकर ब्रडफुटको निर्दोष ठहरानेकी चेष्टा की है, कि सीमान्त प्रदेशके सब कर्म्मचारी ही इस विषयपर एक मतावलम्बी थे। जो हो साधारणतः कहनेपर, उस समय सिख आक्रमणकी कोई सम्भावना थी या नहीं—असलमें यह विचारका विषय नहीं है। सिख-सैन्यके शतद्रु पार करनेकी सम्भावना जान, सन् १८४५ ई०के दिसम्बर महीनेके पहलेसे ही मेजर ब्रडफुटको सतर्कताका अवलम्बन करना उचित था या नहीं—यही इसका ही विचार करना चाहिये। स्थानीय कर्म्मचारियोंमें एकमात्र मेजर ब्रडफुट ही जानते थे, कि सिखसैन्य उस समय कैसी उत्तेजित हुई थी। समालोचक इस विषयका उल्लेख करना भूल गये हैं। १७वीं नवम्बरके समाचारके सिवा दूसरे कर्म्मचारियोंने इसके बाद और कोई आधुनिक और नया समाचार प्राप्त नहीं किया। अतएव इन सब घटनाओंसे स्पष्ट ही मालूम होता है, कि स्वयं मेजर ब्रडफुटके सिवा दूसरे किसीको भी स्वतन्त्र परन्तु घटनाओंके विचारकी क्षमता नहीं थी। इस सम्बन्धमें, कि [illegible]

नहीं थी, या उस समय भी जरूरी चीजोंके संग्रह करनेका कोई उद्योग हुआ नहीं था। *

सन् १८४५ ई०के दिसम्बर महीनेके पहले ही गवरनर-जनरल कैम्बानेमें सेनापतिसे (Commander-in-Chief) मिले। तब अच्छी तरह मालूम हो गया, कि सिख सैन्य सतलज की ओर आ रही है, तब उत्तर प्रदेशके अङ्गरेजी सिपाही भी बाधा देनेके लिये परिचालित हुए। अम्बाला, लुधियाना और फीरोजपुरके सिपाही ही अधिकतर निकटवर्त्ती थे, उनकी संख्या कुल सत्रह हजार थी, उनके साथ

भी यह क्षमता नहीं थी, कि वह आगेको सम्भवनीय बातें विचारता। अङ्गरेजोंके सतर्कता अवलम्बन करनेके बारेमें लफटनेंट जनरल रिचमण्डका पत्र विशेष उल्लेखयोग्य है सन् १८४४ ई०की ३री अप्रेलको बड़े लाटके पास यह पत्र भेजा गया था। इस पत्रमें इस सम्बन्धकी अनेक बातें लिखी गई थी, कि अपनेको कायम रखनेके लिये सेना-निवास सम्बन्धको दृढ़ करनेकी जरूरत है।

अनिरञ्जित-भावसे वर्णना की है। कहते हैं, कि सिखोंका स्थायी सैन्यदल, अङ्गरेजी फौजसे डेढ़ गुना अधिक था;— लेकिन इस सम्बन्धमे कोई सन्तोषजनक प्रमाण नहीं मिलता। फलतः बहुसंख्यक अशिक्षित घुड़चढ़ी फौजके आकर योगदान करनेपर, इसमें सन्देह नहीं, कि आक्रमणकारियोंकी सैन्यका परिमाण प्रतिपक्ष अङ्गरेजी सैन्यकी संख्यासे दूना बढ़ा था। *

सिख-सेनापतियोंने फीरोजपुरपर आक्रमणका भय दिखाया। लेकिन दुर्ग-रक्षक सात हजार ब्रिटिश फौजपर उन लोगोंने कोई आक्रमण नहीं किया। सेनापति सर जान लिटलर यथोचित तेजः-गर्व्वके साथ इस सैन्यदलकी परिचालना कर रहे थे; सुतरां उन लोगोंने अगत्य सिख सैन्यको तुच्छ समझा। निराश्रय सैन्यदलका ध्वंस साधनकर, अङ्गरेजों द्वारा विपदग्रस्त होना, लालसिंह और तेजसिंहका प्रकृत उद्देश्य नहीं था। उन लोगोंका यही प्रधान उद्देश्य था,

---

* गवर्नर-जनरलने सन् १८४५ ई०को ३१वी दिसम्बरको जो 'डिसपेच" भेजा, उससे मालूम हुआ,—उस समय सिख-सैन्यकी संख्या ४८ हजारसे ६० हजारतक थी। लेकिन सुशि-क्षित सैन्यके बारेमें समग्र दलकी स्थायी सैन्यका परिमाण,— ४२ हजार पैदलसे अधिक नहीं था। लाहोर, मुलतान, पेशावर और काश्मीरका सैन्यदल भी इसके अन्तर्भुक्त था। आक्रमण-कारी सैन्यदल अधिकांश ही इसको गिनती की जाती थी। कोई कोई सब तरहके फौजकी मोटी संख्या ६० हजार लिखनेपर, बहुत कुछ ठीक सिद्धान्तमें उपनीत हुआ जा सकता है।

कि फलत: प्रतिद्वन्द्वी अङ्गरेज-पक्षीय समवेत सैन्य द्वारा सि सैन्य विध्वस्त और छिन्नभिन्न न हो। लालसिंह और तेजसि हको यही एकान्त वासना थी, जिससे कलम विजेतृवृन्द उनक ही विजित राज्यके मन्त्रीके नामसे स्वीकार करें। सुतरां उ लोगोंने फीरोजपुरपर आक्रमण नहीं किया; बल्कि उ लोगोंने स्थानीय कर्मचारियोंसे अपनी अपनी गूढ़ अभि और यथेष्ठ सहानुभूति प्रकट की। उनके स्वदे-हितैषि भाव देखनेकी भी जरूरत हुई थी। अतएव लाल फीरोजपुरके दुर्गका आक्रमण परित्यागकर अङ्गरेजी अधिनायकोंपर आक्रमण करनेकी आवश्यकता थी खि सैन्यसे बारबार प्रकट करने लगे। उन लोगोंने कहा गवरनर जनरलको कैद कर सकनेपर, या उनके मार डालने पर, खालसाका यश:-प्रभा चारो ओर उद्भासित होगा। जबतक गवरनर-जनरल निहत या कैदी न होंगे और जबतक

अङ्गरेज मायकगण आक्रान्त न होंगे, तबतक अन्यान्य स्थानोंपर आक्रमण करनेसे विरत रहनेके लिये, उन्होंने सिख-सैन्यको उपदेश दिया। युद्धादि-व्यापारमें सबकी सम्मति युक्ति परामर्शकी जरूरत सिख-सैन्य समझ गई थी। राज्यके प्रधान शासनकर्त्ताओंके साथ एकराय हो, उन लोगोंने सैनिक-समिति और दूसरी समितियोंको क्षमतासे कुछ दिनोंके लिये उपेक्षा की थी। इसतरह सभी अयोग्य पुरुष बहुत सहज ही अपना देय उद्देश्य साधन कर सके थे। * सामरिक विधि-व्यवस्थाके प्रचलित नियमके अनुसार विभिन्न स्थानमें सेनानिवासके स्थापनके समय और भिन्न भिन्न स्थानमें पैदल और घुड़चढ़ी सैन्यके नियोगके समय सेनापति और निम्नपदस्थ दलपतियोंने अपने अपने स्वार्थ-साधनोद्देश्यसे ही काम किया था। जिस शक्तिके बलसे सामान्य सैनिक पुरुष भी गोविन्दके साधारण तन्त्रकी रक्षाके लिये युद्धमें प्राण विसर्जन न करनेमें कुण्ठित होते नहीं थे, उस स्वर्गीय शक्तिके प्रति सबने ही कुछ भक्ति दिखाई थी। उस समय सिपाही लोग एक ही उद्देश्यमें और एक ही कामके साधनके लिये अनुप्राणित थे। लेकिन इन सब सैन्यकी परिचालना करनेवाले सेनापतिगण अक्षम थे। वह लोग युद्धकार्य्यमें बिलकुल ही अनभिज्ञ थे, स्वार्थ-साधन ही उनका

---

* सन् १८४५ ई०की ८वीं नवम्बरको लाहोरके गवर्नमेण्टके पास एक समाचारपत्र भेजा गया था। उससे मालूम हुआ, कि लालसिंह लाहोर-गवर्नमेण्टके वजीरके पदपर नियुक्त हुए हैं और तेजसिंह सेनापतिके पदपर।

सैन्य अपनी छूटना समझ चौंक पड़ी, उनकी एक दल सैन्य वहीं छावनी स्थापनकर रहने लगी; दूसरी ओर एक दल विपत्-पातके समय साहाय्य देनेके लिये रखी गई। इसतरह उन लोगोंने विपत्पातसे छुटकारा पाया। असलमें यह काम सिख-जातिकी भीरुताका परिचायक है। जब दुःसाहसिक "खिड-गयाने" सम्राटश्रेष्ठ गसटवसके अधिनायकत्वमें जर्मनीपर आक्रमण किया था, तब वह लग आष्ट्रियाके बहुदर्शी सेनाप-तियोंके सामने रोमीय सिपाहियोंकी छावनी स्थापन करनेकी पद्धतिका अवलम्बन किया था। * जिनके अतुलनीय साहस और बल-वीर्य्यसे सब भयसे कम्पित होते हैं, भाग्य कभी बरछेके सहाय्यसे युद्धक्षेत्रमें नहीं उतरे, उन युवकश्रेष्ठ टेलिमाकसने भी क्रोधसे इथेकाके युवराजके प्रति बरछा चलाया था और पीछे आश्रय पानेके लिये, वीरश्रेष्ठ पिताके शरणापन्न हुए थे। †

---

* लिपाजिगमें युद्ध होनेके पहले "बरवेने" सुइजरलैण्डकी फौजने ऐसा ही किया था। कर्नल मिचल कहते हैं,—शिविर-संस्थापनके सुकौशलसे और सिपाहियोंके रणकौशलमें अनवमने इस युद्धमें जय पाई।

इस समय अम्बाले और लुधियानेमें अङ्गरेजोंकी दो दल सैन्य फीरोजपुरसे २० मील दूरवर्त्ती मुदकी नामक स्थानमें लाई गई। उनके छावनी बना युद्ध आरम्भ करते करते एकदल सिख-सैन्यने उनपर आक्रमण किया। उस समय सबका ही विश्वास था,—सुसज्जित सिख-सैन्यकी संख्या तीस हजारसे भी अधिक थी; लेकिन असलमें इस सैन्यदलमें पैदल सैन्यकी संख्या दो हजारसे भी कम थी; उनके साथ २२ तोपें थीं और आठसे दस हजारतक घुड़चढ़ी फौज उनका साहाय्य करती थी। * लालसिं०की अधिनायकत्वमें सिख सैन्यने अङ्गरेजोंपर

भविष्यत युद्धनीतिका अनुभव कर सके थे। यूरोपीय लोग निम्नश्रेणीकी गोलन्दाज-सैन्य बढ़ाते थे और उनकी ही संख्या प्रबल होती थी। सिख-सैन्य पैदल और तोपके साथ एक स्थानसे दूसरी जगह जाती थी; उसके कितने ही घुड़सवार सिपाही भी देशकी सब जगहोंमें दिखाई देते थे। इससे साफ मालूम होता है,—स्थानान्तर योग्य अङ्गरेजी सैन्यदलके सिवा भारतीय या दक्षिण एशियाकी कोई फौज सिखोंको पराजित कर सकती नहीं थी।

* सन् १८४५ ई०की १८वीं दिसम्बरको लार्ड गफने एक "डिसपेच" भेजा; उससे मालूम हुआ, कि सिखोंकी सैन्य-संख्या उस समय ३० हजार था और उनके साथ ४० तोपें थीं। इसी समय कप्तान निकलसनने फीरोजपुरसे एक समाचार पत्र लिखा था। उससे मालूम हुआ, कि उस समय सिख-सैन्यका परिमाण साढ़े तीन हजारसे अधिक नहीं था। वस्तुतः इसको

आक्रमण किया। पहलकी अभिसन्धिके अनुसार सिख-सिपाहि-योंको घर समर-सागरमें डुबा, लालसिंह उन लोगोंको छोड़ चले गये, सुतरां वह लोग परिचालकविहीन हो अपने साहस और अभिज्ञताके अनुसार प्राणपणसे युद्ध करने लगे। युद्धमें पराजित होनेपर सिख-सैन्य भागी, उनकी १७ तोपें अङ्गरेजोंके हाथ लगी। * लेकिन इस युद्धमें अङ्गरेज लोग पूरी तरह जय पानेमें समर्थ नहीं हुए। उन लोगोंने इस युद्धमें जय पाई सही; लेकिन इस युद्धमें जीतना उनके गौरवके उपयुक्त नहीं हुआ। सुतरां सिख-सैन्यके पुरोभागपर आक्रमण करनेसे पहले सरजान लिटरके सैन्यदलके साथ मिलना ही स्थिर हुआ। इस समय सर जानलिटरके सैन्यदलने तुरन्त और फीरोजपुरसे दूर हैं

गिनतीसे सिख-सैन्यका परिमाण बहुत ही कम था। पीछे पता लगानेपर मालूम हुआ, कि सिखोंकी पैदल-सैन्यका संख्या कम थी और वह लोग हीनबल हो पड़े थे। फिर प्रहरमें जो कई एक सैन्यदल थे, उनमें हरेक छोटे दलसे थोड़ी थोड़ी फौज ले यह पैदल सैन्य तय्यार हुई थी। (The Calcutta Review, No vri, p. 489.) कलकत्ते रिविउ पत्रके अनुसार मालूम हुआ,—सिखोंके पास ८२ तोपें थी, इस हिसाबसे कुछ नियमित होनेपर भी—वही कम पड़ता है।

* इस युद्धमें अङ्गरेजोंकी ओरसे २१५ मनुष्य मरे और ६५७ मनुष्य घायल हुए। (सन् १८४५ ई०की १८वीं दिसम्बरको फर्ग्युसनने जो रिपोर्ट दी, उसमें यह बात कही गई है।) एक सम्वाद दाता कहते हैं कि ११ हजार मारे गये थे।

इस समय अम्बाले और लुधियानेमें अङ्गरेजोंकी दो दल सैन्य फीरोजपुरसे २० मील दूरवर्त्ती मुदकी" नामक स्थानमें लाई गई। उनके छावनी बना युद्ध आरम्भ करते करते एकदल सिख-सैन्यने उनपर आक्रमण किया। उस समय सबका ही विश्वास था,—सुसज्जित सिख-सैन्यकी संख्या तीस हजारसे भी अधिक थी; लेकिन असलमें इस सैन्यदलमें पैदल सैन्यकी संख्या दो हजारसे भी कम थी; उनके साथ २२ तोपें थीं और आठसे दस हजारतक घुड़ चढ़ी फौज उनका साहाय्य करती थी। * लालसिंहके अधिनायकत्वमें सिख सैन्यने अङ्गरेजोंपर

भविष्यत युद्धनीतिका अनुभव कर सके थे। यूरोपीय लोग फिरङ्गि-योंकी गोलन्दाज-सैन्य बढ़ाते थे और उनकी ही संख्या प्रबल होती थी। सिख-सैन्य पैदल और तोपके साथ एक स्थानसे दूसरी जगह जाती थी; उनके कितने ही घुड़सवार सिपाही भी देशकी सब जगहोंमें दिखाई देते थे। इससे साफ मालूम होता है,—स्थानान्तर योग्य अङ्गरेजी सैन्यदलके सिवा भारतीय वा दक्षिण एशियाकी कोई फौज सिखोंको पराजित कर सकती नहीं थी।

* सन् १८४५ ई०की १८वीं दिसम्बरको लार्ड गफने एक "डिसपैच" भेजा; उससे मालूम हुआ कि सिखोंकी सेनाकी संख्या उस समय ३० हजार था और उसके साथ ४० तोपें थीं। इसी समय कार्प्ट निकलसनने फीरोजपुरसे एक पैमाइशी पत्र लिखा था। उससे मालूम हुआ, कि उस समय सिख-सैन्यका परिमाण साढ़े तीन हजारसे अधिक नहीं था। वस्तुतः इसकी

आक्रमण किया। पहलकी अभिसन्धिके अनुसार सिख-सिपाहि-योंको घर समर-सागरमें हुवा, लालसिंह उन लोगोंको छोड़ चले गये, सुतरां वह लोग परिचालकविहीन हो अपने साहस और अभिज्ञताके अनुसार प्राणपणसे युद्ध करने लगे। युद्धमें पराजित होनेपर सिख-सैन्य भागी, उनकी १७ तोपें अङ्गरेजोंके हाथ लगी। * लेकिन इस युद्धमें अङ्गरेज लोग पूरी तरह जय पानेमें समर्थ नहीं हुए। उन लोगोंने इस युद्धमें जय पाई सही; लेकिन इस युद्धमें जीतना उनके गौरवके उपयुक्त नहीं हुआ। सुतरां सिख-सैन्यके पुरोभागपर आक्रमण करनेसे पहले सरजान लिटरके सैन्यदलके साथ मिलना ही स्थिर हुआ। इस समय सर जानलिटरके सैन्यदलने तुरकी ओर फीरोजपुरसे दग्ध्...

गिनतीसे सिख-सैन्यका परिमाण वहुत ही कम था। पीछे पता लगानेपर मालूम हुआ, कि सिखोंकी पैदल-सैन्यका संख्या कम थी और वह लोग हीनबल हो पड़े थे। फिर शहरमें जो कई एक सैन्यदल थे, उनमें हरेक छोटे दलसे थोड़ी थोड़ी फौज ले यह पैदल सैन्य तय्यार हुई थी। (The Calcutta Review, No vri, p. 489.) कलकत्तेके रिविउ पत्रके अनुसार मालूम हुआ,—सिखोंके पास २२ तोपें थीं, इस हिसाबसे कुछ नियमित होनेपर भी—वही सच जान पड़ता है।

* इस युद्धमें अङ्गरेजोंकी ओरसे २१५ मनुष्य मरे और ६५७ मनुष्य जखमी हुए। (सन् १८४५ ई०की १६वीं दिसम्बरको गवर्नर जनरलने जो डिस्पेच भेजा, उसमें यह बात कही गई है।) उस समय सारे लाहौर फौजमें ५१ हजार मनुष्य थे।

मील दूरवर्त्ती फिरू शहरके गांवकी चारो ओर फोडोंकी नालकी शकलमें गभीर व्यूहको रचनाकर छावनी संस्थापन की थी। तीसे अधिक तोपो द्वारा इन निवास सुरक्षित किया गया था। मुदकीके युद्धके उपरान्त इस स्थानको ईषत् अनम्पूर्ण परिखा इधर उधर कमरतक गहरीकी गई थी। उस समय सबके ही दिलमें आया, कि वहां पचास हजार सैन्यको स्थान मिल सकता है। लेकिन बादके अनुसन्धानसे स्थिर हुआ, कि बारह पैदल सैन्यदल और आठ या दस हजार घुड़चढ़ी फौजसे अधिकका यहां रहना असम्भव है। अतएव पार्श्ववर्ती आक्रान्त सिख सैन्य आक्रमणकारियोंके सब हिस्सेको अतिक्रम करनेमें समर्थ नहीं हुई। सिखोंके सैन्यकी संख्या अधिक थी और उनके साथ बड़ी बड़ी तोपें थी। लेकिन अङ्गरेजी सैन्यमें अधिकांश ही विभिन्न श्रेणीकी गोलन्दाज फौज थी, उनकी तोपें भी आकृतिमें सिखोंकी तोपोंकी अपेक्षा बहुत छोटी थीं।

लेकिन ब्रटिश सैन्यको सौभाग्य और विजय-श्री पानेका पूरा विश्वास था; सुतरां दशगुनी सैन्यके विरुद्ध सिपाही सैन्य आनन्दोल्लासके साथ यात्राके लिये तय्यार हुई।

२१वीं दिसम्बरको पूर्व्वोक्त सैन्य सर जान लिटरको फौजके साथ मिल गई। यह स्थान दुश्मनोंके सेनानिवाससे चार मील दूरी पर अवस्थित था। आक्रमणकी विस्तृत वर्णनाका विन्यास करनेमें कुछ विलम्ब हुआ। सूर्य्यास्तके बाद एक घण्टेमें ही युद्ध आरम्भ हुआ। अन्तमें आत्मविश्वासी अङ्गरेज लोग अभिप्सित युद्धमें प्रवृत्त हुए। अङ्गरेजी सैन्यने युग्म-पद्धतिसे युद्ध-यात्रा की; चिरप्रसिद्ध गोलन्दाज सैन्य अविच्छिन्न भावसे गोलागोली बरसाने लगे। सिखोंकी तोपोंने भी प्रबल वेगसे आग

ही एक वाक्यसे स्वीकार किया है, कि फिरू शहरके युद्धमें १२ छोटे छोटे सैन्यदल नियुक्त हुए थे। वस्तुतः यही सच मालूम होता है। गवरनर-जनरल और सेनापति (जङ्गीलाट) दोनोंकी प्रतीतिके अनुसार मालूम हुआ,—शतद्रुके पश्चिम किनारे ६० हजार सुसज्जित फौज समवेत हुई थी, लेकिन उनको ऐसी समझ भ्रमात्मक है। लार्ड गफ कहते हैं, कि कईएक छोटे पैदल सैन्यदलको छोड़, और भी ३० हजार घुड़चढ़ी फौजके साथ तेजसिंह युद्धक्षेत्रमें अवतीर्ण हुए थे। वह और भी कहते हैं, कि २२वीं दिसम्बरको युद्धमें उनके साथ कुछ आग्नेयास्त्र भी थे। सुतरां फिरू शहरकी रक्षाके लिये बहुत कम सैन्य ही बाकी थी। सन् १८४५ ई०की २२वीं और २१वीं दिसम्बरका "डिसपेच" देखना चाहिये।

उगलना शुरू किया; उनका एक निशाना भी खाली नहीं गया। उनकी पैदल सैन्य सुसज्जित तोपोंकी श्रेणीके भीतर और पीछे श्रेणीवद्ध हो खड़ी हुई। वह लोग अविचलित भावसे सैन्य विन्यासके भीतरसे अविश्रान्त गोलियां बरसाने लगी। अङ्गरेजी सैन्य कभी ऐसे प्रबल शत्रुके सामने हुई नहीं थी, या उसने कभी ऐसी कठोर बाधा पानेकी आशा भी की नहीं थी! सभी विस्मयसे चौंक पड़ गये। तोपें अवतारित हुईं; युद्धोपकरण वृथा व्ययित हुआ; कितने ही आकाशमें फेंके गये; वृटिश सैन्यका दल टूटने लगा; दलकी दल फौज पीछे हट गई; हरेक सैन्यदल विध्वस्त और पराजित हुआ। अन्तमें सूर्यास्तके बाद विपक्षदलकी अधिकृत जमीनका कुछ अंश अधिकृत हुआ। तमसाच्छन्न रजनीके घोर अन्धकारमें और अविच्छिन्न घोरतर युद्धमें अङ्गरेजी सैन्यमें दारुण विशृङ्खला उपस्थित हुई। विभिन्न दलकी विभिन्न अस्त्रधारी फौज सब एक साथ मिल गई। सेनापतिगण उस समयमें कुछ भी जान नहीं सके, और अपनी अपनी हतकार्यताकी मातका भी वह लोग अनुभव कर नहीं सके। करनल या कुछ जान नहीं सके, कि उनके अधीनस्थ सिपाही लोग कैसी दुर्दशामें उपस्थित हुए हैं। यह भी मालूम करनेका उन्हें अवसर नहीं मिला, कि वह जिस सैन्यश्रेणीके अंश हैं; उस श्रेणीका क्या परिणाम हुआ है। शत्रुपक्षीय सैन्यश्रेणीका कुछ अंश उस समय भी अटल अचल भावसे खड़ा था। सिक्खोंकी जो तोपें शत्रुओंके हाथ पड़ी नहीं थीं, उन लोगोंने उन्हीं तोपोंसे भिन्न भिन्न अङ्गरेजी-फौजपर आक्रमण किया, प्राण और इ-

श्रमसे क्लान्त अङ्गरेजी फौजकी ओर ढेरकी ढेर आग बरसने लगी। निदारुण शीतसे अङ्गरेजी फौजके हाथ पैर बेकाम हो गये थे, लकड़ी जला वह लोग शरीरमें गर्मी पहुंचा रहे थे। ऐसा सङ्केत पा सतर्क सिखोंने उनपर प्रबलवेगसे आक्रमण किया। अङ्गरेज लोग उस समय विपद् सागरमें डूब गये। सैन्यदलमें विषम विशृङ्खला उपस्थित हुई। सभी हतबुद्धि हो पड़े। विदेशमें या भारतवर्षमें अङ्गरेजोंके तनखाहदार सैन्य-दलने सब जगह ही साहस और वीरत्वका परिचय प्रदान किया था। उस समय सुशिक्षाका अभाव था सही, लेकिन अवि-च्छिन्न कृतकार्य्यता पानेसे वह अभाव होता था। लेकिन कई एक घण्टेमें ही पांच हजार विदेशीय अङ्गरेजी फौजको देख आश्चर्य हुआ, कि देशीय सैन्य-उनके युद्ध-चातुर्य्य और रणने कौशल सबकी ही शिक्षा पाई है। अब ऐसे सङ्कटका समय उपस्थित हुआ, कि उन लोगोंको अपरिसीम कष्ट स्वीकार करना पड़ा। उस चिरस्मरणीय रजनीमें शायद अङ्गरेज लोग जीत सके थे; वह लोग जिस जगह खड़े थे, उसे वह लोग लेनेमें समर्थ नहीं हुए। उनके पास और कोई मजबूत सैन्य नहीं थी; विपक्ष सिख-सैन्य पीछे हट दूसरे सैन्यदलके साथ मिल गई थी। अब वह लोग अतिरिक्त सैन्यके साहाय्यसे फिर युद्धमें प्रवृत्त होने लगे। तब अङ्गरेजोंने फीरोजपुरमें भागनेका विचार किया; उनका वह संकल्प अयौक्तिक जान पड़ा। लेकिन साहसी वीर लार्ड गफने और हार्डिजकी कल्पना स्थिर की; उन्होंने और लार्ड हार्डिङ्गने बहुत ही निर्भीकताके साथ अङ्गरेजी सैन्य और कमजोर देशी सैन्यदलके पुरोभाग

स्थित अग्नेयास्त्रके साहाय्यसे शत्रुओंपर आक्रमण किया। अन्तमें आंशिक जयः पानेमें समर्थ हो, अङ्गरेजोंने कुछ देरके लिये विश्रामका सुयोग पाया। २२वीं दिसम्बरके सवेरे सिखोंकी वाकी फौज अपनी छावनीसे विताड़ित हुई। लेकिन दिन चढ़नेके साथ ही साथ सिख-सैन्यदलका दूसरा अंश रणसाजसे सज्जित हो आगे बढ़ा। तब परिश्रान्त क्लान्त और भूखी अङ्गरेजी फौजने देखा, कि सामने घोर दुर्दैव उपस्थित है, वह लोग समझे, कि घोरतर युद्धकी सम्भावना है और इस युद्धमें किसी तरह जीत न होगी। तेजसिंह इस सैन्यदलके सर्वाधिनायक थे। उनका एकाग्र और अकपट सैन्यदल सूर्योदयके साथ ही साथ अङ्गरेजोंपर आक्रमण करनेके लिये जिद करने लगा। लेकिन भीति-प्रदायक "खालसा" सैन्य जिससे पराजित हो छिन्न-विच्छिन्न हुई, उसका साधन ही तेजसिंहका उद्देश्य था। सुतरां लालसिंहके सैन्यदलको सब जगहसे विध्वस्त हो न भागनेतक तेजसिंह विलम्ब करने लगे। इसी अवसरमे उनके प्रतिपक्षगण पूर्ण उद्यमसे पताका मूलमें समवेत हुए। यहांतक, कि अन्ततक तेजसिंह कईएक साफ युद्धमें आहत हुए; उन्होंने कई कृत्रिम युद्धका बहाना मात्र किया, लेकिन उन्होंने दृढ़प्रतिज्ञताके साथ शत्रुओंपर आक्रमण नहीं किया। अन्तमें अपने सैन्यदलको अतुल समर-सागरमें डाल, वह झटपट भाग गये। उनके अधीनस्थ सिपाहियोंमें आरम्भ विशृंखलता उपस्थित हुई; कुछ देरके लिये वह लोग किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। उस समय अङ्गरेजी गोलन्दाज फौजका भी गोलाबारूद खतम हो गया था उनको एकदम सैन्य घोड़ोंके

जा रही थी। * इसी समय यदि सिख-सैन्य साहसिकताके साथ आगे बढ़ अङ्गरेजोंपर आक्रमण करती, तो अङ्गरेज लोग

---

* फिरुज शहरके युद्ध-वृत्तान्तके सम्बन्धमें लार्ड गफका "डिस-पेच" देखना चाहिये। सन् १८४५ ई०की २१वीं दिसम्बरको लार्ड गफने एक डिसपेच भेजा। लार्ड हार्डिञ्जने भी ३१वीं दिसम्बरको और एक समाचार भेजा। उन सब डिसपेचोंमें फिरुज शहरका युद्धवृत्तान्त अच्छी तरह वर्णित है। घुडचढ़ी सैन्यदलकी कार्य्यकारिताको 'बातपर गवरनर जनरलने विशेष लक्ष्य किया था। इस युद्धमें अङ्गरेजोंके ६९४ सिपाही मरे, और १७२१ घायल हुए

कारटर्ली रिविउ ('Quarterly Review' for June, 1845, p. 203-206) और कलकत्ता-रिविउ (Calcutta Review for December, 1847, p. 498.) पत्रको वर्णनामें कुछ अज्ञात विषयका परिचय पाया है। उन सब बातोंको इस इतिहासमें लिखनेकी जरूरत है। उनमें दो विषय प्रधान हैं:—(१) २१वीं दिसम्बरकी रातको फीरोजपुरमें आश्रय ग्रहण करनेका प्रस्ताव। (२) दूसरे दिन तीसरेपहर अधिकांश अङ्गरेजी सैन्यके फीरोजपुरकी ओर बढ़नेकी व्यवस्था।

यदि सिख-सैन्य सुकौशलसे परिचालित होती, तो समर-नीतिके अनुसार फीरोजपुरकी ओर अङ्गरेजी फौजका लौट जाना ही अच्छा था, लेकिन वह एक स्वदेशद्रोही विश्वासघातकी आज्ञानुसार सिख-सैन्यके परिचालित होनेसे, निश्चय युद्धक्षेत्रमें ठहरनेके ही अङ्गरेजोंने श्रेयः समझा था। लालसिंह और

सिपाही-सैन्यगणको इसवार समशक्तिशाली शत्रुओंके सामने होना पड़ा। अस्त्र-शस्त्र, सैन्यसंख्या और गोलागोली बरसानेमें दोनो पक्ष बराबर थे। सिखोंकी तोपोंकी अपेक्षा सिपाहियोंके तोपोंके निकृष्ट होनेके कारण, सिपाहियोंने घोर आपत्ति प्रकट की थी। नदीके किनारे दो तीन फुट ऊँचे मट्टीके स्तूपको वह लोग दुर्भद्य दुर्गप्राचीरके नामसे अतिरञ्जित भावसे प्रकट करने लगे, उनके कल्पनाप्रभावसे बारूदखाना और युद्धके सरञ्जामादि सांघातिक गुप्त अस्त्रके ("माइन") रूपमें प्रतिपन्न होने लगे। ऐसा नहीं, कि केवल भारतीय सिपाही लोग ही विपक्षदलके युद्धके आयोजनसे भीत और चकित हुए थे, बल्कि यूरोपीय सिपाहियोंमें भी वह भाव फैल पड़ा था। राजकीय कर्तृपक्षगण और धर्मयाजकगणप्रमुख इटिश-प्रजाके दिलमें भी भयका सञ्चार हुआ था; इससे वैदेशिक अधिकारकी शान्ति और निरापदकी बातसे सभी विशेष चिन्तित हो पड़े थे। *

---

* वेरसको पराजय और सेनादलके ध्वंसका समाचार सुन, अगस्टस् भय-विह्वल हुए थे। दिल्ली और यमुनाके अन्तर्गत प्रदेशके अधिकृत होनेसे, अङ्गरेज लोग भी वैसे ही शङ्कित हुए थे। रोमकी-शक्तिमत्ता और उनकी दुर्बलताके कारण परम्परासे अवगत होकर भी वह हामना अगस्टस् जर्मनों द्वारा इटालीके आक्रमणके परिणामकी चिन्ताकर भीत हुए थे। इनके दृष्टा-न्तका अनुसरण करनेसे भारतवर्षके सम्बन्धमें अङ्गरेजोंकी आश-ङ्काके विषयमें दोषारोप किया जा सकता। इसान्य बाधन् या अभूतपूर्व घटना-परम्परापर निर्भर करनेपर, इनके प्रतिपक्ष

धीरे धीरे ब्रटिश-सैन्यकी दलपुष्टि होने लगी। फीरोजपुरसे हिरकीतक फैले हुए स्थानमें सैन्यदलका समावेश हुआ। इधर

उसके अनुसार कलकत्तेके खृष्टीय धर्म्मयाजकोंने उपासनाकी प्रणाली-पद्धतिका सब गह प्रचार किया। गवरनर-जनरलकी उत्कण्ठाकी बात उनके घोषणा-प्रचारसे ही मालूम हो सकती है। उस घोषणासे उन्होंने सिख-सिपाहियोंको अपना दल परित्याग करनेके लिये उत्साहित किया; भविष्यत्में वृत्ति और वर्त्तमानमें इनाम देनेकी लालच दिखाई। सिवासे यह भी कहा गया, कि स्वदलत्यागी मनुष्योंके अङ्गरेजी राज्यमें आ किसी तरहके अभियोगमें अभियुक्त होनेपर, शीघ्र ही उसकी मीमांसा कर दी जायगी।

क्रमसे वल या गल्वमके सैन्यदलने विजयक्षेत्रमें जिस अनुराग से नतजानु हो ईश्वरकी उपासना की थी, वह प्रशंसनीय है। कारण, वह ऐकान्तिकतापूर्ण थी और ऊँचेसे नीचेतक स्तरके सबमें ही वह ऐकान्तिक भावसे प्रस्फुट हुई थी। उस क्षेत्रमें सैन्यदलके पराजित होनेपर वह समभावसे भर्त्सित भी होती थी। उस समय रस्मान या अवज्ञताका चिह्न आप ही आप प्रकटित होता था; राजकीय आदेश या "सरकारी घोषणाका" आवरण उसे प्राप्यभूत नहीं कर सकता था। कोई सभ्य और सुविज्ञ गवरमेण्ट इस प्रकारकी आन्तरिकताशून्य बाह्य उपासना या कृतज्ञता प्रकाश करनेमें हर तरहसे विरत होगी, वह लोग सामरिक नियमादिके परिपालनमें समधिक धर्म्मपरायण होनेकी चेष्टा करते हैं। ऐसिक उपासनासे और उपदेशसे

सिखलोग भी शतद्रु नदीके पश्चिम किनारे अङ्गरेजी सैन्य-श्रेणीके समान्तरालमें अवस्थिति करने लगे। युद्धोपकरण और वृहत् तोप प्रभृतिके अभावसे अङ्गरेज लोग अकर्मण्य हो पड़े थे। युद्धमें विलम्ब होनेसे अङ्गरेजी सैन्य शैथिल्य प्रकाश कर रही थी; इससे विपक्ष सैन्यदल नवोद्यम असीम साहससे अङ्गरेजों-पर आक्रमण करनेके लिये तय्यार हुई थी। इसी समय शतद्रु नदीके पूर्वतीरवर्ती जागीरदार लोग अङ्गरेजोंको सहाय न दे, देशमें उत्तेजना बढ़ाने लगे। अङ्गरेजोंके अधीनस्थ लद-वाके राजा एक साल पहले विश्वासघातकके नामसे दण्डित हुए थे। * उन्होंने इसी समय कर्नालके सन्निकटसे आगे बढ़ उड्ड-

---

सैनिक-राजकर्मचारियोंके मानसक्षेत्रमें सदा ईश्वर विराजमान रहते हैं; यह अवस्था ही नई है। शायद युद्ध-जयके समय ईश्वरकी प्रशंसा-कीर्तन आड़म्बर मात्र है।

* सन् १८४४ ई०की १३वीं दिसम्बरको मेजर ब्राडफुटने गवरमेण्टको एक पत्र लिखा था, उसमें यह बात लिखी हुई है। इन सामन्तने (लदवाके राजाने) लार्ड अकलण्डसे राजाकी उपाधि पाई थी। यह रणजित् सिंहके आत्मीय और थाने-श्वरके निकटवर्ती इतिहास-प्रसिद्ध सरस्वती नदीपर पुल बनानेमें दानशीलताका परिचय देनेके कारण इन्होंने राजाकी उपाधि पाई थी। लदवाके राजा साधारण मनुष्यकी तरह सामान्य शक्तिशाली थे। वह फजूलखर्च और अमिदारीके नामसे परिचित थे। पिता गुरुदत्तसिंहकी आस्थिरचित्तता उनमें मौजूद थी। गुरुदत्तसिंहने किसी समय कर्नाल और पहले

मखुला। रणजीरसिंहकी परिचालित सिख-सैन्यदलमें योगदान किया। रणजीरसिंहका वह सैन्यदल जलन्धर-दोआबसे पार हो लुधियानेके पास ही अवस्थान कर रहा था। इसी समय लुधियाना शहरको शून्यकर सब सैन्यने आक्रमणके प्रतिरोधी सैन्यदलकी दलपुष्टि की। पीछे पूर्व ओरसे धीरे धीरे कुछ नई फौजको ला यह स्थान सुरक्षित किया गया। यमुनाके फीरोज-पुरकी ओर जितनी अङ्गरेजी फौज बढ़ी थी, अन्तमें यह सब सैन्य उन लोगोंकी राह रोकनेमें सक्षम हुई। * जमवरी

नदीके पूर्वतीरस्थित कुछ भागोंपर अधिकार कर लिया था और सन् १८०७ ई०से सन् १८०६ ई० तक उन्होंने अङ्गरेजोंको बड़ा कष्ट दिया था।

* इसका कोई विशेष कारण मालूम नहीं होता; कि किस लिये उस समय लुधियानेमें उपयुक्तरूपसे सैन्यका समावेश नहीं हुआ। इसका कारण भी मालूम नहीं, कि किस लिये ही फिरूजशहरके युद्धके बाद मेरठसे सैन्यने आ लुधियानेको घेर नहीं लिया। फीरोजपुरके अरक्षित अवस्थामें सैन्यदल भेजने और उसकी दृढ़ताके सम्पादनमें गवरनर जनरल प्रधानतः मनोयोगी हुए थे। उस स्थानकी सामरिक असुविधाके लिये उन्होंने बहुत दुःखप्रकाश किया था। सन् १८०६ ई०के पहले परामर्श हुआ था, कि शतद्रुके निकटवर्त्ती प्रदेशोंको सुरक्षित करना ही चाहिये। सिखोंसे युद्ध लगानेके लिये वहीं सभी चिकताका काम आन पड़ता है। इस विपत्पातमें भी क्रमशः गवरनर जनरलके मनमें ऐसे भावका उदय हुआ था।

महीनेके प्रारम्भमें लुधियानेके निकटवर्त्ती बदवालकी जागीरसे-परिवारवर्गको स्थानान्तरित करनेके लिये लदवाके राजा लौट गये। इसी समय उनके द्वारा लुधियानेके सेनानिवासका कुछ अंश अग्नि-संयोगसे जल गया; उस समय लुधियानामें बहुत थोडी पैदल सैन्य थी, घुड़चढ़ी फौज बिलकुल ही नहीं थी, इसी सुयोगसे वह सेनानिवास ध्वंस कर सके थे। अब विपक्ष दलके अलसभावकी उपलब्धिकर प्रधान सिख-सैन्यदल फिर शतद्रु नदी पार करने लगा और उस पार जानेके लिये वह लोग शतद्रु पर पुल बनाने लगे। अनिच्छासे अङ्गरेजी फौज भी निरस्त रहनेको बाध्य हुई; उन लोगोंने सोचा,—उसी समय सिखोंपर आक्रमण करनेमें युद्ध हो जानेकी सम्भावना है, और युद्धोपकरण प्रभृतिके अभावसे अपने जय पानेके सम्बन्धमें बहुत अन्तराय हो सकता है। जो हो, सम्भवतः ही सिख लोग उत्तेजित हो उठे और फिर उन लोगोंने घृणित वैदेशिक मनुष्योंपर आक्रमण करनेकी घोषणा की। उनके इस आस्फालनपर कोई पूरी तरह अविश्वास कर नहीं सका; फीरोजपुरके अङ्गरेजोंके सीमान्त प्रदेशरूपमें निर्दिष्ट होनेको असुविधा धीरे धीरे प्रतीत होने

पञ्जाबकी राजधानी और सिख-सिपाहियोंके प्रधान दलको चारो ओर सैन्यसमावेशके लिये, लार्ड हरडिञ्जने सर चारलस नेपियरको आगे बढ़नेका आदेश दिया था। मुलतानकी ओर उन्होंने बहुत ध्यान नहीं दिया। उन्होंने साफ कहा था, कि बार बार आक्रमणका समय उपस्थित होनेपर, विजयी सैन्यदलको वह मुलतान भेजेंगे।

लगी। अङ्गरेजोंने अबतक केवल कागज-कलमसे कितने ही देशोंको जीता था, लेकिन तलवार द्वारा उसके शासन-संरक्षणमें कृतकार्य्य नहीं हुए। अब उन सब देशोंसे साहाय्य पाना, उनके लिये दुराशय हो खड़ा हुआ। चमकोरसे गोविन्दसिंहके भागनेके समय उनका अनुसरण करने था, मुगलवाहिनी सुकृतसर या। मुक्तिसरके जिस छोटे दुर्गमें इससे पहले उनके द्वारा पराजित हुई थी, प्रादेशिक अङ्गरेजी सैन्यदलके और बीकानेरसे लाई हुई अतिरिक्त सैन्यदलके आक्रमणसे भी उस समय वह दुर्ग सिखोंकी सहायतासे आत्मरक्षामें समर्थ हुआ था। यह कहना बाहुल्य है, कि बीकानेरका सैन्यदल प्रादेशिक अङ्गरेजी सैन्यकी तरह शुद्धोपकरण-विहीन हो पड़ा था। इसीतरह अङ्गरेजों द्वारा दक्षिणकी ओरसे आक्रान्त होनेपर, धर्म्मकोटके छोटे दुर्गकी भी सिखोंने रक्षा की थी। सरहिन्दके निकटवर्त्ती अन्यान्य रक्षणीय स्थानकी प्रजा सन्त्रस्त हो पड़ी थी; रक्षी सैन्य और दूसरे सैन्यदल वेरोक आगे बढ़ रहे थे; इसी समय उन लोगोंने बाधा पाई। *

---

* शिमलेके पहाड़ी निवासमें कितने ही अङ्गरेज-परिवार वास करते थे। वह शतद्रु नदीके निकटवर्त्ती है; कसौली और सबाथूसे सहज ही यहां जाया जा सकता है। इस समय कुछ सिख-सैन्य और लाहोरके अधीनस्थ सुकेके जागीरदारों द्वारा शिमला-शैलके पहाड़ी निवासके आक्रान्त होनेकी सम्भावना थी। इन सब स्थानोंकी रक्षाके लिये हमेशा जो सैन्यदल रहता था, इस समय वह स्थानान्तरित हुआ था, इतरां विपक्ष द्वारा यह

सन् १८४६ ई०की १७वीं जनवरीको धरमकोट (धर्म्मकोटर) आक्रमण करनेके लिये मेजर जनरल सर हेरिसिथ सैन्य भेजे गये। बिना रक्तपातके ही इस स्थानने आत्मसमर्पण किया। इससे सैन्यदलके लिये रसद भेजनेकी राह साफ हुई। जितने सैन्यदल तोपें, युद्धोपकरण और रसदादि ले फीरोजपुरकी ओर बढ़ रहे थे, उनके लिये इसलिये हेरिसिथने दूसरे पथका अवलम्बन किया था, जिसमें उनपर विपक्षदलकी दृष्टि न पड़े। आनेजानेकी राहमें विपक्षदलने जो बाधा दी थी, उसकी मुक्ति भी उनका दूसरा उद्देश्य था। लेकिन जब मालूम हुआ, कि रणजोरसिंह सैन्यके साथ शतद्रु पारकर लुधियानेपर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़ रहे हैं, तब उन्होंने उस स्थानकी रक्षाके लिये आदेश पाया। २०वीं जनवरीको उन्होंने जगरांव नामक एक वाणिज्य-बन्दरमें छावनी स्थापन की; उनके गिने हुए स्थानसे जगरांव २५ मील दूर था। सन् १८०५ ई०की सन्धिके अनुसार फतेहसिंह अहलूवालियाके पुत्र जगरांवके अधिकारी हुए थे; इस समय उन्होंने वहांके सुदृढ़ दुर्गको अङ्गरेज-सेनापतिको अर्पण किया। इसी समय मालूम हुआ, कि लुधिया-

---

सब स्थान बहुत सहज ही विध्वस्त हो सकता था। लेकिन स्थानीय दृटिश कर्त्तृपक्षोंने एक पहाड़ी राजपूत सैन्य संग्रहकर उनके द्वारा इन सब स्थानोंकी रक्षाका उपाय विधान किया था। इसलिये यह सब स्थान आक्रान्त नहीं हुए, लेकिन सिर्फ आनन्दपुर मखवालके एकदल दुर्दान्त लोगोंकी जनापदस्रोते हुआ था।

नेसे कुछ ही दूर पश्चिम रणजोरसिंहने छावनी स्थापन की है, बद्वालमें उनकी बहुत थोड़ी फौज अवस्थित करी है। जगरांवसे बद्वाल १८ मील दूर अवस्थित था। इस समय चार-दल पैदल, तीनदल घुड़चढ़ी और १८ तोपोंके आ उपस्थित होनेसे अङ्गरेजी सैन्यकी दल पुष्टि हुई। उन लोगोंने गभीर रातमें बद्वालकी ओर यात्रा की। २१वीं जनवरीके सवेरे मालूम हुआ, कि प्राय दश हजार सिख-सैन्य पहले दिन बद्वालकी ओर बढ़ी है। अङ्गरेजी सैन्यके पुरोभागसे यह स्थान इस समय आठ मील मात्र दूर था। सर हेरिस्मिथने विचार किया, कि यदि वह टेढ़ी चालसे दक्षिण ओर आगे बढ़े, तो सिख-सैन्य उनके बांयें तीन मील दूर पड़ी रहेगी; वह वेरीके लुधियानेकी सैन्यदलके साथ सम्मिलित हो सकते थे। युद्धका सरञ्जाम आगे भेजनेके लिये उन्होंने एक स्थानमें थोड़ी देरके लिये विलम्ब किया। तब बन्दोबस्त हुआ,—युद्धोपकरणवाही पशु-पाल सैन्यदलके दक्षिण भागमें समान्तरालभावसे जायगे, इससे सैन्यदल द्वारा व्याहत रहनेपर, बांईं ओरसे उन्हें कोई देख नहीं सकेगा। बद्वालके पास उपस्थित होनेपर अङ्गरेजी फौजने देखा, कि सिख लोग भी उसी भावसे आगे बढ़ रहे हैं। मालूम हुआ, कि अङ्गरेजोंको बाधा देनेके लिये उन लोगोंने मानो टेढ़ी चाल पकड़ी है। लेकिन इस समय युद्ध आरम्भ करना अनु-चित विचार, सर हेरिस्मिथ और भी दक्षिणकी ओर वक्रगतिका अवलम्बन कर आगे बढ़ने लगे; शेष बीचमें अश्वारोही फौजने खड़ी करा, वह पैदल सैन्यदलको ले आगे बढ़े। राहमें उधार होनेसे चारदल पैदल सिपाही क्रमानुसार ही मध्यस्थलसे आ गे

बढ़ रहे थे। लेकिन सिख लोग युद्धके लिये क्षत-प्रतिज्ञ हो अङ्गरेजी घुड़चढ़ी फौजपर गोले-गोलियां बरसाने लगे। इसी समय बालुकास्तूपके पाससे अङ्गरेजी सैन्यदलकी फेंकी हुई तोपोंसे सिख सिपाहियोंका गतिरोध होने लगा। इसी समय पैदल सैन्यदल और उसके पीछे स्थित छोटी घुड़चढ़ी फौज एकत्र सम्मिलित हुई; सिख सैन्यके गोला बरसानेकी क्षतकारिताकी उपलब्धि होने लगी। अङ्गरेज-सेनापतिने विचार किया कि उनके पैदल सिपाहियोंके इस समय गोला बरसाना आरम्भ करनेपर सिख-सैन्य छत्रभङ्ग हो सकती है, उनका सरञ्जाम निर्विघ्न संवाहित होगा और लुधियानेके सिपाही आगे बढ़ सहचरोंकी सहायता कर सकते हैं। उस समय हरेकके मनमें घोर युद्धके होनेकी आशङ्काका उदय होने लगा। लेकिन पैदल फौज जब श्रेणीबद्ध भावसे खड़ी हुई, तो देखा गया, कि कम्मकुशल सिख सिपाही अलक्षित भावसे बालुकास्तूपके पाससे अङ्गरेजी फौजके पीछे तोप दौड़ा ले गये हैं;—उस समय यही मालूम हुआ, कि विपक्ष अङ्गरेजी सिपाहियोंको उन लोगोंने बाईं ओर हटा दिया है। सिखोंने बहुत क्षिप्रताके साथ अविच्छिन्न भावसे गोला बरसाना आरम्भ किया। इससे अङ्गरेजोंकी सब सैन्य मानो एक तरहसे ध्वंस हुई। तोपोंके गभीर गर्ज्जनसे उनका आर्त्तनाद सुनाई नहीं दिया। युद्धक्षेत्र बंध गया; बराबर नौ घण्टे तक अठारह मील राह पर्य्यटनकर सैन्यदल थक गया; सुतरां सहज ही जान पड़ा, इसमें संशय नहीं, कि जय पानेपर भी यह युद्ध साङ्घातिक होगा। पैदल फौज और

सिक्ख अस्वारोही ।

एक बार आगे बढ़ी; घुड़चढ़ी फौजकी दृढ़ता और कौशल बलसे उन लोगोंने लुधियानेकी ओर छिपे छिपे भागनेकी सुविधा पाई। सिख-सैन्यने उनका पीछा किया। कारण, उनके किसी परिचालककी यह इच्छा नहीं थी, कि वह लोग उस समय परिचालक हीन अङ्गरेजी फौजसे पराजित हों। रणजोरसिंहने अपनी फौजको युद्धकार्य्यमें नियुक्त किया था; लेकिन सन्देह है, कि वह उनके साथ युद्धक्षेत्रमें उपस्थित थे या नहीं। उन्होंने इस बारेमें सामान्य चेष्टा भी नहीं की, कि अङ्गरेजी फौज पूरी तरह पराजित हो और सिख-सैन्य जीते। अङ्गरेजोंके सब युद्धके सरञ्जाम अब सिखोंके पास उपस्थित थे; युद्धक्षेत्रमें उनको परिचालनाके लिये कोई नायक नहीं था; सुतरां वह लोग लूटनेका लोभ रोक नहीं सके। भारवाही जितने पशु लुधियानेके पास उपस्थित हो नहीं सके थे, या तोपोंके शब्दसे भय पानेपर जिन्हें कौशलसे जगरांवकी ओर फिरा लिया गया था, वह सब इस समय सिखोंके हाथ आये। उन सब युद्धोपकरणवाही गाड़ियोंके पाने पर सिख लोग अङ्गरेजोंसे तोप छीन लेनेके नमसे आस्फालन करने लगे। *

---

* छिपे परामर्शके लिये जो सभा हुई थी, तारीख १९वीं जनवरी और ३री फरवरीको उस सभामें गवरनर-जनरलने जो पत्र लिखा था, और सन् १८४५ ई०की १ली फरवरीको लार्ड गफके भेजे हुए कागज-पत्रोंको देखना चाहिये। (Compare the Governor-General to the Secret Committee 19th Jan, and 3rd February and Lord Gough's despatch

लुधियाना मुक्त हुआ। लेकिन इस खण्डयुद्धमें अङ्गरेजोंके पराजित होनेसे पतनोन्मुख भारतके राजन्यवर्गोंके हृदयमें बड़े ही आनन्दका सञ्चार हुआ। उनके मनमें आया, कि गुरुगोविन्दके शिष्योंकी साहसिकता और दक्षतासे उनके वैदेशिक प्रभुका भीषण सैन्यबल इतने दिनों बाद विध्वस्त हुआ; स्वदेशके प्रिय सन्तानोंने जय पाई। अङ्गरेजोंके अधीनस्थ सिपाही सैन्यने इसप्रकार आपसमें छिपे छिपे परामर्श करना आरम्भ किया; वह लोग काम छोड़ पूर्व्व अञ्चलमें अपने घरकी ओर भागनेका सुयोग ढूंढने लगे। अङ्गरेजोंके गण्डस्थलमें कालिमाका चिह्न दिखाई दिया; जय पानेकी अपेक्षा संघर्षकी चिन्ताने ही उन्हें आकुल कर डाला। अब गवरनर-जनरल और प्रधान सेनापति अवरोधोपयोगी तोप ले जानेवाली गाड़ियों और युद्धोपकरणादिके रक्षक सिपाहियोंको निरापद रखनेके लिये विचलित हो पड़े। आक्रमणकारी विपक्ष सैन्यके विरुद्ध जितनी सैन्य भेजी गई थी, उनकी रक्षाके लिये और विपक्षपक्षीय सैन्यके आक्रमणजनित क्षतिपूरणके लिये आखिरी व्यवस्थाकी ही इस समय

---

of the 1st February, 1845.) २१वीं जनवरीके खण्डयुद्धमें अङ्गरेजोंकी ओरके ६६ सिपाही मरे और ६८ मनुष्य घायल हुए। ७७ सिपाही खोजनेपर भी नहीं मिले। शेषोक्त संख्यामें कुछ सिखोंके हाथ कैद हुए थे, बाकी औरोंने कुछ दिनोंमें लौट आ हटिश-सैन्यदलमें योगदान किया था। कैदियोंमें मिष्टर बेरन नामक एक डाक्तर (Assistant Surgeon) और कुछ यूरोपीय सिपाही लाहौरसे भेजे गये थे।

जरूरत पड़ी थी। पराजित सैन्यदलके नेताने जीवनव्यापी परिश्रमके बाद, अब कलङ्क-टीका मस्तकपर लिया, शीघ्र ही उनके उस कलङ्कके मोचनकी आशा नहीं रही। दूसरी ओर सिख लोग आनन्दसे उन्मत्त हुए; यूरोपीयोंको कैदीकी अवस्थामें लाहोर ले जानेसे, उनके जयोल्लासकी अवधि नहीं रही। लालसिंह और तेजसिंह मन ही मन डरे। गुलाबसिंह युगपत् मन्त्री और सेनानायकके पदपर अभिषिक्त हुए थे; वह इस समय मन ही मन सोचने लगे, कि उनकी अपेक्षा बहुगुणसे जो लोग श्रेष्ठ हैं, "खालसा" सैन्य उन्हें भी पराजित कर सकती है, वह लोग ऐसे ही दृढ़बल-सम्पन्न हैं। २७वीं जनवरीको वह लाहोर आये, सिखोंके अधिनायकोंके हृदयमें एकता और उत्साहका सम्पादन करना ही उनका उद्देश्य था। * तेजसिंहके सैन्यदलने अशेष उत्साहसे फिर शतद्रु नदी पार किया। पहलेका पुल इसबार बढ़ाया गया था, इससे बृटिश सैन्यदलके सामने सिखोंका एक सुदृढ़ सेनानिवास स्थापित हुआ। सिखोंने फिर शत्रुओंके अधिकारमें जा, युद्ध चलानेका विचार किया। इस समय गुलाबसिंह देरसे आये, —इस समय सिखोंने यशोगौरवके उच्चचूड़ापर आरोहण किया था, लेकिन परवर्त्ती समयमें पराजयसे और अधीनता स्वीकारसे शीघ्र ही उन्हें गौरवभ्रष्ट होना पड़ा।

---

* सिक्री परामर्शसभाके लिये सन् १८४६ ई०की ३री फरवरीका गवरनर-जनरलका पत्र देखना चाहिये। (Compare the Governor-General to the Secret Committee, 3rd February, 1846.

सैन्यदलका उल्लास-व्यञ्जक सुखमण्डल देख जान पड़ता था, कि मानो अपनी सहयोगी सैन्यदलकी मृत्युकी इच्छासे वह लोग अनुप्राणित हुए हैं; हरेक साहसी सैनिक पुरुष ऐसी ही इच्छासे उद्बुद्ध हुए थे। सिपाही लोग जब युद्धमें श्रेणीबद्ध हो खड़े हुए, उस समय प्रतिपक्षगण समान्तराल भावसे खड़े हुए नहीं थे। सिख-सैन्यकी श्रेणी आगेकी ओर बढ़ी थी, और वृटिश फौज दक्षिण ओर फैल पड़ी थी। उनका और एकदल कुछ देरके लिये कुछ दूर पीछेकी ओर अवस्थित था। श्रेणी-बद्धभावसे सैन्य-सज्जाके लिये अङ्गरेजोंने आठ मीलकी राहमें जरा भी विश्राम नहीं किया; लेकिन सिखोंने इस अभावपर भी युद्ध आरम्भ कर दिया। सर हेरिस्मिथने विचार किया,—सबसे पहले अलूवाल ग्रामपर आक्रमण करना ही जरूरी है; दक्षिण ओर पैदल सैन्य इसलिये ही परिचालित हुई थी। इसवार घोरयुद्ध-की सम्भावना उपस्थित थी। सिख लोग दृढ़ताके साथ अवि-च्छिन्न भावसे गोले बरसाने लगे। इस समय सिखोंकी एकदल पैदल सैन्य अलूवालकी रक्षा कर रही थी। वह लोग सत्-स्वभावसम्पन्न थे; लेकिन "खालसाके" प्रति अनुरक्त नहीं थे;—इसलिये ही कुचक्रियोंने उन्हें आगे कर दिया था। अग्निवर्षण आरम्भ होनेपर, वह लोग छत्रभङ्ग हो भाग गये; उनके उस समयके अधिनायक रणजोरसिंह भी भागे। विजयी अङ्गरेजी फौज द्वारा मरनेके लिये ही मानो एकदल साहसी सिख गोलन्दाज फौज रणक्षेत्रमें पड़ी रही। दक्षिण ओरकी वृटिश घुड़चढ़ी फौजने इस समय भीमवेगसे उनपर आक्रमण किया। तब प्रतिद्वन्द्वी सिख-सैन्यका आधा

अंश छत्रभङ्ग हो विताड़ित हुआ। अङ्गरेजी पैदल और गोल-न्दाजोंके विपुल उद्यमपर भी दक्षिण ओरकी वाकी सिख-सैन्य विपक्ष सैन्यको वाधा देने लगी। कारण, उस समय भी युद्ध-क्षेत्रमें स्थायी पैदल सिख-सैन्य श्रेणीवद्ध भावसे खड़ी रही; जो सच्चे सिख हैं, वह सहज ही पराजय स्वीकार क्यों करेंगे? इस समय अङ्गरेज पक्षको फौज ही विशेष उद्यमकी जरूरत पड़ी। एकदल यूरोपीय वल्लमधारी सैन्य वेतनभोगी भारतीय घुड़चढ़ी फौजके साहाय्यसे सिख-पैदल सैन्यपर वेगके साथ गिरी। अङ्गरेज योद्धागणके प्रचण्ड आक्रमणमें पहले सिखोंने वाधा दी। अङ्गरेजी सैन्यने स्वदेशके सम्मान रखनेकी बात याद कर वीरोचित यशःख्याति अर्जन करनेके अभिलाषसे और व्यक्तिगत प्रतिहिंसाकी प्यास बुझानेके लिये अतुल साहससे युद्ध करने लगी। इस सङ्कटके समय गोविन्दकी कितनी ही सुशिक्षित फौज निरुत्साहित हो पड़ी। तब भी सिखोंने युद्ध परित्याग नहीं किया, शत्रुके सामने ही वह लोग असीम साह-सका परिचय प्रदान करने लगे। इसतरह वार वार तीन वार पराजित हो सिख लोग छत्रभङ्ग हुए। अङ्गरेज-पक्षने बहुत विज्ञता और साहसिकताके साथ युद्ध किया, तब भी पराजित पैदल सिख सैन्यकी अपेक्षा अङ्गरेज पक्षकी विजयी घुड़चढ़ी सेनाकी रक्त-रेखासे युद्धक्षेत्र परिपूर्ण हुआ। [illegible] के पीछे फिर सैन्य [illegible] देर हुई सिख लोग बाधा देकर कोई [illegible] न रहे। इसके बाद सिख-सैन्य [illegible], नदीके उसपार विताड़ित हुई, उनकी पताके भी [illegible] लोगें अङ्गरेज लोग [illegible], अङ्गरेज सेनापति [illegible] सिखोंकी तोप

अपमान और सब कष्ट भूल गये; अङ्गरेजोंके जयोल्लाससे दिगमण्डल परिपूर्ण हुआ। *

---

* सन् १८४६ ई०की ३०वीं जनवरीके भेजे हुए सर हेरि-स्मिथके कागज-पत्र और १ली फरवरीके भेजे हुए लार्ड गफके कागज-पत्र देखना चाहिये। (Compare Sir Harry Smith's despatch of the 30th January, and Lord Gough's despatch of the 1st February, 1846., पार्लमेण्टके कागज-पत्र, सन् १८४६ ;—Parliamentary papers, 1846.) इस युद्धमें अङ्गरेजोंकी ओरके १५१ सिपाही मरे और ४१३ सिपाही घायल हुए; २५ सिपाही ढूंढनेपर भी नहीं मिले।

"कलकत्ता-रिविउ" पत्रकी सोलहवीं संख्याके ४६८ पृष्ठसे; मालूम हुआ, कि बद्दवालके युद्धमें पराजित होनेके बाद, सिखोंसे फिर युद्धमें प्रवृत्त होनेके समय सर हेरिस्मिथको कुछ युद्धोप-करणकी जरूरत पड़ी थी। उन सुदक्ष सेनापतिको उत्साह देनेकी कोई जरूरत नहीं थी। जिस समय उनकी साहाय्यके लिये सैन्यदल आ पहुंचा था, उसके और भी पहले उपयुक्त परिमाणसे सैन्यदलनके आ पहुंचनेपर आलूवालका युद्ध बहुत पहले ही आरम्भ हो सकता। यह जरूर उल्लेखयोग्य है, कि "कलकत्ता-रिविउ" पत्रके लेखकने अपने प्रवन्धमें लार्ड गफके प्रति अपनी न्यायपरताका परिचय दिया नहो है, या विशेष विशेष स्थलमें सैन्यदलके "कमसरियट" विभागके प्रति भी उन्होंने न्यायसङ्गत राय दी नहीं है। प्रधान सेनापतिके (Commander-in-Chcif) सम्बन्धमें लार्ड हार्डिञ्जका कोई दोष नहीं

इस युद्धमें जीतना अङ्गरेजोंके लिये बहुत ही समयोचित और सुविधा-जनक हुआ था। इच्छा करनेपर नोचमना गुलाबसिंह अपनी कार्य्यकुशलता और प्रतिभाके गुणसे बहुत

है। इस प्रबन्धमें (४६७ पृष्ठ; See p. 497) यह भी बारबार लिखा गया है। फिर शहरमें सिखोंके प्रति आक्रमणमें जो विलम्ब हुआ था, प्रबन्ध-लेखकके विचारसे लार्ड गफ ही उसके दोषी हैं। वस्तुतः प्रकृत कारणका निर्देश या किसके दोषसे ऐसा हुआ था, इसका परिमाण निरूपण करना बहुत ही दुरूह है। गवरनर-जनरलकी क्षमता और कार्य्यकारिताकी बात सभी स्वीकार करते हैं; सुतरां वह अपने गौरवसे आप ही गौरवान्वित हुए थे। और उनके पक्षके समर्थनके लिये उनके किसी पुराने बन्धुकी त्रुटि स्वीकार करनेकी जरूरत नहीं पड़ी। "कमसरियट" विभागके सम्बन्धमें (४८८ पृष्ठमें—p 488) ऐसा कहा, गया कि छः सप्ताहमें जिन सब रसदोंके संग्रहकी बात थी मेजर ब्राडफुटने छः दिनोंमें उसे संग्रह किया था। "कमसरियट" विभाग केवल रुपये खर्च कर सकता था। चुकतीपत्रके अनुसार चीजोंके खरीदनेकी व्यवस्था कर सकता था या प्रकाश्य हाट बाजारसे द्रव्यादिके खरीद करनेमें सक्षम होता था। लेकिन मेजर ब्राडफुटने कश्मिन सामन्तोंके आदेशमात्रसे रसद द्रव्यादि पाया था। कश्मिन सामन्तोंसे सम्पत्ति जब्त कर लेनेकी बात कह भय दिखा, उसी समय उन्होंने कार्य्योद्धार किया था। एक सामन्तने इसतरह रसद संग्रह करनेसे आपत्ति करनेपर वह अपमानित हुए और उनसे जुर्माना लिया गया,

देरतक युद्ध चला सकते। लेकिन उसके बदले विशाल क्षमता-सम्पन्न अङ्गरेजोंसे दृढ़ताके साथ युद्ध करनेके लिये पराजित सिखोंको वह पहले ही भर्त्सना करने लगे। अन्तमें वह

दूसरे एक सामन्त भी इसी कारण राज्यच्युत हुए थे। यह विषय प्रबन्धलेखकको अवश्य ही जानना चाहिये था, या शायद वह जानते हों। दिल्ली, सहारनपुर, बरेली और अन्यान्य स्थानके अङ्गरेज मजिष्टरगण अपने सीमानेमें शस्य और गाड़ी प्रभृति यदि पूर्व्वोक्तरूपसे जबरदस्ती आक्रमण करनेकी क्षमता पाते, तो कमसरियट-विभागको कभी निन्दाई होना न पड़ता। अधिकन्तु समर-विभागकी जरूरतके मुताबिक द्रव्यादि संग्रहके लिये, यदि समर-विभागके कर्त्तृपक्षगण आदेश पाते, या स्वेच्छाक्रमसे वह लोग काम कर सकते, तो सिख लोग शतद्रु पार करनेसे पहले ही आक्रमण करनेके लिये, फिर भी आत्म-रक्षाके लिये, अङ्गरेज लोग यथोपयुक्त द्रव्यादि संग्रह करनेमें समर्थ होते। जो लोग सामान्य सैनिक मात्र हैं; आर्थिक अभावके अनुभव करनेका उन्हें कोई कारण नहीं था,—यह बात बहुत लोग जानते हैं और साफ बात है, इसे कहना बाहुल्य है। युद्धकी सम्भावना अनुभवकर सिपाहियोंके लिये यथासमय उपयुक्त युद्धोपकरण संग्रह करनेके लिये प्रधानतः लार्ड हार्डिञ्ज दोषी थे। सबसे श्रेष्ठ और सर्व्वाधिक क्षमता-शाली गवरनर-जनरलके साथ ही साथ इस युद्धके व्यापारमें प्रधान सेनापतिका भी (Commander-in-Chief) किसी किसी विषयमें दायित्व है। लेकिन सेनापतिका वह दायित्व

अङ्गरेज दलपतियोंसे सन्धिस्थापनकी व्यवस्था कर बैठे। *
लाहोर-कर्तृपक्षीयोंसे सन्धिस्थापन करनेमें गवरनर-जनरल
सम्मत नहीं थे। वस्तुतः उन्होंने समझा था, कि एकबारकी
चेष्टासे पञ्जाबपर अधिकार करना बहुत ही दुःसाध्य था;
यद्यपि सिख-सैन्य उनकी सैन्यदलकी अपेक्षा किसी तरह
कम नहीं थी; उस असंख्य सैन्यदलको दमनकर, कई महीनेमें
दो राजधानियोंपर अधिकार करना और मुलतान, जम्बू और
पेशावरपर आक्रमण करना बहुत ही कठिन काम है, इससे
विपद्की आशङ्का पद पदपर विद्यमान है। भारतमें अङ्गरेजराज्य
केवल अङ्गरेजी सैन्यकी कार्य्यकुशलता और उनकी संख्यापर
ही प्रधानतः निर्भर करता था। अत्यन्त सुविधाजनक अवस्थामें
भी गरमीके दिनोंमें यूरोपीय सैन्यदल विशेष उत्साहके साथ
काम करनेमें समर्थ होती नहीं थी। उस समय साधारण
भावसे सामरिक पीड़ा उपस्थित होनेसे, सामान्य सैनिक
पुरुषसे हरेक सैन्यदलके कर्म्मचारी सिपाही समूहके लिये
वह सांघातिक हो जाती थी। ऐसी बाधा विपत्तियोंसे भी, उस
समय हरेक भारतवासी उत्तेजित हो पड़ा था, अङ्गरेजोंके मनमें

किसी किसी अंशमें सीमाबद्ध है अवरोधका कौशल और
युद्धकी रीति-पद्धतिके विषयमें उनपर दावा किया जा सकता है।

* गोपनीय परामर्श समितिके लिये सन् १८४६ ई०की १९वीं
फरवरीको गवरनर जनरलने जो पत्र लिखा, यहां उसे भी
देखना चाहिये। (Compare the Governor-General to
the Secret Committee, of the 19th February, 1846.)

उस समय उस बातका ही उदय होने लगा। इस प्रभावके बहुत दिनोंतक वर्त्तमान रहनेसे ऐसा नहीं, कि केवल यमुनाके पार्श्ववर्त्ती स्थानसमूह ही विपदग्रस्त होते, इससे उत्तर पश्चिमके समग्र प्रदेश उत्तेजित हो सकते थे। इन सब प्रदेशोंमें प्रधानतः योद्धाजाति बसती थी, लूटनेके लोभसे या तनखाहकी प्रत्याशासे वह लोग आप ही युद्ध विग्रहके लिये तय्यार थे। विशेषतः देशके शान्त-सुखको टूटते देख वहांकी प्रजा पहलेसे ही हताश्वास हो पड़ी थी। सिन्धु नदकी तीरवर्त्ती प्रदेशोंमें विजय-केतन उड़ानेका सुख-स्वप्न और अलकजन्दरके अधिकृत दूर प्रदेशोंको ब्रटिश राज्यके अन्तर्भुक्त कर लेनेकी ऊंची कल्पनासे गवरनर जनरलका हृदय निःसन्देह उल्लासोत्फुल्ल हुआ था। उनका पहला उद्देश्य था,—अस्त्रबलसे सिखोंको शतद्रु नदीके उस पार विताड़ित करना, या उनके स्वच्छाक्रमसे उनके अपने स्थानमें प्रस्थान करना; सामन्त लोग और सिपाहियोंके प्रतिनिधिवर्ग किसी तरहकी द्विरुक्ति न कर ब्रटिश गवरमेण्टकी अधीनतापाशमें आवद्ध हों। जबतक ऐसा न होगा, तबतक युद्धमें श्रेयः लाभ होना समझा न जायगा। कारण, हिन्दुस्थानके हरेक छोटे सामन्त चुपचाप अपनी स्वाधीनताके लिये तय्यार हो रहे हैं; या अवसरसे वह लोग अपने अपने राज्यकी सीमा फैलानेके लिये उद्योगी हो रहे हैं। लेकिन यदि देशके सामन्त लोग सभी निर्भीकचित्तसे कृतप्रतिज्ञ हो शत्रुताचरणमें प्रवृत्त हों, और देशके सिपाही लोग एकतासूत्रमें आवद्ध हो यदि एक रणकुशल सेनापतिके आज्ञाधीन हो परिचालित होते और भीमवेगसे आक्रमण करते, तो ब्रटिश

गवरमेण्टके सिपाही लोग कभी इतने ज्यादा सुसज्जित सिख-सैन्यको एकबारगी ही पराजितकर उस को पूरी तरह विध्वस्त करनेमें समर्थ न होंगे। यही सोचकर अङ्गरेज लोग आकुल हो उठे। सुतरां इस समय उन लोगोंने गुलाबसिंहसे प्रकट किया, कि यदि पञ्जाबका सैन्यदल विच्छिन्न किया जाय, तो अङ्गरेज लोग लाहोरका सिख प्राधान्य स्वीकार करनेपर तय्यार हैं। लेकिन सिख-सैन्यदलको भङ्ग करनेके सम्बन्धमें गुलबसिंहने अङ्गरेजोंसे अपनी अक्षमता प्रकट कर कहा, कि वह खुद भी इस समय सैन्यदलके भयसे अत्यन्त भीत हुए हैं; यहां तक कि रणजित् सिंहके परिवारके मङ्गलाकांक्षी पुरुष भी सैन्यदलके भयसे सन्त्रस्त हैं। वस्तुतः स्वार्थ-साधनके लिये ही राजाने अपनी असहाय अवस्थाकी बातको अङ्गरेजोंसे कुछ अतिरञ्जित भावसे वर्णना की। धीरे धीरे समय सङ्कीर्ण हो आया. उस समय अङ्गरेज नामका गौरव रखनेके लिये लाहोरके साथ बहुत जल्द एक सन्धि स्थापन की जिससे अङ्गरेजोंके लिये सभी उपलब्धि कर सके। अन्तमें दोनो पक्ष एकमत हो एक सिद्धान्तपर उतरे। स्थिर हुआ, कि अङ्गरेज लोग सिख-सैन्यपर आक्रमण करेंगे; उसमें सिख-सैन्यके पराजित होनेपर लाहोर-गवरमेण्ट प्रकाश्य-भावसे उन्हें परित्याग करेगी। वह लोग अपनी गवरमेण्टसे किसी तरहकी सहायता न पावेंगे। और भी स्थिर हुआ, कि शतद्रु नदीके पार करनेके समय अङ्गरेजोंको कोई बाधा न देगा और विजयी अङ्गरेज लोग जिससे बे रोक टोक सहजमें लाहोरमें पहुंच सकेंगे, उसकी सब व्यवस्था यहांके लोग निर्दिष्ट कर देंगे। इसतरह की नृशंसतासे लबालब षड़यन्त्रमें; और

आत्मरक्षणोपयोगी नीतिके अनुसार सुबरांवका युद्ध संघटित हुआ था। *

शतद्रु नदीके पूर्व्व तीरस्थित परिखावेष्टित दुर्गमें धीरे धीरे बहुसंख्यक सिख-सैन्य का समवेत हुई। उस समय देख गया, कि अधिकांश सिख-सैन्य इस दुर्गमें अवस्थित हैं। प्रबल उद्दीपनाके साथ ही साथ प्रबलतर भाव उन लोगोंने उस दुर्गका आयतन धीरे धीरे बढ़ाया था। उस दुर्गप्राकारसे चारों ओर ६७ तोपें सुसज्जित अवस्थामें रखी दिखाई दीं। उस समय पैंतीस हजार सिख-सैन्य उस दुर्गमें अवस्थिति करती थी। सम्भवतः उनकी असल सैन्य-संख्या २० हजारसे अधिक नहीं थी; अधिकन्तु उस परिवर्त्तित सैन्य संख्याका अधिकांश ही स्थायी सैन्य नहीं थी। इस दुर्गकी बनावटमें कौशलका अभाव था। सिपाही और सेनापतियोंमें एकता नहीं थी। इस बहुकालव्यापी युद्धके समय हरेक युद्धमें सिपाही लोग प्राणपातकी चेष्टा कर रहे थे, लेकिन सेनापतियोंने किसी तरहके रणनैपुण्यका परिचय नहीं दिया। वह लोग सब समय और

---

* सन् १८४६ ई०की १९वीं फरवरीको गुप्त मन्त्रणा सभामें गवरनर जनरलने जो पत्रादि भेजे, वहां उन्हें ही देखना चाहिये। (Compare the Governor-General's letter to the Secret Committee of the 19th February, 1846.) गुलाबसिंहके साथ सन्धिके प्रस्तावमें जो पत्रादि लिखे गये, उनमें केवल मात्र गुलाबसिंहके साथ बन्दोबस्तकी बात ही लिखी है। मूल ग्रन्थमें नहीं लिखा गया है।

उस अवस्थामें निपट निश्चल भावमें कालयापन किया था। सिख-
सैन्यमें कर्मी लोगोंका और साहसी पुरुषोंका अभाव नहीं था,
कार्य्यकुशल सैन्य भी उनमें बहुत ज्यादा थी। लेकिन उन सब
सैन्यको परिचालना या उनको उत्साहित करनेवाला कोई
नहीं था;—हरेक निम्नपदस्थ सेनानायकोंने अपने अपने रण-
नैपुण्य और शक्तिसामर्थ्यपर निर्भरकर यथासाध्य सैन्यके अगले
भागको रक्षा की थी। सैन्य-श्रेणीके केन्द्रस्थलमें और बाईं
ओर प्रधानतः शिक्षित पैदल सैन्य थीं, एक मनुष्यकी ऊंचा-
ईकी बराबर ऊंचे स्थानमें उस सैन्य श्रेणीके केन्द्रस्थलमें और
बाईं ओर कतारकी कतार तोपें सुसज्जित थीं; उस ऊंचे स्थानसे
युद्ध करनेसे, सिखोंको बहुत सुविधा हुई थी। सैन्य-श्रेणीकी
पुरोभागको विस्तृत परिखा बिना आयास उल्लंघनकर उस
परिखाका लांघना सशस्त्र सैनिक पुरुषोंके लिये अत्यन्त दुरूह
था। सत्य समयपर सैन्य-श्रेणीके अधिकांश लोग उस बांध या
परिखाके अन्तरालमें अवस्थानकर देख रही थी, कि वहां किसी
प्रहरीके न रहनेपर भी, लक्ष्यभेदी अव्यर्थ-सन्धान गोलन्दाज
फौज वहां निर्विघ्न आश्रय ग्रहण कर सकती है; और वहां
उनके विपक्षकी आशङ्का भी बहुत कम थी। दक्षिण पार्श्वस्थित
सैन्यदल प्रधानतः ऐसाही भाव प्रकाश करने लगी, नदी तीर-
वर्ती बालुका राशिकी [illegible] अवस्थाके कारण वहां किसी
तरहकी प्राचीर उठाना या बनाना भी सहजसाध्य नहीं था,
विशेष खोदने और परिश्रमके बिना इस स्थानमें प्राचीरका
बनाना असम्भव था। ये लोग स्थायी सैन्यदलभुक्त नहीं थे,
यह लोग ऐसी असुविधाके प्रतिकार करनेमें असमर्थ थे वह सब

अशिक्षित अनियमित सिख-सिपाही उनके सङ्कट-स्थलमें स्थापित हुए थे। दक्षिण पार्श्वमें स्थित सैन्यदलके प्रहरीस्वरूप दो सौ "जम्बूरक" या शिकारी फौज उनके पीछे खड़ी थी। लेकिन इस सैन्यदलने तोपोंसे भी बहुत कुछ साहाय्य पाया था; अधिकन्तु शतद्रु नदीके उसपार जितनी तोपें थीं उन्होंने भी इस सैन्यदलकी अनेकांशमें सहायता की थी। * तेजसिंह इस दुर्गस्थित सैन्यके सेनापति थे; और शतद्रु नदीके उस ओर भी उत्तरांशमें लालसिंह बहुत असम्बद्धभावसे एकदल घुड़चढ़ी फौजकी परिचालना कर रहे थे। सङ्करेजोंकी एकदल घुड़चढ़ी फौज लालसिंहकी गतिविधि और कार्य्यकलापका पर्य्यवेक्षण

* साधारणतः सबका विश्वास था,—सुबरांव दुर्ग-परिखा बनानेमें दोनोंका परामर्श था। एक फ्रांसीसी सेनापति और एक स्पेनीय सेनापति दोनोंने परामर्श कर इस दुर्गकी परिखा बनाई थी, लेकिन इस बातपर विश्वास किया जा नहीं सकता। यह राय भी विश्वासयोग्य नहीं है, कि फ्रांसीसी और इटाली सेनापतियोंकी शिक्षा-चातुर्य्यसे सिख-सैन्य रणनिपुण और कार्य्य-कुशल हुई थी। साहसी स्पेनीयवीर हरबन और फ्रान्सीसी सेनापति मौतन उस समय सुबरांवमें थे, और इसमें सन्देह नहीं, कि उन लोगोंने यथासाध्य चेष्टा भी की थी। लेकिन वह लोग एकदल "रेजिमेण्ट" और एकदल "ब्रिगेड" सैन्यदल-पर आधिपत्य फैलानेमें समर्थ हुए थे; इनके सिवा और कहीं भी उनका प्रभाव नहीं फैला। लेकिन सैन्य-श्रेणीमें कभी वैज्ञानिक कौशल या मतकी एकता दिखाई नहीं दी।

कर रही थी। अहलूवालके युद्धके बाद सिख-सैन्य कुछ निरु-त्साहित हो गई थी। निर्म्मल-सलिला शतद्रु के प्रखर-स्रोतमें नाचती हुई जितनी लाशें उतरा जाती थीं, उन सब मारे हुए सिख-सिपाहियोंकी ओर दृष्टिपातकर वह लोग और भी मर्म्मा-हत हुए थे। यह सोचकर, कि स्व-देशवासी, स्व-धर्म्मावलम्बी, सहचर और समव्यवसायी सिखोंके उतराती हुई मृत-देहको प्रति किसी तरहका वीरोचित सम्मान दिखाया नहीं गया, वह लोग अधिकतर क्षुब्ध होने लगे। लेकिन आत्मविश्वासी सिख-सैन्यका वह आत्माभिमान फिर हृदयमें जागा। इसी समय अङ्गरेजोंका बनाया एक परिदर्शन मञ्च सिखोंके हाथ आया। उस रात वहां कोई अङ्गरेज प्रहरी नहीं था। उस स्थानपर अधिकारकर इस समय अङ्गरेजोंके सुरक्षित स्थानके निकट सिख सैन्य अपना रणनैपुण्य और सामरिक कौशल दिखाने लगी। इतनेपर भी वह प्रवीण और विचक्षण पुरुषोंको विचार -शक्तिके प्रति कभी उपेक्षा दिखा नहीं सके। इससमय सिख जातिके अदृष्टमें जो विपत्पात अवश्यम्भावी थी, उसकी घोर विभीषिका मयी मूर्त्ति आप ही उनके मनमें उदय होने लगी। पारिवारिक विप्लव या वैदेशिक जातिकी अधीनता-पाशसे परि-त्राण पानेका और कोई उपाय ही वह लोग देख नहीं सके। "अटारी" सम्प्रदायके मुख्यकेश सामन्त श्यामसिंहने स्वदेश और स्व-जातिके शत्रुओंके साथ इस युद्धमें मरनेमें कृतसङ्कल्प हो अपना अभिप्राय प्रकट किया। इसतरह गोवि-न्दकी मुक्तात्माकी तुष्टिसाधनने, वृद्ध श्यामसिंह अपना जीवन उत्सर्ग करनेपर तय्यार हुए। उनके मनमें आया, कि गोविन्दके

साम्राज्य-तन्त्रके निगूढ़ उद्देश्यके साधनका यही उपाय है।

वृटिश छावनीमें अङ्गरेज सिपाहियोंके उत्साहकी सीमा नहीं रही। उस समय भी अङ्गरेज-सैन्यके हृदयमें पूरा विश्वास था ;—इङ्गलण्डकी भाग्यलक्ष्मी सुप्रसन्न है। इङ्गलैण्ड परिणामकी चिन्ताकर, अङ्गरेजपक्षीय सिपाहियोंके मनमें उस समय जरा भी हताशका चिह्न दिखाई नहीं दिया। अङ्गरेजोंने इस बार बाल्में विजय पानेके बाद सबने ही आशाकी उच्च दृढ़ता प्रारोहण किया था, और सिपाहियोंका उत्साह दूना बढ़ गया था। फरवरी महीनेके प्रारम्भमें ही दिल्लीसे दुर्द्दमनीय अवरोध सैन्य और तोपें आ गईं। इसी समय बहुत ज्यादा युद्धोपकरण भी दिल्लीसे संग्रह हुआ था। महाप्रतापशाली हाथी अपनी सूंड़ से प्रकाण्ड प्रकाण्ड गुरुभार तोपोंको स्थानान्तरसे खींच कर लाये ; इससे अङ्गरेज-पक्षीय सिपाही सैन्य अनुपम आनन्द उपभोग करने लगी। इधर अङ्गरेज जातिके वर्द्धित साम्राज्य प्रतिष्ठाका निदर्शनस्वरूप भयावह तोपोंकी श्रेणी देख, अङ्गरेजी सिपाहीका अन्तःकरण गर्व्वसे स्फीत हो उठा था। तब सबने ही स्थिर किया, कि १०वीं फरवरीको सिक्ख-सैन्यके आवास्थान दुर्गपर आक्रमण करना पड़ेगा। सिक्ख अङ्गरेजी-सैन्यके दिलमें बदला लेनेकी आशा बलवती हो उठी। सुतरां पूरी विजय पानेमें कृतनिश्चय होनेके लिये सैनिकगण विविध उपायका उद्भावन करने लगे। अङ्गरेजी गोलन्दाज फौजके अफसर या कर्म्मचारी सिपाहियोंके मनमें आप ही उदय हुआ, कि रुसीनियरोंके प्रवर्त्तित प्रचलित नियमके अनुसार [illegible]

मुसलमान सिपाही। गुर्खा सिपाही।

कौशलसे तोपोंकी परिचालना करना चाहिये और असहाय पैदल सिपाहियों द्वारा विध्वस्त होनेसे पहले ही विपक्षके दुर्ग-प्राचीरको सामनेसे तोड़ दुर्गके पास और पीछेसे दुर्गमें प्रवेश करना चाहिये। लेकिन विचारक्षम, अधैर्य्य सेनापतियोंको यह उपाय प्रणाली अच्छी जान नहीं पड़ी। उन लोगोंने मनमें सोचा, कि इसतरहके आक्रमणकी प्रणाली दूरदर्शिताकी परिचायक है सही, लेकिन बड़ी ही क्लेशजनक है। उस समय उन लोगोंने स्थिर किया, कि शत्रुपक्षीय प्राचीरके पुरोभाग स्थित किसी निर्दिष्ट स्थानमें कतारकी कतार कितनी ही तोपें संस्थापित होंगी; जिस समय निरवच्छिन्न गोलागोलियोंके बरसनेसे सिख लोग विचलित होंगे, और उनका दुर्गप्राचीर ध्वंसप्राय होगा, तब प्रभूतबलशाली तीन सुसज्जित सैन्यदल श्रेणीबद्ध हो विपक्ष दुर्गके दक्षिणभाग या अरक्षणीय दुर्बल अंशपर आक्रमण करेगा, उस समय उस तीन सैन्यदलकी मोटी संख्या १५ हजार हो गई थी। इसी समय वृहत एकदल घुड़चढ़ी फौज लालसिंहकी गतिविधि देखनेके लिये नियुक्त हुई। इसलिये अङ्गरेजोंके दो सैन्यदल सुसज्जित अवस्थामें फीरोजपूरके पास रहे, जिससे इस युद्धमें जय पाते ही अङ्गरेजी सैन्य बाहुबलसे शतद्रु पार करनेमें समर्थ हो। इसका ठीक वृत्तान्त किसीसे प्रकाशित किया नहीं गया, कि किस उपायसे और कैसे सिखोंपर आक्रमण करना होगा। कारण, अङ्गरेज पक्षकी असतर्कतासे और चपलतासे जिस परिदर्शनस्थानपर पहले सिखोंने अधिकार कर लिया था, उससे सिखोंको एकदम हिला कर डालनेके लिये ही यह उपाय अवलम्बित हुआ था। इसी प्रकारसे तीसरे पहर और

शाम इसी तरहके आयोजनमें ही बीत गई, सभी इसके लिये व्यस्त रहे। जिन सब सैन्य-छावनीकी अबतक कोई सैन्य युद्धमें नियुक्त नहीं थी, वहांसे भी आकर सैन्य सम्मिलित हुई। सिपाही लोग श्रेणीबद्ध हो खड़े हुए; वीरत्व प्रकाश करनेमें जैसा कर्त्तव्य साधन करना चाहिये, सिपाही लोग उसकी आलोचना करने लगे; आदेश ग्रहण आदेश प्रकट करनेके लिये अफसर या कर्म्मचारी सिपाही क्षिप्रकारिताके साथ अश्वकी परिचालना कर रहे थे। उस रातको सामान्य विश्रामके लिये या मुहूर्त्तमात्र निर्जन परामर्शके लिये किसीको भी अवसर नहीं था। हमेशा फौजके पीछेकी फौज युद्धक्षेत्रकी ओर बढ़ रही थी। हमेशा गोलेका शब्द और अस्त्रकी झङ्कार सुनाई देती थी; उस अनल-ग्रंथको उज्ज्वल रोशनीमें शक्तिगण धीरे धीरे पैर रख रहे थे। उस दृश्यसे अमर कवि शेक्सपियरके प्रतिभाके प्रभाव चिरस्मरणीय एजिनकोर्टके युद्धके प्रारम्भमें, वीर नृपतिकी स्मृति आपही आप मनमें उदित होने लगी। *

धीरे धीरे रजनीके घोर अन्धकारसे दिङ्मण्डल छा गया। प्रकृति देवीने मानो नीलाम्बर पहना। घोर अन्धकार था; अधिकन्तु अनन्तव्यापी तूफानसे अन्धतमसाच्छन्न रजनीका घोर अन्धकार मानो और भी गभीर हुआ था। इस भयावह रजनीमें निःशब्द पदविक्षेपसे वृटिश-सैन्य-श्रेणी धीरे धीरे आगे

* Shakespeare Henry v. Act. iv. Chorus. अनुवादका पञ्चविंश परिशिष्ट देखना चाहिये।

बढ़ रही थी। वाञ्छित सेनानिवासमें पहुंच अङ्गरेजोंने वहां कोई सिख-सैन्य नहीं देखी। मालूम हुआ, कि सिख लोग सब जगह ही भय-विस्मयसे अभिभूत हुए हैं। जब आक्रमणका समय आया, तो सिख-लोग समूह विपदकी उपलब्धि करने लगे, सिखोंकी छावनीमें घोर आर्त्तनाद उपस्थित हुआ। इसपर भी वह सब युद्धके लिये अस्त्र शस्त्रसे सुसज्जित होने लगे। सूर्य्योदयके साथ ही साथ अङ्गरेजपक्षने अग्निवर्षण आरम्भ किया; विपक्षदलके अधिकांश सैन्यपर प्रायः तीन घण्टेतक बराबर अग्निवृष्टि हुई। घूमते हुए गोलोंके प्रचण्ड आघातसे प्रकट चूर्णविचूर्ण होने लगे; राशि राशि बालुकास्तूप विध्वस्त हो हवाके साथ अनन्त आकाशमें मिल गई; शून्यगर्भ गोला-समूह सिख-सैन्यके सामने निपतित हो विदीर्ण होने लगे; उसमेंके सञ्चित अस्त्र-शस्त्रके सिख-सैन्यमें निक्षिप्त होनेसे, सिख-सैन्य विपर्य्यस्त होने लगी। लक्ष्यभ्रष्ट "रकेट" (हवाई बाजी जैसे अस्त्रविशेष) अस्त्रने भीमवेगसे शून्यमार्गमें रह रहकर सैन्यस्रोतमें निपतित होना आरम्भ किया। लेकिन अङ्गरेजपक्षकी इतनी चेष्टा, इतना उद्यम, सभी नष्ट हुआ, सिख सिपाही किसी तरह भी निरुत्साहित या भीत, विचलित नहीं हुए। वह लोग अस्त्राघातके बदले अस्त्राघात करने लगे; उन्होंने अग्नि विनिमयसे अग्निवर्षण करना आरम्भ किया। सुसज्जित सैन्यश्रेणीके अस्त्रसमूहकी विद्युत्‌चमकसे युद्धक्षेत्रमें उज्ज्वलभाव धारण किया। वह दृश्य कैसा ही मनोहर था। गन्धकमय धूमराशि उठकर कभी दिग्भागोंको आच्छन्न कर डालती थी कभी उज्ज्वलतर लोहितवर्णकी बज्र-कठोर तीक्ष्ण

रश्मिसे और प्रखरप्रभा पीतलके बने असिकोष और वर्मकी असाधारण चकाचौंधसे आंखें, झापक जाती थीं;—सिपाहियोंका मुखमण्डल उज्ज्वलसे उज्ज्वलतर भाव धारण करता था। गुरुभार तोपोंके गभीर गर्ज्जन और धीर प्रतिध्वनिसे उस मनोमुग्धकर दृश्यका सौन्दर्य्य और भी बढ़ता था। जयेच्छु कष्टसहिष्णु सैनिक पुरुषोंके कर्णकुहरमें वह ध्वनि प्रविष्ट हो, उनकी हृदयके उत्साहको और भी बढ़ाने लगी। लेकिन, सूर्यदेव जैसे जैसे अपनी राहपर आगे बढ़ने लगे, समय बढ़नेके साथ ही साथ अङ्गरेज पक्षके सबको ही मालूम हुआ, कि बहुदूरवर्त्ती स्थानसे अनिर्दिष्ट-भावसे अग्निवर्षण करनेपर, कोई सुफल न होगा, केवल निरवच्छिन्न भावसे युद्ध ही चलता रहेगा। सुतरां युद्ध जय पानेके लिये सम्मुखसमर-कुशल वीरहृदय पैदल सैन्यका आक्रमण ही यहां विशेष कार्य्यकारी होगा। अतएव कुछ देरके लिये अग्निवर्षण निवृत्त हुआ; हरेक योद्धा भावी युद्धके लिये सुसज्जित होने लगे। वृटिश-सिपाहियोंके दिल ही दिल एक तेजःगर्व्वशालिनी महाशक्ति आप ही आप जाग उठी थी, उस शक्तिने उनके हृदयमें उत्साह और आशाको रोशनी फैलाई थी, उनके दीप्तप्रभ रक्तायतलोचन और अस्त्रधारणमें दृढ़मुष्टि ही उस तेजःशक्तिकी तेजःशक्तिका प्रकृष्ट निदर्शन है। वृटिश सैन्यके बांई ओरकी फौज युग्म प्रथाके अनुसार बहुत ही मृदुमन्द पद विक्षेपसे आगे बढ़ी। लेकिन अङ्गरेजपक्ष पहले ही एक भूल कर बैठे सैन्यदलके अधिनायकोंने हरेक सैन्यदलको अ श्रीबद्धभावसे खड़ा करा, अपने सैन्यव्यूहकी रचना की थी; सुतरां अङ्गरेजी फौज

सिख-सैन्यके बराबरकी हो नहीं सकी ; ऐसे आक्रमणसे अब-तक युद्धका होना सम्भव था, उसकी अपेक्षा अधिक समय अतिवाहित हुआ। विपक्ष सिखोंके अव्यर्थ सन्धानसे अङ्गरेज पक्षीय सैन्य विशेष व्यतिव्यस्त हो उठी ; सिखोंके हरेक अस्त्रक्षेपसे विशाल अङ्गरेजी सैन्यके अधिकांशने ही मृत्युका आलिङ्गन किया ; सिखोंके सांघातिक "मस्कट" घूमती हुई तोपोंके नियत अग्निवर्षणसे और सिख गोलन्दाज फौजके आक्रमणसे अङ्गरेजी सैन्यके अधिकांशने ही पीठ दिखा दी, कोई कोई पीछे हट गये। वामपार्श्वके प्रान्तभागमें अङ्गरेजी सिपाहियोंने दुर्गके बाहरकी परिखा पारकर दुर्ग प्राचीरके पीछेसे प्रवेश किया। लेकिन उस स्थानपर अधिकार करनेका कोई फल नहीं हुआ। इधर दक्षिण पार्श्वमें उनके सहचरगण बहुत कुछ जय पाकर उत्साहित हुए सही, लेकिन पीठ दिखानेके वृश्चिक-दंशनसे वह लोग जर्जरित होने लगे ; उनके क्रोध और क्षोभकी अवधि नहीं रही। अङ्गरेज पक्षीय सिपाही लोग स्वाभाविक उत्तेजनावश विभिन्न दलमें (Wedges and Masses) विभक्त हुए, अन्तमें क्रोधोन्मत्त हो एक प्राज्ञ और निर्भीक वीर सेनापतिके अधिनायकत्वमें वृटिशवाहिनी प्रबल वेगसे सिखोंपर टूटी। * एक विकट चीत्कार ध्वनिसे वृटिश सिपाहियोंने परिखा लांघी, दुर्गकी चारों ओर प्राचीरपर चढ़ अङ्गरेजप-

---

* दुर्ग परिखाके पास जब सर बराट हिफ अनुरागी सिपाहियोंको उत्साहित कर रहे थे, उस समय वह सांघातिकरूपसे घायल हुए

पक्षीय सिपाहियोंने सिखोंकी कितनी ही तोपोंपर अधिकार किया; युद्धमें अङ्गरेजोंकी जय हुई। लेकिन इस युद्धमें अङ्गरेजोंको बहुत आयास स्वीकार करना पड़ा था, सिखोंने ऐकान्तिकताके साथ और दृढ़प्रतिज्ञताके साथ अटलभावसे युद्ध किया; उनकी तोपें श्रान्त और क्लान्त आक्रमणकारियोंको विध्वस्त करने लगीं। उस समय केवल परिखाका प्रान्त या किनारेकी भूमि अधिकृत हुई थी, लेकिन इस परिखाका प्रान्त भी एक मुहूर्तमें अधिकृत नहीं हुआ। प्रथम आक्रमणकारियोंके विध्वस्त होनेपर केन्द्रस्थित सैन्य दलके पुरोभागमें आनेका आदेश दिया गया। यह सब प्रहरी सिपाही श्रेणीबद्ध हो उन ऊंची दुर्ग प्राचीरकी ओर दौड़े थे; सामान्य मेड़की अपेक्षा यह प्राचीर बहुत ऊंची थी और बहुत लम्बी चौड़ी थी; उस प्राचीरके लिये ही अङ्गरेजी फौजका पहला आक्रमण व्यर्थ हुआ। विजय-गर्व्वित सिखोंका अग्निवर्षण न सहकर श्रेणीका अङ्गरेजी फौज भी पीछे हटी थी। लेकिन इसके बाद उन लोगोंने फिर एकचित्त हो सिखोंपर आक्रमण किया। प्रायः एक फर्लांग या ४५० हाथ परिमित दूरवर्त्ती स्थानसे सिखोंपर आक्रमणकर बृटिश सैन्य अपने स्वाभाविक वीरत्व और चरित्रकी ऊंची शिक्षाका परिचय देनेमें समर्थ हुई थी। दूसरी बार आक्रमणके समय परिखाके पीछे विजयी प्रथम श्रेणीके आनेसे आक्रमणकारी बृटिश फौज बहुत ही उत्साहित हुई थी। इस घोरतर युद्धके अन्तमें केन्द्रस्थित सैन्यदलने पुरोभाग स्थित विपक्षपक्षीय कितनी ही तोपोंपर अधिकार कर लिया। बृटिश सैन्यके दूसरे दलके इस अभावनीय पीठ दिखानेसे और

पहले दलके घोरतर युद्धाभिमानसे शायद कोई प्रत्यक्षवादी आप ही विजय पानेके परिवर्त्तनशील विभिन्न कारण और अवस्थापरम्पराके विषयकी चिन्ता करनेमें प्रवृत्त हो सकते हैं। लेकिन सभी सेनानायकोंने समवेत हो क्षिप्रकारिता अवलम्बन की थी। अहलूवालके युद्धमें विजयी सिपाही, दक्षिण ओर रह अपने सामनेके सिपाहियोंपर आक्रमण करनेमें उद्यत हुए थे। अन्यान्य समस्त अंशके आक्रान्त होनेसे निर्भीक वीरपुरुष सभी ध्वंस-मुखमें पतित हुए। स्थान स्थानमें स्तूपाकार मृत सैनिक-देह पतित हुई; पहली श्रेणी दूसरी श्रेणीके ऊपर गिरी। यह दूसरा सैन्यदल निर्भीक चित्तसे विपक्ष वृटिश सैन्यपर आक्रमणके लिये आगे बढ़ रहा था। अब वृटिश सैन्यके दो दल एकत्र मिल गये; अन्तमें वृटिश सैन्य विशृङ्खल भावसे भीमवेगसे विपक्षदलपर आक्रमण करने लगी, उस समय दूसरे दलने अपनी लुप्त-ख्यातिका पुनरुद्धारसाधन किया; विपक्ष सिखोंके शिविरमें जलस्रोतकी तरह वृटिश घुड़चढ़ी फौज आ गिरी; उन लोगोंने बाईं ओरसे जा आगेकी सैन्यमें योगदान किया, सुतरां परिश्रान्त अङ्गरेजी पैदल सैन्यकी अपेक्षा उनका सैन्यबल अनेक अंशमें बढ़ गया।

इसतरह सिखोंके दुर्गकी परिखा सर्वत्र ही उन्मुक्त हुई। वृटिश-सैन्यकी गोले-गोलियोंके आघातसे दुर्ग कई जगहसे ही टूट गया। लेकिन सुलज्जित तोपोंकी श्रेणीके परिचालक सिख-सैन्यने उस समय भी वश्यता स्वीकार नहीं की। दुर्गके भीतर कितने ही साहसी सिपाही दिखाई दिये; वह लोग प्रति विपत्पातमें ही हरेक विपक्षा अवसर देख सुयोगका

गर्व्वके साथ न्टटुमन्ट पदविक्षेपसे औवसे चले गये : लेकिन न्टव अवधारित जानकर भी अधिकांश सिख-सैन्यने भीमवेगसे विपुल अङ्गरेज-वाहिनीके सामने ही खुशी खुशी पूर्णविसर्ज्जन किया। पराजित सिखोंका अदम्य साहस उत्साह और वीरत्व देख विजयी ब्रटिश सैन्य विस्मयाविष्ट और हतबुद्धि हुई ; असहाय मुमुर्षु सिपाहियोंकी इच्छा-व्यञ्जक निष्फल भ्रुकुटी भङ्गीमवसे ब्रटिश सैन्यने फिर उनकी प्रति अस्त्र निक्षेप नहीं किया। लेकिन सैन्यके अधिनायक लोग तब भी अपना उद्देश्य-साधन करनेमें समर्थ नहीं हुए। सुतरां वीरोचित प्रतिहिंसा वृत्तिके चरितार्थके साधनोद्देश्यसे ही, सैन्यके अधिनायक गोलन्दाज सिपाहियोंको शतद्रु नदीके प्रखर-स्रोतमें उतारनेके लिये जिद करने लगे। जो सैन्यदल अबतक उनके प्रभुत्वको क्षमतापर घृणाके साथ उपेक्षा करती आती है, निश्चितरूपसे उन सिखोंका ध्वंससाधन करना ही अधिनायकोंका प्रधान उद्देश्य था। लेकिन महाकाव्यमें वर्णित देव-देवीने कभी जीवन्त वीर पुरुषोंको प्रपीड़ित विपर्य्यस्त स्रोतस्विनीके पङ्किल सलिलमें उत्सर्ग किया नहीं है। कितनी ही न्टतदेह स्तूपा-कारमें पतित होनेसे स्रोतस्विनीका परिरोध हुआ और भागनेवाले हताहत सिपाहियोंके रक्तसे नदीके जलने लोहित-वर्ण धारण किया।

चिरकीर्त्तिके अर्ज्जनका अभिलाषी वीरस्वभाव

इसी तरह प्रतिहिंसा-वृत्तिको

चरितार्थ करता है।

उस समय गेहब्रन्दकी प्रतिहिंसा वृत्ति पूरी तरहसे चरितार्थ

हुई। धूलिराशि, धुंवा और मृतदेह परिष्टत सिपाही लोग क्षणकालके लिये स्पन्दहीन अवस्थामें खड़े रहे। अन्तमें विजय पानेके माहात्म्यके आप ही मनमें उदय होनेपर सिपाहियोका मनोभाव आप ही प्रकट हो पड़ा। वारबार जयध्वनि उच्चारणकर सिपाही लोग विजयी सेनापतियोका अभिवादन और अभिनन्दन करने लगे। *

---

* सन् १८४६ ई०की १३वीं फरवरीको लार्ड गफने गवरनर जनरलके पास जो कागजात भेजे, यहां उसे ही देखना चाहिये। मेक्रिगरका "सिख-इतिहास" द्वितीय खण्ड, १५४ पृष्ठ इत्यादि। (Compare Lord Gough's despatch of the 13th February, 1846; and Macgregor's 'History of the Sikhs' ii. 154. &c.) इस युद्धमें वृटिशपक्षके ३२० मनुष्य मरे और २०६३ मनुष्य घायल हुए। सिखोंकी ओरके सम्भवतः ५,००० पांच हजारसे भी अधिक मनुष्य मरे। सम्भवतः मरे हुए सिख-सिपाहियोंका परिमाण,—८,००० आठ हजार है। अङ्गरेजोंके कागजपत्रमें जो हिसाब दिया गया है, वह इस हिसाबसे कम जान पड़ता है।

भारतके प्रधान अङ्गरेज-सेनापतिके हिसाबसे सिख-सैन्यका परिमाण ३० हजार था। हमेशा कहते हैं, कि उस दुर्गमें सिखोंकी १६ रेजिमेण्ट या सैन्यदल रहता था। लेकिन परीक्षा और दुर्गप्राचीरमें २० हजार परिमित सैन्य थी या नहीं, यह सन्देहमूलक है। आक्रमणकारी अङ्गरेज सैन्यका परिमाण उस समय १५ हजार निर्दिष्ट हुआ था।

जिस दिन युद्धमें विजय हुई; उस दिन रातमें हार्डिंज सैन्यने फीरोजपुरके सामनेसे शतद्रु नदी पार किया। वहां उन लोगोंने शत्रुपक्षके किसीको भी नहीं देखा। १८वीं फरवरीको सिपाही कसूरके दुर्गपर अधिकार कर बैठे; यहां उन्हें किसीने बाधा नहीं दी। दूसरे दिन यह सैन्यदल इतिहास-प्रसिद्ध उस प्राचीन नगरमें छावनी सन्निवेशकर बैठी। उस समय सबने अनुमान किया, कि २० हजार सिख सैन्य अमृतसरके अञ्चलमें समवेत रूपसे अवस्थिति करती है। लेकिन खालसाके समस्त प्रतिनिधिवर्गोंमें या खालसा सिपाहियोंमें वह पहलेकी समता नहीं थी। धन, सम्पत्ति, कार्य्य, और युद्धोपकरण प्रभृति जिनके कर्तृत्वाधीनमें थे, उनके मतसे उदासीन रहनेसे सिख-सैन्य पराजित हुई; उन लोगोंने प्रकारान्तरसे सिख-सैन्य ध्वंस-साधन किया अन्तमें वह लोग विपक्ष अंग्रेजोंसे जा मिले। सुतरां अनन्योपाय हो सिखोंने लाहोरके दरबारमें अनुरोधसे सम्मति प्रकट की;—हार्डिंज गवर्नमेण्ट पहले जिन शर्तोंपर लाहोरके सिख-राज्यकी प्रतिष्ठाके प्रस्तावपर

यह युद्ध सुबरांवके युद्धके नामसे परिचित है। जहां युद्ध हुआ, उसके पास सुबरांव या साबराहन नामके एक या दो गांव हैं; उनके नामके अनुसार ही इस युद्धका नामकरण हुआ है। साबा या (बहुवचनमें) सबाहान नामक जातिकी कई शाखा सम्प्रदाय उस समय इस गांवमें रहता था। वह लोग जहां जहां वास करते थे; उसके अनुसार ही वह वह स्थान अभिहित हुए हैं। अन्तमें उक्त युद्धमें जय पानेसे इस सुबरांव नामक युद्धके साथ जाति भी परिचित हुई है।

सिख सिपाही ।

सम्मत हुई थी, उसी समय वृटिश गवरमेण्टके साथ उन सब प्रान्तोंका बन्दोबस्त निर्द्धारित करनेके लिये सिखोंके प्रिय मन्त्री गुलाबसिंह हर तरहकी क्षमतासे भूषित हुए। १५वीं फरवरीको राजा गुलाबसिंह और दूसरे कितने ही सामन्तोंने गवरनर-जनरलसे मुलाकात की, कसूरके गवरनर जनरलने महासमारोहसे उनकी अभ्यर्थना की। गवरनर जनरलने उन लोगोंसे प्रकट किया,—दलीपसिंह वृटिश गवरमेण्टके मित्र राज्यमें गिने जायेंगे; शतद्रु और विपाशाके मध्यवर्ती समग्र राज्यखण्ड विजयी अङ्गरेजोंके अधिकारमें रहेंगे; युद्धका खर्च लाहोर गवरमेण्ट वृटिश गवरमेण्टको ५५ लाख पाउण्ड हानि (पाउण्ड १५) रुपये) क्षतिपूरण प्रदान करनेपर बाध्य होगी। गवरनर जनरलने सामन्त लोगोंसे कहा, कि पहले आक्रमणकारीगण जिस अर्थदण्डसे दण्डित हुए हैं, उस विषयमें सर्व्व साधारणको दिखानेके लिये ही इस क्षतिपूरणके लेनेका उद्देश्य है। उनके मनमें भी आयेगा,—निरपराधी अङ्गरेजोंके साथ वृथा शत्रुताचरणमें शत्रुपक्षको क्षति अवश्यम्भावी है। बहुत तर्कवितर्कके बाद सिख-प्रतिनिधिगण विभक्तिके साथ इस सन्धिके शर्तपर स्वीकृत हुए; युवक महाराजने स्वयं आ वृटिश-गवरमेण्टकी अधीनता स्वीकार की; अन्तमें २०वीं फरवरीको वृटिश-वाहिनी सिख राजधानीमें जा पहुंची। इसके दो दिनों बाद दुर्गका कुछ अंश अङ्गरेजोंकी सेनासे परिपूर्ण हुआ। भारतीय प्रजाके मनमें इस विश्वासको बद्धमूल कर देना ही इसका गूढ़ उद्देश्य था, कि आत्माभिमानी सिक्ख निहोंने पूरी तरह विफल हो अधीनता स्वीकार की है। उस समय भारतके सब भागोंमें हां

सामन्तगण जातक्रोध और हिंसापरवश हो, दुर्द्धर्ष अवच्छेद विधानकारी वैदेशिक अङ्गरेजोंके अवश्यम्भावी अधःपतनकी बा-तकी हमेशा आलोचना किया करते थे। *

इस समय गवरनर-जनरल सिखोंके पहले अपराधका शास्ति-विधान करके ही निरस्त नहीं रहे। इसलिये उन्होंने सिखोंके मनमें भय उत्पन्न करनेकी चेष्टाकी कि भविष्यत्‌में वह कभी अङ्गरजोंको विपर्य्यस्त न करें। इसलिये ही उन्होंने विपाशा नदीके किनारेके स्थानको अधिकतर उपयोगी समझा था। शतद्रुकी पुरानी सीमाओंपर सम्पर्कमें न होनेपर भी, लाहोरके सम्पर्कमें उन उन सब स्थानोंपर अधिकार करना इटिश गवर-मेण्टके लिये बहुत जरूरी जान पड़ा था। इस उद्देश्यसे ही गवरनर-जनरलने पहले समझा था, कि जम्बूके पहाड़ी प्रदेशमें स्वाधीन राजाके नामसे गुलाबसिंह घोषित होंगे। * गुलाबसिंहके परिवारवर्ग सदा यही आशा करते थे, कि इटिश गवरमेण्ट उन्हें स्वाधीनके नामसे स्वीकार करें। शायद यह बात किसीके

---

* सन् १८४६ ई०की १९वीं फरवरी और ४थी मार्चको गुप्त-मन्त्रणा सभामें गवरनर जनरलने जो कागजपत्र भेजे, यहां उसे ही देखना चाहिये। (Compare the Governor-General to the Secret Committee, under dates the 19th February, and 4th March, 1846.)

* सन् १८४६ ई०की ३री और १९वीं फरवरीको गुप्त-मन्त्रणा समितिके लिये गवरनर-जनरलका पत्र। (Compare Governor General to the Secret Committee.)

स्मृतिपथपर पतित नहीं हुई, कि आश्रित और अधीनस्थ पञ्जाब गवर्मेण्टके सर्व्ववादिसम्मत मन्त्रीके नामसे परिचित होनेके लिये गुलाबसिंह उस समय भी अभिलाषी थे। † अहलूवालके

---

† गुलाबसिंहके परिवारवर्ग बहुत दिनोंसे इस कल्पनाको मन ही मन पालते आये थे। ध्यानसिंहने करनल वेडको स्थानान्तरित करनेकी बहुत चेष्टा की। ध्यानसिंहके दिलमें आया था,—करनल वेडके बाद जो आदमी प्रतिनिधि नियुक्त होंगे, वह ध्यानसिंहके पक्षका अवलम्बनकर, उनका ही मङ्गल-साधन करेंगे; करनल वेड वैसी प्रकृतिके आदमी नहीं थे। जबसे ध्यानसिंह इस धारणाके वशवर्त्ती हो काममें प्रवृत्त हुए-तबसे ही गुलाबसिंहके परिवारको यह आशा थी। लाहोर-मन्त्रीके यह दोनो ही सङ्कल्प मिष्टर क्लार्क जानते थे; लेकिन जम्बूके सामन्तगणको स्वाधीन स्वीकार करनेके प्रस्तावको ही मिष्टर क्लार्क प्रधानतः अधिकतर श्रेष्ठ समझते थे। नवनिहालसिंहकी मृत्युके बाद सभी जम्बूराजगणके प्रति विद्वेषभाव प्रकाश करते थे,—सम्भवतः इस कारण ही मिष्टर क्लार्क जम्बूके रणवाड़ोंके पक्षपाती थे।

अङ्गरेज लोग यदि गुलाबसिंहको ही मन्त्रीके पदपर प्रतिष्ठित रखनेकी इच्छा करते और लालसिंहके जीवनमृत्युके सम्बन्धमें कोई तथ्य न लेते, तो सम्भवतः लाहोरमें विशाल धर्म्मसम्पन्न सुनियमबद्ध गवर्नमेण्ट फिर प्रतिष्ठित हो सकती। ऐसी अवस्थामें सम्भवतः लाहोरके अहित रुका और सन् १८४६ ई०की सन्धिसम्बन्धकी भी कोई जरूरत न पड़ती।

युद्धमें जब वृटिशपक्षका विजय पाना मालूम हुआ, कि सिक्खोंका सम्पूर्ण पराजय अवश्यम्भावी है, तब राजा गुलाबसिंहने अङ्गरेजोंसे एक प्रस्ताव उठाया था। गुलाबसिंह इस आशासे ही पहले अङ्गरेजोंसे मिले थे, कि समग्र लाहौरराजत्वमें शासनकर्तृत्वके पदपर गुलाबसिंहको ही प्रतिष्ठित किया जायगा, यह भी इस समय किसीके मनमें उदय नहीं हुआ। पहले पञ्जाबके सामन्तगण और प्रजागणने घोर विपज्जालमें विजड़ित गुलाबसिंहको वजीरका पद प्रदान किया। जब समय बहुत सङ्कीर्ण हो आया, फिर भी. युद्धको सब सामग्रियां नहीं आईं, तब गवरनर-जनरल प्रमुख अङ्गरेजोंने गुलाबसिंहको ही मन्त्रीके नामसे मान लिया। * लेकिन जब लालसिंहने देखा,—चार

---

* सन् १८४६ ई०को ३री और १४वीं फरवरीको गुप्त-मन्त्रणा समितिमें गवरनर-जनरलने जो पत्र भेजा, यहां उसे ही देखना चाहिये। (Compare the Governor-General's letter to the Secret Commitee, of the 3rd and 14th February, 1846.) इन दोनो पत्रोंमें ही लार्ड हार्डिञ्जने प्रकट किया था, कि गुलाबसिंहका कोई उपकार करनेकी उनकी एकान्त इच्छा है। गुलाबसिंहको स्वाधीन राजाके नामसे स्वीकार करनेके लिये वृटिश गवरमेण्टने इच्छा की, किन्तु गवरनर जनरलने उस बातका कभी उल्लेख नहीं किया। या उस समय जो सन्धिप्रस्ताव चल रहा था, गवरनर-जनरलने इस बातको भी सिक्खोंसे प्रकट नहीं किया, कि जम्बूके स्वातन्त्र्य अवलम्बनके सम्बन्धमें उनमें कौनसी शर्त्त निर्दिष्ट होगी। सभी बात

तुमुल संग्रामके बाद गवरनर-जनरल असन्तुष्ट-चित्तसे या बाध्य हो लाहोर परित्याग कर चले गये और लाहोर ब्रटिश गवरमेण्टके मित्र-राज्यमें गिना गया, तो उनके आनन्दकी अवधि नहीं रही। लालसिंहने मनमें सोचा, कि महाराजकी मातापर उनका अयथा प्रभुत्व प्रभाव उस समय भी पूरी तरहसे वर्त्तमान है; सुतरां उस रमणीय सहयोगितामें वह घृणित जम्बूराजको पदच्युत करनेमें समर्थ होंगे,—लालसिंह इसी आशासे उत्फुल्ल होने लगे। समस्त षड़यन्त्र, राजद्रोह और स्वदेशद्रोहके फलसे शीघ्र ही सिद्धि पानेकी सम्भावना देख, वह नीचाशय लालची लालसिंह मन ही मन अपनी बहुत प्रशंसा करने लगे। उनकी उस स्वदेश द्रोहिता और षड़यन्त्रके फलसे स्वाधीन सिख-राज्यक उच्छेद-साधनमें अपनी आत्मोन्नति विहित होगी,—लालसिंहकी आशाकी अवधि नहीं रही। गुलाबसिंह समझे, —अङ्गरेजोंके साहाय्यके सिवा आत्मरक्षा असम्भव है, उनकी पहलेकी सब क्षमता ही लोप हो गई है। लेकिन अङ्गरेज लोगोंने उनको मन्त्रीके रूपमें साहायता करनेसे इनकार नहीं किया। सुतरां इस समय गुलाबसिंहने नये विजयका दावा-कार गवरनर-जनरलको हतबुद्धि कर डाला। गुलाबसिंहने कहा, कि उनके द्वारा ही इतना शीघ्र सिखोंके साथ अङ्गरेजोंकी सन्धि स्थापित हुई है, और उनसे ही षड़यन्त्रसे सिख लोग इतना

यो है, कि अङ्गरेजोंने विजय पानेके आनन्दोत्सवमें उन क्षमता-शाली राजाको सन्तुष्ट करनेकी बात अङ्गरेज लोग प्रकारान्तरसे भूल गये हैं।

जल्द ध्वंसमुखमें पतित हुए हैं, सुतरां गवरनर-जनरल गुलाबसिंहको क्या इनाम,देंगे? इसी समय गुलाबसिंहने कसूरमें कहा था, कि अङ्गरेजोंसे युद्ध चलानेके लिये दुर्द्धर्ष पैदल सैन्य-समूह दुर्गमें सुरक्षित और सुसज्जित अवस्थामें रहेगी:—वह बात भी उस समय सबको ही याद हुई: और गुलाबसिंहकी यह बात भी कोई भूले नहीं थे, कि दिल्लीकी प्रान्तसीमातक सब देशोंमें केवल घुड़चढ़ी सैन्य विचरण करेगी। तब सन्धिका प्रस्ताव चल रहा था और समय धीरे धीरे संक्षेप होता आता था, तब सबको ही उपलब्धि हुई, कि बाकी सिख-सैन्यके साथ योगदानकर रणकुशल जातिको अज्ञातर विपुल अर्थराशि और अस्त्रशस्त्र प्रदान करनेके जो मनुष्य किसी न किसी समय दुर्द्धर्ष और दुर्दमनीय हो सकता है, इस समय उसे ही सन्तुष्ट रखना ब्रटिश-गवरमेण्टका प्रधान कर्त्तव्य है।

उस समय लाहोरके राजकोषकी अवस्था बहुत ही शोचनीय हो पड़ी थी। लालसिंह भी शत्रुको अपसारितकर अपनी-उन्नतिका पथ मुक्त करनेके लिये स्वतः चेष्टा कर रहे थे। इसी अवसरमें गवरनर जनरलने प्रकारान्तरसे राज गुलाबसिंहका आशानुयायी तृप्तिविधान किया। इससे रणजित् सिंहके उत्तराधिकारीकी आधिपत्य-प्रतिपत्ति और भी कम हुई। जम्बूका राजाने अपने सामान्य गण्डीरमें विपुल क्षमताके सीमाबद्ध रखने-की इच्छा नहीं की। उस समय युद्धके व्ययभारके निर्वाहके लिये अङ्गरेजोंने जिस क्षतिपूरणका दावा किया था, लाहोर-गवरमेण्ट उसके तृतीयांशसे अधिक परिशोध करनेमें सक्षम नहीं हुई; उसका दो तृतीयांश बाकी रहा। सुतरां ब्रटिश-गवरमेण्टने
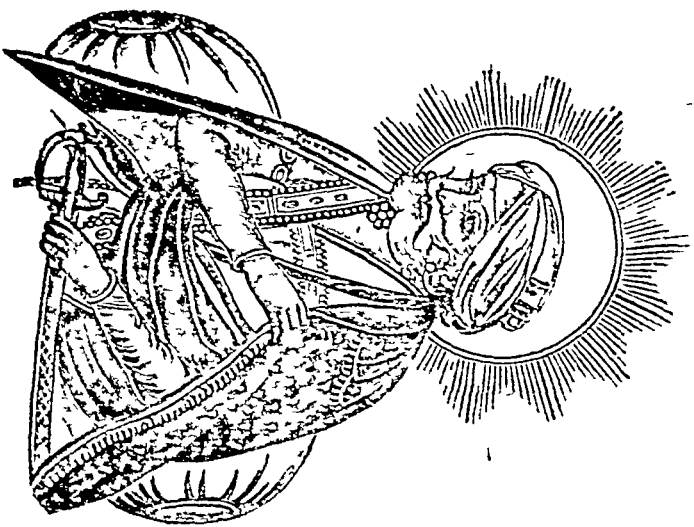
महाराज गुलाबसिंह ।

राजा ध्यानसिंह ।

रुपयेके बदले राज्य ले लिया। पञ्जाबका व्यवच्छेद आरम्भ हुआ; काश्मीर और विपाशासे शतद्रु नदीतक विस्तृत भूखण्ड पञ्जाबसे अलग हो गया; गुलाबसिंह वह राज्य पा लाहोरके अधीनता-पाशसे मुक्त हुए। राज्य पानेपर उसके मूल्य-स्वरूप गुलाबसिंहने वृटिश-गवरमेण्टको १० दश लाख पाउण्ड ढालि दिया। सिखोंकी क्षमताके घटानेके सम्पर्कमें अङ्गरेजोंने बड़ी चतुरताके साथ इस नीतिका अवलम्बन किया था; लेकिन यह सब कार्य्यप्रणाली वृटिश नाम या वृटिश महत्वके लिये पूरी अयोग्य थी; इससे वृटिश-नामका गौरव कुछ भी रक्षित नहीं हुआ। युद्धके घोषित होनेसे पहले, गुलाबसिंहने अपने प्रभु लाहोर-पतिको दण्डस्वरूप ६८ लाख रुपये (६८,००,०० पाउण्ड) प्रदान करना स्वीकार किया था,—उस विषयका विचार करनेसे वृटिश-गवरमेण्टको इस नीतिके सम्बन्धमें घोर आपत्ति उठाई जा सकती है। * प्राच्य और प्रातीच्य दोनो महादेशको प्रथाके अनुसार हरेक जागीरदार अपने प्रभुको वैदेशिक युद्धादिके समय या पारिवारिक अन्तर्विवादमें साहाय्य प्रदान करते हैं। सुतरां जो दश लाखतक शर्तें नजर लिया गया था, लाहोरके अधीनस्थ जागीरदारके हिसाबसे उसे गुलाबसिंहसे परिशोध करना उचित था। इस अवस्थामें स्वाधीनभावसे लाहोरके अधिकारयुक्त प्रदेशसमूहमें आधिपत्य फैला, गुला-

* सन् १८४६ ई०की ५वीं मईकी गवरनमेण्टके लिखे डेस्पाच-पत्रका मत। यह रुपये गुलाबसिंहने दिये थे, मालूम होता है इसे इसको दिना नहीं था इसलिए उन्होंने हिसाब भी नहीं दिया।

वसिंहने किसी तरहकी न्यायपरताका परिचय नहीं दिय
राजाके उत्तराधिकारीके पदपर प्रतिष्ठित होनेसे सिख लो
बहुत असन्तुष्ट हुए थे। गुलाबसिंहने कभी ऐसी स्वतन्त्रता
पानेकी आशा की नहीं थी; लेकिन रणजित् सिंहके साम्राज्यके
मन्त्रियोंने गुलाबसिंहको विताड़ित करनेकी इच्छा की थी। अब
गुलाबसिंहने राजशक्ति और प्रभुत्वकी क्षमता पाई, इससे
सबकी ही ईर्ष्या बढ़ी,—सबके ही मनमें आत्मोन्नतिकी आशा
जाग उठी। तेजसिंह बहुत धनी थे, वह अपना अर्थ-सामर्थ्य
सभी समझ सके थे। वह जानते थे,—अर्थबलसे क्या नहीं
संसाधित हो सकता? सुतरां राज-पदपर प्रतिष्ठित हो राज-
मुकुटके सुशोभित होनेके लिये और पञ्जाबका विभागकर और
एक स्वतन्त्र राज्यकी पानेकी आशासे लालसिंहने ब्रिटिश-गवरमे-
ण्टको २५ लाख रुपये देना स्वीकार किया। लेकिन अङ्गरेजोंकी
राजनीति समझनेमें उन्हें कोई क्षमता नहीं थी, या उस नीतिके
अयथा विचारसे लालसिंह बहुत भर्त्सित हुए। उस समय
मात्र गुलाबसिंहके साथ ही ऐसा बन्दोबस्त हुआ; लेकिन
और कोई भी उस बन्दोबस्तका अंशभागी हो नहीं सका। इस
समय सन् १८४६ ई०की १५वीं मार्चको अमृतसरमें गुलाबसिं
महाराजके उपाधि-भूषणसे भूषित हुए; ब्रिटिश-गवरमेण्टने
उन्हें मित्रराजके नामसे स्वीकार किया। * लेकिन पहले

---

* इस उपलक्ष्यमें महाराज गुलाबसिंहने खड़े हो हाथ
जोड़ अङ्गरेज प्रतिनिधि गवरनर-जनरलके सामने अपनी कृतज्ञता
प्रकाश की। उन्होंने कहा कि असलमें महाराज गवरनर-

गुलाबसिंहको जिस राज्यके देनेकी बात कही गई, उनके प्रभु अङ्गरेजोंने उस राज्यको कुछ दिनोंके लिये स्वतन्त्रभावसे रखा; उनसे रुपयेका दावा किया गया था, उसका चतुर्थांश लेनेपर ब्रटिश-गवरमेण्ट सम्मत हुई। उनके मनमें आया, कि गुलाबसिंहके भाई सुचेतसिंहने फीरोजपुरमें जो अर्थ सञ्चित कर रखा था, गुलाबसिंह ही उस धन-सम्पत्तिके असली अधिकारी थे, ऐसा विचारकर ब्रटिश गवरमेण्टने दावाकृत अर्थका परि-

---

जनरलके "जरखरीद" या सोनेके खरीदे क्रीतदास विशेष हैं। वस्तुतः महाराजने उपहासच्छलसे यह बात कही नहीं थी।

इस इतिहासमें एकाधबार राजा गुलाबसिंहकी नीच प्रकृतिका उल्लेख किया गया है। इससे कोई यह न समझें, कि महाराज गुलाबसिंह ईर्ष्यापरायण और असतुस्वभावसम्पन्न थे। वह शत्रुको पराजितकर अशेष उसका प्राणसंहार करते थे और अर्थ-संग्रहके लिये वह अत्याचार उत्पीड़नकी पराकाष्ठा दिखाते थे। लेकिन वह जिस समय वर्तमान थे, उस शताब्दीका और उस जातिगत नैतिक उन्नतिका विचार करना जरूरी है। फिर उनसे जैसे उच्चपदपर प्रतिष्ठित पुरुषको अपना पद बना रखनेके लिये जो जो बातें जरूरी हैं, उसे भी विचारकर देखना उचित है। इन सब बातोंका प्रणिधानकर विचार देखनेसे मालूम होता है, कि गुलाबसिंह एक कार्यकुशल और परिमिताचारी थे, वह स्वेच्छाचारीकी तरह या असभ्य मनुष्यकी तरह कोई काम करते नहीं थे। उनकी प्रकृतिमें सन्तोष और दयादाक्षिण्य भी वर्तमान था।

साथ कम कर दिया। इस समय गुलावसिंहके लिये उस दावेका परिशोध करना सहजसाध्य हो गया। *

लालसिंह और एकवार मन्त्रीके पदपर प्रतिष्ठित हुए। लालसिंह और उनके विश्वासघातक राजद्रोही सहकारी सामन्तगण सभी जानते थे, कि अङ्गरेजोंके पञ्जाव परित्याग करनेपर मुट्ठीभर सैन्यके आक्रमणसे भी वह लोग अपने अपने पद सामर्थ्यकी रक्षा कर नहीं सकेंगे। सुतरां गुलावसिंहके सातन्त्र-अवलम्बनसे पहली सन्धिके शर्तमें कुछ व्यतिक्रम हुआ तब स्थिर हुआ, कि सन् १८४६ ई०के दिसम्बर महीनेके आखिर दिनतक एकदल ब्रटिश सैन्य लाहोरमें अवस्थित रहेगी। इस समयतक सामन्त लोग अपनी अपनी क्षमताका दृढ़ता-विधान कर लेंगे। सैन्यदलका पुनःसंस्कार और पुनर्गठन संसाधित होगा, देशमें शृङ्खला और सुनियम-बद्ध शासनप्रणाली फैलेगी। धीरे धीरे काल खतम हुआ; लेकिन तब भी सामन्तोंकी असहाय अवस्था थी,—वह लोग तब भी अपने अपने प्रभुत्वकी क्षमताके दृढ़तासाधनमें समर्थ नहीं हुए। सुतरां सामन्तगणने आग्रहके साथ वैदेशिक शक्तिके साहाय्यपर निर्भर किया और उनके साथ फिर एक बन्दोवस्त हुआ;—सामन्त लोग उसपर ही राजी हुए। उस बन्दोवस्तसे रणजित् सिंहका सङ्कीर्ण राज्य अङ्-

---

* अठारहवां, उन्नीसवां और वीसवां परिशिष्ट देखना चाहिये लाहोर और जम्बूके साथ जो सन्धि हुई, उस सन्धिकी बात इसमें लिखी है। (See Appendices xviii, xix, xx, for the Treaties with Lahore and Jummoo.)

रेजोंके शासनाधीनमें रहा; रणजित् सिंहके पालितपुत्र और हीनस्वत्व उत्तराधिकारीके बालिग न होनेतक, अङ्गरेज लोग उस राज्यका शासन-संरक्षण सब काम निर्व्वाह करेंगे। *

बीस हजार सैन्यके साथ जब गवरनर जनरल और अङ्गरेजोंके प्रधान सेनापति (कमाण्डर-इन-चीफ) लाहोरमें अवस्थान करते थे, उस समय एक दल सिख-सैन्य वहां आया। उस सम उनकी तनखाह चुकती हो उनका दलभङ्ग हो गया था। उस समय उस सैन्यदलकी वाह्यिक आकृति-प्रकृतिसे विद्रोहपरायण विप्लवकारीका नैराश्य, या वेतनभुक्त वैदेशिक सैन्यका निर्लज्जभाव या औदासीन्य प्रकाशित होता नहीं था। जिस वीरत्वके साथ सिख-सिपाही विजयी अङ्गरेजोंके सामने हुए थे, विजयी अङ्गरेज सिखोंके उस वीरत्वकी बहुत प्रशंसा करते थे, सिख-सिपाहियोंके वीरोचित व्यवहारसे उनकी उस साहसिकताका माधुर्य और भी बढ़ता था। सिख-जाति यही बात कहती, कि दुर्भाग्यवश युद्धमें पराजय हुई; या सिखोंके मनमें यही विश्वास बद्धमूल रहा, कि प्रबलक्षमताशाली प्रभुके आनेकी राह उन्होंने ही सुगम कर दी है। ऐसे अवस्थाविपर्य्ययमें भी वह लोग दिल ही दिल अपने भविष्यत् भाग्यकी या परिणामकी बातपर दृढ़विश्वासके साथ विचार करते थे। अपने अदृष्टके सम्बन्धमें उनका विश्वास अणुमात्र भी कम हुआ नहीं था। यदि

---

* लाहोरके साथ दूसरी सन्धिके सम्बन्धमें अन्दोलनके लिये पन्द्रहवां परिशिष्ट देखना चाहिये। (See Appendix [illegible] for the Second Treaty with Lahore.)

कौतुकच्छलसे कभी कोई उनके अनुपयुक्त और अपरिणतवयस्क सिख-सम्प्रदायके नामसे उपहास करता था, तो ऐसी अवस्थामें सिख लोग नीरस और अर्थ-व्यञ्जक मुस्कुराहटसे जवाब देते थे,—अभी खालसाका शिशुकाल अतिवाहित हुआ नहीं है। जब सिखोंका साधारण-तन्त्र धीरे धीरे उन्नतिके पथपर बढ़ा, तो गोविन्दने अपने शिष्योंको एक नये भूषणसे भूषित किया, शिष्योंके हृदयमें साहस और शक्तिका सञ्चारकर गोविन्द अद्वितीय नैपुण्यके साथ उनकी परिचालना करने लगे। इस तरह साहसी वीरोंने सान्त्वना पाई, जिस उन्नत शक्तिके बलसे उन लोगोंने एकतासूत्रमें आबद्ध होना सीखा था, जिस शक्तिबलसे सिख लोग अनुप्राणित हुए थे, उनकी वही तेजःशक्ति युरोपके श्रेष्ठत्व और सभ्यताके दलसे इस समय अधीनता-पाशमें आबद्ध हुई; उन लोगोंने बाधा दी सही, लेकिन उन्हें कोई फल नहीं मिला। श्रेष्ठ शक्तिके कठोर शासनाधीनमें विशुद्धभाव धारण करनेके लिये ही सिखोंकी वह शक्ति अङ्गरेजशक्तिके पदानत हुई। युरोपके ज्ञान-विज्ञान और दर्शन-शास्त्रकी रोशनीमें उनका मन उन्नत और ऊंची चिन्तामें निमग्न होगा और ऊंचे कर्मके सम्पादनमें उपयोगी होगा। *

—०()०—

* सिख-युद्धके कुछ ही दिनों बाद, सन् १८४६ ई०के मार्च महीनेमें ग्रन्थकार सिखोंका धर्ममन्दिर और धर्मशाला समूह देखनेके लिये कीर्त्तिपुर और आनन्दपुर मखवाल गये थे। आखिरी स्थान गोविन्दको बहुत ही प्रिय था। यहांके सभी भविष्यत्पर विश्वास करते थे। विचक्षण और बहुदर्शी धर्म-

इस तरह सिखोंके स्वतन्त्र शासनकालकी समाप्ति हुई;—पञ्जाबके स्वाधीनता-सूर्य्य हमेशाके लिये अस्ताचलशायी हुए। प्राचीन भारतभूमिके विस्तृत भूखण्डमें इस समय इङ्गलण्डका ही एकाधिपत्य विद्यमान था; इङ्गलण्ड इस समय भारतका अविसम्वादित अधीश्वर था। ब्राह्मण और क्षत्रियोंकी पुरानी शासन-प्रणालीकी अपेक्षा इङ्गलण्डका राजनीतिक प्राधान्य अधिकतर नियमानुवर्त्ती था। पुराना मुसलमान साम्राज्य बहि:शत्रुके आक्रमणसे विध्वस्त हुआ। लेकिन ब्रिटिश राज्य बहि:शत्रुके आक्रमणके भयसे पूरा निरापद था, वैदेशिक शत्रुके आक्रमणसे उस राज्यका विध्वस्त होना बहुत ही कठिन था। इङ्गलण्डका सैन्यदल सुशिक्षित और अर्थ-सामर्थ्यमें भी अत्यन्त अधिक था, सब काममें ही इङ्गलण्डके लोगोंमें एकता मौजूद थी और बहुत विचक्षणताके साथ सब सलाहें स्थिर होती थीं, वह शासन-प्रणाली प्राच्य देशके विचक्षण पुरुषोंके भी बोधगम्य नहीं है। इङ्गलण्डकी प्रतिष्ठित शासनप्रणाली प्राचीन रोमकी आदर्श राजनीतिके समतल थी। लेकिन इस समय हिन्दुओंने समग्र देशमें अपना प्रभाव फैलाया है; समुद्रोपकूलसे समुद्रोपकूलतक

याजक और धर्मविधानगण कहते थे, कि सब समय सब देशोंके अधिवासी ही 'खालसा' धर्म ग्रहण कर सकते हैं। दुर्विसह प्रजापीड़क मुसलमान साम्राज्यके उच्छेद-साधनमें वैदेशिक अङ्गरेजोंने जो सहायता दी थी नानकके शिष्य उस साहाय्यके पानेसे अङ्गरेजोंके चिर-कृतज्ञ हैं,—धर्मयाजकगण इसे भी स्वीकार करते थे।

तुषाराच्छन्न हिमालय शृङ्गमें वीरप्रवर रामचन्द्र निर्म्मित पौरा-
णिक सेतुतक विस्तृत विशालराज्यके अधिवासियोंने श्रीराम
सायकबकुल द्विजाति-वंशकी भाषा ग्रहण की है; इस समय भी
वह लोग उस भाषाका ही व्यवहार करते हैं। क्षत्रिय जाति
प्राधान्यके प्रबल होनेसे मध्यखण्ड और दक्षिण भारतके अलभ
पर्व्वतवासी और जङ्गली अधिवासियोंकी भाषा क्षत्रियोंकी भाषामें
मिलती गई है; इस समय वह लोग एक मिश्रित भाषासे
बातचीत करते हैं। सहस्र सहस्र मनुष्योंके प्रात्यहिक आचार-
व्यवहारमें धर्म्मप्राणता और धर्म्मभीरुतामें ब्राह्मणोंका निगूढ़
सारगर्भ दर्शनशास्त्र और पुराणके तत्त्वका माहात्म्य ही प्रकट
होता है। प्राय: दो हजार वर्ष पहले यूनानी लोग ब्राह्मणोंके इस
गवेषणापूर्ण दर्शनशास्त्रकी नीति और युक्तितर्कसे विमोहित
हुए थे। मुसलमान लोग पहले देशध्वंसके लिये ही आये।
भारतमें आ पहले उन लोगोंने उपनिवेश स्थापन किया; अन्तमें
विजयी जाति समूहने टीड़ीकी तरह आ स्वर्णभूमि भारत-
क्षेत्रको छा लिया; उनके प्रभावसे पराजित अधिवासियोंकी
भाषामें और भावमें बदलाव हुआ। विजेतृ-वृन्दके संसर्गसे
वह लोग धीरे धीरे परिवर्त्तित होने लगे। अन्तमें बादशाह
अकबरके राजत्वके समय भारतमें "इसलाम" धर्म्म एक जातीय
धर्म्ममें गिना गया; मनु और सिकन्दर शाहके (अलकजन्द-
रके) समय ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यमें जो स्वातन्त्र्य था,
वर्त्तमान समय हिन्दू और मुसलमानोंमें उतना भेदाभेद नहीं
है; वस्तुत: कई एक विशेष विशेष स्थलके सिवा, दूसरे किसी
विषयमें उनका वह स्वातन्त्र्य दिखाई नहीं देता। हिन्दू और

मुसलमान दोनो अलग जातियां हैं, उनका धर्म्म भी परस्पर विभिन्न है। लेकिन सामाजिक जीवनमें या गार्हस्थ्य जीवनमें वह लोग आपसमें मिल-जुलकर रहते हैं। वह लोग एक दूसरे-की कार्य्यप्रणालीमें योगदान करते हैं, एक दूसरेके प्रति सम्मान दिखाते हैं और एक दूसरेकी कार्य्य प्रणालीके हृदयङ्गम करनेमें समर्थ होते है। इसतरह उनका परस्परका स्वातन्त्र्य और विशेषत्व धीरे धीरे, फिर भी, निश्चितरूपसे तिरोहित हो रहा है। सुतरां इन दोनो जातियोंके ध्वंससाधनसे, उनके समाधि-स्थलमें नये उपादानसे भविष्यत्में किसी एक साधारण धर्म्मकी प्रथा या सम्प्रदाय प्रवर्त्तित हो सकेगी। द्रविड़ शूद्र जाति-महाराष्ट्र, गोर्खा, सिख प्रभृति जातिका—प्रधान्य हेतु ग्राम्य कृषककुल और नगर और शहर समूहकी इतर श्रेणीमे और भी अधिक मिश्रण संसाधित हुआ हैं। इसतरह पुरातत्त्वके प्रति सम्मान दिखानेके लिये कितने ही अन्तरायकी सृष्टि हुई है। किसी जातिकी कही हुई भाषाकी अपेक्षा उस जातिका धर्म्म-विश्वास अनिश्चित अवस्थायी जान पड़ता है। अरबदेशीय धर्म्मप्रवर्त्तक मुहम्मदप्रचारित धर्म्म या वेद और पुराणतत्त्व प्रभृति हरेकके किसी न किसी स्थलमें विशुद्ध भाव दिखाई नहीं देता. तब भी धर्म्म-प्राण मुल्ला लोग और शिक्षित ब्राह्मण पण्डित या दोनो धर्म्मके धनी और महन् पुरुगाय ही उस उस धर्म्मकी पवित्रताकी सतत रक्षा करते आते है। जिस क्षम-ताके बलसे इन सब विभिन्न धर्म्मावलम्बियो असंख्य भारतवा-सियोंपर इङ्गलण्डका आधिपत्य फैला है, इङ्गलण्ड उन क्षमताके बलसे ही इस समय भारतवासियोंका शासनसंरक्षण करनेमें

समर्थ है। अवतक इङ्गलण्डके ऐश्वर्य्य पानेपर दूसरी जातियां उनके प्रति ईर्ष्यापरवश हो सकती हैं, लेकिन इङ्गलण्डने सुसन्तान साहसी अङ्गरेजोंने प्राच्यखण्डमें जो गुरुतर कार्य इङ्गलण्डके हाथसे अर्पण किया है, उस गुरुतर कार्य्यके सम्पादनमें अङ्गरेजोंको चिरकालके लिये विचारकर देखना चाहिये। मनुष्यके मङ्गल-विधानार्थ इङ्गलण्डने जो महत् कार्य्यभार अपने हाथ ग्रहण किया है, उसके सम्पादनके लिये इङ्गलण्ड बहुत विचक्षणताके साथ काम करेगा, सबके प्रति ही सहानुभूति दिखाई देती है, अङ्गरेजोंको उसके प्रति लक्ष्य रखना कर्त्तव्य है; ऐसा करनेसे ही अङ्गरेज लोग उद्देश्य साधनमें कृतकार्य्य होंगे। इङ्गलण्डका राजत्व सबसे श्रेष्ठ है; सब प्रकारके राजनीतिक विवाद विसम्वादका इङ्गलण्ड ही मीमांसा कर देता है। लेकिन सामाजिक परिवर्त्तन और मानसिक विप्लव संसारके वीचिविक्षोभमें, सुवृहत् वृटिश साम्राज्यका चौथा वहिरावरण ढिलमिल हो पड़ा है। सभ्यतालोकमें, मध्यवर्त्तिताकी निरपेक्षतामें, सब विषयमें इङ्गलण्डका अद्वितीय महत्व ही प्रकाशित होता है। अधीनस्थ प्रजावर्गसे इङ्गलण्ड केवलमात्र साहाय्य ग्रहण कर सकता है; इङ्गलण्ड कभी प्रकृतिपुञ्जकी अत्यधिक कृतज्ञता और अनुरक्तिपर निर्भर कर नहीं सकता। राजनीतिक प्राधान्यको वना रखनेके लिये अङ्गरेजोंको विचक्षण और सतर्क होना पड़ेगा, और चिरस्थायी स्मृति-चिह्नको वर्त्तमान रखनेके लिये साम्राज्यके क्षणभङ्गुर कीर्त्तिस्तम्भस्वरूप प्रियदर्शन राजप्रासाद या उपासना-मन्दिर बनवानेके बदले इङ्गलण्डको उसकी अपेक्षा गुरुतर काम सम्पन्न करना पड़ेगा। प्राचीन यूनान

और रोमके पदाङ्कका अनुसरणकर इङ्गलण्ड अद्वितीय सौन्द-
र्य्यविशिष्ट अट्टालिका बना सकता है, नदी महानदी प्रभृतिपर
वह लोग बड़े बड़े पुल बांधनेमें सक्षम हैं, विज्ञानबलसे और
अर्थकी ऐन्द्रजालिक मोहिनी शक्तिके साहाय्यसे वह लोग
पर्व्वत भेद करनेमें समर्थ हैं। उन सब पुरानी जातियोंकी तरह
अङ्गरेज लोग भी वैदेशिक राज्यमें प्रबल-पराक्रान्त "हेरड दी
ग्रेट" जैसे नरपतिकुलकी सृष्टि कर सकते हैं; उनके शिक्षा-
कौशलसे फ्लेविअस जोजेफस जैसे ख्यातनामा ऐतिहासिकका
दृष्टिगोचर होना भी सम्भवपर है। लेकिन वटिजर्नके बुलानेसे
हेञ्जिष्ट जैसे उनके अनुगत हुए थे, और सियाग्रीयसने जैसे
क्लविसकी वश्यता स्वीकार की थी, यह सन्देहस्थल है, कि प्राचीन
रोमकी तरह इङ्गलण्डके भाग्यमें भी वैसा ही होगा या
नहीं। इङ्गलण्ड दूसरे एक सिम्बलिनको सभ्य-जीवनकी रमणी-
यताकी शिक्षा दान कर सकता है, इङ्गलण्डकी प्ररोचनासे
दूसरे एक एटनस, परागसके साथ विवाह-सूत्रमें आबद्ध हो
सकते हैं,—अर्थात् वर्त्तमान समयमें भी इङ्गलण्डके शिक्षागुणसे
असंख्य वीर पुरुष अद्वितीय कल्पनाशक्ति सम्पन्न कवि प्रभृति
जन्म ग्रहण कर सकते हैं,—इसमें सन्देह नहीं। यह सब
अद्भुत सहज ही निष्पन्न हो सकता है। लेकिन भविष्यत्में जो
जातियां तय्यार होंगी, किससे उसमें वह सब कवि और दार्श-
निक सम्पद कौनसे बर्द्धनकर सकते हैं;—इससे ऐसा ही करना
इङ्गलण्डका कर्त्तव्य है: ६० पुरुषोंके बाद भी जो वर्त्तमान रह
सकता है, वैसी कोई महाशक्ति निश्चय करना ही उचित
है। रोमकी प्राचीन नीति और इसके वर्त्तमान इतिहासके ...

खृष्ट-धर्म्मका संस्कार साधन किया था, उसी तरह विज्ञान और नीति-शास्त्रके बलसे इङ्गलण्डका भी लोगोंपर धर्म्मविश्वास और चित्तवृत्तिपर आधिपत्य फैलानेकी चेष्टा करना युक्ति सङ्गत है। जिस आदर्श पर इङ्गलण्डकी शासन-प्रणाली प्रतिष्ठित है, उसी आदर्शके समकक्षसे या उससे अधिक श्रेष्ठत्व पानेके लिये, पहले उन सब विषयोंको दीवारका बनाना और आशा-बीजका रोपन करना इङ्गलण्डका एकमात्र कर्त्तव्य है। *

---

* वर्त्तमान समयतक इङ्गलण्ड भारतवासियोंके मनमें कोई स्थायी चिह्न अङ्कित कर नहीं सका था। तब भी अङ्गरेजोंने भारतमें बहुत ही जल्दी सामरिक पद्धतिका प्रवर्त्तन किया है। वस्तुतः विचक्षणताके साथ नाना व्यवस्था बन्दोबस्त सम्पन्न कर शासनक्षम शक्तिके नामसे गर्व्वित होनेके लिये वह लोग यथेष्ट चेष्टा कर रहे हैं।

तब भी अङ्गरेजोंकी प्रतिभाशक्ति अबतक भारतवासियोंके मनपर अधिकार कर नहीं सकी है; या भारतवासियोंका हृदय उससे परिपूर्ण हुआ नहीं है। शिक्षित पण्डित लोग जबतक संस्कृत और आरबी (Arabic) भाषामें लोगोंको शिक्षा देनेमें समर्थ नहीं होंगे, तबतक भारतवर्ष यूरोपीय ज्ञानालोकसे उद्भासित न होगा; सुतरां अध्यवसायके साथ इन दोनो भाषाओंको सीखना चाहिये। वस्तुतः ऐसा नहीं है, कि इन दोनो भाषाओंके सारमर्म्मके हेतु ही उसे सीखना पड़ेगा परन्तु शिक्षा देनेके लिये यह भाषामें ही एकमात्र उपायस्वरूप हैं। अपनी अपनी अभ्यस्त भाषामें प्रकाशित होनेसे "जिमनसफिष्ट" या भारतीय

लेकिन वृटिश साम्राज्यमें शान्ति स्थापितकर राज्यकी रक्षाको सब अवस्थामें स्थिर न करनेपर, इङ्गलण्ड कुछ भी करनेमें समर्थ

दार्शनिक और उत्तम लोग गणित और तर्कशास्त्र सम्बन्धीय सब प्रकारके विषयमें ही सम्मति प्रकट कर सकते हैं। और उन्होंने जिस विषयमें शिक्षा पाई है, जरूरतके मुताबिक उसे भी लोगोंके सामने प्रकट करनेमें समर्थ होते हैं। वर्त्तमान समय अवश्य ही बङ्गला-भाषाके साहाय्यसे ज्ञानकी रोशनीके फैलानेकी चेष्टा हो रही है। लेकिन ऐसी शिक्षा-प्रणालीके फैलावसे बहुत देरमें फल मिलेगा। सम्भवतः शक्तिशाली मनुष्यवर्गके प्रति विद्वेषभाववश ही ऐसा उपाय अवलम्बित हुआ है। ऐसे प्रचारसे कभी सिद्धिलाभ न होगा। लेकिन यथेष्ट प्रमाण प्रयोग और दृष्टान्त और चित्र प्रभृति द्वारा वैज्ञानिक तत्त्वकी व्याख्या कर विशदभावसे लोगोंके गोचरीभूत करनेसे शायद कोई फल मिल सकता है। आंशिक या प्राथमिक शिक्षाके लिये अधिकांश स्कूल-पाठ्य पुस्तकोंकी तरह असम्पूर्ण और अविशुद्ध बनानेसे उद्देश्य साधन न होगा। इन सब सुबृहत् सुविस्तृत ग्रन्थोंकी प्रतिलिपिसे संस्कृत या फारसी भाषामें मुद्रित होनेपर शिक्षित भारतवासियोंका गर्व बहुत कुछ ही खर्व होगा।

इसलिये ज्योतिष-शास्त्र और दर्शनकी आलोचना संस्कृत भाषामें मुद्रित होनेसे सब जातियोंको पाठ्य-पुस्तकें निर्दिष्ट होंगी, वर्तमान युगमें जो उन्नति विज्ञानके द्वारा हुई है, वह लोग यह बात स्वीकार न करें। शास्त्रिक भाषाके साहाय्यसे [illegible], [illegible] [illegible] और [illegible] प्रभृति दार्शनिक

न होगा। अबतक अङ्गरेज लोग केवल प्राधान्य फैलानेमें ही यत्नवान थे ; राज्यरक्षाके लिये वह लोग कोई बन्दोबस्त स्थिरकर

पश्चिमगण पदार्थ विज्ञान और प्राकृतिक विज्ञान सबके आगे प्रकाश करते हैं। पहले जो लोग खृष्ट धर्म्मके प्रचार करनेमें प्रवृत्त हुए, उस समय उन लोगोंने बहुविस्तृत रोमन और यूनानी भाषाको ही श्रेष्ठ समझा था ; प्राचीन हिब्रू भाषा और गल, सिरिया, अफरिका और एशिया माइनरकी अवस्पृश्य भाषा-ओंको उन लोगोंने कभी ग्रहण नहीं किया। दोनों ओर ही उस नव-गृहीत भाषामें धर्म्म प्रचारित होता था। इससे उरि-जन, आइरेनियस, टार्टुलियन और रोमके क्लिमण्टका धर्म्मविश्वास और भी गढ़ा था और कितने ही दार्शनिकगणका धर्म्मविश्वास भी उससे बढ़ने लगा। इसतरह भारतवर्षमें भी संस्कृत, अरबी और फारसी भाषाके साहाय्यसे सब विषय लोगोंके सामने किये जा सकते हैं। और इससे तर्कशास्त्रका प्रमाण-समूह और भी ठीक होता।

स्थानीय और अङ्गरेजी भाषाके साहाय्यसे शिक्षा देनेपर, कलकत्ता शहरके विज्ञान-शास्त्रकी आलोचनामें कितने ही सुफल फले हैं। प्रधानतः मेडिकल कालेजके अध्यापकोंके अ-ध्यवसाय और कार्य्यकुशलताके गुणसे ही भिन्न भिन्न परिवार और वंश और जातिके भारतीय बालकगण मृतदेहका व्यवच्छेद करनेमें उद्यत हुए हैं। पहले जितने विषय कहे गये हैं, स्वभावतः पुरुषमें वह विरुद्धताको जान नहीं सकते; इसकी सत्यताके प्रमाणके लिये यह सब विशेष दृष्टान्तस्वरूप हैं।

ही नहीं सके। अबतक केवल उनकी क्षमता उत्तरोत्तर बढ़ रही थी। उन लोगोंने मुगल और महाराष्ट्रोंको विध्वस्त किया और दूरवर्त्ती मित्र राज्यको साहाय्य प्रदानकर उनके राज्यमें सन्निकटस्थ दुर्द्दान्त-प्रतापशाली शत्रुको दमन किया है। अब इङ्गलण्डने महत्वके ऊंचे चूड़ापर आरोहण किया है। अबसे इङ्गलण्डके नामसे सभी भीत होते हैं, कोई बन्धुभावसे उसका आलिङ्गन करनेकी इच्छा नहीं रखता। एक दूसरेपर आक्रमण-कर भारतके राजन्यवृन्द अब राज्य या यश अर्ज्जन करनेमें अक्षम हैं। वृटिश गवरमेण्टके शासनाधीन रणवाड़ोंकी उच्चाकांक्षा और स्वाभाविक शत्रुभाव आप ही दूरीभूत होगा। शासनकर्त्ताकी प्रकृत शक्तिकी परिचालना करके ही वह लोग राजपदसे सन्तुष्ट रहनेकी चेष्टा करेंगे। हर्षोत्फुल्ल अगणित नक्षत्रमण्डल परिवृत सुधाकरने मानो हंसते हंसते नैश-गगनमें उदित हो स्निग्ध किरणवर्षणसे दिगमण्डल पुलकित कर डाला; इङ्गलण्ड भी उसीतरह अधीनस्थ राजन्यवृन्दसे परिव्याप्त हो नैश-गगनके चन्द्रकी तरह परिशोभमान होगा; भारतवासी इङ्ग-

---

कलकत्तेमें अङ्गरेजोंकी संख्या बहुत ज्यादा है। ऐश्वर्य्य-विभव ज्ञान-बुद्धिमत्ता और राजनीतिक उन्नतिसे इन अङ्गरेजोंके प्राधान्यका प्रभाव अधुना सर्वत्र ही विस्तृत हुआ है। लेकिन उनका यह मानो न प्राधान्य इतना सहज नष्ट हुआ है, कि राजधानीसे ५० मील दूरीके मध्यवर्त्ती शहरोंमें वह अबतक अनुभूत नहीं होता। काशी, दिल्ली, पूना, हैदराबाद प्रभृति स्थानों ऐसे [illegible] स्थानोंमें उस प्राधान्य-क्षतिको पुनरुद्धार करना सहज-साध्य नहीं है।

नगर और भारतीय राज्यसमूहकी, गगत परिवर्त्तन समूहके साथ तुलना करें। दूसरी ओर असीम प्रतापशाली दिवाकरके असहनीय मध्याह्न किरणोंको कोई देख नहीं सकता; भारतवासी इङ्गलण्डकी सूर्य्यके साथ कभी तुलना न करेंगे। मनुष्यमात्र ही समता और शान्ति पानेकी इच्छा करता है; सभी स्वाति प्रतिपत्ति और ऐश्वर्य्यके अधिकारी होना चाहते हैं। जो दरिद्र मनुष्योंसे घृणा करते हैं, उनके मनमें ऐसा ही भाव उदय होता है। अङ्गरेजोंने नकुल जाइद भारतीय रजवाड़ोंके दिलमें इस धारणाके बढ़मूल करना आरम्भ किया;—इसके अनुसार रजवाड़े मन ही मन सोचने लगे,—बाधा देनेकी चेष्टा वृथा है। अङ्गरेज लोग अब उनसे असभ्य वर्ब्बरकी नामसे घृणा नहीं करते, या उनके प्रति इङ्गलिश-गवरमेण्टका कोई विद्वेषभाव भी नहीं है; अधिकन्तु उन लोगोंने शासन-संस्थामें भारतीय गवरमेण्टमें बहुत ऊंचा स्थान पाया है। अवतक इङ्गलण्डकी शासन-प्रणालीसे प्रधानतः केवल वणिक सम्प्रदायहीकी उन्नति हुई है। उसी वणिक-सम्प्रदायके मङ्गल-विधानके लिये ही मानो इङ्गलिश-गवरमेण्ट अबतक राज्यके शासनदण्डकी परिचालना करती आती है। भद्रवंशजात पुरुष अङ्गरेज-समाजमें स्थान नहीं पाते; इङ्गलिश गवरमेण्टके कोई काम हीमें वह नियुक्त नहीं होते। दरिद्र कृषककुल समय समय उत्पीड़ित होते थे; अत्याचारी लोग उनकी धन-सम्पत्ति लूटते थे; सर्ब्बस्वान्त हो वह लोग अनन्त दुःखसागरमें निपतित होते थे; इसपर वह लोग कभी कभी शारीरिक यन्त्रणा भी भोगते थे। इङ्गलिश-गवरमेण्टके शासनमें यह सब विभीषिकाऐं दूर हुई हैं सही; लेकिन स-

कूलविधायक होनेपर भी अनुपयोगी तकलीफदेह कानूनके फलसे इस समय वह लोग समय समयपर विशेषरूपसे उत्पीड़ित और सर्वस्वान्त होने लगे हैं। * वह लोग बहुत ज्यादा करभारसे

---

* भारतीय पुलिस सम्प्रदाय दुश्चरित्र और प्रजापीड़न, घूस लेने और अन्यान्य असत कामोंके लिये बहुत प्रसिद्ध है। ठग, डकैत, दलबद्ध नरहन्ता और चोर सम्प्रदायके तथ्यानुसन्धानके लिये जो सब कार्य्यालय और स्थायी विधि व्यवस्था प्रभृति प्रवर्त्तित हुई थी, उसके फलसे बहुत जल्द देशमें पापस्रोत उत्तरोत्तर बढ़ता है। एक ओर दलबद्ध अपराधी मनुष्योंका अत्याचार-उत्पीड़न जैसे बढ़ता था, दूसरी ओर उन सब व्यवस्थाओंके फलसे पापासक्त मनुष्य लोग उसी तरह पैदा होते थे। पाप-कार्य्यके निवारणमें और पापी अपराधियोंके शास्ति-विधानमें वृटिश-गवरमेण्ट पूरी तरह अक्षम और निन्दार्ह है। यह सही है, कि सैनिक-विभाग सम्बन्धीय शक्ति-सामर्थ्यमें वृटिश-गवरमेण्ट अद्वितीय और असीम क्षमताशाली है, लेकिन देशवासियोंकी धन-सम्पत्तिकी रक्षा करनेके लिये वृटिश गवरमेण्ट अपेक्षाकृत क्षमताहीन है। जिससे प्रकृति पुरुष धनप्राणसे निरापद रह सकता है, वृटिश-गवरमेण्ट ऐसे व्यवस्था विधानमें पूरी अपारक है। भारतवर्षकी और भारतवासियोंकी अवस्थाके सम्बन्धमें इङ्गलैण्ड इतना अनभिज्ञ है, कि इङ्गलैण्डवाले अनायास ही उसके कामकी तत्त्वावधारक कर्मचारी सम्प्रदायपर ही प्रधानतः निर्भर [illegible] हैं जो इङ्गलैण्डके [illegible] प्रशान्तसे करते हैं, फिर भी, जो लोग इङ्गलैण्डमें [illegible] विशेष मतामत या प्रकाश करते हैं,

लण्ड और भारतीय राज्यसमूहको, नक्षत्र परिवृत चन्द्रके साथ तुलना करें। दूसरी ओर असीम प्रतापशाली दिवाकरके असहनीय मध्याह्नके किरणोंको कोई देख नहीं सकता; भारतवासी इङ्गलण्डकी सूर्यके साथ कभी तुलना न करेंगे। मनुष्यमात्र ही क्षमता और शान्ति पानेकी इच्छा करता है; सभी ख्याति प्रतिपत्ति और धनैश्वर्यके अधिकारी होना चाहते हैं। जो दरिद्र मनुष्योंसे घृणा करते हैं, उनके मनमें ऐसा ही भाव उदय होता है। अङ्गरेजोंने बहुत जल्द भारतीय रजवाड़ोंके दिलमें इस धारणाके बद्धमूल करना आरम्भ किया,—इससे अनुपर रजवाड़े मन ही मन सोचने लगे,—बाधा देनेकी चेष्टा वृथा है। अङ्गरेज लोग अब उनसे असभ्य बर्बरके नामसे घृणा नहीं करते, या उनके प्रति हृटिश-गवरमेण्टका कोई विद्वेषभाव भी नहीं है; अधिकन्तु उन लोगोंने शासन-सम्बन्धमें भारतीय गवरमेण्टमें बहुत कुछ स्थान पाया है। अबतक इङ्गलण्डकी शासन-प्रणालीसे प्रधानतः केवल वणिक सम्प्रदायहीकी उन्नति हुई है। उसी वणिक-सम्प्रदायके मङ्गल-विधानके लिये ही मानों हृटिश-गवरमेण्ट अबतक राज्यके शासनदण्डकी परिचालना करती आती है। सद्वंशजात पुरुष अङ्गरेज-समाजमें स्थान नहीं पाते; हृटिश गवरमेण्टके कोई काम होनेमें वह नियुक्त नहीं होते। दरिद्र कृषककुल समय समय उत्पीड़ित होते थे; अत्याचारी लोग उनकी धन-सम्पत्ति लूटते थे; सर्व्वस्वान्त हो वह लोग अनन्त दुःखसागरमें निमज्जित होते थे; इसपर वह लोग कभी कभी शारीरिक यन्त्रणा भी भोगते थे। हृटिश-गवरमेण्टके शासनमें यह सब विभीषिकाऐं दूर हुई हैं सही; लेकिन म-

ङ्गलविधायक होनेपर भी अनुपयोगी तकलीफदेह कानूनके फलसे इस समय वह लोग समय समयपर विशेषरूपसे उत्पीड़ित और सर्व्वस्वान्त होने लगे हैं। * वह लोग बहुत ज्यादा करभारसे

---

* भारतीय पुलिस सम्प्रदाय दुश्चरित्र और प्रजापीड़न, घूस लेने और अन्यान्य असत कामोंके लिये बहुत प्रसिद्ध है। ठग, डकैत, दलबद्ध नरहन्ता और चोर सम्प्रदायके तथ्यानुसन्धानके लिये जो सब कार्य्यालय और स्थायी विधि व्यवस्था प्रभृति प्रवर्त्तित हुई थी, उसकी फलसे बहुत जल्द देशमें पापस्रोत उत्तरोत्तर बढ़ता है। एक ओर दलबद्ध अपराधी मनुष्योंका अत्याचार-उत्पीड़न जैसे बढ़ता था, दूसरी ओर उन सब व्यवस्थाओंके फलसे पापासक्त मनुष्य लोग उसी तरह पैदा होते थे। पाप-कार्य्यके निवारणमें और पापी अपराधियोंके शास्ति-विधानमें वृटिश-गवरमेण्ट पूरी तरह अक्षम और निन्दाई है। यह सही है, कि सैनिक-विभाग सम्बन्धीय शक्ति-सामर्थ्य ने वृटिश-गवरमेण्ट अद्वितीय और असीम क्षमताशाली है, लेकिन देशवासियोंकी धन-सम्पत्तिकी रक्षा करनेके लिये वृटिश गवरमेण्ट अपेक्षाकृत क्षमताहीन है। जिससे प्रकृति पुञ्ज धनप्राणसे निरापद रह सकता है, वृटिश-गवरमेण्ट ऐसे व्यवस्था विधानमें पूरी अपारक है। भारतवर्ष की ओर भारतवासियोंकी अवस्थाके सम्बन्धमें इङ्गलण्ड इतना अनभिज्ञ है, कि इङ्गलण्डवासी अनायास ही रुपयेके लालची तनखाहदार कर्म्मचारी सम्प्रदायपर ही प्रधानतः निर्भर करते हैं; जो इङ्गलण्डकी क्षमता प्राधान्यसे डरते हैं, फिर भी, जो लोग इङ्गलण्डके प्रति विशेष भावापन्न या श्रद्धापरवश, हैं,

योंके सम्प्रदायने दिल ही दिल विद्वेषभावका पालना आरम्भ किया ; भारतीय रजवाड़े क्रोधपरवश हो षड़यन्त्रमें लिप्त होंगे

गवरमेण्ट (या भार पाये हुए कर्म्मचारी, जागीरदार या प्रतिनिधि) प्राय: अधिकांश स्थलमें ही तय्यार फसलका उद्वृत्त अंश ग्रहण करते हैं, और (२) जिस स्थानमें गवरमेण्ट ही मालिक है, अर्थात् खास महलमें, मूलधन द्वारा कूप खुदवाने या और किसी तरहकी सुविधा दे, गवरमेण्ट अपना कर्त्तव्य पालन नहीं करती ; इङ्गलण्डमें शस्यागार और प्राय: प्रणालीके वर्त्तमान रहनेसे, संकटके समय वहांका कृषक-सम्प्रदाय विशेष उपकृत होता है ; भारतमें वैसी प्रथा आजतक दिखाई नहीं देती। कुछ स्वदेशपरायण पुराने जमींदारोंके सिवा भारतके कुल मनुष्य जमीनके उत्कर्ष साधनमें रुपये खर्च करनेकी इच्छा नहीं करते। फिर, ज्यादा रुपये पानेकी आशासे अल्पसंख्यक सङ्गतिपन्न अफीम और चीनीके व्यवसायी जमीनके उत्कर्ष-साधनमें रुपये खर्च किया करते हैं। गांवके प्रधान मनुष्य या दरिद्र प्रजा प्रकाशत: गवरमेण्टको या मालगुजारीके वसूल करने वालोंके हाथ कर प्रदान करती है ; जहांतक शस्यमें बीज संग्रह हो सकता है, मोटा पतला आहार्य्य संस्थान होता है और भूमिकर्षणके लिये साधारण आवश्यकीय यन्त्रादिका संग्रह किया जा सकता है, मालगुजारी वसूल करनेके बाद, हरेक गृहस्थ ही उतने परिमाणसे उद्वृत्त शस्य पाता है। इसी-तरह किसी उपायके न रहनेसे वह लोग किसी जमीन उन्नति विधानमें बहुत ज्यादा खर्च करनेमें समर्थ नहीं होते।

लगे; कोई कोई राजपरिवर्त्तनके उद्देश्य-साधन को आशासे उत्तुक्त हुए। वस्तुतः उनको ऐसी कामनासे अज्ञताका परि-

---

सुतरां इङ्गलण्डका कर्त्तव्य है,—(१) परिवर्त्तित दरमें कर संस्थापन करना, (२) ज़मीनकी मालगुज़ारीका परिमाण घटाना और (३) प्रजाको चिरस्थायी हक प्रदान करना। यह साधक सम्प्रदाय असलमें गवरमेण्टकी तरफ़का प्रजास्वरूप है। सुतरां इङ्गलण्डकी प्रजाओंने पूर्व्वोक्त सब हक पाया है। इसीतरह हरेक सम्पत्तिके किसी निर्द्दिष्ट नियमसे विभक्त होनेकी जरूरत है और उसकी निर्द्दिष्ट सीमाका निरूपण करना चाहिये। ऐसी पद्धतिसे बहुत-सहज ही उद्देश्यसाधन हो सकता है। हरेक भूम्यधिकारीको निर्द्दिष्ट परिमाणसे सम्पत्ति प्रदान करना पड़ेगा, वह भूम्यधिकारी अपनी इच्छाके अनुसार उसे वसूल कर सकेंगे, लेकिन उन्हें उस सम्पत्तिके बेचनेकी कोई क्षमता दी न जायगी; वह केवल उत्पन्न फसलका विक्रीत मूल्य ही खर्च कर सकेंगे।

भारतवर्षके भूम्यधिकारोंके हकके विषयमें कुछ न्यायसङ्गत युक्तितर्क और मन्तव्यके सम्बन्धमें लेफ्टनेण्ट कर्नल स्लिमनकृत "भारतीय कर्म्मचारकी पूर्व्वस्मृति और भ्रमणवृत्त मन्तव्य" नामक ग्रन्थका प्रथम खण्ड, ८० पृष्ठ प्रभृति और द्वितीय खण्ड, ३४७ पृष्ठ प्रभृति देखना चाहिये। (See Lieutenant-Colonel Sleeman's "Rambles and Recollections of an Indian Official," i, 80 &c.; and ii, 347 &c.)

उत्तर-पश्चिम प्रदेशके वर्त्तमान समय भिन्न भिन्न प्रकारका दो प्रति-

चय पाया गया है। एकमात्र वणिक सम्प्रदाय ही अपनी धन-सम्पत्तिके विषयकी चिन्ताकर अनुपम सुख पाती है। *

वर्त्तनकी प्रथा प्रचलित है, उस हस्तान्तर या परिवर्त्तनकी प्रथाके राजस्व सम्बन्धी विवरणके सम्बन्धमें वर्त्तमान लफटनाट गवरनर "सेटलमेराट" कर्म्मचारियोंके प्रति आदेश और राजस्वकी प्रथाके सम्बन्धमें उनका मन्तव्य देखना चाहिये। Lieutenant-Governor's "Directions for Settlement Officers" and his "Remarks ou the Revenue System.")

* लफटनाट करनल स्लिमनने सोचा,—(Rambles cf an Iudian Offlcial, Ii, 175,) अङ्गरेजोंने प्रजाकी सहानुभूति पाई नहीं है। देशके कृषक-सम्प्रदाय और जमीन्दारवर्ग भारतीय अन्यान्य शासनकर्त्ताओंके प्रति भी सन्तुष्ट नहीं थे; इस समय वह अङ्गरेजोंसे भी सन्तुष्ट नहीं हैं।

भार' वर्षमें अङ्गरेजोंके या दूसरे किसी शासनकर्त्ताके पद-सामर्थ्यकी बात विचारनेके लिये, एक बात याद रखना चाहिये। सिख-सम्प्रदाय और कुछ पश्चिम भूभागके राजपूतोंके सिवा कोई कृषक-सम्प्रदाय, मुसलमान जाति और कुछ ब्राह्मणोंके सिवा दूसरी कोई जाति देशके शासनकार्य्यमें योगदान कर नहीं सकती; या एकतासूत्रमें आबद्ध हो प्रभुत्व-विस्तार करनेमें उद्यत नहीं होती। नगर और जनपदसमूहके अधिवासियोंमें कितने ही स्वदेशी या विदेशी शासनकर्त्ताकी अधीनता स्वीकार करनेके लिये तय्यार थे। जो लोग इङ्गलण्डके अधीनतापाशमें —— * उनमें अधिकांश ही करदाता हैं, उनके द्वारा इङ्ग-

वह लोग समझते हैं, कि यदि गवर्नमेण्ट उन्हें नियुक्त न करे या उपाधि-भूषणसे भूषितकर सम्मानित न करे, तो उनके धनागमकी राह उन्मुक्त है, और वह महासुखसे निर्विघ्न धन-सम्पत्तिके भोगदखल करनेमें समर्थ है।

भारतीय राजा, जमीन्दार, लब्धकसम्प्रदायको पुरुषानुक्रमसे अधीनता-पाशमें आबद्ध करनेके लिये विपुल अर्थ सामर्थ्यकी जरूरत है। वर्त्तमान समय सामरिक प्रथाकी भी उन्नतिविधान करना पड़ेगा। असंख्य दुर्ग और गढ़ बनवाना चाहिये, समय पा वहां सैन्यदल अवस्थिति करेगी। * भिन्न भिन्न जाति और

लब्धका शक्ति-सामर्थ्य कुछ भी नहीं बढ़ता। उत्पन्न फसलका जितना अंश गवर्नमेण्ट मालगुजारीके स्वरूप पाती है, किसी विद्रोहके समय या राज्य जीतनेके बाद दूसरे किसी शक्तिको मालगुजारी उस समयके राजदण्ड परिचालनाकारीको या शासन-कर्त्ताको प्रदानकर अधीनस्थ प्रजावर्ग अपना अन्यान्य कर्तव्य धर्मबन्धन और दायित्वके हाथसे मुक्त समझते हैं। इन सब भीरु प्रकृतिपुञ्जके प्रति न्यायपर और कृपापरवश होना इङ्गलण्डका एकान्त कर्त्तव्य है। लेकिन कलहप्रिय सैनिकजातिको ही प्रधानतः पहले काममें नियुक्त होना पड़ेगा, उनके सबसे सबका सद्व्यवहार करना पड़ेगा; कभी कभी उनके प्रति सम्मान भी दिखाना पड़ेगा। यह सब योद्धृ-जातियां विद्रोह-वह्नि प्रज्ज्वलित करनेमें और प्रसङ्ग मात्रमें सदा ही यत्नवान रहती हैं।

* इस्तुतः अङ्गरेजोंके दखलकार करनेके समय बहुत थोड़े थे। सैन्यस्थापनके लिये उनके गढ़की संख्या बहुत थोड़ी है।

वंश समष्टिके संमिश्रणमें स्वतन्त्ररूपसे बहुसंख्यक विभिन्न सैन्य-दलका तय्यार करना भी बहुत जरूरी है। * इसतरह असंख्य

यशांतक, कि सामान्य निरापद स्थान,—अस्त्र-शस्त्रागार और युद्धोपकरण संग्रह करने और रखनेकी लिये सुरक्षित स्थान है ही नहीं, कहनेपर भी अत्युक्ति न होगी। भारतमें अङ्गरेजोंकी सामरिक प्रथाका यह एक सच्चा मौलिक दोष है। गदरके समय या सामरिक प्रक्रिया या युद्धके समय साधारण ज्ञानसे विस्तृत शस्यागारका अभाव विशेषरूपसे अनुभूत होता है, अधिकन्तु उस देशमें धनी मनुष्योंसे गवरमेण्ट कोई साहाय्य नहीं पाती या वह धनवान सम्प्रदाय लोगोंके मतामतको ग्राह्य नहीं करता और जिस देशमें अनावृष्टि और दुर्भिक्ष हमेशासे होता आता है, उस देशमें शस्यागार रखनेसे ऐसे सङ्कटके समय शस्यादिका मूल्य बढ़नेके लिये भी बहुत बाधायें दी जा सकती है। भारतीय रजवाड़ोंमें ऐसी ही प्रथा प्रचलित है, लेकिन उनकी हरेक नियम-प्रणालीका कोई न कोई हेतु वर्त्तमान है।

* शिक्षित सिपाहियोंकी स्वतन्त्र जाति या कोई एक शाखा-सम्प्रदाय तय्यार करनेमें अङ्गरेज कभी समर्थ नहीं हुए। एकमात्र मन्द्राज प्रेसिडेन्सीमें ही वह लोग इस विषयमें बहुत कुछ कृतकार्य हुए थे;—वहां सिपाही सैन्य अपने अपने दलमें ही समय बिताता था। इधर जब सैन्यदलमें पृथक् कम्पनी तय्यार करने की पद्धति प्रवर्त्तित हुई और दूसरी ओर उसी तरह जब वैदेशिक शक्तिका अभ्युदय होने लगा, तब सिपाहीयोंमें जैसा शक्ति सामर्थ्य था, उस समय भारतीय सिपाहियोंमें वह

दुर्ग, गढ़ और बहुसंख्यक सैन्यदल तय्यार करनेसे ही इङ्गलण्डका प्राधान्य बहुत दिनोंतक कायम रहेगा और उनके आक्रमणसे

शक्ति-सामर्थ्य नहीं था। उस समय सिपाहीयोंके मनमें युद्धकी लालसा जैसे आप ही आप जाग उठती थी, आजकल उनकी वह शक्ति तेजःरहित हो अन्तर्हित हुई है। इस सम्बन्धमें प्रधानतः दो कारण निर्द्दिष्ट किये जा सकते हैं। पहले—इस समय देशमें सर्व्वत्र शान्ति विराजमान है। दूसरे इस समय कितने ही नीचजातीय भीरु मनुष्योंको सैन्यश्रेणीभुक्त किया जाता है। शायद वह लोग सद्व्यवहारसे ही सन्तुष्ट हों। कहीं कहीं धूर्त्त ब्राह्मणोंको सैन्यदलभुक्त करनेकी प्रथा वर्त्तमान है; कारण, ब्राह्मण सहज ही वशवत्ता स्वीकार करते हैं, वह लोग विद्वान विचक्षण हैं। तीसरे एकाधिपत्य और ऐसी शासन-प्रणाली देशमें सब जगह ही प्रचलित है, और वैसा शासन-प्रथाको कायम रखनेके लिये ही सदा चेष्टा की जाती है। सब भारतवासी किसी न किसी दलके पक्षपाती हैं।

अव्यवहित अधिनायकके प्रति वह लोग जिससे अनुरक्त हों, उसके लिये भारतवासियोंको उत्साहित करना चाहिये। अङ्गरेज सेनानायक जैसे गवर्नमेण्टके प्रति अनुरक्त हैं, भारतवासियोंको भी इसीतरह गवर्नमेण्टके प्रति अनुरक्त रहना पड़ेगा। जो किसी जाति या सं... प्रधान मनुष्यके प्रति अनुरक्त हैं, या जो जागीरदार और वेतनभोगी दलपतियोंके प्रति आसक्त हैं, वह लोग कभी राजनीतिके गाढ़ उद्देश्य हिन्दुस्तान विभागके वशसे परिचालित नहीं होते। ऐसे सैन्यदलके लिये अङ्गरेज-सेनानायक

उपसंहार ।

प्रथम परिच्छेद ।

दूसरे सिख-युद्धका कारण ।

सन् १८४७—४८ ई० ।

(पूर्व्वस्मृति ;—मूलराजका दीवानीका पद परित्याग करनेका सङ्कल्प ;— पदत्यागका कारण ,—रेसिडण्ट लारेन्सकी प्रतिज्ञा ; अङ्गरेजोंकी विश्वासघातकता,—बृटिश-सैन्यके साहाय्यसे खानसिंहकी दीवानीपद पानेकी चेष्टा ;—आहत बृटिश-कर्म्मचारिद्वय ;—ईदगाहमें बृटिश-पक्षका अवस्थान ; मूलराजको आत्मसमर्पणका आदेश मूलराजकी अस्वीकृति और दलपुष्टि ;—सिखोंका बृटिश-पक्ष परित्याग ,—विभीषिकामें बृटिश-पक्षको आत्मरक्षाकी चेष्टा ;—उत्तेजित प्रजा द्वारा ईदगाहपर आक्रमण ;—अङ्गरेज-कर्म्मचारियोंकी हत्या और खानसिंहका कैद होना. दूसरे सिख-युद्धकी सूचना ;—किसकी त्रुटिका कैसा परिणाम है ।)

सूर्य्यदेव अस्ताचलगगनमें डूब गये. शामका अंधेरा धीरे धीरे संसारको [illegible] करनेके लिये [illegible] बढ़ा। पञ्जाबके गौरव[illegible] रणजित सिंह [illegible] गये पञ्जाब धीरे धीरे अधीन[illegible]

ताके अन्धकारमें आच्छन्न हुआ। प्रथम सिखयुद्धकी समाप्तिसे, सुबरांवमें सिख-सैन्यकी पराजयसे और सन् १८४६ ई०की ९३वीं फरवरीकी सन्धिके प्रवर्त्तनसे, वह अंधेरा और भी घनीभूत हुआ। जिस षड़यन्त्रके प्रभावसे दृषद्वतीके अनन्त-सलिल प्रवाहमें हिन्दू-गौरव निमज्जित हुआ है ; जिस षड़यन्त्रसे सिराजुद्दौलाका बङ्गाल-सिंहासन अनायास ही अङ्गरेजोंके अधीनता पाशमें आबद्ध हुआ है ; उस षड़यन्त्रने ही सिख-साम्राज्यको छिन्न-विच्छिन्न कर डाला। सिखकुल-कलङ्क लालसिंह और तेजसिंहने अङ्गरेजोंके साथ षड़यन्त्र करके ही जन्मभूमिको दासत्व-शृङ्खलमें आबद्ध किया। उन गृह-विभीषणोंके चक्रान्तसे ही मुदकी, फिरूजशहर, अलीवाल, सुबरांव प्रभृति संग्राममें सिख लोग पराजित हुए। उस षड़यन्त्रके फलसे ही गुलाबसिंह प्रमुख सिख-सर्दारोंने ब्रिटिश-गवरमेण्टके सामने अवनत मस्तकसे सन्धिका प्रस्ताव किया। एक दिन रणजित् सिंहके प्रबल प्रतापके सामने मस्तक अवनतकर गवरनर-जनरल लार्ड मिण्टो सरकारी मेटकाफको लेकर पञ्जाबके साथ मित्रता-स्थापनमें कृतकृतार्थ हुए थे, फिर आज वही पञ्जाब षड़्यन्त्रके चक्रान्तमें पड़ ब्रिटिशके दरवाजे सन्धिप्रार्थी हो उनके पदानत हुआ। कालकी भी कैसी विचित्र गति है। सुबरांवके युद्धके बाद सन्धिकी शर्त्तोंका बन्दोबस्त हुआ,—दलीपसिंह नाम मात्रके लिये पञ्जाबके शासनकर्त्ता रहे, उनकी माता रानी झिन्दन या चन्द्रावती अभिभाविका नियुक्त हुई, ब्रिटिश-रेसिडण्ट सर हेनरी लारेन्सके परामर्शके अनुसार राजकार्य्य निर्व्वाहित होगा। इस सन्धिके फलसे जलन्धर दोआब (शतद्रु और विपाशा नदीके

मध्यवर्त्ती प्रदेश समूह) पर अङ्गरेज लोग अधिकार कर बैठे, अङ्गरेजोंके युद्धका व्ययभार डेढ़ करोड़ रुपये पञ्जाबको अदा करना पड़ा, लाहौरमें एकदल ब्रिटिश-सैन्यने अवस्थिति कर सिख-उन्नतिका गतिरोध किया। एक मन्त्री सभाके (Regent Council) परामर्शके अनुसार पञ्जाबका राजकार्य्य निर्व्वाह होने लगा। ब्रिटिश रेसिडेण्टने उसके कर्त्ता स्थानपर अधिकार कर लिया। सिख सिपाही अङ्गरेजोंकी अधीनता स्वीकारकर अङ्गरेजोंसे रणकौशल सीखनेमें नियुक्त हुए। जो लोग विरुद्धमत प्रकाश करने लगे उन्हें पञ्जाबसे स्थानान्तरित किया गया। इसतरह प्रकारान्तरसे अङ्गरेजोंके [illegible] बने हुए पञ्जाबका शासनकार्य्य चलने लगा। अङ्गरेजोंकी आश्रयमें पालित पालित और वर्द्धित हो वयःप्राप्त होनेपर दलीपसिंह फिर पञ्जाबकी स्वाधीनता पायेंगे,—मात्र इतना ही प्रचार रहा। फलतः प्रथम सिख-युद्धके बाद पञ्जाबके मात्र स्वाधीन राज्यके नामसे परिचित होनेपर भी उसका अन्तर्गौरव पूरी तरहसे विध्वस्त हो गया।

इसके बाद सन् १८४७ ई० के जनवरीमें गवर्नर-जनरल लार्ड हार्डिञ्जने भारत का परित्याग किया, लार्ड डलहौसीने भारतका शासन-भार पाया। पञ्जाबमें उस समय किसी तरहकी अशान्तिका लक्षण दिखाई देता नहीं था। प्रबल आंधीके पहले प्रकृति जैसा प्रशान्तभाव धारण करती है, उस समय पञ्जाबमें मानो वैसा ही प्रशान्तभाव विद्यमान था। लेकिन [illegible] पञ्जाबके शासनमें [illegible] [illegible] हुआ। [illegible]

मूलराज सन् १८४४ ई०में मुलतानके दीवानके पदपर अभिषिक्त हुए थे। पिताकी तरह मूलराज उच्चाभिलाषी और स्वाधीनचेता थे। इन्हें दीवानके पदपर अभिषिक्त करनेके समय लाहौरके दर्बारने प्रजाजन्य इनसे एक लाख रुपये नजराना चाहा। उस समय लाहौरमें राज्य-विश्टङ्खला उपस्थित थी। सुतरां मूलराजने नजरानेका परिशोध नहीं किया, अधिकन्तु अपने मालगुजारी भेजनेमें भी पराङ्मुख हुए। अब उनके प्रति लाहौरके दर्बार पञ्चायतकी दृष्टि पड़ी, उनसे पावने प्राप्य रुपये अदा करनेके लिये उस समयके प्रधानमन्त्री लालसिंहने एकदम फौज भेजी। मूलराज भी उनके विरुद्ध खड़े हुए। दोनों ओर घोर संघर्ष उपस्थित हुआ। उस संघर्षमें लाहौरके सैन्यदलकी पराजय हुई। अन्तमें अङ्गरेजोंके उस व्यापारमें हस्तक्षेप करनेपर मूलराजके साथ एक नया बन्दोबस्त स्थिर हुआ। मूलराज कुछ सम्पत्ति छोड़नेपर बाध्य हुए; उन्होंने बाकी मालगुजारी देना मञ्जूर किया। एक दिन मूलराज जितने राज्यपर दखिल रहकर जितनी मालगुजारी देते थे, नई व्यवस्थासे उसमें बहुत कुछ फर्क आ गया। राज्यका हिस्सा घट गया; लेकिन मालगुजारीकी रकम बढ़ गई। सन् १८४७ ई०के शरत्कालमें प्रस्तोत्पत्तिके समयसे तीन सालतक आखिरी बन्दोबस्त प्रबल रहा; अबसे मूलराज नई दरमें मालगुजारी देनेपर बाध्य होनेके कुछ ही दिन बाद मूलराजको दायत्व अनुभोवका उपस्थित हुई। इसके बाद सन् १८४७ ई०के नवम्बर महीनेमें लाहौरमें उपस्थित हो, मूलराजने मुलतान प्रदेशके दीवानी पदको परित्याग करनेका अभिलाष प्रकाश किया।

उस समय सर हेनरी लारेन्सके बदले उनके भाई मिष्टर जान लारेन्स लाहोरके रेसिडण्टके पदपर प्रतिष्ठित थे। उन्होंने मूल-राजको पदत्याग करनेसे मना किया ;—फिर विचारकर जवाब देने कहा। लेकिन मूलराजने उसे नहीं सुना, उन्होंने यथारीति लाहोरके दरबारमें इस्तीफा भेजा दिया। रेसिडण्ट लारेंसने वह इस्तीफा मञ्जूर करनेमें बाधा दी। उन्होंने आपत्ति की, कि मूलराजकी कोई एक शर्त स्वीकार की जा नहीं सकती। इसीतरह कुछ दिन बीते। इसके बाद फिर मूलराजने रेसिडण्टके पास आवेदनपत्र भेजा, वह जिन कारणोंसे दीवानीपद परि-त्याग किया चाहते थे, उन दो कारणोंको उन्होंने उस पत्रमें लिखा। वह दो कारण यह थे —पहला पञ्जाबमें नया वाणि-ज्यशुल्क स्थापित होनेसे उनके मालगुजारी अदा करनेमें विघ्न पड़ता है। दूसरा, सम्प्रति प्रजावर्गने लाहोर-दरबारसे पुनर्व्वि-चारकी प्रार्थनाका हक पाया है, इसके फलसे उनकी क्षमता बहुत घट गई है, मालगुजारी संग्रह करनेके लिये अब वह किसीके प्रति किसी तरहका पीड़न कर नहीं सकते हैं। प्रधानतः शेषोक्त कारणसे ही मूलराज पदत्याग करनेपर तय्यार थे। पहले कारणसे उनकी आयकी राह विस्तृत हुई थी ; लेकिन इस समय पुनर्व्विचारकी क्षमताके कारण वह राह सीमाबद्ध हो गई थी। ऐसे देशमें मुलतान प्रदेशके किसी अभियोगमें दरबार यदि कर्णपात न करता, तो मूलराज इस्तीफा नहीं देते। जो हो, उनका यह प्रस्ताव माना नहीं गया। सुतरां वह पदत्यागपर ही दृढ़प्रतिज्ञ हुए। लेकिन इसी समय रेसिडण्टने [illegible]

पहली, उन्हें एक जागीर देनेकी बात स्वीकार की जाय, दूसरे उस विषयमें किसी आखिरी मीमांसाके न होनेतक उनके इस्तेफेकी बात छिपी रहे। जागीर देनेके सम्बन्धमें रेसिडेण्ट स्वयम् ही कोई साफ साफ जवाब दे नहीं सके; किन्तु इतना आश्वास दिया, कि इस प्रार्थनापर विशेषरूपसे विचार किया जायगा। मूलराजके इस्तेफेकी बात छिपा रखनेके लिये वह प्रतिज्ञाबद्ध हुए। उसी समय यह स्थिर हो गया, कि इस इस्तेफेकी बात रेसिडेण्टके अधीनस्थ राजनीतिक विभागमें कर्म्मचारीगण और वृटिश गवर्नमेण्ट मात्र जान सकेगी, लाहौर दरबारसे यह बात कभी प्रकट हो न जायगी।

सन् १८४८ ई०की ६ठीं मार्चको सर फ्रेडरिक कारने लाहौरके रेसिडेण्टका पद पाया। उनके आनेसे पहले मिस्टर लारेंसने फिर मूलराजको एक पत्र लिखा; लारेंसके पत्रका यही मर्म्म था, कि मूलराज अब भी यदि पदत्याग करनेमें कुण्ठित हों, तो वह, अनायास ही अपना इस्तेफा लौटा ले सकते हैं। लेकिन मूलराजकी मानसिक दृढ़ता तब भी कायम रही; वह इस्तेफा लौटानेपर राजी नहीं हुए। इसके बाद नये रेसिडेण्ट सर फ्रेडरिकने मूलराजके इस्तेफेके विषयकी आलोचना करना आरम्भ किया, उन्होंने दरबारके साथ इस सम्बन्धमें परामर्श करना चाहा। लेकिन मिस्टर लारेंसने इस विषयमें घोर आपत्ति की; उन्होंने प्रकट किया, कि दरबारसे इस बातके छिपानेकी उन्होंने प्रतिज्ञा की है। लेकिन फ्रेडरिकने यह आपत्ति नहीं सुनी। यह कहकर, कि मूलराज बार बार पद-त्याग करनेकी इच्छा प्रकाश करते हैं, उन्होंने उनका इस्तेफा

पहली, उन्हें एक जागीर देनेकी बात स्वीकार की जाय; दूसरे,
उस विषयमें किसी आख़िरी मीमांसाके न होनेतक उनके
इस्तेफेकी बात छिपी रहे। जागीर देनेके सम्बन्धमें रेज़िड-
एट अवश्य ही कोई साफ बात कबूल न कर सके; किन्तु
इतना आश्वास दिया, कि इस प्रार्थनापर विशेषरूपसे विचार
किया जायगा। मूलराजने इस्तेफेकी बात छिपा रखनेके लिये
यह प्रतिज्ञाबद्ध हुए। उसी समय यह स्थिर हो गया, कि इ
इस्तेफेकी बात रेज़िडेण्टके अधीनस्थ राजनीतिक विभागके
कर्मचारीगण और इण्डिया-गवर्नमेण्ट जबतक न जानेगी लाहौर-
दरबारसे यह बात कभी प्रकट की न जायगी।

सन् १८४८ ई०की ६ठीं मार्चको सर फ्रेडरिक कारने लाहौ-
रके रेज़िडेण्टका पद पाया। उनके आनेसे पहले मिष्टर लारें-
सने फिर मूलराजको एक पत्र लिखा; लारेंसके पत्रका यही मर्म
था, कि मूलराज अब भी यदि पदत्याग करनेमें कुण्ठित हों,
तो वह अनायास ही अपना इस्तेफा लौटा ले सकते हैं।
लेकिन मूलराजकी मानसिक दृढ़ता तब भी कायम रही; वह
इस्तेफा लौटालेनेपर राजी नहीं हुए। इसके बाद नये रेज़िडेण्ट
सर फ्रेडरिकने मूलराजके इस्तेफेके विषयमें आलोचना
करना आरम्भ किया; उन्होंने दरबारके साथ इस सम्बन्धमें
परामर्श करना चाहा। लेकिन मिष्टर लारेंसने इस विषयमें आ-
पत्ति की; उन्होंने प्रकट किया, कि इस बारेमें सब बातें
छिपा रखनेकी उन्होंने प्रतिज्ञा की है। लेकिन फ्रेडरिकने यह
आपत्ति नहीं सुनी। यह कहकर, कि मूलराज बार बार पद-
त्याग करनेकी इच्छा प्रकाश करते हैं, उन्होंने उनका इस्तेफा

एगनिउकी प्राणवायु निकल जाती ; इसी समय एगनिउके शरीर-रक्षकगण आगे बढ़े। उनके द्वारा बाधा पा नृशंस सैनिक-पुरुष खाईमें कूद पड़ा। गिरायय आहत होकर भी एगनिउ बाल बाल बच गये। अङ्गरेज ऐतिहासिक लोग कहते हैं ;—मूल-राज इस क्षेत्रमें उपस्थित थे, लेकिन उन्होंने इस व्यापारमें कुछ भी हस्तक्षेप नहीं किया बल्कि इस हत्याकाण्डके समय लोगोंके बर्छोंसे वेगसे घोड़ा चला, दुर्गके बाहर अपने "आमखास" प्रासादमें भाग गये थे। जो हो, ऐसा नहीं हुआ; कि इस क्षेत्रमें केवल एगनिउ ही आहत हुए। लफटण्ट एण्डरसन इसी समय दूसरी राहसे भाग रहे थे। मूलराजके कई एक शरीर-रक्षकोंने उनपर आक्रमणकर उन्हें भी घोरतररूपसे आहत किया; वह मृतवत् बेहोश राहमें पड़े रहे। बेहोश अव-स्थामें कुछ गोर्खा सिपाही उन्हें पालकीमें चढ़ा ईदगाह लाये। इसी समय खानसिंह और मूलराजके सम्बन्धी रङ्गराम द्वारा एगनिउ भी ईदगाहमें संवाहित हुए। प्रधानतः रङ्गरामकी चेष्टासे एक हाथीपर चढ़ा एगनिउ ईदगाह लाये गये थे, और उनके घावोंपर उस समय को जैसे-तैसे पट्टी बांध दी गई थी। एगनिउ अपेक्षाकृत सबल थे ; लेकिन एण्डरसन फिर उठ नहीं सके। यह कहना बाहुल्य है, कि इस विपर्य्ययके समय वृटिश-पक्षके सिपाही लोग दुर्गाधिकार त्यागकर लौटनेपर बाध्य हुए थे।

आहत अवस्थामें ही एगनिउने समस्त घटनाको वर्णनाकर लाहोरके रेसिडेण्टके पास एक पत्र लिखा और देप प्रदेशमें सहाय संग्रह करनेके लिये और शान्ति-स्थापनके लिये लफटण्ट

उसी दिन (१८वीं अप्रेलको) दो बार ईदगाहमें आ उन्होंने नये दीवान और दोनों अङ्गरेज कर्म्मचारियोंसे मुलाकात की। उनके आवेदन प्रस्तुतिके बारेमें भी कितनी ही बातें हुईं। इसके बाद उस प्रसङ्गसे किसी फललाभकी सम्भावना न देख, मूलराज दिल ही दिल बहुत व्यथित हुए। लेकिन उस समय उपाय ही क्या था? आखिर हुए नये दीवानके हाथ मुलतानका दुर्ग समर्पण करना ही स्थिर हुआ।

दूसरे दिन १९वीं अप्रेलके सवेरे सर्दार खानसिंह और दोनों ब्रिटिश कर्म्मचारीने मूलराजसे मुलतानके दुर्गका स्वत्वाधिकार ग्रहण किया। दुर्गकी कुल चाबियां उनके हाथ आईं। दो दल गोर्खा सैन्य दुर्गपर अधिकार कर बैठी। नया सैन्यदल दुर्गके पहरेके काममें नियुक्त हुआ। सहसा ऐसे परिवर्तना-दिके साधित होनेसे मुलतान दुर्गके सैनिक पुरुषोंमें दारुण उत्ते-जनाका लक्षण प्रकाशित हुआ, वह अपनेको दारुण अपमानित समझने लगे। इसके बाद दोनों अङ्गरेज कर्म्मचारी वाक्‌चातु-र्य्यके विन्यासमें मुलतानके सिपाहियोंको नई आशासे आश्वासित-कर लौटनेके लिये तय्यार हुए। लेकिन उस अपमानके समय वृथा लुब्ध-आश्वाससे सिपाहियोंकी उत्तेजना निवारित कैसे होती? मूलराजके कितने ही सिपाही छिपकर खड़े हुए। ज्योंहि कपतान मिस्टर एगनियुने खाले अपनी पुलपर पैर बढ़ाया था;—इसी समय मूलराजके एक सिपाहीने उन-पर आक्रमण किया। उसने पहले ही बल्लमके वारसे उन्हें घोड़ेसे गिरा दिया, इसके बाद ही तलवारसे उसने उन्हें बहुत ही घायल किया। और दो एक आघात लगनेपर उसी समय

एगनिउकी प्राणवायु निकल जाती ; इसी समय एगनिउके शरीर-रक्षकगण आगे बढ़े । उनके द्वारा बाधा पा नृशंस सैनिक-पुरुष खाईमें कूद पड़ा। गिरानेपर आहत होकर भी एगनिउ बाल बाल बच गये। अङ्गरेज ऐतिहासिक लोग कहते हैं ;—मूल-राज इस क्षेत्रमें उपस्थित थे , लेकिन उन्होने इस व्यापारमें कुछ भी हस्तक्षेप नहीं किया बल्कि इस हत्याकाण्डके समय लोगोके बर्छोसे वेगसे घोड़ा चला, दुर्गके बाहर अपने "आमखास" प्रासादमें भाग गये थे। जो हो, ऐसा नहीं हुआ ; कि इस क्षेत्रमें केवल एगनिउ ही आहत हुए। लफटण्ट एण्डरसन इसी समय दूसरी राहसे भाग रहे थे। मूलराजके कई एक शरीर-रक्षकोंने उनपर आक्रमणकर उन्हे भी घोरतररूपसे आहत किया ; वह मृतवत् बेहोश राहमें पड़े रहे। बेहोश अव-स्थामें कुछ गोर्खा सिपाही उन्हें पालकीमें चढ़ा ईदगाह लाये। इसी समय खानसिंह और मूलराजके सम्बन्धी रङ्गराम द्वारा एगनिउ भी ईदगाहमें संवाहित हुए। प्रधानतः रङ्गरामकी चेष्टासे एक हाथीपर चढ़ा एगनिउ ईदगाह लाये गये थे, और उनके घावोंपर उस समय भी जैसे-तैसे पट्टी बांध दी गई थी। एगनिउ अपेक्षाकृत सबल थे ; लेकिन एण्डरसन फिर उठ नहीं सके। यह कहना बाहुल्य है, कि इस विपर्य्ययके समय हटिश-पक्षके सिपाही लोग दुर्गाधिकार त्यागकर लौटनेपर बाध्य हुए थे ।

आहत अवस्थामें ही एगनिउने समस्त घटनाको वर्णनाकर लाहोरके रेसिडण्टके पास एक पत्र लिखा और शेष प्रदेशमें शान्ति स्थापनके लिये और शान्ति-स्थापनके लिये एकदल

एडवर्डसके अधीन जो एक दल सैन्य थी, उसे उन्होंने साहाय्यके लिये बुलाया। अधिकन्तु उन्होंने मूलराजको भी एक पत्र लिखा। मूलराज यदि अपनी निर्दोषिता प्रतिपन्न करना चाहें, तो वह अपराधियोंको पकड़ स्वयं ईदगाहमें आ उपस्थित हों,—उस पत्रमें उनके प्रति ऐसा ही आदेश जारी हुआ। मूलराजने क्या सोचा, वह कहा जा नहीं सकता; शायद वह ब्रटिश-प्रतिनिधिके प्रस्तावपर विश्वास स्थापन कर नहीं सके। शायद उनके दिलमें आया, कि जिन लोगोंने एकबार उनके साथ विश्वासघातकता की है, वह फिर विश्वासघातकता न करेंगे; इसका कारण ही क्या है? जो हो,एगनिउका, प्रस्ताव मूलराजने नामञ्जूर किया। प्रस्तावित विषयपर अपनी असम्मतिकी बात प्रकट कर उन्होंने कहला भेजा,—"मुलतानके हिन्दू और मुसलमान सभी सिपाही इस समय विद्रोही हुए हैं; ब्रटिश कर्म्मचारीगण अपने निरापदकी राह आप ही ढूंढ़ें।" जब मूलराजने यह जवाब दिया, तो उस समय मुलतानके प्रधान प्रधान हिन्दू-मुसलमान और सिख-सामन्तगण उनके सामने अवस्थित थे; सभी अपने अपने धर्म्मके नामसे प्रतिज्ञाकर मूलराजके पक्षावलम्बनमें स्वीकृत होते हैं,—ऐसी अवस्था देख, यह समाचार ले दूत ब्रटिश-छावनीमें लौट आया. तब मूलराज और ब्रटिशपक्षके बीच कैसा विषम भावप्रवाह प्रवाहित हुआ, वह सभी अनुमान किया जा सकता है।

मूलराजकी पहली अभिसन्धि जो हो, इस समय वह प्रकाश्य विद्रोहीके नामसे गिने गये। इसी समय १९वीं अप्रैलकी सन्ध्याको ब्रटिश-सैन्यका भारवहनकारी पशुओंका गल्ला लुट गया। तब

उनके भागनेकी राह रह नहीं गई; अगत्या ईदगाह अट्टालिकामें वृटिश सिपाहियोने यथासम्भव आत्मरक्षाको व्यवस्था की। उस समय उनके सब सिपाही और नौकरोने प्राचीरके भीतरमें प्रवेश किया और लाहोरसे जो छः तोपें आई थीं, प्राचीरके पास वह सजाई गई। उस अवस्थामें बहुत नैराश्यके साथ वृटिश-पक्ष कालातिपात करने लगा। उनके मनमें आया, कि और तीन चार दिनो यदि वह इसी भावसे आत्मरक्षा कर सके, तो उनकी सहायताके लिये सैन्यादल आ पहुंचेगा, तब किसी आशङ्काका कारण न रहेगा। लेकिन दूसरे दिन प्रातःकाल उनकी सब भरोसा.यें मिट गई। दुर्गकी सब तोपें ईदगाहको ओर अग्निवर्षण करने लगीं; लेकिन ईदगाहकी छः तोपोंमें एकको भी चलानेकी सुविधा नहीं हुई। अधिकन्तु अङ्गरेजोंके शहरपर लाहोरके गोलन्दाज तोप छोड़नेपर अस्वीकृत हुए, वह लोग दलके दल नौकरी छोडने लगे। अन्तमें यह हुआ, कि और आठ दश सिपाही और वृटिश-कर्म्मचारियोके कईएक भृत्योंके सिवा और कोई उनकी सहायता करनेवाला नहीं रहा। तब विपक्षदलको बाधा देनेकी कुल आशा-भरोसाका लोप देख, वृटिश-कर्म्मचारियोने मूलराजके पास एक पत्र भेजा; पत्रमें यह प्रकट किया गया,—मूलराज उनके प्रति आत्मसमर्पणकारी कैदीकी तरह व्यवहार करें इसपर मूलराजने कहला भेजा, वृटिश कर्म्मचारीगण देश छोड़कर भागें; उनके प्रति कोई किसी तरहका अत्याचार न करेगा। अर्थात् प्रकारान्तरमें उन्होंने प्रकट किया, कि सिपाही लोग इस समय ऐसे उन्मत्त और उच्छृङ्खल हैं, कि उन्हें रोक रखनेकी क्षमता उनमें नहीं है;

ऐसी अवस्थामें ब्रटिश कर्म्मचारियोंके लिये मुलतान छोड़कर भागना ही अच्छा है। मूलराजको जिसकी आशङ्का थी, अंततः वही संघटित हुआ। उन्मत्त प्रजा और सैनिक पुरुषोंने विकट हुङ्कारकर ईदगाहपर आक्रमण किया। उस आक्रमणमें कानसिंह वैरी हुए और दोनों अङ्गरेज-कर्म्मचारी नृशंसभावसे मारे गये। कोई कोई अङ्गरेज ऐतिहासिक कहते हैं,—ईदगाहपर आक्रमणके व्यापारमें मूलराजका योगायोग था और इस व्यापारके नेतृगणको उन्होंने पुरस्कृत किया था। इस अभियोगके सम्बन्धमें यदि मूलराजको कोई वक्तव्य था तो, इस समय उसे कहता ही कौन और सुनता ही कौन? तब भी यह निःसङ्कोच कहा जा सकता है, कि इस हत्याकाण्डके लिये ब्रटिश-गवरमेण्ट ही प्रकारान्तरसे दोषी है। प्रथम सिखयुद्धकी समाप्तिके बाद सन्धिकी शर्तके अनुसार सिखराज्यमें शान्तिसंरक्षणका भार उसने ही तो अपने हाथ ग्रहण किया था। उस देशमें फिर शान्तिभङ्ग हुआ,इसके लिये क्या वही दोषी नहीं है? सुश्रृङ्खलासे कार्य्यसम्पादनका भार ग्रहणकर यदि कोई उसके सम्पन्न करनेमें अक्षम हो, तो उसके लिये कभी दूसरा दोषी हो सकता है? अतएव दो अङ्गरेज-राजपुरुषोंके इस नृशंस-हत्याकाण्डमें मूलराज या उसके अधीनस्थ सिखसैन्य चाहे जितनी दोषी हो या न हो, लेकिन वह दोष अङ्गरेजोंके जिम्मे भी कुछ कम नहीं आता। लेकिन अङ्गरेज प्रवल प्रतापशाली हैं, किसकी मजाल, कि अङ्गरेजोंके प्रति दोषारोप करे? सिख लोग मन्दभाग्य हैं, उनके गौरवके प्रकाशपर बदली छा गई है; सुतरां अङ्गरेजोंकी बुद्धिके दोषसे,—उनकी विश्वासघातकताके प्रतिफलस्वरूप,—

जो दुर्घटना संघटित हुई ; उसका मात्र फलभागी हुआ,—सिख सम्प्रदाय। मुलतानमें इन दो अङ्गरेज-कर्म्मचारियोंकी हत्याके फलसे ही दूसरे सिख-युद्धकी सूचना हुई ; पञ्जाबका स्वाधीनता-सूर्य्य हमेशाके लिये अस्ताचलगामी हुआ। कौन कह सकता है, किस साहसके साथ किसके दोषसे और किसकी त्रुटिसे पञ्जाबकी भाग्यका यह हाल हुआ ?

द्वितीय परिच्छेद ।

दूसरे सिख-युद्धका सूत्रपात ।

(रेसिडण्टके पास मुलतानकी दुर्घटनाका समाचार ;—उनके द्वारा सैन्य भेजनेकी व्यवस्था ;—सिख-सैन्यके प्रति अविश्वास ;—प्रधान सेनापतिसे सैन्यके साहाय्यकी प्रार्थना ,—युद्धारम्भमें उनका अनभिमत ,—गवरनर जनरलका सम्मति-ज्ञापन ,—लेफटण्ट एडवर्ड्सका अभियान , लेपर अधिकार ;—ससैन्य मूलराजके बाधा देनेके समाचारसे एडवर्ड्सका जिरन्दके दुर्गमें आश्रय लेना ,—कुलण्डके सैन्यदलके साथ उनका सम्मिलन ;—लफटण्ट एडवर्ड्सकी कार्य्यतत्परता ; डेरा गाजीखांपर आक्रमण ;—भावलपुरके सेनापतिकी अकर्म्मण्यता ,—एकदल विद्रोहियोंकी पराजय ,—सुद्दुसाममें पुहलें जय ।)

इंगलाण्डको दुर्घटनाके दो दिनो बाद यह समाचार लाहोरके इटिश-रेसिडराटके पास उपस्थित हुआ। उन्होंने सोचा,—विद्रो-ही सिखोंकी उच्छृङ्खलतासे ऐसा हुआ है; उन्हें इसका विश्वास नहीं हुआ, कि इस विद्रोहमें मूलराज किसी तरह लिप्त है। सुतरां विद्रोहियोंके दमनके लिये उन्होंने कितनी ही औरसे मुलतानमें सैन्य भेजनेकी व्यवस्था की। सात दल पैदल, दो दल स्थायी घुड़चढ़ी और तीन दल गोलन्दाज फौज और कितने ही गोले-गोलियां तय्यार हुईं; इसके अतिरिक्त उन्होंने १२ सौ घुड़चढ़ी सैन्यमें एक नया दल तय्यार करके भी इस अभियानमें भेजनेका विचार किया। ऐसे बन्दोबस्तके बाद, २३वीं अपरेलको रेसिडराट मुलतान-विद्रोहके आनुपूर्व्विक वृत्तान्तसे अवगत हुए तब वह समझ सके,—मुलतान-विद्रोहके दमनके लिये जो सिख सैन्य भेजी जारही है, विद्रोहके गुरुत्व-परिमाणसे वह पर्य्याप्त नहीं है। संख्याकी अल्पताकी अपेक्षा भी उनकी सततके विषयमें उन्हें घोर सन्देह उपस्थित हुआ। इस सङ्कटकी समस्याके समय, प्रथमतः, रेसिडराटने इटिश पक्षकी स्थानान्तरयोग्य तोपोंको लाहोरसे मुलतान भेजनेका विचार किया। लेकिन इसके बाद ही देशीय सैन्यदलकी विश्वासघातकता और दो इटिश-कर्म्मचारियोंके हत्याकाण्डकी नृशंसताको उपलब्धिकर उन्होंने उस सङ्कल्पको परित्याग किया। तब उनके दिलमें आया,—लाहोरसे इटिश-सैन्यके स्थानान्तरित करनेपर लाहो-रमें भी विपत्तिको सम्भावना है, यह कौन कह सकता है, कि लाहोर-दरबारके अधीनस्थ सिख सैन्यगण भी वैसी ही विश्वास-घातकता कर नहीं सकते? उस अवस्थामें मुलतानपर आक्र-

सनाके लिये हटिश-सैन्यको भेजनेपर, जिसे मित्र समझते हैं, शायद वही शत्रु-सैन्यके साथ योगदान कर विषम अनर्थ कर सकें। ऐसे सिद्धान्तके बाद उन्होंने पत्र लिखा,—"कह नहीं सकता, कि इस समय लाहोरसे हटिश-सैन्यदलके मुलतान भेज देनेपर, सिख-गवरमेण्टके स्थायित्वके सम्बन्धमें क्या फल होगा; सुतरां इस अभियानमें मैं किसी तरह हटिश-सैन्यदलको मुलतान भेज नहीं सकता।" रेसिडण्टका ऐसा साफ जवाब पाकर भी हटिशपक्षभुक्त सिख-शासनकर्त्तागण निरस्त हो नहीं सके। उन लोगोंने प्रकट किया, बिना हटिश-सैन्यकी सहायताके मूलराजको दमन करना उनके साध्यातीत है, जिसने दो हटिश कर्म्मचारियोंकी मुलतानमें हत्या की है, उनके दण्डविधानकी आशा भी सुदूर पराहत है। सिख-सम्प्रदायके इस जवाबपर अगत्या रेसिडण्टको कुछ विचलित होना पड़ा; उन्होंने वह सङ्कल्प परित्यागकर उसी समय प्रधान सेनापति लार्ड गफके नाम शिमला शैलपर एक पत्र भेजा। पत्रमें लिखा गया,— "राजनीतिक पद्धति-क्रमसे विचार करनेपर और हटिश-भारतकी हित-कामना करनेपर मुलतानकी ओर फौजका भेजना जरूरी है। उस हिसाबसे लाहोर-दरबारके अधीनस्थ सैन्यदलका बिना साहाय्य लिये, मुलतानके दुर्गको जीतना और नगरपर अधिकार करना ही अच्छा है। वहां शत्रुपक्षकी सहायतासे जो लोग बाधा प्रदान करेंगे, उन्हें दमन करना पड़ेगा। वर्त्तमान अवस्थामें ऐसे युद्धमें प्रवृत्त होनेके कर्त्तव्याकर्त्तव्यके विषयमें सामरिक नीतिके अनुसार आप ही विचार करें।" रेसिडण्टने मुलतानमें युद्धको बाधाको दूर कर समझा था। लेकिन सेना-

पति लार्ड गफने दूसरी राय प्रकाशित की। उन्होंने जवाब दिया,—"यद्यापि सुलतानके विरुद्ध युद्ध-यात्रामें सालके ऐसे समय जय पानेकी आशा नहीं है, तथापि जय पाना मैं सम्पूर्ण असम्भव भी नहीं समझता। यह युद्ध अधिक कालतक स्थायी रहेगा,—हम लोगोंके अभीष्टलाभमें यदि विलम्ब होगा,—तो ऐसी अवस्थामें हमारे बहुसंख्यक सिपाहियोंके प्राणनाशकी सम्भावना है। इससे नैतिक क्षतिकीभी बहुत सम्भावना है; भविष्यतमें हमलोगोंने जिनसब युद्धयात्राओंमें प्रवृत्त होनेका विचार किया है, मैं आशङ्का करता हूं, कि इससे उसके लिये विपरीत फल हो सकता है।" सेनापतिकी इस रायके साथ गवरनर जनरलका भी मतानैक्य नहीं हुआ। सुतरां प्रस्तावित युद्ध कुछ दिनोंके लिये स्थगित रहा।

सिन्धु नदके पूर्व्व किनारे डेरा फतेहखां नामक स्थानमें लफटण्ट एडवर्डस रहते थे। २२वीं अप्रेलकी सन्ध्याके समय मिष्टर एगनिउका भेजा साहाय्य प्रार्थना-पत्र उनके पास उपस्थित हुआ। उस पत्रको पा वह और स्थिर रह नहीं सके। डेरा फतेहखांसे सुलतान ९० मील दूर अवस्थित है, बीचमें तेओ नदी पार करना पड़ती है। एडवर्डसने शीघ्र सुलतानकी ओर सैन्य परिचालनाका बन्दोवस्त किया। १२ दल पैदल, ३५० घुड़सवार, दो बड़ी तोपें और २५ "जम्बूरक" या छोटी तोपोंने उस अभियानमें हठात् यात्रा की। जनरल वानकर्टलाण्ट बन्नू नामक स्थानमें सिख-दरबारके अधीनमें सेनापतिके पदपर नियुक्त थे। वहां लेफटण्ट टेलरके पास एक दल पैदल सैन्य और ४ तोपें भेजनेके लिये पत्र भेजा गया। २४वीं अपरेलकी फते-

टर्ट एडवर्डस ससैन्य नदी उतर "लेओ" की ओर बढ़े। उनके आनेके समाचारसे मूलराजके अधीनस्थ शासनकर्त्ता "लेओ" परित्याग कर चले गये, विना बाधा-विपत्तिके एडवर्डस उस स्थानपर अधिकार कर बैठे। इसके बाद एडवर्डसने वहां सेना-निवास स्थापन करनेका सङ्कल्प किया। उन्हें बाधा देनेके लिये चन्द्रभागा नदी पार हो मूलराज ससैन्य आगे बढ़ रहे थे,—इसी समय यह समाचार आ उपस्थित हुआ। समाचारके पानेपर मूलराजके प्रतिरोधके लिये एडवर्डस उद्योग करने लगे। इसी समय एक प्रयोजनीय विज्ञापन-पत्र उनके हस्तगत हुआ। जो सब सिख सिपाही दल परित्यागकर विद्रोही हो खड़े हुए थे, एडवर्डसके अधीनस्थ सिपाहियोंने उनका अनुकरण-कर उनके साथ योगदान किया,—यही विज्ञापनका मर्म्म था। इस विज्ञापन-पत्रको या और उनके पास विज्ञापन-पत्रके उपस्थित होनेसे पहले सम्भवतः—हरेक सिख सिपाही-द्वारा उसे देखा हुआ समझ, सिख-सिपाहियोंकी ओरसे लफ-टर्टका विश्वास अन्तर्हित हुआ। तब और आगे बढ़ना निरापद न समझ ससैन्य सेनापति कारलण्डके आनेकी प्रतीक्षामें विलम्ब करने लगे। इसी अवसरमें उन्होने और भी कौशल-जाल फैलाया, सिखोंके साथ जिसकी कभी सहानुभूति नहीं थी, छोटे छोटे उस श्रेणीके कुछ अफगानोंको उन्होंने अपने स न्दरबतुल्ल कर लिया। इसी समय समाचार आया,—सप्तसुर की पांच हजार फौज और आठ बड़ी बड़ी तोपोंके साथ चन्द्र-भागा नदी पारकर मूलराज आगे बढ़ रहे हैं, १ली मईके लेओ नामक स्थानमें उनके पहुंचनेकी पूरी सम्भावना है

अपने अधीनस्थ दो तृतीयांश फौजके प्रति सन्देह-युक्त लेफटिनेंट एडवर्डसने विपक्ष सैन्यके सामने न होना ही युक्तियुक्त समझा। इसके बाद सिन्धुनदको पारकर वह लिरान्दके दुर्गमें आश्रय लेनेमें कृतसङ्कल्प हुए। यहाँ ४थी मईको सुबदानखांकी परिचालित कुछ मुसलमान पैदल सैन्य और बड़ी तोपें ले जनरल कटलाण्डने आ उनके साथ योगदान किया।

१६वीं मईतक जितनी ब्रटिश-सैन्य समवेत हुई, उनमें चार हजार फौज विश्वासी समझी गई और ८ सौ सिक्ख-सैन्य अविश्वासीके नामसे प्रतिपन्न हुई। इस समय दश बड़ी तोपें और ३६ "जम्बूरक" नाम्नी छोटी तोपें ब्रटिश-पक्षकी ओर आ पहुंची थीं। लेकिन तब भी विपक्ष-दलके सैन्यकी संख्या ब्रटिश सैन्यकी अपेक्षा बहुत ज्यादा थी, सुतरां आगे बढ़नेके सम्बन्धमें एडवर्ड्स इधरउधर करने लगे। इसी समय भावलपुरके नवाब बहुसंख्यक सैन्यके साथ अङ्गरेजोंकी सहायता करने आये, उनका यह सङ्कल्प हुआ, कि वह शतद्रु नदी पारकर मुलतानपर आक्रमण करेंगे। इस समाचारसे लेफटिनेंट एडवर्ड्सके आनन्दकी अवधि नहीं रही। २०वीं मईको उन्होंने लाहोरके रेसिडेण्टको पत्र लिखा,—"इस समय मैं मुलतान अवरोधके लिये तय्यार हुआ हूं; आपकी सम्मति पानेपर और सवालखांको मेरी सहायता करनेके लिये आदेश देनेपर गरमीके बाकी समय और वर्षाकालतक विद्रोही मूलराजको मैं आवद्ध रख सकूंगा।" इस उद्देश्यसे इस समय डेरा गाजीखांपर आक्रमण करना ही उनका प्रधान उद्देश्य हो खड़ा हुआ। मूलराजके अधीनस्थ जवालसिंह नामक एक मनुष्यने डेरा गाजीखां और उसके अन्तर्गत

प्रदेशके शासनका भार पाया था; उनसे खयराखां नामक एक क्षमताशाली सर्द्दारसे मनोमालिन्य था। इस बार हटिश पक्षने खयराखांकी सहायता लेनेका कौशल-जाल बिछाया। "कण्टकेनै व कण्टकम्"—इस कूटनीतिके प्रभावसे ही भारतमें हटिश साम्राज्यकी प्रतिष्ठा हुई, डेरा गाजीखांके आक्रमणमें भी उन्होंने इसी नीतिका अवलम्बन किया। खयराखांके हस्तगत करनेसे उनके पुत्र गुलाम हैदरखां कटलण्डके सैन्यदलके साथ मिले और २०वीं मईको बहुसंख्यक सैन्य ले गुलाम हैदरने खुद ही लुङ्गामलको सिन्धुनदके उसपार विताड़ित किया। इसके बाद डेरा गाजी खांमें घोर युद्ध आरम्भ हुआ, और हटिश-पक्षकी कुछ भी सहायता न ले गुलाम हैदर अकेले ही अपना सैन्यदल ले वह युद्ध चलाने लगे। २०वीं मईकी रातभर और दूसरे दिन सवेरेतक घोर युद्ध चला। इस युद्धमें मूलराजके पक्षीय जला-लखां और उनके सहचर लङ्गामल और चैतन्यमल पराजित हुए। इस युद्धमें ही लुङ्गामल कैदी हुए और चैतन्यमल मारे गये। अन्तमें और कोई बाधा न दे गुलाम हैदरके हाथ डेरा गाजी खां समर्पणकर बन्दी सिख-सिपाहियोंने मुक्ति पाई। गुलाम हैदर नगरपर अधिकार कर बैठे, पराजित सिख सैन्यने नदी पार हो चली जानेका आदेश पाया।

डेरा गाजीखांके युद्धमें पराजयके बाद मूलराजके सैन्यदलने सिन्धुनदके पूर्व किनारे कुरवी नामक ग्राममें आश्रय लिया, यह लोग और आगे बढ़नेमें साहसी नहीं हुए। इसी समय भावलखांका सैन्यदल शतद्रु पार हो शुजाबादपर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़ा। हठतागने शुजाबाद पर्यन्त मार्ग

अपने अधीनस्थ दो तृतीयांश फौजके प्रति सन्देह-प्रयुक्त लफ्टर एडवर्डसने विपक्ष सैन्यके सामने न होना ही युक्तियुक्त समझा इसके बाद सिन्धुनदको पारकर वह सिरान्दके दुर्गमें आश्र लेनेमें कृतसङ्कल्प हुए। यहां ४थी मईको सुरवानखांको परि चालित कुछ मुसलमान पैदल सैन्य और बड़ी तोपें ले जन रल कटलण्डने आ उनके साथ योगदान किया।

१८वीं मईतक जितनी वृटिश-सैन्य समवेत हुई, उनमें चा हजार फौज विश्वासी समझी गई और ८ सौ सिख-सैन्य अवि- श्वासीके नामसे प्रतिपन्न हुई। इस समय दश बड़ी तोपें और २८ "जम्बूरक" नामकी छोटी तोपें वृटिश-पक्षकी ओर आ पहुंची थीं। लेकिन तब भी विपक्ष-दलके सैन्यकी संख्या वृटिश सैन्यकी अपेक्षा बहुत ज्यादा थी, सुतरां आगे बढ़नेके सम्बन्धमें एडवर्ड्स इधरउधर करने लगे। इसी समय भावलपुरके नवाब बहुसंख्यक सैन्यके साथ अङ्गरेजोंकी सहायता करने आये, उनका यह सङ्कल्प हुआ, कि वह शतद्रु नदी पारकर मुलतानपर आक्र- मण करेंगे। इस समाचारसे लेफ्टनण्ट एडवर्डसके आनन्दकी अवधि नहीं रही। २०वीं मईको उन्होंने लाहोरके रेसिडण्टको पत्र लिखा,—"इस समय मैं मुलतान अवरोधके लिये तय्यार हुआ हूं; आपकी सम्मति पानेपर और मखलखांको मेरी सहायता करनेके लिये आदेश देनेपर गर्म्मीके बाकी समय और वर्षाकालतक विद्रोही मूलराजको मैं आवद्ध रख सकूंगा।" इस उद्देशसे इस समय डेरा गाजीखांपर आक्रमण करना ही उनका प्रधान उद्देश्य हो खड़ा हुआ। मूलराजके अधीनस्थ जवाल- सिंह नामक एक मनुष्यने डेरा गाजीखां और उसके अन्तर्गत

प्रदेशके शासनका भार पाया था; उनसे खयराखाँ नामक एक क्षमताशाली सर्दारसे मनोमालिन्य था। इस बार ब्रिटिश पक्षने खयराखाँकी सहायता लेनेका कौशल-जाल बिछाया। "काष्ठकी नैव कण्टकम्"—इस कूटनीतिके प्रभावसे ही भारतमें ब्रिटिश साम्राज्यकी प्रतिष्ठा हुई, डेरा गाजीखाँके आक्रमणमें भी उन्होंने इसी नीतिका अवलम्बन किया। खयराखाँके हस्तगत करनेसे उनके पुत्र गुलाम हैदरखाँ कटलण्डके सैन्यदलके साथ मिले और २०वीं मईको बहुसंख्यक सैन्य ले गुलाम हैदरने खुद ही लुङ्गामलको सिन्धुनदके उसपार विताड़ित किया। इसके बाद डेरा गाजी खाँमें घोर युद्ध आरम्भ हुआ, और ब्रिटिश-पक्षको कुछ भी सहायता न ले गुलाम हैदर अकेले ही अपना सैन्यदल ले वह युद्ध चलाने लगे। २०वीं मईकी रातभर और दूसरे दिन सवेरेतक घोर युद्ध चला। इस युद्धमें मूलराजके पक्षीय जला-लखाँ और उनके सहचर लुङ्गामल और चैतन्यमल पराजित हुए। इस युद्धमें ही लुङ्गामल कैदी हुए और चैतन्यमल मारे गये। अन्तमें और कोई बाधा न दे गुलाम हैदरके हाथ डेरा गाजी खाँ समर्पणकर बन्दी सिख-सिपाहियोंने मुक्ति पाई। गुलाम हैदर नगरपर अधिकार कर बैठे, पराजित सिख सैन्यने नदी पार हो चली जानेका आदेश पाया।

डेरा गाजीखाँके युद्धमें पराजयके बाद मूलराजके सैन्यदलने सिन्धुनदके पूर्व किनारे कुरशी नामक ग्राममें आश्रय लिया, वह लोग और आगे बढ़नेमें साहसी नहीं हुए। इसी समय भावलखाँका सैन्यदल शतद्रु पार हो शुजाबादपर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़ा। हलतानके शुजाबाद पचीस मील

पश्चिम अवस्थित है। भावलखांका सैन्यदल शुजाबादकी ओर बढ़ा, मूलराजका सैन्यदल उन्हें बाधा देनेके लिये तय्यार हुआ। मूलराजने आदेश प्रचार किया,—वृटिश-सैन्यके आ भावलखांको सहाय्य देनेसे पहले ही भावलखांके सैन्यदलका गतिरोध किया जाय।

प्रकारान्तमें इस समय तीन सैन्य तीन ओर समवेत हुईं। मूलराजकी फौज मूलराजके सम्बन्धी रङ्गरायके अधीनमें परिचालित होने लगी; उस दलमें ८ हजारसे १० हजारतक घुड़चढ़ी और पैदल सैन्य और १० तोपें सज्जित थीं। भावलपुरके सैन्यदलमें ८ हजार घुड़चढ़ी और पैदल, ११ बड़ी तोपें और ३० जम्बूरक या छोटी तोपें थीं; वह दल चन्द्रभागा नदीके पूर्व्व किनारे फतेह मुहम्मद खां गोरीके अधिनायकत्वमें परिचालित होने लगा। सेनापति एडवर्डसका सैन्यदल दो भागोंमें विभक्त हुआ। उसका एक भाग जनरल कटलण्डके अधीनमें और दूसरा भाग एडवर्डसके अधीनमें परिचालित होने लगा। प्रथमोक्त दलमें १५ सौ सुदक्ष विश्वस्त पैदल सिख गोलन्दाज और छः तोपें और आखिरी दलमें ५ हजार घुड़चढ़ी और पैदल सैन्य और ३० जम्बूरक तोपें थीं। एडवर्डस और कटलण्डका परिचालित सैन्यदल चन्द्रभागा नदीके पश्चिम किनारे अवस्थिति करने लगा। फलतः तीन दलमें विभक्त प्रायः दूनी सैन्य मूलराजके सिपाहियोंपर आक्रमण करनेके लिये तय्यार हुई। मूलराजके सेनापति रङ्गराम शुजाबादसे तीन मील दक्षिण मुलतानकी राहमें छावनी सन्निवेश कर रहे। फतेह मुहम्मदका सैन्यदल १५ मील दक्षिण गोयेन नामक स्थानमें

रहने लगा और दोनो अङ्गरेज-सेनापतिकी परिचालित फौजने खांगड़से प्राय: १२ मील दक्षिण गलियानवालाके पारघाटके पास छावनी डाली। तीन सैन्यदलमें मानो एक त्रिभुज तय्यार हुआ। उसके एक कोने मूलराजका सैन्यदल, एक कोने भावलपुरका (दाऊद पुत्रोंका) सैन्यदल और दूसरे कोने दोनो अङ्गरेज-सेनापतिकी परिचालित फौज अवस्थिति करने लगी। इस बन्दोबस्तसे भावलपुरका सैन्यदल मानो मध्यस्थलमें अवस्थित हुआ; मूलराजका और वृटिशपक्षका सैन्यदल उसकी दोनो ओर विद्यमान रहा। भावलपुरके पीछे रह वृटिश सिपाहीने प्रकारान्तरसे आत्मरक्षाकी राह साफ कर रखी। यदि पराजय ही हो, तो "पलायनं परे परे।"

इसी समय क्षिप्रकारिताके साथ यदि रङ्गराम भावलपुरके सैन्यदलपर आक्रमण कर सकते, तो इस क्षेत्रमें ही उनकी जय पानेकी पूरी आशा थी। यद्यपि उनकी सैन्यकी संख्या भावलपुरकी सैन्यसंख्याके बराबर नहीं थी, लेकिन उनके सिपाही सुशिक्षित और स्वदेशप्राण थे, सुतरां इस क्षेत्रमें युद्ध उपस्थित होनेपर उनके विजय पानेमें संशयकी कोई सम्भावना नहीं थी। लेकिन शामतक युद्ध स्थगित रख उन्होने यह शुभसुयोग परित्याग किया। उन्होने सोचा था,—किनारीके पाससे वृटिशसैन्य नदी पार होगी, सुतरां अपनी छावनीसे ८ मील दूर बुकरी गांवकी ओर सैन्यकी परिचालनाकर, वृटिश सिपाहियोंके नदीपार करनेमें बाधा देंगे। उनका यही उद्देश्य था, कि आगे पारापारके समय वृटिश-सिपाहियोंको छिन्नभिन्नकर अन्तमें निःसहाय अवस्थामें भावलपुरके सैन्यदलको पराजित करेंगे।

लेकिन उनका यह उद्देश्य सबको समझमें आ गया उद्देश्य समझ भावलपुरकी सैन्य झटपट किनारेकी ओर बढ़ी। वहां फौजदारखांके अधीन इटिशपक्षके तीन हजार पठान-सिपाहियोंने नदी पार हो उनके दलमें योगदान किया। जिस राहसे रङ्गरामके सैन्यदलके आगे बढ़नेकी सम्भावना थी, भावलपुर और फौजदार खांके सिपाहियोंने वह राह घेर ली। उसी समय १८वीं जूनके सवेरे और भी कुछ सैन्य ले लफटनट एडवर्डसने चन्द्रभागा नदी पार की। स्थिर रहा, कि जनरल कटलण्ड भी बाकी सैन्यदलको साथ ले पश्चादनुसरण करेंगे। नदी पार होते ही एडवर्डस बार बार तोपोंके गर्जनकी आवाज सुन चौंक पड़े। वह समझ गये, —युद्ध आरम्भ हुआ है। रङ्गराम बड़े सवेरे ही बुकरीसे तेजीसे चल चार घण्टोंमें आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़े थे; लेकिन वहां उपस्थित हो उन्होंने देखा, कि विपक्षगण द्वारा पहलेसे ही पारघाट अधिकृत हुआ है। तब बहुत जल्द लौटकर उन्होंने जुनारके पहाड़पर सेना निवास स्थापन किया और उस पहाड़से गोला चलाने लगे। उस गोलावर्षणसे भावलपुरका सैन्यदल विध्वस्त होने लगा; वह लोग हताश्वास हो भागनेकी राह ढूंढने लगे। इसी अवसरमें ससैन्य लफटनट एडवर्डस आ उपस्थित हुए। वह बार बार भवालपुरके सिपाहियोंको उत्साहित करने लगे। लेकिन उनकी क्या मजाल थी, जो वह मुलतानकी सैन्यका गतिरोध करते। छः घण्टेतक घोरतर युद्ध चला। दिखमें आया,— शायद विजय-लक्ष्मी फिर आकर सिख-शौर्यकी पक्षपातिनी हुई। तत्कालके लिये

रणक्षेत्रने निवातनिष्कम्प भाव धारण किया। "खालसा" सैन्य समझी,—विपक्षगण पराजित हुए है, अब उन लोगोंको भयका कोई कारण नहीं है। बहुत दिनोंके बाद फिर गुरुनामकी जय-ध्वनिसे सिख-शिविर विकम्पित हुआ।

सिख-शिविरके ऐसे आनन्दके समय ब्रटिश-पक्षकी ओर छः नई तोपोंने आ सहसा समरक्षेत्रको प्रतिध्वनित किया। दो दल नई पैदल सैन्यने भी आ ब्रटिश पक्षमें योग दिया। इस अभावनीय परिवर्तनसे सिख लोग चौंक पड़े। उस क्षेत्रमें भी शत्रु सैन्यके गतिरोधकी चेष्टा की गई; लेकिन फिर वह लोग कृतकार्य्य हो नहीं सके। बहुत देरके युद्धके बाद सिख-लोग पीछे हटनेपर बाध्य हुए। वह ब्रटिशपक्षकी नई सैन्य भोत्सा-हसे दौड़ सिख-सैन्यकी छावनीपर अधिकार कर बैठी। सिखोंका बहुत युद्धोपकरण आठ तोपें और गोला-बारूद ब्रटिश पक्षके हाथ लगी। इस युद्धमें अङ्गरेजोंकी ओरके ३००सिपाही मरे और घायल हुए; और ५०० सिख सैनिकोंने प्राण-विसर्जन किया था। इसके बाद सिख लोग ब्रटिशपक्षको राहमें और कोई बाधा देनेकी चेष्टा न कर मुलतानकी ओर आगे बढ़े। मुलतानमें सिख-अङ्गरेजोंके घोर युद्धका आयोजन चलने लगा।

इसतरह किनारीके युद्धमें ब्रटिशपक्षकी जीत हुई, शुजाबादके किलादारने (दुर्गाधिपतिने) स्वतः प्रवृत्त हो अङ्गरेजोंकी वश्यता स्वीकार की। अन्यान्य और भी कितने ही उनके पराङ्गानुस-रणमें कृतकार्थ हुए। संसारकी विचित्र गति है। जब जिसकी जीत होती है, सभी उस समय उसके ही पक्षका अवलम्बन करते हैं। सुतरां किनारीके युद्धने अङ्गरेजोंकी जीतके बाद,

तृतीय परिच्छेद ।

मुलतानपर अधिकार ।

सन् १८४८—१८४६ ।

[मुलतानका विवरण ;—मुलतानपर आक्रमणका आयोजन ;—सेनापति हुइश्का घोषणाप्रचार ;—शेरसिंहका भाव-विपर्य्यय और अङ्गरेजोंका प्रत्यावर्त्तन ;—शेरसिंहका सम्मिलन ;—शेरसिंह द्वारा हजारा नामक स्थानमें नये सिख-युद्धका आयोजन ,—प्रायः तीन महीनेतक मुलतानके अवरोधका स्थगित रहना, दोनो पक्षका बलसंग्रह ;—दिसम्बर महीनेमें अङ्गरेजों द्वारा मुलतानपर पुनराक्रमण ;—१७ दिनका दारुण संघर्ष ;—३०वीं दिसम्बरको हठात् अङ्गरेजोंके गोलेकी आगसे मूलराजका बारूदखाना जलना ,—मूलराजका आत्मसमर्पण ;—मूलराजका विचार और निर्व्वासन ।]

चन्द्रभागा नदीके पूर्व्व किनारे नदी-किनारेसे तीन मील दूर मुलतान शहर अवस्थित है। नदीमें बाढ़ आनेपर नदीका जल शहरके पासतक फैलता है। मनोहर बागसे और खजूर प्रभृतिकी विविध वृक्षश्रेणीसे मुलतान शहर घिरा हुआ है। यहांके गर्म्मीके उत्तापमें मुलतान शहर अङ्गरेजोंके रहनेके लिये बहुत ही अनुपयोगी है। मुलतान शहरके सम्बन्धमें अङ्गरेज लोग व्यङ्ग-वचन कह समय समयपर एक कविताका उच्चारण करते हैं। उस कविताका मर्म्म है,—

चार चीजोंसे भरा उजड़ा शहर मुलतान है।
खाक उड़ती है, तपिश, कहते हैं, कब्रस्थान है।

मुलतान बहुत पुराना नगर है। मुलतान पर कितने ही परिवर्त्तनकी बाढ़ बह गई हैं। जिस ऊंचे भूमिखण्डपर मुलतान प्रतिष्ठित है, इसका ठिकाना नहीं, कि पुराने समयमें कितने नगरोंका कितना ध्वंसावशेष उस भूखण्डमें सञ्चित है। सुलतानके सन्निकट सादुग्रामके युद्धमें जब अङ्गरेजोंकी जीत हुई, तो मुलतान चारो ओरसे ईंटके प्राचीरसे वेष्टित था। लेकिन उस प्राचीरको सुदृढ़ न समझकर अशेष आयाससे मूलराजने उसपर और एक मट्टीकी प्राचीरकी प्रतिष्ठा की। उनके सैन्यदलके मुलतानमें प्रवेश करनेपर वह प्राचीर दुर्भेद्य दुर्ग-प्राकारमें परिणत हुई। पहले जो प्राचीर थी, उसे मूलराजके पिताने बहुत रुपये खर्चकर बनवाया था। और एकबार लाहोरकी मालगुजारी बन्दकर मुलतानने स्वाधीन होनेकी चेष्टा की थी, उसी समय विपक्ष पक्षके कई आक्रमणोंसे भी यह प्राचीर मौजूद रही। लेकिन मूलराज उस दृढ़तापर भी आस्था स्थापन कर नहीं सके। उन्होंने दृढ़तापर नई दृढ़ताका सम्पादन किया। इसतरह भारतीय दुर्गसमूहमें मुलतानका दुर्ग सबकी अपेक्षा दृढ़ और सुरक्षित हो गया। भारतीय शिल्पियोंके शिल्पनैपुण्यके बलसे कैसा सुदृढ़ दुर्ग तय्यार हो सकता है,—मुलतान उसका ही आदर्शस्थानीय है। मुलतानके दुर्गकी चारो ओर चौड़ी गहरी खाई थीं, खाईके सामने ही चालीस फीट ऊंचा दुर्भेद्य सुदृढ़ दुर्ग-प्राकार था, उस दुर्ग-प्राकारके ऊपर तीस ऊंचे बूर्जोपर तोपें सुसज्जित थीं दुर्गके भीतर दुर्गकी रक्षाका विपुल

आयोजन था। यदि बहुत दिनोंतक वह दुर्ग शत्रुओंसे अवरुद्ध रहे, तो अनायास ही वह लोग आत्मरक्षामें समर्थ होंगे,—इतना युद्धोपकरण और रसद संग्रहकर ससैन्य मूलराज मुलतानके दुर्गमें अवस्थान करने लगे।

मूलराजके ससैन्य मुलतानमें जा आश्रय ग्रहण करनेपर, मुलतानके आक्रमणके सम्बन्धमें नानाविध आयोजन चलने लगा। अङ्गरेज समझे, कि मुलतानपर अधिकार करना दुरूह-व्यापार है सही, लेकिन मुलतानपर अधिकार न कर सकनेपर उनका सब गर्व्व ही खर्व्व होगा। इसलिये अनेक परामर्शके बाद पञ्जाब-सैन्यके अधिनायक जनरल हुइश मुलतानकी ओर यात्रा करनेके लिये आदिष्ट हुए। अन्यान्य नाना स्थानोंसे मुलतान-अभियानमें सैन्य समावेश आरम्भ हुआ। २४वीं जुलाईको जनरल हुईश, ८०, ७६ सिपाही, दुर्ग अवरोधोपयोगी ३२ तोपें और अश्ववाहित १२ तोपें ले आगे बढ़े। उनका सैन्यदल दो भागोंमें विभक्त हुआ। एक दल लाहोरसे यात्राकर इरावती नदीके पूर्व्व किनारेसे आगे बढ़ने लगा; दूसरा दल फीरोजपुरसे यात्राकर शतद्रु नदीके पश्चिम पारसे ब्रिगेडियर सलटरके अधिनायकत्वमें परिचालित हुआ। इससे पहले अङ्गरेजोंके अधीनस्थ देशीय सैन्यदलके ८६१५ घुड़चढ़े, १४३२७ पैदल सिपाही मुलतान-अवरोधके लिये समवेत हुए थे; उनके साथ साथ अश्ववाहित ४५ तोपें आ पहुंची थीं। लफटनट एडवर्डस द्वारा ७,७१८ पैदल और ४,०३६ घुड़चढ़ी सैन्य परिचालित हुई थी; भावलपुरकी सैन्यके अन्तर्गत ५,७०६ पैदल सिपाही और १,६०० घुड़चढ़ी सैन्यकी लेफटनट लेक परिचालना कर रहे थे। ६०६ सिपाही पैदल और ३३५८

अम्बारोंकी सिख सैन्य, राजा शेरसिंहकी आज्ञाधीन, अवस्थित थी। फलतः अङ्गरेज पक्षकी प्रायः ३२ हजार, सैन्य मूलराजकी बारह हजार सैन्यके विरुद्ध सज्जित हुई थी। उस अल्पसंख्यक सैन्यको लेकर भी दुर्ग-प्राकारकी सहायतासे, मूलराज विपुल ब्रटिश-वाहिनीके सामने खड़े हुए।

ब्रटिश-पक्षकी सब सैन्यके आ एकत्र समवेत होनेपर, ४थी सितम्बरको जनरल हुइशने एक घोषणापत्रका प्रचार किया। उस घोषणापत्रका यही उद्देश्य था, कि अवरुद्ध मुलतानके अधिवासी आत्मसमर्पण करें। उन्होंने प्रकट किया,—"आगामी काल (५वीं सितम्बरको) सूर्योदयसे पहले राजकीय तोपें दगेंगी; तोपकी आवाज सुननेके बाद, २४ घण्टेमें बिना शर्त्त सबको आत्मसमर्पण करना पड़ेगा। ग्रेट-ब्रटेनकी महारानी और उनके मित्र महाराज दलीपसिंहके सम्मानार्थ इस आत्मसमर्पणकी जरूरत है। जो अन्यथा करेंगे, वह शत्रुके नामसे गिने जायेंगे।" लेकिन इस घोषणापत्रसे किसीने आत्मसमर्पण नहीं किया। मूलराजके पक्षावलम्बी सिख लोग उस समय इतने उत्तेजित थे, कि उन लोगोंने किसी तरह वश्यता स्वीकार करना नहीं चाही। परन्तु दो मील दूर-स्थित नगर-प्राकारसे एक तोपध्वनिसे हुइशके घोषणा-प्रचारका उत्तर दिया गया। रेसिडण्टने विश्वास किया था, कि मुलतानके आक्रान्त होनेसे ही मूलराज आत्मसमर्पण करनेपर बाध्य होंगे। लेकिन इस समय उन्हें इस आशासे निराश होना पड़ा। अधिकन्तु अङ्गरेजोंके दलमें भी कितने ही सिखोंने भागना शुरू किया। शेरसिंह तुलुम्बामें अपेक्षा करनेके लिये अङ्गरेजों द्वारा आदिष्ट

हुए थे। लेकिन उन्होंने भी फिर उस आदेशको नहीं माना ; अपने पिता छत्रसिंहके हजारा प्रदेशमें अङ्गरेजोंके विरुद्ध अस्त्र धारण करनेकी बात सुन वह भी अङ्गरेजोंके प्रति विमुख हुए।

७वीं सितम्बरके दिन अङ्गरेजोंने मुलतानपर आक्रमण किया। ६वीं सितम्बरकी रात मूलराजके सिपाहियोंको सामनेके बाग और मकानसे विदूरित करनेकी चेष्टा चलने लगी। लेकिन रातके घोर अन्धकारमें और नानारूप विशृङ्खलामें अङ्गरेजोंका वह आक्रमण व्यर्थ हुआ। लेकिन आक्रमण कारने ना ब्रटिश-पक्ष विताड़ित हुए ; मूलराजका भरोसा दूना बढ़ा। इसके बाद अङ्गरेजपक्षसे दो दिनोंतक बराबर गोला बरसता रहा ; लेकिन उससे भी कोई सुफल नहीं हुआ। १२वीं तारीखको दुर्ग-प्राचीरके वहिर्भागमें आ मूलराजने युद्ध आरम्भ कर दिया। बहुत देरतक दोनो ओर घोरतर संग्राम चला। लेकिन उस संघर्षमें मूलराज पराजित हुए। उनके ५०० सिपाही युद्धमें मारे गये, आक्रमणकारी अङ्गरेजोंको नगर-प्राकारकी ओर ८००, गज आगे बढ़नेको सुविधा हुई। इस बार अङ्गरेज पक्ष जहां उपस्थित हुआ, वहांसे गोला चलानेपर अनायास ही वह गोला नगर-प्राचीरको तोड़ सकता था।

नगर-ध्वंसकी राह सुगम हो गई सही, लेकिन और एक विपत्ति उपस्थित हुई। दो दिनोंके युद्धमें जो लोग आगे बढ़े थे, इसबार वह फिर खड़े हुए। मालूम होता है, कुछ सिख-सिपाहियोंके हृदयमें इसबार व्याकुलता उपस्थित हुई,—उनके हृदयमें स्वदेश-प्रीति जाग उठी। जान पड़ता है, कि इसबार यह लोग समझ गये,—अङ्गरेज कांटेसे कांटेके उखाड़नेकी

मुलाकात की। दलपुष्टि होनेके कारण मूलराजके आनन्दकी अवधि नहीं रही। तब भी मूलराज शेरसिंहपर पूरी तरह विश्वास स्थापन कर नहीं सके। दुर्गमें शेरसिंहका आश्रय नहीं हुआ; दुर्गके बाहर शहरमें उनके लिये स्वतन्त्र आवास निर्दिष्ट हुआ। अधिकन्तु नगरके बाहर एक मन्दिरमें लेजा मूलराजने शेरसिंहको और उनके कर्म्मचारियोंको प्रतिज्ञावद्ध कराया। इसतरह नाना कारणोंसे शेरसिंह और मूलराजमें मिलन नहीं हुआ। तब मुलतानमें और अधिक रहना ठीक न समझ, शेरसिंहने अपने पिताके साहाय्यार्थ हजारा प्रदेशमें जाना चाहा, उन्होंने प्रकट किया,—मूलराज यदि उनके सिपाहियोंको कुछ दिनकी पेशगी तनखाह दे सकें, तो नये देशमें जा वह एक नये सिख-युद्धकी अवतारणा करें। यह प्रस्ताव मूलराजको समीचीन मालूम हुआ। नया समरानल प्रज्वलित करनेके लिये ६वीं अक्टोबरको शेरसिंह पिताके पास गये।

१४वी सितम्बरको मुलतानसे अङ्गरेजी फौज लौटी। १७वी दिसम्बरको फिर वह लोग मुलतानपर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़े। बीचमें प्राय: तीन महीनेतक दोनो पक्ष ही अपनी अपनी दलपुष्टि और अस्त्रशस्त्रके संग्रहके आयोजनमें लगे थे। अङ्गरेजों-की ओर कितने ही सिपाही आये तोप बन्दूक चलानेकी अनेक नई राहें साफ हुईं मूलराजभी उदासीन नहीं थे। नगर और उपनग-रकी दृढ़ताके सम्पादनमें उन्होंने विशेषरूपसे चेष्टा की थी, अधिकन्तु उनकी कुछ सैन्यके शेरसिंहके साथ हजारा जानेसे नये सैन्यदलका संग्रहकर सैन्यदलका अभाव-पूरण कर-नेके लिये भी उनकी चेष्टामें त्रुटि हुई नहीं थी। इसी समय

चेष्टा करते हैं। हजारा प्रदेशमें शेरसिंहके पिता छत्रसिंहके अङ्गरेजोंके विरुद्ध अस्त्रधारण करनेपर, अङ्गरेज पक्षावल उनके पुत्र शेरसिंहका हृदय पहलेसे ही विचलित हुआ था। १४वीं सितम्बरके सवेरे मुलतानकी ओर बढ़नेके समय उनका मन पूरी तरह बदल गया। उन्होंने मन ही मन सोच देखा,—"मैं यह क्या करता हूं। विदेशी विधर्म्मीका पक्ष अवलम्बनकर, स्वदेशी, स्वजाति, स्वधर्म्मीके हृदयमें मूलाघात करने चला हूं।" सम्भवतः इसी अनुशोचनासे उनका हृदय फट गया। उन्होंने अपने सैन्यदलमें आदेश प्रचार किया,—"धर्मका धौंसा" अर्थात् "खालसाके" नामसे धर्म्मका बाजा बजाया जाय। जब यह समाचार अङ्गरेज सेनापतिके पास उपस्थित हुआ, तो उनका माथा घूम गया। "खालसा"के नामसे मुलतानपर आक्रमणकारी सैन्यदल सचमुच ही यदि अलग हो जाय, तो दारुण विपत्तिकी सम्भावना है। वह प्रधान प्रधान सैनिक कर्म्मचारियोंको बुला कर्त्तव्य अवधारणके लिये व्यस्त हुए। तब सबने ही एकवाक्यसे अभिमत प्रकाश किया,—इस अवस्थामें मुलतानका अवरोध सम्भवपर नहीं है। सुतरां आक्रमणकारी सैन्यदलके नगर-प्राकारके सन्निकट उपस्थित होनेपर भी उसे लौट आनेका आदेश हुआ। शायद अल्पक्षणमें ही नगर ध्वंस होता, लेकिन वह आशा इस समय सुदूरपराहत हो पड़ी। इसके बाद सेनापतिके पाससे फिर साहाय्यार्थी सैन्यदलके आ उपस्थित होनेतक अङ्गरेज पक्ष "तब्बी" नामक स्थानमें सेनानिवास स्थापनकर अवस्थान करनेपर बाध्य हुई।

इधर शेरसिंहने ससैन्य मुलतानमें उपस्थित हो मूलराजसे

मुलाकात की। दलपुष्टि होनेके कारण मूलराजके आनन्दकी अवधि नहीं रही। तब भी मूलराज शेरसिंहपर पूरी तरह विश्वास स्थापन कर नहीं सके। दुर्गमें शेरसिंहका आश्रय नहीं हुआ, दुर्गके बाहर शहरमें उनके लिये स्वतन्त्र आवास निर्दिष्ट हुआ। अधिकन्तु नगरके बाहर एक मन्दिरमें लेजा मूलराजने शेरसिंहको और उनके कर्म्मचारियोंको प्रतिज्ञावद्ध कराया। इसतरह नाना कारणोंसे शेरसिंह और मूलराजमें मिलन नहीं हुआ। तब मुलतानमें और अधिक रहना ठीक न समझ, शेरसिंहने अपने पिताके साहाय्यार्थ हजारा प्रदेशमें जाना चाहा, उन्होंने प्रकट किया,—मूलराज यदि उनके सिपाहियोंको कुछ दिनकी पेशगी तनखाह दे सकें, तो नये देशमें जा वह एक नये सिख-युद्धकी अवतारणा करें। यह प्रस्ताव मूलराजको समीचीन मालूम हुआ। नया समरानल प्रज्वलित करनेके लिये ६वीं अक्टोबरको शेरसिंह पिताके पास गये।

१४वीं सितम्बरको मुलतानसे अङ्गरेजी फौज लौटी। १७वीं दिसम्बरको फिर वह लोग मुलतानपर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़े। बीचमें प्रायः तीन महीनेतक दोनों पक्ष ही अपनी अपनी दलपुष्टि और अस्त्रशस्त्रके संग्रहके आयोजनमें लगे थे। अङ्गरेजो-की ओर कितने ही सिपाही आये तोप बन्दूक चलानेकी अनेक नई राहें साफ हुईं मूलराजभी उदासीन नहीं थे। नगर और उपनगरकी दृढ़ताके सम्पादनमें उन्होंने विशेषरूपसे चेष्टा की थी, अधिकन्तु उनकी कुछ सैन्यके शेरसिंहके साथ हजारा जानेसे नये सैन्यदलका संग्रहकर सैन्यदलका अभाव-पूरण करनेके लिये भी उनकी चेष्टामें त्रुटि हुई नहीं थी। इसी समय

आसपासके मित्र रजवाड़ोंसे अर्थ-संग्रहकी चेष्टा हुई थी राजनीतिकी तीक्ष्ण बुद्धिके फलसे इस समय मूलराजने काबुल दोस्तमहम्मद और कन्धारके सर्दारोंको भी वशीभूत करनेकी चेष्टा की थी। उन लोगोंसे उन्होंने कहलाकर भेजा था,—"आप लोग आइये; मेरे सहाय होइये; हमलोग सब देशसे फिरङ्गियोंको दूर कर दें। यदि उनको दूर कर सकेंगे, तो सिन्धु-नदके दोनों किनारे दोनों लोग निर्विघ्न होंगे।" यह कहना बाहुल्य है, कि मूलराजकी यह उद्दीपना व्यर्थ हुई नहीं थी। उनके साथ सम्मिलित न होनेपर भी, परवर्ती घटना-परम्परासे यह कहना ही बाहुल्य है, कि इसी समय कितने ही अफगानोंने अङ्गरेजोंका विरोध किया था। दूसरी ओर मूलराजके या सिख-आधिपत्य फैलानेके विरुद्ध भी षड्यन्त्रका अभाव नहीं था,—वह षड्यन्त्र बहुत कुछ प्रबल हो गया था। जिस षड्यन्त्रसे, जिस चक्रान्तसे, भारतकी सब शक्ति ही विपर्यस्त हुई है, उसी षड्यन्त्रने ही इस क्षेत्रमें भी पूरा प्रभाव फैलाया था।

दूसरीबार मुलतानपर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़ अङ्गरेजी सैन्यने पहले दुर्गपर आक्रमण करनेकी इच्छा प्रकाश नहीं की। पहले उन लोगोंने नगर-प्राकारके उत्तर-पूर्व कोनेपर पहुंच शहरके निचले भागमें और गोला बरसाना शुरू किया। उक्त शहरतलीके भीतर वलीदाबाद नामक स्थानमें मूलराजके पिता सावनमलकी समाधि मौजूद थी। मूलराजका प्रासाद "आमखास" भी उसी महल्लेके भीतर था। मूलराजने ऐसा खयाल नहीं किया, कि एकाएक वह गांव आक्रान्त होगा। सुतरां बहुत थोड़ी सिखसेनाके एक दिनमें ही वह गांव विपर्यस्त

हुआ। उस आक्रमणके साथ ही साथ नगरप्राकारके बहुत ही नजदीक अङ्गरेजोंने अपनी फौज स्थापन की। १०वीं दिसम्बरतक इसीतरह बीत गया। उस दिन एकाएक अङ्गरेजोंका एक गोला किलेके अन्दर बारूद घरमें जा गिरा। यह कहनेकी बात नहीं है, कि बारूद-घरमें गोलेके गिरनेसे कैसा सर्वनाश उपस्थित हुआ। उस बारूद-घरमें चार लाख पाउण्ड बारूद मौजूद थी। गोलेके गिरते ही बारूद-खाना धू धू जल गया, भीषण अग्निसयसे दुर्गकी रक्षा करनेवाली पाँच हजार सिक्ख-सैन्य मर गई, दुर्गमें घोर आर्त्तनाद उठा। अब मूलराज समझे,—विधि वाम हैं। समझे,—सिखोंका भविष्यत् अन्धकार-मय है। समझे,—विधाताकी इच्छा नहीं है, कि फिर सिखजाति जागे। नहीं तो ऐसे दिनों ऐसा विपद कभी उपस्थित होता है? इस दुर्घटनासे सिख-सैन्य हताश-सागरमें निमग्न हुई, मानो किसीने उनके हृदयकी सञ्जीवनी शक्ति छीन ली,—मानो किसीने उनके हृदयसे उद्दीपनाकी आग बुझा दी।

सन् १८४९ ई०की २री जनवरीको नये सालके प्रारम्भमें नगरका एक प्राचीर टूटा। आक्रमणकारी सिपाहियोंने सोचा,—इस प्राचीरके टूटते ही वह लोग नगरमें प्रवेश कर सकेंगे, लेकिन कामके समय विपरीत व्यापार सामने आया। उन्होंने देखा, कि उस प्राचीरके पास ही एक नई प्राचीर मौजूद है; वह प्राचीर उँचाईमें तीस फुटसे कम नहीं है। सुतरां एक प्राचीरके तोड़नेपर भी सैन्यदल उस याताले लौटनेपर बाध्य हुआ। इतने प्राचीरकी दूसरे एक हिस्सेके टूटनेपर नगरमें जानेकी राह सुगम हुई। लेकिन अङ्गरेजोंने तब भी देखा, कि दुर्ग-

प्राकार समभावसे मौजूद है; घोर युद्धके सिवा दुर्गपर अधिकार करना किसी तरह सम्भवपर नहीं। जो हो, नगरको विपक्षके हाथोंमें जाते देख और सिपाहियोंको भागनेको आज्ञा दे, प्रायः तीन हजार सुदक्ष सैन्यके साथ मूलराज उस दुर्गमें मौजूद रहे। दुर्गका दरवाजा बन्द रहा; अङ्गरेज लोग दुर्गमें घुसनेके लिये विधिमतसे चेष्टा करने लगे। ४थी जनवरीको दुर्गकी उत्तर ओर बम्बई-विभागकी सैन्यदलने छावनी स्थापन की, दुर्गके उत्तर-पूर्व प्रान्तमें बङ्गालकी फौज रहने लगी, पश्चिम ओर कितनी ही सैन्यने राह रोक रखी। इसतरह चारो-ओरसे दुर्गके अवरुद्ध होनेपर मूलराज हताश हो पड़े। तब आत्मसमर्पणके सिवा और कोई उपाय न देख उन्होंने मेजर एडवर्डससे सन्धिकी प्रार्थना की। लेकिन एडवर्डस वह प्रस्ताव मञ्जूर कर नहीं सके; उस बारेमें उन्होंने जनरल हुइशसे राय लेनेका उपदेश दिया। लेकिन सेनापति हुइशने मूलराजकी कोई बात सुनना नहीं चाही। उन्होंने स्पष्टतः ऐसा अभिप्राय प्रकट किया, कि मूलराज यदि बिना शर्त्तके आत्मसमर्पण करें, तो अच्छा है, नहीं तो जबरदस्ती दुर्गपर अधिकार किया जायगा। मूलराज और क्या कर सकते थे? फिर और भी कई दिनो इधर उधर करने लगे। इसीके भीतर ८वीं जनवरीको अङ्गरेज-सेनापतिने मूलराजके पास एक दूत भेजा। उस दूतसे भी अङ्गरेज-सेनापतिने साफ ही कहा था,—बिना शर्त्तके आत्मसमर्पण करना पड़ेगा। और कई दिनोंतक बराबर गोला बरसना शुरू हुआ। इसी बीचमे चारो ओरकी प्राचीरके कुछ कुछ टूटनेपर, स्थिर हुआ,—१२वीं जनवरीके सवेरे दुर्गके भीतर

अङ्गरेजी फौज प्रवेश करेगी। लेकिन इसकी कोई जरूरत नहीं पड़ी। आखिरी मुहूर्त्तमें मूलराजने आत्म-समर्पण किया; बिना बाधाके दुर्ग अङ्गरेजोंके अधिकृत हुआ, मूलराज अङ्गरेजोंके कैदी हुए। मूलराज २७ दिनोंतक कैद रहे। उस अवरोधके समय २१० वृटिश सिपाही मरे और ९१० घायल हुए। सिखोंके हताहतका परिमाण कौन निर्द्देश करेगा? जो हो, अन्तमें लाहोरमें मूलराजका विचार आरम्भ हुआ। विचारसे मूलराज दोषी ठहराये गये, उन्हें प्राणदण्डका आदेश हुआ। विचारके फलसे मूलराज फांसीके तखतेपर लटकाये जाते, मूलराजके लिये यही ठीक भी था। लेकिन विचारपतियोंने अन्तमे उनकी ओर दया-प्रकाश किया। अन्तमें यही ठीक हुआ,— अवस्थाकी गतिसे मूलराजने अपकर्म्म किया है, सुतरां प्राणदण्ड न दे उन्हें समुद्र-पार निर्व्वासन किया जाय। नहीं मालूम मूलराजपर इतनी दया क्यों हुई थी। लेकिन इसे मूलराज ही जानते थे, कि उनके लिये यह दया यम-यन्त्रणा जैसी थी, या उनके अन्तर्य्यामी ही जानते थे। हम उसका क्या बखान कर सकते हैं।

———

चतुर्थ अध्याय।

रामनगर और चिलियानवालाका युद्ध।

सन् १८४८ ई० अक्टोबर—सन् १८४९ ई० जनवरी।

(छत्रसिंहका विद्रोह ,—मेजर जार्ज लरेन्स प्रभृतिका कोहाट भागना ;—कोहाटके शासनकर्ता सुलतान मुहम्मद खां द्वारा लरेंस प्रभृतिका छत्रसिंहके हाथ बिकना ,—रामनगरके शेरसिंहके साथ अङ्गरेजोंके घोर युद्ध ;—किउ।टन हवलक प्रभृतिकी मृत्यु ;—शेरसिंहका सैन्यदल द्वारा रामनगरपरित्याग , छत्रसिंहसे शेरसिंहका मिलना ;—चिलियानवालामें अङ्गरेजोंके साथ सिखोंका घोर समर ,—चिलियानवालामें अङ्गरेजोंका पराजय ;—इस युद्धके जय-पराजयके सम्बन्धमें मत-पार्थक्य।)

हजारा प्रदेशमें छत्रसिंहने विद्रोहकी आगका धुंवा फैला दिया था। इस समय उस विद्रोहकी आग फैल पड़ी थी। उनके साथ अफगानजातिके योगद न करनेसे छत्रसिंहकी ताकत बहुत बढ़ गई थी। सन् १८४८ ई०की २३वीं अक्टोबरको पेशावरकी सब सिख सैन्यने इस विद्रोहमें योगदान किया। उन्हें फिर काममें प्रवृत्त करनेकी चेष्टामें मेजर जार्ज लरेंस असफलकार्य्य हुए। इसके बाद वह अपनेको बचानेके लिये अपने सहकारी लफ-टनट बावरके साथ कोहाट भाग गये। कोहाट,पेशावरसे ३६ मील दक्षिण अवस्थित है। काबुलके अमीर दोस्तमुहम्मदखांके भाई सुलतान मुहम्मदखां उस समय कोहाटके शासनकर्त्ता थे।

अफगान युद्धके समय अङ्गरेजोंने उनकी नृशंसताका बहुत परिचय पाया था। तब भी लाचार हो लरेंस यहीं ही आश्रय लेनेपर बाध्य हुए। इसमे पहले लाहोरमें विद्रोह उपस्थित होनेके समय लरेंसको पत्नीने लाहोरसे भागकर कोहाटमें आश्रय लिया था। इस कारण भी लरेंस और उनकी सहकारियोंने कोहाट जानेकी इच्छा की। लेकिन उनके कोहाट जानेका फल बहुत ही विषमय हुआ। अङ्गरेजोंने आशा की थी, कि कोहाटके शासनकर्त्ता सुलतान मुहम्मद अङ्गरेज-अतिथिगणके प्रति सदव्यवहार करेंगे, लेकिन सदव्यवहारके बदले सुलतान मुहम्मदने उन्हें छत्रसिंहके हाथ बेच डाला। छत्रसिंहने सुलतान मुहम्मदको पेशावर जिलेका हिस्सा दे अङ्गरेजोंको कैदीके रूपमें पाया। छत्रसिंहके विद्रोह और शेरसिंहके अङ्गरेजोंका पक्ष छोड़ने, इन दोनों कारणोंसे गवरनर जनरल बहुत ही चिन्तित हो पड़े। ऐसी चिन्ता उस समय सबके ही दिलमें पैदा हुई, कि शायद सिखोंने फिर एक नई उद्दीपनसे उद्दीपित हो, फिर एक नये समरकी आग जलाई। इसके बाद प्रधान सेनापति लार्ड गफको फीरोजपुरमें सैन्य-समावेशका आदेश दे गवरनर जनरल उत्तर-पश्चिम प्रदेशकी ओर बढ़े। युद्धक्षेत्रमें उतर सेनापति लार्ड गफने चन्द्रभागा नदीकी ओर सैन्यकी परिचालना करना शुरू की।

अतएव, नदीके पूर्व्व किनारे, डेढ़ मीलकी दूरीपर, रामनगर गांवके पास शेरसिंहने छावनी की। नदकी टेढ़ी चालकी वजह यह जगह एक द्वीपके रूपमें परिणत हुई थी। दोनों ओर नदीका जलप्रवाह प्रवाहित हो जहां मिलता था, उसीके मध्यस्थलमें

सिखसैन्य अवस्थान करती थी। वर्षाके समय उसकी चारों ओर जलराशि फैली रहती है; दूसरे समय पूर्व्व ओरका जल-स्रोत सूखकर स्थान स्थानमें बालूका ढेर सञ्चित रहता था। पश्चिम ओरका प्रधान जलप्रवाह गभीर और विस्तृत है। सिख लोग प्रधानतः नदीके पश्चिम किनारे और पहले कहे हुए द्वीपपर अधिकार किये हुए थे। पूर्व्व किनारे भी सिखोंकी फौज और तोपका परिचय पाया जाता है। युद्धक्षेत्रमें आगे बढ़ लार्ड गफ पहले ही सिखोंपर आक्रमण या उन्हें स्थानच्युत करनेके लिये दृढ़प्रतिज्ञ हुए। एकदल पैदल फौजके साथ ब्रिगेडियर कम्बलको 'लार्ड क्लाइवको' आगे बढ़नेके लिये आज्ञा दी गई। उनके साथ साथ एक दल घुड़चढ़ी फौज घोड़ेसे जुती हुई तोपोंके साथ तीन दल गोलन्दाज फौज ब्रिगेडियर किउरटनके अधीन परिचालित होने लगी। लेकिन रामनगरमें उपस्थित हो अङ्गरेजोंने देखा, कि सिख सैन्य उस जगहको छोड़ चली गई है। सुतरां वह लोग फिर नदीकी ओर बढ़ने लगे। सिख सैन्यकी ठि[illegible] की खबर लिये या उस विषयमें उपयुक्तरूपसे खबरसे आगाह न हो, आगे बढ़नेपर अङ्गरेज लोग विपदमें गिरे उनके सामने ही सिखोंकी अट्ठारह तोपें एक पंक्तिमें सज्जित थीं, अङ्गरेजोंको आगे बढ़ते देख सिखोंने गोला बरसाना शुरू किया। आगे बढ़ते हुए अङ्गरेजोंके गोलन्दाजोंको चाल रुकी। अङ्गरेजोंकी एक तोप सिखोंने ले ली। अङ्गरेजी फौज पीछे हट जानेपर बाध्य हुई। इसी समय अङ्गरेजोंकी युद्धोपकरणसे भरी दो गाड़ियां उलटकर नदीके जलमें जा गिरीं। अब नये उत्साहसे उत्साहित हो तीन हजारसे चार हजारतक घुड़चढ़ी सिख-सैन्य अङ्गरेजोंपर

आक्रमण करनेके लिये दौड़ी। लेकिन उस आक्रमणका विपरीत फल हुआ; करनल हेवलक परिचालित सैन्यदलकी गोलीकी चोटसे सिख इस यात्रामें पर्युदस्त होने लगी। लेकिन क्या उससे भी सिख लोग निरस्त हुए? उन लोगोंने दूसरीवार और तीसरी वार आक्रमण किया। उस आक्रमणसे अङ्गरेज लोग फिर विचलित हो पड़े। लार्ड गफने अङ्गरेज पक्षको लौटनेकी आज्ञा दी। ब्रिगेडियर क्यूरटन सिपाहियोंमें उस आदेशके प्रचार करनेके लिये बढ़ रहे थे, शायद उनके मुंहसे आदेश-वाक्य निकला ही होगा,—इसी समय वह एकाएक सिख-सैन्यकी चलाई हुई गोलीसे मृत्यु मुखमें पतित हुए। देखते देखते विपक्षके अस्त्राघातसे करनल हेवलककी भी मृत्यु हुई। कप्तान फिजजेराल्ड सांघातिक रूपसे घायल हुए। अङ्गरेजी छावनी विषादकी घनच्छायासे समाच्छन्न हुई।

शेरसिंह चन्द्रभागा नदीके किनारे छावनी बना दर्पके साथ रहने लगे। रामनगरके युद्धमें अङ्गरेज लोग उन्हें जरा भी विचलित कर नहीं सके। उनके अधिनायकत्वमें इस समय प्रायः पैंतीस हजार सिख-सैन्य परिचालित होने लगी। पहले संघर्षमें पराजित होनेपर, ब्रिटिश-पक्ष फिर सामने समरमें अग्रसर नहीं हुआ। इस बार ब्रिटिशपक्षने शेरसिंहकी बांई ओरसे आक्रमणकी व्यवस्था की। सेनापति सर जोजफ थैकवल इस समय अङ्गरेज-पक्षकी घुड़चढ़ी सैन्यदलकी परिचालना कर रहे थे, तीन दल घुड़चढ़ी सैन्य और उसके उपयुक्त तोप प्रभृति ले चन्द्र नदीकी ओर दौड़े। २री दिसम्बरको उनके सैन्यदलने वजीराबाद छोड़ सिख-छावनीके नजदीक होनेकी चेष्टा की। लेकिन शेरसिंहने

सिखसैन्य अवस्थान करती थी। वर्षाके समय उसकी चारों ओर जलराशि फैली रहती है; दूसरे समय पूर्व ओरका जल-स्रोत सूखकर स्थान स्थानमें बालूका ढेर सञ्चित रहता था। पश्चिम ओरका प्रधान जलप्रवाह गभीर और विस्तृत है। सिख लोग प्रधानतः नदीके पश्चिम किनारे और पहले कहे हुए द्वीपपर अधिकार किये हुए थे। पूर्व किनारे भी सिखोंकी फौज और तोपका परिचय पाया जाता है। युद्धक्षेत्रमें आगे बढ़ लार्ड गफ पहले ही सिखोंपर आक्रमण या उन्हें स्थानच्युत करनेके लिये दृढ़प्रतिज्ञ हुए। एकदल पैदल फौजके साथ ब्रिगेडियर कम्बलको लार्ड क्लाइवको आगे बढ़नेके लिये आज्ञा दी गई। उनके साथ साथ एक दल घुड़चढ़ी फौज घोड़ेसे जुती हुई तोपोंके साथ तीन दल गोलन्दाज फौज ब्रिगेडियर किउरटनके अधीन परिचालित होने लगी। लेकिन रामनगरमें उपस्थित हो अङ्ग्रेजोंने देखा, कि सिख सैन्य उस जगहको छोड़ चली गई है। सुतरां वह लोग फिर नदीकी ओर बढ़ने लगे। सिख सैन्यकी [illegible] खबर लिये या उस विषयमें उपयुक्तरूपसे खबरसे आगाह न हो, आगे बढ़नेपर अङ्ग्रेज लोग विपद्में गिरे उनके सामने ही सिखोंकी अड़सठ तोपें एक पंक्तिमें सज्जित थीं; अङ्ग्रेजोंको आगे बढ़ते देख सिखोंने गोला बरसाना शुरू किया। आगे बढ़ते हुए अङ्ग्रेजोंकी गोलन्दाजोंको चाल रुकी। अङ्ग्रेजोंकी एक तोप सिखोंने ले ली। अङ्ग्रेजी फौज पीछे हट जानेपर बाध्य हुई। इसी समय अङ्ग्रेजोंकी युद्धोपकरणसे भरी दो गाड़ियां उलटकर नदीके जलमें जा गिरीं। अब नये उत्साहसे उत्साहित हो तीन हजारसे चार हजारतक घुड़चढ़ी सिख-सैन्य अङ्ग्रेजोंपर

इस युद्धमें अङ्गरेजोंके बहुत सिपाही मारे गये, अन्तमें सच-मुच ही अङ्गरेजपक्ष पीठ दिखानेपर बाध्य हुआ। इस युद्धमें सिखोंने अङ्गरेजोंकी चार तोपें और बहुत युद्धोपकरण छीन लिया। पूर्व पूर्व—युद्धोंमें सिखोंसे अङ्गरेजोंने जितनी तोपें छीन ली थीं, इस युद्धमें सिखोंने उन सब तोपोंमें भी कितनी हीका उद्धार किया। यह युद्ध इतिहासमें "चिलियानवाला" के युद्धके नामसे मशहूर है। सिखोंने जैसी दृढ़ता और साहसके साथ चिलियानवालामें युद्ध किया था, वह भारतके इतिहासमें चिरस्मरणीय हुआ। इस युद्धमें अङ्गरेजोंकी जो विषम क्षति हुई थी, भारत किसी युद्धमें और कभी अङ्गरेज लोग वैसे क्षतिग्रस्त नहीं हुए। इस युद्धमें अङ्गरेजोंके २४०० अफसर सिपाही और तीन सैन्यदलके बहुत सिपाही मरे थे। शायद ऐसा विपर्य्यय अङ्गरेजोंके भाग्यमें और कभी नहीं हुआ। ऐसा नहीं, कि सिख लोग भी इस युद्धमें कुछ क्षतिग्रस्त नहीं हुए थे। तब भी यह कहना बहुल्य है, कि अङ्गरेजोंके बराबर उनकी क्षति बहुत थोड़ी ही हुई थी। लेकिन आश्चर्य्यकी बात है, कि अङ्गरेज ऐतिहासिकगण कहते हैं,—चिलियानवालाके युद्धमें किसी पक्षकी जयपराजय निर्णीत नहीं हुई; बल्कि सिखोंने ही इस युद्धमें हार मानी थी। अङ्गरेज लोग युद्धक्षेत्रसे भागनेपर बाध्य हुए, उनके प्रधान प्रधान सेनानायक और प्रायः आधी फौजने युद्धक्षेत्रमें प्राणत्याग किया, अङ्गरेजोंकी तोपें सिखोंने छीन लीं; फिर भी अङ्गरेज कहते हैं, कि इस युद्धमें जय-पराजयका निर्णय नहीं हुआ। किमाश्चर्य्यमतःपरं। इसलिए अङ्गरेज सरकार इस समय चिलियानवालाकी पराजय-कहानीके

सिंहकी सैन्यदलको पराजित करनेका उपाय ढूंढ रहे थे; ... समय उन लोगोंने गोला बरसाना शुरू किया। यह कहना बाहुल्य है, कि अङ्गरेज लोग भी इस क्षेत्रमें दौरबल नहीं थे। सुतरां सिखोंको गोला चलाते देख, प्रधान सेनापति लार्ड ग... अङ्गरेज पक्षको भी युद्धारम्भ करनेका आदेश दिया। ... पोपरने बुड़चढ़ी सैन्यदलके साथ सर वाल्टर गिलबर्टके सैन्यद... सिल दक्षिण ओरसे सिखोंपर आक्रमण करनेकी चेष्टा की। लेफटनेंट करनल ग्रा...रको परिचालित तीन दल गोलन्दाज सैन्य दूसरी ओरसे आगे बढ़ो। ब्रिगेडियर ह्वाइटला बुड़चढ़ी सैन्य दल, लेफटनेंट करनल ब्रासरको तीन दल गोलन्दाज सैन्य और ब्रिगेडियर जनरल कम्बलका सैन्यदल इकट्ठा मिल बांई ओरसे दौड़ा। बीचमें कुछ बड़ी तोपें सज्जित थी।

१३वीं जनवरीको घोर युद्ध आरम्भ हुआ। पहले एक घण्टे तक गोले बरसानेसे अङ्गरेजोंने समझा कि शायद शेरसिंहका सैन्यदल निर्मूल हुआ। लेकिन वह विश्वास असमूल था। सिखोंने ऐसी दृढ़ताके साथ युद्ध किया, कि विपुल ब्रटिश-वाहिनी थोड़ी देरमें ही विपर्य्यस्त हो पड़ी; अङ्गरेज सेनानायक लफटनेंट कर्नल ब्रून्सने सिखोंके गोलेकी चोटसे प्राणत्याग किया। इसके बाद एकदल पैदल सिख सैन्यने आ अङ्गरेजोंपर भीषण गोला बरसाना शुरू किया। उस आक्रमणके बहुत ही ...अंवालिक जान पड़नेपर अङ्गरेज लोग पीठ दिखानेको कोशिश करने लगे। इसी समय अङ्गरेज-सेनानायक ब्रिगेडियर पेनि-...इक और दूसरे तीन प्रधान सैनिक पुरुष मारे गये। जैसे ...से युद्ध चलने लगा वैसे वैसे अङ्ग...

...र्य्यस्त हो पड़-

इस युद्धमें अङ्गरेजोंकी बहुत सिपाही मारे गये, अन्तमें सच-मुच ही अङ्गरेजपक्ष पीठ दिखानेपर बाध्य हुआ। इस युद्धमें सिखोंने अङ्गरेजोंकी चार तोपें और बहुत युद्धोपकरण छीन लिया। पूर्व पूर्व—युद्धोंमें सिखोंसे अङ्गरेजोंने जितनी तोपें छीन ली थीं, इस युद्धमें सिखोंने उन सब तोपोंमेंसे भी कितनी होका उद्धार किया। यह युद्ध इतिहासमें "चिलियानवाला' के युद्धके नामसे मशहूर है। सिखोंने जैसी दृढ़ता और साहसके साथ चिलियानवालामें युद्ध किया था, वह भारतके इतिहासमें चिरस्मरणीय हुआ। इस युद्धमें अङ्गरेजोंकी जो विषम क्षति हुई थी, भारत किसी युद्धमें और कभी अङ्गरेज लोग वैसे क्षतिग्रस्त नहीं हुए। इस युद्धमें अङ्गरेजोंके २४०० अफसर सिपाही और तीन सैन्यदलके बहुत सिपाही मरे थे। शायद ऐसा विपर्य्यय अङ्गरेजोंके भाग्यमें और कभी नहीं हुआ। ऐसा नहीं, कि सिख लोग भी इस युद्धमें बहु कुछ क्षतिग्रस्त नहीं हुए थे। तब भी यह कहना बाहुल्य है, कि अङ्गरेजोंके बराबर उनकी क्षति बहुत थोड़ी ही हुई थी। लेकिन आश्चर्य्यकी बात है, कि अङ्गरेज ऐतिहासिकगण कहते हैं,—चिलियानवालाके युद्धमें किसी पक्षकी जयपराजय निर्णीत नहीं हुई, बल्कि सिखोंने ही इस युद्धमें हार मानी थी। अङ्गरेज लोग युद्धक्षेत्रसे भागनेपर बाध्य हुए, उनके प्रधान प्रधान सेनानायक और प्रायः आधी फौजने युद्धक्षेत्रमें प्राणत्याग किया, अङ्गरेजोंकी तोपें सिखोंने छीन लीं; फिर भी अङ्गरेज कहते हैं, कि इस युद्धमें जय-पराजयका निर्णय नहीं हुआ। किमाश्चर्य्यमतःपरं। इसलिये अङ्गरेज लोग हर समय "चिलियानवालाकी पराजय-कहानीको

चाहे जितना छिपानेकी कोशिश करें, अङ्गरेजोंकी यह पराजय छिप नहीं सकती। इतिहासके कितने ही पाठक इससे अवगत हैं, कि चिलियानवालाके युद्धमें अङ्गरेजी सैन्यके विपर्यस्त होने-पर इङ्गलण्डमें कैसे घोर आतङ्कका सञ्चार हुआ था। यहाँतक, कि प्रधान सेनापति लार्ड गफको स्थानान्तरितकर सर चार्लस नेपियरको उनके पदपर प्रतिष्ठित करनेकी व्यवस्था भी इङ्गलण्डके कर्त्तृपक्षगण इसी समय स्थिर करनेपर वाध्य हुए थे। यह सब बातें अङ्गरेजोंके इतिहासमें ही कही गई हैं; युद्धकी जो वर्णना इतिहासमें प्रकाश हुई है, उसका ही सारमर्म ऊपर प्रकाशित हुआ। जय-पराजयका परिचय, विचक्षण पाठक, अङ्गरेजोंकी वर्णनासे ही समझ सकेंगे। लोग कहते हैं,— "जिसका अन्त अच्छा, उसका सब अच्छा।" आखिरी युद्धमें अङ्गरेज-पक्षने जय पाई थी; सुतरां पहलेके युद्धमें उनकी जय पराजय चाहे जो हो, सभी उनके "जयलाभ" में गिना गया।

पञ्चम परिच्छेद।
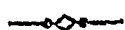
पञ्जाबका परिणाम।

सन् १८४६—मार्च।

(चिलियानवालाके युद्धका परिणाम ;—गुजरातमें सिख-सैन्यका समावेश ;—अङ्गरेज-पक्षका विपुल आयोजन ;—मेजर शेरसिंहकी पराजय ,—गुजरातके युद्धका फलाफल ;—मेजर लरेंसका छुटकारा ;—शेरसिंहका सन्धिका प्रस्ताव ;—सिख-सम्प्रदायकी परिणति ,—सन्धिपत्र ,—पञ्जाबपर हटिशका अधिकार और अङ्गरेजोंका कोहिनूर पाना ,—गवरनर-जनरलकी घोषणा ,—दलीपसिंहका निर्व्वासन और तनखाहकी व्यवस्था ;—उनका खृष्टधर्म्म ग्रहण और परिणाम ;—मन्तव्य।)

शेरसिंहका सैन्यदल प्रायः एक महीनेतक चिलियानवालापर अधिकार किये रहा। उस सैन्यदलको वितस्ता नदीके दूसरे पार विताड़ित करनेके लिये लार्ड गफ तरह तरहकी कोशिशें करने लगे, लेकिन उस बारेमें वह किसी तरह कृतकार्य्य हो नहीं सके। इस बीचमें सिख-सैन्यने भी अङ्गरेज-पक्षपर आक्रमण करनेके लिये किसी तरहकी चेष्टा नहीं की। इसी समय-मुलतानके युद्धमें जय पा विजयी सैन्यदलके साथ जनरल हुइश चिलियानवालाकी ओर बढ़ रहे थे ,—समाचार आया, कि इस समाचारसे लार्ड गफ उत्साहित और आश्वस्त हुए। इस आसरे लार्ड गफ अपेक्षा करने लगे, कि हुइशके आ जानेपर फिर युद्ध शुरू होगा। इसबार अङ्गरेजोंका अदृष्ट सुप्रसन्न था। राहमें

कोई बाधा-विघ्न न था, यथासमय जनरल हुइश लार्डगफके पास आ पहुंचे। इन्हें बल बढ़नेसे, दूने उद्यमसे लार्डगफ सिख-छावनीपर आक्रमण करनेके लिये बन्दोबस्त करने लगे।

एक ओर अङ्गरेज-पक्ष विपुल बलसे बलवान् हो आक्रमणके लिये आगे बढ़ा; दूसरी ओर सिख-छावनीमें रसद वगैरहके संग्रहमें असुविधा होने लगी। सुतरां सिखोंने रविलियानवालामें रहना निरापद नहीं समझा। इसके बाद वह लोग चन्द्रभागा नदीकी चालका अनुसरणकर गुजरात नगरकी ओर बढ़े। उनका उद्देश्य था,—"रैचना दोआब" पार हो उस प्रदेशको लूटते हुए लाहोर आवेंगे। अङ्गरेज लोग शेरसिंहका यह उद्देश्य समझ सके; या चरोंके चक्रान्तसे वह समाचार उनसे छिपा नहीं रहा। सुतरां शेरसिंहका उद्देश्य व्यर्थ करनेके अभिप्रायसे जनरल हुइशने वजीराबादके पास सैन्य-समावेश किया। साथ ही साथ नौकाका पुल तय्यारकर प्रधान सेनापतिके साथ हुइशके सैन्यदलके मिलनेकी भी व्यवस्था हो गई। इस समय अङ्गरेजी सैन्यकी संख्या, पचीस हजारसे ज्यादा हो गई। सिख-सैन्यकी संख्याका भी, अङ्गरेजोंने अनुमान किया, कि प्रायः ६० हजार थी। काबुलके अमीर दोस्तमहम्मदके पुत्र एकराम खाँने पेशावरका स्वत्वाधिकार पा, इससे पहले खुल्लमखुल्ला सिखोंके पक्षका अवलम्बन किया था। १५ सौ अफगान घुड़चढ़ी फौजके साथ इस समय वह भी आ शेरसिंहको सहायतामें प्रवृत्त हुए। इस-तरह सिखोंकी सैन्य-संख्याके अङ्गरेजोंकी अपेक्षा अधिक होनेपर भी, अङ्गरेज लोग विचलित नहीं हुए। अङ्गरेजके सब सिपाही सुशिक्षित और अङ्गरेजोंके पास तोप-बन्दूक प्रभृति भी ज्यादा

थीं। इस तुफानमें सिख लोग अङ्गरेजोंके सामने कबतक खड़े रह सकते थे? उनकी सैन्य-संख्याके अधिक होनेपर भी, अङ्गरेजोंकी तोप और बन्दूकोंके प्रबल प्रवाहमें क्या वह डूब न जायेंगे? विशेषत: अङ्गरेजोंके षड्यन्त्रसे सिख-छावनीमें घराऊ दुश्मनोंकी भी कमी नहीं थी। यही कौन कह सकता है, कि सैन्यदलमें भी कितने ही आदमी कितने ही अङ्गरेजोंके गुप्तचर-रूपसे रहते थे? इसलिये इसवार शेरसिंहके भीषण अग्नि-परीक्षाका दिन उपस्थित हुआ। शायद शेरसिंह भी समझ सके थे, शायद अङ्गरेजोंने भी समझा था,—इसबार सिख-शौर्य्यके अवसानका दिन आ गया है।

चिलियानवालासे दक्षिण-पूर्व्व लाहोरकी राहमें गुजरात नगर अवस्थित है। २१वीं फरवरीको शेरसिंहके सैन्यदलने गुजरातमें आ छावनी स्थापन की। उस सैन्यदलके दक्षिण ओर एक नाला था, शेरसिंहने उस नालेके किनारे तोपें सजाईं। उनकी बाईं ओर नगरके पूर्व्व किनारे एक छोटी नदी बहती थी; वह नदी वजीराबादकी ओर चन्द्रभागाके साथ जा मिली है। सैन्यदलके दोनो किनारे दो जलप्रवाहके मौजूद रहनेसे उसके द्वारा मानो शेरसिंहके सैन्यदलकी खाईका काम साधित होने लगा। अङ्गरेज सेनापति लार्ड गफ इससे पहले ही शेरसिंहका अनुसरण करते आते थे; पास आ वह आक्रमणका सुयोग ढूंढने लगे। दोनों किनारेके दोनो जल-प्रवाहोंके शेरसिंहका परिखाका काम करनेपर भी लार्ड गफने देखा, कि दोनो-जल प्रवाहके बीचमें तीन मील परिमित एक विस्तृत प्राङ्गण मौजूद है। इस प्राङ्गणकी राहमें कोई स्वाभाविक बाधा-विघ्न नहीं था।

उस राहसे आगे बढ़नेपर अनायास ही शेरसिंहका सैन्यदल विपर्य्यस्त हो सकता था। ऐसा ही समझकर लार्ड गफने इसी ओर सैन्यके परिचालनाकी व्यवस्था की। इस समय वह बहुत सबसे बलवान् थे; उनके साहाय्यके लिये नाना स्थानोंसे कितने ही सैन्यदल आ उपस्थित हुए थे। सेनापति स्प हल्लाघ समाईके सैन्यदलकी परिचालना करते थे; उनके साथ लिन्वियानी घुड़-चढ़ी फौज ले पोलक पथहेल और दुकदर्न घुड़चढ़ोंके साथ ब्रीगेडियर ह्वाइटने योगदान किया। कुछ लोग सिक्ख-सैन्यको बांई ओरसे घेरकर खड़े हुए। पहले कहे हुए ब्रिटिश-सैन्यकी सहायताके लिये मेजर मृछ्छके अधीन कमान उनकन और हगला घुड़चढ़ा सैन्यदल परिचालित होने लगा। इधर दक्षिण ओर प्रबलरूपसे आक्रमणकी व्यवस्था की। ब्रिगेडियर जनरल कलका परिचालित पैदल सैन्यदल, मेजर डब्लो और लम्ब्ट रावर्टसन परिचालित गोलन्दाज सिपाही और कितनी और बहुतसी फौज, सिक्ख-सैन्यका दक्षिण किनारा घेरकर खड़ी हुई। नालेके पश्चिम किनारे मेजर जनरल गिलबर्टके अधीन पैदल सैन्यदल और १८ बड़ी तोपोंके साथ मेजर डे और डलेसोई आगे बढ़े। मेजर जनरल हुइस, ब्रिगेडियर मर्खम प्रभृतिका परि-चालित सैन्यदल उनके साथ साथ दौड़ा। मेजर करवेल, कमान मकड्डी और मकडरसनका सैन्यदल क्रम न उनके अधीन परिचा-लित होने लगी। लफ्टनाट करनल ब्रयल और मरवर प्रभृति और भी बहुत सेनापतिका परिचालित बहुत सैन्यदल कई ओरसे समवेत हुआ। और सब दलोंका कहांतक नाम कहा जाये?—मानो सप्तरथीने अभिमन्युको घेर लिया है। प्रसन्न: भार-

तमें अङ्गरेजोंकी जहां जितनी फौजें थी; सभी मानो इस क्षेत्रमें समवेत हुईं। सिखोंकी मात्र ५९ तोपें थीं; अङ्गरेजोंकी सौसे अधिक बड़ी तोपें और असंख्य छोटी तोपें आ उपस्थित हुई थीं।

२२वीं फरवरीको साढ़े सात बजे युद्ध शुरू हुआ। सिखोंने पहले असीम वीरत्व दिखाया; लेकिन अन्तमें उनकी शक्ति और बढ़ नहीं सकी। उनका गोला-बारूद खतम होने लगा; इधर अङ्गरेज-पक्ष प्रबलवेगसे आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़ा। तब कोई उपाय न देख सिख-सैन्य भागनेकी राह ढूंढने लगी। इसी समय अङ्गरेज-पक्षके पैदल सिपाही तेजीके साथ सिख-शिविरपर टूट पड़े। इसबार ठहर नहीं सके, सिख लोग आत्मरक्षामें समर्थ नहीं हुए। इसबार अङ्गरेजोंने सिखोंकी तोपें छीन लीं; सिख-शिविर लूट लिया; सिखोंमें जो सामने पड़ा, वह अस्त्राघातसे मृत्यु मुखमें पतित हुआ। इस युद्धकी गोलावर्षणसे पासके ग्रामसमूह भी चौपट हो गये। भागनेके समय, सिख सैन्यका पीछाकर पूर्व ओरसे ब्रिगेडियर जनरल कम्बलका सैन्यदल और पश्चिम ओरसे बम्बईका सैन्यदल धावित हुआ। इसतरह प्राय: १२ मीलतक अङ्गरेजी सेनाने सिखोंका पीछा किया। सारी राह हताहतोंसे परिपूर्ण हुई; चारो ओर अस्त्र-शस्त्र विक्षिप्त हुए, जिधर निगाहें जाती थीं, उधर ही मानो श्मशानका विकट दृश्य दिखाई देता था। यह कहना बाहुल्य है, कि इस युद्धके परिणामसे कितने ही निर्दोष-निरीह प्राणी भी विपन्न हुए। जिनके हाथ अस्त्र-शस्त्र नहीं थे, वह भी अस्त्र-शस्त्र छिपा रखनेके सन्देहसे दण्डित होने लगे। इस

युद्धमें सिखोंकी ५३ तोपें अङ्गरेजोंके हाथ लगीं। हताहतोंकी संख्या,—उसका कौन निर्णय कर सकता था? इस युद्धमें धरती नरशोणितस्रोतसे प्लावित हुई थी। अङ्गरेजोंके इतिहासमें ही प्रकाशित है,—इस युद्धमें सिखोंकी हानिका ठिकाना नहीं था, लेकिन अङ्गरेजोंके मात्र ६२ आदमी मरे और ६०८ आदमी घायल हुए। सुतरां अङ्गरेजोंके आनन्दकी परिसीमा नहीं रही। स्वयं गवर्नर जनरल लार्ड डलहौसीने इस युद्धके जीतनेमें जैसा आनन्द प्रकाश किया था, उस आनन्दकी प्रतिध्वनि आज भी मानो कानोंमें ध्वनित हो रही है। भारत-इतिहासमें अङ्गरेजोंको ऐसा युद्ध कभी करना नहीं पड़ा था; भारतवर्षमें अङ्गरेजोंका जितना शक्ति-सामर्थ्य था, वह सभी इस युद्धमें नियोजित हुआ था;—स्वयं गवर्नर जनरल लार्ड डलहौसीके मुंहसे ही यह बात प्रकाशित हुई है।

गुजरातके युद्धमें अङ्गरेजोंकी इस जीतके बाद शेरसिंहने फिर युद्ध चलानेकी इच्छा नहीं की। शेरसिंहके पिताके हाथ अफगानों द्वारा मेजर लरेंस वेचे गये थे; यह समाचार पहले ही फैल पड़ा था। मेजर लरेंस इस समय शेरसिंहके आश्रयाधीन थे। गुजरातके युद्धके बाद मेजर लरेंसको छुटकारा दे शेरसिंहने उन्हें अङ्गरेजोंकी छावनीमें भेजा। उनका यही अभिप्राय था, कि शेरसिंहके तरफदार हो मेजर लरेंस अङ्गरेजोंके साथ सन्धि-की व्यवस्था करें। लेकिन अङ्गरेजोंने उस समय युद्धमें जय पाई थी, अङ्गरेज उस समय अहङ्कारसे छाती फुलाकर सगर्व खड़े थे; सुतरां वह लोग सन्धिका प्रस्ताव क्यों सुनने लगे? लरेंसने छुटकारा पाया सही, लेकिन शेरसिंहका वह भ्रम

सफल नहीं हुआ। अङ्गरेजोंने शेरसिंहके साथ सन्धि-स्थापन नामञ्जूर किया।

शेरसिंहके साथ सन्धि तो हुई ही नहीं, अपितु पञ्जाबका अदृष्टचक्र एक बारगी ही बदल गया। गवरनर जनरल लार्ड डलहौसीने पञ्जाब-ग्रास करनेके लिये ही मानो पञ्जाबमें यह समरानल जला रखा था। सिक्ख लोग पहले इसे नहीं समझ सके। फिर पञ्जाबके नाबालिग राजा दलीपसिंह ही कैसे समझते? उन्होंके साहाय्यार्थ, उनके ही राज्यकी सुश्रृङ्खला-विधानके लिये, अङ्गरेज लोग अच्छी व्यवस्थाकर रहे थे,—बालकका कोमल हृदय इसके सिवा और क्या समझ सकता था? शायद लाहौर-दरबारके अनेक सर्द्दार भी इस सम्बन्धमें अन्धकारमें आच्छन्न थे। लेकिन जब गुजरातके युद्धमें अङ्गरेजोंकी जीत हुई थी,—तो सब अंधेरा दूर हो गया,—लाहौर-दरबारका नशा टूटा; सिख सर्द्दारगण समझ सके,—खतम हुआ—उनकी सब आशा भरोसायें चिरतरमें डूब गई! लेकिन दरबारके सदस्यगण जब लार्ड डलहौसीका निगूढ़ उद्देश्य समझ सके, तब कोई उपाय नहीं था। सैन्यबल, सभी अङ्गरेजोंके हाथ था; सिखोंका धन सम्पद, सभी अङ्गरेजोंके अधिकृत था; सिक्ख-सर्द्दार लोग अङ्गरेजोंके हाथोंके पुतलेकी तरह विराजमान थे; सुतरां वह लोग क्या कर सकते थे? इसके बाद सर्द्दार लोग सुविधाजनक सन्धिके प्रार्थी हुए। लेकिन फिर क्या सुविधा हो सकती थी? अङ्गरेजोंने कहा,—जिन्होंने विद्रोहमें साथ दिया है, वह लोग उपयुक्तरूपसे दण्ड पायेंगे; जिन्होंने किसी तरहका विद्रोहिताचरण नहीं किया है वह लोग मित्रके नामसे गिने

जायेंगे। लेकिन पञ्जाबकी दशा क्या होगी? प्रश्न हुआ-पञ्जाबकी क्या दशा होगी? अङ्गरेजोंने एक सन्धिपत्र तय्यार किया। सब सर्दार उस सन्धिपत्रमें दस्तखत करनेपर बाध्य हुए; रणजित् सिंहके पौत्र ग्यारह सालके बालक दलीपसिंहसे भी उस सन्धिपत्रपर दस्तखत कराया गया। सन्धिपत्रमें पांच शर्तें लिखी गईं। पहली शर्त,—महाराज दलीपसिंहने हमेशाके लिये पञ्जाबका स्वत्व-स्वामित्व अङ्गरेजोंके हाथ अर्पण किया; सिखोंके बड़े शौकका बड़े गौरवका पञ्जाब, बृटिशके शासन-शृङ्खलासे आबद्ध हुआ। दूसरी शर्त,—पृथिवीका सारतम कोहेनूर-मणि दलीपसिंह इङ्गलैण्डेश्वरी महारानी विक्टोरियाको देनेपर बाध्य हुए। एक दिन अफगानस्थानके भूतपूर्व अमीर शाह शुजाउलमुल्कसे पञ्जाब-केशरी महाराज रणजित्‌सिंहने बड़ी मिहनतसे जिस महामणिपर अधिकार कर लिया था, इस सन्धिके शर्तसे पुराण-प्रसिद्ध वह अमूल्य मणि सागर पार बृटिश-द्वीपमें चला गया। तीसरी शर्त,—महाराज दलीपसिंह पञ्जाबसे निर्व्वासित हुए, स्थिर हुआ, कि गवरनर जनरल लार्ड डलहौसीकी ख्वाहिशके अनुसार चाहे जिस स्थानमें वह रखे जा सकेंगे। सम्मानमें उनका कुछ ख्याल हुआ,—वह कोरी "महाराज बहादुरकी" उपाधि उपभोग कर सकेंगे; और उनकी जरूरतके मुताबिक सालमें चार लाखसे पांच लाख रुपयेतक वह पेनशन या तनखाह पा सकेंगे, और और जितनी शर्तें हैं, उनका लिखना निष्प्रयोजन है। फलतः इस सन्धिके शर्तसे सिखोंका राज अङ्गरेजोंका पञ्जाब गिना गया।

सन् १८४६ ई०की २९वीं मार्चको गवरनर-जनरल लार्ड डल-

होसीका दस्तखती एक घोषणापत्र प्रचारित हुआ। गवनर-जनरलने घोषणा प्रचारकी,—"आजसे पञ्जाब राज्यकी समाप्ति हुई, आजसे महाराज दलीपसिंहका सब राज्य ब्रटिश-साम्राज्यके अन्तर्भुक्त हुआ।' मोटा मोटा कारण दिखाया गया,—सिख, बड़ी ही दुर्द्धर्ष जाति है; वह किसीको भी वश्यता स्वीकार करना नहीं चाहती। समय समयपर लाहोर गवरमेण्टके विरुद्ध भी वह लोग अस्त्रधारण करनेमें कुण्ठित नहीं हुए। सिखोंको सुश्रृङ्खलासे परिचालन करना बहुत ही कठिन काम है; उच्छृङ्खलासे आत्मकलहसे सिखजातिकी समाप्ति अवश्यम्भावी है। लाहोर गवरमेण्ट इस समय उन्हें दमन कर सकती नहीं है; इधर सिख-जातिके दमन न कर सकनेसे,—उन्हें सुश्रृङ्खलासे परिचालित न कर सकनेसे,—ब्रटिश गवरमेण्टको भी प्रतिपदमें विपत्तिकी सम्भा बना है। अङ्गरेजोंकी आत्मरक्षाके लिये और सिखोंके परित्राणके लिये, अङ्गरेज लोग इस शुभ अनुष्ठानमें प्रवृत्त हुए है। बहुत दिनोंसे अङ्गरेज सिखोंकी शुभाकांक्षा करते आते हैं। महाराज रणजितसिंह अङ्गरेजोंके परम मित्र थे, उनके बड़े शौकका सिख जाति निर्म्मूल न हो, इसलिये ही उनके प्रति इस करुणाकी शान्ति-वारि बरसाया गया है।" गवरनर जनरलके घोषणापत्रसे प्रकारान्तरमें यही बात जाहिर होती है, कि सिख जातिके प्रति दयापरवश होकर ही ब्रटिश-गवरमेण्टने पञ्जाबपर अधिकार कर लिया है।

इसतरह पञ्जाबके ब्रटिश-राज्यके अन्तर्भुक्त होनेपर पञ्जाबमें और भी नाना परिवर्त्तन साधित हुए, कमिश्नर और डिपटी-कमिश्नरोंके अधीन पञ्जाबका शासनकार्य्य निर्व्वाहित होने

लगा। अङ्गरेजोंने चुनचुनकर सिख-सिपाहियोंको अपने वश-मुक्त कर लिया। देशके सब लोगोंका अस्त्र-शस्त्र छीन लिया गया। जो लोग अङ्गरेजोंके बहुत ही विश्वासभाजन हुए, उन्होंने ही सैन्यदलमें नौकरी पाई; बाकी सिख कृषिकार्य्यसे जीविका निर्व्वाह करनेपर बाध्य हुए। अङ्गरेजोंके प्रतापसे पञ्जाबमें मानो शान्ता विभीषिकाका राजत्व फैला। अधिक क्या कहा जाय, इसी विभीषिकाके फलसे परवर्त्ती समयके सिपाही विद्रोहके समय, पञ्जाब बिलकुल मस्तक उठा नहीं सका;—पञ्जाबके दुर्द्धर्ष सिख लोग उस समय शान्तिप्रियजातिके नामसे परिचित हुए थे। अब पञ्जाबके शासनकी व्यवस्था और भी बदल गई। इस बङ्गाल देशकी तरह पञ्जाब अब एक लफटनट गवरनरके शासनाधीनमें है।

क्या यह भी कहना होगा, कि दूसरे सिख-युद्धके बाद, पञ्जाबके ब्रटिश साम्राज्यके अन्तर्भुक्त होनेपर और भी क्या हुआ था? बालक दलीपसिंह खृष्टधर्म्मसे दीक्षित हुए। उन्हें समुद्र पार इङ्गलण्ड भेजनेकी व्यवस्था हुई। इङ्गलण्ड जानेपर दलीपसिंहकी जैसी दुर्दशा हुई थी, वह बात आज भी सबके हृदयमें जाग रही है। वहां जा पाश्चात्य विलास-मदिरासे बालकका कोमल हृदय धीरे धीरे विषाक्त होने लगा। उम्र बढ़नेके साथ ही साथ उस विषसे वह जर्ज्जरित हो पड़े। अन्तमें ऐसा हुआ, कि जितने रुपये वह तनखाह पाते थे, उससे उनका गुजर होना नहीं था,—दिनो दिन वह ऋणजालसे विजड़ित हो इङ्गलण्डके नरनारियोंमें वह जैसे दूषित और अपदस्थ हुए थे, उस बातको याद करके भी हृदय विदीर्ण होता है। किसीको

स्वप्नमें भी ऐसा खयाल नहीं था, कि पञ्जाबकेशरी रणजित् सिंहके पौत्र महाराज दलीपसिंहकी ऐसी दशा देखना पड़ेगी। ऐसी ही दुरवस्था, ऐसी ही हतश्रद्धा, ऐसे ही दैन्य-दारिद्र्यमें दलीपसिंहका जीवन अतिवाहित हुआ था। दलीपसिंहके वंशधरगण इस समय विलायतमें ही रहते हैं। उनमें अब वह सिक्खत्व नहीं है, वह लोग इस समय साहब बन गये हैं। हाय हाय।—पञ्जाब-केशरीके वंशका ऐसा ही परिणाम लिखा था। दलीपसिंहकी जननी झिन्दन या चन्द्रावतीकी क्या दशा हुई थी, उस बातको याद करके भी पत्थर फाड़कर जल-धारा निकलती है। पुत्रकी मङ्गल-कामनासे सिक्खोंको उत्तेजित करने जा वह नाना रूपसे निर्य्यातन-ग्रस्त हुईं। अन्तमें जब धर्म्मान्तर ग्रहणकर पुत्र दलीपसिंह समुद्र पार गये, तो उसी समय शोक, ताप, मनोभङ्गसे अभागिनीकी इहलीला समाप्त हुई। वह सब लोम-हर्षण दृश्य,—आप ही मानो आंखोंके सामने दिखाई देते हैं। फिर भी, सिख जाति उन सब स्मृतियोंको विस्मृति-सागरमें डुबा हमेशा कृत्रिम सुखशान्ति ढूंढती फिरती है। जिस सिख जातिको कभी कोई दमन कर नहीं सका; जो सिखजाति जानती ही नहीं थी, कि अधीनता किसे कहते हैं, पहली यादको भुला आज उसी सिखजातिका कैसा शोचनीय परिवर्त्तन है। दासत्वमें उन लोगोंने इसीतरह आत्मविक्रय करना सीखा है,—गमर्नमेंटकी नौकरीमें उन्होंने ऐसा कपट परिचय देना सीखा है, कि वह लोग अब गुरु गोविन्दके "खालसा" सिख समझे ही नहीं जा सकते!

सोचनेपर, ऐसी ही और भी कितनी ही बातें याद आती

परिशिष्ट।

परिशिष्ट।

प्रथम परिशिष्ट।

"आदि ग्रन्थ," या प्रथम पुस्तक ; अर्थात् सिखोंके प्रथम गुरु या शिक्षक नानकका धर्म्म-ग्रन्थ।

मन्तव्य।—प्रथम ग्रन्थ ऐतिहासिक वर्णनामूलक नहीं है। इस ग्रन्थमें इसका कोई साफ परिचय नहीं है, कि सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दिमें भारतवर्षकी राजनीतिक अवस्था कैसी थी। लेकिन इसका हाल भी इस ग्रन्थमें पाया नहीं जाता, कि उस समयके धर्म्म और समाजकी अवस्था कैसी थी। इस ग्रन्थकी यही प्रधान शिक्षा है, कि सर्व्वान्तःकरणसे और सत्यभावसे ईश्वरकी उपासना करना चाहिये। ईश्वरकी किसी ठीक आकृतिकी बात इसमें दिखाई नहीं गई है। ग्रन्थमें इसकी ही वर्णना है, कि आदमीयत, सरलता और सत्कार्य्यके सिवा कभी मुक्ति नहीं होती।

कहा जाता है, कि आदि ग्रन्थमें प्रथमतः नानककी रचना सन्निविष्ट है। सिखोंके परवर्त्ती प्रचारकगण, अर्थात् छठें सातवें और आठवें गुरुके सिवा नवें गुरु तेगबहादुरतक, सबकी ही रचना इस ग्रन्थमें सन्निविष्ट है। सम्भवतः गुरु गोविन्द द्वारा इस ग्रन्थकी कोई कोई बातें निकाली और कोई कोई बातें नई मिलाई गई हैं। दूसरे, विभिन्न सम्प्रदाययुक्त

हिन्दू धर्मावलम्बी कुछ भक्त या योगी पुरुषोंकी रचनाओंने भी इस ग्रन्थमें स्थान पाया है। उन सब भक्त या योगियोंकी संख्या,—बराबर सोलह मनुष्योंके नामसे लिखी गई है। सीवरे, नानक और उनके परवर्त्ती गुरुओंके अनुसार कुछ भाट या कवियों द्वारा कुछ कवितायें इस ग्रन्थमें मिलाई गई हैं; ग्रन्थकी विभिन्न प्रति लिपिमें उन सब भक्त या योगियोंके भिन्न भिन्न नाम या संख्याका परिचय मिलता है। अबतक जो लोग ग्रन्थके लिखने-वाले या सम्पादक हैं, वह लोग अपनी अपनी इच्छाके अनुसार ग्रन्थका कोई न कोई अंश छोड़ रहे हैं; आदि रचनाके नामसे किसी किसी अंशका प्रचार करते हैं। सोलह भक्तोंमें दो "लोम" या धातुकरका नाम लिखा गया है; वह लोग अर्जुनसे लोन पढ़ अपनी आत्माके बहुत कुछ अधिकारी हुए थे। और एक रबाबी या सारङ्गी बजानेवालेने भी पहलेकी तरह धर्म-प्राबलता पाई थी।

"ग्रन्थके" किसी किसी संस्करणमें परिशिष्ट दिखाई देता है। उसमें जिन सब रचनाओंने स्थान पाया है, वह सब प्रमाण-परम्परा सन्देहमूलक है। इन सब बातोंको मान लेनेपर भी उचित बातोंपर विविध कारणोंसे नाना तर्क-वितर्क हो सकते हैं। पहले, पांचवें गुरु अर्जुनने यह ग्रन्थ लिखा। लेकिन परवर्त्ती समय अर्जुनके स्वकाभिषिक्त परवर्त्ती सिख-गुरुओंने ग्रन्थके साथ अन्यान्य बातें मिलाकर प्रकाशित की हैं।

ग्रन्थ पद्यमें लिखा गया है। शुरूसे आखीरतक नाना छन्द और अलङ्कारयुक्त अनगिनती पद्य उसमें सन्निविष्ट हैं। यह पद्य उत्तर-भारतमें प्रचलित हैं, पद्य हिन्दी भाषामें रचे

गये हैं। पञ्जाबकी किसी निर्दिष्ट भाषामें यह ग्रन्थ लिखा नहीं गया है। लेकिन ग्रन्थका कोई न कोई अंश, प्रधानतः आखिरी हिस्सा, संस्कृत भाषामें लिखा है। आजकल भारतवर्षकी कितनी भाषाओं और वर्णमालामें पञ्जाबकी प्रचलित "पञ्जाबी" भाषामें ही ग्रन्थका आद्योपान्त मुद्रित हुआ है। सिख गुरु या शिष्योंके हमेशा उसी भाषाका व्यवहार करनेके कारण वह भाषा या वर्णमाला समय समयपर "गुरुमुखी"के नामसे अभिहित होती है; पञ्जाबकी प्रचलित भाषा भी इसी "गुरुमुखी"के नामसे परिचित है। आजकलके सिख लोग समझते हैं, कि लाहोरके दक्षिण-पश्चिमवर्त्ती प्रदेशोंकी प्रचलित प्रादेशिक भाषाने नानकी रचनामें स्थान पाया है। उनकी समझमें, अर्जुनने जिस भाषाका व्यवहार किया था, वही पूरी विशुद्ध है।

यह ग्रन्थ (बड़े बड़े पृष्ठोंके, ४ पेजी फार्म्मके) १२१२ पृष्ठोंमें सम्पूर्ण है। हरेक पृष्ठमें २४ पंक्तिया और हरेक लाइनमें ३५ अक्षर हैं। अतिरिक्त ग्रन्थके सन्निविष्ट होनेपर इस ग्रन्थका पत्राङ्क कुछ बढ़ गया है; परिशिष्ट सहित ग्रन्थमें १२४० पृष्ठ हैं।

"आदि ग्रन्थका" निर्घण्ट।

१ म। "जपजी" या साधारणतः "जप" है,—इसका दूसरा नाम "गुरुमन्त्र" है; दीक्षाके समय यह स्तोत्र पढ़ना पड़ता है। यह अंश प्रायः सात पृष्ठोंमें सम्पूर्ण है। चालीस श्लोक या "पाउटिर" हैं; सबका परिमाण बराबर नहीं है; कुछ दो लाइनोंमें, कुछ बहुत लाइनोंमें खतम हैं। "जप" शब्दका व्युत्पत्तिगत अर्थ,—याद करना है। इसकी अर्थमें, यह स्मरण या

उपदेश समझा जाता है। 'जपजी' या 'जपु' के रचयिता नानक ही हैं। लोग कहते हैं, कि नानकने शिष्योंको नित सवेरे इस स्तोत्रके पढ़नेका उपदेश दिया है। अबतक हरेक धर्म्मपरायण सिख, गुरुके उपदेशानुसार काम करते हैं। रचनाप्रणालीसे साफ़ ज़ाहिर होता है, कि इस हिस्सेमें एक प्रश्नकर्त्ता और एक उत्तरदाता है। सिखोंका विश्वास है,—वह प्रश्नकर्त्ता, नानकके प्रिय शिष्य अङ्गद ही हैं।

२ य। 'सोदरका राई रास' है,—यह सिखोंका सान्ध्य या सायाह्न स्तोत्र है। साढ़े तीन पृष्ठोंमें यह हिस्सा सम्पूर्ण है। यह अंश नानक-विरचित है; लेकिन रामदास और अर्ज्जुनकी रचना भी इसके पीछे मिली है; कहते हैं, गुरु गोविन्दने भी बहुत कुछ इसका पुष्टिसाधन किया है। "राई रास" जब स्वतन्त्र पुस्तकाकारमें प्रकाशित होता है, तब गुरुगोविन्दकी रचना ही इसमें हमेशा सन्निविष्ट रहती है। 'सोदारका' अर्थ,—किसी निर्दिष्ट प्रकारकी कविता है; "राई" शब्दका अर्थ,—उपदेशक है; और "रास" शब्दसे कथासीसाला या कथा-गुणकीर्त्तन मालूम होता है। पञ्जाबी "रौ" (*Rowb*) शब्दके अनुसार कभी कभी यह दूसरी भाषामें "रौ रास" नामसे अभिहित है।

३ य। "कीरित सोहिला" है।—विश्राम या सोनेके पहले यह स्तोत्र पढ़ा जाता है। एक पृष्ठमें और दो एक या इससे अधिक पंक्तियोंसे यह सन्निबद्ध है। नानकने इस स्तोत्रकी रचना की है; इसके बाद रामदास और अर्ज्जुनने इसमें अपनी अपनी कवितायें मिलाई हैं। कहते हैं, गुरुगोविन्दकी एक कविताने इस अंशमें स्थान पाया है। संस्कृत "कीर्त्ति" शब्दसे "कीरित"

शब्दकी उत्पत्ति है। इस शब्दका अर्थ,—प्रशंसावाद या गुण-कीर्तन है। "सोहिला" शब्दका अर्थ,—विवाहसङ्गीत या आनन्दगीति है।

४ र्थ। ग्रन्थका परवर्त्ती अंश, इकतीस खण्डमें या परिच्छेदमें विभक्त है। हरेक हिस्सा विशेष विशेष कविताछन्दसे खास खास नामसे अभिहित होता है। नीचे उनका नाम दिया जाता है;—

१।	श्रीराग।	१६।	विलावल।
२।	माझ।	१७।	गौर।
३।	गौरी।	१८।	रामकली।
४।	आशा।	१९।	नटनारायण।
५।	गुर्जरी या गुज्जरी।	२०।	माली गौरी।
६।	देवगान्धारी।	२१।	मारु।
७।	विहग्र (या विहगरा)।	२२।	तो-खारी।
८।	याद हानुस।	२३।	केदारा।
९।	सोराथ (या सुरत)।	२४।	भैरव।
१०।	धनेश्वरी।	२५।	वसन्त।
११।	जैत सारनी।	२६।	सारङ्ग।
१२।	टोरी।	२७।	मल्लार।
१३।	वैरारी।	२८।	कानड़ा।
१४।	तैलङ्ग।	२९।	कल्याण।
१५।	सोघी।	३०।	प्रभाती।

३१। जय जयन्ती।

ग्रन्थका अधिकांश ही या प्रायः ११५४ पृष्ठ इन इकतीस

स्वतः समष्टिसे परिपूर्ण है। एक या इससे अधिक गुरु
इसके रचयिता हैं; किसी किसी अंशमें एक या कई भक्त
साधु पुरुष अपनी अपनी रचना लिपिबद्ध कर गये हैं; कि
किसी जगह शिष्य या भक्तोंकी सहकारितामें, या उनकी सहाय
ताके बिना ही गुरुने स्वयं अपनी रचना सन्निविष्ट की है।
निम्नलिखित गुरुओंकी रचना इस अंशमें दी गई है;—

१। नानक।
२। अङ्गद।
३। उमरदास।
४। रामदास।
५। अर्ज्जुन।
६। तेगबहादुर। गुरु गोविन्दने शाह तेगबाहुरकी किसी किसी रचनाको संशोधित और परिवर्द्धितरूपसे ग्रन्थमें निबद्ध किया है।

जिन सब भक्त या साधु पुरुषों और दूसरे मनुष्योंकी रचना ग्रन्थकी प्रचलित प्रतिलिपिमें सन्निबद्ध हुई है, नीचे उनका नाम लिख दिया गया है;—

१। कबीर,—विख्यात धर्म्म संस्कारक।
२। त्रिलोचन,—ब्राह्मणवंशीय।
३। वेणी।
४। रावदास,—चमार या चर्म्म-विन्यासकारी।
५। नामदेव,—छुपाछे, या वस्त्र-रञ्जनकारी।
६। धान्ना,—जाट जातीय।
७। शेख फरीद,—मुसलमान फ़कीर।
८। जयदेव,—ब्राह्मणवंशीय।
९। भीखन।
१०। सेन,—क्षौरकार।
११। पिपा,—एक योगी।
१२। साधन या सुधन्वा,—कसाई जातीय।
१३। रामानन्द वैरागी,—विख्यात धर्म्म-संस्कार।
१४। परमानन्द या प्रेमानन्द।
१५। सूरदास,—अन्धे।

१५। मीराबाई,—एक भक्त योगिनी या पवित्रात्मा स्त्री।

१६। सुन्दर दास,—"रबाबी" या सारङ्गी बजानेवाले। वह असलमें भक्तोंमें गिने नहीं जाते।

१७। बलवन्त, और—

१८। साता, दोनो ही डोम या इन्होंने "बादुकर" थे; अर्ज्जुनसे स्तोत्र पढ़ा।

५म। "भोग,—संस्कृत भाषामें इस शब्दका अर्थ,—किसी चीजका उपभोग करना। पुण्य-विषयक रचनाका उपसंहार साधारणतः हिन्दू और सिखों द्वारा इसी नामसे अभिहित होता है। भोग, ६६ पृष्ठमें सम्पूर्ण है। नानक, अर्ज्जुन, कबीर, शेख फरीद प्रभृतिकी रचनाके सिवा, और भीनों "भाट" या स्तुति-वादकोंकी रचनायें इसमें मौजूद हैं। उमरदास, रामदास और अर्ज्जुनके प्रति यह सब भाट या स्तुतिवादक बहुत अनुरक्त थे।

"भोगमें" पहले ही नानक-रचित चार श्लोक हैं। इसके बाद एक छन्दमें ६७ और दूसरे और एक छन्दमें २४ संस्कृत श्लोक मिलाये गये हैं; सब अर्ज्जुनकी रचना-प्रसूत हैं। पञ्जाबी या हिन्दी भाषामें अर्ज्जुनके और भी २३ श्लोक इसमें मौजूद हैं; यह सभी अन्टतसरकी गुण-कहानीसे पूर्ण हैं। इसके कुछ पीछे कबीर प्रभृतिके २४३, शेख फरीदके १३०, और अर्ज्जुनके उपदेशपूर्ण और भी कुछ श्लोक, इस अंशमें मिलते हैं। इसके बाद आखीरतक, काल और दूसरे भाटोंकी कितनी ही रचनाओंने इसमें स्थान पाया है; वह रचनायें अर्ज्जुनके किसी किसी अंशके साथ मिल गई हैं।

इस भोग नामक अंशमें नौ भाटोंकी रचनायें दिखाई देती हैं, उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं,—

१। भीखा,—अमरदासके शिष्य। ६। नाथ।
२। काल,—रामदासके शिष्य। ७। मथुरा।
३। कलसाहर। ८। बल।
४। जलाय,—अर्ज्जुनके शिष्य। ९। कीरति या कीर्त्ति
५। बाल,—अर्ज्जुनके शिष्य।

यह सब नाम कल्पनाप्रकृत या सच्चे हैं। "गुरु-विलास" नामक ग्रन्थमें केवल आठ भाटोंका नाम लिखा है। वह नाम लिया और सभी ग्रन्थोक्त नामसे बिलकुल अलग हैं।

ग्रन्थका जोड़पत्र।

६४। "भोगकी वाणी",—यह उपसंहारकी आखिरी कविता है। यह अंश बाद पीछे कहा गया है। इसमें,—(१) सब भाषें "श्लोक मेल महला" या आदि क्रियोंका या जीवदासके लोगों नामसे कुछ श्लोक है। (२) मल्लार रागके प्रति नानकका उपदेश। (३) नानककी "रत्नमाला" या जहरतकी जयमाला या धर्म-प्राय महात्माओंकी उपासनापद्धति है। इसमें धर्म्मप्राय महात्माओंका सच्चा विशिष्टत्व या गुण वर्णित हैं और (४) "प्राण संगली" नामक "पोथी" या धर्म-कहानीके बारेमें सिंहलके राजा शिवनाभकी हकीकत या अवस्था परम्परा है। कहते हैं, गोविन्दकी जीवित अवस्थामें भाई भानु नामक एक मनुष्यके द्वारा यह आखिरी हिस्सा बनाया गया है।

लोगोंसे सुना जाता है, कि "रत्नमाला" पहले "तुर्की" भाषामें लिखी गई थी। या यह रत्नमाला तुर्की भाषाके आदि या असली किताबकी सारका संग्रहमात्र है।

द्वितीय परिशिष्ट।

"दसवें पादशाहका ग्रन्थ" या दशम राजाका ग्रन्थ, या बादशाह-प-लुटिफ या प्रधान धर्म्माचार्य्य गुरु गोविन्दका ग्रन्थ।

टीका।—"आदि ग्रन्थकी" तरह "गोविन्दका दशम पादशाह" का ग्रन्थ आद्योपान्त काव्यसे परिपूर्ण है। लेकिन दोनो ग्रन्थोंके छन्दमें वैषम्य दिखाई देता है।

इस ग्रन्थकी रचना हिन्दी भाषाकी पञ्जाबी वर्णमालासे हुई है। आखिरी हिस्सा फारसी भाषामें लिखा गया है सही, लेकिन वर्णमाला कुल गुरुमुखी है। गोविन्दकी हिन्दी भाषा और गाङ्ग प्रदेशकी आजकलकी प्रचलित भाषा, दोनो ही एक जातीय हैं, इनमें पञ्जाबी भाषाका कोई विशेषत्व मौजूद दिखाई नहीं देता।

"दशम पादशाहका ग्रन्थ" या दशम राजाके ग्रन्थका एक अध्याय ऐतिहासिक वर्णनामूलक है। इस अध्यायका नाम "विचित्र नाटक" है। यह गोविन्दका रचनाप्रसूत है। लेकिन रचनाके विशेषत्व, घटनावैचित्र्य और चातुर्य्यके कारण, फारसी भाषाके "हिकायत" या गल्पमालाने इस विचित्र नाटकमें स्थान पाया है। पहले हिस्सेकी अपेक्षा दूसरे हिस्सेमें भी अधिक पौराणिक घटनावली मौजूद है। लेकिन इसके एके-

मरणाहिता, जगनुपिता इत्यादिकविताके महत्व और वक्त
सम्बन्धमें कितने ही आदर्शस्थानीय उदाहरणके मौजूद रहे
इसका आद्योपान्त जड़ जागतिक विचित्र घटनाओंसे परिपू
है। कहते हैं, इस ग्रन्थमें पांच अध्याय और छठे अध्यायके
कुछ गुरु गोविन्दका रचनाप्रसूत है। इस ग्रन्थका बाकी
हिस्सा अधिकांश ही गुरुके चार मुहर्रिरोंने बनाये हैं। लेकि
यह सब गुरुकी आज्ञासे लिखे गये हैं; या वह उनकी स्मृति
लिपि हैं। इस ग्रन्थके रचयितागणमें राम और श्याम नामक
मनुष्यका नामोल्लेख दिखाई देता है। लेकिन जिस हिस्सेकी
बात कही जाती है, उस हिस्सेके लेखकका कोई परिचय नहीं
मिलता।

"दशम बादशाहका ग्रन्थ" (चारपेजी बड़े बड़े पृष्ठमें)
१०६६ पृष्ठमें सम्पूर्ण है। हरेक पृष्ठमें २३ लाइनें हैं और हरेक
लाइनमें ३८से ४१ अक्षरतक देखे गये हैं।

"दशम राजाके ग्रन्थका" निर्घण्ट।

१म। "जपजी" प्रचलित भाषामें "जप" नामसे अभि-
हित है। यह हिस्सा नानकके "जपजीका" क्रोड़पत्र या परि-
शिष्ट विशेष है। प्रति दिन सवेरे यह स्तोत्र पढ़ना पड़ता है;
अभीतक हरेक धर्मप्राण सिख इस नियमका पालन
करते हैं। छिवरणविशिष्ट, १६८ श्लोक हैं, और सब बात
छहमें सम्पूर्ण है। किसी कविता या किसी लाइनका आखिरी
भाग (विभक्ति) एक दूसरेसे अलग है। गुरु गोविन्दने इस जप-
जीकी रचना की है।

२य। "अकाल स्तुत",—या ईश्वरका स्तवगान है। बाबा-

रवत: सवेरे ही यह स्तोत्र पढ़ा जाता है। यह २२ पृष्ठमें सम्पूर्ण है, शायद दीक्षामन्त्र या प्रारम्भिक कविता, गुरु गोबिन्द हीकी बनाई है।

३ य। "विचित्र नाटक पर नाटक"—अर्थात् विचित्र या आश्चर्य कहानी है। इसके रचयिता स्वयं गोविन्द हैं। पहले इसमें गोविन्दके परिवार और वंशका पौराणिक इतिवृत्त दिखाई देता है, दूसरे संस्कारके बारेमें उनकी क्रियाविधीका विस्तृत विवरण है और तीसरे, हिमालयके पहाड़ी सामन्तगण और बादशाही फौजसे अपने युद्धका वृत्तान्त प्रभृति है। यह विचित्र नाटक १४ अध्यायमें विभक्त है। पहले अध्यायमें सर्व्व-शक्तिमानका गुणकीर्त्तन है और आखरी अध्यायमें भी उसी ढङ्गकी कुछ कवितायें दिखाई देती हैं। लेकिन आखिरी अध्यायमें और भी कुछ कविताओंने स्थान पाया है; इसमें गोविन्दने कहा है, वह इसके बाद अपने गुजरे जमानेकी याद और वर्त्तमान जीवनकी अभिज्ञता प्रभृतिका विस्तृत भावसे वर्णन करेंगे "विचित्र नाटक" ग्रन्थ २४ पृष्ठोंमें परिपूर्ण है।

४ र्थ। "चण्डी चरित्र" —इसमें चण्डीकी अपूर्व्व कहानी है। ग्रन्थमें चण्डीचरित्रके नामसे दो अध्याय हैं, उनमें एक अपेक्षाकृत बड़ा है। चण्डी देवीने आठ "टिटान" या दैत्यको मारा है इस अंशमें उन्हींका चण्डीमाहात्म्य और वही दैत्य-विजय कहानी कही गई है। इससे ही ग्रन्थके २० पृष्ठ परिपूर्ण हैं। जान पड़ता है, कि—यह अंश संस्कृत भाषाके पौराणिक इतिवृत्तका एक अनुवाद मात्र है। लोगोंको ऐसा विश्वास है, कि गोविन्दने जो यह किसी पौराणिक कहानीका अनुवाद किया है।

चण्डीदेवी द्वारा जितने दैत्य मारे गये थे, नीचे उनका गण दिया गया है;—

१। मधु कैटभ।
२। महिषासुर।
३। धूम्रलोचन।
४, ५। चण्ड और मुण्ड।
६। रक्तबीज।
७। निशुम्भ।
८। शुम्भ।

५म। "चण्डी चरित"—अर्थात् चण्डीकी छोटी कहानी है। बड़े चण्डी-चरितमें जो पौराणिक बातें लिखी गई हैं, छोटे चण्डी-चरितमें उसकी ही वर्णना दिखाई देती है। लेकिन यह सब विभिन्न छन्दोंमें वर्णित है। इसमें ग्रन्थके प्रायः १४ पृष्ठ परिपूर्ण हैं।

६ष्ठ। "चण्डीका भर".—चण्डीके उपाख्यानका परिशिष्ट है। यह छः पृष्ठमें सम्पूर्ण है।

७म। 'ज्ञानप्रिय बोध,'—ज्ञानका श्रेष्ठत्व है। ईश्वरके प्रशंसावादसे और पुराने राजोंकी कहानियोंसे यह अंश परिपूर्ण है। इनमें अधिकांश ही महाभारतसे गृहीत है। यह २१ पृष्ठोंमें सम्पूर्ण है।

८म। "चौपायन चौबीस अवतारम् किम्,"—चौपदी प्रबन्धमें चौबीस अवतारोंका विषय इसमें वर्णित है। ग्रन्थके प्रायः ३४८ पृष्ठ इस चौपदीसे पूर्ण हैं। लोगोंका विश्वास है,—श्याम नामक एक मनुष्य इन चौपदी कवितावलीके रच-यिता हैं।

चौबीस अवतारोंका नाम नीचे दिया जाता है;—

१। मत्स्य, या मछली।
२। कूर्म्म, या कच्छप।
३। सिंह, या नर।
४। नारायण।
५। मोहिनी।
६। वराह या शूकर।
७। नृसिंह या नराकृतिसिंह।
८। वामन या छोटेकाद।
९। परशुराम।
१०। ब्रह्मा।
११। रुद्र।
१२। जलन्धर।
१३। विष्णु।
१४। कोई निर्दिष्ट नाम नहीं। लेकिन विष्णुके अवतार कहे जाते हैं।

१५। अरहन्त देव,—(कहते हैं, यह जैन धर्म्मावलम्बी "सरावगी" सम्प्रदायके प्रतिष्ठाता हैं, या वह उस जैन-धर्म्मके प्रवर्त्तक हैं।)
१६। मान राजा।
१७। धन्वन्तरी, (विख्यात वैद्य)
१८। सूर्य्य।
१९। चन्द्र या चन्द्रमा।
२०। राम।
२१। कृष्ण।
२२। नर, अर्थात् अर्जुन
२३। बुद्ध।
२४। कल्की, कलीयुगके अन्तमें जब पृथिवी पापसे परिपूर्ण होगी, तब भगवान् यह अवतार लेंगे।

६म। किसी निर्दिष्ट नामका उल्लेख नहीं है। लेकिन ग्रन्थमें बराबर 'मेहिमोका' नाम उल्लिखित है। यह २४ अवतारोंका परिग्रिह या झाड़पत्र है। जब भगवान कल्की अवतार ले पृथिवीका पापभार मोचन करेंगे, तब 'मेहदी प्रकट होंगे। बराबर ऐसा ही कहते हैं, प्रायः मज़हबी मुसलमानोंके

बराहके अनुसारसे यह नाम और भाव लिया गया है। ग्रन्थके एक पृष्ठसे भी कम अंशमें यह सन्निविष्ट है।

१० म। निर्द्दिष्ट कोई नाम नहीं है; लेकिन बराबर "ब्र के अवतारके नामसे" अभिहित होते हैं। ब्रह्माके सात अवता का विस्तृत विवरण इस अंशमें दिखलाई देता है। इसके ही बाद गुजरे जमानेके सात राजाओंका आख्यान इसमें स विष्ट है। यह हिस्सा १४ पृष्ठोंमें सम्पूर्ण है।

ब्रह्माके सात अवतारोंके नाम, यथाक्रम,—

१। वाल्मीक। ५। व्यास।
२। कश्यप। ६। षट्‌ ऋषि (या छः ऋषि
३। सूकर। ७। कालिदास।
४। बचिस।

आठ राजाओंके नाम यथाक्रम,—

१। मनु। ५। मान्धाता।
२। पृथ्वी। ६। दलीप या दिलीप।
३। सगर। ७। रघु।
४। वाप। ८। अज।

११ ग्र। कोई निर्द्दिष्ट नाम नहीं है; या बिलकुल "रुद्र य ग्रिवके अवतारके" नामसे परिचित है। इसके ५६ पृष्ठ परिपूर्ण हैं; केवलमात्र दत्त और परेशनाथ नामक दो अवतारोंके विषय इसमें वर्णित है।

१२ ग्र। "शस्त्रनाम-माला",—या अस्त्र-शस्त्रकी नाममाला इस अंशमें विभिन्न अस्त्रसमूहके नाम हैं। इन सब अस्त्र शस्त्रकी गुणावली विशेषरूपसे वर्णित है। गुरु गोविन्दने इस

अस्त्र-समष्टिको अपना गुरु या परिचालकके नामसे निर्दिष्ट किया है। इसपर भी लोगोंका विश्वास है, कि वह रचनासमूह गोविन्दकी लेखनीप्रसूत नहीं है। प्रायः ९० पृष्ठोंमें यह अंश सम्पूर्ण हुआ है।

१३ श। "श्रीमुख वाक, सवैया बत्तीसो",—इस हिस्से की बत्तीस कवितायें गुरु (गोविन्दके) वाक्यके नामसे परिचित है। कही हुई कविताकी रचना गोविन्दने की थी। कविता वेद, पुराण और क़ुरानके निन्दावादसे परिपूर्ण है। प्रायः साढ़े तीन पृष्ठोंमें यह अंश सम्पूर्ण हैं।

१४। "हजरा शब्द',—या हजार लफ्ज। शब्दालङ्कारसे लिखी सौसे अधिक कवितायें हैं। प्रायः अधिकांश ग्रन्थमें ही १० कविता दो पृष्ठोंमे समाप्त है। यहां "हजार" शब्द सबके अर्थसे प्रयुक्त हुआ नहीं है; इस हिस्सेमें "हजार" शब्दका अर्थ—"अमूल्य" या अत्युत्तम (श्रेष्ठ) है। यह कवितावली सृष्टिकर्त्ता और सृष्टिचातुर्य्यके प्रशंसावादसे परिपूर्ण है। सीमाबद्ध या निर्दिष्ट क्षमतासम्पन्न देवदेवी और योगी-सन्नासियोंकी उपासना या उनके प्रति भक्ति दिखाना इसमें मना है। गुरु गोविन्दने इस कवितावली की रचना की है।

१५। "स्त्री-चरित्र" स्त्री कहानी है। स्त्रियोंके स्वभाव और प्रकृतिके वर्णनमें ४३४ लतीफे इस अंशमें सन्निविष्ट हैं। एक लतीफेमें लिखा है,—एक समय राज्यके उत्तराधिकारी सपत्नी-पुत्रके प्रति विमाता प्रेमासक्त हुईं, लेकिन राजपुत्रके विमाताकी कामना पूर्ण करनेसे असम्मत होनेपर, उस रमणीने कहा, कि ज्येष्ठ पुत्रने उनके सतीत्वनष्टकी चेष्टा की थी। यह सुन राजाने

पुत्रको मृत्युदण्डसे दण्डित किया। इसी समय मन्त्रियोंको नाटुक प्रार्थनासे या उनके विरुद्ध राय देनेसे पुत्रने मृत्युदण्डसे छुटकारा पाया। उस समय कई लतीफोंमें मन्त्रियोंने स्त्रियोंका चरित्र वर्णन किया। अन्तमें राजा अपनी स्त्रीका दुश्चरित्र समझके और अपनी अविमृष्यकारिताके लिये अनुतप्त हुए। ग्रन्थका प्रायः आधा अंश या ४४६ पृष्ठ ऐसे ही लतीफोंसे परिपूर्ण है। इसमें एकसे अधिक लतीफोंके रचयिताके कारण, श्यामका नाम लिखा दिखाई देता है।

१६ था। 'हिकायत'—या गल्प गाथा। सौ लाइनके ८६६ श्लोकमें बारह लतीफे इसमें सन्निविष्ट है। वह सब फारसी भाषा गुरुमुखी वर्णमालामें लिखे है। और औरङ्गजेबके प्रति भर्त्सनामूलक गोविन्द विरचित यह श्लोक, दयासिंह और दूसरे चार सिखोंके हाथ औरङ्गजेबके पास भेजे गये थे। भर्त्सना या निन्दवाद-पूर्ण तीव्र भाषामें लिखा एक पत्र भी इसके साथ भेजा गया था; लेकिन उस पत्रने आदिग्रन्थमें स्थान नहीं पाया।

गुरुगोविन्द विरचित इस ग्रन्थका उपसंहार इन तीस पृष्ठव्यापी गल्पमालामें परिपूर्ण है।

तृतीय परिशिष्ट।

धर्म्मोपदेष्टा सिख-गुरुओंकी प्रचारित कुछ
आदर्श-धर्म्म-निति या धर्म्मानुष्ठानके
कई एक तत्त्व।
नानक और गोविन्दप्रचारित्त जो धर्म्ममत सिखों
द्वारा समादृत सम्मानित होते हैं, उनके
ही कुछ दृष्टान्त इस परिशिष्टमें
दिये गये
हैं।

१। ईश्वर—ईश्वरत्व।

सत्य ही ईश्वर है, उससे भय नहीं है, उससे दुश्मनी नहीं है,
वह अमर है, वह प्राणकर्त्ता है।
वह गुरु और वह सर्व्वमङ्गलालय है।
उसी आदि सत्यको याद करो;
सृष्टिके पहलेसे ही सत्य बिराजमान है।
हे नानक, सत्य हमेशा मौजूद है।
और सत्य हमेशा मौजूद रहेगा।

अनन्त कालको चिन्ता करके भी तर्कसे सत्य वोधगम्य न होगा। चाहे जितना एकाग्रचित्त हो, ध्यानमें सत्य न आयेगा। सौ या सौ हजार हो, कुछ भी मरे आदमीके साथ न जायेगा। कैसे सत्य कहा जाय, कैसे झूठ परित्याग किया जाय? हे नानक! ईश्वरकी निर्दिष्ट राहपर ईश्वरकी इच्छासे परिचालित होनेपर, सत्य कहा जाता और झूठ छोड़ा जा सकता है।

नानकके "आदि ग्रन्थ"—जपजीकी (सूचना)

हे नानक वही स्वत: प्रकाश है,

वही सृष्टिकर्त्ता ; वही चिरस्थायी है ;

उसके सिवा कोई नहीं और न कोई होगा।

"नानकके", "आदिग्रन्थका",—"गौरी राग"। हे ईश्वर! तुम सर्व्वभूतमें और सब जगह वर्त्तमान हो, तुम्हीं एक मात्र अविनश्वर हो।

रामदासके आदि ग्रन्थका,—"आशा राग"।

जिन्होंने आत्मा और देह दी है,

मेरा मन उन्हीं अद्वितीय ईश्वरपर आसक्त है।

"अर्ज्जुन," "आदिग्रन्थ,"—'श्रीराग'।

समय ही अद्वितीय ईश्वर है, वही आदि और वही अन्त है,

वही अनन्त, वही सृष्टिकर्त्ता, वही संहारकर्त्ता है;

सृष्टि और प्रलय एकमात्र उनसे ही सम्भव है।

देवता और दानवकी, ईश्वरने ही सृष्टि की है, पूर्व्व पश्चिम,—

उसकी ही सृष्टि है; उत्तर, दक्षिण उनका ही सृष्टवस्तु है।

बातोंमें उसकी महिमाका कीर्त्तन कैसे सम्भव है?

गोविन्दका "हजारा शब्द।"

ईश्वरकी एक ही प्रतिकृति है; और किसी प्रतिकृतमें

उसका अनुभव करना सम्भवपर है?

गोविन्दका "विचित्र नाटक।"

२। अवतार, सिद्ध, भविष्यद्वक्ता ; हिन्दू अवतार।

मुहम्मद सिद्ध और फकीर गण।

कितने ही मुहम्मदोंने इस पृथिवीमें जन्म लिया था।
अगणित ब्रह्मा, विष्णु और शिवका भी अभाव नहीं था।
हजार हजार फकीर और भविष्यवक्ता और अनगिनती
सिद्ध और योगी इस पृथिवीमें आये हैं ;
लेकिन अद्वितीय परमेश्वर ही सबसे श्रेष्ठ है,
ईश्वरका नाम ही सत्य है।
हे नानक ! ईश्वरके गुण अनन्त हैं, वह गिनतीसे बाहर हैं॥
उसे समझानेमें कौन सक्षम है ?

नानक,—"रत्नमाला" (ग्रन्थका अतिरिक्त।)

ब्राह्मणगण वेदपाठमें श्रान्त और क्लान्त हैं ;
लेकिन वह उससे तिल बराबर भी फल पा नहीं सके।
सिद्ध और योगियोंने यत्नभावसे ढूंढा है ;
लेकिन वह लोग माया-मोहसे प्रतारित और पथभ्रष्ट हैं।
दश प्रधान अवतारोंने जन्म परिग्रह किया है ;
रूद्रकसिद्ध महादेव भी इस पृथिवीमें आये हैं।
चिताभस्म लपेटकर वह लोग क्लान्त हुए हैं,
लेकिन हे ईश्वर ! यह भी तुम्हारे स्वरूपके निर्णयमें समर्थ न हुए।

अर्जुन "आदिग्रन्थ,—सोधी।"

सुर, सिद्ध और शिवके अवतार समूह, शेख, फकीर और असीम प्रतापशाली मनुष्य इस पृथिवीमें आये थे और उन्होंने पृथिवी परित्याग की है, और भी कितने ही आते और चले जाते हैं।

अर्ज्जन "आदि ग्रन्त,"—श्रीराग

असलमें कृष्णाने ही दैत्यकुलका संहार किया। कितने ही ता ऋवके काम उनके द्वारा पूरे हुए हैं; कृष्णाने अपनेको ब्रह्माके नामसे प्रसिद्ध किया था; तब भी वह ईश्वरके नामसे स्वीकार किये जा नहीं सकते। उनकी मृत्यु हुई थी, वह मरणशील थे। दु-सरों वह कैसे भक्तोंकी रक्षा करेंगे कैसे उत्ताल तरङ्गमय अनन्त-सागरमें निमग्न मनुष्यको, दूसरेका परित्राण कैसे करेंगे एकमात्र ईश्वर ही सर्व्वशक्तिमान् हैं, वही सृष्टिकर्त्ता हैं, वही संहारकर्त्ता है सृष्टि—स्थिति—प्रलय एक मात्र अनन्त ईश्वरहीसे सम्भवपर है।

गोविन्द,—"हजारशब्द"।

जो ईश्वर हैं, उसके मित्र नहीं, उसके दुश्मन भी नहीं हैं।
वह प्रशंसासे प्रसन्न नहीं होते,
अभिशाप या निन्दासे विचलित नहीं होते।
वह प्रशंसा और निन्दाके अतीत हैं।
उनका कृष्णरूपमें प्रकट होना कैसे सम्भव है
उनके पिता नहीं, माता नहीं;
देवकीके गर्भसे जन्मपरिग्रह करना,
क्या उनके लिये सम्भवपर है?

गोविन्द,—"हजारशब्द।"

राम और रहीम, * परित्राणकर्त्ता नहीं हैं।
ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य्य, चन्द्र, सभी मृत्युके अधीन हैं।

गोविन्द,—"हजारशब्द"।

---

* कृपामय—मुसलमानोंके देवता।

३। सिक्ख गुरुगण भी पूज्य नहीं है।

जो मुझे ईश्वर समझते हैं।
मै उन्हें नरकके अंधेरे गर्भमें फेंक देता हूं।
मुझे ईश्वरका गुलाम समझो,—
इस बारेमें कभी सन्देह न करो।
मै ईश्वरका गुलाममात्र हूं,
उनके सृष्टि- चातुर्य्यके देखनेके लिये ही मै आया हूं।

गोविन्द,—"विचित्र नाटक"।

४। प्रतिमा और योगियोंकी उपासना।

ईश्वरके सिवा दूसरे किसीकी भी उपासना न करो;
मरे मनुष्यके प्रति मस्तक भुकाना उचित नहीं।

नानक-"आदिग्रन्थ," सुरत रागिनी

मनके अपवित्र होनेपर, प्रतिमाकी पूजा करना, तीर्थ स्थान समझ धर्म्ममन्दिरकी उपासना कर और मरुभूमिमें पड़ा रहना सब वृथा है। इससे तुम्हें ईश्वर ग्रहण न करेंगे, तुम मुक्ति पानेके अधिकारी नहीं हो। यदि परित्राण होना चाहते हो, यदि ईश्वरमें विलीन होनेकी इच्छा करते हो, तो एकमात्र सत्यकी (ईश्वरकी) उपासना करो।

नानक, आदिग्रन्थ "भोग" नानक ने कहा है, कि उन्होंने यहां एक ब्राह्मणका वाक्य उद्धृत किया है।

मनुष्य पशुके समान है, वह कभी ईश्वरके
भूत,भविष्यत,वर्त्तमानकी क्षमताका अनुभव कर नहीं सकता।
ईश्वरकी उपासना अवश्य कर्त्तव्य है,

है नानक ! ईश्वरको निर्दिष्ट राहपर परिचालित होनेसे,—उनकीही इच्छाके अनुसार चलनेसे, सत्य कहा जाता और मिथ्या परिहार किया जाता है।

नानक,—"आदिग्रन्थ," जपजी।

१० । वेद, पुराण, और कुरान ।

यदि ईश्वर द्वारा अनु-प्रविष्ट न हुए, तो पोथी, विचार, वेद और पुराण,—सब झूठे हैं।

नानक,—"आदिग्रन्थ," गौरीराग।

शास्त्र, वेद और कुरानके प्रति श्रद्धा करो,—
उसके उपदेशके मुताबिक काम करो,—
तुम स्वर्ग या नरकमें पहुंच सकते हो,—
स्वर्ग और नरकके सम्बन्धमें तुम्हें समझ हो सकती है,
जन्म और मृत्युके सम्बन्धमें तुम्हारी अभिज्ञता पाना सम्भव है।
लेकिन ईश्वरके सिवा कोई मुक्ति देनेमें समर्थ न होगा।
नानक, रत्नमाला" (आदि ग्रन्थका अतिरिक्त या परिशिष्ट)

जगदीश्वरकी शरणमें उसने आत्मसमर्पण किया है;—
इसीसे ईश्वरके सिवा उसकी आंखोंमें दूसरा गैर है
कोई महाजन दिखाई नहीं देता।

इसमें सन्देह नहीं, कि राम, रहीम, पुराण, और कुरान प्रभृतिके बहुत उपासक हैं;—

लेकिन उसके निकट दूसरा कोई भक्तिका पात्र नहीं है।

स्मृति, शास्त्र और वेद कितनी ही बातोंमें आपसमें मत-विरोधी हैं,—

लेकिन वह कुछ भी कर्णपात नहीं करता ।

११ । संन्यास धर्म ।

हे जगदीश्वर । आपके अनुग्रहसे ही सब संघटित हुआ है,
मेरा अनुष्ठित कुछ भी नहीं ।

गोविन्द,—"राईस"

जो गृही * किसी तरहका अन्यायकार्य्य नहीं करता,
जो सदा ही सत्कार्य्यका अनुष्ठान कराता है,
जो अकातर दान- धर्मका आचरण करता है,
वह गृही ही पूतसलिल गङ्गाकी तरह पवित्रात्मा है ।

नानक,—"आदिग्रन्थ," रामकली रागिनी ।

एकाग्र चित्तसे ईश्वरका नाम लेनेसे, गृहस्थ हो या संन्यासी,—
उनमें कोई पार्थक्य नहीं है ।

नानक,—"आदिग्रन्थ," आशा रागिनी

गृहस्थाश्रममें रह, हृदयसे उदासी हो,—किसीमें लिप्त न हो ।

उमरदास,—"आदिग्रन्थ" श्री राग ।

१२ । जाति ।

जातिका विचार न करो, विनयावनत हो, निश्चय ही मुक्ति पाओगे ।

---

* अर्थात् अङ्गरेजी भाषाके धर्म्मपालक सम्प्रदायसे भिन्न, साधारण श्रेणीका कोई मनुष्य, जो मनुष्य जीवनका साधारण कर्त्तव्य सम्पन्न करता है ।

नानक,—"आदिग्रन्थ,' सारङ्गराग ।

जगदीश्वर मनुष्यके प्रति वंशकी कोई बात न पूछेंगे,—
वह मनुष्यसे पूछेंगे,—तुमने क्या किया है ?

नानक,—"आदिग्रन्थ," प्रभाती रागिनी,

उच्चवंशजात यदि नीचाशय हो,
तो उसका आदेश कभी पालनीय नहीं ॥
घृणित अस्पृश्य यदि पुण्यवान हो,
तो उसका पादपीठ नानकके सेवनीय हो ॥

नानक,—"आदिग्रन्थ" मल्लार राग,

जो ब्रह्मासे समुत्पन्न हो,
धरामें वही वरणीय ब्राह्मण है ।
ब्राह्मण कहते हैं, कि हैं चार जाति,
लेकिन सभी हैं एक ब्रह्माकी सन्तति ॥

अमरदास,—"आदिग्रन्थ," भैरव राग,

मट्टीसे इस जगत्‌की सृष्टि हुई है;—
उसी मट्टीसे मेरे कई पात्र तय्यार हुए हैं ।
नानक कहते हैं,—कर्मके अनुसार ही मनुष्यका विचार होगा,
और ईश्वरका प्रसाद न पा सकनेसे मुक्ति न होगी ।
मानव देह इन पांच उपादानसे गठित है,
उन उपादानसमष्टिको एकको उच्च, दूसरेको नीच,—कौन कह सकता है ?

अमरदास,—"आदिग्रन्थ" भैरव ।

मैं चार जातिको एक जातिमें परिणत करूंगा ।
मैं उन्हें "वाह गुरु" शब्द उच्चारण करना सिखाऊंगा ।

गोविन्द,—"राहत नामा" । यह अंश आदिग्रन्थमें लि-
या नहीं गया है।)

१३। खाद्य।

हे नानक! भिन्न धर्म्मावलम्बियोंके लिये दो अधिकार हैं,—
एक श्रेणीका गो-जातिके प्रति भक्ति दिखाना, दूसरी श्रेणीका,—
शूकर जातिके प्रति जात-क्रोध है। लेकिन जो किसी जानदार प्राणी
का प्राणहानि नहीं करते, गुरु और पण्डितगण उन शिष्योंकी
ही प्रशंसा करते है।

नानक,—"आदिग्रन्थ" मांभा।

अकारण प्राणी हत्या-करना उचित नहीं,—
वह उपयुक्त खाद्य कहा नहीं जाता।
हे नानक! पापसे हमेशा पापकी उत्पत्ति होती है।

नानक,—"आदिग्रन्थ" मांभा।

१४। ब्राह्मण धर्म्मात्मा प्रभृति।

ईश्वरनिष्ठा, ईश्वरोपासना और पतिव्रताचरण ही ब्राह्म-
णोंकी कार्य्यनीति है।

विनय और सन्तोष ही जिसका सार धर्म्म है,
वही सब ब्राह्मण ब्रह्माके सन्तान हैं।
निर्द्दिष्ट नियमके भङ्ग करनेसे भी वह मुक्तिके अधिकारी हैं।

नानक,—"आदिग्रन्थ" भोग।

कापास, *—दया: सूत,—सन्तोष और सात गांठ;-

---

* अर्थात् ब्राह्मणोंके यज्ञोपवीतका कापास।

परिशिष्ट।

सबको ही धर्म्मस्वरूप समझना जरूरी है।
हृदयमें ऐसा ज्ञान रहनेपर, उसे धारण करो।
यह कभी न टूटेगा, कभी आगसे न जलेगा,
इसका कभी ध्वंस नहीं, यह कभी अपवित न होगा।
हे नानक। जो ऐसा सूत धारण करते, वह मनुष्य पविता-त्माओंमें गिने जाते हैं।

नानक,—"आदिग्रन्थ" आशा

"किन्ता"—जीर्णवस्त्र या कौपीन पहननेसे ही धर्म्मनिष्ठ हुआ नहीं जाता, दण्ड धारणसे भी धर्म्मप्राणता प्रकाश नहीं होती, भस्म मलनेसे ही कोई ईश्वरनिष्ठ नहीं होता, सिर मुंडानेसे या सिङ्गा बजानेसे ईश्वरानुरक्तिका परिचय पाया नहीं जाता।

नानक,—"आदिग्रन्थ"सोधी।

वर्त्तमान युगमें ब्रह्माके सन्तान ब्राह्मणोंकी संख्या बहुत कम है, वर्त्तमान युगमें बहुत थोड़े ही ब्राह्मण-ब्रह्माके सन्तान हैं। अर्थात् निष्ठावान् और पवितात्मा बहुत थोड़े ही ब्राह्मण आज-कल इस देशमें दिखाई देते हैं।

उमरदास,—"आदिग्रन्थ" बिलावल

घोर जङ्गल कोही संन्यासिगण अपना आवास-स्थान समझें।
पार्थिव भोगकी लालसाकी परितृप्तिके लिये उनके हृदयको कभी लालायित होना न चाहिये।
ज्ञान (या सत्य कोही) वह गुरु समझें॥
और उन्हें "सतःजूनि" या "रजःजूनि" या "तमोजुनि" नामसे कोई न समझें। अर्थात् नर लोग अपने स्वार्थ सा के लिये बहुरूभावका अवलम्बन न करें; या वह लोग समय

देख उसके अनुसार सत् या असत् कामका अनुष्ठान न करें; उद्देश्यसाधनके लिये वह लोग सदा असदुपायके अवलम्बनसे भी विरत रहें ।)

गोविन्द,—"हजारा शब्द" ।

१५ शिशु-हत्या ।

—शिशु कन्या हन्ताओंके साथ जिनका संसर्ग है,
मैं उनसे घृणा करता हूं—उन्हें अभिशाप देता हूं
फिर;—
शिशु-कन्या हननकारीसे जो आहार्य्य ग्रहण करते हैं, वह कभी मुक्ति न पायेंगे ।

गोविन्द,—"राहतनामा" (ग्रन्थका अतिरिक्तांश)

१६ सती ।

अग्निमें जिसका विनाश नहीं है ;—
लेकिन अनुतापानलसे जो जली जाती है, वही सची सती है
फिर ;—
पतिके प्रति अनुरक्त रमणी, पतिके साथ चिताशय्याप शयन करती है । लेकिन उसकी आत्माके ईश्वरकी भक्तिसे विग लित होनेपर, उसका दुःख बहुत कुछ घट जाता है ।

उमरदास,—"आदि ग्रन्थ" सुही

आदिग्रन्थका परिशिष्ट।

भाई गुरदास भल्ले द्वारा नानकके धर्ममतके प्रचारकी पद्धति।

इस जगत्‌में हिन्दुओंकी चार जाति और मुसलमानोंके चार सम्प्रदाय थे। *

वह सब घोर स्वार्थपर, ईर्ष्यापरतन्त्र और आत्माभिमानी थे। हिन्दू लोग बाराणसी और गङ्गानदी किनारे और मुसलमान लोग काबेमें रहते थे।

मुसलमान लोग अपने धर्म्मोक्त संस्कारके अनुष्ठानके अनुयायी कामकर अपने धर्म्मको बना रखते थे, दूसरी ओर हिन्दू यज्ञोपवीत और तिलक धारणकर अपने धर्म्मका समर्थन करते थे।

हिन्दू रामकी उपासना करते थे; मुसलमान रहीमपर अनुरक्त थे। हिन्दू और मुसलमान राम और रहीमको अभिन्न समझते थे सही, लेकिन दोनो ही जाति उपासना प्रणाली जानती नहीं थी, वह लोग राह भूलकर भ्रममें पतित हुए थे।

---

* सय्यद, शेख, मुगल और पठान प्रभृति मुसलमानोंकी चार जातियां यहां चार सम्प्रदायके नामसे अभिहित हुई हैं और हिन्दुओंकी चार जातियां या वंशके साथ उनकी तुलना की गई है। वस्तुतः लोग कहते हैं,—मुसलमानोंकी चार जाति या सम्प्रदायमें ऐसी तुलना "हराम-इ-चर मजहब" के समान है। मुसलमानोंमें ऐसी प्रथा मना है।

इसीलिये वेद और कुरानको परित्यागकर प्रलोभनवश यह लोग संसारजालमें आवद्ध होने लगे।

एक ओर सत्य गिर गया; दूसरी ओर ब्राह्मण और मुल्ला लोग सत्य धर्म्म से आपसमें वाद प्रतिवाद,—तर्क-वितर्क करने लगे; सुतरां वह लोग कोई युक्ति पानेमें असमर्थ नहीं हुए।

*   *   *   *

*   *   *   *

जगदीश्वरने (सत्य या धर्म्मके सम्बन्धमें) अभियोग सुन, नानकको पृथिवीमें भेजा।

नानकने पृथिवीमें आ एक प्रथाका परिवर्त्तन किया, कि शिष्य लोग गुरुका पैर धो वह पादोदक पियें।

नानकने प्रतिपन्न किया,—कलियुगमें "परब्रह्म" और "परम ब्रह्म" दोनों ही एक हैं,—

जिस प्राणीने इस पृथिवीको पीठपर धारण किया है, उसके चार पैर, विश्वासकी दीवारसे बने है, या विश्वास ही उसके चारो पैर हैं। इसतरह चारो जातियां आपसमें मिल एक हुईं,—वह लोग जातिभेद भूल गये;

सब ऊंच और नीच समान हुए, शिष्योंमें गुरुपद प्रक्षालन और गुरुपदके नमस्कारकी प्रथा, नानकने इस पृथिवीमें प्रवर्त्तन की। *

मनुष्यकी प्रकृतिके विपरीताचरणसे गुरुपद शिष्योंके मस्तकपर स्थापित होता था।

---

* अकालीगण आजतक इस प्रथाका अनुसरण करते हैं।

इस कलियुगमें नानकने ही मनुष्योंका मुक्तिविधान किया है एकमात्र सत्यनामके व्यवहारसे, वही मनुष्योंको प्रकृत ईश्वर उपासना सिखा गये हैं ।

इस कलियुगमें मनुष्यको मुक्तिदान करनेके लिये ही नानक इस पृथिवीमें अवतीर्ण हुए थे ।

टीका ।—ग्रन्थके अन्तर्गत भाई गुरुदास रचित उपरोक्त अं और और भी अनेकानेक अंश मेलकम कृत "सिखोंका संक्षि विवरण" नामक ग्रन्थके १५२ और उसके बादके पृष्ठाओंमें संक्षि लिए हैं । (See Malcolm's "Sketch of the Sikhs" p. 152 &c.) यहां ठीक अनुवाद देनेके लिये ऐसी चेष्टा की गई है, कि मिष्टर मेलकमके ग्रन्थोक्तमें इस इस अंशका अनुवाद ठीक नहीं है ।

इस ग्रन्थमें चालीस अध्याय हैं । हरेक अध्याय विभिन्न कविताच्छन्दसे विरचित हैं । इस ग्रन्थमें नानक सम्यकीय कितनी ही कहानियोंका आधार है ; सिखजाति उन सब कहानियोंको पढ़ अनुपम आनन्द उपभोग करती है । उनमें एक कहानीकी बात नीचे दी जाती है ;—

नानक फिर मक्के गये, उनकी पोशाक औलियाके वसनकी तरह एक पीतवसन थी ।

उनके हाथ छड़ी और पासमें कुछ पुस्तकें थी ; जलपात्र, प्याला और चटाई भी नानकने साथ ली थी ।

जहां तीर्थयात्रियोंने अपना अपना आखिरी तीर्थ-कार्य सम्पन्न किया था, नानकने वहीं ही उपवेशन किया ।

रातको जब वह दोनो पैर फैला सोये, तो उनके दोनो पैर मसजिदकी ओर जा पड़े।

एक जवानने उन्हें लात मारकर कहा,- यह क्या। कौन विधर्मी काफिर जगदीश्वरकी ओर पैर फैला यहां सोता है?

जवानने जब नानकका पैर पकड़ एक ओर फेंक दिया, उसके साथ ही साथ मक्का शहर भी घूम गया। तब नानक अलौकिक शक्तिसम्पन्नके नामसे प्रचारित हुए।

सब लोग साष्टुवमें आये, इत्यादि, इत्यादि।

गुरुगोविन्दके धर्म्म-प्रचारकी पद्धति।

("विचित्र नाटकसे" यह अंश संगृहीत है। चौबीस अवतारके आखिरी अवतार और उनके बादके मेहदी मीरके सम्बन्धमें कुछ चौबीस अवतारोंकी वर्णनासे यहां उद्धृत हुआ है।)

टीका।—क्षत्रिय जातिके "सोधो" और "वेदी" नामक दो शाखा सम्प्रदायका पौराणिक इतिवृत्त, इस ग्रन्थके प्रथम चार अध्यायमें मौजूद है। वह दो सम्प्रदाय एक समय पञ्जाबमें राजत्व करता था; लाहोर और कसूर उसकी राजधानी थी। वह लोग रामके दोनो पुत्र लव और कुशके वंशधरके नामका परिचय देते हैं। दशरथ, रघु, सूर्य्य और दूसरे नरपतिगणके वंशपर्य्यायकी गिनतीकर रामचन्द्र आदिम राजा कालसेनके वंशधरके नामसे अपना परिचय देते थे। वर्त्तमान प्रसङ्गमें यह ग्रन्थ केवल प्रतिज्ञा या भविष्यद्वाणीसमूहसे परिपूर्ण है। कलियुगमें नानक अवतार ले सोधियोंके प्रति बहुत अनुग्रह दिखायेंगे और जब चौबीसवां अवतार ले मनुष्यदेह धारण करेंगे, सब

सोधीवंशमें उनका जन्म होगा,—ऐसी ही कितनी ही कहानि
या भविष्यत्‌वाणियाँ इस ग्रंथमें सन्निविष्ट हैं।

"पञ्चम अध्याय" (मर्म्म)।—ब्राह्मणगण शूद्रकी तर
कदाचारी हो उठे; क्षत्रियने, वैश्यके पदाङ्कका अनुसरण किया
शूद्र भी उसीतरह ब्राह्मणोंके स्थानपर अधिकार करने लगे,-
उन्होंने ब्राह्मणों जैसा कार्य्यकलाप आरम्भ किया और वैश्यों
क्षत्रियोंकी रीतिपद्धति ली। यथासमय नानकने अवतार लिया
उन्होंने पृथिवीमें अपना एक धर्म्म-सम्प्रदाय प्रतिष्ठित किया
उनकी मृत्यु हुई सही; लेकिन फिर वह अङ्गदके रूपमें पृथिवी
में अवतीर्ण हुए। दूसरी बार उनका उमादासके रूपसे देह-
धारण और पीछे तीसरी बार रामदासके रूपसे उनका जन्म-
परिग्रह है,—यह सब बात उन्होंने पहले ही प्रकाश की थी
इसके बाद सोधी सम्प्रदायमें ही गुरुपद वंशानुगत हुआ।
इसतरह नानकने फिर कोई वंश या मनुष्यदेह धारण नहीं
किया; एक प्रदीपसे जैसे दूसरे एक प्रदीपकी उत्पत्ति है; उसी
तरह नानकसे ही सबकी उत्पत्ति है। प्रकाश्यतः चार ही गुरु
थे; लेकिन असलमें गुरु नानककी आत्मा हरेक गुरुदेहमें
वर्त्तमान रहती थी। रामदासके परलोक जानेपर उनके पुत्र
अर्जुन गुरुपद पर प्रतिष्ठित हुए। उनकी मृत्युके बाद क्रमसे,
—हरगोविन्द, हरराय, हरिकृष्ण और तेगबहादुरने सिखो-
का गुरुपद पाया। उन सबने ही धर्म्मके लिये दिल्लीमें प्राण
विसर्जन किया है, मुसलमानोंने उन सबका ही प्राणसंहार
किया है।

"षष्ठ अध्याय" (मर्म्म)।—जहाँ पाण्डुवंशीय राजत्व

करते थे, उसी सप्त श्रिङ्गी या गिरिश्रृङ्गके पास "भीमकुण्ड" नामक स्थानमें, गुरुगोविन्द सिंहकी मुक्ति (अशरीरि) आत्मा ईश्वरोपासनामें रत थी। अन्तमें गोविन्दकी सानुनय प्रार्थनासे उनकी आत्मा जगदीश्वरमें विलीन हो गई। (उन्हें मुक्ति मिली,—उन्हें फिर इस पृथिवीमें आ देह धारण करना नहीं पड़ा।) गुरुकी तरह गुरुके पिता-माता भी सदा सर्व्वदा ईश्वरको उपासना करते थे, ईश्वरने उनके प्रति भी कृपाकटाक्षपात किया। अन्तमें जगदीश्वरने इस सप्त गिरिशृङ्गसे गोविन्दकी आत्माको ला, मनुष्यदेह धारणके लिये आदेश किया।

इस पृथिवीमें अवतीर्ण होनेकी मेरी बिलकुल इच्छा नहीं थी,
ईश्वरके चरणमें मेरा मन गभीर ध्यानमें मग्न था,
लेकिन जगदीश्वरने अन्तमें अपना मनोभाव प्रकट किया।

ईश्वरने कहा,—"जब मनुष्यकी सृष्टि हुई, तो पापी मनुष्योंके शान्तिविधानके लिये दैत्यगण पृथिवीमें भेजे गये थे। लेकिन दैत्योंने प्रभूत बलशाली हो ईश्वरको भुला दिया। इसके बाद देवताओंका जन्म हुआ, लेकिन उन लोगोंने, शिव, ब्रह्मा और विष्णु प्रभृतिने देह धारणकर मनुष्यजातिमें अपनी अपनी पूजाकी प्रथा प्रवर्त्तन की। इसके बाद सिद्धगणने जन्म लिया उन लोगोंने भिन्न पथका अनुसरण कर विभिन्न सम्प्रदायकी सृष्टि की। अन्तमें गोरखनाथ पृथिवीमें अवतीर्ण हुए, कितने हो राजोंने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। इसतरह उनके द्वारा "योगी" नामसे एक सम्प्रदाय प्रतिष्ठित हुआ। गोरखनाथके बाद रामानन्दका आविर्भाव हुआ। उन्होंने अपनी प्रथाके अनुसार "वैरागी" नामक एक सम्प्रदायकी प्रतिष्ठा की। इसके बाद मुहम्मदका

जन्म हुआ। वह सारे अरबके अधिपति हुए थे। उनके द्वारा एक धर्म्मसम्प्रदाय प्रतिष्ठित हुआ और शिष्योंको उन्होंने अपना नाम उच्चारण करनेका उपदेश दिया। तब साफ मालूम हुआ, कि मनुष्य जातिको सत्पथपर चलानेके लिये जिन्हें पृथिवीमें भेजा गया, उन सबने कुसंस्कारके वशवर्त्ती हो वहां अपनी अपनी प्रथा प्रवर्त्तित की और उन सब कु-प्रथाके अनुसरणसे मनुष्यजाति कुपथपर परिचालित होने लगी। अब निर्व्वोध मनुष्यको कोई सत्पथ दिखाता नहीं था,—कोई उन्हें सदुपदेश देनेमें समर्थ नहीं हुआ। हे गोविन्द। इसलिये ही मैं तुम्हें आज बुलाता हूं। इस समय तुम पृथिवीमें जा एक सत्य ईश्वरकी उपासना फैलाओ और जो पदभ्रष्ट हो विपथगामी हुए हैं, उनको तुम सत्पथपर परिचालित करो।" ईश्वरकी इस आज्ञाके अनुसार ही मैं पृथिवीमें आया हूं, उनके ही आदेशसे एक सम्प्रदाय प्रतिष्ठित हुआ है और उनकोही आज्ञासे मैंने इस सम्प्रदायका विधि-विधान या प्रचलित नीति—प्रचारका प्रवर्त्तन किया। लेकिन जो ईश्वर समझकर मेरी पूजा करेंगे, मैं उन्हें नरकके घोर अन्धकारमें गिराऊंगा। कारण मुझमें और लोगोंमें कोई प्रभेद नहीं है, जैसा मैं हूं, साधारण मनुष्य भी वैसे ही हैं। मैं उस परम पिताका अत्याश्चर्य्य सृष्टि कौशलका एक देखनेवाला हूं।

(इसके बाद गोविन्दने प्रचार किया,—हिन्दू और मुसलमानोंके धर्म्म सब अकिञ्चित्कर हैं; हिन्दू-धर्म्म और मुसलमान-धर्म्म झूठा है। योगिगण और पुराण और कुरानके पढ़नेवाले सभी प्रतारक हैं। मूर्त्ति,—मृत मूर्त्ति या पत्थरकी मूर्त्तिकी

उपासनापर जरा भी विश्वास स्थापन करना न चाहिये।
गोविन्द ने कहा,—"सभी धर्म कलुषित और कुसंस्काराच्छन्न
हैं। संन्यासी और वैरागी सबने ही ममभावसे असत्पथ देखा है,
ब्राह्मण, क्षत्रिय और दूसरी जातियोंकी उपासना-पद्धति भी
वृथा और अकिञ्चित्कार है। धर्मग्रन्थ या पोथीपत्रमें ईश्वर
नहीं है, जो इस बातको दिलमें रखते हैं, वह निश्चय ही नरकमें
गिरेंगे। एकमात्र सत्यनिष्ठ और विनयी होनेसे ही ईश्वर
मिलते हैं।"

इसके बादके अध्यायोंमें त्रयोदश अध्यायोंतक गोविन्दकी
लड़ाइयोंके सम्बन्धमें वर्णना दिखाई देती है। बादशाहके सिपाही
और पहाड़ी राजाओंके साथ गोविन्द जिन सब लड़ाइयोंमें नि-
युक्त थे, यहाँ प्रधानत:-उसकी ही विस्तृत वर्णना की गई है।

"चतुर्दश अध्याय" (मर्म्म)।—हे जगदीश्वर। आपने सदा
सर्व्वदा उपासकोंको असतुपथसे रक्षा की है,—उन्हें पापकी
राहसे बचाया है, आप पापियोंके प्रति कठोर शास्ति-विधान
करते है। आपने मुझे अनुरक्त दासके रूपमें ग्रहण किया है;
आप स्वयं ही मेरा पालन करते हैं। हे करुणामय जगदीश्वर।
मैंने इस पृथिवीमें आ आपके सृष्टिचातुर्य्यके सम्बन्धमें जो देखा
और आपकी महिमाके सम्बन्धमें जो प्रत्यक्ष किया है, उन सब
का ही में आज आपकी कृपासे वर्णन करूंगा। ईश्वरकी
करुणाके बलसे, मैंने पहले जन्ममें जो कुछ प्रत्यक्ष किया है, उसे
भी यहाँ लोगोंके गोचरीभूत करनेकी मैंने इच्छा की है।। मैं
जिस कामनें प्रवृत्त हुआ हूं, हे जगदीश्वर। सब समय
ही आपने मेरे प्रति करुणा वर्षण की है। "जो"

(लौह ही) मेरा रचाकर्त्ता है। ईश्वरके अनुग्रहसे मैंने यवश देह पाई है। भिन्न भिन्न समय मैंने जो कुछ देखा है, वह सब मैं ग्रन्थमे सन्निविष्ट करूंगा। मैं मनुष्योंको सब बातें ही समझा दूंगा।

चौवीस अवतारोंमें कुछका मर्म।

"कल्की," (शेष भाग)।—अन्तमें कल्की बहुत बलशाली और अहङ्कारदृप्त हो उठे। इससे जगदीश्वरने कुपित हो दूसरे एक प्राणीकी सृष्टि की। इसतरह प्रबल और पराक्रमशाली मेरी मीरकी सृष्टि हुई। मेरी मीर कल्कीका ध्वंससाधनकर समग्र पृथिवीपर अधिकार कर बैठे। सभी ईश्वरकी इच्छा और शक्तिसे सम्पन्न होता है। वह सब बातोंके अधिकारी थे। इसतरह चौवीस अवतारोंकी समाप्ति हुई।

"मेरी मीर"।—इस तरह कल्की ध्वंसमुखमें निपतित हुए। लेकिन जगदीश्वर सब समय ही अवतार ग्रहण करते हैं, कलियुगके अन्तमे या समाप्तिपर सभी ईश्वरमें विलीन होंगे,* जब मेरी मीरसे पृथिवीने पराजय स्वीकार किया,—जब मेरी मीर पृथिवीपर अधिकार कर बैठे, तो उनके मनमें कुछ अभिमानका सञ्चार हुआ। उन्होंने प्रभुत्व-क्षमता और महत्वके उच्च चूड़ापर आरोहण किया; सबने ही उनके सामने मस्तक झुकाया। वह अपनेको सर्व्वशक्तिमान समझने लगे;— उनके मनसे ईश्वरका स्वत्व दूर हुआ। मेरी मीरने स्थिर किया,—वह सर्व्व भूतमें और

---

* निज जीत या जीत सामन।

सर्व्वत्र विद्यमान रहे हैं। तब सर्व्वशक्तिमान जगदीश्वरने उस निर्व्वोधपर आक्रमण किया। जगदीश्वर अद्वितीय हैं, ईश्वर एक हैं, उनका दूसरा नहीं। वह सर्व्वदा सर्व्वत्र हैं,—जल, थल, नक्षि-कागर्भमें, पातालमें सब जगह ही मौजूद हैं। जो मनुष्य अद्वितीय ईश्वरको नहीं जानता, वह असंख्य बार इस पृथिवीमें जन्म लेता है। अन्तमें सर्व्वशक्तिमान मेदी मीरकी सब शक्ति छीन, उसे पूरी तरहसे विनाश करेंगे।

जगदीश्वरने पहले एक स्वदुगामी कीटाणुकी सृष्टि की ;
वह कीटाणु मेदीके कानमें अणुप्रविष्ट हो,
वहां वास करता है ;—
मेदी मीरके कानमे कीटाणुके प्रविष्ट होनेपर,
मेदी मीरने पूरीतरह ईश्वरकी अधीनता स्वीकार की।

चतुर्थ परिशिष्ट।

कल्पित या उपन्यासोक्त सम्राट फिरगके प्रति नानकका उपदेशपूर्ण फिर भी, तिरस्कार-व्यञ्जक पत्र ; और सिखोंको निर्द्धारित राहसे चलानेके लिये गोविन्द प्रवर्त्तित निर्द्दिष्ट नियमावली।

टीका।—फिरगकी जो दो लिपि लिखी गई हैं, उन्हें नान-कने लिखा है, यही लोगोंका संस्कार है। पहले पत्रका नाम,—"नसीहत नामा" अर्थात् तिरस्कारव्यञ्जक और उपदेशपूर्ण पत्र है। दूसरे पत्रका नाम,—"नानकका उत्तर" है; वह नानकके मुखनिःसृतके नामसे ही प्रकट है। फिरग नाम सम्भवतः एशिया और यूरोपके पथिकयशा "फ्रान्स गुड़रचीद"नामका अपभ्रंश है। नानकके सम्बन्धमें दोनो रचना ही काल्पनिक और इस आखिरी शताब्दीके मध्यकी विरचित जान पड़ती है।

गोविन्दके दो पुत्रोंका नाम,—"रहत नामा" अर्थात् नियमा-वलीका पत्र और "टाङ्कनामा" अर्थात् दण्डविधि सम्बन्धीय पत्र है। लोगोंको सत्पथपर चलानेके लिये उपयोगी बना यह लिखा गया है। शक्ति विशेषके प्रश्नका उत्तर देनेके लिये, या किसी प्रश्न करनेवालेका संशयच्छेद करनेकी इच्छासे यह लिखा जाय

पड़ता है। इसका कोई प्रमाण नहीं है, कि गोविन्दने स्वयं इसकी रचना की है। लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं, कि इसमें गोविन्दकी मतावली या सिक्ख-धर्मके नीति-समूह सन्निविष्ट हैं।

नसीहतनामा अर्थात् धनसम्पत्तिपूर्ण चालीस राजधानी शहरके प्रतापान्वित सम्राट् किरणके प्रति नानकका पत्र ।

मनुष्य अकेला आता, अकेला जाता है .—
(या उसका कोई गवाह नहीं होता।)
हिसाब-किताबके वक्त वह क्या जवाब देगा ?
यदि उस समय वह केवल अनुताप करे,
तो उसे शास्तिभोग करना पड़ेगा।

*　　*　　*　　*　　*
*　　*　　*　　*　　*

किरण भक्ति दिखाते नहीं थे, वह किसी धर्मपर विश्वास भी करते नहीं थे; ईश्वरके प्रति उनकी श्रद्धा नहीं थी; वह किसी धर्मको भी मानते नहीं थे। न्यायवान हो वह शासन करते नहीं थे, यह पृथिवी उच्चकण्ठसे घोषणा करती थी।

वह शासकर्त्ताके नामसे अभिहित होते थे, लेकिन वह सुशासन करते नहीं थे। वह केवल इन्द्रियसुखभोगमें रत रहते थे .—वह मानो उस मोहके फन्दे में विजड़ित हुए थे।

तब देखगा हिन्दुस्थान और उत्तर खण्डमें
खालसाका आधिपत्य विराजेगा ।
अन्तमें और और देशोंपर भी वह अधिकार कर लेंगे ।
पश्चिम प्रदेश उनके सामने मस्तक झुकायेगा ।
तब सिखोंके खुरासानमें प्रवेश करनेपर
काबुल और कन्धार उनके पदानत होगा ।
इसके बाद जब ईरान * अधीनता स्वीकार करेगा,
उस समय मैं फिर मक्के आऊंगा,
और उसी समय सिख मदीनेपर आक्रमण करेंगे ।
उस समय आनन्दकी अवधि न रहेगी,
सभी "गुरुकी जय" की उच्चध्वनि करेंगे ।
सभी जगह भिन्न धर्मावलम्बिगण पददलित होंगे ;
पवित्र खालसा उन्नतिके उच्च चूड़ापर चढ़ेगा,
पशु-पक्षी सभी (ईश्वरके सामने) कांपेंगे ।
तब स्त्री-पुरुष सभी अद्वितीय ईश्वरकी उपासना करेंगे ।
स्वर्ग, मर्त्त, पाताल,—सभी ईश्वरके नियमोंका अनुसरण करेंगे ।
गुरुकृपा पा सब मनुष्यमात्र सुखी होंगे ।
उस समय खालसामें ही सब धर्म आ जायेंगे ।
उस समय पृथिवीमें और किसी धर्मका प्रभाव न रहेगा ।
तब सर्व्वत्र सभी "वाह गुरु" शब्द उच्चारण करेंगे ।
दुःख, यन्त्रणा सभी भाग जायगी ।
ईश्वरसे नानकने जो सम्राज्य पाया है,

---

* पहले फ़ारिस प्रदेश ईरानके नामसे परिचित था ।

कलियुगमें वही साम्राज्य प्रतिष्ठित होगा।
उस समय में स्पन्दहीन अवस्थामें ईश्वरके सामने निपतित हूंगा
कहूंगा, हे ईश्वर। तुम्हारा दास नानक, तुम्हारा
विधान कुछ भी समझ नहीं सका।

३। गुरु गोविन्द प्रणीत "राहत नामा।"

(किसी किसी अंशका सारसंग्रह और किसी किसी
अंशका मर्म्म यहां दिया जाता है।)

दरियाई उदासीके लिये लिखित और उपचल नगर (गो-
दावरी किनारे नादेर नामक स्थानमें) प्रल्हादसिंहके
निकट विवृत।

उपचलनगर पहुंच प्रल्हादसिंहसे गुरुने कहा था, कि नानककी दयासे इस पृथिवीमें एक धर्म्म-सम्प्रदाय या धर्म्ममत प्रवर्त्तित हुआ है, इसीके लिये राहतनामा लिख-की जरूरत है।

जो सिख शिरपर पगड़ी (टोपी) * रखते हैं
वह जलगण्ड रोगसे सात बार मृत्युके मुंहमें पतित होते हैं

---

* प्रधानतः इस जगह हिन्दू धर्म्मावलम्बी संन्यासियोंकी बात ही उल्लिखित हुई है। या शायद अगले जमानेकी मुसलमानी टोपीकी ओर भी कुछ लक्ष्य है। इस समय उसके बदले मुसल-मान दूसरी तरहकी टोपी पहनते हैं और टोपी यानी कुलह पहन उसपर पगड़ी लपेट लेते हैं। उस समय सिख टोपीसे जैसी घृणा करते थे, वैसी घृणा अब नहीं करते। उनकी यह घृणा इस समय अन्यकारने मिटा गई है।

और जो व्यक्ति गलेमें दूध डालते हैं, वह अनन्त नरकको राहमें जाते हैं

(आहारके समय उष्णीष परित्याग करना, मीना कुड़ीमार प्रभृतिके साथ रहना और स्त्रियोंके साथ शतरञ्ज खेलना,—यह सब मना है। सिखोंको यह सब छोड़ना चाहिये।)

गुरुका नाम विना उच्चारण किये कोई स्तोत्र पाठ न करना; जो मनुष्य गुरुवाक्य न मानेगा और विश्वास और भक्तिके साथ शिष्यका काम न करेगा, वह निश्चय ही म्लेच्छ समझा जायेगा।

जो सिख गुरुके पूजोपहारके लिये चन्देके सम्बन्धमें गुरुकी आज्ञा न मानेंगे, वह निश्चय ही गुरुकी कोपकी आगमें पड़ेंगे।

पहले गुरु (ग्रन्थ) और खालसा हीको
मैंने पृथिवीमें स्थान दिया है,
जो इसे अस्वीकार करते हैं या विश्वासघातकता करते हैं,
वह अनन्त नरकमें डाले जायेंगे।

(नकली जाफरान-पुष्प (यानी सूही रङ्गका) या पीला और लाल रङ्गका कपड़ा पहनना निषिद्ध है, माथेपर कवच धारण करना न चाहिये ; जपजीका पाठ विना किये दिनका काम करना बिलकुल ही मना है। तीसरे पहर पाठमें जी चुराना, राईरस स्तोत्र विना पाठ किये रातको भोजन करना और अकालपुरुषको छोड़ दूसरे देवताकी उपासना करना सर्वथा निषिद्ध है। सिवा सिखोंके और किसीको सलाम करना, अन्यको भुला देना और खालसाको धोखा देना पापकार्य है,—सभी मना है।

नानक, गोविन्द, अङ्गद और अमरदासके वंशधरोंने जितने "हुकुम नामे" (कर या पूजोपकरण देनेका आदेश) का प्रचार

किया है, उन सबका ही नानककी उपदेशानुसार पालन करना चाहिये। जो कोई उसको असान्य करेगा, उसका नाश अनिवार्य है।

वह (नानक) जितनी चीजें (यानी "ग्रन्थ" और "खालसा") इस पृथिवीमें प्रवर्त्तित कर गये हैं, उन सबकी ओर भक्ति करना पड़ेगी;—उन सबका ही पूजना जरूरी है। अभावनीय और अभूतपूर्व ईश्वरके प्रति सम्मान दिखाना मना है। जो सिख अपना धर्म छोड़ेंगे, वह दूसरे जन्ममें अपने अपराधके लिये अशेष शास्ति पायेंगे।

जो मनुष्य समाधिस्थान और गुरदेको ("कब्र" और "मठी"; यहां मुसलमान और हिन्दुओंके प्रति लक्ष्यकर कहा जाता है) उपासना करते हैं, या जो मनुष्य मन्दिर (मसजिद) या पत्थरकी (मूर्त्ति) पूजते हैं, वह हरगिज सिख नहीं हैं।

शिरस्त्राण (टोपी) धरीके उद्दे श्यसे जो सिख प्रणाम करता या उसकी भक्ति करता है, वह अनन्तकाल तक नरकमें रहेगा।)

खालसाको ही गुरुके नामसे समझो,—खालसा ही है,—
गुरुका प्रतिरूप।

जो गुरुदर्शनके अभिलाषी हैं, वह खालसा-शरीरमें ही
गुरुको देख सकेंगे।

(योगी या तुर्क (मुसलमानो) पर तलवार न धरो। एकमात्र गुरुकी रचना या ही या "ग्रन्थन" स्मरण करो। परदर्शन-पर (धर्म या विज्ञान पर्यालोपर) ईमान लाना मना है। गुरुके सिदा सब देवता मिथ्या हैं। एकमात्र "कालमाका" (अकाल) प्रत्यक्ष परमेश्वर ही (प्राणात् दे) सर्व्वशक्तिमान्की प्रतिमर्त्ति है।

जो मनुष्य ईश्वरोपासनामें गफलत करते पवित्र दयालु मनुष्यों का सन्मान नहीं करते; जो मनुष्य जुआ खेलनेमें आसक्त होते या गुरु निन्दा सुनते हैं, वह कभी सिखपदवाच्य नहीं।]

रोज जो आमदनी और जमा होता है, उसका निर्दिष्ट कुछ अंश ईश्वरके नाम स्वतन्त्र रखना चाहिये। लेकिन ऐकान्तिकता के साथ और सत्यधर्मपर निर्भर कर सब काम सम्पन्न करना चाहिये।

निश्वाससे या फूंकसे अग्नि निर्व्वापित करना उचित नहीं; या जिस जलका कुछ अंश पिया गया है, उस जलको सींचकर भी आग न बुझायें।

आहारके पहले गुरुका नाम उच्चारण करें। वारनिताका संसर्ग सर्व्वथा परित्याज्य है; परस्त्रीके साथ व्यभिचार बिलकुल मना है। गुरुत्यागी हो कभी दूसरेके मतानुवर्त्ती न होना। किसी सिखको ही नङ्गे देह रहना उचित नहीं। बिलकुल नङ्गे हो कभी कोई सिख काम न करे। नङ्गे रहकर खाना बांटना बिलकुल मना है। * सिखोंका मस्तक हमेशा ढंका रहे।

जिसके मुंहसे कभी झूठी बात नहीं निकलती,
धर्मयुद्ध खड़े होओ मनुष्य युद्धमें प्रवृत्त होता है,
दान-धर्म्माचरण ही जिसका काम है,
खी जातिका विनाश करना ही जिसके जीवनका एकमात्र व्रत है,

---

* हिन्दू जातीय योगिपुरुषगण खाना बांटनेके समय जिस मका अनुसरण करते हैं, यहां उसके ही प्रति लक्ष्य किया है।

वह मनुष्य ही सच्चा सिख पदवाच्य है। जो मनुष्य जिते-न्द्रिय है,

"कर्म्म" † भस्मीभूत करना जिसका काम है,

जो मनुष्य कुसंस्कारके वशवर्त्ती नहीं होता *

रात या दिन,—सब समय ही जो जागता है

गुरुवाक्यमें जो व्यक्ति आनन्द उपभोग करता है

पराजित होकरभी जो कभी भीत या निरुत्साहित नहीं होता।

वह मनुष्य ही सच्चा सिखपदवाच्य है।

स्थावर जङ्गम सबको एक ईश्वरकी सृष्टि समझो, किसीके हृदयको तकलीफ न हो।

इस आदेशके अन्यथा करनेपर, ईश्वर आपही असन्तुष्ट होंगे।

जो मनुष्य दरिद्रका पालन करते हैं।

---

† यानी जो मनुष्य ब्राह्मणोंकी आचार-पद्धतिसे घृणा कर-ता है।

* अरबी भाषाके "आयार" शब्दके व्युत्पत्तिगत अर्थके साथ हिन्दी भाषाका "आयान" शब्द बहुत कुछ मिलता जुलता दिखाई देता है। इसका अर्थ है,—जो मनुष्य किसी सिद्ध पुरुष या दूसरे किसीके आश्रितके नामसे वही भाव प्रकाश करता है। किसी सामन्त और उसके अनुचरोंमें आपसमें जो दोस्तानेका या अधीनताका भाव रहता है, उस अधीनता या दोस्तानेके भावके प्रकाश करनेके लिये ही यह शब्द व्यवहृत होता है।

पञ्चम परिशिष्ट ।

सिक्खोंके कुछ सम्प्रदाय या उपा-
धिकी सूची ।

(यहां और भी कुछ नाम या उपाधियां सन्निविष्ट हुई हैं । वस्तुतः उनकी किसी सम्प्रदायके पार्थक्यव्यञ्जक न होनेपर भी, उनका नामोल्लेख यहां जरूरी है ।)

१ म । "उदासी",—नानकके पुत्र श्रीचन्द्रद्वारा यह सम्प्रदाय प्रतिष्ठित हुआ । उदासियोंके सच्चे सिखपदवाच्य न होनेके कारण अमरदासने उन्हें अपने शिष्योंके सम्प्रदायमें शामिल नहीं किया ।

२ य । "वेदी",—नानकके एक दूसरे पुत्र लक्ष्मीदास इस सम्प्रदायके प्रतिष्ठाताके नामसे परिचित हैं ।

३ य । "तिहुन",—गुरु अङ्गदने तिहुन सम्प्रदायकी प्रतिष्ठा की ।

४ र्थ । "भाले",—गुरु अमरदास द्वा[illegible]ष्ठित ।

५ म । "सोधी",—गुरु रामदा[illegible] सम्प्रदा[illegible] "सोधि" नामसे परिचित है ।

टीका ।—"वेदी", "तिहन", "भाले"[illegible] सिख प[illegible] रिवारोंकी एक शाखा सम्प्रदायके अन्तर्ग[illegible] स्वतन्[illegible] [illegible]छ लोग गुरुके [illegible] कारण [illegible] परिचित हैं ।

६ ष्ठ। "रामराय",—जब गुरु हरराय ... हुए, तब जिन लोगोंने नानकप्रवर्तित धर्ममत छोड़ रामराय-का मत ग्रहण किया था, वही इस "रामरायी" नामसे परिचित हैं। हरिद्वारके पास हिमालयके नीचे उनके कई एक धर्म्मा-धिकरण दिखाई देते हैं।

७ म। "बन्दापन्थी",—अर्थात् बन्दा प्रतिष्ठित सम्प्रदाय युक्त व्यक्तिगण, इस "बन्दापन्थी"के नामसे अभिहित हैं। गुरु गोविन्दकी मृत्युके बाद, बन्दा कुछ दिनों सिखोंके श्रेष्ठपदपर प्रतिष्ठित थे।

८ म। "मासान्दि"—साधारणतः क्षत्रियोंकी जातिकी एक शाखा सम्प्रदायका नाम,—"मासान्दि" है। जो लोग गोविन्द-के विरुद्ध खड़े हुए थे, उनके अनुचरवर्ग ही विशेषतः इस "मासान्दि" नामसे अभिहित हैं। कोई कोई कहते हैं,—मासान्दि लोग रामरायके शिष्य हैं, फिर किसीकी रायसे जिन्होंने गुरुपुत्रको अस्त्रधारण करनेके लिये उत्तेजित किया था, उन्होंने ही "मासान्दि" नाम पाया है। लेकिन साधारणतः इस सम्प्रदायके सम्बन्धमें सुना जाता है, कि मासान्दियोंमें कई मनुष्य गुरुके घर पुरुषानुक्रमसे परिचारकका काम करते थे; इसके बाद वह लोग अहङ्कारोन्मत्त और अमितव्ययी हो गये; तब भी वह लोग अपनेको ही पवित्र और पुण्यात्मा समझते थे और सिख उनका सम्मान नहीं करते थे, मासान्दि लोग उनके प्रति असद्व्यवहार करते थे। अन्तमें उनके कार्य्यकलाप द्वारा गुरुगोविन्दने उन्हें संशोधनके अयोग्य समझा और उनमें

दो तीनके सिवा और सबको ही गुरुगोविन्दने अपनी श्रेणीसे निकाल दिया।

६ म। "टाड्ग्रन्थहा",—मेहता जातीय दूसरी नीच श्रेणीके कुछ मनुष्योंने दूसरा धर्म्म ग्रहणकर यह नाम पायाहै (इस पुस्तकके १५१वें पृष्ठकी चिह्नित टीका देखना चाहिये।

१० य। "रामदासी", अर्थात् राव या रायदासी,—"चमार या चर्म्मविन्यासकारी श्रेणीके कुछ सिख, रामदासी सम्प्रदाय के अन्तर्गत हैं। यह लोग रामदास या रामदासके वंशधरके नाम से अपना परिचय देते हैं। ग्रन्थमें इन रामदासकी रचनाने स्थान पाया है।

११ र। "मजहबी,"—मुसलमान धर्म्मको छोड़ जिन्होंने धर्म्मान्तर ग्रहण किया है, उनका सम्प्रदाय,—"मजहबी" के नामसे परिचित है।

ब्राह्मण द्वारा यह सम्प्रदाय प्रतिष्ठित कहा जाता है। (इस पुस्तकका १३१ पृष्ठका * चिह्नित टीका देखना चाहिये।)

१७ श। "सचीदारी",—पूर्व्वोक्त सम्प्रदायकी तरह यह लोग भी सत्यनिष्ठ और पवित्रात्मा हैं। इस सम्प्रदायके प्रतिष्ठाताका नाम अज्ञात है।

१८ श। "भाई",—इसका असली अर्थ भ्राता है। सत्य और धर्म्मनिष्ठाके लिये ख्यातनामा पवित्रात्मा सिखोंके प्रति ही यह "भाई" उपाधि प्रयुक्त होती है। यह कभी किसी सम्प्रदायके स्वातन्त्र्यव्यञ्जक उपाधिरूपमें प्रयुक्त नहीं होता।

जो सब सम्प्रदाय या सम्प्रदाय समतियां किसी विशेष धर्म्माधिकरणसे संश्लिष्ट हैं, या जो किसी प्रथितयशा शिष्यके प्रतिष्ठितके नामसे प्रचार करते, या गुरुके प्रदत्त उपाधियुक्त किसी व्यक्तिविशेषके नामसे अपना परिचय देते हैं, उन सब सम्प्रदाय या समष्टियोंको भी इस अंशके अन्तर्भुक्त किया जा सकता है। कुछ व्यक्ति अपनेको नानकके अनुचर रामदासके प्रतिष्ठित सम्प्रदायके अन्तर्गत समझते हैं। वह लोग अर्ज्जुनके समयतक वर्त्तमान थे, उनकी उपाधि,—"बुधा" या प्राचीन है। और कुछ सिख "रुबाबो" के नामसे परिचित है; गाना बजाना उनका पुश्तैनी रोजगार है। "रुबाब" नामक बाजेके बजानेवालेके नामसे वह लोग, "रुबाबी सिख" के नामसे परिचित हैं। उनका विश्वास है,—नानकके सहचर मरदाना, इस "रुबाबी सिख" सम्प्रदायके प्रतिष्ठाता थे। और कुछ व्यक्ति "दीवाना" या "मस्त' या 'उन्माद" के नामसे परिचित हैं। कहते हैं गुरुके विश्वासी एक व्यक्ति इस सम्प्रदायके प्रतिष्ठाता हैं। वह व्यक्ति गुरुके नामसे

दो तीनके सिवा और सबको ही गुरुगोविन्दने अपनी शिष्यश्रेणीसे निकाल दिया।

६ म। "टाङ्ग्रन्थहा",—मेहता जातीय दूसरी नीच श्रेणीके कुछ मनुष्योंने दूसरा धर्म्म ग्रहणकर यह नाम पायाहै। (इस पुस्तकके १५१वें पृष्ठकी चिह्नित टीका देखना चाहिये।)

१० म। "रामदासी", अर्थात् राव या रायदासी,—"चमार" या चर्म्मविन्यासकारी श्रेणीके कुछ सिख, रामदासी सम्प्रदाय-की अन्तर्गत हैं। वह लोग रामदास या रामदासके वंशधरके नाम-से अपना परिचय देते हैं। ग्रन्थमें इन रामदासकी रचनाने स्थान पाया है।

११ म। "मजहबी,"—मुसलमान धर्म्मको छोड़ जिन्होंने धर्म्मान्तर ग्रहण किया है, उनका सम्प्रदाय,—"मजहबी" के नामसे परिचित है।

१२ म। "अकाली",—"अकाल" (या ईश्वरका) उपासक सम्प्रदाय। धर्म्मात्मा या संन्यासियोंमें यह सम्प्रदाय ही श्रेष्ठ-तम है।

१३। "निहङ्ग",—नग्न या पवित्र।

१४ म। "निर्म्मात्य",—यह निर्म्मात्य उपाधिधारी मनुष्य ही साधारणतः दूसरे मनुष्यको "पहाल" या दीक्षामन्त्र प्रदान करते हैं।

१५ म। "ज्ञानी",—पुण्यात्मा या विशुद्धात्मा। जो सुप-ण्डित और धार्म्मिक हैं, उन सिखोंका सम्प्रदाय,—इस नामसे अभिहित है।

१६। "सुथरासाही",—सत्य या पवित्र; सुचा नामक एक

रणजित्‌सिंहकी ओरसे राजदूतके रूपमें सर्दार फतेहसिंहने उप-स्थित हो, इस सन्धिको स्वाक्षरित और विधिबद्ध किया ,—

१ म शर्त। सर्दार रणजित् सिंह और सर्दार फतेहसिंह अहलूवालिया दोनो ही इस शर्तको राय मञ्जूर करते हैं, कि जिससे यशवन्त राव होलकर अपनी सैन्यके साथ निःसन्देह और अमृतसरसे तीस कोस दूरवर्त्ती किसी स्थानमें जानेपर बाध्य हो, दोनो ही सर्दार इसका उपाय विधान करेंगे। इसके बाद होल-करके साथ उनका कोई सम्बन्ध न रहेगा, सैन्य द्वारा या दूसरे किसी प्रकारसे वह होलकरको किसी तरहकी सहायता कर न सकेंगे। सर्दार रणजित्‌सिंह और सर्दार फतेहसिंह अहलूवा-लिया इस शर्तपर और भी प्रतिज्ञाबद्ध होते हैं, कि यशवन्त राव होलकरकी जितनी फौजें निरापद दक्षिणापथकी ओर अपने देशमें लौटेंगी, महाराज या सर्दार फतेहसिंह कोई उनको किसी तरह विपर्य्यस्त न करेंगे: अधिकन्तु उनका यह अभिप्राय जिस तरह काममें परिणत हो, उसके साधनके लिये वह होल-करके सिपाहियोंको यथासाध्य सहायता करेंगे।

२य शर्त। इस शर्तके मतसे ठीक हुआ, कि यदि ब्रिटिश-गवर्मेण्ट और यशवन्त राव होलकरमें आपसमें सन्धि और शान्ति स्थापित न हो, तो यशवन्त राव होलकरके सैन्यदलके अमृतसरसे तीस कोस दूरवर्त्ती स्थानमें पहुंचते ही, वर्त्तमान छावनी तोड़ ब्रिटिश-सैन्यदल विपाशा-नदी किनारे शिविर सन्निवेश करे-गी। इसके बाद ब्रिटिश-गवर्मेण्टके साथ यदि यशवन्त राव होलकर कोई सन्धि स्थापन करें तो उस सन्धिक्रमसे निर्द्धारित होगा, कि उस सन्धिके निष्पन्न होनेके कुछ ही दिनो बाद, ब्रि-

नियुक्त रह अध्यवसायके साथ पूजोपहार संग्रह करते थे। इस कामनें नियुक्त रहनेके समय वह व्यक्ति अपनी पगड़ीमें मोरका पर खोंसते थे। दूसरे एक सम्प्रदायका नाम,—"सुतरहे" (या सुथरे या क्लार्क या लेखक सम्प्रदाय) है। जिन्होंने धर्मके अनुशासनरूपमें नानकका "जप ग्रहण किया था, मुसल-मान धर्म्मावलम्बी उन सब शिष्योंके सम्मिलनसे यह सम्प्रदाय संगठित है। कहते हैं, सिन्धुनदके पूर्वतीरवर्ती प्रदेश समूहमें "सुतरहे" का निर्दिष्ट वासस्थान मौजूद है।

सप्तम परिशिष्ट।

लाहोर-गवर्मेण्टके साथ सन् १८०६ ई०की सन्धि।

(सर्दार रणजित्‌सिंह और सर्दार फतेहसिंहके साथ अन-रेबल ईष्ट-इण्डिया-कम्पनीकी, बन्धुत्वव्यञ्जक और एकतामूलक सन्धि। (सन् १८०६ ई०की १ली जनवरी।)

सर्दार रणजित्‌सिंह और सर्दार फतेहसिंह दोनो होके निम्न-लिखित सन्धिकी शर्त्तपर सम्मत होनेसे गवर्नर-जनरल अनरबल मार्क्विस विलाटो वालों, वाट महोदय द्वारा पूरी क्षमता पा, राइट अनरबल लार्ड लेकके विशेष आदेशमतसे, कम्पनीकी ओरसे लफटण्ट कर्नल जनमेलकम, सर्दार फतेहसिंह स्वयं और

अष्टम परिशिष्ट।

सर डेवीड अकरलनी प्रचारित सन् १८०९ ई०का घोषणापत्र।

१२२३ हिजरी अव्दकी २३वीं :जीहिजे या सन् १८०९ ई० को ९वीं फरवरीका लिखित, जनरल सेण्ट लेजरका मुहर किया हुआ और करनल सर डेविड अकरलनीका दस्तखत और मुहर किया घोषणापत्र या "इस्तहानामा"।

महाराज रणजित् सिंहके अधिकृत राज्यके सीमान्तमें ब्रटिश फौजके छावनी सन्निवेश करनेपर, इस अनुष्ठानके लिये महाराजको ब्रटिश-गवरमेण्टका उद्देश्य प्रकट करना जरूरी है। इस उद्देश्यसे ही यह घोषणापत्र प्रचारित हुआ है। इस घोषणाके प्रचारसे महाराजके सामन्तवृन्दको ब्रटिश-गवरमेण्ट अपना मनोभाव मालूम कराना चाहती है, कि महाराजके साथ मित्रता-बन्धन दृढ़ करना ही ब्रटिश-गवरमेण्टका प्रधान और एकमात्र उद्देश्य है। इस उपायके लिये ब्रटिश-गवरमेण्टका दूसरा संकल्प भी है, कि जिससे महाराजके अधिकृत राज्यका किसी तरह अनिष्ट न हो। जिन जिन शर्तों से दोनो गवरमेण्टमें बन्धुत्व हमेशा वर्त्तमान रहेगा और दोनो गवरमेण्टके मित्रतास्थापनमें जो जो शर्त्तें अधीन है, नीचे वह शर्त्तें दी जाती हैं;—

शतद्रु नदीके पूर्व्व किनारेवाले खार, खांदुर और अन्यान्य स्थानोंके दुर्गके भीतरवाले जो ... महाराजके अधीनस्थ

व्यक्तिवृन्दके हाथ समर्पित हुए हैं, बहुत जल्द वह सब थाने जड़से उखाड़ जावेंगे और वह सब स्थान उनके पूर्व्वतन स्वत्वाधिकारियोंके हाथ समर्पित होंगे।

शतद्रु पारकर पूर्व्व किनारे यदि कोई घुड़चढ़ी और पैदल फ़ौज आकर रहेगी, तो जल्द उन सब फ़ौजोंको महाराजके राज्यमें लौट जानेका आदेश दिया जायेगा।

जितनी फ़ौजें फ़िलोरके अन्तर्गत घाट आगुखियानें छावनी छावे हुई हैं, वह सब फ़ौजें बहुत जल्द वहांसे शतद्रुके पश्चिम किनारे जायेंगी। शतद्रुके पूर्व्ववर्त्ती जिन सब सामन्तोंने अपने अपने अधिकृत थानासमूहके निरापदके लिये वृटिश-गवरमेण्टका आश्रय ग्रहण किया है, भविष्यतमें महाराजके सिपाही कभी उन सब सामन्तोंके अधिकृत राज्यमें प्रवेश कर न सकेंगे; या महाराज उन सब राज्योंपर कभी आक्रमण करनेके प्रयासी न होंगे; जिस नियमके अनुसार वृटिश-गवरमेण्टने शतद्रुके पूर्व्व किनारे थोड़े "थाना" संस्थापित किये हैं, उस नियमके अनुसार, थानेके हिसावसे, फ़िलोरके घाटमें यदि कभी कोई सैनानिवास स्थापित हो, तो वृटिश-गवरमेण्ट उसपर भी आपत्ति करेगी।

मिष्टर मेटकाफ़के सामने महाराज बारबार यदि इसीतरह अनुरागके साथ उपरोक्त शर्त्तके मतसे काम करनेकी चेष्टा करेंगे, तो दोनों गवरमेण्टमें आपसमें बन्धुत्व कायम रहेगा। महाराज यदि उपरोक्त शर्त्तके अनुसार कार्य्यानुष्ठानमें सम्मत हों, तो साफ़ जाहिर होगा, कि वृटिश गवरमेण्टका मित्रताबन्धन महाराज ग्राह्य नहीं करते, अधिकन्तु वह वृटिश-गवरमेण्टके शत्रुतापथमें सवसंकल्प है। ऐसे चेतसे विजयी वृटिश-सैन्य आत्म-

रक्षाके लिये सब प्रकारकी उपाय अवलम्बन करनेमें यत्नवान होगी।

अङ्गरेजोंके मनोभावका प्रकट करना ही इस घोषणाके प्रचा-रका प्रधान और एकमात्र उद्देश्य है। फिर महाराजके अभि-प्रायसे अवगत होना भी इसका दूसरा सङ्कल्प है। ब्रटिश-गवरमेराटका यह अविचलित विश्वास है, कि महाराज विचारकर देखें,—इस घोषणाकी लिखी सब बातें असलमें महाराजको सुविधाजनक हैं; इससे महाराजका बड़ा मङ्गल साधित होगा,—महाराज ऐसा ही समझें। इस घोषणाके प्रचारसे महा-राजके मनमें ऐसा विश्वास होना चाहिये, कि महाराजके साथ ब्रटिशगवरमेराटका अकृत्रिम बन्धुत्व है। युद्धकी उपयोगी सब प्रकारकी क्षमताके प्रचुर परिमाणसे रहनेपर भी, ब्रटिशगवर-मेराट सन्धि और मित्रता चाहती है, ऐसी बात सोचनेमें भी महाराज कुण्ठित न होंगे,—ब्रटिशगवरमेराटका ऐसा ही विश्वास है।

टीका—इस घोषणापत्रका एक अनुवाद गवरमेराटके पास है, लेकिन उसमें बहुत जगह छन्द-वैषम्य दिखाई देता है।

नवम परिशिष्ट।

लाहोरके साथ सन् १८०८ ई०की सन्धि।

वृटिश गवर्नमेण्टके साथ लाहोर-राजकी सन्धि।

(तारीख २७वीं अप्रेल सन् १८०९ ई०की)

इससे पहले लाहोरके राजाके साथ कई बातोंमें वृटिश-गवर्नमेण्टका मनोमालिन्य हुआ था; सौभाग्यवशसे यह सब विरोधी बातें निर्विवाद मिट गई हैं। इस समय दोनो ही पक्ष आपसकी प्रकृतिसम्बन्ध वन और शान्ति स्थापनके लिये उद्विग्न हो उठे हैं। इन सब कारणोंसे निम्न लिखित सन्धिकी शर्त्ते लिपिबद्ध हुई, दोनो पक्षके उत्तराधिकारी और स्थलाभिषिक्तगण इस सन्धिके शर्त्तपर बाध्य रहेंगे। स्वयं महाराज रणजित्सिंह और ब्रिटिश-गवर्नमेण्टकी ओरके प्रतिनिधि मिष्टर सी, टी, मेटकाफ द्वारा यह सन्धि सपन्न हुई।

१ म शर्त्त। वृटिश गवर्नमेण्ट और लाहोर-गवर्नमेण्ट आपसमें हमेशा बन्धुत्व-सूत्रसे आबद्ध रहेगी, वृटिश-गवर्नमेण्टको बराबरीमें लाहोर-गवर्नमेण्ट एक बहुत श्रेष्ठ क्षमताशाली समझी जायेगी। शतद्रु नदीके उत्तरस्थ राज्य या वहांकी प्रजाके साथ वृटिश-गवर्नमेण्टका कोई सम्बन्ध न रहेगा।

२ य शर्त्त। शतद्रुके पूर्व्व किनारे महाराजके जितने राज्य हैं, उसके भीतरी कार्य्य-कलापके निर्व्वाहके लिये उसको उपयुक्त

फौजके सिवा, महाराज उन सब राज्योंमें अतिरिक्त सैन्य रख न सकेंगे। महाराजके उन सब राज्योंके पास दूसरे सामन्तोंके जो राज्य हैं, महाराज अन्यायरूपसे उन राज्योंपर आक्रमण कर न सकेंगे; या सब सामन्त भी महाराजके राज्यमें कभी अनधिकार प्रवेश कर न सकेंगे।

३ य शर्त्त। पहले लिखी शर्त्तोंके किसी तरह खिलाफ होनेपर, उन सब शर्त्तोंका कोई नियम तोड़नेपर या मित्रताके किसी नियमसे खिलाफ होनेपर, यह सन्धि बातिल गिनी जायगी।

४ र्थ शर्त्त। इस सन्धिमें चार शर्त्तें हैं। सन् १८०६ ई०की २५वीं अप्रेलको इन चार शर्त्तोंसे मिली हुई सन्धि ठीक हुई; मिष्टर मेटकाफकी दस्तखती और मुहरयुक्त, फारसी और अङ्ग-रेजी भाषामें लिखी, इस सन्धिकी प्रतिलिपि लाहोरराजके हाथ दी गई। अपना दस्तखत और मुहरकर राजाने भी इस सन्धिकी एक प्रतिलिपि मिष्टर मेटकाफको प्रदान की। इसके बाद काउन्सिलकी आज्ञासे राइट अनरबल गवरनर जनरलकी अनुमति और एक प्रतिलिपि दो महीनेमें महाराजको देनेके लिये मिष्टर सी० टी० मेटकाफ प्रतिज्ञाबद्ध हुए हैं। लाहोरराज उस प्रतिलिपिके पानेपर इस सन्धिको दृढ़ समझेंगे। तब दोनों ही पक्ष इस सन्धिकी शर्त्तपर बाध्य रहेंगे; महाराजको जिस समय वह प्रतिलिपि दी गई, उस प्रतिलिपिके पानेपर महाराज वह नकल वापस देंगे।

दशम परिशिष्ट।

शतद्रु के पूर्व्व किनारेवाले राज्यसमूहके विरुद्ध जो आश्रय प्रदान किया गया, उसका घोषणापत्र।

(सन् १८०९ ई०।)

शतद्रु के पूर्व्व किनारेवाले मालवा और सर-हिन्दके सामन्तोंके पास जो "इत्तला-नामा" भेजा गया, उसका अनु-वाद यहां दिया जाता है।

(सन् १८०९ ई०की ३री मई।)

शतद्रु के पूर्व्व किनारेवाले कुछ सामन्तोंके आवेदनके अनुसार और उनकी ऐकान्तिक प्रार्थनासे शतद्रु नदीके पूर्व्व किनारेको और एकदल ब्रिटिश फौज भेजी गई थी। यह सच है, कि उन सामन्तोंने अपने अपने राज्यके प्रतिष्ठित रखने और इस उद्देश्यसे, जिसमें उनकी स्वाधीनता नष्ट न हो, बन्धुत्वके नियमानुसार ब्रिटिश-गवरमेण्टने यह अनुष्ठान किया था। सूर्य्योदयकी अपेक्षा भी यह ध्रुव सच और गतकालकी स्थायीत्वकी अपेक्षा भी यह अधिकतर सुस्पष्टरूपसे प्रतिपन्न हुआ है। गवरनर जनरल और उनकी काउन्सिलके आदेशक्रमसे सन् १८०९ ई० २५वीं अपरेलको मिष्टर मेटकाफके प्रतिनिधित्वमें, ब्रिटिश गवर्नमेण्टके साथ महाराज रणजित् सिंहकी एक सन्धि स्थापित हुई

है यहाँ हम मालवा और सरहिन्दके सामन्तोंके सन्तोषके लिये ब्रटिश-गवरमेण्टका अभिप्राय और मन्तव्य प्रकट करते हैं ; उनमें निम्नलिखित सात शर्ते दिखाई जायेंगी।

१म शर्त। मालवा और सरहिन्दके सामन्तोंका राज्य इस समय अङ्गरेजोंके आश्रयाधीन है। भविष्यत्में महाराणका प्रभुत्व-प्रभाव और आधिपत्य इन सब देशोंमें फैलने न पावे, इसी सन्धिकी शर्तके अनुसार ब्रटिश गवरमेण्ट उसके निवारणके लिये चेष्टा करेगी।

२य शर्त। सामन्तोंने जिन सब राज्यको ब्रटिश-गवरमेण्टकी रक्षामें अर्पण किया है, ब्रटिश गवरमेण्ट उन सब राज्यसे राजस्वस्वरूप कोई अर्थ न लेगी।

३य शर्त। अङ्गरेजोंके आश्रयाधीन होनेसे पहले, सामन्त लोग अपने अपने राज्यमें जैसा हक उपभोग करते थे, और जैसे प्रभुत्वके क्षमताकी परिचालना करते थे, अब भी वह लोग उस हक और प्रभुत्वकी क्षमताके पूरे अधिकारी रहेंगे। ब्रटिश-गवरमेण्ट उनकी उस स्वाधीनतामें कभी हस्तक्षेप न करेगी।

४र्थ शर्त। लोगोंके मङ्गलविधानार्थ यदि कभी कोई ब्रटिश सैन्य पूर्व्वोक्त सामन्तोंके राज्यके भीतरसे जावे, तो हरेक सामन्त अपने अपने अधिकृत राज्यमें उस सैन्यदलको यथासाध्य सहाय्य दें। यदि वह सैन्यदल उनसे रसद या दूसरी कोई चलती चीज पानेकी प्रार्थना करे तो सामन्त लोग उस सैन्यदलका प्रसाद पूरण करनेपर बाध्य होंगे। सामन्तोंको याद रखना चाहिये, कि यह उनका कर्तव्य कार्य उनके लिये बड़ा अनिवार्य है।

५म शर्त। यदि किसी औरने कोई दल या ब्रटिश आश्रा-

च्यपर आक्रमण करे, तो बन्धुत्वके परिचयस्वरूप और आप-सकी स्वार्थनीतिके अनुसार, हरेक सामन्त अपनी अपनी सैन्यके साथ ब्रिटिश सैन्यसे योगदान करें। वह लोग जब शत्रुको विताड़ित करनेके लिये अशेष चेष्टा करेंगे, तो उनको सुनियम और कायदेके अनुसार आनुगत्यके वशवर्त्ती होना पड़ेगा।

६ष्ठ शर्त्त। पूर्व्व देशीय स्थानसमूहसे सैन्यदलके व्यवहारके लिये जितनी युरोपीय चीजें मंगाई जायेंगी, उनको किसी तरहका नुकसान न पहुंचा, या किसी प्रकारका कर न ले, सामन्तोंके थानादार और महीदार लोग बेरोक यह चीजें छोड़ देंगे।

७म शर्त्त। घुड़चढ़े सैन्यदलके व्यवहारके लिये सरहिन्द या दूसरे किसी स्थानमें जितने घोड़े खरीदे जायेंगे, उन घोड़ोंको लानेवालोंके पास दिल्लीके रेसिडण्ट या सरहिन्दके प्रधान कर्म्मचारीका मुहर किया 'राहदारी' रहनेपर, उपरोक्त सामन्त-गण, अपने राज्यमें, उन मनुष्योंको किसी तरहकी बाधा दे न सकेंगे, उनके प्रति सब तरहके अत्याचार उत्पीड़नसे विरत रहेंगे और सामन्त लोग उनसे किसी तरहका वाणिज्य कर ले न सकेंगे।

एकादश परिशिष्ट।

शतद्रुके पूर्व्व किनारेवाले राज्यसमूहको आपसके विरोधमें साहाय्य देनेका घोषणा पत्र।

(सन् १८११ ई०।)

शतद्रु और यमुनाके मध्यवर्त्ती समतल भूमिके आश्रित सामन्तोंकी अवगति और निश्चयताके लिये।

(२२वीं अगस्त, सन् १८११ ई०।)

विगत ३री मईको ब्रटिश-गवरमेण्टके आदेशके अनुसार, गत १८०९ ई०को सात शर्त्तोंका एक "इत्तला नामा" प्रचारित हुआ है। उसमें लिखा है, कि सन् १८०९ ई०की २५वीं अप-रेलको सन्धिके शर्त्तके अनुसार मालवा और सरहिन्दके सामन्तोंका सब राज्य, अङ्गरेजोंके आश्रयाधीनमें स्थापित होनेसे, उपरोक्त सामन्तोंके राज्यके साथ राजा रणजित् सिंहका कोई सम्बन्ध नहीं है। "बखशिश" या "नजराना" दावा करना, ब्रटिश गवरमेण्टका उद्देश्य नहीं है; इसलिये वह सब सामन्त अपने अपने राज्यमें पहलेवाला अधिकार-हक उपभोग करेंगे और वह सब राज्य सामन्तोंके पूरे शासनाधीन रहेंगे। सर्दारोंके चित्तमें इस तर-हका एतबार पैदा करना उपरोक्त इत्तलानामेके प्रचारका उ-द्देश्य है। ब्रटिश-गवरमेण्टका और भी उद्देश्य है,—उनसे राज्यकी रक्षा करना। उन सब राज्योंमें शान्ति-संस्थापनके

वृटिश-गवरमेण्टकी इच्छा नहीं है। इसके लिये भी वृ० गवरमेण्ट इस समय अनुप्राणित हुई है, जिसमें सामन्त लोग अपने अपने राज्यमें सुख-स्वच्छन्दसे पहलेकासा अधिकार और प्रभुत्वको चमता बना रख शासनदण्ड परिचालित करनेमें समर्थ हों।

इस समय कुछ जमीन्दार और इस प्रदेशके सामन्तोंकी प्रजाने वृटिश-गवरमेण्टके कर्म्मचारियोंके पास अभियोग उपस्थित किया है। उन सब सामन्तोंने उपरोक्त "इत्तलानामा" के—अर्थसे अवगत होकर भी उसके मुताबिक काम किया नहीं है; इसकी भी कोई सम्भावना दिखाई नहीं देती, कि भविष्यत्में वह लोग उसके प्रति कार्य्यतः ध्यान देंगे। दृष्टान्तस्वरूप कई एक अभियोगोंका विषय यहां उद्धृत किया जाता है;— (१) सन् १८१७ ई०को १५वीं जूनको सीमान्तके दिवान अलीखां के कुछ जवाहरात और दूसरी अस्थावर सम्पत्तिके जोरजबरदस्तीसे अपहरण करनेके अपराधमें, राजा साहबने सिंघेरने कुछ कर्म्म-चारियोंके विरुद्ध दिल्लीके रेसिडण्टके पास एक अभियोग उप-स्थित किया है। उत्तरमें दिवान अलीखांसे प्रकट किया गया है, कि सीमान्तका कसबा; राजा साहब सिंघरेकी अमलदारीके अन्तर्भुक्त होनेके कारण इस बारेमें वृटिश गवरमेण्ट किसी तरहका हस्तक्षेप कर नहीं सकती; सुतरां दिवान अलीखांने राजा साहबसिंघरेपर अभियोग उपस्थित किया। (२). कुछ सम्पत्तिके हक शामिलपर सर्दार सूरतसिंहके साथ यशोदासिंह और गुरुमुखसिंहका घोरतर विवाद उपस्थित हुआ है। पीछे १८११ ई०के १२वीं जुलाईको गवरनर जनरलके एजण्ट सर डेविड

अक्टरलनीके पास यशोदासिंह और गुरुमुखसिंहने उन सब सम्पत्तियोंके अंशके लिये सर्द्दार सूरतसिंहके नाम एक अभियोग उपस्थित किया। इस अभियोगके जवाबमें अर्जीके पृष्ठपर लिखा गया,—सूरतसिंहके किसी भाईने इस तीन सालके भीतर किसी सम्पत्तिके लिये सूरतसिंहके नाम अभियोग उपस्थित नहीं किया; या तवतक किसी सरदारका नामतक लिखा नहीं गया। इससे पहले सर्द्दारोंको जो "इत्तलानामा' दिया गया है, उसमे जाहिर हुआ है, कि हरेक सर्द्दार शान्तभावसे रहें और उनकी अपनी अपनी सम्पत्तिमें पहले जो स्वत्वाधिकार था, इस समय भी वही फिर मौजूद रहेगा। इन सब कारणोंसे उनका आवेदनपत्र लिया न जायेगा। अभियोगके इस जवाबसे मानो लोगोंको एक दृष्टान्त दिखानेकी चेष्टा की गई थी; हरेक जमीन्दार और प्रजावर्गके हृदयमें भी इस आदर्शके अङ्कित करनेकी चेष्टा की गई थी, कि हरेक मनुष्य ही अपने अपने सामन्तोंसे सुविचार पानेकी आशा करें; कभी जरा भी अधीनताके तोड़नेकी चेष्टा न करें। इस समय शतद्रुके पूर्व्वतीरवर्त्ती अन्यान्य सर्द्दार और राजोंका यही कर्त्तव्य है, कि वह लोग आपसमें अपने प्रजावर्गको यह बात समझा, उनके विश्वासभाजन हों। जिससे उनके प्रजावर्ग समझ सकें, कि ब्रिटिश-गवर्नमेण्टके सन्निध रियोंके पास अभियोग उपस्थित करनेका कोई पथ नहीं है आमदने [illegible] जाती है; जिनमें सर्द्दारोंको स्वाधीन इच्छा और सम्मिलित [illegible] अनुसार सब प्रजागण समझाइये उनकी आज्ञाका पालन करें।

पहले घोषणापत्रके अनुसार, इस प्रदेशके सर्द्दारोंके अधि-

सिंधके साथ आनरबल ईष्ट-इण्डिया कम्पनीकी अकपट और स्थायी मित्रता और चिरबन्धुत्व-बन्धन विद्यमान है। मिष्टर टी० सी० मेटकाफ, बार्टने महाराजके साथ पहले जो सन्धि ठीक की थी, इस मित्रता और बन्धुत्वका बन्धन उसीकी जड़पर प्रतिष्ठित हुआ है। इटिश इण्डियाके गवरनर जनरल राइट आनरेबल लार्ड, एवल, जी, बेण्टिङ्क पी, सी, जी, और जी, सी, एल, महोदय भी रूपारके सम्मिलनसे अकपट बन्धुत्वकी निदर्

राज्यके कर्म्मचारीगण अपने अपने कर्त्तव्य पालनमें नियुक्त हुए, वह सब शर्त्तें और नियमप्रणालियां निम्नलिखित मतसे निर्द्धारित हुईं ;—

१म शर्त्त। शतद्रु नदीके पश्चिम किनारेके सम्बन्धमें यहांकी सन्धिका सब बन्दोबस्त और सब शर्त्तें और पहलेके लिखे सन्धिपत्रके अन्तर्गत सब शर्त्तोंकी व्यवस्थापर दोनों पक्षोंको बाध्य रहना पड़ेगा। जिससे दोनों गवरमेण्टमें बन्धुत्वका बन्धन कायम रहे, दोनो गवरमेण्ट ही उसके अनुगामी काम करेंगी—उनकी शासनप्रणालीका यही एक मात्र उद्देश्य होगा। उस सन्धिकी शर्त्तके अनुसार शतद्रु नदीके पश्चिम किनारेके महाराजके राज्यके साथ आनरेबल ईष्ट इण्डिया कम्पनीका कोई सम्बन्ध अब न रहेगा।

२य शर्त्त। इन वाणिज्य-बोटके चलानेकी राहके बारेमें जो निर्द्दिष्ट कर या महसूलका सूचीपत्र तय्यार होगा, वह सूचीपत्र एकमात्र उस राहसे पराये द्रव्यके बारेमें ही नियोजित होगा, नदीके एक किनारेसे दूसरे किनारे पण्यद्रव्यके चालानके लिये जो निर्द्दिष्ट कर ठीक है, उसके बारेमें इस सूचीपत्रका कोई सम्बन्ध न रहेगा, उस करके दाखिल करनेमें उससे कोई बाधा न होगी; या जिन सब स्थानोंसे महसूलका कर संगृहीत होता है, उनमें वर्त्तमान करके सूचीपत्रका कोई ताल्लुक न रहेगा। यह सब व्यवस्थायें पहलेकी तरह कायम रहेंगी।

३य शर्त्त। इस राहसे जो सौदागर हमेशा आते जाते रहेंगे, महाराजकी गवरमेण्टकी सीमाके भीतर [illegible] समय प्रचलित रीतिके अनुसार उन्हें सरकारकी [illegible] प्रति यथा-

योग्य सम्मान दिखाना पड़ेगा, सिखोंके सामाजिक या धर्म्मसम्बन्धीय विधि-व्यवस्थाके प्रति वह किसीतरह असम्मान प्रकाशित कर न सकेंगे; या उनके द्वारा सिख जातिका अप्रीतिकर कोई काम अनुष्ठित न होगा।

४र्थ शर्त्त। जो उपरोक्त वाणिज्यकी राहसे आनेजानेकी इच्छा करेंगे, उन्हें दोनो राज्यके एजण्ट या प्रतिनिधिसे अपना अभिप्राय पहले जाहिर करना पड़ेगा; इसके बाद जो रीति प्रणाली या "कार्य्य" विधिबद्ध होगा, उसके अनुसार उस मनुष्यको आनेजानेके लिये "दस्तक" या "पास"की तरह पहले उसे आवेदन करना पड़ेगा; उस "दस्तक" या पासके पानेपर, वह मनुष्य उपरोक्त राहपर आगे बढ़ सकेगा। शतद्रु नदीके पश्चिम किनारेके किसी स्थान या अन्तस्तलसे, यदि कोई सौदागर उस राहसे आनेजानेकी इच्छा करे, तो हिरकी या दूसरे किसी निर्दिष्ट स्थानमें नियोजित सरकारके एजण्ट या प्रतिनिधिसे अपना उद्देश्य प्रकटकर, उस प्रतिनिधिकी मध्यवर्त्तितामें पहले उस सौदागरको "दस्तक" या पास लेना पड़ेगा। वैदेशिक, हिन्दुस्थानी, आश्रित राज्य और अन्यान्य स्थानोंके सिख, सभी अबतक महाराजके कर्म्मचारियोंसे बिना "दस्तक" या पास लिये शतद्रु नदी पार करते थे। आशा की जाती है, कि अबसे वह सब मनुष्य इस शर्त्तके नियमपर बाध्य होंगे; और कायदेके अनुसार दस्तक या पासके बिना शतद्रु नदी पार न करेंगे।

५म शर्त्त। किसी पण्य द्रव्यपर किस हारमें कर रखना जरूरी है, उसके लिये एक कर या महसूलका सूचीपत्र तय्यार करना पड़ेगा, उसमें तरह तरहके पण्य द्रव्योंका निर्दिष्ट कर

निर्द्धारित होगा। इसके बाद दोनों गवर्मेण्टके उस सूची-पत्रका अनुमोदन करनेपर, वही आदर्श स्वरूप गिना जायगा, वाणिज्य-करके तत्त्वावधायकगण और संग्रहकारी सभी इस नियमसे काम करेंगे; उसके अनुसार ही वह लोग चलाये जायेंगे।

६ष्ठ शर्त्त। इस समय वाणिज्य-व्यवसायियोंको इस नये वाणिज्यकी राहके अवलम्बन करनेके लिये बुलाया जाता है; वह लोग अकपट विश्वाससे निःसन्देह इस वाणिज्यकी राहसे आयें जायें। कोई उन्हें तकलीफ न देगा, या अनर्थक उनकी राह रोकनेमें समर्थ न होगा। तब भी निर्द्दिष्ट नियमके अनुसार प्रतिष्ठित स्टेशन या कर संग्रह करनेके कार्य्यस्थानमें, वाणिज्य-कर अदा करनेके लिये सब तरहकी स्वतन्त्रता अवलम्बित होगी, जिससे यथारूप निर्द्धारित समयपर अतिरिक्त कालतक आवद्ध न रहें।

७म शर्त्त। वाणिज्य करके संग्रहके लिये और पण्यद्रव्यकी यथानियम परीक्षा करनेके लिये सब कर्म्मचारी कार्य्यभार ग्रहण करेंगे, उन्हें शतद्रुके पश्चिम किनारेके मिथनकोट और हरिकेमें रहना पड़ेगा; उपरोक्त दो स्थानोंके सिवा, दूसरे किसी स्थानमें, नदी गर्भस्थित वाणिज्य बोट बांधे नहीं जायेंगे, या उनका पण्यद्रव्य परीक्षित हो न सकेगा। माल लादने या उतारनेके लिये यदि बोट चलानेवाले या प्रकृत मालके स्वामी भार पाये हुए मनुष्य, अपनी इच्छासे यदि किसी स्थानमें बोट रोकना चाहें, तो इस सन्धिपत्रकी दूसरी शर्त्तके अनुसार पण्यद्रव्य उतारनेसे पहले स्थानीय [illegible] इसके सहायतको सरकेण्टको [illegible] देना पड़ेगा। मिथनकोटमें या हरिकेघाट या

दृढ़वद्ध हो गया था। सन् १८३२ ई०की २६वीं दिसम्बरको लाहोर में जो सन्धि हुई थी, उसकी ५वीं शर्त्तके अनुसार उस समय निर्द्धारित हुआ, कि दोनो गवरनमेण्ट आपसमें एकमत हो, सिन्धुनद और शतद्रु नदीके उत्तर और दक्षिण ओर जो सब वाणिज्य-बोट आतेजाते हैं, उन सब वाणिज्य-बोटके पण्य-द्रव्यपर निर्द्दिष्ट कर और नियमितरूपसे कर संस्थापन करेंगे। इस समय दोनो गवरमेण्ट इस सिद्धान्तमें उपनीत हुई हैं, कि वाणिज्य-व्यापार में और ऐसे बन्दोबस्तसे भारतीय लोग बिलकुल अनजान है। मूल्य-परिमाणके अनुसार पराये द्रव्यपर महसूल लगानेसे जो नियम उस समय प्रवर्त्तित हुए थे, उन नियमोंसे आजतक काम निर्व्वाहित होनेसे, लोगोंकी उसी अज्ञताके कारण दोनो पक्षमें आपसमें मनोमालिन्य होने हीकी सम्भावना अधिक है, इससे अनेक स्थलोंमें विस्तर क्षतिपूरण करनेकी जरूरत आ पड़ेगी ; इन सब विषमय परिणामोंके प्रतिकारार्थ, लाहोर-गवरमेण्ट और वृटिश-गवरमेण्ट दोनों होंने पहले नियमके बदले एक "टोल" या निर्द्दिष्ट हिसाबसे महसूल स्थापन करनेका अभिप्राय किया है, सौदागरी नावमें चाहे जिस प्रकारका पण्य लादा जाय, वह कर, सब प्रकारकी सौदागरी नावसे वसूल किया जावेगा। सुतरां पहले सन्धिपत्रके अतिरिक्त सन्धिके स्वरूपमें निम्नलिखित शर्त्त रखी गई, इस सन्धिसे दोनो गवरमेण्ट यह मञ्जूर करती हैं, कि सन्धिके अनुसार निर्दिष्ट दरमें वही निर्दिष्ट "टोल" या सौदागरी-महसूल निर्द्धारित होगा, आपसकी सम्मतिके सिवा, कोई गवरमेण्ट उसका परिमाण बढ़ा व घटा न सकेंगी।

१म शर्त्त। सिन्धुनद और शतद्रु नदीसे समुद्र और रोपर-में पण्यजातके आदमीके जितने बोट या नावें आयें जायेंगी, उनके आकार या मालके बोझका परिमाण या मूल्यका कोई उल्लेख न कर उन सब बोट और नौकाओंपर ५७०) रुपये "टोल" या सौदागरी महसूल होगा। शतद्रु के उत्तर किनारे भिन्न भिन्न गवरमेण्टके जो स्वतन्त्र राज्य हैं, उन सब राज्यके परिमाणके अनुसार उपरोक्त करके अनुसार उन्हें अपने अपने हिस्सेके मुताबिक विभाग कर दिया जायेगा।

द्वितीय शर्त्त। शतद्रु के किनारे लाहोरमें महाराजके जितने राज्य हैं, उस राज्यके स्वत्वाधिकारके मुताबिक उपरोक्त महसूलका जो हिस्सा महाराज पायेंगे, वह नीचे लिखे सूचीपत्रके मुताबिक निर्द्धारित हुआ। समुद्रसे रूपरको और मिथनकोटके विपरीत ओर, जितने, सौदागरी बोट आयेंगे, उनके निर्द्धारित महसूलका कुछ अंश महाराज पायेंगे और रूपरसे समुद्रको ओर जो बोट जायेंगे, हिरकी पट्टनके पास उन सब बोटोंपर महाराज कर ले न सकेंगे,—

शतद्रु और सिन्धुनदके पश्चिम किनारे महाराजके जितने राज्य हैं, उनके अधिकारके हकसे महाराज, १५५।॰ एक सौ पचपन रुपये चार आने पायेंगे।

सिन्धुनद और शतद्रु नदीके पूर्व किनारे महाराज्यके जो राज्य हैं उन सब राज्योंके अधिकारके हकसे कारण महाराज-के सौदागरी महसूलका हिस्सा—२९॥८ रुपये पन्द्रह आने नौ पाई मात्र है।

३य शर्त्त। भिन्न भिन्न प्रदेशोंमें सौदागरी महसूलके आदा

उपद्रव हो गया था। सन् १८४६ ई०की ११वीं दिसम्बरको लाहौर
में जो सन्धि हुई थी, उसकी ५वीं धाराके अनुसार यह स्थि
निर्धारित हुआ, कि दोनो गवरन्मेण्ट आपसमें एकमत हो
सिन्धुनद और शतद्रु नदीके उत्तर और दक्षिण ओर जो व
वाणिज्य-घाट कहलाते हैं, उन सब वाणिज्य-घाटके गन्त
स्थानपर निर्दिष्ट कर और नियमितरूपसे कर संस्थापन करेंगे
इस समय दोनों गवरमेण्ट इस सिद्धान्तमें उपनीत हुई हैं, कि
वाणिज्य-व्यापारमें और ऐसे बन्दोबस्तसे भारतीय लोग बिलकुल
अनजान है। मूल्य-परिमाणके अनुसार पदार्थ स्थानपर महसूल
लगानेके जो नियम उस समय प्रवर्तित हुए थे, उन नियमोंसे
आवश्यक काम निर्वाहित होनेसे, लोगोंकी उसी अज्ञताके
कारण दोनो पक्षमें आपसमें मनोमालिन्य होने होनेकी सम्भा-
वना अधिक है; इससे अनेक स्थलोंमें विस्तर प्रतिपूरण करने-
की जरूरत आ पड़ेगी; इन सब विषमय परिणामोंके प्रति-
कारार्थ, लाहौर-गवरमेण्ट और इङ्गलिश-गवरमेण्ट दोनोंने
पहले नियमके बदले एक "टोल" या निर्दिष्ट हिसाबसे मह-
सूल स्थापन करनेका अभिप्राय किया है, सौदागरी मालमें चाहे
जिस प्रकारका पदार्थ लादा जाय, वह कर, सब प्रकारकी सौ-
दागरी मालसे वसूल किया जायेगा। सुतरां पहले सन्धिपत्रके
अतिरिक्त सन्धिके स्वरूपमें निम्नलिखित धारा रखी गई; इस
सन्धिसे दोनो गवरमेण्ट यह मञ्जूर करती हैं, कि सन्धिके अनु-
सार निर्दिष्ट स्थलमें वही निर्दिष्ट "टोल" या सौदागरी-महसूल
निर्धारित होगा; आपसकी सम्मतिके बिना, कोई गवरमेण्ट
उसका परिमाण बढ़ा या घटा न सकेंगी।

हसर या महाराजकी अधिकृत दूसरे किसी स्थानमें सौदागरी करनेकी ख्वाहिश ज़ाहिर करेंगे, उन्हें किसी तरहकी बाधा न होगी या वह किसी तरह उत्पीड़ित किये न जायगे। दूसरी बात, उनकी सौदागरीकी सुविधाके लिये सब जगह आदेश प्रचार किया जायेगा। महाराजकी राज्यसे भी जो रोजगारी अफगानस्थानमें सौदागरी करनेकी इच्छा प्रकाश करेंगे, उनके लिये शाह साम लक्ष्य करेंगे, कि उनके प्रति भी पूर्व्वोक्तरूप सद्व्यवहार किया जाता है या नहीं।

८म शर्त्त। शाह शुजाके मित्रताबन्धनके परिचयस्वरूप महाराज भी उन्हें निम्नलिखित द्रव्यादि भेजेंगे;—(१) ५५ शाल; (२) २५ थान मलमल; (३) ११ दुपट्टा; (४) ५ कमख्वाब; (५) ५ शलाबन्द, (६) ५ पगड़ी, (७) ५५ गाड़ी चावलका बोरा। (यह चावल पेशावर प्रदेशकी बहुत अच्छी सामग्री है।)

९म शर्त्त। महाराजका कोई कर्म्मचारी यदि अफगानस्थानमें घोड़े बेचने जायेगा, या शाह शुजाका यदि कोई आदमी पञ्जाबमें घोड़े या शाल प्रभृति बेचने जायेगा और वह यदि ११ हजार रुपये उस उद्देश्यसे ले जाय, तो महाराज या शाह शुजा दोनों ही आपसमें एक दूसरेके भेजे हुए सौदागरोंकी सुविधा प्रभृतिके प्रति यथायथ दृष्टि रखेंगे; इसके लिये महाराज और शाह शुजा दोनों ही उपायविधान करेंगे, जिससे उनका काम बहुत खूबीके साथ निर्व्वाहित होगा।

१०म शर्त्त। कभी किसी समय उभय राज्यके सैन्यदलके एक स्थानमें एकत्र होनेपर इससे भी सन्धिबन्धन की जायेगी, जिसमें तो इसका होश न जावे।

किनारे जा न सकेगा; सिन्धुनदके सम्बन्धमें भी यह नियम अव्याहत रहेगा; महाराजकी अनुमतिके बिना कोई सिन्धुनद पार कर न सकेगा।

४र्थ शर्त्त। सिन्धुनदके पश्चिम किनारेवाले सिन्धुराज्य और शिकारपुरके सम्बन्धमें जो कुछ न्यायसङ्गत व्यवस्था होगी, कप्तान वेडकी मध्यस्थतामें वृटिश-गवरमेण्ट और महाराज रणजित्‌सिंहके साथ जो पवित्र बन्धुत्व-बन्धन स्थापित हुआ है, उसके अनुसार शाह शुजा सब माननेपर बाध्य होंगे।

५म शर्त्त। काबुल और कन्धारमें शाह शुजाका आधिपत्य प्रतिष्ठित होनेपर, वह सालबसाल महाराज रणजित् सिंहको निम्नलिखित द्रव्यादि देनेपर बाध्य होंगे;—(१) महाराजके अनुमोदित वर्णविशिष्ट और मनोहर गतिसम्पन्न ५५ सुजात घोड़े; (२) ११ फारिस देशीय "शिमिटर" तलवार; (३) ७ फारिस देशीय तीक्ष्णधार तलवार; (४) २५ अच्छे घोड़े; (५) नानाविध उपादेय फलमूल; (६) सरदा या सुस्वादु सुदुगन्धयुक्त तरबूज हर सालके पहलेसे आखीरतक सदा काबुल नदीकी राहसे पेशावरमें भेजा जायेगा; (७) अङ्गूर, अखरोट वेश, किशमिश, बादाम, अनार पिस्ता प्रभृति प्रचुर परिमाण; (८) तरह तरहकी रङ्गकी साटीन; (९) समूरी चुगा; (१०) सुनहरा और रुपहला किमखाब; (११) फारिस देशीय कार्पेट;—कुल १०१ तरहके द्रव्यादि शाह शुजा हर साल महाराजको भेजनेपर बाध्य होंगे।

६ष्ठ शर्त्त। प्रत्येक एक दूसरेको आपसमें बराबर समझेंगे।

७म शर्त्त। अफगानस्थानके जितने सौदागर, लाहोर, अम-

१५श शर्त। अपना उद्देश्य सिद्ध होनेपर शाहशुजा-उल-मुल्क बिना आपत्तिके "नानक शाही" या "कलदार" रुपयेके दो लाख रुपये महाराजको देंगे, शाह शुजाको काबुलके सिंहासनपर फिर प्रतिष्ठित करनेके उद्देश्यसे जिस तारीखको महाराज सिख-सैन्यको काबुल भेजेंगे, उस तारीखसे ही शाह शुजा यह रुपये देनेपर बाध्य होंगे। शाह शुजाके पक्षके समर्थनके लिये महाराज कमसेकम पांच हजार मुसलमान धर्मावलम्बी घुड़चढ़ी और पैदल सैन्यको पेशावर राज्यमें तय्यार रखे रहें। जब महाराजके साथ एकराय हो ब्रिटिश-गवरमेण्ट उस सैन्य दलको, शाहशुजाकी सहायताके लिये भेजना उचित समझेगी, उसी समय यह कुल फौज काबुलकी ओर यात्रा करेगी। पश्चिम प्रदेशमें जब कोई बखेड़ा उपस्थित होगा, तो ब्रिटिश-गवरमेण्टके और सिख गवरमेण्टकी रायसे जरूरी और उपयुक्त समझे जाने पर उस ओर फौज भेजी जायेगी। महाराजको यदि कभी शाहशुजाके सैन्यदलके साहाय्यकी जरूरत पड़ेगी, तो यथासाध्य वह सहायता दी जायेगी, सैन्यदलके खर्चके लिये महाराजके मालरूपमें उसका कुछ अंश बाद जायेगा; जबतक इस सन्धिका शर्त बहाल रहेगा, तबतक महाराज शाहशुजाउल-मुल्कपर नियमितरूपमें ब्रिटिश-गवरमेण्टका भी दावा रहेगा, उनमें परस्पर ठीक सम्बन्ध न मिले।

१६श शर्त। शाहशुजाउल्मुल्क या उनके उत्तराधिकारी या स्थलाभिषिक्त लोग सिन्धु प्रदेशके कछारमें रहते हुए ज़मींदारोंका सब दावा और उस प्रदेशके अधिकारका स्वत्व छोड़ते हैं। यह राज्य इस समय अमीर और उनके वंश-

११श शर्त । शाह शुजा यदि महाराजसे अतिरिक्त सैन्यका सहाय्य लें, तो बारकजयियोंके पाससे जितने द्रव्य,—जहरत घोड़े स्वल्प-विस्तार अस्त्रशस्त्रादि,—लूटा जायेगा, उसे दोनो पक्ष बराबर बांट लेंगे। महाराजके सैन्यदलके बिना सहाय ही यदि शाह शुजा बारकजायियोंके धन-सम्पत्तिपर अधिकार करनेमें समर्थ हों, तो मित्रताके बन्धनके निदर्शनस्वरूप उसका कुछ अंश अपने प्रतिनिधि द्वारा शाह शुजा महाराजके पास भेजेंगे।

१२श शर्त । पत्र और नज़र वगैरह ले एकका दूत दूसरेके राज्यमें सदा आताजाता रहेगा।

१३श शर्त । इस सन्धिकी शर्तके अनुसार यदि महाराजको कभी शाह शुजाके अधीनस्थ सैन्यदलको किसी तरहके साहाय्यकी जरूरत हो, तो एक प्रधान कर्म्मचारीके अधिनायकत्वमें शाह शुजा एकदल सैन्य भेजनेपर बाध्य होंगे; दूसरी ओर महाराज भी उसी तरह शाह शुजाकी जरूरतके मुताबिक इस सन्धिकी शर्तके अनुसार पंचदश मुसलमान सैन्य एक प्रधान कर्म्मचारीके अधिनायकत्वमें काबुल भेजना मञ्जूर करेंगे। महाराज जब पेशावर जायेंगे, तब अभ्यर्थनाके शाहशुजा एक शाहजादा भेजनेपर बाध्य होंगे, उस क्षेत्रमें महाराज भी यथायोग्य सम्मान और समादरके साथ शाहजादेकी अभ्यर्थना करेंगे और विदा करेंगे।

१४श शर्त । ब्रिटिश-गवर्मेण्ट, सिख-गवर्मेण्ट और शाह शुजा-उलमुल्क,—इन तीनोंके शत्रु या मित्र सबको ही शत्रु या मित्र मानेंगे।

प्रान्तोंमें खराबी होने न पायेगी। यहां वर्त्तमान सन्धिके प्रान्तों पर सब ही चिरकाल बाध्य रहेंगे; जिस दिनसे तीनों प्रक्तियां इस सन्धिके पत्रपर दस्तखत और मुहर अङ्कित करेंगी, उस दिनसे ही इस सन्धिके अनुसार काम चलने लगेगा।

सन् १८३८ ई०की २२वीं जून अर्थात् संवत् १८९५ विक्रमाब्द-की १५वीं आषाढ़को लाहोरमें यह सन्धिपत्र सम्पन्न हुआ।

सन् १८३८ ई०की २३वीं जुलाईको शिमला-शैलपर राइट आनरेबल गवरनर जनरल द्वारा यह अनुमोदित और समर्थित हुआ।

(दस्तखत) { अकलाण्ड। रणजित् सिंह। मुजाउलमुल्क।

पञ्चदश परिशिष्ट।

सिन्धुनद और शतद्रु नदके सौदागरी-महसूलका सन् १८३९ ई०का पट्टा।

शतद्रु और सिन्धुनदमें पण्यद्रव्यके आनेजानेके लिये जो महसूल लिया जाता था, उसके बारेमें सन् १८३८ ई०में एक अतिरिक्त सन्धि हुई थी; उस सन्धिकी शर्तोंके बदले लाहोर-गवरनमेण्टके साथ जो पट्टा लिखा गया था, उसका विवरण।

(सन् १८३९ ई०की १९वीं मई।)

इस सब छोटी और बड़ी सब तरहकी सौदागरी नावोंपर एक

धारण करनेके बाद दूसरे भोग दखल करनेके अधिकारी हुए।) उसके बदले ब्रिटिश-गवर्मेण्टकी मध्यस्थतामें अमीर लोग शाह-शुजाको जो रुपये देनेपर बाध्य हुवे हैं, शाहशुजा उसे ही लेने पर राजी रहेंगे। इन रुपयोंमें महाराज रणजित्सिंहको डेढ़ लाख रुपये दिये जायेंगे। रुपयेके देनेसे सन् १८३८ ई० की १२ वीं मार्चको जो सन्धि हुई थी, उस सन्धिकी ४थी शर्त रद होगी महाराज रणजित्सिंह और सिन्धु प्रदेशके अमीरोंमें जो नजर और पत्र वगैरःके भेजने भेजानेकी व्यवस्था है, वह पहलेकी तरह कायम रहेगी।

१७श शर्त। शाहशुजाउलमुल्कके अफगानस्थानमें आधिपत्य फैलानेमें कृतकार्य होनेपर, अपनी गवर्मेण्टके अधीनस्थ, उनके भतीजे हिरातके शासनकर्त्ताके अधिकृत प्रदेश-समूहमें शाहशुजा किसी तरहका आक्रमण या अत्याचार कर न सकेंगे।

१८ शर्त। ब्रिटिश गवर्मेण्ट और सिख गवर्मेण्टकी सम्मति और अभिप्रायके बिना शाहशुजाउलमुल्क स्वयं या उनके उत्तराधिकारी या स्थलाभिषिक्तगण किसी विदेशिक राज्य-के साथ किसी तरहका सम्बन्ध स्थापन करनेकी चेष्टा कर न सकेंगे, यदि कोई अस्त्र-शस्त्रकी सहायसे ब्रिटिश-गवर्मेण्ट या सिख-गवर्मेण्टके राज्यपर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़ेगा तो शाह शुजा यथाशक्ति उसका प्रतिरोध करेंगे।

इस सन्धिकी संश्लिष्ट तीनों शक्तियां अर्थात् ब्रिटिश-गवर्मेण्ट महाराज रणजित्सिंह और शाह शुजाउलमुल्क पूर्वोक्त शर्तों पर हृदयसे सम्मति प्रकट करते हैं। कभी इस सन्धिकी

चाहे जिस प्रकारका द्रव्य बम्बईसे आयेगा, हरेक प्रकारके द्रव्योंके प्रति मनपर ।) चार आनेके हिसाबसे सौदागरी महसूल लिया जायेगा।

षोड़श परिशिष्ट।

सिन्धुनद और शतद्रु में वाणिज्यशुल्कके बारेमें सन् १८४० ई०का सट्टा।

शतद्रु और सिन्धुनदकी सौदागरी नौकाओंपर महसूल लगानेके सम्बन्धमें वृटिश-गवरमेण्ट और लाहौर-गवरमेण्टकी सन्धि।

(सन् १८४० ई०की २७वीं जून।)

संवत् १८८९ विक्रमाब्दकी १४वीं पौष (सन् १८३२ ई०में), कारनल वेडको (उस समय वह कप्तान थे) मध्यवर्त्तितामें दोनो गवरमेण्टकी रजामन्दीसे मित्रताके निदर्शनस्वरूप खालसा राज्यके अन्तर्गत शतद्रु और सिन्धुनदमें वाष्पीयबोट चलानेकी सुविधाके लिये भारतके गवर्नर जनरल राइट आनरेबल लार्ड विलियम कावेण्डिश बेण्टिङ्क सरीखे द्वारा इससे पहले एक सन्धि स्थापित हुई थी। इसके बादमें संवत् १८९१ विक्रमाब्द (१८३४ ई०में), उस बारेमें [illegible] और एक सन्धि स्थापित हुई थी, परन्तु [illegible] विना विचार किये, [illegible] निर्धारण करना ही [illegible]। सन् १८३९ ई०के [illegible] सही-

दरमें सौदागरी महसूल अदा किया जाता है। इसमें अनेक स्थलमें नाना प्रकारका अभियोग और आपत्तियां उठाई जाती हैं। सौदागरोंकी प्रार्थना है,—लदे हुए मालके उनके हिसाबसे हरेक बोटपर महसूल निर्द्धारित हो। अतएव इस समय स्थिर हुआ है, कि इसके बाद लुधियाना, फीरोजपुर या सिधुनकोट;— इन तीन नगरोंमे किसी एक ठीक किये स्थानमें, एक ही नगरमें सब सौदागरी महसूल संगृहीत होगा और सौदागरी बोटोंपर महसूल न रखकर पण्यजातपर निम्नलिखित दरसे वह महसूल निर्द्धारित होगा;—

पश्मीना	...	हरेक मनपर	...	१०) रुपये।
अफ़ीम	...	"	...	७॥)
नील	...	"	...	२॥)
फल-म्हसादि		"	...	१)
बहुत अच्छा रेशमी मलमल		"	...	
चौड़ा कपड़ा इत्यादि		"	...	।=)
खराब रेशम, रुई, छींटका कपड़ा		"	...	।)

पञ्जाबसे रफ्तनी होनेवाले द्रव्यपर।

चीनी, घी, तेल, मादक द्रव्य, जिञ्जर, जाफरान और रुई	..	हरेक मनपर	...	।)
रङ्ग	..	"	.	॥
शस्यादि	..	"	..	=)

बम्बईसे आमदनी द्रव्यपर।

मिलकर, दरबारने उस प्रति लिपिपर मुहर और दस्तखत किया। दोनो गवरमेण्टकी सम्मति और एकमत बिना, आपसमें स्वार्थ और सुविधाके विचारसे कभी इस सन्धिपत्रपर और किसी तरहका प्रतिवाद, परिवर्त्तन या पार्थक्य साधित न होगा। अमृतसर, लाहोर और अन्यान्य स्थानमें या खालसा राज्यकी अन्यान्य नदियोंके सम्बन्धमें जो सौदागरी महसूल निर्द्धारित है, उ सन्धिकी शर्त्तके अनुसार उससे कुछ अन्यथा न होगा।

१ म शर्त्त। शस्य, काठ, पत्थरके चूनाके सम्बन्धमें कोई कर लिया न जायेगा।

२ य शर्त्त। पहले शर्त्तकी लिखी हुई चीजोंके सिवा और चीजोंका महसूल वाणिज्य-बोर्डके परिमाणके अनुसार ही लिया जायगा।

३ य शर्त्त। जितनी सौदागरी नावें भिन्न प्रदेशसे रूपर या लुधियाने मिथुनकोट या रोजनतक या रोजन या मिथुनकोटसे पर्व्वतके निम्नप्रदेशमें, रुपार या लुधियानेतक आयें जायेंगी ५० मनसे अधिक वैसी सौदागरी नावका महसूल ५०) रुपये रखा जायगा।

यथा,—

पर्व्वतके निम्नप्रदेशसे फिरोजपुरतक जाने या लौटनेके लिये	२०) रुपये।
फीरोजपुरसे भावलपुरतक जाने या लौटनेके लिये	१५) रुपये।
भावलपुरसे मिठुनकोट या रोजनतक जाने या लौटनेके लिये	१५) रुपये।

नेमें गवरनर जनरलके एजगट मिष्टर क्लार्क लाहौर-दरबारमें गये; उस समय दोनो गवरमेगटके अभिप्रायके अनुसार इस विषयपर और एक तीसरी सन्धि निष्पन्न हुई; पगयद्रव्यका परिणाम और प्रकृतिके अनुसार कर निर्द्धारण करना ही इस तीसरी सन्धिका उद्देश्य था। इस सन्धिकी शर्त्तोंसे और भी निर्दिष्ट हुआ, कि दोनो गवरमेगट इस महसूलकी दर कम करनेके लिये कोई फिर दूसरा प्रस्ताव कर नहीं सकतीं। संवत् १८६७ विक्रमाब्दके ज्येष्ठ महीनेमें (१८४० ई०के मई महीनेमें) उक्त एजगट मिष्टर क्लार्क अमृतसरके खालसा दरबारमें फिर अवस्थित हुए; उसी समय गत वर्षकी प्रस्तावित पद्धतिके अनुसार वाणिज्यके विषयमें नाना असुविधाओंकी बातें लिखी गई थीं। वाणिज्य-बोटके सब अनुसन्धानके लिये उन्हें आबद्ध किया गया, वाणिज्य-बोटमें विभिन्न प्रकारका द्रव्य वहित होनेसे, उसके महसूलकी असुविधाका और रोजगारियोंकी अनभिज्ञतावश तरह तरहके बखेड़े होते हैं। सुतरां एजगटने उक्त पथाके संस्कार-साधनका प्रस्ताव किया। उन्होंने प्रकाश किया,—यदि दोनो गवरमेगटकी आज्ञा हो, तो वाणिज्य द्रव्यकी प्रकृतिके अनुसार महसूल स्थिर न हो, वाणिज्य-बोटके आकारके अनुसार कर निर्द्धारित हो। हटिश-गवरमेगटकी सब व्यवस्था प्रदर्शनकर, अन्तमें एजगटने, सिन्धु और शतद्रु नदीपर वाणिज्य-बोट चलानेके सम्बन्धमें, बोटकी आकृतिके अनुसार एक महसूलकी दर ठीककर अमृतसरके दरबारमें विचारके लिये उस महसूलकी दरके निर्द्द-शकी एक प्रतिलिपि भेजते हैं। प्रतिष्ठित मित्रताके प्रति सम्मान दिखा, पहले सन्धिपत्रकी शर्त्तोंके अनुसार कई एक दृत

सिलकार, दरबारने उस प्रतिलिपिपर मुहर और दस्तखत किया। दोनो गवरनमेण्टकी सम्मति और एकमत विना, आपसमें स्वार्थ और सुविधाके विचारसे कभी इस सन्धिपत्रपर और किसी तरहका प्रतिवाद, परिवर्त्तन या पार्थक्य साधित न होगा। अमृतसर, लाहोर और अन्यान्य स्थानोंमें या खालसा राज्यकी अन्यान्य नदियोंके सम्बन्धमें जो सौदागरी महसूल निर्द्धारित है, उ सन्धिकी शर्त्तके अनुसार उससे कुछ अन्यथा न होगा।

१ म शर्त्त। शस्य, काठ, पत्थर और चूनाके सम्बन्धमें कोई कर लिया न जायेगा।

२ य शर्त्त। पहले शर्त्तकी लिखी हुई चीजोंके सिवा और चीजोंका महसूल वाणिज्य-बोर्डके परिमाणके अनुसार ही लिया जायगा।

३ य शर्त्त। जितनी सौदागरी नावें भिन्न प्रदेशसे रूपर या लुधियाने मिठुनकोट या रोजनतक या रोजन या मिठुनकोटसे पर्व्वतके निम्नप्रदेशमें, रूपार या लुधियानेतक आवें जायेंगी ५० मनसे अधिक बोझे सौदागरी नावका महसूल ५०) रुपये रखा जायगा।

यथा,—

पर्व्वतके निम्नप्रदेशसे फीरोजपुरतक जाने
या लौटनेके लिये २५) रुपये।

फीरोजपुरसे भावलपुरतक जाने या
आनेके लिये १५) रुपये।

भावलपुरसे मिठुनकोट तक रोजनतक
जाने या आनेके लिये १५) रुपये।

हरेक राहसे आने और जानेके लिये ५०) रुपये।

२५० मनसे अधिक, किन्तु ५०० सौ मनसे अधिक बोझ लायक सौदागरी नौकापर महसूलका दर;—पर्व्वतके निम्नप्रदेश, रुपार या लुधियाने सिधुनकोट या रोजनतक; या रोजन या मिधनकोटसे पर्व्वतके निम्नप्रदेश रुपार या लुधियानातक वाणिज्य शुल्कका हार १००) एक सौ रुपये। यथा,—

पर्व्वतके निम्नप्रदेशसे फीरोजपुरतक आने या जानेके लिये ४०) रुपये।

फीरोजपुरसे भावलपुरतक जाने या आनेके लिये ३०) रुपये।

भावलपुरसे मिधुनकोट या रोजनतक जाने या आनेके लिये ३०) रुपये।

हरेक राहसे जाने और आनेके लिये ५०) रुपये।

५००) पांच सौ मनसे अधिक बोझ लायक सौदागरी नौकाका महसूल १५०) डेढ़ सौ रुपये निर्द्धारित होगा। यथा,—

पर्व्वतके निम्नदेशसे फीरोजपुरतक आने या जानेके लिये ६०) रुपये।

फीरोजपुरसे भावलपुरतक जाने या आनेके लिये ४५) रुपये।

भावलपुरसे सिधुनकोट या रोजनतक जाने या आनेके लिये ४५) रुपये।

हरेक राहसे आने या जानेके लिये १५०) रुपये।

४र्थ शर्त। पहले, दूसरे या तीसरे नियमके अन्तर्भुक्त सौदागरी नौकाओंके परिचयानुरूप चिह्न लिखा रहेगा और हरेक सौदागरी नावकी रजिष्टरी की जायेगी।

५म शर्त। शतद्रु और सिन्धुनदसे सौदागरी नौकाओंके आनेजानेके सम्बन्धमें जिस प्रणालीसे सौदागरी महसूल रखा गया, अन्यान्य नदियोंके बारेमें या खालसा राज्यके स्थलपथके शुल्क वाणिज्य-शुल्कके लेनेके सम्बन्धमें, इसका कोई मेल न रहेगा। वह सब जिस नियमसे चलते हैं, उसी नियमसे चलेंगे।

संवत् १८६७ विक्रमाब्दको १३वीं आषाढ़, सन् १८४० ई०की २७वीं जूनको यह पट्टा लिखा गया।

सप्तदश परिशिष्ट।

सन् १८४५ ई०की युद्ध-घोषणा।

भारतके गवरनर-जनरल द्वारा घोषणा-प्रचार।

सैन्य लश्करी लोका सराय।

१३वीं दिसम्बर, सन् १८४५ ई०।

अबतक पञ्जाब-गवरनेमेण्टके साथ ब्रटिश-गवरनमेण्टकी मित्रता थी। सन् १८०८ ई०में स्वर्गीय महाराज रणजित् सिंह और ब्रटिश-गवरनमेण्टमें मित्रता और एकतायज्ञापक एक सन्धि स्थापित हुई थी। उस सन्धिकी शर्तोंको निबाहनेके साथ ब्रटिश-गवरनमेण्ट पालन करती आती थी; स्वर्गीय महाराजने भी उस सन्धिकी शर्तोंको दिलसफाईके साथ रक्षा की थी।

हरेक राहसे आने और जानेके लिये ५०, रुपये।

२५० मनसे अधिक, किन्तु ५०० सौ मनसे अधिक बोझके लायक सौदागरी नौकापर महसूलका दर;—पर्व्वतके निम्न-प्रदेश, रुपार या लुधियाने मिथुनकोट या रोजनतक; या रोजन या मिथुनकोटसे पर्व्वतके निम्नप्रदेश, रुपार या लुधियानातक, वाणिज्य शुल्कका हार १००, एक सौ रुपये। यथा,—

पर्व्वतके निम्नप्रदेशसे फीरोजपुरतक आने या जानेके लिये	४०, रुपये।
फीरोजपुरसे भावलपुरतक आने या जानेके लिये	३०, रुपये।
भावलपुरसे मिथुनकोट या रोजनतक जाने या आनेके लिये	३०, रुपये।

हरेक राहसे जाने और आनेके लिये ५०, रुपये।

५००, पांच सौ मनसे अधिक बोझ लायक सौदागरी नौका-का महसूल १५०, डेढ़ सौ रुपये निर्द्धारित होगा। यथा,—

पर्व्वतके निम्नदेशसे फीरोजपुरतक आने या जानेके लिये	६०, रुपये।
फीरोजपुरसे भावलपुरतक जाने या आनेके लिये	४५, रुपये।
भावलपुरसे मिथुनकोट या रोजनतक जाने या आनेके लिये	४५, रुपये।

हरेक राहसे आने या जानेके लिये १५०, रुपये।

४र्थ शर्त्त । पहले, दूसरे या तीसरे नियमके अन्तर्मुक्त सौदागरी नौकाओंके परिचयानुरूप चिह्न लिखा रहेगा और हरेक सौदागरी नावकी रजिष्टरी की जायेगी।

५म शर्त्त । शतद्रु और सिन्धुनदसे सौदागरी नौकाओंके आनेजानेके सम्बन्धमें जिस प्रणालीसे सौदागरी महसूल रखा गया, अन्यान्य नदियोंके बारेमें या खालसा राज्यके स्थलपथके कुछ वाणिज्य-शुल्कके लेनेके सम्बन्धमें, इसका कोई मेल न रहेगा। वह सब जिस नियमसे चलते हैं, उसी नियमसे चलेंगे।

संवत् १८९७ विक्रमाब्दको १३वीं आषाढ़, सन् १८४० ई०की २७वीं जूनको यह पट्टा लिखा गया।

सप्तदश परिशिष्ट ।

सन् १८४५ ई०की युद्ध-घोषणा ।

भारतके गवरनर-जनरल द्वारा घोषणा-प्रचार ।

कैम्प लशकरी खाँका सराय ।

१३वीं दिसम्बर, सन् १८४५ ई० ।

अबतक पञ्जाब-गवरमेण्टके साथ ब्रटिश-गवरमेण्टकी मित्रता थी। सन् १८०९ ई०में स्वर्गीय महाराज रणजित् सिंह और ब्रटिश-गवरमेण्टमें मित्रता और एकतायुक्त एक सन्धि स्थापित हुई थी। उस सन्धिकी शर्तोंको निबाहनेके बाद ब्रटिश-गवरमेण्ट पालन करती आती थी· स्वर्गीय महाराजने भी उस सन्धिकी शर्तोंको विश्वस्तताके साथ रक्षा की थी।

महाराज रणजित् सिंहके उत्तराधिकारियोंके साथ भी अबतक ब्रटिश गवरमेण्ट समभावसे उन मित्रताका सम्बन्ध रखते आती है।

भूतपूर्व महाराज शेरसिंहकी मृत्युके बाद, लाहोर गवरमेण्टकी विशृङ्खलाके कारण ब्रटिश-गवरमेण्टके सीमान्त प्रदेशकी रक्षाके लिये, सकौन्सिल गवरनर-जनरल आत्मरक्षणोपयोगी उपायके अवलम्बन करनेपर बाध्य होते हैं; जिन कारणोंसे ऐसा उपाय अवलम्बित होगा, उसका विस्तृत विवरण इससे पहले लाहोर-गवरमेण्टको प्रकट किया जा चुका था।

विगत दो वर्षोंसे लाहोर-गवरमेण्टकी घोर विशृङ्खला-सत्वसे भी, और लाहोर दरबारके नानाविध असद्व्यवहारमूलक कार्यकलापसे भी, दोनो पक्षकी सुविधा और सुखके प्रति लक्ष्य रख दोनो गवरमेण्टमें पहले जैसी मित्रता और एकत्वका सम्बन्ध कायम रखनेके लिये सकौन्सिल गवरनर-जनरल हमेशा चेष्टा करते रहते हैं। भूतपूर्व महाराज शेरसिंहके उत्तराधिकारीके रूपमें बालक दलीपसिंहको ब्रटिश-गवरमेण्टने महाराजके नामसे स्वीकार किया है; उन बालक महाराजकी निःसहाय अवस्थाका स्मरणकर, अबतक गवरनर-जनरल हरेक बातोंमें ही बहुत ज्यादा सहिष्णुताका परिचय देते आते थे।

सकौंसिल गवरनर जनरलकी यही आन्तरिक इच्छा है, कि पञ्जाबके प्रजावर्गकी रक्षा करने और पञ्जाबकी सैन्यको शासनमें रखनेवाली उपयोगी दृढ़ सिख-गवरमेण्ट फिरसे प्रतिष्ठित हो। सर्दारों और लोगोंके स्वदेशप्राणताके गुणसे अब भी वह उद्देश्य सिद्ध हो सकता है; गवरनर-जनरलने वह आशा एकदमसे छोड़ी नहीं है।

वृटिश-राज्यपर आक्रमणके उद्देश्यसे सम्प्रति सिख सैन्य लाहोरसे वृटिश-सीमान्तमें उपनीत हुई थी; जहांतक पता चलता है, दरबा-रकी आज्ञासे ही ऐसा काम अनुष्ठित हुआ था।

गवरनर-जनरलके उपदेशके अनुसार गवरनर-जनरलके एजे-ण्टने सिख-सिपाहियोंके पूर्व्वोक्त आचरणके सम्बन्धमें कैफियत चाही थी। लेकिन यथासमय उसका कोई जवाब न मिलनेसे, फिर कैफियत मांगी गई थी। उक्त घटनाका कोई कारण नहीं है; फिर भी, गवरनर-जनरल एकाएक यह विश्वास कर नहीं सकते, कि सिख-गवरमेण्ट वृटिश-गवरमेण्टसे शत्रुताचरण करेगी। सुतरां इस उद्देश्यसे गवरनर-जनरलने अबतक प्रति-कारका कोई उपाय ग्रहण किया नहीं है, जिससे दोनो गवर-मेण्टमें किसी तरहका संघर्ष उपस्थित हो या महाराणकी गवरमेण्ट किसी तरह विपन्न हो।

बार बार कैफियत मांगनेपर भी जब कोई जवाब न मिला। लाहोरके समर-सज्जाके विपुल आयोजनका समाचार मिला, तो इस सीमान्त प्रदेशकी दृढ़ता सम्पादनके लिये गवरनर-जनरलने उस ओर फौज भेजनेकी ज़रूरत समझी।

उक्त घटनाकी ज़रा भी सम्भावना नहीं है, फिर भी सिख-सैन्यने सम्प्रति वृटिश-राज्यपर आक्रमण किया है।

वृटिश-राज्यकी रक्षा, वृटिश-गवरमेण्टके प्रताप कायम रखनेके लिये सन्धि-शर्तोंके उल्लंघन, अननुमोदित आक्रमणकारियोंको शास्ति देनेके लिये गवरनर-जनरल इस समय हथियार उठाकर कार्य्यारम्भ करनेपर बाध्य हुए।

इसके द्वारा गवरनर-जनरल घोषणा करते हैं, कि सतलज

"आईन" पैदल सैन्यदलको जिसतरह तनखाह देनेकी खबर थी, इस समय महाराज उन सब नियमोंको फिर फैला मञ्जूर करते हैं। इस शर्त्तके मुताविक जो सिपाही पदच्युत किये जावेंगे, उनको वाकी तनखाह चुकानेपर—महाराज बाध्य होंगे।

७ म शर्त्त। इसके बाद लाहोर-गवरमेराटके निर्दिष्ट सैन्य-दलकी संख्या निर्द्धारित हुई ;—२१ पैदल सैन्यदलके हरेक दलमें आठ सौ बन्दूकधरी सिपाही रहेगा, इसके सिवा बारह हजार घुड़चढ़ो सैन्य, लाहोर-गवरमेराट रख सकेगी। वृटिश-गवरमेराट-की सलाह बिना, लाहोर-गवरमेराट कभी इस सैन्यका परिमाण बढ़ा न सकेगी। यदि कभी किसी विशेष कारणवश सैन्यकी संख्याके बढ़ानेकी जरूरत पड़े, तो उसकी कारण परम्परा विस्तृतरूपसे वृटिश-गवरमेराटसे प्रकट करना पड़ेगी। विशेष किसी कारणसे सैन्यकी संख्या बढ़ानेपर, उस कारणके मिटने पर, इस शर्त्तके प्रथम अंशमें लिखे नियमके अनुसार, फिर सैन्यकी संख्या घटाना पड़ेगी।

८ म शर्त्त। महाराजकी जो ३६ तोपें हैं, उन सबको वृटिश गवरमेराटके हाथ समर्पण करना पड़ेगा, कारण, यह सब तोपें वृटिश-गवरमेराटके विरुद्ध चलाई गई थीं और शतद्रु नदीके पश्चिम किनारे अवस्थित रहनेके कारण सो-रांवके युद्ध-में वृटिश सैन्य इसपर अधिकार करनेमें समर्थ हुई।

९ म शर्त्त। विपाशा और शतद्रु, गदा और गार और पञ्चनद नामक शतद्रु नदीकी जो दो शाखायें हैं, मिथुनकोट नामक स्थानमें सिन्धुनदके साथ मिली हैं, उन सब नदियोंपर

इटिश-गवरमेण्ट आधिपत्य करेगी, मिथनकोटसे बलूचस्थानके सीमान्ततक सिन्धुनदके ऊपर भी इटिश-गवरमेण्टका आधिपत्य फैलेगा। इस नदीके आरपारकी आय और सौदागरीका महसूल इटिश-गवरमेण्ट पायेगी। फिर भी इन सब नदियोंमें लाहोर गवरमेण्टकी खुद कोई सौदागर, नाव या मनुष्यके आने जानेमें किसी तरहका हस्तक्षेप किया जन जानेगा। दोन राज्यकी मध्यवर्त्ती पूर्व्वोक्त नदी समूहके भिन्न भिन्न पारघाटके सम्बन्धमें ऐसा बन्दोबस्त हुआ, कि सब पारघाटके तत्वाधानका सब खर्च निकालकर, बाकी आमदनीका आधा अंश इटिश-गवरमेण्ट लाहोर गवरमेण्टको देगी। शतद्रु नदीका जो हिस्सा लाहोर और भालपुर राज्यकी सीमान्तके अन्तर्गत है, उन सब स्थानोंके पारघाटके सम्बन्धमें इस अर्थका कोई मेल नहीं रहा।

१० म शर्त। इटिश-साम्राज्यकी या उसके किसी मित्रराज्यकी रक्षाके लिये, महाराजके राज्यके भीतरसे यदि इटिश-गवरमेण्टको कोई सैन्यदल भेजनेकी जरूरत हो, तो ऐसे खास खास मौकोंपर महाराजसे वह अच्छी तरह प्रकट किया जायेगा और इटिश सैन्यदल लाहोर राज्यके भीतर जहां चाहे आजा सकेगा। ऐसे मौकेपर सैन्यदलके आनेजानेकी सुविधाके लिये लाहोर-गवरमेण्टके कर्म्मचारीगण नदीके उस पारके लिये नावको और रसद आदिके संग्रहकी सुविधा कर देंगे; नाव और रसद वगैरहके संग्रहमें जो खर्च लगेगा, इटिश-गवरमेण्ट उसका पूरा दाम देगी और सैन्यदलसे चाहे किसका कोई नुकसान होनेपर, इटिश-गवरमेण्ट [illegible] क्षतिपूरण करनेपर बाध्य होगी।

परिशिष्ट ।

किसी प्रदेशके अधिवासियोंके धर्म्मविश्वासके प्रति कभी किसी तरह इटिश गवरमेण्ट हस्तक्षेप न करेगी ।

११ श शर्त । इटिश गवरमेण्टकी सलाह बिना कभी इटिश प्रजा, या कोई यूरोपीय या अमेरिकन राज्यके मनुष्य महाराजके किसी काममें नियुक्त हो न सकेंगे।

१२ श शर्त । इटिश-गवरमेण्ट और लाहोर-गवरमेण्ट फिर मित्रता स्थापनके सम्बन्धमें जम्मूके राजा गुलाबसिंहने राज्यका जैसा हितसाधन किया है, उसके ही पुरस्कार स्वरूप कुछ राज्य प्रदानकर, महाराज, राजा गुलाबसिंहको स्वाधीन राजाके नामसे स्वीकार करेंगे ; स्वर्गीय महाराज खड्गसिंहके समय जिन प्रदेशोंमें राजा गुलाबसिंहका आधिपत्य फैला था, वह सब और जो पहाड़ी प्रदेश और राज्य, उसे इसके बाद स्वतन्त्र चुक्तीपत्र इटिश-गवरमेण्ट, राजा गुलाबसिंहको देगी, उन सबको महाराज स्वाधीनके नामसे समझेंगे। राजा गुलाबसिंहके सद्व्यवहारके पुरस्कारस्वरूप इटिश-गवरमेण्टने भी राजा गुलाबसिंहके स्वाधीनके नामसे स्वीकारकी किया ; उसके साथ इटिश-गवरमेण्टकी स्वतन्त्र सन्धिकी शर्तोंमें यह सब बातें निर्द्धारित होंगी।

१३ श शर्त । राजा गुलाबसिंह और लाहोर राज्यमें यदि कभी कोई विवाद उपस्थित हो, तो इटिश-गवरमेण्ट उसकी मध्यस्थता करेगी और महाराजको उसके माननेपर वाध्य होना पड़ेगा ।

१४ श शर्त । इटिश गवरमेण्टकी सलाह बिना लाहोर सीमा कभी बदल न सकेगी।

१५ श शर्त। लाहोर राज्यके आभ्यन्तरीण शासनके सम्बन्धमें हटिश-गवरमेग्ट किसी तरहका हस्तक्षेप कर न सकेगी, लेकिन कभी किसी प्रश्नकी मीमांसाके सम्बन्धमें हटिश गवरमेग्टके मतामत पूछनेपर लाहोर-गवरमेग्टकी शुभकल्पनामें गवरनर-जनरल उस विषयका सदुपदेश प्रदानकर यथोचित साहाय्य करेंगे।

१६ श शर्त। दोनो राज्यसे किसी एक राज्यकी प्रजा यदि दूसरे राज्यमें जाये, तो उसके प्रति अपने राज्यकी प्रजा जैसा सद्व्यवहार करना पड़ेगा।

-गवरनर जनरल राइट आनरेबल सर हेनरी हार्डिङ्ग, जी, सी, बी, महोदय द्वारा क्षमताप्राप्त हटिश-गवरमेग्टके पक्षीय फ्रेडरिक कारी इस्क्वायर और बेवेट मेजर हेनरी मराटगोमरी लरेंस द्वारा षोलह शर्तोंका यह सन्धिपत्र आज ठीक हुआ; महाराज दलीपसिंहकी ओरसे भाई रामसिंह, राजा लालसिंह, सर्दार तेजसिंह, सर्दार छत्रसिंह अतरियांवाला, सर्दार रणजोरसिंह मजीठिया, दीवान दीनानाथ और फकीर नूरुद्दीन उपस्थित रह इस सन्धिकी शर्तोंको रखते हैं। गवरनर जनरल राइट आनरेबल सर हेनरी हार्डिङ्ग जी, सी, बी, महोदय और हिजहाइनस महाराज दलीपसिंह द्वारा यह सन्धिपत्र मुहरसे छापकर आज अनुमोदित हुआ।

सन् १८४६ ई०की ९ वीं मार्चको (१२६२ हिजरी १० रबिउल-आवलके दिन) लाहोरमें यह सन्धिपत्र सम्पन्न और उसी दिन यह अनुमोदित हुआ।

ऊनविंश परिशिष्ट।

सन् १८४६ ई०में लाहोरसे जो पहली सन्धि हुई, उसकी कई एक अतिरिक्त शर्त्तें।

सन् १८४६ ई०की ११वीं मार्चको वृटिश-गवरमेण्ट और लाहोर-दरबारमें यह शर्त्तें रखी गईं।

६वीं मार्चको लाहोरमें जो सन्धि हुई, उस सन्धिकी छः के अनुसार लाहोर-सैन्यका संस्कार साधन न होनेतक, महाराजके शरीर और राजधानीकी रक्षाके लिये, लाहोर-गवरमेण्टने गवरनर-जनरलसे लाहोरमें एक दल वृटिश सैन्यके स्थापनकी प्रार्थना की; कई एक निर्दिष्ट शर्त्तों पर गवरनर जनरल इस बातपर राजी हुए; पूर्व्वोक्त सन्धिकी तीसरी और चौथी शर्त्तके अनुसार महाराजने वृटिश-गवरमेण्टको जिन सब प्रदेशोंका स्वत्वाधिकार प्रदान किया है, उनके बारेमें कई एक खास खास नियमोंके रखनेकी जरूरत है। इन कारणोंसे निम्नलिखित आठ शर्त्तोंका एक इकरारनामा आज पूर्व्वोक्त दोनों पक्षमें स्थापन हुआ।

१म शर्त्त। लाहोरकी सन्धिकी छठवीं शर्त्तके अनुसार सिख-सैन्यका संस्कार साधन न होनेतक, लाहोर शहरके अधि-

वासियों और खुद महाराजकी रक्षाके लिये, गवरनर-जनरल जैसा उपयुक्त विचार करेंगी, उसके अनुसार कुछ ब्रिटिश-सैन्य, वर्त्तमान १८४६ ई०के आखिरी दिनतक, लाहोरमें अवस्थिति करेंगे, जिस उद्देश्यसे यह सैन्यदल लाहोरमें स्थापित होगी, लाहोर-दरबार यदि उस उद्देश्यके साधित होनेका कारण समझे, तो साल खतम होनेके पहले ही, सुविधाके लायक सैन्य-दल लाहोरसे लौटा लिया जायेगा। लेकिन वर्त्तमान सालके खतम होनेपर, फिर लाहोरमें सैन्यदल अपेक्षा न करेगा।

२य शर्त्त। पूर्व्वोक्त शर्त्तके उद्देश्यसाधनके लिये, लाहोर-गवरमेण्टने मञ्जूर किया, कि उल्लिखित सैन्यदल सम्पूर्णरूपसे लाहोरके किलेमें और लाहोर नगरपर अधिकार पायेगी और लाहोर-सैन्यदलको नगरसे स्थानान्तरित किया जायेगा। लाहोर-गवरमेण्टने और भी मञ्जूर किया, कि इन सब ब्रिटिश-सैन्यके अन्तर्गत अफसर कर्म्मचारियोंके लिये उनकी जरूरतके मुता-बिक सुविधाजनक वासस्थान दिया जायेगा। इन सब सैन्यके ब्रिटिश-गवरमेण्टके अपने सेनानिवाससे वैदेशिक राज्यमें स्थाना-न्तरित हो, दूसरेके काममें प्रवृत्त होनेसे इन सब सैन्यके पोषणके लिये ब्रिटिश-गवरमेण्टका जो अतिरिक्त खर्च होगा, उन खर्चका भार लाहोर-गवरमेण्टको लेना पड़ेगा।

३य शर्त्त। यथालिखित शर्त्तके अनुसार सिख-सैन्यदलके संस्कार-साधनके लिये लाहोर-गवरमेण्ट बहुत जल्द एक [illegible] चेष्टा करेगी। सैन्यसंस्कार और सिपाहियोंके [illegible] बन्दोबस्त-में लाहोर-गवरमेण्ट जहाँतक अवसर होतीहै, लाहोरमें स्थित ब्रिटिश कर्म्मचारी रहेंगे, उनका यह सब विषयके प्रमाण मानना होगा।

४ थी शर्त। पूर्वोक्त शर्तोंका कोई विधान यदि लाहोर-गवरमेराट पालन कर न सके, तो पहले लिखी शर्तका निर्दिष्ट समय बीतनेसे पहले ही, किसी समय वृटिश-गवरमेराट लाहोर-रेसिडेन्सी उठा ले सकेगी।

५ म शर्त। ६वीं मार्चके सन्धि-पत्रकी तीसरी और चौथी शर्तके अनुसार महाराजसे पाये हुए वृटिश-गवरमेराटके राज्यमें जितने जागीरदार, स्वर्गीय महाराज रणजित्‌सिंह, खड्गसिंह और शेरसिंहके परिवारके अन्तर्गत हैं, उनका असली हक वृटिश गवरमेराट सदा सम्मानसे स्वीकार करेगी, वह सब जागीरदार अपने जीवनतक, हकके स्वत्ववान् रहेंगे और वृटिश-गवरमेराट उनके असली हकोंकी रक्षाकी चेष्टा करेगी।

६ ष्ठ शर्त। लाहोरकी सन्धिकी तीसरी और चौथी शर्तके अनुसार वृटिश-गवरमेराटने जो सब राज्य पाये हैं, उन सब सब राज्यके सरदार और मनेजरके पास लाहोर-गवरमेराटका जो बाकी खजाना शेष है, वर्तमान वर्षसे (अर्थात् सम्वत् १६०२ विक्रमाब्द) खरीफ शस्यकी उत्पत्तिके समयतक उस मालगुजारीके अदा करनेके लिये स्थानीय वृटिश कर्मचारीगण लाहोर-गवरमेराटकी यथासाध्य सहायता करेंगे।

७ म शर्त। पूर्वोक्त शर्तके लिखे प्रदेशोंके दुर्गसमूहसे तोपोंके सिवा और सब तरहकी धन-सम्पत्ति लाहोर-गवरमेराट अपनी इच्छासे स्थानान्तरित कर सकती है। उन सब सम्पत्तियोंके कोई अंशपर, यदि वृटिश-गवरमेराट दखल जमानेकी इच्छा करे, तो उसका उचित मूल्य, लाहोर-गवरमेराट पायेगी असली सम्पत्ति लाहोर-गवरमेराट स्थानान्तरित करनेकी

इच्छा न करेगी, साथ साथ हटिश-कर्म्मचारियोंको भी उसपर दखल करनेकी जरूरत नहीं है, तो उस सम्पत्तिकी सुव्यवस्थाके लिये, हटिश कर्म्मचारिगण लाहोर-गवरमेण्टको यथासाध्य सहायता करेंगे।

८ म शर्त्त। सन् १८४६ ई०की ९वीं मार्चको लाहोरकी सन्धिकी चौथी शर्त्तके अनुसार दोनों राज्यकी सीमा निर्द्दिष्ट करनेके लिये, दोनों गवरनेमण्ट द्वारा बहुत जल्द कमिशन नियुक्त होगी।

विंश परिशिष्ट।

राजा गुलाबसिंहके साथ सन् १८४५ ई० की सन्धि।

सन् १८४६ ई०की १६वीं मार्चको अमृतसरमें महाराज गुलाबसिंह और हटिश-गवरनेमण्टमें यह सन्धि निष्पन्न हुई।

एक ओर हटिश-गवरनेमण्ट और दूसरी ओर महाराज गुलाबसिंहने यह सन्धि हुई। ईष्ट इण्डिया (भारतवर्ष और [illegible]
उससे सटे हुए स्थानसमूह [illegible] का कार्यभार निर्वाहके लिये [illegible]
एकत्रस्थ ईष्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा [illegible]

श्री महारानी विक्टोरियाकी अनरबेल प्रिवी कौंसिलके सदस्य
गवरनरजनरल राइट अनरबल सर हेनरी हार्डिञ्ज, जी. सी. बी.
द्वारा नियुक्त और क्षमताप्राप्त फ्रेडरिक क्यूरी स्क्वयर और
ब्रेवेट मेजर हेनरी मण्टगोमरी-लरेंस साहबने अनरबल ईष्ट-
इण्डिया कम्पनीकी ओरसे और महाराज गुलाबसिंहने स्वयं
उपस्थित रह यह सन्धि ठीक की ;—

१ म शर्त । सन् १८४६ ईस्वी ९वीं मार्चको लाहोरमें
जो सन्धि हुई, उस सन्धिकी ४ थी शर्तके अनुसार ब्रिटिश-
गवरमेण्टने जो राज्य पाये, उस राज्यका कुछ हिस्सा महाराज
गुलाबसिंह और उनके पुरुष उत्तराधिकारी पुरुषानुक्रमसे स्वाधीन
भावसे भोग-दखल कर सकेंगे : अर्थात्, सिन्धु नदीके पूर्व किनारेसे
और इरावती नदीके पश्चिम किनारेवाले सब पहाड़ी प्रदेश और
उसके अन्तर्गत चम्बा और अधीनस्थ लाहुलके सिवा सब देश
महाराजके अधिकारभुक्त हुए ।

२ य शर्त । पूर्वोक्त शर्तके अनुसार महाराज गुलाबसिंह
जिन सब प्रदेशोंपर अधिकार पायेंगे, उन सबकी पहली सीमा
निर्धारणके लिये ब्रिटिश-गवरमेण्ट और महाराज गुलाबसिंह
द्वारा कमिशन नियुक्त होगी ; सीमाका काम खतम होनेके बाद
उसके बारेमें स्वतन्त्र व्यवस्था पत्र लिखा जायेगा ।

३ य शर्त । पूर्वोक्त शर्तके अनुसार महाराज गुलाबसिंह
और उनके उत्तराधिकारियोंको जो सम्पत्ति प्रदान की जाती है,
उसका मूल्य महाराज गुलाबसिंह ब्रिटिश-गवरमेण्टको ७५ पच-
हत्तर लाख नानकशाही रुपये देना स्वीकार करते हैं ; इस सन्धि-
के अनुमोदित होनेके समय ५० लाख रुपये वह देंगे और बाकी-

मान सन् १८४६ ई०की १ली अक्टोबर या उससे पहले २५ लाख रुपये देनेपर वाध्य होंगे।

४ र्थ शर्त्त। इटिश गवरमेण्टकी सलाह बिना महाराज गुलाबसिंहके राज्यका सीमान्त कभी बदल नहीं सकता।

५ म शर्त्त। लाहोर गवरमेण्ट या उसके दूसरे किसी राज्यके साथ महाराज गुलाबसिंह कभी किसी विषयपर विवाद उपस्थित होनेपर इटिश गवरमेण्ट उनकी मध्यस्थता करेगी; इस सम्बन्धमें इटिश गवरमेण्टका विचार ही मानना पड़ेगा।

६ ष्ठ शर्त्त। इटिश सिपाही जब किसी पहाड़ी प्रदेशमें या महाराजके राज्यके पास युद्धमें प्रवृत्त होंगे, तो महाराज गुलाबसिंह और उनके उत्तराधिकारिगण अपनी सब फौजसे इटिश गवरमेण्टकी सहायता करेंगे।

७ म शर्त्त। इटिश-गवरमेण्टकी सलाह बिना महाराज गुलाबसिंह किसी काममें किसी इटिश प्रजा या किसी यूरोपीय या किसी अमेरिकाकी प्रजाको नियुक्त कर न सकेंगे।

८ म शर्त्त। महाराज गुलाबसिंहको जो राजत्व दियागया, उसके लिये वह सन् १८४६ ई०की ११वीं मार्चको लाहोर दरबार और इटिश-गवरमेण्टमें जो स्वतन्त्र सन्धिपत्र निश्चय हुआ है उस सन्धिपत्रकी ५ वीं छठी और सातवीं शर्त्तोंके माननेपर वाध्य होंगे।

९ म शर्त्त। वैदेशिक शत्रुओंके आक्रमणसे राज्यकी रक्षा करनेके लिये इटिश-गवरमेण्ट महाराज गुलाबसिंहको सहायता देगी।

१० म शर्त्त। इसके द्वारा महाराज गुलाबसिंह इटिश गवर-

प्रकट की थी; उन्होंने और भी प्रकट किया था, कि वजीर राजा लालसिंहके लिखे उपदेशके अनुसार ही इस विद्रोहकी उत्तेजना हुई है।

शेख इमामुद्दीनने हटिश-गवरमेण्टको आत्मसमर्पण किया। उनके साथ शर्त्त हुई, कि यदि वह प्रमाण दे सकें, कि लाहोर-दरवारके मन्त्रीकी उत्तेजनासे महाराज गुलावसिंहके राज्याधिकारमें वाधा दी गई है, तो उनके शरीर या सम्पत्तिके प्रति लाहोर-दरवार कोई शास्तिविधान न करेगा, हटिश-एजेण्ट इस वारेमें प्रतिज्ञा वद्ध होते हैं। हटिश एजण्टने इस वारेमें गवरमेण्टको मञ्जूरी ले ली है, जिसमें इस विषयके ठीकठीक हालका पता लगे।

शेख इमामुद्दीनने जो अभियोग उपस्थित किया; उसकी प्रकाश्य भावसे छानवीन हुई थी। छानवीनसे पूरी तरह प्रकट हुआ,—महाराज गुलावसिंहके काश्मीरपर अधिकार करनेके लिये जानेपर शेख इमामुद्दीनने उन्हें जो वाधा दी थी, राजा लालसिंहकी गुप्त उत्तेजना ही उसका मूलीभूत थी।

इसके वाद वहुत जल्द वजीर लालसिंहको पदच्युतकर हटिश प्रदेशमें निर्व्वासित करनेके लिये गवरनरजनरलने लाहोर षेटके सामन्तवर्गके नाम आदेश प्रचार किया।

वजीर लालसिंहने गुप्त षड़यन्त्र और वलात्कार सन्धिकी शर्त्त तोड़ी थी, उसके प्रायश्चित्तस्वरूप लालसिंहके पदच्युत होनेपर गवरनर जनरल राजी रहे। वजीर लालसिंहके काममें दरवारके जिन अन्यान्य सदस्योंका योगदान था, उसका भी कोई प्रमाण पाया नहीं जाता; काश्मीर-विद्रोहके दमनके

लिये और सन्धिकी शर्त्तके परिपालन करनेकी बाधा दूर करनेके लिये, सिख सैन्यदल और सर्दारोंके व्यवहारसे प्रतिपन्न हुआ था, कि वजीर लाल सिंहके अपकर्म्मके साथ सब सिख जाति लिप्त नहीं थी।

मन्त्रिगण और सामन्तोंके एकवाक्यसे वजीर लालसिंह पद-च्युतिके वारेमें राजी हुए थे, और वहुत जल्द उन्होने उसे काम-में परिणत किया था।

लाहोरके शासनकी व्यवस्थाके लिये दरबारके बाकी सदस्यगण, सब सर्दार और सामन्तोंके साथ एकमत हो कई एक दिनोंके परामर्शके बाद स्थिर हुआ था, कि महाराज दलीपसिंहके अप्राप्त व्यवहारके समय अपनी रक्षाके लिये और राज्यके सुशा-सनके लिये ब्रिटिश-गवरमेण्टका साहाय्य और मध्यस्थिताकी प्रार्थ-नीय है।

दरबार और सामन्तोंकी इस प्रार्थनाके अनुसार वर्त्तमान वर्षकी ९वीं मार्चको लाहोरमें ब्रिटिश-गवरमेण्टके साथ लाहोर गवरमेण्टकी जो सन्धि हुई थी इस समय कुछ सामयिक परि-वर्त्तनकी जरूरत पड़ी।

इस परिवर्त्तनका नियम और शर्त्त निम्नलिखित इकरारनामेमें लिखी जाती हैं।

सन् १८४६ ई०की [illegible] दिसम्बरको ब्रिटिश गवर-मेण्ट और लाहोर-दरबारके बीच [illegible]
[illegible]

[illegible]

गवरनरके आदेश और चमताप्राप्त ब्रटिश रेसिडगटकी सम्मति
बिना कोई परिवर्त्तन हो न सकेगा।

६ष्ठ शर्त्त। राजकीय सदस्य सभा द्वारा देशका शासनकार्य
निर्व्वाहित होगा, लेकिन ब्रटिश-रेसिडगटके अभिप्रायके अनुसार
उन्हें काम करना पड़ेगा। सब विभागके सब कामोंमें ही ब्रटिश-
रेसिडगटकी पूरी चमता और आधिपत्य विद्यमान रहेगा।

७म शर्त्त। देशकी शान्तिरचाके लिये और महाराजके
शरीररचाके लिये, गवरनर जनरल जैसा उपयुक्त विचार करेंगे
उसके अनुरूप ब्रटिश सैन्य लाहोरमें अवस्थिति करेगी, सैन्य
दलकी संख्या अवस्थान और शक्ति-सामर्थ्यके सम्बन्धमें गवरनर
जनरल ही स्थिर करेंगे।

८म शर्त्त। देशकी शान्ति रचाके लिये और राजधानीके
निरापदके विधानके लिये गवरनर जेनरलके इच्छानुसार लाहोर-
राज्यके अन्तर्गत चाहे जिस दुर्ग या सेना-निवासपर ब्रटिश सैन्य
द्वारा अधिकार कर लिया जायेगा।

९म शर्त्त। इस सब सैन्यकी रचाके लिये ब्रटिश-गवरमेगटका
जो खर्च होगा, उसके निर्व्वाहके लिये लाहोर छेट हर साल
ब्रटिश-गवरमेगटको पूरी तोलके २२ लाख नये "नानकशाही"
रुपये देगी। दो किसतमें यानी १३ लाख २० हजार रुपये
हरसालके मई और जून महीनेमें और ८ लाख ८० हजार रुपये
नवम्बर और दिसम्बर महीनेमें हरसाल देना पड़ेगा।

१०म शर्त्त। महाराज दलीपसिंहकी माता, हरहाइनेस
महारानीको अपने और उनके अधीनस्थके भरण-पोषणके लिये
हर साल उन्हें एक लाख पचास हजार रुपये देना पड़ेंगे;